४५ अमर उपन्यासों का कथा-सा
लेखक-परिचय सहित

संसार के महान उपन्यास

इस पुस्तक मे संसार के महान उपन्यासकारों के ४५ सर्वोत्तम उपन्यासों का कथासार दिया गया है। टालस्टाय, दास्तोएवस्की, बाल्जाक, तुर्गनेव, गोर्की, फ्लाबेयर, जोला, हार्डी, वेल्स, डी० एच० लारेन्स, पर्ल बक, पास्तेरनाक आदि जैसे उपन्यासकारों की अमर रचनाओं का कथासार अत्यन्त रोचक शैली में और इस कुशलता के साथ प्रस्तुत किया गया है कि पाठक को न केवल इन उपन्यासों की संक्षिप्त कथा का बल्कि उपन्यासकार की कला और मूल पुस्तक की प्रमुख विशेषताओं का भी परिचय मिल जाता है।

हिन्दी मे अपने ढंग की इस पहली पुस्तक के सम्पादक और प्रस्तुतकर्ता हैं स्वर्गीय डा० रांगेय राघव, जो स्वयं भी एक श्रेष्ठ उपन्यासकार और विश्व-साहित्य के जाने-माने विद्वान थे।

डा. रांगेय राघव
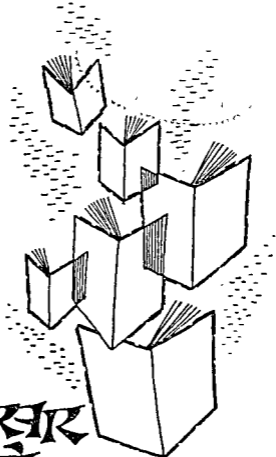
संसार के महान उपन्यास

४५ अमर उपन्यासों का कथा-सार लेखक-परिचय सहित

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

प्रकाशक :
राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

मूल्य : दस रुपये

संसार के महान उपन्यास

क्रम

सामाजिक उपन्यास

मनोवैज्ञानिक उपन्यास

रंजक उपन्यास

ऐतिहासिक उपन्यास

सामाजिक उपन्यास

दो शब्द

प्रस्तुत ग्रंथ में संसार के महान उपन्यासों की रूपरेखा तथा परिचय दिया गया है, जो एक संदर्भ ग्रंथ के रूप में भी लाभदायक रचना सिद्ध हो सकती है। अभी हिन्दी में इन सभी प्रसिद्ध ग्रंथों के अनुवाद भी प्राप्त नहीं होते। आशा है पाठकों को विदेशी साहित्य का यह संक्षिप्त परिचय एक नया विस्तार देगा।

—रांगेय राघव

देहात का पादरी

[द विकार आफ वेकफील्ड[1]]

गोल्डस्मिथ, ओलिवर : अंग्रेज़ी उपन्यासकार गोल्डस्मिथ का जन्म आयरलैण्ड के एक ग्राम में १० नवम्बर, १७२८ को हुआ। शिक्षा ट्रिनिटी कॉलेज, डब्लिन में प्राप्त की। प्रतिभाशाली थे, लेकिन पैसे के मामले में तंग और फोकटी। दिल्लगीबाज़ी में उस्ताद, लेकिन कभी-कभी मौके पर जवाब नहीं बना पाते थे। डाक्टरी पढ़ी, लेकिन फिर साल-भर यूरोप में घूमते रहे और किसीके कहने से कुछ लिख-लिखाकर कमाते रहे। कभी किसीको पढ़ा देते। १७६१ में डॉक्टर जॉनसन से भेंट हुई और उसने मदद की। तब गोल्डस्मिथ ने डटकर कविताएं, नाटक, निबंध और उपन्यास सृजन किया। ४ अप्रैल, १७७४ को लन्दन में देहान्त हुआ।

'देहात का पादरी' का मूल अंग्रेज़ी नाम है 'द विकार आफ वेकफील्ड'। यह उपन्यास एक महान कृति माना जाता है। गोल्डस्मिथ ने मानव-जीवन का बड़े ही कौशल से चित्रण किया है।

डॉक्टर प्रिमरोज़ एक सज्जन व्यक्ति था। उसकी पत्नी उसके अनुकूल थी। उसने अपनी सन्तान को दृढ़ता की शिक्षा दी थी। पुत्र और पुत्रियां सब स्वस्थ, सुन्दर और शिक्षित थे। आलीविया सुन्दरी थी। वह बेतकल्लुफ और उत्साही थी। सोफिया विनम्र और लजीली थी। चारों ही पुत्र सुदृढ़ और जीवित लगते थे। डॉक्टर के पास चौदह हज़ार पाउण्ड थे। इससे ऊपर की आय वह गरीबों पर भी खर्च कर दिया करता था।

डॉक्टर का बड़ा बेटा जॉर्ज ऑक्सफोर्ड से पढ़कर आ गया। उसकी शादी मिस एरैबेला विल्मौट से निश्चित हुई। किन्तु जिस दिन विवाह होनेवाला था, वर-वधू के पिताओं में तू-तू मैं-मैं हो गई। डॉक्टर प्रिमरोज़ का धन जिस व्यापारी के पास लगा था वह चम्पत हो गया। विल्मौट ने इसके बाद शादी करना उचित नहीं समझा।

जॉर्ज को कमाने के लिए लन्दन भेज दिया गया। वहां से दूर एक गांव में डॉक्टर प्रिमरोज़ भी एक छोटे-से गिरजे के पादरी का स्थान ग्रहण करने चला, जहां उसे प्रतिवर्ष १५ पाउण्ड मिलने को थे।

रास्ते में उन्हें एक व्यक्ति मिला। वह अच्छा आदमी लगता था। उसका नाम था बर्चेल। उसीने बताया कि नया ज़मींदार थौर्नहिल युवक था। वह बहुत धनी था और आनन्द तथा मनोरंजनप्रिय था। सर विलियम थौर्नहिल जो बहुत विख्यात और सज्जन

---

1. The Vicar of Wakefield (Oliver Goldsmith)

थे, इस नये जमींदार के चाचा लगते थे।

यात्रा के समय सोफिया नाले की तीव्रधारा मे गिर पड़ी। बर्चेल ने तुरन्त कूदकर उसकी रक्षा की। परिवार ने कृतज्ञता प्रकट की। कुछ समय बातचीत करके बर्चेल उनसे बिदा लेकर चला गया।

हेमंत ऋतु थी। दुपहर ढल चुकी थी। नया जमींदार थौर्नहिल उधर से शिकार करने निकला। मार्ग मे वह पादरी से बातें करने रुक गया। ओलीविया के नयनों में उसे कुछ अनुराग दिखाई दिया। इसके बाद वह उनके घर अक्सर आने लगा। पादरी उसे हिरन के मांस की स्वादिष्ट टिकिया खिलाता और लड़कियों की सुन्दरता की सुगन्ध तो उसके आसपास फैलती ही रहती।

अवसर बर्चेल भी उनके घर आता, परन्तु उसकी तुलना मे जमींदार थौर्नहिल बहुत बड़ा आदमी था। इसलिए बर्चेल की कद्र कम होना एक मामूली-सी बात थी।

एक दिन तरुण जमींदार थौर्नहिल दो युवतियों के साथ आया। वे बहुमूल्य वस्त्र पहने हुई थीं। थौर्नहिल ने उनका परिचय दिया जो कि शहर से आई थीं और फैशनेबुल स्त्रिया थी। उन स्त्रियो के व्यवहार से प्रिमरोज़-परिवार दो-तीन बार चौंक भी पड़ा। उनमे शहरी आदतें थी। परन्तु उन्होंने एक बात मे सफलता पाई, प्रिमरोज़-परिवार की लड़कियों को उन्होने फैशनपरस्ती की तरफ बढाया। पादरी की नसीहतें इस मामले मे कारगर नहीं हुईं। वह इस तरह की चमक-दमक का विरोधी था।

घर की औरतों ने तय किया कि घर का लचर घोड़ा बेच दिया जाए और एक अच्छा घोड़ा खरीदा जाए। पादरी का दूसरा बेटा मौजेज इस कार्य के लिए पड़ोस के इलाके में लगनेवाले मेले मे भेजा गया ताकि वह सौदा कर आए। उसने अपने घोड़े को अच्छी कीमत पर बेच दिया। लेकिन वहां उसे एक आदमी ने बुरी तरह ठग लिया। नतीजा यह हुआ कि परिवार को बहुत हानि पहुची। इस घटना से वे पहले से भी अधिक गरीब हो गए।

तरुण जमींदार थौर्नहिल की साथिनों ने श्रीमती प्रिमरोज से कहा कि वे ओलीविया और सोफिया को शहर ले जाना चाहती थी। श्रीमती प्रिमरोज इस विचार से बहुत प्रसन्न हुईं। किन्तु बर्चेल इस विचार के बहुत विरुद्ध रहा और उसने इसके विरुद्ध इतनी बातें कहीं कि परिवार से उसका तनाव-सा हो गया। कुछ ही दिन बाद जमींदार थौर्नहिल ने परिवार को सूचना दी कि वे स्त्रियां अब इन लड़कियों को साथ नहीं ले जा सकेंगी, क्योंकि किसी ईर्ष्यालु व्यक्ति ने इधर की उधर भिड़ाकर घपला कर दिया था। तभी दोनों महिलाओं के नाम बर्चेल का लिखा एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें चेतावनी दी गई थी कि वे इन लड़कियों को अपने साथ नहीं ले जाए। इस घटना के बाद तो बर्चेल के बारे मे बात साफ ही हो गई।

तरुण जमींदार थौर्नहिल अब इनके घर पहले से भी अधिक आने-जाने लगा। उसके व्यवहार से कुछ ऐसा प्रकट होने लगा कि वह विवाह नहीं, प्रेम करना चाहता था।

एक दिन शाम हो चली थी। पादरी का पुत्र दिक भागा-भागा आया और उसने कहा कि ओलीविया को दो आदमी जबर्दस्ती एक गाड़ी मे लिए जा रहे थे, वह स्वयं देख-

कर आया था। वह काफी रोई-धोई थी, परन्तु उसे विवश कर दिया गया था।

पादरी ने उसकी रक्षा करने का बीड़ा उठाया और उपाय प्रारम्भ किया। उसे पहले जमींदार थौर्नेहिल पर सदेह हुआ किन्तु जमींदार ने कसमें खाईं और कहा कि उसका इस मामले से कोई ताल्लुक नहीं था। अब बर्चेल के अतिरिक्त और किसपर सदेह हो सकता था? इस खोज-ढूढ में पादरी बीमार पड़ गया। तीन सप्ताह बाद उसे अपनी पुत्री एक गाव की सराय में अकेली मिली। उसको यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ, बल्कि दिल को धक्का लगा कि झूठी शादी का लालच दिखाकर ओलीविया को चकमा देकर भगा ले जानेवाला और कोई नहीं, स्वय जमींदार थौर्नेहिल ही था, बल्कि बर्चेल ने तो इसमें बाधा देने की भी चेष्टा की थी।

अगली रात जब वे घर लौटकर आए तो पादरी की वेदना और अधिक बढ़ गई। उसके घर में आग लगी हुई थी। परिवार किसी तरह बचकर बाहर भाग निकला। किन्तु इमारत बरबाद हो गई और इसलिए उन्हें एक बड़े रद्दी कोठे में शरण लेनी पड़ी। पादरी की पत्नी ने पुत्री को देखा तो वह घृणा से कटु वचन कहने लगी। पादरी ने उससे कहा, "मैं एक भटके हुए प्राणी को तुम्हारे पास ले आया हू। वह अपने कर्तव्यों को सुचारु रूप से कर सके, इसलिए आवश्यक है कि हमारा पूर्ववत् स्नेह उसे प्राप्त हो।"

पादरी के ममता-भरे वचनों को सुनकर उसकी पत्नी चुप हो गई।

ओलीविया के दुःख का अन्त नहीं रहा, जब उसने सुना कि तरुण जमींदार थौर्नेहिल का कुमारी विल्मौट से विवाह होनेवाला था। विल्मौट धनी थी और एक दिन उसीसे ओलीविया के भाई की शादी टूट गई थी।

डॉक्टर प्रिमरोज को क्रोध-सा हो आया। उसने तरुण जमींदार के सामने जाकर उसे खूब फटकारा। तरुण जमींदार अपने रुपये मांगने लगा। पादरी के पास धन नहीं था जो किराया चुका देता। अगले ही दिन जमींदार ने पादरी को काउन्टी की जेल में डलवा दिया, क्योंकि वह कर्जदार था।

पादरी का परिवार अब और भी अधिक सकट में पड़ गया। धनाभाव ने अपनी भयकर दाढ़ें खोल दीं।

जेल में ही पादरी को यह हृदय-विदारक सवाद मिला कि ओलीविया बीमार होकर इस ससार से सिधार गई। इसी घटना के बाद एक दिन उसकी पत्नी ने रो-रोकर उसे यह समाचार दिया कि गुडे उसकी बेटी सोफिया को पकड़कर ले भागे थे।

मुसीबतों के ढेर ने पादरी को अधमरा-सा कर दिया। पादरी का पुत्र जॉर्ज इस अत्याचार के विषय में पिता का पत्र पाकर अत्यन्त क्रुद्ध हो उठा और परिवार को धोखा देनेवाले तरुण जमींदार थौर्नेहिल को दण्ड देने उसके घर पहुंचा। जमींदार के नौकरों ने उसपर हमला कर दिया और जब जॉर्ज ने उनमें से एक को घायल कर दिया तो जॉर्ज को भी गिरफ्तार करके पिता के पास ही जेल में भेज दिया गया।

पादरी अब बहुत बीमार हो गया। उसने अन्तिम प्रयत्न किया। तरुण जमींदार थौर्नेहिल के चाचा सर विलियम थौर्नेहिल को उसने सारी घटना लिख दी और उनके उत्तर की प्रतीक्षा पर आशा लगाए रहा। और कोई चारा नहीं था। मृत्यु निकट आती लग रही

थी। वह परमात्मा से अपने अपराधों की क्षमा मांगता, नित्य प्रार्थना करने लगा।

जब निराशा की पराकाष्ठा हो गई, एक दिन बन्दीगृह में सोफिया के साथ बर्चेल ने प्रवेश किया।

"पापा!" वह चिल्ला उठी! "यही वे वीर हैं जिन्होंने मेरी रक्षा की है।"

पादरी ने बर्चेल के गुणों को स्वीकार किया और कहा कि उससे अधिक उसकी पुत्री के लिए और कोई व्यक्ति योग्य नहीं था।

तब पता चला कि सर विलियम थौर्नहिल और कोई नहीं, स्वयं बर्चेल ही था।

जो दो गुंडे तरुण ज़मीदार थौर्नहिल ने सोफिया को उड़ाने के लिए तैनात किए थे उन्हें देखकर अब वह स्वयं कांप उठा। उसी समय एक व्यक्ति और आया। वह वही ठग था जिसने मौजेज़ को ठगा था। दूसरी बार घोड़ा बेचने जब स्वयं पादरी गया था, तब उसीने पादरी को भी धोखा दिया था। इस समय उसी ठग ने बताया कि तरुण ज़मीदार थौर्नहिल और ओलीविया का सचमुच विवाह हुआ था। ज़मीदार के गुमाश्ते ने एक असली पादरी को बुला लिया था, ताकि वह इस शादी से अपने मालिक पर अपना असर डालता रह सके।

तभी पादरी को पता चला कि ओलीविया अभी तक जीवित थी। ओलीविया की मौत की खबर भी ज़मीदार और विल्मौट की शादी का रास्ता साफ करने को उड़ाई गई थी, वर्ना पादरी इसमें व्याघात डालने का प्रयत्न करता।

जब तरुण ज़मीदार सब तरफ से घिर गया तब वह अपने चाचा थौर्नहिल के चरणों पर दया की भीख मांगता हुआ गिर पड़ा।

सर विलियम ने कहा, "तेरे अपराध, पाप और अकृतज्ञताएं, किसी भी प्रकार की करुणा की अधिकारिणी नहीं हैं। किन्तु मैं फिर भी तुझपर दया करूंगा। तुझे केवल ज़रूरी खर्चा मिलेगा और जो कभी तेरी जायदाद थी, उसका तिहाई भाग ओलीविया का होगा।"

अगले दिन सर विलियम थौर्नहिल से सोफिया का विवाह हो गया। अब जॉर्ज भी बन्दीगृह से मुक्त हो चुका था। मिस विल्मौट से उसका परिणय हो गया। उसी सुबह सवाद आया कि जो सौदागर पादरी का धन ले भागा था, वह एण्टवर्प में गिरफ्तार हो चुका था और पादरी का धन फिर मिल चुका था।

पादरी के जीवन के सब काम अब पूरे हो चुके थे। उसकी कामना थी कि वह अब अनन्त विश्राम करे। वह बुरे दिनों में सहन करने के लिए अपेक्षाकृत अधिक शक्ति अर्जित करना चाहता था।

प्रस्तुत उपन्यास अठारहवीं सदी की एक महान कृति है जिसमें तत्कालीन समाज और व्यक्तियों का बहुत ही अच्छा चित्रण हुआ है। गोल्डस्मिथ में भाषा की चुहल काफी है और उपन्यास में करुणा और मनोरंजक तत्त्व दोनों ही समान रूप से हमारे सामने आते हैं। प्रस्तुत उपन्यास पादरी की आत्मकथा के रूप में लिखा गया है। वही सारी कथा सुनाता है।

सुख की खोज

[विल्हेम मीस्टर[1]]

गेटे, जोहान वुल्फगैंग वान : जर्मन महाकवि गेटे का जन्म फ्रैंकफोर्ट-आन-मेन में १७४९ में हुआ। आप एक राज्य-परामर्शदाता के पुत्र थे। आपने लीपजिग और स्ट्रैसबर्ग में शिक्षा प्राप्त की। बीस वर्ष के भीतर ही अपनी प्रारंभिक रचनाएं आपने प्रकाशित कराईं। १७७५ में आपको ड्यूक कार्ल आगस्ट मिले, जो सेक्स-वाइमार के शासक थे। गेटे को उन्होंने अपना राज्य-सचिव बना लिया। उनकी थुरिन्जियन रियासत कुछ ही दिनों में संस्कृति का केन्द्र बन गई। ड्यूक के नाट्यगृह में गेटे ही सूत्रधार थे और आपने उनके खेती के फार्मों तथा खानों में नये वैज्ञानिक सिद्धांतों द्वारा कार्य प्रारंभ कराया। १८०६ में गेटे ने क्रिस्टियेन वल्पियस नामक महिला से विवाह किया जो आपके घर की देखरेख गत १८ वर्षों से करती थी। २२ मार्च, १८३२ को वाइमार में आपका देहांत हो गया। आप कवि, उपन्यासकार, नाटककार, राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक तथा दार्शनिक सभी कुछ थे। आपने यूरोप पर गहरी छाप डाली थी। आपके समय में नेपोलियन ने जर्मनी को पराजित किया था। किन्तु जब गेटे के भव्य व्यक्तित्व को नेपोलियन ने देखा था तो उस गर्वीले सम्राट के मुख से भी निकल गया था कि वह एक महापुरुष के सामने आ गया था।

'विल्हेम मीस्टर' (सुख की खोज) गेटे का महान और प्रसिद्ध उपन्यास है। इसका पहला भाग 'विल्हेम मीस्टर्स लारेंजिरशिप' के नाम से १७९५-९६ में छपा। फिर आगे चलकर १८२१-२९ में दूसरा भाग 'विल्हेम मीस्टर्स वर्नीमेन यिमर्जो' के नाम से छपा। जर्मन साहित्य में गेटे का जो स्थान है, वह अमर है, किन्तु गेटे अब विश्व-साहित्य का अंग बन चुके हैं।

सुन्दरी अभिनेत्री मरियाना को धनी नौबेर्ग की तुलना में विल्हेम मीस्टर ही अधिक पसन्द आया। नौबेर्ग के वे उपहार उसका हृदय नहीं जीत सके। मरियाना की नौकरानी बार्बरा के शब्दों में विल्हेम एक अनुभवशून्य व्यापारी का पुत्र था। विल्हेम के पिता को पुत्र का एक अभिनेत्री से सम्बन्ध रखना पसन्द नहीं था। लेकिन बावजूद इसके विल्हेम नाट्य गृह में अपनी मित्र से मिलने जाया करता था। अपने लड़कपन में उसने बड़े दिन पर एक कठपुतली का तमाशा देखा था। तब से ही नाटक के प्रति उसका हृदय सदैव भुका रहता। उसका मित्र और होनेवाला रिश्तेदार सदैव मरियाना के विरुद्ध बातें करता। वह विल्हेम को बार-बार बताता कि मरियाना उससे प्रेम नहीं करती थी।

---

1. Wilhelm Meister (Johann Wolfgang Von Goethe)

और यह कि उसका एक प्रेमी और था। परंतु विल्हेम पर जैसे उन बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। एक बार उसके पिता ने उसे व्यापार के लिए यात्रा करने को कहा। परंतु विल्हेम जब चला तो अपने मित्र सर्लो के पास गया, जोकि एक नाट्यगृह चलाता था। विल्हेम ने विचार किया कि वहां जाकर वह अभिनेता बने और बाद में सुविधानुसार मरियाना से विवाह कर ले।

विल्हेम ने ये सारी बातें एक पत्र में लिख ली और मरियाना से मिलने गया। लेकिन मरियाना का व्यवहार उसने शुष्क-सा पाया। दुपहर का समय था। विल्हेम ने पत्र को जेब से बाहर नहीं निकाला। मरियाना का गले में लपेटने का रूमाल उठाकर वह लौट आया। आधी रात हो गई। वह बेचैन-सा सड़कों पर घूमता रहा। तभी उसे लगा जैसे मरियाना के घर से कोई काली छाया-सी निकली। कौन होगा वह व्यक्ति ? यही उसके मस्तिष्क में चक्कर लगाने लगा। घर आकर उसने इसे भूल जाना चाहा। रूमाल जेब से निकाला तो उसने उसके कोने में एक पत्र बंधा देखा। यह मरियाना ने नौर्बर्ग को लिखा था और बड़े प्रेम से उसे संध्याकाल में बुलाया था। इस पत्र को देखकर विल्हेम को जैसे काठ मार गया। उसकी यंत्रणा असह्य-सी हो गई। और वह इस धक्के को बर्दाश्त नहीं कर सका। ज्वर ने उसे घेर लिया। उस तीव्र ज्वर से जब वह मुक्त हुआ, तब तक मरियाना की नाटकमंडली उस नगर को छोड़कर जा चुकी थी। अब वह फिर व्यापार में लग गया। पिता ने उसे काम सौंपकर भेज दिया। वह मार्ग में एक रमणीक पार्वत्य नगर में कुछ विश्राम लेने को रुक गया। वहां उसे दो बेकार अभिनेता मिले। एक तो लअर्टीज था और दूसरी थी सुन्दरी फिलीना। विल्हेम ने अपना मनोरंजन प्राप्त कर लिया। तभी रस्सियों पर नाच दिखानेवालों की एक मंडली आ गई। उसमें बहुत सुन्दर, गंभीर स्वभाव की मिनन नामक एक बारह वर्षीया बालिका थी। वह विल्हेम से बहुत हिल-मिल गई। विल्हेम ने उसे उस दल से छुटकारा दिलाया। यहीं उसके साथ एक दाढ़ीवाला विचित्र-सा व्यक्ति और आ मिला, जो कि हार्प बजाने में बड़ा कुशल था। वह तारों को ऐसा झनझनाता कि सुननेवाले विमुग्ध हो जाते।

मैलिना नामक एक अभिनेता और आ गया और विल्हेम ने कम्पनी बनाने में उसकी सहायता दी। उनके दल में एक बुजुर्ग भी था, जिसे सब लोग विद्वान कहते थे, क्योंकि वह बड़ी लच्छेदार भाषा का प्रयोग करता था। उस विद्वान ने विल्हेम को बताया कि वह मरियाना के साथ रंगमंच पर काम कर चुका था। उसीने यह भी बताया कि जब मरियाना विल्हेम के नगर से जा रही थी, तब वह मां बननेवाली थी। मरियाना एक लाख की मदद में छूट गई थी। विद्वान ने ही उसके प्रसव का व्यय दिया था परन्तु वह एक दुश्चरित्रा-बूढ़ा स्त्री थी जिसने धन पाने के बाद उसे अपना समाचार तक नहीं भेजा था। किंतु विल्हेम मरियाना को एक अधमूली, दीन, जर्जर माता के ही रूप में देख सका, जो शायद उसीके पुत्र को लिए, बेबस-सी भटकती फिर रही थी।

निकट ही एक काउंट का स्थान था। उसके यहां राजकुमार अतिथि बनकर ठहरा हुआ था। काउंट ने इस मंडली को अपने किले में बुलाया, ताकि राजकुमार का मनोरंजन हो सके। मंडली को इससे काफी मुनाफा हुआ। काउंट की पत्नी ने विल्हेम में कुछ

दिलचस्पी ली। लेकिन इन लोगों का एक खेल गलत बैठा और काउंट तथा उसकी पत्नी दोनों ने ही फिर दिलचस्पी नहीं ली। विल्हेम को काउंट के कपड़े पहनकर आना था कि काउंटेस भ्रम में पड़ जाए। लेकिन काउंटेस की जगह उसे काउंट ने देखा और उसे लगा कि वह एक भूत देख रहा था।

किले में ही विल्हेम को जार्नो मिला। यह राजकुमार का खास मुँहलगा था। बड़ा वाकचतुर व्यक्ति था। उसने नाटकमंडली में काम करने के लिए विल्हेम को खूब फटकारा। लेकिन उसने इसी बातचीत में शेक्सपियर की कृतियों का परिचय विल्हेम को दिया।

काफी पैसे मिल जाने से अभिनेतागण एक सुदूर नगर की ओर चल पड़े। जहां मैलिना को आशा थी कि वह अपनी कम्पनी जमा लेगा।

किंतु रास्ते के जंगल में उन लोगों पर डाकुओं ने हमला कर दिया। उनको रोकते समय विल्हेम काफी घायल हो गया। सब लोग इधर-उधर भाग निकले। जब विल्हेम को होश आया तो उसके पास फिलीना और मिनन के अतिरिक्त और कोई नहीं था।

तभी एक घुड़सवारों का दल उधर से निकला। उस दल का नेतृत्व एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री कर रही थी। विल्हेम को लगा जैसे वह परियों की रानी थी। उसके साथ एक बुजुर्ग था, जिसे वह चाचा कहती थी। उन्होंने विल्हेम की सुश्रूषा की। विल्हेम फिर मूर्च्छित हो गया। और जब उसने आंखें खोलीं, उसके उपकारक वहां से जा चुके थे।

निकट के ही एक ग्राम में फिलीना और मिनन की सेवा से धीरे-धीरे विल्हेम फिर स्वस्थ हो गया। और तब वह अपने मित्र सर्लो के पास गया। वह बिखरे हुए अभिनेताओं का फिर से पता लगाने लगा। परन्तु उसे परियों की रानी के बारे में कुछ भी पता न चल सका।

सर्लो की मंडली में विल्हेम ने हैमलेट नामक नाटक के नायक का पार्ट करना स्वीकार कर लिया। सर्लो की बहिन ऑरेलिया को ओफीलिया का पार्ट दिया। ऑरेलिया एक युवती विधवा थी। उसे लोथारियो नामक एक बैरन से प्रेम था। न जाने उस प्रेम में क्यों कुछ अवरोध आ गया था और ऑरेलिया इसलिए बहुत खिन्न रहती थी। सर्लो के घर में एक खूबसूरत, तीन साल का बच्चा था। फिलीना का कहना था कि वह ऑरेलिया का किसी अन्य प्रेमी से हुआ पुत्र था। बच्चे को फैलिक्स कहते थे। वह बिलकुल अल्हड़ था। मिनन ने शीघ्र ही उससे अच्छी दोस्ती कर ली।

इसी बीच विल्हेम को अपने पिता के पत्र मिले। उसने जो परिवार को पत्र न लिखकर उपेक्षा दिखाई थी उन्होंने इस अपराध को क्षमा कर दिया था। इसी समय दूसरा पत्र आया, जिसमें उसे ज्ञात हुआ कि उसके पिता इस संसार से उठ गए थे। तब विल्हेम ने निश्चय किया कि वह फिर से रंगमंच और नाटक-मंडली में ही कार्य करेगा और उसने एक सबंधी पर परिवार के प्रबन्ध का भार छोड़ दिया।

हैमलेट नाटक खेला गया। इसके बाद ही दो घटनाएं हो गईं। हार्प बजानेवाले अपपागल दाढ़ीवाले ने आग लगा दी और उसमें फैलिक्स करीब-करीब घिर ही गया। फिलीना के पास एक व्यक्ति आता था। फिलीना ने विल्हेम को बताया कि वास्तव में वह व्यक्ति

एक स्त्री था। उसके केश बहुत सुन्दर थे और उसका नाम मरियाना था। परन्तु विल्हेम को उसने उससे बातें न करने दीं और वह उसके साथ चली गई।

ऑरेलिया बहुत बीमार पड़ गई। उसने विल्हेम को बैरन लोथारियो के नाम एक पत्र दिया जो कि उसके मर जाने के बाद ही बैरन के हाथों पहुंचाया जाने को था। उसकी वेदना से व्याकुल होकर विल्हेम ने मिनन को श्रीमती मेलिना की देखरेख में छोड़ा और स्वयं लोथारियो के किले की ओर चल पड़ा।

विल्हेम ने पत्र दे दिया, किन्तु लोथारियो को अगले दिन सुबह एक द्वंद्वयुद्ध करना था, और वह उस समय उसमें व्यस्त था। विल्हेम वहीं किले में ठहर गया और अगले दिन उसने लोथारियो को काफी घायल अवस्था में लौटते देखा। जिस डॉक्टर ने बैरन का इलाज किया उसके पास भी वैसा ही बटुआ था, जैसाकि परियों की रानी के चाचा के पास विल्हेम ने देखा था। किन्तु विल्हेम यह नहीं जान सका कि वह बटुआ इस डाक्टर के पास कैसे आ गया था। लोथारियो के घर में एक तो जार्नो था, जिसके राजकुमार की मृत्यु हो चुकी थी और एक पादरी था। पादरी ऐसे ही राजकुलों में शिक्षा दिया करता था। लोथारियो के घर की देखभाल लिडिया करती थी और अब जार्नो और पादरी ने विल्हेम को एक काम सौंप दिया कि वह लिडिया को लोथारियो की टैरेसा नामक मित्र के यहां पहुंचा दे, क्योंकि लिडिया के वासनामय प्रेम की अभिव्यक्ति बैरन की शीघ्र आरोग्य-प्राप्ति में बाधा पहुंचा रही थी।

टैरेसा एक असाधारण स्त्री थी। वह पुरुषों की भांति सारे प्रबन्ध करने में दक्ष थी। विल्हेम को पता चला कि एक बार लोथारियो इस स्त्री से विवाह करने ही वाला था कि उसे पता चला कि पहले वह स्वयं ही टैरेसा की मां से भी प्रेम कर चुका था। तब बैरन ने लिडिया को बसा लिया। लिडिया सुन्दरी थी और टैरेसा के साथ ही पली थी।

विल्हेम जब लौटा तो उसने देखा कि लोथारियो का स्वास्थ्य लगभग सुधर चुका था। टैरेसा को देखकर ही वह समझ गया था कि ऑरेलिया की उपेक्षा किसलिए की गई थी। जार्नो ने उसे बताया कि फैलिक्स ऑरेलिया का पुत्र नहीं था, बल्कि एक वृद्धा उसे वह बालक सौंप गई थी और उस वृद्धा के कथनानुसार फैलिक्स स्वयं विल्हेम का ही पुत्र था। विल्हेम शीघ्र सर्लो के घर पहुंचा और उस वृद्धा से मिला। उसने देखा कि वह कोई और नहीं, बार्बरा ही थी। उसकी बातचीत में कटुता थी। उसने बताया कि मरियाना मर चुकी थी। यद्यपि नौर्बर्ग ने उसे अनेक प्रलोभन दिए थे, फिर भी कभी मरियाना ने उसके सामने समर्पण नहीं किया था क्योंकि वह विल्हेम से प्रेम करने लगी थी। इस घटना के काफी बाद ही विल्हेम को पता चला कि वास्तव में फिलीना के साथ एक पुरुष ही रहता था। उसने गलत कहा था कि वह एक छद्मवेशधारिणी स्त्री थी। तलाश करने पर विल्हेम को मालूम हुआ कि वह व्यक्ति लोथारियो का छोटा भाई फ्रैड्रिक था। मरियाना ने अपने पीछे एक पत्र छोड़ा था। जब विल्हेम ने उसे पढ़ा तो वह आत्मग्लानि और घोर दुःख से पीड़ित हो उठा, किन्तु अब बहुत देर हो चुकी थी और उसके पास दुःखी होने के अतिरिक्त और कोई चारा भी नहीं था।

विल्हेम ने फैलिक्स को साथ लिया और लोथारियो के दुर्ग को चल पड़ा। उसने

मिनन की बीमारी देख उसे टैरेंसा के पास छोड़ा। टैरेंसा ने उसे एक ऐसे मित्र के पास भेज दिया जो कुछ और लड़कियों को भी पढा रहा था।

एक दिन सध्या के समय जार्नो विल्हेम को दुर्ग के एक गुप्त भाग में ले गया। कमरा सजा हुआ था। वहां एक व्यक्ति ने उससे कहा, "शिक्षक का कार्य यह नही है कि वह गलती करने से रोके। उसका कार्य है गलती करनेवाले विद्यार्थी को सुधारे।"

यह कहकर पादरी ने विल्हेम को एक कागज़ का पुलिंदा दिया। जिसमें लिखा था, "जब तक व्यक्ति ठीक कार्य करता है, वह नही जानता कि वह क्या कर रहा है। किन्तु गलत बात करते समय हम खूब जानते हैं कि वह ठीक नही है।" दूसरे कागज़ पर विल्हेम के जीवन की घटनाएं उल्लिखित थीं। इसी प्रकार के अन्य कागज भी दुर्ग मे अन्यों को दिए गए। विल्हेम को ज्ञात हुआ कि पादरी के सिद्धान्तानुसार युवकों को उपदेश नहीं देना चाहिए, वरन् उनके गुरुओं को उनकी रुझान देखकर उनके अभीष्ट की ओर उनको पहुंचाना चाहिए।

विल्हेम ने थियेटर छोड़ देने का निश्चय किया और सब लोगों ने इस निश्चय का स्वागत किया।

फेलिक्स को शिक्षा नही मिल रही थी, इसलिए विल्हेम ने मन ही मन तय कर लिया और टैरेंसा को पत्र लिखा कि वह उसकी पत्नी बन जाए और उसके पुत्र का माता के समान लालन-पालन करे। उसका उत्तर आने के पहले विल्हेम को लोथारियो की बहिन नटालिया के घर बुलाया गया। विल्हेम को पता चल गया था, काउंटेस बैरन की बहिन भी थी। अब उसे ज्ञात हुआ कि उसके एक बहिन और थी—वही जिसके पास टैरेंसा ने मिनन को भेजा था। परिस्थिति ठीक नही थी और विल्हेम की आवश्यकता पड़ गई थी।

वह नटालिया के भव्य भवन मे पहुंचा। एक तरुणी ने उसको देखा तो उठकर उसके पास आई। उसको यह देखकर परमाश्चर्य हुआ कि वह तो स्वय परियो की रानी थी। वह अपने घुटनों पर झुक गया और भावावेश में उसने उसके हाथों को चूम लिया। विल्हेम को पता चला कि उसके चाचा डॉक्टर का देहान्त हो चुका था। और यही उसका घर था। मिनन की हालत खराब थी। दिन-रात किसी चिन्ता मे घुल रही थी। शायद हार्पवादक की स्मृति उसे सता रही थी।

एक-दो दिन मे टैरेंसा का पत्र आया। लिखा था, "मैं तुम्हारी हू।" लेकिन उसने यह भी लिखा था कि लोथारियो को पूरी तरह भुला देना उसके लिए असभव था। नटालिया और विल्हेम बैरन को सूचना देने ही वाले थे कि जार्नो आ गया और उसने बताया कि टैरेंसा अपनी प्रसिद्ध मां की पुत्री प्रमाणित नही हुई और अब लोथारियो से उसके विवाह मे कोई बाधा शेष नही थी।

टैरेंसा आ गई और मिनन के निर्बल शरीर के लिए अब मिलन का आवेश घातक प्रमाणित हुआ। विल्हेम ने अपने शोक में टैरेंसा को दिए वचन का पालन करना छोड़ दिया। उसे परियो की रानी भी मिल गई।

इन्हीं दिनो एक मार्क्वेस नामक इटली-निवासी आ गया जो कि लोथारियो का मित्र था। उसने कुछ निशानियों से यह जान लिया कि मिनन उसकी भतीजी थी, जिसे

नट चुरा लाए थे। मंत्रवादक ही मितन का पिता प्रमाणित हुआ। जब उसे यह ज्ञात हुआ कि जिस स्त्री को उसने प्रेम किया था वह बहिन भी थी तो उसकी बुद्धि भ्रमित हो गई और वह निरुद्देश्य कहीं निकल गया। अब विल्हेम की अन्तिम समस्या भी सुलझ गई। लोथारियो ने उसका हाथ थामकर कहा, "यदि मेरी बहिन से तुम्हारा गुप्त संबंध था, जिसपर मेरा और टेरैसा का संबंध निर्भर था, तो क्या हुआ ? उसने प्रतिज्ञा की है कि हम दोनों दम्पति पवित्र वेदी के सम्मुख उपस्थित होंगे।"

तब बैरन विल्हेम को नटालिया के पास लाया जिसने अपना प्रेम उसके प्रति स्वीकार किया।

विल्हेम ने कहा, "सचमुच मुझे जो सुख और आनन्द प्राप्त हुए हैं, मैं संसार में किसी भी वस्तु से उन्हें बदल नहीं सकता।"

प्रस्तुत उपन्यास में गेटे ने कलाकारों के तत्कालीन जीवन पर प्रकाश डाला है। उसने प्रेम को माध्यम के रूप में लिया है और व्यक्ति की सुख की खोज को प्रधानता दी है। उसका वातावरण रूमानी है, परन्तु तत्कालीन समाज का उसने बहुत सुन्दर चित्रण किया है। सुख और आनन्द की तृप्ति व्यक्ति को किन अवस्थाओं में मिलती है, गेटे का उद्देश्य इसे दिखाने में रहा है।

जय-पराजय

[प्राइड ऐण्ड प्रेजूडिस[1]]

ऑस्टिन, जेन : अंग्रेजी उपन्यासकार जेन ऑस्टिन गांव के गिरजे के एक पादरी की पुत्री थीं, शहरों से दूर उन्होंने सारी आयु गांव में ही बिता दी। १६ दिसम्बर, १७७५ को हैम्पशायर के स्टीवेंन्सन नामक स्थान में आपका जन्म हुआ। जीवन-भर आप अविवाहित रहीं और १८ जुलाई, १८१७ को जब विन्चैस्टर में आपका देहान्त हो गया, तो आप वहीं गिरजे के पास के कब्रिस्तान में दफना दी गईं।

आपके एकाकी जीवन की झांकी आपके उपन्यासों में स्पष्ट हो जाती है। आपने समाज का बहुत ही सीमित दायरा देखा। गांव के ऊंचे खानदान और उच्चवर्गीय व्यावसायिकों का समाज, यही आपका क्षेत्र था। लिखना आपने काफी जल्दी आरम्भ कर दिया था। किन्तु तत्कालीन सामाजिक मर्यादा के कारण आपको अपने उपन्यासों को अनाम ही प्रकाशित करवाना पड़ा।

'प्राइड ऐण्ड प्रेजूडिस' (जय पराजय) सन् १८१३ में छपा। यह आपका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है।

धन-सम्पत्तिशाली व्यक्ति के लिए अविवाहित होने पर पत्नी की आवश्यकता पड़ती ही है, ऐसा प्रायः ही स्वीकार किया जाता है।

चार्ल्स बिंगले एक धनी व्यक्ति था। उसने नीदरफील्ड पार्क नामक एक भव्य-स्थान किराये पर लिया। वह अविवाहित था।

इस घटना से लॉंगबौर्न में लोगों में बातें चल पड़ीं, क्योंकि वहां ऐसे व्यक्ति का आकर बसना एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। पड़ोस में बैनेट-परिवार रहता था। उसे विशेष आकर्षण हुआ क्योंकि उसमें विवाह योग्य लड़कियां थीं, जो धनी और क्वारे पुरुष की प्रतीक्षा कर रही थीं।

लॉंगबौर्न में सामाजिक सम्पर्क बढ़ाने के कुछ स्थान थे। जहां सब एकत्र होते थे, वह एसेम्बलीहॉल नाम से ख्यात था। वहां सामूहिक नृत्य होते थे। उनमें बॉलनृत्य प्रमुख था। शीघ्र ही यह भी सुनने में आया कि चार्ल्स बिंगले अपने घर के लोगों के साथ निकट भविष्य में होनेवाले बॉलनृत्य में भाग लेने को उपस्थित होगा।

लॉंगबौर्न में बैनेट-परिवार विख्यात और महत्त्वपूर्ण था। श्री बैनेट की पांच

---

१. Pride and Prejudice (Jane Austen)। इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद 'जय-पराजय' नाम से शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली में छपा है। अनुवादक हैं विद्याधर विद्यालंकार।

अविवाहित पुत्रियां थीं और उनके पास उनका विवाह कर देने को अधिक धन भी नहीं था। विरासत में भी उन लड़कियों को अधिक धन मिलनेवाला नहीं था।

श्रीमती बैनेट एक सुन्दरी महिला थीं और उन्होंने अपनी सुन्दरता को अभी तक बना रखा था। न वे बहुत समझदार थीं, न उन्हें संसार की ही अधिक जानकारी थी। बल्कि उनका मिजाज भी ठिकाने नहीं रहता था। यद्यपि उन्होंने अपने विवाहित जीवन के २३ वर्ष बिता दिए थे, फिर भी वे अपने पति के हृदय को समझने की क्षमताविहीन-सी केवल अपनी धुन में ही रहती थीं। श्री बैनेट का व्यंगात्मक हास्य, गांभीर्य, उनका सनकीपन, सभी कुछ ऐसे थे कि अपनी पत्नी के लिए वे एक रहस्य-सा बने हुए थे। पति और पत्नी के बीच एक दूरी-सी बनी रहती थी।

आखिर वह दिन आया और बैनेट-परिवार बॉलनृत्य में पहुंचा जहां चार्ल्स बिंगले दिखाई दिया।

देखने में अच्छा, अकृत्रिम और सज्जन चार्ल्स बिंगले अपनी दो बहनों के सा मौजूद था। बड़ी का पति हर्स्ट नामक व्यक्ति भी वहां उपस्थित था। वहां एक और युव भी था, जिसका नाम था फिट्ज विलियम डार्सी। उसके बारे में कहा जाता था कि व बहुत धनी था। उसकी आय वर्ष-भर में दस हजार पौंड थी जो निस्सन्देह एक बड़ी रकम थी। डार्सी की सुन्दरता से सब लोग प्रभावित थे और उसकी प्रशंसा भी किया करते थे किन्तु वह इतना अधिक घमण्डी था कि उसके व्यवहार ने लोगों को उसके विरुद्ध कर दिया था और जहां पहले लोग उसके प्रशंसक थे, वहां अब वे उससे घृणा-सी करने लगे थे।

बिंगले वैसा अभिमानी नहीं लगता था। वह प्रत्येक बार नृत्य में भाग लेता था। किन्तु डार्सी में यह सहज भाव नहीं था। वह हर बार नृत्य नहीं करता था। वह प्रतीक्षा करता था कि कब लोग नाचते हुए घूमते हुए ऐसे आएं कि वह श्रीमती हर्स्ट और कैरोलीन बिंगले के साथ ही नाच सके। और हुआ यह कि न तो वह किसी अन्य स्त्री के साथ नाचा, न उसने किसीसे परिचय ही किया। वह तो किसीसे भी मिलना नहीं चाहता था। उसके इस घमंड से अन्य स्त्रियों के मन में एक विक्षोभ-सा भर गया।

ऐलिजाबैथ बैनेट-परिवार में दूसरी बेटी थी। नाचते समय उसे अपना जोड़ीदार एक बार नहीं मिल पाया, तो वह बाहर बैठने को मजबूर हुई। वहां श्री डार्सी और श्री बिंगले परस्पर बातें कर रहे थे। ऐलिजाबैथ ने उन बातों को सुना। वे दोनों इस बात से बिलकुल अनभिज्ञ थे कि कोई लड़की उनकी बातों को बैठी-बैठी सुन रही थी।

डार्सी ने बातचीत के दौरान में बिंगले से कहा, "क्या कहा ? मैं इन स्थानीय स्त्रियों के साथ नाचू ? यह तो मुझे सजा देने के बराबर है !"

ऐलिजाबैथ यह सुनकर जल उठी, परन्तु तभी उसने फिर सुना, "हां ! बैनेट-परिवार की बड़ी बेटी जेन जरूर खूबसूरत है।"

तभी डार्सी की दृष्टि एलिजाबैथ पर पड़ गई। उसे क्या पता था कि वह सब सुन रही थी। उसने अनजाने ही कहा, "वैसे तो यह भी आकर्षक है, लेकिन यह कोई ऐसी सुन्दरी नहीं है कि मेरे हृदय में अपने प्रति कोई आकर्षण उत्पन्न कर सके।"

यद्यपि ऐलिज़ाबेथ के हृदय में इन बातों से श्री डार्सी के प्रति सौहार्द तो नहीं जन्मा, लेकिन वह थी मज़ाकिया तबियत की लड़की। उसने अपनी मित्रों को यह बात बड़े मज़े ले-लेकर सुनाई। इस घटना ने उन सबका मनोरंजन किया।

किन्तु इतने पर भी बिंगले और बैनेट-परिवारों में शीघ्र ही मित्रता स्थापित हो गई। दोनों के सम्बन्ध बढ़ चले।

शीघ्र ही लोगों में यह प्रकट होने लगा कि चार्ल्स और जेन एक-दूसरे के प्रति आकर्षित थे। चार्ल्स की बहिनों को जेन से भी अधिक प्रिय हुई ऐलिज़ाबेथ, लेकिन श्रीमती बैनेट उनको एक मुसीबत नज़र आती थी। उनकी पुत्री मेरी उन्हें नीरस लगती थी और वे लिडिया तथा किटी के साथ उसे भी महत्त्व नहीं देती थी। उनकी राय में ये लड़कियां व्यर्थ ही ही-ही करके हंसनेवाली थी, जो अपना सारा समय पुरुषों के पीछे घूमने में व्यतीत किया करती थी।

श्री डार्सी के मन में कुछ और बात पैदा हो गई थी। वे ऐलिज़ाबेथ के प्रति बड़ी चौकस दिलचस्पी रखते थे। ऐलिज़ाबेथ की काली आंखों में उन्हें अब भावपूर्णता दिखाई देने लगी थी और वे उसकी प्रशंसा भी किया करते थे। अब वह उन्हें अच्छी लगने लगी थी। उससे उनकी तबियत बहलने लगी थी। उसके व्यवहार में उन्हें एक ऐसी सरलता दिखती जो आकर्षक थी। ऐलिज़ाबेथ सहज थी, और उन्हें उसमें कृत्रिमता नहीं मिलती थी।

धीरे-धीरे बातें खुलने लगीं। एक दिन बिंगले की बहिन ने डार्सी से पूछा, "अब आपके लिए मैं किस दिन आनन्द मनाऊं?"

उसने स्पष्ट ही बात में एक रहस्य का उद्‌घाटन करने की चेष्टा की थी।

किन्तु डार्सी चौकस थे। बोले, "सचमुच! स्त्रियों की कल्पना भी कितनी तेज़ी से उड़ती है।"

बात साफ नहीं हुई।

इन्हीं दिनों बिंगले परिवार में कुछ दिनों के लिए दोनों बड़ी बहिनें आईं। तब बैनेट-परिवार की बड़ी पुत्री जेन बिंगले-परिवार में मिलने के लिए गई, वहां उसे बड़े ज़ोर का जुकाम और बुखार हो आया। उसकी तबियत खराब हो गई। इस बीमारी में वह बिंगले-परिवार में आकर रहने लगी। श्री बैनेट ने भी ऐसी तरकीबें कीं कि उनकी बेटी बिंगले-परिवार में अधिक से अधिक दिन बनी रहे। इस निवासकाल में जेन बिंगले-परिवार में अधिक प्रिय हो गई और ऐलिज़ाबेथ उतनी प्रिय नहीं हो सकी। बिंगले-परिवार में कैरोलीन अवश्य उसे बहुत आकर्षक मानती थी, किन्तु श्रीमती हर्स्ट उसे जीभ की बहुत तीखी माना करती थी।

इन सम्बन्धों के बावजूद ऐलिज़ाबेथ के हृदय में श्री डार्सी के प्रति पूर्वग्रह बना ही रहा। उनके वे वाक्य उसे अभी तक याद थे।

तभी वहां श्री विकहैम आए। वे सुन्दर थे, स्वभाव के मीठे थे। लौंगबौर्न के सबसे पास मेरीटोन नाम का एक कस्बा था। विकहैम वहां एक अफसर बनकर सैनिक रैजीमेंट में आए थे। उस युवक अफसर से जब ऐलिज़ाबेथ की बातचीत हो गई तो डार्सी के

प्रति उसके हृदय में जो पूर्वग्रह था, वह पहले की तुलना में कहीं अधिक परिवर्धित हो गया। इसका कारण यह था कि विकहैम का पिता डार्सी के पिता की सेवा में था और बहुत विश्वासपात्र था। उसकी सेवाओं से प्रसन्न होकर डार्सी के पिता ने विकहैम को पुरस्कारस्वरूप कुछ सम्पत्ति देने की इच्छा की थी। डार्सी ने बड़ी निष्ठुरता से पिता की इस इच्छा को ठुकरा दिया था और विकहैम को बिल्कुल ही वंचित कर दिया था। ऐलिज़ाबेथ को डार्सी की यह निष्ठुरता स्वार्थस्वरूप दिखाई दी और उसका पूर्वग्रह पहले से भी अधिक सशक्त हो उठा।

बिंगले और जेन के पारस्परिक सम्बन्ध बढ़ते जा रहे थे। ऐसा लग रहा था कि शीघ्र ही बिंगले किसी दिन बैनेट-परिवार में आकर जेन से विवाह का प्रस्ताव रखेगा। बॉलनृत्य में सब फिर मिले। वहां बैनेट-परिवार का व्यवहार ऐसा रहा कि स्वयं ऐलिज़ाबेथ को भी पसन्द नहीं आया। अचानक ही नीदरफ़ील्ड से सारा बिंगले-परिवार शहर चला गया। और तो कोई समझ नहीं सका, किन्तु ऐलिज़ाबेथ ने नृत्य बेला में अपने परिवार के व्यवहार को ही इसके लिए दोषी ठहराया।

इन्हीं दिनों लॉंगबौर्न में पादरी के उत्तराधिकारी बनकर विलियम कॉलिन्स आए। वे बैनेट-परिवार से मिलने को उपस्थित हुए। यह आदमी चटक-मटक दिखाने का शौकीन था। न यह व्यवहारकुशल था, न मजाक ही समझ पाता था।

एक दिन इस युवक पादरी ने ऐलिज़ाबेथ से विवाह का प्रस्ताव किया। ऐलिज़ाबेथ उसकी लम्बी रटी-रटाई-सी वक्तृता सुनती रही और अन्त में उसने उससे विवाह करना अस्वीकार कर दिया। कॉलिन्स पर उल्टा प्रभाव पड़ा। वह यही कहता रहा कि ऐलिज़ाबेथ केवल उसे सताने के लिए ऐसा कहती थी, वैसे वह उसके विरुद्ध नहीं थी, मन में वह उसे चाहती थी।

परिणामस्वरूप पादरी कॉलिन्स के प्रयत्न बराबर चालू रहे, भले ही वह प्रत्येक बार सफलता से दूर ही होते गए। दो बार कॉलिन्स ने फिर प्रस्ताव रखे, किन्तु जब ऐलिज़ाबेथ ने फिर दोनों बार अस्वीकार कर दिया, तब कहीं जाकर पादरी ने इस अस्वीकृति को सत्य समझा, परन्तु वह भी बड़ी मुश्किल से ही। ऐलिज़ाबेथ की एक शार्लट ल्यूकस नाम की सहेली थी। कॉलिन्स ने शार्लट से ही विवाह कर लिया। उस सीधी-सादी लड़की ने कोई विरोध नहीं किया।

अफवाह तो यह थी कि बिंगले का हृदय डार्सी की बहिन ज्योर्जिआना के प्रति आकर्षित था, इसीलिए वह जेन को छोड़ गया था। किन्तु कॉलिन्स के विवाह ने श्री बैनेट की हास्य-व्यंग्य-वृत्ति को उभाड़ दिया। उन्होंने बात ही बात में अपनी दूसरी बेटी ऐलिज़ाबेथ से पूछा, "लड़कियां शादी करने को बहुत उत्सुक होती हैं। लेकिन कोई उनसे पूछे कि शादी के बाद तुम्हें क्या प्रिय है, तो वह क्या चीज़ हो सकती है? मैं समझता हूं, प्रेम में तुनुक जाना! बताओ! अब तुम्हारी बारी कब आने को है? क्या तुम्हें विकहैम पसन्द है?"

विकहैम से ऐलिज़ाबेथ के सम्पर्क गहरे नहीं हो पाए थ। प्रवाद तो यह था कि वह किसी धनी महिला के प्रति उन्मुख हो गया था। लेकिन जहां तक पारस्परिक सम्बन्ध

थे, विकहैम और ऐलिज़ाबेथ में मैत्री थी और उनमें कोई मनमुटाव नहीं था।

कॉलिन्स और शार्लट का विवाह हो जाने पर, वे दोनों ही उनके यहां हन्सफोर्ड मिलने गए।

पड़ोस में ही डार्सी भी अतिथि बनकर ठहरे हुए थे। उन्हें देखकर ऐलिज़ाबेथ के हृदय में फिर नई विरोधी भावनाएं जागने लगी। उसे यह सन्देह बढ़ने लगा कि जेन और बिंगले के बढ़ते सम्बन्धों में असल में डार्सी ने ही बाधा डाली थी।

परन्तु ऐलिज़ाबेथ से मिलकर डार्सी के मन में प्रसन्नता हुई। डार्सी ने अचानक ही उसके प्रति अपना प्रेम व्यक्त कर दिया और विवाह का प्रस्ताव कर दिया।

ऐलिज़ाबेथ चौंक उठी।

डार्सी ने अपना त्याग दिखाना चाहा। उसने कहा, "देखो ऐलिज़ाबेथ! मेरा सामाजिक स्थान ऊंचा है। यदि मैं तुम्हारे परिवार से अपना सम्बन्ध जोड़ता हूं तो मेरा सम्मान कुछ घटेगा ही। किन्तु मैं तुमसे प्रेम करता हूं और उसके लिए भी तत्पर हूं।"

परिणाम उल्टा हुआ। ऐलिज़ाबेथ का पूर्वग्रह फिर भड़का। उसे वह घमंडी दीखा। उसने न केवल अस्वीकार किया, वरन् अस्वीकृति के कारण भी बता दिए।

डार्सी ने प्रस्थान किया, परन्तु ऐलिज़ाबेथ के लिए एक पत्र छोड़ दिया, जिसमें बैनैट-परिवार पर गहरे व्यंग्य थे, और उनमें सचाई भी थी। उसने लिखा कि वह यह बिलकुल नहीं जानता था कि जेन और बिंगले में पारस्परिक आकर्षण था। उसने यह भी प्रकट किया था कि विकहैम काहिल था और उसके प्रति उसने बहुत अच्छा व्यवहार किया था, जिसका फल उसे नहीं मिला। विकहैम ने स्वयं उसकी बहिन ज्यॉर्जिआना को भगा ले जाने की चेष्टा की थी।

ऐलिज़ाबेथ ने पत्र पढ़ा परन्तु वह सहसा ही कुछ निश्चित नहीं कर सकी।

दो महीने बीत गए। ऐलिज़ाबेथ अपने एक रिश्ते के चाचा और चाची—गार्डिनर-परिवार के यहां पैम्बर्ली गई हुई थी। वहां डार्सी का भी एक मकान था। बहुत ही अन-मनी-सी ऐलिज़ाबेथ उसका घर देख रही थी। उसकी बातचीत उस घर की देखभाल करनेवाले सेवक से हुई तो उसने डार्सी की प्रशंसा की अति कर दी।

ऐलिज़ाबेथ सोच ही रही थी कि अचानक डार्सी भी वहां आ गए। अब ऐलिज़ा-बेथ के हृदय में डार्सी के प्रति कुछ आकर्षण होने लगा था कि तभी एक दुर्घटना हो गई, जिसने सारा काम बिगाड़ दिया।

सूचना आई कि लिडिया ने तरकीबें करके अपने को ब्राइटन नामक स्थान में निमंत्रित करवाया था और वहां जाने के बहाने से वह मौका पाकर विकहैम के साथ भाग गई थी, क्योंकि उसका सैन्य-दल वहीं ठहरा हुआ था।

जेन और ऐलिज़ाबेथ के सम्बन्ध पक्के नहीं हुए थे। मेरी और किटी के भी नहीं। बीच की लड़की लिडिया का यों भाग जाना अच्छा नहीं था। वह भी विकहैम के साथ जिसने स्वयं अपने उपकारी डार्सी की बहिन ज्यॉर्जिआना को भगा ले जाने की चेष्टा की थी। खबर यह भी थी कि विकहैम और लिडिया बिना विवाह किए ही लन्दन में मौजूद थे।

इस संवाद से डार्सी सहपटा गया। गार्डिनर-परिवार तथा सभी लोग तुरन्त श्री बैनेट से मिलने लौंगबोर्न चल पड़े। श्री बैनेट के भाई (ऐलिज़ाबैथ के चाचा) गार्डिनर श्री बैनेट के साथ विकहैम और लिडिया को खोजने लंदन चले गए। परन्तु श्रीमती बैनेट को दूसरी ही चिन्ता सता रही थी। उन्हें यह सोच हो रहा था कि आखिर लिडिया अपने विवाह के लिए वस्त्र कहां से खरीदेगी ?

पादरी कॉलिन्स को पता चला तो उसने बड़े अफसोस से पत्र लिखा, लेकिन बैनेट-परिवार की चिन्ता तभी दूर हो गई। लिडिया और विकहैम का पता लग गया था और विकहैम को उससे विवाह करने को तैयार कर लिया गया था।

परिवार के सम्मान को बनाए रखने के लिए प्रयत्न करके विकहैम को न्यूकासिल रेजीमेंट में अच्छा पद दिलाया गया। लिडिया बहुत प्रसन्न थी। उसने अपनी माता और अविवाहित बहिनों को निमंत्रित किया और कहलवाया कि शीत ऋतु समाप्त होने के पहले ही वह अपनी क्वांरी बहिनों के लिए पति ढूंढ़ डालेगी।

जब लिडिया से भेंट हुई तब उसने बताया कि उसके विवाह में डार्सी उपस्थित था। ऐलिज़ाबैथ का मत अब बदलने लगा। श्रीमती गार्डिनर की बातों से भी डार्सी के विषय में ज्ञात हुआ। अब ऐलिज़ाबैथ को ज्ञात हुआ कि विकहैम और लिडिया को ढूंढ़ने-वाला असल में डार्सी ही था। उसीने विकहैम को लिडिया से विवाह करने को तैयार किया था। इसके लिए उसने अपने पास से एक हज़ार पाउण्ड खर्च करके विकहैम के सारे कर्ज़े चुकाए थे और लिडिया के खर्चे के लिए भी उसीने एक हज़ार पाउण्ड और भी दिए थे। किन्तु इतना करके भी उसने इस सबके बारे में कुछ भी नहीं कहा था।

ऐलिज़ाबैथ तथा बैनेट-परिवार लौंगबोर्न आ गया और बिंगले भी इसी समय फिर नीदरफील्ड लौट आया और ऐलिज़ाबैथ ने देखा कि उसकी माता श्रीमती बैनेट ने बिंगले का पुनः बहुत अच्छा स्वागत किया। लेकिन जब डार्सी आया तब उसके व्यवहार में कुछ रुखाई दिखाई दी। ऐलिज़ाबैथ का हृदय माता के इस व्यवहार से दुःखी हो गया। डार्सी ने पुनः उससे विवाह का प्रस्ताव किया और ऐलिज़ाबैथ ने स्वीकार कर लिया। जिस समय यह संवाद बैनेट-परिवार ने सुना, सभी किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए। आखिर जब बात समझ में आई तब सबको विवश होकर इसपर विश्वास करना पड़ा। ऐलिज़ाबैथ के इस परिवर्तन ने सबको ही आश्चर्य में डाल दिया।

अन्त में बिंगले और जेन का भी सम्बन्ध पक्का हो गया।

श्री बैनेट पुत्रियों के विषय में अब कुछ भी निश्चित धारणा नहीं बना सके। उन्होंने अपनी हास्यवृत्ति से यही कहा, "अब अगर कोई नौजवान मेरी बेटियों—मेरी और किटी के लिए आए तो उन्हें भी भेज दो। मैं अब काफी फुर्सत में हूं।"

प्रस्तुत उपन्यास अपने मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के लिए विख्यात है। इसमें कथा-सूत्र विचारों को लेकर चलता है। व्यंग्य तीखा है और सामाजिक व्यवस्था पर इससे प्रकाश पड़ता है। जेन ऑस्टिन को तत्कालीन समाज की जानकारी और नारी-हृदय का विश्लेषण विलक्षण है।

खण्डहर

[पियरे गोरियो[1]]

बाल्ज़ाक, ओनोर द : फ्रांसीसी लेखक बाल्ज़ाक का जन्म २८ मई, १७९९ को फ्रांस में टूर्स नामक स्थान पर हुआ। प्रारम्भिक जीवन दरिद्रता में अत्यन्त कष्ट से व्यतीत हुआ। १८२९ में आपकी रचनाओं के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ और तब से आपकी परिस्थिति कुछ सुधरी। आप बहुत अधिक लिखते थे। शराब भी बहुत पीते थे और बहुत अधिक परिश्रम की क्षमता रखते थे। आपके ऊपर बहुत अधिक कर्जा हो गया था और इसलिए आपको इतना अधिक लिखना पड़ा कि आपने ९६ उपन्यास लिखे। आपने कई प्रकार के व्यापार किए, जिसका परिणाम यह हुआ कि आपके ऊपर कर्ज चढ़ते चले गए। पोलैण्ड की काउंटेस इवेलिन हन्सका से आपका प्रेम-सम्बन्ध बहुत दिन तक चलता रहा। अपनी मृत्यु के कुछ दिन पहले ही आप उससे विवाह कर पाए। आपका देहान्त १८ अगस्त, १८५० को पेरिस में हुआ। आपने इतना अधिक लिखा है कि विद्वानों के मतानुसार इतना कार्य साधारणतया पांच प्रतिभाशील व्यक्ति मिलकर अपने भरपूर श्रम से कर पाते।

'पियरे गोरियो' (१८३४) नामक उपन्यास में बहुत अच्छा मनोविश्लेषण हुआ है। आपका यह उपन्यास अत्यंत प्रसिद्ध है।

मादाम वेकूर ने चालीस वर्ष तक न्यू सेन्त जेनेवीव में एक मध्यमवर्गीय बोर्डिंग हाउस चलाया। पेरिस मे फेबर्ग सेन्त मार्शल और लेटिन क्वार्टर के बीच मे पड़नेवाली यह जगह बड़ी इज़्ज़तदार मानी जाती थी, क्योंकि नैतिकता के क्षेत्र मे उसपर आज तक किसी प्रकार का लांछन नही लगाया जा सका था। गत ३० वर्षों से उस मकान मे कोई युवती दिखाई नही दी थी। लेकिन १८१९ मे, जिस समय की यह कथा है, एक दरिद्र जवान लड़की वहां रहा करती थी।

मादाम वेकूर के भवन का नीचे का भाग बहुत बड़ा नहीं था। उसमे एक बैठक थी जिसमे पुरानेपन की गन्ध आया करती थी। उसकी बगल में खाने का विशाल कमरा था और निस्सन्देह वह इतना अच्छा नहीं था। इस कमरे में सात बजे प्रातःकाल प्रतिदिन मादाम वेकूर आ बैठती थी। उनके टोप के नीचे से उनके निकले बाल ऊन के गुच्छों के रूप में लटके रहते थे। उनका हाथ छोटा और मोटा था और उनका वक्षस्थल बहुत अधिक प्रशस्त था। वह चलने मे हिलता था।

---

१. Pierre Goriot (Honore De Balzac) । इस उपन्यास का हिंदी अनुवाद 'खण्डहर' नाम से राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली में छपा है। अनुवादक हैं हंसराज रहबर।

को नहीं बताया कि वे दोनों लड़कियां उससे पैसा सूतने आया करतीं थीं और बूढ़े को दिन पर दिन गरीब करती जा रही थीं।

सालों बीत गए। अब उसने और गरीब मंजिल में अपना पड़ाव डाल दिया। गोरियो के खर्च और कम हो गए। वह दुबला हो गया, कमजोरी आ गई। और चौथे साल बाद सत्तर से ऊपर का नजर आने लगा। शक्ल से बुढ्ढ़, कांपता हुआ, कपड़े ढीले-ढाले, गन्दे। उसके सोने और जवाहरात के सामान सब गायब हो गए।

यूजीन द रास्तिकनाक पेरिस के अभिजात-समाज में प्रवेश करने का इच्छुक था। उसने अपनी चाची की एक रिश्तेदार विकोन्तेस द ब्यूसांग से परिचय प्राप्त कर लिया और उसे एक बॉलनृत्य में निमन्त्रित किया गया। विकोन्तेस को उसका प्रेमी छोड़ गया था, इसलिए उसे द रास्तिकनाक में बड़ी दिलचस्पी हो गई और उसने उसे समाज में प्रवेश कराने में बड़ी दिलचस्पी ली। यूजीन को डचेज द लेंगियाम मिली और उसीने बूढ़े गोरियो की कहानी सुनाई।

गोरियो आटे का व्यापारी था। उन दिनों क्रान्ति चल रही थी और दसगुनी कीमत पर सामान बेचकर वह खूब पैसा इकट्ठा किया करता था। अपनी बेटियों के लिए वह जान देता था। उसने हर बेटी को आठ लाख फ्रैंक दहेज में दिए। बड़ी बेटी का नाम अनास्तेसी था जिसका विवाह उसने काउन्ट द रेस्तोव से कराया। छोटी का नाम डलफिन था जिसका कि एक जर्मन धनी व्यापारी बेरन द नुसिनगिन से उसने विवाह करवा दिया। उसके बाद बूढ़े ने यह अनुभव किया कि दोनों बेटियां अपने बाप से शर्मिन्दा होती थी, क्योंकि वह इतने अभिजात कुल का व्यक्ति नहीं था। इसलिए उसने उस निवास-स्थान को छोड़ दिया और अलग रहने लगा। यह त्याग करते हुए उसे तनिक भी खेद नहीं हुआ। डचेज ने यह नहीं बताया कि अनास्तेसी का एक प्रेमी और भी था और इसलिए उसने बूढ़े गोरियो से, जो कुछ उसके पास बाकी था वह (लगभग दो लाख फ्रैंक) भी निकलवा लिया था ताकि अपने प्रेमी पर जूए में हो गए कर्ज को चुका सके।

बॉलनृत्य से लौटते समय यूजीन ने देखा कि गोरियो अपनी चांदी की प्लेट को ठोक-ठोककर एक पिण्ड के रूप में बना रहा था। उसने सूप खाने की चांदी की कटोरी को भी तोड़ दिया। अगले दिन वे दोनों बिक गई। अनास्तेसी ने अपने कुछ और खर्च पूरे कर लिए। जब यूजीन को यह मालूम पड़ा तो उसके मुख से निकला कि बूढ़ा गोरियो सचमुच महान है। दूसरी ओर डलफिन का जर्मन पति उच्च समाज में अपना स्थान नहीं पा रहा था। वह चाहती थी कि वह किसी प्रकार वहां प्रवेश पा सके। उसका भी अपना एक प्रेमी था जिसके जरिये वह अपने पति को आगे बढ़ाना चाहती थी। उस प्रेमी को रुपया देने के लिए वह खुद जूआ खेलने लगी थी और जूए के अड्डों में जाने लगी थी, क्योंकि उसके पिता के पास उसको देने के लिए अब और रुपया नहीं था।

इस बीच में यूजीन के परिवार ने समाज में उसके स्थान को ऊंचा करने के लिए उसको बारह हजार फ्रैंक देना प्रारम्भ किया। एक दिन वोतरीन ने उसे विक्टरीन के साथ जाते देखा और बाग में अकेले में ले जाकर कहा—तुम चाहो तो विक्टरीन तुम्हें पत्नी के रूप में मिल सकती है और तुम्हें दस लाख फ्रैंक भी दहेज में मिल सकते हैं, बशर्ते

कि यूजीन दो लाख फ्रैंक दे दे। मेरा एक मित्र है जो सेना में कर्नल है, उसको ज़रूरत है। विक्टरीन का भाई फ्रेड्रिक है, वह जायदाद का उत्तराधिकारी है। उससे झगड़ा करके द्वन्द्व-युद्ध में उसे मार डालने से यह काम हो सकता है।

यूजीन ने विक्षुब्ध होकर इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

कुछ दिन बाद यह बात फैली कि पुलिस को वोतरीन पर सन्देह था। पुलिस का ख्याल यह था कि वोतरीन ट्रोम्पे लेमोर्ते नामक प्रेमी था जिसे भयानक माना जाता था। वह किसी तरह से जेल में से भाग निकला था। उसको चालाकी से नशे की दवा पिलाई गई और वह खुल गया। उसको गिरफ्तार कर लिया गया। उधर यह सूचना आई कि द्वन्द्वयुद्ध में फेड्रिक की हत्या हो गई थी और अब अपने पिता की लाखों की सम्पत्ति पर विक्टरीन का एकमात्र अधिकार हो गया था।

उससे विवाह करने की बजाय रास्तिकनाक ने अब डलफिन से प्रणय-सम्बन्ध स्थापित किया। बूढ़ा गोरियो उन्हें मदद करता रहा, ताकि दस हज़ार फ्रैंक खर्च करके उनके लिए रहने के स्थान का प्रबन्ध कर सके। उसकी एकमात्र लालसा यह थी कि वह अपनी बेटी को रोज़ देख सके।

यूजीन की पहली प्रणय-पात्री विकोन्तेस ने अपने प्रेमी के विवाह के उपलक्ष्य में एक बॉलनृत्य का आयोजन किया। उस समय अनास्तेसी ने निमन्त्रण पाकर अपने पिता से धन मांगा ताकि रेस्तोव-परिवार के जवाहरातों को छुड़ा सके जो कि उसने गिरवी रख दिए थे। गोरियो अपनी रोग-शय्या से उठा। उसने अपने आखिरी बर्तन-भांडे भी बेच दिए और जो साधारण धन उसे मिला था वह भी कर्ज़ चुकाने में लगा दिया। डलफिन को भी रास्तिकनाक के द्वारा एक निमन्त्रण-पत्र मिल गया।

उधर नृत्य हो रहा था, इधर अपने ठण्डे बिस्तर में बूढ़ा आदमी गोरियो बीमार पड़ा था। एक व्यक्ति को बॉलनृत्य में भेजा गया। उसने जाकर लड़कियों को सूचना दी कि उनका पिता मरने से पहले अपनी बेटियों को स्नेह से चूमना चाहता था। बूढ़े ने यूजीन से कहा कि अब वह मरकर ऐसी जगह चला जाएगा जहां से वह फिर उन्हें नहीं देख पाएगा। खबर देनेवाला आदमी लौट आया और उसने बताया कि लड़कियों ने आने से इन्कार कर दिया था। डलफिन उस वक्त बहुत ज्यादा थक गई थी और उसे नींद लगी हुई थी, अतः वह आने में असमर्थ थी और अनास्तेसी उस समय अपने पति से झगड़ने में व्यस्त थी। बूढ़े गोरियो की हालत खराब हो चली। वह कुछ बर्राने लगा और कभी वह अपनी लड़कियों को दोष देता और कभी उन्हें क्षमा करता। वह बड़-बड़ाता, "मेरी लड़कियां बहुत बुरी हैं। मेरी जान की मुसीबत हैं। मैंने ही तो उन्हें बिगाड़ा है। ठीक है, मुझे जो सज़ा मिली है वह बिल्कुल ठीक है। आ रही हैं क्या वे? अब मैं कुत्ते की तरह मरूंगा। वे दोनों बड़ी दुष्टा हैं। उनके हृदय में दया-ममता नहीं है।"

और अन्त में उसने कहा, "हे भगवान और फरिश्तो!" और तब तकिये पर उसका सिर लुढ़क गया और वह सदा के लिए चला गया। अनास्तेसी आई ज़रूर, लेकिन बहुत देर में। उसने अपने पिता का हाथ चूमकर कहा, "पिता, मुझे क्षमा करो।"

गोरियो का अन्तिम संस्कार भिखमंगों का सा हुआ। उसके अभिजात दामादों

ने उसमें खर्चा देने से इन्कार कर दिया। कानून और डाक्टरी के विद्यार्थियों ने कुछ रुपया इकट्ठा किया, लेकिन यूजीन और उसके सेवक के अतिरिक्त किसीको भी दफनाते वक्त अफसोस नहीं हुआ। यूजीन अन्तिम समय में केवल एक प्रार्थना कर सका।

यूजीन उसके बाद बहुत उच्च स्थान पर चढ़ गया और उसने देखा कि नगर के धनी-मानी और फैशनेबल लोग किस प्रकार रहते थे। और फिर उसने कहा, "अब हम लोगों का युद्ध कठोरता और कट्टरता से चलेगा।" और उसके बाद वह डलफिन के साथ खाना खाने चला गया।

प्रस्तुत उपन्यास में बालज़ाक ने तत्कालीन समाज के खोखलेपन पर भयानक व्यंग्य किया है, कुल-गर्व की विषमता उसने प्रकट की है और यह भी बताया है कि मनुष्य किस प्रकार अपनी महत्ता के कारण अनर्थों को जन्म देता है और परिवार की सीमाएं किस प्रकार उसे सद्-असद्-विवेक से दूर कर देती हैं। बालज़ाक ने कई चरित्र खड़े किए हैं। यद्यपि सब अलग-अलग हैं, फिर भी वे एक-दूसरे से गुंथे हुए-से हैं। अपनी उलझनों के बावजूद प्रस्तुत उपन्यास समाज पर गहरा प्रभाव डालता है।

एच० बी० स्टो :

टॉम काका की कुटिया

[अंकिल टॉम्स केबिन[1]]

स्टो, हैरियट बीचर : अंग्रेज़ी लेखक एच० बी० स्टो का जन्म कनेक्टीकट के लिचफील्ड नामक स्थान में १४ जून, १८११ को हुआ। हार्टफोर्ड के कैथराइन्स स्कूल में शिक्षा मिली। बाद में वहीं पढ़ाने लगीं। यह स्कूल आपकी बहन कैथराइन ही चलाती थीं। १८३२ में बीचर-परिवार सिनसिनैटी आ गया और १८३६ में हैरियट बीचर ने लेनथियोलोजीकल सेमिनरी के प्रोफेसर कॉल्विन एलिस स्टो से विवाह कर लिया। श्रीमती स्टो पनवर १८४३ में आपने अपनी रचनाएं प्रकाशित करवानी प्रारम्भ कीं। उस समय अमरीका में दास-प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन चल रहा था। श्रीमती स्टो ने भी दासता के विरुद्ध काफी कुछ लिखा। गृहयुद्ध के बाद भी आपका लेखन चलता रहा। जीवन के अंतिम भाग में आप पब्लिक के बीच पढ़-पढ़कर सुनाने लगीं। १ जुलाई, १८९६ को हार्टफोर्ड के अपने घर में आपका देहान्त हो गया।

'अंकिल टॉम्स केबिन' (टॉम काका की कुटिया) नामक उपन्यास १८५२ में प्रकाशित हुआ था। इसने प्रकाशित होते ही लोगों के हृदय को हिला दिया था। उपन्यास बहुत ही मार्मिक है।

श्री जॉर्ज शैल्बी केन्टुकी के एक प्रसिद्ध मानववादी थे। उनके बागों में जो दास क
करते थे, उनके प्रति उनका व्यवहार बहुत ही अच्छा था। हेलो नामक एक गुलामों
खरीदने-बेचनेवाले सौदागर ने एक बार उनके एक रेहन पर अधिकार प्राप्त कर लि
तब उससे भुगतान करने को शैल्बी तैयार हो गए। उन्होंने उसकी शर्तें मजूर कर ल
हेली ने अधेड़ उम्र के टॉम काका नामक हब्शी गुलाम को तथा उनकी नौकरानी ऐलि
के पांच वर्ष के हब्शी बच्चे को मांगा। शैल्बी-परिवार जानता था कि वह गुलाम ब
ही पवित्र हृदय था। शैल्बी-परिवार के प्रति उसमें बड़ी वफादारी थी। इसी तरह श्रीम
शैल्बी अबोध बच्चे को सौंप देना भी ठीक नहीं समझती थी। इसलिए उसने इस मांग
बहुत विरोध किया, किन्तु शैल्बी ने हेली की बात को स्वीकार कर लिया।

ऐलिज़ा का पति जॉर्ज हैरिस नामक व्यक्ति था। हैरिस का पिता एक गोरा थ
हैरिस प्रतिभावान था। उसके स्वामी ने उसके प्रति बहुत ही निर्दयतापूर्ण व्यवहार किय
हैरिस ने विद्रोह कर दिया और इस समय वह ओहियो नदी पार करके कनाडा भाग जा

---

१. Uncle Tom's Cabin (Harriet Beacher Stowe)। इस उपन्यास का हिं
अनुवाद 'टॉम काका की कुटिया' नाम से राजेन्द्रकुमार एण्ड ब्रदर्स, बलिया में छपा है
अनुवादक हैं पं० बालमुकुन्द बाजपेयी।

की योजना बना रहा था।

ऐलिज़ा ने छिपकर सुन लिया कि श्री शैल्बी ने उसके बच्चे को बेच दिया था। वह तुरन्त भाग जाने की तैयारी करने लगी। अगले दिन सुबह जब हेली को उनके भाग जाने का पता चला, उसने घोड़े कसवा दिए। ऐलिज़ा एक जगह छिपी हुई थी। उसके साथ जानेवाले गुलामों में से एक ने ऐलिज़ा की चुपचाप हेली के बारे मे खबर दे दी। ऐलिज़ा अपने बच्चे को लेकर भागी। हेली ने पीछा किया। नदी पर बर्फ के बड़े-बड़े टुकड़े बह रहे थे। ऐलिज़ा झट से नदी में कूद गई और बर्फ का टुकड़ा उसे बहा ले चला। हाथ-भर पीछे ही हेली देखता रह गया।

भाग्य ने ऐलिज़ा का साथ दिया। उसने नदी किसी प्रकार पार कर ली और वहां से होकर लोगों की बस्ती में पहुंच गई, जोकि शान्ति और प्रेम के प्रचारक थे। ओहियो में उसे शरण मिल गई। तब तक उसे खोजने दूसरे लोग पहुंच भी नही पाए।

जब यह खबर टॉम काका की कुटिया मे पहुंची कि उसे बेच दिया गया था, उसकी पत्नी और बच्चो पर जैसे वज्र टूट पड़ा। टॉम ने अपने स्वामी की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया। वह निरन्तर बाइबिल पढ़ता था और आज भी उसीसे सांत्वना प्राप्त कर रहा था। उसने ईश्वरीय वचन और प्रेम के उस अमर सन्देश को अपनी पत्नी को भी सुनाया।

अगले दिन हेली ने टॉम काका को गाड़ी में बिठाया, पांवों में बेड़ियां डाल दीं और मिसीसिपी की ओर यात्रा पर चल पड़ा। शैल्बी का तरुण पुत्र जॉर्ज अपने पिता के इस कार्य पर क्रुद्ध हो उठा। उसने रोते हुए टॉम काका से प्रतिज्ञा की कि वह एक दिन आएगा और उसे फिर खरीद लाने की चेष्टा करेगा।

मार्ग में हेली ने और भी कई गुलामों को खरीदा। एक स्त्री और उसका दस महीने का बच्चा भी इन नई खरीदों मे थे। नदी पर, पहली ही रात को वह स्त्री पानी मे कूद गई, और हेली ने इस नुकसान को बड़ी ही निर्ममता से सह लिया, क्योंकि ऐसी घटनाएं उसके व्यापार में नई नही थीं।

नौका पर न्यू ओरलियन्स के ऑगस्टीन सेंटक्लेयर नामक एक सज्जन भी यात्रा कर रहे थे। वे अपने घर जा रहे थे। उनके साथ उनकी छ वर्षीय बेटी ईवा तथा उनकी बहिन ओफीलिया भी थी। ओफीलिया वर्मोंट की निवासिनी थी।

ईवा का बाल सौन्दर्य, उसके स्वभाव की पवित्रता टॉम से छिपी नही रही। उसने बालिका को छोटी-मोटी भेंटें देकर अपनी ओर आकर्षित कर लिया। एक बार ईवा पानी मे गिर पड़ी। तब टॉम ने नदी में कूदकर उसकी जान बचाई। इसके बाद तो ईवा उससे इतनी हिल-मिल गई कि उसे अपने सग ही रखने के लिए उसने पिता से अनुनय प्रारम्भ कर दी। ऑगस्टीन ने तब हेली को कीमत चुकाकर टॉम काका को खरीद लिया।

ऑगस्टीन सेंटक्लेयर ने न्यू ऑर्लियन्स के उच्चवर्ग की एक स्त्री से विवाह किया था जिसको अपने पति के विचार बिलकुल पसन्द नही आते थे। उसका यह विचार था कि उसका पति उसकी हर बात में उपेक्षा करता था। उसका नाम मेरी था। वह सदा बीमार-सी रहती अथवा बीमारी का बहाना बनाकर वह अपने आसपास के लोगों पर अपनी इच्छाएं लादती रहती थी। वह स्वार्थिनी और अहंकारिणी थी तथा नौकरों के प्रति उसका

व्यवहार अत्यन्त निष्ठुर होता। सटक्लेयर दासता की बुराइयों के प्रति खेद प्रकट करता। वह दासों के इस व्यापार के भयानक परिणामों को दुहराया करता। अपने दासों के प्रति आवश्यकता से अधिक मानवीय करुणा दिखाकर वह अपनी आत्मा को दासता के पाप के बोझ से सदैव मुक्त करने की चेष्टा किया करता था।

टॉम चाचा को ईवा इतना प्यार करती थी कि बच्ची के सद्व्यवहार के कारण वह कभी किसी बात की शिकायत नहीं करता था। अब वह अस्तबल की देख-रेख करता और पहले की तुलना में कहीं अधिक आराम से रहता। ईवा अक्सर उसे बाइबिल पढ़कर सुनाती। वह उसे लिखना भी सिखाती, ताकि कुछ ही दिनों में वह अपनी पत्नी को पत्र लिखकर अपने हालचाल आदि लिख सके।

इसी दौरान में जॉर्ज हैरिस अपनी पत्नी से बढ़कर बस्ती में जा मिला। मार्क्स नामक एक व्यक्ति कुछ सिपाहियों का दल लेकर आ गया। उसका इरादा था कि इस तरह भाग निकलनेवाले सारे गुलामों को वह हाल में बने भगोड़े गुलामों के कानून के अन्तर्गत पकड़ ले और उन सबको अपना कहकर बेच डाले। दो स्वस्थ क्वेकरों के साथ ऐलिज़ा और जॉर्ज तथा अन्य कई हब्शी कनाडा की ओर चल दिए। जब मार्क्स और उसके साथियों ने इन लोगों को घेर लिया तो ये लोग कुछ चट्टानों के पीछे जा छिपे और जब गोलियां चलने लगीं तब जॉर्ज ने अपना पीछा करनेवालों में से एक व्यक्ति को गोली मारकर घायल कर दिया। मार्क्स इस वार से घबराकर अपने दल के साथ पीछे हट गया और तब गुलामों का यह जत्था सुरक्षित कनाडा पहुंच गया।

कई वर्ष बीत गए। सेंटक्लेयर की बहिन कुमारी ओफीलिया ने न्यू ऑर्लियन्स में जो कुछ देखा, उससे उसके मन में दास प्रथा के विरुद्ध घोर विक्षोभ जागरित हो गया था। किन्तु फिर भी हब्शियों के साथ, उनको मनुष्य समझकर मनुष्यता का बर्ताव करना उसको बहुत कठिन लगता था।

एक दिन सेंटक्लेयर एक टॉप्सी नामक अनाथिनी को ले आया, जिसे आज तक घोर दुर्व्यवहार और घोर पीड़ाएं दी गई थीं। उसने उसे ओफीलिया की देख-रेख में छोड़ा। टॉप्सी के ऊधम और खेलों ने घर-भर में एक उत्साह भर दिया। जब उसे सज़ा मिलती तो वह बार-बार अपने को बुरा कहती और मिस ओफीलिया को बुलाती कि वह उसे पीटे, उसे दण्ड दे। किन्तु जब ईवा ने उसे सच्चे प्रेम और करुणा से सहेजा, टॉप्सी का हृदय भीग उठा और तब उसने बताया कि उसे आज तक किसीने भी प्यार नहीं किया था। इस बात ने ओफीलिया को विचार-मग्न तो बना दिया, किन्तु फिर भी वह बालिका के प्रति स्नेहार्द्र नहीं बन सकी।

धर घर ईवा की बीमारी ने एक काली छाया डाल दी। जब उसकी शक्ति का क्षय होने लगा, उसके पिता का मन शंकित हो गया, किन्तु नये-नये डाक्टर भी कुछ फायदा नहीं पहुंचा सके।

प्रति वर्ष की भांति अब की बार भी वे गर्मियों के दिन काटने झील के किनारे आ गए। गांव का वातावरण खुला हुआ था। ईवा के मन में करुणा पहले से भी अधिक बढ़ गई। वह गुलामों के बारे में और अधिक बातें करती रहती। वह पिता से कहती कि टॉम

काका को दासता से मुक्त कर दिया जाए। एक दिन उसने ओफीलिया से कहा, "मेरे सिर के कुछ घुघराले केश काट दो, ताकि मैं इन्हें अपने मित्रों को दे सकूं।"

इसके बाद उसने टॉम काका से कहा, "मुझे फरिश्तों की आवाज़ें सुनाई देती हैं काका !"

और कुछ समय के उपरांत ईवा का देहान्त हो गया।

ईवा की मृत्यु के बाद उसका पिता अपनी पुत्री की इच्छाओं को पूरा करने के बारे में अधिकाधिक सोचने लगा। टॉम काका को स्वतन्त्रता देने की ओर उसने कदम उठाना प्रारम्भ किया। वह टॉम काका को अपनी बातों में अधिक सम्मिलित करता, उससे सलाह लेता, उससे गोपनीय बातें करता। टॉम काका उसका परमात्मा और 'उसकी' इच्छा में विश्वास सुदृढ़ न देखकर उसे 'उसीके' रास्ते में ले जाने की कोशिश करता। क्लेयर इसपर विश्वास तो करना चाहता, किन्तु इतने दिनों से चले आए भेद-भावों की दीर्घ दीवार को लांघना उसे कठिन लगता। मानवता के बीच खाइयां खुदी थीं। मनुष्य को मनुष्य का विश्वास नहीं रहा था।

एक दिन शराब के नशे मे धुत होकर दो व्यक्ति लड़ रहे थे। उनके बीच जाकर उन्हें अलग-अलग करते समय क्लेयर छुरे की चोटों से बुरी तरह घायल हो गया।

मेरी ने अपने दासों को लेकर अपने परिवार की ज़मींदारी मे चला जाना निश्चित किया। उसने अपने पति की इच्छाओं की चिन्ता न की, और न ओफीलिया की ही बातें सुनीं, जोकि टॉम काका और अन्य दासों के पक्ष मे बोलती थी। एकदम निर्ममता से उसने उन सबको अपने वकील को सौंप दिया। वकील ने उन्हें एकदम गुलामों के बाजार में भेज दिया।

न्यू ऑर्लियन्स में टॉम काका पर बोली लगी और बेच दिया गया। उसके साथ ही पन्द्रह साल की एक ऐमीलीन नामक सुन्दर लड़की भी बिकी। नया मालिक साइमन लैग्री बड़ा कठोर और निर्दय व्यक्ति था। वह अपने बागात मे बड़ी निष्ठुरता से काम लेता था। रेड रिवर (लाल नदी) के किनारे एकांत भूभाग मे उसकी जायदाद थी। वहां उसका एक ही कानून था। उसका कानून जूते, कोड़े, घूसों और कुत्तों के बल पर अखंड रूप से चलता था। वह स्वयं सारा प्रबन्ध करता था। उसके सहायक दो हब्शी थे, जिन्हें उसने खूंख्वार बना दिया था और अन्यों पर उन्हें वह छोड़ देता था। वह टॉम को भी अपना सहायक बनाना चाहता था।

टॉम ने देखा कि लैंग्री के दास बहुत ही गन्दे थे, और असह्य दरिद्रता मे रहते थे। वे बिलकुल ही बेसहारा और भग्नमानस, निराश लोग थे। बहुत-से तो बाइबिल के बारे मे कुछ भी नही जानते थे। लैंग्री टॉम से जो काम चाहता था, उसके लिए टॉम अपनी करुणा और पवित्रता के कारण नितांत अयोग्य था।

लैंग्री के घर मे केसी नामक स्त्री रहती थी। वह गोरा-हब्शी दोनों की सकर सन्तान थी। वह लैंग्री की घोर शत्रु थी। उसने लैंग्री से ऐमीलीन की रक्षा की। उसने टॉम को बुरी तरह पिटवाया और बाद में उसकी मरहम-पट्टी करके उससे बातें करने लगी।

लैग्री बड़ा अंधविश्वासी था। कैसी ने उसकी इस मनोवृत्ति का फायदा उठाया और वह ऐमीलीन को लेकर भाग निकली। वह तो सफल हो गई, किन्तु लैग्री ने इसका दोष टॉम पर मढ़ दिया। यद्यपि टॉम का कैसी के षड्यंत्र में कोई भाग नहीं था, किन्तु उसने लैग्री के क्रोध को चरम सीमा पर पहुंचा दिया। टॉम जानता था कि जो मार उसपर पड़ चुकी थी, उससे उसका बचना असम्भव था। किन्तु जीवन के इन अन्तिम क्षणों में उसे मोक्ष की आशा हो गई थी। उसने इसी विजय के गर्व में लैग्री से स्पष्ट कह दिया कि लैग्री उसकी आत्मा को नहीं मार सकता था।

इस घटना के कई दिन पहले तरुण शैल्बी टॉम काका को केन्टुकी ले जाने के लिए अपनी खोज पर चल पड़ा था। आखिरकार जब वह लैग्री के बागान पर पहुंचा, उसने टॉम काका को मरते हुए पाया। टॉम काका के मन में अखंड शान्ति थी। इन पार्थिव कष्टों को वह परलोक के सुखद जीवन का मार्ग समझता था।

साइमन लैग्री चिढ़ गया। वह कैसी और ऐमीलीन को नहीं ढूंढ सका। वे दोनों ही कनाडा पहुंच गईं। वहां कैसी अपने बहुत पहले बिछुड़े हुए भाई से जा मिली। प्रसन्नता का पारावार न रहा। कैसी का भाई और कोई नहीं, स्वयं जॉर्ज हैरिस था।

टॉम काका अपनी पवित्रता को अन्त तक निभाकर स्वर्गवासी हो गया।

प्रस्तुत उपन्यास बहुत ही करुण है। इसमें दास-प्रथा का बहुत ही गहरा चित्रण है। दासों की भीतरी कमजोरियों को भी उभाड़कर लेखिका ने सामने रख दिया है। तत्कालीन शासक-वर्गों के भीतर कितनी मानसिक प्रक्रियाएं तथा चिन्तन-स्तर थे, वे भी हमें यहां स्पष्ट दिखाई देते हैं। टॉम काका का पुण्यात्मास्वरूप आंखों के सामने घूमता रहता है। वह एक अपराजित प्राणी है, जो सत्य और करुणा का कभी भी परित्याग नहीं करता। ईवा का चरित्र भी बहुत निर्मल है। इस उपन्यास में ऐसी वेदना है कि पाठकों की आंखें भीग जाती हैं।

अनाथिनी

[जेन आयर[1]]

ब्रोंटे, चार्लोटे : अंग्रेजी लेखिका चार्लोटे ब्रोंटे का जन्म थोर्नटन, यॉर्कशायर में २१ अप्रैल, १८१६ को हुआ। चार्लोटे की दो बहिनें भी लेखिकाएं थीं। चार्लोटे का जीवन एकांत में व्यतीत हुआ। आपको केवल परिवार के लोगों से सम्पर्क प्राप्त हो सका। इसीलिए आप कल्पनालोक में विचरण करती थीं। १३ वर्ष की आयु से ही आपने कहानियां लिखना प्रारम्भ कर दिया था। पारिवारिक जीवन का आपपर काफी प्रभाव था। इसका दबाव आपके लेखन पर भी पड़ा है। बाद में जब आप गवर्नेस बन कर ब्रूसेल्स चली गईं तब आपकी दृष्टि परिवार की सीमाओं के बाहर भी गई और व्यापकता को प्राप्त कर सकी। आपने अपना विवाह किया, किंतु कुछ ही समय बाद ३१ मार्च, १८५५ को आपका देहांत हो गया।

'जेन आयर' (अनाथिनी) मूल रूप में १८४७ में पहली बार प्रकाशित हुआ था। यह एक यशस्विनी कृति है।

जेन आयर बचपन में ही अनाथ हो गई। बिचारी का सुख नष्ट हो गया। उसका लालन-पालन गेट्सहैड हॉल में श्रीमती रीड नामक उसकी एक बुआ के यहां हुआ। यहां उसे निष्ठुरता मिली, स्नेह तो नाममात्र को भी नहीं दीखा। श्रीमती रीड ने अपने भाई से प्रतिज्ञा की कि वे उसे अपनी ही बच्ची की तरह पालेंगी, परन्तु जेन को वे अनाथ की भांति रखती थीं। बात-बात पर फटकारती थीं। बुआ के बच्चे बिगड़े हुए और बदमिजाज थे। बुआ की ही भांति उसके बच्चे एलिजा ज्यॉर्जिआना और जॉन थे और जेन को तिरस्कृत करते थे। उसे एक अछूत जैसा व्यवहार मिलता। जब वह दस वर्ष की हुई तो उसकी किसी गलती पर उसे एक अंधेरे कमरे में अकेली बन्द कर दिया गया। नतीजा यह हुआ कि उसके दिमाग पर बहुत अधिक जोर पड़ा और उसे एक तरह के दौरे आने लगे।

तीन मास बाद उसे लोवुड स्कूल में भेज दिया गया। वह चन्दों पर चलाया जाता था, जिसमें गरीब बच्चे पढ़ाए जाते थे। आठ वर्ष तक दुख-सुख से वह वहीं रही। घर की तुलना में यहां उसे अधिक आराम था। पहले ६ वर्ष वह छात्रा बनकर रही, और बाद के दो वर्ष का समय उसने वहां अध्यापिका बनकर काटा।

जब वह १८ वर्ष की हो गई, तब सितम्बर में वह थौर्नफील्ड भवन में आ गई,

---

[1] Jane Eyre (Charlotte Bronte)

जहां वह श्री एडवर्ड रोचेस्टर के यहां उनकी पालिता एडैला वैरन्स की गवर्नेस बन गई। थौर्नफील्ड का वह भवन भव्य और अत्यन्त विशाल था। यहां एडैला की अभिभाविका श्रीमती फेयरफैक्स का जेन के प्रति व्यवहार अच्छा था। श्रीमती फेयरफैक्स श्री रोचेस्टर की रिश्तेदार लगती थीं।

भवन बहुत विशाल था और उसका काफी भाग खाली पड़ा रहता था। एक दिन श्रीमती फेयरफैक्स उसे भवन दिखाने लगीं। एडवर्ड रोचेस्टर बहुत बड़े जागीरदार थे। उनके अनुरूप ही वह भवन भी था। जब वे तीसरी मंजिल पर पहुंचीं तो उन्हें एक भयानक अट्टहास सुनाई दिया। जेन चौंक उठी। श्रीमती फेयरफैक्स ने कहा, "यह नौकरों की आवाज है।" यह कहकर उन्होंने ग्रेसपूल को आवाज दी। द्वार पर एक मजबूत-सी स्त्री आ गई।

श्रीमती फेयरफैक्स ने कहा, "इतना शोर न किया करो।"

इसके बाद वह आवाज बन्द हो गई।

जनवरी का महीना था। दिन ढल रहा था। जेन घूमते हुए पड़ोस के एक गांव में चली गई थी। वह चलते-चलते थक गई तो एक जगह बैठ गई। उसने देखा कि एक ऊंचे घोड़े पर एक सवार चला जा रहा था। तभी बर्फीली सड़क पर घोड़ा फिसल गया और सवार किनारे पर लटक गया। सवार का कुत्ता बड़ा-सा था। वह मदद के लिए जेन को बुलाने लगा, किन्तु सवार ने मदद लेने से इन्कार कर दिया। उसकी भौंहें मोटी थीं और चेहरे पर कठोरता थी। किन्तु जेन को फिर भी उससे डर नहीं लगा। उसकी कठोरता देखकर उसे एक तोष-सा हुआ। वह व्यक्ति करीब ३५ वर्ष का लगता था। उसके मुख पर क्रूरता और विरक्ति-सी थी।

जेन ने उसको उस परिस्थिति में छोड़ना स्वीकार नहीं किया। तब सवार ने उसका परिचय पूछा। जब उसको मालूम हुआ कि जेन थौर्नफील्ड भवन में गवर्नेस थी, तब उसने उसे घोड़े पर सवार कराने मे उसकी मदद स्वीकार कर ली और तुरन्त ओझल हो गया। कुत्ता भी अंधेरे में उसके पीछे भाग चला।

जब जेन घर पहुंची तब उसे मालूम हुआ कि राह में मिलनेवाला सवार स्वयं उसके मालिक श्री रोचेस्टर थे।

अगले दिन जेन को श्री रोचेस्टर और एडैला के साथ चाय पीने के लिए बुलाया गया। वहां एक अजीब-सी उदासी छा रही थी। सन्नाटा था।

मालिक ने कुछ गम्भीर और कुछ उपहास-भरे स्वर में कल की घटना का उल्लेख किया और कहा कि शायद घोड़े पर जेन ने जादू कर दिया था। लेकिन जेन ने इसका उत्तर दिया कि ऐसा नहीं था। उसका स्वर सुनकर मालिक की कठोरता कुछ कम दिखाई दी। इस तरह आठ सप्ताह व्यतीत हो गए। मालिक उससे मिलने पर अवश्य बात करते और कभी-कभी मुस्करा भी देते। कभी-कभी जेन को ऐसा लगने लगता जैसे वह उनकी नौकरानी नहीं, बल्कि कोई रिश्तेदार थी।

एक रात जेन सो रही थी कि उसके कमरे के बाहर कुछ आवाज हुई। जेन की नींद टूट गई। उसे एक पैशाचिक हास्य सुनाई दिया। फिर लगा जैसे बाहर एक पगचाप

पीछे हटते-हटते तीसरी मंजिल की सीढ़ी की ओर चली गई। वह भय से कांप उठी और उसने दरवाज़ा खोलकर देखा। वहां कोई नहीं था। उसने देखा कि श्री रोचेस्टर के कमरे से धुए के गुबार उठ रहे थे। वह समझ नहीं पाई। वह उनके कमरे में घुस गई और उसने देखा कि बिस्तर में आग लग गई थी, लेकिन श्री रोचेस्टर उसीपर बेहोश-से सोए पड़े थे। उसने लपटों पर पानी डालकर उन्हें बुझाया और मालिक को भी भिगो दिया। तब वे जागे। वे चौंक उठे और बोले, "क्या तुम मुझे डुबाकर मार डालना चाहती थीं।" जेन ने आग जलने की बात बताई। तब वे जांच करने को उठे। बोले, "मैं तीसरी मंजिल देखकर आता हूं।"

लौटकर आए तब वे शांत-से थे। उन्होंने जेन से प्रतिज्ञा कराई कि इस घटना के बारे में वह किसीसे कुछ नहीं कहे।

घर के लोगों से यही कह दिया गया कि पास रखी मोमबत्ती से ही बिस्तर में आग लग गई थी जिसे स्वयं मालिक ने ही बुझा दिया था।

इसके बाद मिस्टर रोचेस्टर चले। जब वे बाहर थे तब एक अजनबी आया। उसने बताया कि वह वैस्टइण्डीज से आया था। उसका नाम श्री मेसन था। जब रोचेस्टर लौटकर आए और उन्हें आगंतुक के बारे में बताया गया, उनका चेहरा सफेद पड़ गया और वे बोल उठे, "उफ! जेन! मुझपर प्रहार हुआ है!"

वे हांफ उठे और बोले, "मैं चाहता हूं कि मैं किसी एकांत द्वीप में चला जाता, जहां केवल तुम मेरे साथ होतीं और मैं सारी परेशानियों से दूर हो जाता।"

लेकिन इसके अतिरिक्त उन्होंने कुछ भी नहीं कहा और वे मेसन से मिलने चले गए। बड़ी देर तक उनमें बातें होती रहीं। जब वे लौटकर आए अब पुनः उनके मुख पर प्रसन्नता थी। उनके स्वर में प्रफुल्लता थी। जेन ने यह देखा तो उसके मन पर से बोझ-सा उतर गया।

रात हो गई। अंधेरे में अचानक तीसरी मंजिल से एक भयानक चीत्कार सुनाई दिया और सारा घर जाग गया। अपने कमरे के ठीक ऊपर के कमरे में जेन को लगा जैसे कोई भयानक संघर्ष हो रहा है और एक आवाज गूंज उठी, "बचाओ!"

श्री रोचेस्टर तीसरी मंजिल से उतरते दिखाई दिए और उन्होंने सबको सोने भेज दिया। उन्होंने कहा कि एक सेवक दु:स्वप्न देखकर चिल्ला उठा था। सब लौट गए।

लगभग एक घंटे बाद उन्होंने चुपचाप जेन को बुलाया और उसे ऊपर की मंजिल में एक भीतरी कमरे में ले गए, जिसके भीतरी कोठे से भयानक स्वर आ रहे थे जैसे कोई पशु गुर्रा रहा हो और वही विचित्र हास्य भी सुनाई पड़ा। बाहरी कमरे में मेसन लेटा था। वह बेहोश था। उसकी एक बगल से खून बह रहा था। जेन ने दो घंटे उसकी सुश्रूषा की, तब उसने अपनी आंखें खोलीं, और तब, सूर्योदय के पहले, उसे वहां से हटा दिया गया।

मधुर ग्रीष्म ऋतु आ गई। दो वेलाएं मिल रही थीं। मनोहरता चारों ओर छा रही थी। कुंज में जेन उपवन में खड़ी थी। वहीं श्री रोचेस्टर आ गए। बातें होने लगीं। जेन ने स्वीकार किया कि उसे थौर्नफील्ड से कुछ आत्मीयता हो गई थी। श्री रोचेस्टर ने

कहा, "बेचारी !"

जेन समझी कि रोचेस्टर सुन्दरी कुमारी इन्ग्रैम से विवाह करना चाहते थे, जो कि बहुधा उनसे मिलने आया करती थी। उसने स्वामी से इस बारे में बात चलाई। रोचेस्टर ने स्वीकार किया, "हां ! लगभग एक महीने में, मैं आशा करता हूं, मैं दूल्हा बन जाऊंगा।"

जेन के हृदय को कड़ा धक्का लगा। वह रोने लगी और कह उठी, "मैं यहां बिना तुमसे कुछ सम्बन्ध हुए क्या रह सकती हू ? मैं सीधी-साधी और साधारण हूं तो क्या तुम समझते हो कि मेरे आत्मा नहीं है ? क्या मैं हृदयहीन हू ?"

रोचेस्टर ने उसे भुजाओं में भरकर चूम लिया। वह पीछे हट गई। तब उन्होंने बताया कि जिसे वे प्रेम करते थे वह कुमारी इन्ग्रैम नही, बल्कि जेन थी।

उन्होंने स्नेह से कहा, "तुम मेरी दुल्हन हो, क्योंकि तुम मेरी बराबर की हो। मेरी पसन्द के अनुकूल हो !"

जेन ने कहा, "सच कहते हो ? तुम सचमुच मुझे प्यार करते हो ?"

"हां, मैं सौगन्ध खाता हू !"

हवा चलने लगी थी। पेड़ कांपने लगे थे, कराहते-से। वे दोनों भवन की ओर तेजी से चल पड़े।

एक महीने बाद जब एडवर्ड रोचेस्टर और जेन शादी के लिए गिरजे में खड़े हुए तब कोई नौकर उनके पास नहीं था। पादरी ज्योंही उनके विवाह-कर्म को समाप्त करने वाला था कि एक स्वर सुनाई दिया, "यह विवाह नहीं हो सकता, क्योंकि श्री रोचेस्टर की एक पत्नी जीवित है।"

और श्री मेसन सामने आए। उन्होंने घोषणा की कि वे उस पत्नी के भाई थे। पत्नी थौर्नफील्ड भवन में ही थी।

रोचेस्टर के मुख पर कठोर मुस्कराहट दिखाई दी जो उनके होंठों पर बिखर गई। उन्होंने कहा, "बहु-पत्नी प्रथा यद्यपि एक कुरूप और कुत्सित शब्द है किन्तु मैं बहु-पत्नीवान ही होना चाहता हूं।"

उपस्थित लोगों को वह अपने भवन की ओर ले चले। जिस कमरे में मेसन घायल पड़ा था उसके भीतरी कोठे में कोई जन्तु चारों पांवों पर चल रहा था। वह हर चीज को छीनना चाहता था, और किसी हिंस्र पशु की भांति गुर्रा उठता था। उसे कपड़ों से ढक रखा गया था और ढेर-ढेर खुले हुए उलझे हुए बालों ने उसका मुह और सिर ढंक रखा था।

यही रोचेस्टर की पहली पत्नी थी।

रोचेस्टर ने बताया, "पन्द्रह साल पहले मुझे धोखे में डाला गया था और इस पागल और पशु स्वरूप स्त्री से विवाह-सम्बन्ध में मुझे बांध दिया गया था।"

जेन ने उस क्षण रोचेस्टर को क्षमा कर दिया किन्तु अगले दिन सवेरे वह वहां से चली गई।

मोर्टन में उसे आश्रय मिला। यहां उसने अपना नाम जेन इलियट रख लिया और वह गांव में एक स्कूल-मास्टरनी बन गई। यहां के गिरजे के पादरी थे सेंट जॉन रिवर्स।

शीघ्र ही उन्होंने उससे विवाह का प्रस्ताव किया। लेकिन एक रात उसे ऐसा लगा जैसे श्री रोचैस्टर उसे पुकार रहे थे—"जेन !"

जेन ने देखा, उस जगह कोई पुकारनेवाला नहीं था। तब वह शान्ति से नहीं रह सकी और सवेरे ही थोर्नफील्ड की ओर चल पड़ी। वहां जाकर उसने देखा कि एक काला जला हुआ खंडहर पड़ा था।

वह सराय में जाकर ठहर गई। वहां उसे पता चला कि एक रात ग्रेसपूल शराब के नशे में धुन हो गई और तब वह पागल औरत छूट निकली और उसने घर में आग लगा दी। श्री रोचैस्टर ने नौकरों को बाहर निकाला। तब वे अपनी पागल स्त्री को निकालने लौटे। लेकिन पगली छत पर चढ़ गई थी और वह वहीं से कूदी और गिरकर मर गई। उस समय जब श्री रोचैस्टर बाहर निकल रहे थे तब सामने की सीढ़ी गिर पड़ी और वे चपेट में आ गए। जब उन्हें खंडहर से निकाला गया तब उनकी एक आंख फूट चुकी थी और एक हाथ इतना कुचल गया था कि उसको काट डालना पड़ा। उसके बाद दूसरी आंख भी सूज गई और वे अन्धे हो गए। अब वे केवल दो सेवकों के साथ फर्नडीन में अपने एकान्त भवन में दिन काट रहे थे। जेन यह सुनकर तुरन्त उनसे मिलने चल पड़ी। उसका हृदय आतुर हो रहा था। जेन ने घर में प्रवेश किया, वह सहसा ही उनका हाथ पकड़कर बोल उठी।

वे हर्ष से चिल्ला उठे : "कौन जेन ? जेन आयर ?"

"हां, मेरे प्रिय स्वामी !" उसने कहा, "मैं ही हूं जेन आयर ! मैंने तुम्हें खोज लिया है, और मैं तुम्हारे पास लौट आई हूं।"

प्रस्तुत उपन्यास में मानव-चरित्र की गहराइयां हमारे सामने आती हैं। नारी-जीवन की विवशता और वेदनाएं उभर-उभर आती हैं। स्त्री में प्रेम की भूख अखण्ड रूप से विद्यमान रहती है। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण को लेखिका ने बहुत ही कुशल लेखनी से चित्रित किया है।

प्रेम की पिपासा
[वुदरिंग हाइट्स[1]]

ब्रोंटे, एमिली : एमिली और अंग्रेजी लेखिका शार्लोट ब्रोन्टे की छोटी बहिन थीं। आपका जन्म ३० जुलाई, १८१८ को थोर्नटन में हुआ था। आप तीन वर्ष की अवस्था में हेवर्थ, यॉर्कशायर में १९ दिसंबर, १८४८ को दिवंगत हुईं। आप बहुत कम घर के बाहर निकलीं। जब भी कहीं बाहर जातीं तो घर की याद आपको सताने लगती और इस तरह आपने अपना जीवन उत्तरी इंगलैंड के रंगहीन बंजर मैदानों में ही व्यतीत किया, जिसकी छाया आपकी रचनाओं में भी मिलती है। आप अपनी शार्लोट और ऐन नामक बहिनों के साथ अपनी कल्पना के वेग को पथ देती हुई कहानियां और कविताएं लिखा करती थीं। 'वुदरिंग हाइट्स' (प्रेम की पिपासा) मूल रूप से पहली बार १८४८ में प्रकाशित हुआ। यह आपका एकमात्र उपन्यास है। इसके प्रकाशन के एक वर्ष बाद ही आप इस संसार को छोड़ गईं। आप यह नहीं जान सकीं कि आपके एक ही उपन्यास ने आपको साहित्य में अमर बना दिया।

श्री लौकवुड थ्रशक्रौस ग्रेन्ज[2] के नये किरायेदार थे। जब वे अपने मकान-मालिक से मिलने उसके घर गए तब उनका स्वागत अच्छा नहीं हुआ। नौकर-चाकर, कुत्ते, यहां तक कि स्वयं भवन के स्वामी—सब ही रूखे थे। भवन-स्वामी श्री हीथक्लिफ थे। वे एक कंजर जैसे लगते थे, यद्यपि उनके वस्त्र और व्यवहार को देखने पर वे एक जागीरदार से जान पड़ते थे। वे दृढ़ शरीर के ऊंचे व्यक्ति थे, आकृति में सुन्दर थे, किन्तु अत्यन्त ही रूखा, उदास और गम्भीर दीखते थे।

भूस्वामी के पक्के और सुन्दर भवन का नाम था वुदरिंग हाइट्स। वह खेतों के बीच बना एक पुराना, अब जर्जर-सा हो चला, भवन था। उस जगह हवाएं मुक्त चलती थीं और तूफानी मौसम के लिए वह जैसे खुला पड़ा था।

लौकवुड में कौतूहल जाग उठा। वह दूसरे दिन फिर इन विचित्र लोगों से मिलने गया। बाहर बर्फानी तूफान चलने लगा। तब वह रात वहीं बिताने को विवश हो गया। रात को उसे इस घर के बाकी विचित्र प्राणी भी मिले। एक हीथक्लिफ के पुत्र की विधवा पत्नी थी। वह सुन्दरी थी और अभी उसने लड़कपन से पांव बाहर रखे ही थे। वह चुप रहती थी और घृणा उसके मुख पर खेला करती थी। एक गंदा-सा युवक था—हेअरटन

---

१. Wuthering Heights (Emily Bronte)
२. ग्रेन्ज—ग्राम-भवन

अर्नशॉ। यही नाम वुदरिंग हाइटस के द्वार पर खुदा हुआ था, जिसके नीचे तारीख खुदी हुई थी '१५००ई०।'

रात को लौकवुड को एक कमरे में ठहरा दिया गया। उस शयनागार का अब प्रयोग नहीं होता था। 'लौकवुड ने देखा कि भीतों पर 'कैथराइन अर्नशॉ', 'कैथराइन हीथक्लिफ', और 'कैथराइन लिण्टन' इत्यादि नाम खरोंचकर लिखे गए थे। किताबों के खाली पन्नों पर उसे एक डायरी-सी लिखी दिखाई दी, जिसमें ऐसा लिखा हुआ था, "हिण्डले घृणित है—उसका हीथक्लिफ के प्रति व्यवहार अत्यन्त बर्बर और निष्ठुर है—ही और मैं विद्रोह करेंगे। बेचारा हीथक्लिफ! हिण्डले उसे गुंडा, आवारा कहता है, उसे हमारे साथ बैठने भी नहीं देता।"

लौकवुड को दुःस्वप्नों ने आ घेरा। उसने स्वप्न में एक डरी हुई पीली पड़ गई-सी लड़की को देखा जो अपने को कैथराइन लिण्टन कहती थी। वह खिड़की के बाहर खड़ी आर्तस्वर से विलाप करती-सी कह रही थी, "मैं बीस बरसों से बेघरबार भटक रही हूं।"

लौकवुड जाग उठा। जब वह ग्रेन्ज में लौट आया तो उसने सारी कहानी अपने घर की देखभाल करनेवाली श्रीमती नैलीडीन को सुनाई। नैली हाइट्स और ग्रेन्ज दोनों ही जगहों पर बहुत दिनों तक नौकरी कर चुकी थी। उसने लौकवुड को यह कथा सुनाई :

हैअरटन के पितामह वृद्ध अर्नशॉ लिवरपूल गए। यात्रा से लौटने पर वे अपने साथ एक गंदा, चिथड़े पहने हुए काले बालोंवाला लड़का ले आए। जो उन्हें बेघर सड़क पर मिला था। उन्होंने लड़के को नहलवाया और उसे केवल हीथक्लिफ नाम दिया, जिससे उसके परिवार इत्यादि का कुछ भी पता नहीं चलता था। यह लड़का बड़ा चुप्पा था और था वैसे मज़बूत दिल का, क्योंकि मार खाने पर एक भी आंसू उसकी आंखों से नहीं निकलता था। इसीलिए अर्नशॉ को यह लड़का बहुत पसन्द था। अर्नशॉ की लड़की कैथराइन शीघ्र ही इस हीथक्लिफ के साथ खेलने लगी और दोनों में मित्रता हो गई। किन्तु अर्नशॉ का पुत्र हिण्डले अर्नशॉ को इस हीथक्लिफ से बड़ी घृणा थी। वह यह समझता था कि हीथक्लिफ उसके पिता का सारा स्नेह उससे छीने ले रहा था।

वृद्ध अर्नशॉ मर गए। हिण्डले कॉलिज से अपनी पत्नी के साथ लौट आया। यह स्त्री हीथक्लिफ से बहुत घृणा करती थी। उसने उसे नौकर बना दिया। कैथराइन को युवक हीथक्लिफ से वही स्नेह बना रहा। वह भाई के व्यवहार को पसन्द नहीं करती थी।

हिण्डले के एक बेटा पैदा हुआ और कुछ दिन बाद ही उसकी पत्नी क्षय रोग से मर गई। हिण्डले दुःख से व्याकुल हो गया और खूब शराब पीने लगा।

इन्हीं दिनों थ्रशक्रौस ग्रेन्ज के एडगर लिण्टन ने कैथराइन को देखा। वह उसे देखकर मोहित हो गया। वह शांत और नम्र स्वभाव का विद्वान व्यक्ति था। कैथराइन के मन में हीथक्लिफ के प्रति प्रेम था, इसलिए जब लिण्टन ने विवाह का प्रस्ताव किया तो कैथराइन बहुत ही मुश्किल से मानी।

जब हीथक्लिफ ने इस संबंध के बारे में सुना तो वह अचानक ही गायब हो गया। कैथराइन रात-भर उसे बाहर मेंह में ढूढ़ती रही और अन्त में उसे बड़े ज़ोर के बुखार ने

आ दबाया। इस बीमारी ने उसके शरीर को तोड़ दिया और उसकी मानसिक उत्तेजना उसके स्वास्थ्य के लिए एक भय का कारण बन गई।

तीन वर्ष बीत गए। अब कैथराइन श्रीमती लिण्टन थी। वह ग्रेन्ज में रहने चली गई थी। नैलीडीन जो अब तक हिण्डले के छोटे बच्चे हेअरटन की धाय थी, अब कैथराइन के साथ आ गई थी। हीथक्लिफ का कुछ पता नहीं चला। यद्यपि नैली को ऐसी आशा नहीं थी, फिर भी विवाह के प्रारंभिक छः मास शान्तिपूर्वक व्यतीत हो गए। कैथराइन भी पहले से अधिक शांत दिखाई देती थी।

अचानक हीथक्लिफ लौट आया। वह कैथराइन से मिलने आया। वह अब पूरा जवान और खूबसूरत आदमी था और भद्र पुरुष लगता था। उसे देखकर ही लगता था कि उसके पास अपार धन था। वह इतने दिन कहां रहा, कैसे एक गंवार से वह ऐसा भद्र पुरुष बन गया, कैसे शिक्षा और धन दोनों पर उसने अधिकार कर लिया, यह कोई नहीं जान सका। अब भी उसके सुन्दर कजर जैसे मुख पर एक हिंसक भाव दिखाई देता था। वह कठोर-सा तो लगता ही था।

कैथराइन उसे देखकर हर्ष से पागल हो गई। एडगर ने उसे देखा तो वह क्रुद्ध भी हुआ और उदास भी, क्योंकि हीथक्लिफ ने उसका प्रकट रूप से तिरस्कार किया। हीथक्लिफ बहुधा आता। कुछ ही दिनों में एडगर की अठारह वर्षीय बहिन उसके प्रेम में पड़ गई। कैथराइन को इससे मनोरंजन तो हुआ किन्तु उसने लड़की के भविष्य की दृष्टि से उसे हीथक्लिफ का असली परिचय दिया कि वह वास्तव में बड़ा क्रूर था और उसके जीवन का उद्देश्य था—वह अपने शत्रुओं का नाश करे। और यह कि कैथराइन हीथक्लिफ की वास्तविकता जानते हुए भी उससे प्रेम करती थी, जैसे उसे न चाहना उसके लिए असंभव था।

हीथक्लिफ वुदरिंग हाइट्स में जम गया। हिण्डले के अब दो ही शौक थे, शराब पीना और जुआ खेलना। हीथक्लिफ उसे खूब पैसा देता था और शीघ्र ही हीथक्लिफ ने उसे बरबाद कर दिया और अपने जूए के कर्ज चुकाने को हिण्डले ने सारी अर्नशॉ की सम्पत्ति को हीथक्लिफ के हाथ गिरवी रख दिया।

अर्नशॉ-परिवार के बाद हीथक्लिफ को लिण्टन-परिवार से घृणा थी, क्योंकि लिण्टन ने ही कैथराइन को उससे छीन लिया था। जब उसे एडगर की बहन ऐसाबेला के प्रेम का पता चला, वह उसे झूठे ही फंसाने लगा। और एक दिन नैली ने इसे देख लिया और कैथराइन से कह दिया। पहले तो कैथराइन लिण्टन की ओर बोली, पर जब लिण्टन हीथक्लिफ के विरुद्ध बोला तो वह हीथक्लिफ की तरफ से बोलने लगी। मार-पीट हो गई। हीथक्लिफ चला गया और कैथराइन बेहोश हो गई। उसको सदमा बैठ गया। उसी रात ऐसाबेला हीथक्लिफ के साथ भाग गई। छः हफ्ते बाद ऐसाबेला का पत्र आया जिसमें हीथक्लिफ के प्रति घृणा थी। वह उससे बहुत ही निष्ठुर व्यवहार करता था। नैली को पता चला कि कैथराइन की बीमारी के दिनों में हीथक्लिफ उसके बाग में छिपा रहता था।

कैथराइन के एक लड़की हुई और कैथराइन मर गई। लड़की का नाम भी कैथराइन रखा गया। लिण्टन-परिवार में पुत्र का अभाव था। अतः सम्पत्ति ऐसाबेला की

त्याग और प्रेम
[कैमिले¹]

ड्यूमा, अलेक्जेंडर फिल्स : फ्रेंच लेखक अलेक्जेंडर ड्यूमा फिल्स का जन्म पेरिस में २७ जुलाई, १८२४ को हुआ। आपके पिता प्रसिद्ध उपन्यासकार अलेक्जेंडर ड्यूमा थे। माता का नाम मेरी लेबे था। जब आपका जन्म हुआ तब आपके माता-पिता का विवाह नहीं हुआ था। बाद में उनका विवाह हो गया। अपने स्कूल-जीवन में आपको अवैध संतान के नाम से काफी अपमान उठाना पड़ा। वैसे पिता पुत्र में बड़े अच्छे संबंध थे और दोनों ही बड़े खर्चीले थे। अकेले-अकेले रहते थे। शीघ्र ही आपपर १०,००० का कर्जा हो गया। आर्थिक संकट से बचने के लिए आप लिखने लगे और १८४८ में 'कैमिले' की रचना की। बाद में आपने इसका नाटकरूपांतर कर दिया। आगे चलकर आप बहुत धनी हो गए और आपको साहित्यिकों में बड़ा सम्मान मिला। आपमें अपने पिता के प्रति सद्भावना बनी रही। आपको १८७४ में फ्रेंच अकादमी के लिए चुन लिया गया। २७ नवम्बर, १८९५ में आपकी मृत्यु हुई।

'कैमिले' (त्याग और प्रेम) मूलरूप में पहला बार १८४८ में प्रकाशित हुआ। यह आपकी एक मर्मस्पर्शी रचना है।

पेरिस का वह बदनाम हिस्सा अपने आदमियों की वजह से यह नाम पा सका था। रयू अन्तिन के एक मकान में एक वेश्या की बुरी हालत में मृत्यु हो गई थी, क्योंकि वह क[र्ज] से लदी हुई थी। अब उसका फर्नीचर और सामान बिक रहा था। उस भीड़ में लोग वै[से] ही तमाशा देखने के लिए खड़े थे, क्योंकि इससे उन्हें एक तरह की सनसनी मिल र[ही] थी। लेकिन एक व्यक्ति ऐसा भी वहां था जिसके उद्देश्य इतने निम्नकोटि के नहीं थे। वह एक साहित्यिक व्यक्ति था जो न केवल कौतूहलप्रिय था किन्तु उसमें यौवन और प्रे[म] के आकर्षण के कारण एक दूसरी भावना थी। मेमूज़ील मारग्यूराइट गोथियार के पा[स] कई लोग ऐसे आते थे जो उसमें दिलचस्पी लिया करते थे और उनका स्तर बहुत निम्न कोटि का होता था। पर यह आदमी ऐसा नहीं था। वह देखता था कि रूप और यौ[वन] से सम्भ्रान्त एक स्त्री दुखियारी थी। उसने उसे केवल दूरी से देखा था। उसने मेननलैस्‌कोट नामक पुस्तक की एक प्रति उस नीलाम में खरीद ली। जब उसने उस किताब [को] खोला तो उसमें लिखा हुआ था, 'मारग्यूराइट के प्रति मेनन—विनम्रता', और नी[चे] आरमन्ड ड्यूवल के हस्ताक्षर थे। इस लेख ने उसमें एक कौतूहल जगा दिया। कुछ दि[न]

1. Camille (Alexander Dumas fils)

नाना

[नाना[1]]

ज़ोला, एमिल : फ्रेंच उपन्यासकार एमिल ज़ोला का जन्म पेरिस में २ अप्रैल, १८४० को एक इटैलियन ग्रीक इंजीनियर के घर में हुआ। माता फ्रेंच थी। एक्स में आपका लालन-पालन हुआ। १८५८ में आप पेरिस में एक क्लर्क बन गए और १८६४ में आपने अपनी पहली किताब प्रकाशित कराई। १८६६ में ज़ोला एक जबरदस्त आलोचक बन गए। कला और साहित्य पर आपके लेख पत्र-पत्रिकाओं में निकलने लगे और यह आलोचना आपने अनेक उपन्यासों और पुस्तकों में जारी रखी। २६ सितम्बर, १९०२ को ज़ोला की मृत्यु हुई। आपके शयनागार में एक खराब स्टोव के कारण गैस भर गई और इसीसे आपकी मृत्यु हो गई।

नाना (१८८०) ज़ोला का विश्व-विख्यात उपन्यास है। आपने बहुत अधिक रचनाएं लिखी हैं लेकिन 'नाना' और 'नाना की मां' का नाम बहुत अधिक लिया जाता है। 'नाना' में आपने फ्रांस के वैभव-विलास की वास्तविक पोल को उघाड़कर सामने रख दिया है, समाज पर व्यंग्य किया है।

इमर वेरायटी थियेटर में दी ब्लांडवीनस नामक नाटक होनेवाला था। बोर्दनेव थेटर का मैनेजर बहुत व्यस्त था। मुनिएफोबेरी नामक पत्रकार ने देहात से आए हुए रिश्ते के भाई हेक्टरदलाफलोय का परिचय मैनेजर से कराया। बोर्दनेव अपने थिये-। चकला कहा करता था और उसने यह भी बताया कि उसके यहां एक नई अभि-नाई थी। उसका नाम नाना था और सारा पेरिस उसके बारे में चर्चा कर रहा था न वह गाना जानती थी और न उसे अभिनय करना आता था लेकिन वह इतनी थी कि उसे किसी चीज की जरूरत ही नहीं थी। क्योंकि आज उद्घाटन था, भीड़ इकट्ठी हो गई थी। स्टीनर बैंकर वहां उपस्थित था। उसकी प्रिया रोज मिनन थी। ना के साथ अभिनय किया करती थी। उस दिन रोज मिनन का पति स्टीनर के साथ मिनन अपनी पत्नी के प्रेम-सम्बन्धों का प्रबन्ध किया करता था। डागेनेट नामक रियों पर अपना समस्त धन नष्ट कर चुका था, उसको नाना का प्रिय पात्र वहां ता। लूसी स्टेवर्ड ब्लांश डेसिवरी और गागा नामक प्रसिद्ध वेश्याएं भी वहां उप-थी। दरबार का चेम्बरलेन काउन्ट मफ्फ दे ब्यूविले अपनी पत्नी और ससुर के साथ

---

[1] [illegible] (Emile Zola)। 'नाना' का 'हिन्दी अनुवाद [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] है। [illegible]

का एक बड़ा मकान खरीद दिया। नाना ने कुछ दिनों के लिए छुट्टी ली और वहां
ाई और उसने अपने सब मित्रों को वहां निमंत्रित किया। इस बीच में काउण्ट मफत
उसका परिवार मादाम ह्यू गन के यहां मेहमान बनकर आया। काउण्ट के साथ
ग्रेज राजकुमार था जो कुछ दिन पहले नाना से मिल चुका था और अब उसको
ढलती उम्र में भी उसकी जवानी जाग उठी—उस रात यदि वह एक घण्टे उसको
प्राप्त कर लेता! और यही उसकी कामना थी और उसके लिए वह कुछ भी देने
र था। अपने नये घर की सुषमा और सुन्दरता से नाना बहुत प्रभावित हुई। यहां
ले जॉर्ज मिला। इस लड़के से वह प्रभावित हुई किन्तु काउण्ट मफत से मिलने की
इच्छा नहीं थी। मफत की आतुरता और आवेग उसको डराते थे। स्टीनर के लिए
ीमार बन गई और एक सप्ताह तक वह जॉर्ज के साथ ऐसे रही जैसे पन्द्रह वर्ष की
ड़की अपने प्रथम प्रेम में निमज्जित रहती है। नाना के प्रेमी पेरिस से आने लगे
र्ज उनके साथ रविवार को घूमने निकल गया। उसे उसकी मां ने नाना की गाड़ी
लिया। जॉर्ज को उसके भाई फिलिप ने डांटा। उस रात नाना ने मफत के सामने
किया पर वह फिर से लौट आई जहां दूसरी अभिनेत्री उसकी जगह काम कर रही
न महीने बाद काउण्ट मफत की लड़ाई हो गई। उसे यह अभी तक नहीं मालूम
नाना पर साथ-साथ स्टीनर का भी अधिकार चल रहा था। जब उसने उसे थियेटर
। अभिनेता फोनतन के साथ देखा तो उसे क्रोध आ गया। नाना को इधर फोशेरी
र क्रोध आया क्योंकि उसने पत्र में एक लेख लिख दिया था 'सुनहरी मक्खी' जिसमें
क लम्बी खूबसूरत लड़की के बारे में वर्णन किया था जो पेरिस की गन्दी गलियों
नकर आई थी और अभिजातकुल को बिगाड़ रही थी, बर्बाद कर रही थी। नाना
र ने कहा कि फोशेरी मफत की पत्नी को बहका रहा था। यद्यपि यह सत्य था
ाउण्ट इसको प्रमाणित नहीं कर सका।

अब नाना फोनतन के प्रेम में पड़ गई। फोनतन उसे मारता, उसके धन को खर्च
नाना अब सड़कों पर घूमने लगी। ताकि फोनतन को सहायता दे सके। अब एक
बहुरूपी वेश्या सेटिन ही नाना की दोस्त थी। इस बीच में पुलिस नाना के पीछे
। वह उसके चंगुल में बाल-बाल बची और इसलिए उसे काफी समय बाद माफ़
ा कर लेनी पड़ी। बोर्दनाव के नए नाटक में एक [illegible] का उसे अभिनय करना
स नाटक का खर्चा काउण्ट उठा रहा था। पार्क मोनस्यू के निकट एक विशाल
र के रूप में दे दिया गया। नाना एकमात्र काउण्ट की बनकर रहे, इसके लिए
कुछ दिन को तैयार था। इस नाटक में नाना बुरी तरह असफल रही लेकिन अब
न नगर की रानी बन गई। उसके घर में सबसे अच्छी चीजें आ गईं। सुन्दर
। उसके [illegible] में अनुपम [illegible] दिखाई देने लगी। पलंग पर [illegible] का पानी
गई। उसके साथ अब कई [illegible] थे और [illegible] की ओर तीन [illegible]

उसपर खर्च किए जाते थे। अब नाना मफत के प्रति अपना पतिव्रत दिखाने लगी। यहां तक कि कभी-कभी उसे घरेलू मामले में भी सलाह देने लगी। किन्तु कुछ ही दिन बाद वह काउण्ट द वेंदुवर्स की सम्पत्ति को भी उड़ाने में लग गई। इसके बाद जॉर्ज के भाई फिलिप आने लगा। नाना ने उसके सिर पर जादू कर दिया था जिसको कि नाना के चंगुल से जॉर्ज को बचाने के लिए भेजा गया था. किन्तु निरन्तर पुरुषों में घिरी रहने के कारण नाना ऊबने लगी और क्योंकि उसके पास धन निरन्तर चारों ओर से बरसता था, इसलिए उसपर कर्ज़ बढ़ने लगे। लुई सुद अस्वस्थ रहता था। वह उसके पास भी जाती और कुछ घण्टों के लिए माता का सा व्यवहार करती। इसके बाद नाना को सेटिन मिली और उसे अपने भवन में ले आई। पुरुषों ने सेटिन में नाना की प्रतिद्वन्द्विनी पाई।

जून का महीना था। रविवार के दिन लांगचेम्पस में पेरिस के बड़े पुरस्कार की घुड़दौड़ होनेवाली थी। वेंदुवर्स की सम्पत्ति विनष्ट हो चुकी थी। लूसीगनन नाम के प्रिय घोड़े पर उसने अपना दांव लगाया और एक घोड़ी का नाम उसने नाना रख दिया था। नाना ने भी वहां उपस्थित रहकर उस समुदाय को जैसे जीवन्त कर दिया। उसके चारों ओर जो लोग घिरे हुए थे उनसे वह अपनी गाड़ी में बैठी हुई, शैम्पेन जैसी कीमती शराब पिलाती हुई मानो अपना दरबार कर रही थी। घुड़दौड़ शुरू हुई और नाना नामक घोड़ी पीछे से निकलकर आगे आ गई। विशाल भीड़ में 'नाना-नाना' गूंजने लगा। वेंदुवर्स ने नाना नामक घोड़ी पर लोगों को दांव लगवा दिए थे, लेकिन अपना धन उसने लूसीगनन नामक घोड़े पर ही लगाया था। यह बात खुल गई और वह बदनाम हो गया और इस बदनामी ने उसे बर्बाद कर दिया।

कुछ दिन बाद नाना बहुत बीमार पड़ गई, उसके गर्भपात हो गया था। अपनी रोगशय्या पर पड़े हुए उसने प्रयत्न किया कि मफत का उसकी पत्नी से मेल हो जाए। अन्त में उन दोनों का मिलान हो गया। मफत ने देखा कि नाना अब जॉर्ज की भुजाओं में थी। अब वह अपने जीवन के बारे में बेपरवाह हो गई थी। नौकर उसे बेवकूफ़ बनाते थे, धोखा देते थे। बहुत साधारण चीज़ों पर वह हज़ारों फ्रैंक खर्च कर देती थी। पर फिर वे चीज़ें बेफ़िक्री से तोड़ दी जाती थीं। बड़े-बड़े बिल बिना चुकाए पड़े थे। कर्ज़ा बढ़ता जा रहा था। इसके बाद जॉर्ज को गिरफ्तार कर लिया गया। नाना को देने के लिए उसने अपने रेजीमेन्ट से बारह हज़ार फ्रैंक चुराए थे। जॉर्ज को पता चल गया था कि नाना का उसके भाई से सम्बन्ध भी था, तो उसने नाना के शयनागार में अपना छुरा भोंक लिया, लेकिन वह मर नहीं सका। मादाम ह्यूगन इस घटना से किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई और सेवा-सुश्रूषा कर ठीक करने के लिए जॉर्ज को अपने साथ ले गई।

अब नाना ने मफत के प्रति ऐकान्तिक तन्मयता दिखाने का बहाना करना छोड़ दिया। हर समय लोग उसके पास खुले तौर पर आने लगे। वह एक के बाद एक से धन निकाल लेती। काउण्ट इस बात को सुन-सुनकर वृद्ध होने लगा। स्टीनर, मुलिए फोचेरी से जैसे वह निकल गई। मफत उसपर अधिकार करने में असमर्थ हो गया। वह मानो नाना के मनोरंजन के लिए एक कुत्ता था किन्तु मफत का भी अन्त आ गया। उसका बूढ़ा ससुर मार्क्विस नाना के पास आने लगा। मफत भाग गया और उसने गिरजे में

प्रेम के बन्धन

[रमोना[1]]

जैक्सन, हेलेन हंट : अंग्रेजी लेखिका हेलेन मेरिया फिस्के का जन्म १८ अक्टूबर, १८३१ को अमरीका में एम्हर्स्ट नामक स्थान में हुआ। २१ वर्ष की अवस्था में आपने कैप्टेन एडवर्ड हंट से विवाह किया। १८६३ में आपके पति का देहांत हुआ। तब तक आप अपने पति के साथ जगह-जगह तबादला होने पर आती-जाती रहीं। उसके बाद ही आपने लेखन प्रारम्भ किया। १८६७ से मृत्यु-पर्यंत आपने काफी लिखा। पहले 'एच० एच०' के उपनाम से लिखा। बाद में आपने कोलोरेडो स्प्रिंग्स के डब्ल्यू० एस० जैक्सन नामक एक बैंकर से विवाह कर लिया। उसके बाद अमरीकी इण्डियनों के प्रति आपकी सहानुभूति बढ़ती गई। उनकी जमीन-जायदाद को यूरोप से आए हुए लोगों ने छीन लिया था। श्रीमती जैक्सन का मत था कि यह इण्डियनों के प्रति एक प्रकार का अत्याचार था। १८८४ में आपने अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए 'रमोना' नामक उपन्यास लिखा जो बहुत विख्यात हुआ। इसके एक वर्ष बाद १२ अगस्त, १८८५ को आपका सैन फ्रांसिसको में देहांत हो गया।

इण्डियन बहुधा रैड इण्डियन कहे जाते हैं। यूरोपीय लोगों के पहुंचने से पूर्व अमरीका महादेशों में अनेकों जातियां रहती थीं। क्योंकि कोलम्बस भारत अर्थात् इण्डिया ढूंढ़ने निकला था, गलती से उसने अमरीका को इण्डिया कहा और उसके निवासियों को इण्डियन कह दिया। बाद में जब भारत का यूरोपीय लोगों ने पता चला लिया, तब अमरीका के मूल निवासियों को अमरीकन इण्डियन कहा जाने लगा। यूरोप की विभिन्न जातियां अमरीका में आ बसी थीं। उन्होंने वहां की मूल जातियों के प्रति घोर अत्याचार किया था। हेलेन उन्नीसवीं सदी की लेखिका थीं। उस समय तक ये घटनाएं होती रहती थीं। इसलिए उनके इस उपन्यास में इन परिस्थितियों का विवरण अत्यंत विशद रूप में आ गया है।

भेड़ों पर ऊन उगती ही है और उसे काटा भी जाता है। सिनौरा मोरेंनो के पशु-पालन-केन्द्र में भी वर्ष का सबसे अधिक व्यस्त समय आ पहुंचा था। खूनी मैक्सिकन युद्धों से पूर्व, जबकि दक्षिण कैलिफोर्निया अलग नहीं हुआ था, पशुओं के लिए बहुत अधिक चरागाहें थीं। अब उतनी अच्छी चरागाहें नहीं बची थीं, लेकिन विधवा सिनौरा ने अभी तक मोरेंनो-परिवार की काफी सम्पत्ति बचा रखी थी। वह अपने परिवार की भूमि की रक्षा के लिए केवल अपने हेतु ही नहीं लड़ती थी। उसके पास एक आशा थी—उसका प्यारा बेटा फेलिपे। वह सुन्दर था। किन्तु माता के कठोर अनुशासन ने उसे कुछ दब्बू

[1] Ramona (Helen Hunt Jackson)

बना दिया था। वास्तव में सिनौरा का स्वभाव था ही रोबीला।

फिलिपे की बीमारी ने सारा काम बिगाड़ दिया। सिनौरा व्यस्त हो गई अपने पुत्र की देख-रेख में। ऊन काटने का काम फिलिपे के ठीक होने तक के लिए रुक गया। रमोना सिनौरा की पालिता बालिका थी। वह भी सिनौरा के साथ फिलिपे की निरन्तर सेवा करती रही। धीरे-धीरे फिलिपे का स्वास्थ्य सुधरने लगा।

सिनौरा के पास रमोना विगत सोलह वर्षों से थी। वह बड़ी विनम्र, प्रसन्नचित्त और कोमल हृदय बालिका थी। उसकी जन्मकथा सिनौरा के लिए दुःखद थी। सिनौरा की मर्यादाएं और गर्व दोनों को ही उससे आघात पहुंचता था। रमोना के पिता का नाम था ऐंगस फेइल। वह स्कॉटलैंड का निवासी था। सिनौरा की बड़ी बहिन ने पहले तो उससे प्रेम प्रदर्शित किया, किन्तु बाद में उसे ठुकरा दिया था। क्रोध और अपमान से विक्षुब्ध ऐंगस मदिरा पीने लगा और उसने पतन का पथ पकड़ लिया। शीघ्र ही उसका नाम कलंकित हो चला। अन्त में उसने एक अमरीकी इंडियन स्त्री से विवाह कर लिया। उसके रमोना नामक पुत्री हुई। एक बार वह उस बालिका को लेकर सिनौरा की बड़ी बहिन से मिलने गया। वह अपनी पुरानी प्रेमिका को शायद अपनी बच्ची दिखाना चाहता था। परन्तु तब उस सिनौरिटा का, जो अपने-आप में रहती थी, और जिसने बड़ी निष्ठुरता से व्यवहार किया था, दर्प खंडित हो चुका था। उसका विवाहित जीवन दुःखों से भरा था। और अब वह बांझ थी। उसने ऐंगस से वह बच्ची मांग ली और गोद ले ली। जब उसका देहान्त हो गया तब उस बच्ची को सिनौरा मोरैनो ने पाल लिया। अब रमोना बड़ी हो गई थी। वह बिलकुल अपनी इंडियन माता जैसी लगती, किन्तु उसके नेत्र अपने पिता जैसे नीले-नीले थे। वह न अपनी सुन्दरता के प्रति जागरित थी, न उसे यही पता था कि तरुण फिलिपे उसके प्रति अगाध प्रेम लिए हुए था। उसे केवल इतना ज्ञात था कि सिनौरा को उससे तनिक भी प्रेम नहीं था। वह उसे पालती थी, पढ़ाती थी, उसकी देख-रेख करती थी, वह यह सब कुछ कर सकती थी, करती थी, किन्तु वह उससे प्रेम नहीं कर सकती थी, न ही करती थी।

आखिर वह दिन आया जब सिनौरा ने पुत्र के पूर्ण स्वास्थ्यलाभ की घोषणा कर दी। भेड़ों की ऊन का कटना प्रारम्भ हुआ।* पशुपालन-केन्द्र के सब कर्मचारी सन्नद्ध हो गए। इंडियनों का एक दल अपने मुखिया के पुत्र ऐलैसैंड्रो के साथ ऊन कटाई में मदद करने आ गया। ऐलैसैंड्रो एक सशक्त सुन्दर युवक था। काम शुरू होने के कुछ ही समय बाद फिलिपे की तबियत उस गर्मी में बिगड़ने लगी। वह थकान से फिर बुखार में पड़ गया और उसकी हालत बहुत ज्यादा खराब हो गई। घर-भर को लगा जैसे वह मौत के करीब पहुंच गया था। किन्तु भाग्य उसके साथ था। धीरे-धीरे संकट दूर होने लगा और वह फिर अच्छा होने लगा। किन्तु शय्या छोड़ने में उसे काफी समय लग गया। उसकी अनुपस्थिति में, कई सप्ताह तक, सबको अपनी योग्यता, नम्रता और कौशल से प्रभावित करता हुआ, ऐलैसैंड्रो ऊन कटाई के काम की देखरेख करता रहा।

इस कार्य-वेला में वही हुआ जिसकी सम्भावना थी। ऐलैसैंड्रो रमोना पर मोहित हो गया। और धीरे-धीरे रमोना भी उसके प्रेम को बढ़ावा देने लगी। अन्त में वह इंडियन

मुखिया का सुन्दर पुत्र अपने भावावेग को अवरोधों में नहीं रख सका और उसने अपना प्रेम रमोना पर प्रकट कर दिया। रमोना ने उसकी पत्नी बनना स्वीकार कर लिया।

ज्योंही उन्होंने विभोर होकर आलिंगन किया, सिनौरा ने उन्हें उस अवस्था में देख लिया। सिनौरा मैक्सिकन थी। उसके क्रोध का अन्त नहीं रहा। उसने तुरन्त ही रमोना को ऐलैंस्सैंड्रो के बाहुपाश से अलग कर दिया। उसने आशा की कि अगले दिन वे लोग उससे अपने इस व्यवहार के लिए क्षमा मांग लेंगे। सिनौरा की जातीयता का गर्व इस बात से बहुत आहत हुआ कि रमोना ने एक इंडियन से विवाह करना निश्चित कर लिया था। यह उसकी दृष्टि में एक घोर अपराध था। तब उसने रमोना को उसके जन्म की सारी कथा सुना दी, ताकि लांछन मैक्सिकनों पर न लग सके। इस कहानी से रमोना को और भी बल मिला। उसको यह ज्ञात हो गया कि उसके रक्त में इंडियन अंश भी था, क्योंकि उसकी माता स्वयं इंडियन थी। सिनौरा ने रमोना को उत्तराधिकार के मारे सुखों से वंचित कर देने की धमकी दी, किन्तु वह रमोना को विचलित नहीं कर सकी। रमोना ऐलैंस्सैंड्रो से विवाह करने के लिए दृढ़ थी। धीरज से वह अपने प्रेमी के लौटने की प्रतीक्षा करने लगी, जो अपने पिता को विवाह के बारे में सूचना देने घर चला गया था।

लेकिन कई दिन बीत गए। ऐलैंस्सैंड्रो नहीं लौटा। रमोना को धीरे-धीरे यही निश्चय हो गया कि वह कहीं मारा जा चुका था, अन्यथा वह अवश्य लौटकर आता। वेदना से रमोना का मन फटने लगा और वह अकेली रहने लगी। वह अपनी स्मृति को सजग रखने के लिए उन स्थानों पर घूमने लगी, जहां वह अपने प्रेमी से एकांत में मिला करती थी। एक दिन न जाने क्यों शाम की घिरती छायाओं में, उसे यह लगने लगा जैसे उसका प्रेमी लौट आया था, और एक एकान्त मिलन-स्थल में उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। प्रेम की यह माया बड़ी दुःसह होती है, परन्तु अनुभूति के माध्यम से प्रेमी उसे समझ लेते हैं। उसे लगा कि यदि वह वहां जाएगी तो उसे अवश्य ही ऐलैंस्सैंड्रो के दर्शन होंगे। और वह सचमुच उधर ही चल दी। एक व्यक्ति उसे वहां दिखाई दिया। दुःखों की छाया उसके मुख पर स्पष्ट थी। वह देखकर भी उसे पहचान नहीं सकी। वह ऐलैंस्सैंड्रो ही था!

अन्त में रमोना को उसने अपनी कहानी सुनाई। अमरीका में आकर बसनेवाले यूरोपियनों ने उसके गांव को बरबाद कर दिया था। उनके घोड़े, गाय और बैल चुरा लिए थे। इण्डियनों को तबाह करके भगा दिया था। उनके घर लूटे जा चुके थे। और यह सब कुछ कानून के नाम पर हुआ था!

ऐलैंस्सैंड्रो जो पहले मुखिया का पुत्र था, अब न उसके पास धरती थी, न पैसा था। वह इतने आरामों में पली, इतनी कोमल और अनुभवशील रमोना को अपनी पत्नी बनाकर कैसे ले जा सकता था?

रमोना सुनती रही। ऐलैंस्सैंड्रो की एक भी बात उसे विचलित नहीं कर सकी। जब ऐलैंस्सैंड्रो आनाकानी करने लगा तो रमोना ने भी दृढ़ता से अपना निश्चय सुना दिया

कि यदि वह उसकी पत्नी नहीं बनेगी तो साधुनी हो जाएगी। अन्त में ऐलैस्सैंड्रो को स्वीकार करना पड़ा।

वे सैनडीगो चले गए और वहीं उन दोनों का विवाह हुआ। अब रमोना ने अपना नाम बदल लिया। एलैस्सैंड्रो उसे मजेल्ला कहा करता था। रमोना को मजेल्ला नाम प्रिय था। पुराने जीवन का कोई भी निशान बाकी नहीं रहा। वे सैन पास्क्वेल नामक कस्बे में जा बसे। और दोनों ने नया जीवन प्रारम्भ किया।

ऐसा लगने लगा कि सुख लौट आए। ऐलैस्सैंड्रो ने अपना पशुपालन-केन्द्र बना लिया और कुछ ही दिन बाद उनके यहां आनन्द की हिलोर दौड़ गई। रमोना ने एक नीली आंखोंवाली बच्ची को जन्म दिया। वह मन ही मन बालिका को देखकर मुग्ध हो गई। किन्तु यह हर्ष भी अल्पकालिक प्रमाणित हुआ।

नये अमरीकी बढ़ते चले आए। और ऐलैस्सैंड्रो को अपना घर और जमीन बेचने को मजबूर होना पड़ा। एक बार फिर वह इण्डियन-परिवार बेघरबार हो गया।

ऐलैस्सैंड्रो को नई चिन्ता थी—एक ऐसी जगह ढूंढ़ी जाए, जहां ये निर्दय अमरीकी न मिलें। रमोना ने फिर किसी कस्बे में बसने की सलाह दी, किन्तु ऐलैस्सैंड्रो ने उसपर तनिक भी ध्यान नहीं दिया, क्योंकि रमोना उसे मजदूर बनाना चाहती थी, ताकि आमदनी का ज़रिया पक्का बना रहे।

ऐलैस्सैंड्रो का ध्यान सैन जैकिंटो की पर्वत-श्रेणियों की ओर गया। और वह अपना परिवार लेकर वहीं बसने चल पड़ा। यात्रा बहुत लम्बी थी। भयानक ठंड थी। मार्ग में ऐसा ज़बरदस्त तूफान आया कि बाप-बेटी और रमोना, तीनों ही घिर गए। ज़िन्दगी के लाले पड़ गए और मौत अब करीब थी कि किस्मत ने साथ दिया। यात्रा करते हुए एक अमरीकी परिवार ने दया की भावना से विवश होकर उनके प्राणों की रक्षा की।

अन्त में पति-पत्नी सबोवा नामक ग्राम में बस गए। ऐसा लगा जैसे फिर अच्छे दिन लौट आए थे परन्तु बालिका स्वस्थ नहीं हुई थी। सारी ग्रीष्म ऋतु बीत गई और इण्डियन एजेंसी के अमरीकी डाक्टर की लापरवाही से अन्त में वह इस संसार से बिदा हो गई। ऐलैस्सैंड्रो और रमोना पर मानो वज्रपात हुआ। वे दुःख से व्याकुल होकर पर्वतों के एकान्त में चले गए। और वहीं अपने दिन काटने लगे। धीरे-धीरे दुःख कम होने लगा और उनके यहां एक और बालिका ने जन्म लिया। पति-पत्नी ने उसका नाम रमोना रखा।

ऐलैस्सैंड्रो के साथ हुए अत्याचारों ने उसमें एक कटुता भर दी थी। एक बार अपने आवेश में उसने एक अमरीकी का घोड़ा पकड़ लिया और उसे हांक ले चला। गोरे अमरीकी ने देखा और निहायत ठंडे खून से उसने पिस्तौल निकालकर इण्डियन के गोली मार दी। ऐलैस्सैंड्रो ने अन्तिम अत्याचार सह लिया और सदा के लिए मुक्त हो गया।

रमोना की जीने की इच्छा समाप्त हो गई। अब वह विधवा हो गई थी। उसे बुखार ने पकड़ लिया। किन्तु फिलिपे की प्यास बुझी न थी। उसने सिनौरा के मरने पर

अपनी प्रिया को ढूढ़ना शुरू कर दिया था। उसे रमोना का पता चल गया। वह रमोना और उसकी बेटी को अपने पशुपालन-केन्द्र में ले आया। यहां उसने रमोना की ऐसी सेवा की कि वह कृतज्ञता से झुक गई। और अन्त में उसकी पत्नी बन गई। तब वह मैक्सिको लौट गए।

उनके कई संतानें हुईं, किन्तु सबसे अधिक प्रिय, सबसे बड़ी रमोना थी, जो इण्डियन ऐलैसंड्रो की बेटी थी।

प्रस्तुत उपन्यास में इण्डियनों पर कानून के नाम पर होनेवाले अत्याचारों का वर्णन बहुत ही विशद है। इसमें हमें बड़े ही हृदयद्रावक दृश्य मिलते हैं। अपने समय में इस रचना ने बड़ी ही हलचल मचा दी थी। आज भी इसका महत्त्व कम नहीं है, क्योंकि इसमें एक युग सजीव होकर बोलने लगता है।

ऐल्कॉट :

एक परिवार

[लिटिल वीमेन[1]]

ऐल्कॉट, लुईज़ा मे : अंग्रेज़ी लेखिका लुईज़ा मे ऐल्कॉट का जन्म पैन्सिल्वेनिया (अमरीका) में, जर्मनटाउन में २६ नवम्बर, १८३२ को हुआ। आपके पिता एमॉस ब्रौन्सन ऐल्काट स्वयं बड़े बौद्धिक व्यक्ति थे, परन्तु उनमें परिवार-पालन की शक्ति समुचित नहीं थी। उनकी सीमंत पुत्री लुईज़ा जब १६ वर्ष की हुई तो आपपर सारे परिवार का बोझ आ पड़ा। आप स्कूल में पढ़ातीं, और सिलाई-कढ़ाई करतीं। कॉन्कर्ड (मैसेचुसेट्स राज्य) में जहां वे लोग अब रहते, आप घरेलू काम भी करतीं। आपका लेखन तब प्रारम्भ हुआ जब आपने धनोपार्जन के लिए पत्रिकाओं में लिखना प्रारम्भ किया। १८६२ में आप युद्ध में नर्स बनकर वाशिंगटन गईं। वहां आपका स्वास्थ्य बिगड़ गया और १८६६ में आप यूरोप चली गईं जब आप १८६७ में लौटीं तो आपने 'लिटिल वीमेन' (एक परिवार) नामक उपन्यास लिखा, जिसमें आपने अपना और अपनी बहिनों की बालकथा को कहानीरूप दिया। आप निरन्तर अपने परिवार का पोषण करती रहीं। आपने विवाह ही नहीं किया। आपने अपना जीवन अपने पिता, अनाथ भतीजों-भांजों का पालन-पोषण करने में लगा दिया। ६ मार्च, १८८८ को पिता की अन्तिम बीमारी में सेवा करते समय चढ़े हुए ज्वर के कारण आप बोस्टन में सदा के लिए सो गईं।

'लिटिल वीमेन' (एक परिवार) एक महान उपन्यास माना जाता है।

मार्च-परिवार वैसे निस्सन्देह सुखी था। पिता का नाम मार्च था, इसलिए परिवार भी इसी नाम से पुकारा जाता था। गरीबी आई, परिश्रम की मार टूटी। पिता मार्च यूनियन सेनाओं के साथ चला गया, किन्तु मार्च-परिवार की लड़कियों का साहस नहीं टूटा। मेग, जो, बैथ और ऐमी अपने काम में अडिग बनी रहीं। वे अपनी माता को मार्मी कहती थीं।

बड़ा दिन आ गया। लोग एक-दूसरे को भेंट देने लगे। लेकिन धनाभाव के कारण लड़कियों ने अपने लिए तो कुछ नहीं लिया, पर उन्होंने मार्मी के लिए भेंट खरीद दी। पड़ोस में एक परिवार रहता था। वह बहुत ही अधिक दरिद्र था। लड़कियों ने वहां अपना त्योहार का भोजन पहुंचा दिया। अच्छाई ने अपना सुन्दर फल दिखाया।

पड़ोस में ही थी लॉरेन्स नामक एक धनी व्यक्ति भी रहते थे। उन्होंने बड़े दिन की दावत का निमन्त्रण भिजवाया। श्री लॉरेन्स उदार आदमी थे। सोरी उनका पौत्र

---

1 Little Women (Louisa May Alcott)

था, जिसे जॉन ब्रुक पढ़ाया करता था। जो ने लौरी से दोस्ती करनी चाही, क्योंकि वह बालक अकेला रहता था। पर जो की बहिनों ने इसपर बधन लगा दिए और दोनों सग-सग नहीं खेल सके।

मार्च-परिवार की ये बहिनें, केवल अच्छी ही हों, ऐसी बात नहीं थी। उनमें अपने दोष भी थे। सुन्दरी मैग स्कूल के बच्चों को पढ़ाती थी और कभी-कभी वह असन्तुष्ट हो जाती थी। जो में लड़कों का सा स्वभाव था और आसानी से वह क्रुद्ध हो जाती थी। जब भी उसे बूढ़ी चाची मार्च का ध्यान आता, ऐसा विशेषतया हो जाता। वह उसके साथ रहती। ऐमी के बाल सुनहले थे। स्कूल में पढ़ती थी। किन्तु जैसे उसमें सहजता नहीं थी। बैथ घर की देख-भाल करती थी। वह सदैव स्नेहपूर्ण व्यवहार करती और विनम्र स्वभाव की थी।

मार्च-परिवार जब पार्टी में निमन्त्रित होता तो यह एक विशेष घटना बन जाती। जब श्रीमती गार्डिनर ने दोनों बड़ी लड़कियों को अपने यहां निमन्त्रित किया तो मार्च-परिवार के छोटे-से घर में काफी सनसनी-सी फैल गई। पार्टी में जो को अपना पड़ोसी लौरी मिला और गहरी मित्रता हो गई। इसके बाद जब लौरी बीमार पड़ा तो जो बिना किसी तकल्लुफ़ के उसके घर चली गई। लौरी सकोची स्वभाव का था। लजीला था। उसके विशाल भवन में जो उसका मनोरजन करती। उसके व्यवहार से मार्च-परिवार के प्रति सबको स्नेह हो गया। यहां तक कि वृद्ध श्री लरिन्स भी प्रभावित हो गए। उन्हें बैथ बहुत प्रिय थी और जब जो से उन्हें ज्ञात हुआ कि उस बालिका को सगीत बहुत प्रिय था, तो उन्होंने बैथ के लिए एक पियानो खरीदकर भिजवा दिया। अध्यापक जॉन ब्रुक को सुन्दरी मैग ही सबसे अधिक भाती थी। लौरी को लगने लगा कि शायद दोनों में कोई प्रेम-व्यवहार जाग उठा था।

यों ही दिन आनन्द से व्यतीत होते रहे। परन्तु अन्धकार अपना काम करता रहता है और एक दिन उसकी छाया स्पष्ट दिखाई पड़ने लगी।

श्रीमती मार्च के नाम एक तार आया, जिसमें लिखा था, "तुम्हारे पति बहुत बीमार हैं, तुरन्त आओ।"

श्रीमती मार्च ने अपने मन पर काफी काबू किया। लड़कियों ने भी यही दिखाने का प्रयत्न किया कि वे घबराई नहीं थीं। श्रीमती मार्च ने उसी समय जाना निश्चित कर लिया।

लड़कियों ने अपनी माता मार्मी की भरपूर मदद करने की कोशिश की। जो ने सबसे ज़ोरदार तरीका निकाला। उसने अपने सुन्दर केश—अपनी लम्बी लटें—पच्चीस डालरों में बेच दिए क्योंकि धन की बहुत अधिक आवश्यकता थी।

श्रीमती मार्च युद्धक्षेत्र की ओर चल पड़ीं। जॉन ब्रुक साथ में गया। लड़कियां घर रह गईं और भगवान से कुशल-मगल के लिए प्रार्थना करने लगीं।

छोटी बैथ पड़ोस में एक मरीज की सहायता करने जाने लगी। मरीज के जिस्म में सर्वत्र लाल चकत्ते पड गए थे। छूत की बीमारी थी। सेवा-सुश्रूषा का परिणाम यह हुआ कि बैथ को भी छूत लग गई और उसे भी ज्वर आने लगा। वह बहुत ज्यादा बीमार हो गई और उसकी जिन्दगी को खतरा पैदा हो गया। डॉक्टर ने हताश होकर कहा कि

श्रीमती मार्च को बुला लिया जाए।

किन्तु जैसे एक चमत्कार हो गया। श्रीमती मार्च जब तक लौटकर आईं, लड़की की तबियत पहले से कहीं अधिक सुधर चुकी थी।

फिर बड़ा दिन आ गया। बैथ पहले जैसी स्वस्थ तो नहीं हो सकी, परन्तु अब बिस्तर पर पड़ी नहीं थी।

युद्धक्षेत्र से पिता मार्च लौट आया। परिवार में आनन्द छा गया और बड़े दिन की दावत में लारेन्स-परिवार, श्री ब्रुक तथा सब आनन्द से सम्मिलित हुए।

बात छिपी नहीं रही। जॉन ब्रुक ने मेग से विवाह की बात चलाई। चाची मार्च ने सुना, तो नाराज हो गईं, मेग को धमकी दी कि वे उसे अलग कर देंगी, यह शादी हो गई तो उसे कुछ भी नहीं मिलेगा, लेकिन मेग पीछे नहीं हटी और उसी बात पर अड़ी रही। मार्च-परिवार ने इस प्रस्ताव को स्वीकार तो कर लिया, किन्तु तीन वर्ष के लिए टाल दिया।

तीन वर्ष व्यतीत हो गए। मार्च-परिवार की लड़कियां बड़ी हो गईं। मेग का ब्रुक से विवाह हो गया। पहले तो कुछ घरेलू संकट आए, किन्तु शीघ्र ही पति-पत्नी ने गिरस्ती जमा ली और आनन्द से रहने लगे।

जो अब साहित्य में रुचि लेने लगी थी। वह लिखती भी थी। न केवल यह उसके आनन्द का एक साधन था, वरन् इससे उसकी आय भी बढ़ी।

ऐमी की रुचि चित्रकला में थी। वह बड़ी सुन्दर स्त्री बन गई थी। चित्र बनाती और समाज में उसके प्रति लोगों में दिलचस्पी दिखाई देने लगी।

बैथ ने अपना पुराना स्वास्थ्य फिर कभी नहीं पाया। सारे परिवार को उसके प्रति सहानुभूति थी। सब जानते थे कि वह अधिक दिन नहीं जिएगी। इसलिए सब उसे अपना स्नेह देते थे।

मार्च-परिवार की एक परिचित महिला यूरोप जा रही थीं। उन्हें एक धार्मिक साथिन की जरूरत थी। जो का विचार था कि उसीको वे इस यात्रा में संगिनी बनाकर ले जाएंगी लेकिन उसके चचल स्वभाव के कारण उन महिला ने उसे न चुनकर, सुन्दरी ऐमी को चुना। इससे जो का हृदय टूक-टूक हो गया।

जो अपनी मार्मी और बैंथ के साथ घर ही रह गई और कुमारी ऐमी यूरोप चली गई।

किन्तु अब जो व्याकुल रहती। उसे पता था कि लौरी उससे प्रेम करता था। शायद वह उससे विवाह का भी प्रस्ताव करेगा—जो इससे परिचित थी। किन्तु उसके हृदय में लौरी के प्रति वही स्नेह था, जो एक बहिन को अपने भाई के प्रति होता है।

इसलिए जो ने अपनी समझदार मां से परामर्श किया और अपने भाग्य की परीक्षा करने वह उससे आज्ञा लेकर न्यूयार्क चली आई। श्रीमती कर्क एक बोर्डिंग हाउस चलाती थी, जहां कई लोगों का प्रबन्ध करना पड़ता था। उन्हींके यहां जो को गवर्नेस का काम मिल गया।

यद्यपि जो अपनी स्वतन्त्रता चाहती थी, फिर भी पहले उसे परिवार से बिछुड़ने

का दुख सताने लगा। किन्तु उसके साहित्यिक जीवन ने उसे सांत्वना दी। उसकी मित्रता एक जर्मन अध्यापक प्रोफेसर फ्रेडरिख मेयर से हो गई। वह व्यक्ति बड़ा अच्छा था। उसके सत्संग ने धीरे-धीरे जो के मन से घर की याद दूर कर दी।

शीघ्र ही जो को एक प्रकाशक मिल गया और उसकी कहानियां छपने लगीं। जो को इससे बड़ा भारी सन्तोष प्राप्त हुआ। किन्तु अब जो के घर लौटने का समय आ रहा था और उसने अत्यन्त भारालस हृदय से प्रोफेसर मेयर से विदा ली।

घर पहुंचते ही उसने लौरी को पाया, जो बड़ी उत्सुकता से उसके घर लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था। लौरी ने उससे विवाह का प्रस्ताव किया। जो ने अस्वीकार कर दिया, क्योंकि वह उसे भाई समझती थी। लौरी की पीड़ातुर अवस्था ने जो के हृदय को व्याकुल कर दिया। अपनी वेदना को भूलने के लिए लौरी अपने पितामह श्री लॉरेन्स के साथ यूरोप की यात्रा पर चला गया और वहीं उसकी ऐमी से फिर भेंट हुई।

इधर घर में दुःख की घटा और गहरी हो गई। बैथ को धीरे-धीरे यह पता चल गया कि वह अधिक दिनों जीवित नहीं रह सकेगी। और सचमुच वसन्त आते-आते वह इस संसार से चली गई।

उसके बाद यूरोप से समाचार आया कि लौरी ने अपनी निराशा से अपने को मुक्त कर लिया था और ऐमी से विवाह का प्रस्ताव किया था और शीघ्र ही दोनों परिणय के सूत्र में बंध जाने वाले थे।

जो अब एक सफल लेखिका मानी जाने लगी थी। किन्तु जीवन में वह अपने को एकाकिनी अनुभव करती। प्रोफेसर मेयर उससे मिलने आया। तब जो ने अनुभव किया कि वह जिस जीवन-संगी की प्रतीक्षा करती थी, वह यही था। शीघ्र ही दोनों का विवाह हो गया और उन्होंने लड़कों के लिए स्कूल खोल डाला।

छोटी-छोटी बच्चियां अब औरतें हो गई थीं। अब उनके अपने बच्चे थे। वे उन सब बच्चों की देखभाल करते थे जो उनकी देख-रेख में थे। प्रेम और सज्जनता के जो बीज उन्होंने जीवन में बोए थे, अब उन्हीं की फसल उनके हाथ आ गई थी। वेदनाएं जो आई थीं, उन्होंने उन्हें सवेदना का अक्षय पाठ पढ़ा दिया था।

प्रस्तुत उपन्यास में लड़कियों का मानसिक चित्रण किया गया है। दुःख से ही मनुष्य में वास्तविक धैर्य का जन्म होता है, यह प्रकट करना इसका ध्येय रहा है। लेखिका ने जीवन के उतार-चढ़ावों को पारिवारिक परिपार्श्व में रखकर देखा है, ताकि साधारण में से ही इस सत्य की पुष्टि हो। इसलिए यह उपन्यास अत्यन्त प्रभावोत्पादक सिद्ध हुआ है।

टॉमस हार्डी :

अभागिन

[टेस ऑफ द ड्यूर्बविले[1]]

हार्डी, टॉमस: अंग्रेजी उपन्यासकार टॉमस हार्डी का जन्म २ जून, १८४० में इंगलैंड में डोरचैस्टर नामक स्थान के निकट हुआ। अधिकतर शिक्षा अपने-आप पाई। एक स्थापत्यकार के दफ्तर में जवानी में काम किया, और फिर स्वतंत्र रूप से इमारतें बनवाने का काम किया। १८७१ से १८९७ तक आपने कुछ उपन्यास प्रकाशित कराए। उनसे अत्यंत ख्याति प्राप्त हुई। १८९७ के बाद आप कविता लिखने में लग गए। आप डोरचैस्टर में ही रहते थे और ११ जनवरी, १९२८ को वहीं आपका देहांत हुआ। हार्डी के उपन्यासों को आंचलिक कहा जा सकता है। आपके उपन्यासों में निराशा मिलती है। आप यह मानते थे कि मनुष्य का जीवन कुछ विशेष घटनाओं के मोड़ से बदल जाया करता है। टेस ऑफ द ड्यूर्बविले (अभागिन) पहली बार १८९१ में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास अपनी तीक्ष्ण मार्मिकता के कारण अत्यंत विख्यात है।

मई का सुहावना महीना था। शाम हो चुकी थी। जैक दर्बेफील्ड अपने घर जा रहा था। वह एक अधेड़ आदमी था और उसका निवास मार्लट ग्राम में था। वह एक झोंपड़े में रहता था। उसका परिवार काफी बड़ा था। गुजर-बसर काफी मुश्किल से हो रही थी। अड़ोस-पड़ोस में वह तरह-तरह के काम करता था और अपनी रोज़ी कमाता था।

आज वह कुछ शराब पी आया था। रास्ते में उसे दर्बेफील्ड का पादरी मिला। जैक को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि पादरी ने उसे प्रणाम किया। जैक जैसे मामूली गरीब आदमी को गांव का इज़्ज़तदार पादरी प्रणाम करे, यह बात क्या कम आश्चर्य की थी?

पादरी ट्रिंघम को पुरानी गाथाओं की खोज करने का शौक था। ब्लैकमूर की उपजाऊ घाटी की कितनी ही कहानियां वह इकट्ठी किया करता था। उसने जैक को 'सर जॉन' कहकर पुकारा।

धीरे-धीरे पादरी ने बताया कि वह ड्यूर्बविले के प्राचीन राजकुल का वंशज था; विलियम के समय के, जो कि विख्यात विजेता था, एक नौर्मन सामंत के वंश में उसके गौरवमय पूर्वजों का उल्लेख था।

जैक इस बात से अत्यन्त विचलित और प्रभावित हो उठा। उसमें एक अजीब गर्व भर गया। परिवार ने सुना तो उसमें भी आशा का सा संचार हुआ।

[1] Tess of the D'urbervilles (Thomas Hardy)

अगले दिन, जैक की पत्नी को ड्यूबंविले नामक एक परिवार का स्मरण हो आया, जोकि निकट ही ट्रैन्ट्रिज नामक स्थान में बसा हुआ था। जैक की पत्नी ने तुरन्त यह जान लिया कि वह परिवार उसके पति से सम्बन्धित था। उसने अपनी बड़ी बेटी सुंदरी टेस को वहा भेजना निश्चित किया। हो सकता था कि वह परिवार अपने सम्बन्धों को याद करे और इन गरीबों की कुछ मदद करे।

परन्तु इस परिवार ने तो ड्यूबंविले नाम वैसे ही रख लिया था, ताकि उनको कुछ सहूलियत हो जाए। इन लोगो का जैक मे किसी प्रकार का भी रक्त-सम्बन्ध नहीं था। टेस को जाना पड़ा। घर की हालत खराब थी ही। अगले दिन वह चेज़ ज़िले में श्रीमती ड्यूबंविले के घर पहुची। बहुत विशाल भवन था। बाहर हरे मैदान पर ही उसे एक युवक मिला, जिसने अपना नाम ऐलैक ड्यूबंविले बताया। ऐलैक ने टेस का सौन्दर्य देखा तो वह तुरन्त उससे आकर्षित हो गया। उसने उससे कई प्रश्न पूछे, किन्तु उसे अपनी माता के पास नहीं ले गया।

दर्बेफील्ड-परिवार में कुछ ही समय बाद एक पत्र आया, जिसमें टेस को नौकरी पर रखने की सूचना थी। काम यह था कि यह श्रीमती ड्यूबंविले की फाख्ताओं की देख-रेख करे। पत्र में लिखा था कि टेस तैयार हो जाए। एक गाड़ी भेज दी जाएगी, जिसमें वह अपना सामान रख लाए।

टेस तैयार हो गई। जिस दिन जाने का समय आया, स्वय ऐलैक अपनी अच्छी गाड़ी हाक ले आया जिसमें एक उम्दा घोडी जुती थी। अपने घर ले जाते समय उसने टेस को छेड़ा, क्योंकि गाड़ी जब पहाड़ी से उतरती थी तो टेस भयभीत हो जाती थी। वह हसता रहा।

वहां पहुचकर टेस को पता चला कि श्रीमती ड्यूबंविले अधी थी। वह उनके सामने बहुत कम ले जाई जाती। टेस का काम बहुत हल्का था। शनिवारों को वह बाकी नौकरों के साथ बाज़ार मे खरीद-फरोख्त करने चली जाती या नृत्यों मे भाग लेती।

एक शनिवार को जब वे लौटे तो और दिनो की अपेक्षा अधिक देर हो चुकी थी। औरतों में चख-चख चल पड़ी, एक अपना गुस्सा टेस पर उतारने लगी। उसी समय ऐलैक घोड़े पर सवार उधर से निकला। उसने टेस को घोड़े पर चलने का निमन्त्रण दिया। टेस प्रसन्नता से उसके साथ चली आई।

पहले की भांति उसने टेस से प्रेम प्राप्त करने की चेष्टा की। टेस कुछ घबरा गई। वह थक भी गई थी। उत्तर ठीक से नही दे सकी। वह चलते-चलते मोड़ से आगे निकल आया था। अब दिशाज्ञान के लिए उसे नीचे उतरना पड़ा। टेस भी उतर पड़ी। वह इतनी थक गई थी कि उसकी आंखें झपक गईं और वही पथ पर सो गई। ऐलैक को अपनी वासना पूर्ण करने का अवसर मिल गया।

ट्रैन्ट्रिज मे टेस को आए चार महीने हो चुके थे। अक्तूबर का महीना था। टेस अपनी डलिया एक हाथ मे लटकाए, दूसरे में अपने सामान का बंडल लिए अपने गाव मार्लट लौट चली। ऐलैक फिर अपनी गाड़ी लिए उसे रोकने आया, लेकिन वह उसे मना नहीं सका। उसने उसे कभी प्यार नहीं किया था, न वह उसे कभी प्यार कर सकती थी।

जब वह घर पहुंची, उसने सारी दुःख-भरी कहानी अपनी मां को सुना दी। वह ऐलैक से डरती थी, लेकिन वह विवश थी, इसलिए उसने ऐलैक के सामने समर्पण कर दिया था, क्योंकि वह उसके क्षणिक सद्व्यवहार से भ्रम में पड़ गई थी। किंतु उसे उससे घृणा थी, इसलिए वह अब घर लौट आई थी।

एक वर्ष बीत गया। उसी दुर्घटना के फलस्वरूप टेस ने एक शिशु को जन्म दिया। शिशु में निर्बलता अधिक थी, उसका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं था। परंतु टेस चाहती थी कि उसका बप्तिस्मा हो जाए। उसी रात शिशु की हालत बहुत बिगड़ गई और टेस आशंकाओं से ग्रस्त होकर उसे लेकर उसी समय पादरी के पास बप्तिस्मा कराने ले गई। प्रातः होने से पूर्व ही शिशु का देहांत हो गया। पादरी ने उसकी अंतिम क्रिया ईसाई धर्म के अनुरूप करने से इंकार कर दिया।

इसके बाद टेस ने मार्लट ग्राम छोड़ देने का निश्चय किया, लेकिन मई तक उसे सुयोग प्राप्त नहीं हो सका। अंत में उसे एक पत्र मिला जिसके द्वारा उसे ज्ञान हुआ कि दक्षिण की ओर कई मील आगे एक डेरी थी, जिसमें एक ग्वालिन की ज़रूरत थी। टैल्बोथेज़ डेरी का आकर्षण टेस को वहां खींच ले गया।

अब टेस के लिए नई जिंदगी शुरू हुई। वह सुखी थी। डेरी का मुखिया क्रिक था। उसकी पत्नी टेस से प्रसन्न थी और उसीकी उम्र की और भी लड़कियां वहां ग्वालिनें थीं। वे सब भी दोस्ताना व्यवहार से काम लेती थीं। टेस गायों की सेवा में काफी कुशल हो गई। धीरे-धीरे पुरानी कष्टकर स्मृतियां उसके मस्तिष्क से दूर हो चलीं।

निकट ही सम्मिन्स्टर नामक स्थान था। वहां क्लेयर नामक एक बहुत ही श्रद्धालु और भक्त प्रवृत्ति का पादरी था। उसका पुत्र एन्जिल क्लेयर कृषि का विद्यार्थी था। आजकल वह टैल्बोथेज़ में रहता था। उसके पिता के विचार ऐसे थे कि उसकी कट्टरता न अन्य पादरियों को भाती थी, न उसके पुत्र ही उससे सहमत होते थे। एन्जिल को उच्चवर्ग से कुछ घृणा थी, इसीलिए वह गांव में रहता था। वह कुछ दिन अध्ययन करने के बाद, स्वयं खेती करना चाहता था, अपना कार्य बनाना चाहता था।

वह टेस के प्रति आकर्षित तो हुआ, किंतु उस आकर्षण को प्रेम के रूप में परिवर्तित होने में काफी समय लग गया। टेस के साथ की तीन अन्य ग्वालिनें भी एन्जिल के प्रति आकर्षित थीं। किंतु एन्जिल का व्यवहार टेस के प्रति पक्षपात और सहृदयता का होने लगा और स्वयं टेस ही नहीं, बाकी ग्वालिनें भी इसे जान गईं। किंतु वे लड़कियां अच्छी थीं, और उनमें से किसीमें भी इस वजह से जलन पैदा नहीं हुई। एन्जिल ने में टेस के संमुख अपना हृदय खोल दिया। वह टेस से विवाह करना चाहता था टेस उससे स्वयं बहुत प्रेम करने लगी थी, किंतु विवाह के लिए वह [illegible] हुई।

इस बीच एन्जिल अपने मात-पिता को अपने [illegible]
यद्यपि माता-पिता उसे किसी अच्छे कुल की कन्या से विवाहित
फिर भी उन्होंने अस्वीकार नहीं किया और उन्होंने उसे [illegible]

अंत में टेस ने उसकी प्रार्थनाओं से झुककर [illegible]

रूप की घुटन

[गौस्टा बर्लिंग[1]]

लागरलोफ, सेल्मा : स्वीडिश लेखिका सेल्मा लागरलोफ का जन्म २० नवम्बर, १८५८ को स्वीडन में मार्बाका में हुआ। वार्मलैंड प्रांत, अपनी जन्मभूमि का वर्णन आपने अपनी पुस्तकों में बहुत ही अच्छी तरह किया है। लैण्ड्स्क्रोना में आप अध्यापिका हो गईं और अपने लेखन से कमाने योग्य होने तक (१८६५ तक) पढ़ाता रहीं। प्रस्तुत उपन्यास के कुछ अंशों पर ही आपको साहित्यिक प्रतियोगिता में पुरस्कार मिला। आप अनेक भाषाओं का ज्ञान रखती थीं। आपने इटली, पैलेस्टाइन और पूर्व की भी यात्रा की, किंतु आपने अपने देश का ही सबसे अच्छा चित्रण किया। १६०६ में आपको साहित्य के नोबेल पुरस्कार मिला। १६१४ में स्वीडिश अकादमी की प्रथम महिला-सदस्य बनीं। १६ मार्च, १६४० को आपका देहांत हुआ।

'गौस्टा बर्लिंग' (रूप की घुटन) में मनुष्य की सुख की तृष्णा और वास्तविक आनंद के संघर्ष को चित्रित किया गया है। जनजीवन और विलासी शोषकों का भी चित्रण है। 'गौस्टा बर्लिंग' एक पाप पुरुष के बीच भटकता प्राणी है, जिसका विश्वास, श्रद्धा और ममता ही उद्धार करते हैं। अपने मानसिक विश्लेषणों के कारण यह उपन्यास बहुत बड़ा महत्त्व रखता है।

स्वीडन में वार्मलैंड का नाम अपनी लोहे की खानों के कारण विख्यात था। वैसे यह धरती ऊसर थी। पीढ़ी दर पीढ़ी इसका यही वर्णन वहां चलता चला आ रहा है। किसी समय सचमुच यहां लोहा निकाला जाता था और उससे कुछ लोग अपार धन पैदा करते थे। उन धनिकों के यहां अनेक आश्रित रहते थे। योद्धा लोग आश्रय खोजने आते और आनन्द से वहां जीवन बिताते थे। वे अपने आश्रयदाताओं का मनोरंजन करते, उन्हें हंसाते, और अड़िग मेहमान बनकर खाते-पीते। गौस्टा बर्लिंग भी ऐसा ही एक व्यक्ति था। सौभाग्य की खोज और आनन्द की तृष्णा ही ऐसे लोगों को आश्रित बना देतीं।

पश्चिमी वार्मलैण्ड के एक गिरजे में गौस्टा पादरी बनकर आया था। वह प्रतिभावान था, भगवान में उसका अटूट विश्वास था, सौन्दर्य में वह अतुलनीय था, किन्तु इस ऊसर प्रान्त में जीवन उसे एक भार लगता और पादरी होने में उसे कोई भी आराम नहीं था। परिणामस्वरूप वह शराब पीने लगा। यह आदत इतनी बढ़ गई कि

---

१. Gosta Berling (Selma Lagarlof)

वह गिरजे में भी उपदेश देते समय पिए रहता। अन्त में खबर ऊपर पहुंची और बड़ा पादरी उसे निकालने आ पहुंचा। किन्तु अचानक ही गौस्टा की भक्ति उमड़ पड़ी और उसने उस दिन इतना अच्छा उपदेश दिया कि उपस्थित समुदाय ने उसे क्षमा कर दिया। गौस्टा को लगा कि उसके पाप अब नष्ट हो गए थे। किन्तु दुर्भाग्य से उसके एक नशेबाज साथी ने बड़े पादरी की हत्या कर डालने की धमकी दी। गौस्टा अपने-आप को इसके फलस्वरूप बड़े पादरी के क्रोध से बचा नहीं सका।

गौस्टा के सामने कोई पथ नहीं बचा। उसने आत्महत्या कर लेने का निर्णय किया। किन्तु यहां भी उसकी इच्छा पूरी नहीं हुई। ऐकेंबाई में एक दृढ़ हृदय और अत्यन्त धनवाली स्त्री थी। वह एक मेजर की पत्नी थी। उसने गौस्टा को आत्महत्या करने से बचा लिया। उसने गौस्टा को अपनी दुःखद कथा सुनाई कि जब वह लड़की ही थी, उसके माता-पिता ने जबर्दस्ती उसकी शादी ऐसे आदमी से कर दी थी, जिससे वह प्रेम नहीं करती थी। कुछ समय के उपरांत उसका पुराना प्रेमी लौट आया। वह धनी हो गया था। उसने उसकी मदद की और उसके पति को भी सहारा दिया। परन्तु जब महिला की माता को ज्ञात हुआ कि वह अपने प्रेमी के प्रति दुराचार में रत थी, तो उसने इस अपमान के लिए उसको शाप दिया। धनी प्रेमी मर गया और अपनी वसीयत में ऐकेंबाई की सारी जायदाद मेजर और उसकी पत्नी के लिए छोड़ गया।

गौस्टा इसी महिला के यहां आश्रित हो गया। वहां लगभग एक दर्जन व्यक्ति और भी इसी प्रकार पल रहे थे।

किन्तु गौस्टा को वहां भी प्रसन्नता नहीं मिली। काउंटेस ऐबा डोना एक पवित्र और सुन्दरी युवती थी। गौस्टा उसे पढ़ाने लगा। कुछ दिनों में ही दोनों में प्रेम हो गया। किन्तु जब उस श्रद्धालु युवती को यह पता चला कि गौस्टा तो पदच्युत पादरी था, तो उसको भ्रष्ट जानकर उसे बहुत दुःख हुआ। उससे पीछा छुड़ाने के लिए वह बीमारी में रहकर भी बिना इलाज किए ही चुप रही, ताकि उसकी मृत्यु हो जाए और यह प्रेम-कांड सदा के लिए समाप्त हो जाए। गौस्टा प्रतिभाशाली ही नहीं था, अब वह विख्यात भी हो गया था। वह सारे आश्रितों का नेता बन चुका था। उसके जीवन का एक ध्येय था—सुख पाना। इस मृत्यु ने भी उसे चैन नहीं लेने दिया।

वृद्ध सिन्तराम कुबड़ा था। वह लोहे की खानों का एक मुखिया था। कहा जाता था कि उसकी शैतान से सांठ-गांठ थी।

सिन्तराम ने आश्रितों को बताया कि वे मेजर की पत्नी के द्वारा शैतान के हाथों बेचे जा चुके थे। गौस्टा ने शैतान से यह तय किया कि आश्रितों को ऐकेंबाई पर एक वर्ष शासन करने का अधिकार मिल जाए। यदि उस समय के अन्त में आश्रित अपने को सच्चरित्र और सज्जन प्रमाणित करें तो शैतान का राज्य ऐकेंबाई पर से उठ जाए; अन्यथा वह सबकी आत्माओं का स्वामी बन जाए।

आश्रितों ने यह सुना तो उन्हें मेजर की पत्नी पर बहुत क्रोध आया कि वह दुष्टता कर रही थी। उन्होंने बदला लेने के लिए मेजर को उसकी पत्नी के पुराने [illegible] बदनामी [illegible]। मेजर ने पत्नी को घर से निकाल दिया और ऐकेंबाई को

आश्रितों के हाथ में दे दिया।

गौस्टा को देखकर स्त्रियां शीघ्र आकर्षित हो जाती थीं। सुन्दरी अन्ना स्तार्नो क उसके प्रेम मे पड़ गई। मरिअन्ना सिंक्लेयर नामक सुन्दरी पर कई लोग मोहित थे किन्तु इस बहिष्कृत पादरी से प्रेम करने के कारण वह भी अपने पिता के घर से निकाल दी गई। मरिअन्ना को चेचक ने कुरूप बना दिया। तब गौस्टा से अलग होकर वह पिता के यहां लौट गई।

मेजर की पत्नी ने विक्षोभ से ऐकैबाई में आग लगाने की चेष्टा की, किन्तु वह पकड़ी गई। उसे इस अपराध के लिए जेल हो गई। कस्बे के लोगों का मत था कि मेजर की पत्नी का कोई अपराध नहीं था। उन्होंने इसका दोष आश्रितों को दिया।

आश्रित लोग तरुणी 'काउंटेस ऐलिज़ाबेथ से बहुत ही क्रुद्ध हो उठे। काउंटेस सुन्दरी थी, वह बहुत भली थी और उत्फुल्ल रहती थी। वह इतनी भोली-भाली थी कि वह यह भी नहीं समझती थी कि उसका पति काउंट हैंड्रिक वास्तव में निष्ठुर मूर्ख था, जिसे अपने ऊपर ज़रूरत से ज्यादा घमंड था। काउंटेस को लगा कि मेजर की पत्नी को इस दशा में पहुंचाने के लिए गौस्टा ही जिम्मेदार था। उसने नृत्य में उसके साथ नाचने से इन्कार कर दिया। गौस्टा की प्रतिहिंसा जाग उठी। वह उसे अपनी स्लेज में बलात् ले गया। किन्तु वह इतनी सुन्दर और मधुर थी, कि गौस्टा उसके सामने पराजित हो गया। वह उसे उसके पति के यहां पहुंचा आया। उपस्थित समुदाय को इसपर आश्चर्य हुआ कि गर्वीले काउंट ने अपनी पत्नी से, गौस्टा के प्रति किए गए अपमान के लिए, क्षमा-याचना करवाई। काउंटेस के इस अपमान से गौस्टा के मन में संवेदना जागी और वह सचमुच उससे प्रेम करने लगा। अब काउंटेस से उसकी मित्रता हो गई। ये सम्बन्ध निरन्तर बढ़ते गए। अन्त में एक बार ऐलिज़ाबेथ को गौस्टा के कलुषित अतीत के बारे में पता चला। उसे गहरा धक्का लगा और उसने गौस्टा से सारे सम्बन्ध विच्छेद करना निश्चित कर लिया। दुःख से गौस्टा विचलित हो गया। और एक खानाबदोश पागल लड़की के पीछे फिरने लगा। जब काउंटेस को ज्ञात हुआ कि वह दुःख से पागल-सा होकर उस पगली से विवाह करने की कोशिश कर रहा है, तो वह उसे रोकने चली। नदी ठंड के कारण जम गई थी। काउंटेस बर्फ पार करके उसे रोकने गई।

यह खबर मूर्ख काउंट के पास भी पहुंची। उसने अपनी तरुण पत्नी पर सारा दोष मढ़ दिया। पवित्र काउंटेस इतनी सीधी थी कि गौस्टा के प्रति अपनी ममता में उसे दोष दिखाई देने लगा और उसने इसे स्वीकार कर लिया। काउंट और उसकी निर्दय माता ने कई तरीकों से काउंटेस का अपमान किया। उसे अनेक कष्ट दिए। तरुणी काउंटेस प्रसन्नता से उन्हें झेलती रही, क्योंकि वह स्वयं अपने को अपराधिनी समझकर प्रायश्चित्त करना चाहती थी। अन्त में उसकी शक्ति क्षीण होने लगी। वह गर्भवती थी। उसे अपने भीतर पलते बच्चे की चिन्ता सताने लगी। वह घर से भाग गई और छिपकर एक किसान के यहां रहने लगी। लेकिन जब उसे ज्ञात हुआ कि काउंट ने उसके चले जाने से शादी रद्द करवा दी थी, उसने गौस्टा से प्रार्थना की कि वह उससे विवाह कर ले, ताकि उसके होनेवाले बच्चे को एक पिता मिल जाए। गौस्टा ने इसे स्वीकार कर लिया।

लेकिन कुछ ही दिनों बाद उस शिशु की मृत्यु हो गई। गौस्टा ऐलिज़ाबैथ को प्यार करता था, पर जानता था कि यह विवाह ऐलिज़ाबैथ का जीवन नष्ट कर देगा।

उन्हीं दिनों कैप्टेन लेन्नर्ट जेल से छूटकर आया। वह एक झूठा अपराध लगाकर पकड़वा दिया गया था। आश्रितों ने उसे खूब मदिरा पिलाई। कैप्टेन को मदिरापान की आदत नहीं थी। शीघ्र ही वह नशे में झूम गया। आश्रितों ने उसी अवस्था में उसे उसके घर भेज दिया। स्त्री ने उसे घर से निकाल दिया। कैप्टेन ने जीवन के शेष दिन गरीबों की मदद करते हुए इधर-उधर घूमते हुए बिताए। अन्त में एक दिन वह जब असहायों की मदद कर रहा था, एक दंगे में मारा गया।

गांववाले भूख से व्याकुल हो रहे थे। उनकी परेशानियां और गरीबी बढ़ती जा रही थी। आश्रितों की हरकतों से वे चिढ गए थे। उन्होंने ऐकँबाई पर हमला करने की कोशिश की। किन्तु ऐलिज़ाबैथ की विनम्रता और गौस्टा की वक्तृताओं ने उन्होंने उस गलत रास्ते पर चलने से रोक दिया।

अपनी पत्नी से मुक्ति पाने के लिए गौस्टा ने आत्महत्या करने की कोशिश की, किन्तु इसमें बाधा पड़ गई। अन्त में ऐलिज़ाबैथ ने उसे यह समझाने में सफलता प्राप्त की कि आत्महत्या में उसे शांति नहीं मिल सकती थी। उसे अपनी विलास-भावना को छोड़कर ही संतोष मिल सकता था और उसीसे वह ऐलिज़ाबैथ को भी सुखी कर सकता था।

दुष्ट सिन्तराम का व्यापार बिगड़ गया और वह बरबाद हो गया। मेजर की पत्नी की अपनी माता से लड़ाई दूर हो गई, जिसने उसे शाप दिया था। वह मरने के लिए ऐकँबाई ही लौट आई। गौस्टा और ऐलिज़ाबैथ ने अपने जीवन को फिर से शुरू करने की शक्ति जुटाई और वे लोकसेवा में तन्मय होकर लग गए। उन्हें दूसरों की सेवा में ही मन की शांति प्राप्त हुई।

प्रस्तुत उपन्यास में विलास और वैभव से ऊपर प्रेम को स्थान दिया गया है। नारी की सहनशीलता इसमें भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। लेखिका ने गौस्टा के रूप में यूरोप की समग्र अभिलाषाओं और तृष्णाओं को समेट लेने की चेष्टा की है। उपन्यास जीवन के विविध रंगों को हमारे सामने फैला देता है। मानसिक गहराइयों की अनुभूति हमें बहुधा इसमें दिखाई देती है।

जेम्स मैथ्यू बैरी :

गांव

[लिटिल मिनिस्टर[1]]

बैरी, जेम्स मैथ्यू : अंग्रेज़ी उपन्यासकार जेम्स मैथ्यू बैरी का जन्म स्कॉटलैंड के किरीम्यूर नामक स्थान में ९ मई, १८६० को हुआ। स्काटिश स्कूलों में शिक्षा मिली और १८८२ में एडिनबरा विश्वविद्यालय से ग्रेजुएट हुए। स्वाभाविक रुझान पत्रकारिता की ओर था। कुछ समय तक एडिनबरा की पत्र-पत्रिकाओं में काम भी किया। शीघ्र ही स्कॉटलैंड के जीवन और विशेषकर देहाती रहन-सहन से परिचय अच्छा हो गया। आपने रेखाचित्र लिखे, यश मिलने लगा और 'लिटिल मिनिस्टर' (गांव) के १८९१ में प्रकाशन होने पर सफलता स्थायी बन गई। १८९२ में इंग्लैंड आकर नाटक लिखना प्रारंभ किया। सन् १९१३ में बैरन का पद प्राप्त हुआ। १९ जून, १९३७ को लंदन में देहान्त हुआ।

'लिटिल मिनिस्टर' (गांव) में ग्रामीण जीवन का बहुत अच्छा चित्रण हुआ है।

गेविन डिशार्ट केवल २१ वर्ष का था। न वह बहुत लम्बा था, न दीर्घकाय ही। बल्कि वह अपने-आप को जितना बड़ा समझना चाहता था, वह उतना भी नहीं लगता था। लड़कपन जैसे उसने अभी तक पार नहीं किया, यही विचार उसे देखकर पहले सबके मन में अपना घर कर लेता था। वह अब स्कॉटलैंड के थ्रम्स नामक ग्राम के ऑल्ड लिक्ट्स नाम के गिरजे में छोटा पादरी होकर आया था।

उसकी स्नेहमयी माता मार्गरेट बड़ी विनम्र और अच्छे स्वभाव की थी। उसने अपने पुत्र को शिक्षा दिलाने के लिए बड़े-बड़े कष्ट सहर्ष स्वीकार किए थे, गरीबी को उसने अपने-आप झेला था। जिस पादरी-घर में वे अब रहते थे, उनके रहने को काफी था। गैविन को सालाना अस्सी पाउण्ड मिलते थे। इतनी आय से वे अपने को समृद्ध समझते थे। मां और पुत्र, दोनों की ही दृष्टि में गिरजे का पादरी बन जाना, एक बहुत बड़ी बात थी। उन्नति की जो चरम सीमा किसी मनुष्य के लिए प्राप्तव्य थी, वह मानो प्राप्त की जा चुकी थी। थ्रम्स ग्राम के लोग गरीब थे। वे मेहनती थे, और वैसे उनमें श्रद्धा का भी अभाव नहीं था। अधिकांश लोग बुनकर थे। उनका जीवन घोर परिश्रम और संघर्षों में व्यतीत होता था। उनके आमोद-प्रमोद सरल तथा आडम्बरहीन थे। उनके जीवन में नैतिकता को विशेष महत्त्व दिया जाता था। किन्तु जब उनकी सुरक्षा और सत्ता संकट में पड़ जाती, तब वे उन्मत्त-से हो उठते।

---

१. Little Minister (James Matthew Barrie)

कुछ ही दिन हुए, उन्होंने एक दंगा कर दिया था। उस दगे के सरगना नेताओं को पुलिस अभी तक तलाश कर रही थी।

छोटा पादरी आया तो गांव में काफी उत्साह-सा छा गया। गैविन की ईमानदारी और भलमनसाहत का काफी अच्छा प्रभाव पड़ा। ग्रामीण तो उसके सद्व्यवहार पर मुग्ध हो गए। जब वह गिरजे में वेदी पर खड़ा होकर सुन्दर भाषण देता, तो उनके मन प्रफुल्लित हो जाते। अपने गिरजे के प्रभाव मे रहनेवाली जनता के प्रति उसके मन में जो स्नेह-भाव था, वह किसीसे छिपा नहीं था, और उसके इस ममत्व ने सबके मन में उसके प्रति एक प्रेमभाव जगा दिया था।

गैविन के आगमन से स्कूल-मास्टर श्री ओगिलवी पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने कभी उसकी माता मार्गरेट से प्रेम किया था, और आज भी उसकी ऊष्मा जागरित थी। ओगिलवी चुपचाप मां और बेटे को देखकर प्रसन्न हुआ करता। छोटा पादरी इस रहस्य से नितांत अनभिज्ञ था।

एक दिन इतवार को सब गिरजे मे आकर एकत्र हुए। उसी समय शराब के नशे में चूर, शान्ति के दिवस में भी उत्पात और कोलाहल करता हुआ रौब डो नामक भीमकाय व्यक्ति घुस आया। वह गुंडा था और सब उसके भय से कांपते थे। कोई भी उसे रोकने का साहस नहीं कर सका। छोटा पादरी तनिक भी विचलित नहीं हुआ। सबने चौंककर देखा कि छोटा पादरी आगे बढ़ा और उसने शराबी को चुप कर दिया। अपनी विनम्रता से उसने दयालु स्वभाव के कारण उस बर्बर रौब डो की निष्ठुरता पर भी विजय प्राप्त कर ली। रौब डो उसका मित्र बन गया। इस घटना ने गैविन का प्रभाव कहीं अधिक बढ़ा दिया।

कुछ ही दिन शान्ति से व्यतीत हुए थे कि गैविन के सामने एक समस्या उपस्थित हो गई। वह अपने काम में लगा रहता, अपने कर्तव्य-पालन में सुख अनुभव करता और माता को तृप्त देखकर संतुष्ट रहता। गिरजे में आनेवालों का सद्व्यवहार उसे प्रसन्नता प्रदान करता। परन्तु समस्या आई रात के अंधियारे की घिरती छायाओं के साथ।

राज्यसेना ने थ्रम्स ग्राम को घेर लिया था और वह हाल में हो चुके विद्रोह के नेताओं को गिरफ्तार करना चाहती थी। सैनिकों की यह योजना ग्रामीणों को पहले ही से ज्ञात हो गई। उन्होंने इशारे बांध लिए। समय होते ही एक शृंगी बज उठी और सुनकर चौकन्ने हो गए। वे सन्नद्ध हो चले। गैविन दुविधा में फंस गया। कर्तव्य कहता था कि वह विद्रोहियों को गिरफ्तार करा दे, या उन्हें आत्मसमर्पण करने की सम्मति दे। किन्तु अपराधियों के प्रति उसके हृदय में सहानुभूति थी और वह गैविन को प्रेरित कर रही थी कि वह उन्हें भाग जाने की सलाह दे।

उसके गिरजे के अनुयायियों ने हथियार जमा कर रखे थे। वह उन्हें शस्त्र डाल देने का उपदेश देने लगा। किन्तु अचानक ही एक स्त्री का स्वर गूंजकर उनको अपने अधिकारों के लिए लड़ने को उत्तेजित करता हुआ ललकारने लगा। उत्तेजना फैलानेवाली एक अत्यन्त सुन्दर कंजर लड़की थी।

गैविन का प्रभाव खंडित हो गया। लोगों ने उसकी आज्ञा का उल्लंघन कर दिया

और उस लड़की के वचनों पर चलने लगे। जब तक सेना के लोग आए, तब तक कई पुरुष सुरक्षित रूप से छिप चुके थे। स्त्रियां सैनिकों पर पत्थर फेंकती और धूल उड़ाकर अपने को छिपाती हुई भाग रही थी।

कंजर लड़की को इस बात का बड़ा खेद हो रहा था कि वह अचूक निशाना लगाना नहीं जानती थी। उसने गैविन के हाथ में जबर्दस्ती ही एक पत्थर रख दिया और सेना के कप्तान की ओर संकेत करके वह फुसफुसाई, "उसे मारो!"

न जाने क्यों गैविन कुछ भी नहीं कह सका। उसपर जैसे जादू हो गया था। उसने निशाना साधा और पत्थर घुमाकर कप्तान के सिर पर मारा। भगदड़ बढ़ चली। घेरा सकरा होने लगा। कंजर लड़की चतुराई से सन्तरियों के बीच में घुस गई।

सन्तरी ने टोका, "तू कौन है?"

कंजर लड़की ने कहा, "मैं छोटे पादरी की पत्नी हू।"

सन्तरी ने उसे निकल जाने दिया।

जब गैविन को यह बात पता चली, उसको विक्षोभ और क्रोध ने व्याकुल कर दिया। उसे कंजर लड़की पर ही नहीं, अपने ऊपर भी अब ग्लानि तथा रोष हो रहे थे। गैविन अब स्त्री-विरुद्ध हो गया और उसने नारी के विरुद्ध कठोर उपदेश देना प्रारम्भ किया। किन्तु इतना सब होने पर भी वह उस कंजर लड़की की अपरूप सुन्दरता को नहीं भुला सका।

कंजर लड़की विलुप्त नहीं हुई। जब वृद्धा और गरीब नैनी वैब्सटर नामक स्त्री को, उसकी इच्छा के विरुद्ध ही, पकड़कर दरिद्रालय में ले जाया जाने लगा, तो वह लड़की स्वयं प्रकट हो गई और उसने कहा, "इसे कहा ले जाते हो? मैं इसका भरण-पोषण करने की प्रतिज्ञा करती हू।"

एक कंजर लड़की के पास धन भी हो सकता है, इसपर सबने ही आश्चर्य किया। किन्तु उसकी ईमानदारी पर अविश्वास करने का कोई कारण भी दिखाई नहीं देता था। सुननेवालों ने कहा, "कौन? बैबी? नैनी को सहायता देगी?"

गैविन को देखकर बैबी ने कहा, "मैं नैनी के लिए पाच पाउण्ड का नोट दूगी। क्या आप मुझसे जंगल में मिलेंगे?"

गैविन 'न' नहीं कर सका।

बैबी ने सचमुच अपने वचन का पालन किया। गैविन ने देखा, वह मस्त थी, मनमौजी थी। उद्धत और चंचल उस कंजर लड़की ने छोटे पादरी पर व्यग्य कसा, "कैसी पराधीन वृत्ति है आपकी, जिसमें आपकी कुछ भी नहीं चलती?"

गैविन क्रोध से भल्ला उठा। दोनों में झगड़ा हो गया, परन्तु गैविन ने अनुभव किया कि उसे मन में उस लड़की पर तनिक भी क्रोध नहीं था। तो क्या वह उसके प्रति आकर्षित था?

सांझ डूब गई। अंधेरा घिर आया। मनमौजी बैबी हाथ में लालटेन झुलाती, गिरजे की भूमि पर स्थित गैविन के घर उसे डराने आ पहुंची। गैविन उसे डांटने-फटकारने को बाहर निकला, किन्तु अकस्मात् ही उसे वह चूम उठा। उस क्षण बैबी ने भी अनुभव किया

एडिथ व्हार्टन :

पीड़ा का भाग
[इथॅन फ्रोम[1]]

व्हार्टन, ऐडिथ : अंग्रेज़ी लेखिका ऐडिथ न्यूबोल्ड जोन्स का जन्म न्यूयार्क में पहले से बसे एक परिवार में १८६२ ई० में हुआ। आपको घर पर ही अच्छी शिक्षा प्राप्त हुई और आपने विदेश-यात्राएं भी कीं। लिखना आपने काफ़ी जल्दी प्रारंभ किया था। जब आप केवल १५ वर्ष की थीं, प्रसिद्ध कवि लॉन्गफैलो ने अटलांटिक नामक पत्रिका में छापने को आपकी कविताओं के लिए सिफारिशी पत्र भेजा था, क्योंकि वे कविताएं उन्हें बहुत पसंद आई थीं। १८९० के आसपास आपका ऐडवर्ड व्हार्टन से विवाह हुआ। तब आप अपनी कहानियां पत्रिकाओं में प्रकाशन के लिए भेजने लगीं। १८९९ तक आपकी कहानियों के संग्रह और उपन्यास छपने लगे। १९०० के बाद आप प्रायः विदेश में रहीं। १९०७ से १९३७ तक आप फ्रांस में ही अधिक रहीं। १९३७ में आपका देहांत हो गया।

'इथैन फ्रोम' (पीड़ा का भाग) आपकी प्रसिद्ध रचना है। नाम से ही ज्ञात होता है कि यह एक पात्र-विशेष को लेकर लिखा गया उपन्यास है।

मैसेचुसैट्स में स्टार्कफील्ड नामक ग्राम में बर्फ पड़ चुकी थी। धरती पर बर्फ की तह दो फुट जमी हुई थी। युवक इथैन फ्रोम निर्जन पथों पर जल्दी-जल्दी पांव उठाता चला जा रहा था। गिरजे के बाहर वह रुक गया। छाया के आंचल में अड़े होकर उसने सुना कि भीतर से संगीत की मधुर ध्वनि आ रही थी। कभी-कभी झनझनाता हुआ हास्य गूंज उठता था। फ्रोम के हृदय की गति तीव्र हो गई।

एक वर्ष पूर्व इथैन फ्रोम और उसकी पत्नी ज़ीना के यहां मैटी सिलवर आई थी। वह ज़ीना की बहिन लगती थी। उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी। उसके लिए दुनिया में कोई जगह नहीं थी। ज़ीना चाहती थी कि घर के काम-काज में मदद करने को उसे मिल जाए। इसीलिए उसने निश्चय कर लिया। तनख्वाह देकर किसी नौकरानी को रखने की बजाय उसने मैटी को बुला लिया। उसके रहने का प्रबन्ध कर दिया और मैटी उसकी सहायिका बन गई।

कभी-कभी ही मैटी घर से निकलती, जब कोई विशेष अवसर होता और स्टार्कफील्ड के गिरजे में आकर युवक-युवतियों के साथ अपना मनोरंजन करती। इथैन उसे ... से यहां दो मील के फासले पर गिरजे में लेने आता और वे दोनों साथ-साथ

[1] Ethan Frome (Edith Wharton)

लौटा करते।

इथैन देखता रहा। मैटी एक आइरिश युवक के साथ उस समय नृत्य में मग्न थी। न जाने क्यों इथैन के मन में एक कसक-सी उठी। तरुण बड़ा जानदार था। इथैन देखता रहा। कुछ देर में ही नृत्य-गीत समाप्त हो गए। इथैन वहीं अंधकार में खड़ा रहा। मैटी उस तरुण के साथ बाहर आई। उसने मैटी से कहा कि वह उसे अपनी बर्फ पर फिसलने-वाली स्लेज गाड़ी में घर पहुंचा देगा। किन्तु मैटी ने उसके प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया। वह इथैन के पास आ गई।

वे बर्फ पर चलने लगे। इथैन ने उसकी बाहु थाम ली। उस स्पर्श ने उसे रोमांचित कर दिया। उन दोनों में एक मौन आदान-प्रदान हो रहा था और वे बिना बोले ही एक-दूसरे के भावों को समझने लगे थे। किंतु फिर भी वे बोलते न थे, न किसी प्रकार का कोई विशेष इंगित ही करते थे। भीतर की भीतर ही पलती चली जा रही थी। ऐसे अवसरों पर इथैन को ज़ीना की याद हो आती और वह घुट-सा जाता। मैटी भी इस भाव के प्रति सचेत और जागरूक थी।

चलते-चलते इथैन ने भावावेश में भरकर कहा, "मैटी! एक दिन ऐसा भी आएगा, जब तुम हमें छोड़कर चली जाओगी!"

मैटी समझी नहीं। उसने पूछा,"क्यों! क्या ज़ीना अब मुझे नहीं रखना चाहती?"

किन्तु इथैन का तात्पर्य दूसरा ही था। वह सोच रहा था कि इतनी सुन्दर युवती किसी न किसी दिन तो विवाह कर ही लेगी। तब तो वह चली ही जाएगी!

वे फॉर्म पहुंच गए! ज़ीना अक्सर चटाई के नीचे चाबी रख जाया करती थी। परन्तु उस दिन उन्हें चाबी वहां नहीं मिली। ज़ीना ऊपर से उतरकर आई। तब उन दोनों ने भीतर प्रवेश किया। ज़ीना ने आज और दिनों की अपेक्षा अपने अस्वस्थ रहने की कहीं अधिक शिकायत की। उसने अपने दर्द बढ़ जाने का भी उल्लेख किया।

जब इथैन सोने गया, तब उसे लगा जैसे ज़ीना इधर कुछ दिनों से अधिक गंभीर रहती थी। वह अधिक असंतुष्ट-सी दीखती थी, और बात-बात पर चिढ़ भी जाती थी। उसे ध्यान आया। पहले तो उसका स्वभाव ऐसा नहीं था!

अगले दिन जब वह भोजन करने आया तो उसने देखा कि ज़ीना अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने थी।

ज़ीना ने स्वयं कहा कि वह बैट्सब्रिज जा रही थी। आज दुपहर को उसे अपने दर्दों के बारे में एक नये डॉक्टर से सलाह लेनी थी। लेकिन क्योंकि मौसम बड़ा खराब था, रेल का सफर था, वह अगले दिन ही लौट सकेगी, वर्ना उसपर ज़्यादा ज़ोर पड़ेगा, जो वह अपनी कमज़ोरी में बर्दाश्त नहीं कर सकेगी।

इथैन के मन में था कि वह जल्दी से घर पहुंच जाए। इसलिए वह स्वयं उसे जंक्शन तक पहुंचाने भी नहीं गया। किराये का आदमी लगाकर, बहाना बनाकर, वह लौट आया।

जब से फ्रोम-परिवार में मैटी आई थी, तब से आज तक कभी मैटी और इथैन इस तरह का एकांत नहीं पा सके थे।

कमरे में ऊष्मा थी, और सब कुछ बड़ा स्फूर्तिप्रद-सा लग रहा था। ज
आया तो उसे मेज़ पर खाना लगा-लगाया मिला। चमकदार लाल कांच की त
उसका मनपसन्द अचार भी रखा था।

इस क्षण की प्रतीक्षा वह दोपहर से कर रहा था। परन्तु इस समय वह उ
विचारों को खाना खाते-खाते व्यक्त ही नहीं कर सका। वह चुपचाप खाता रहा
ध्यान में मग्न देखकर बिल्ली कूदी और मेज़ पर चढ़ गई। इस धमा-चौकड़ी में अच
तश्तरी फर्श पर गिरकर टूट गई।

मैटी का मन आतंक से भर गया। उसने तश्तरी के टुकड़ों को इकट्ठा किया

असल में यह तश्तरी ज़ीना को बहुत ही प्रिय थी। वह इसको बड़ी हिफा
रखती थी। उसकी चाची ने उसे यह तश्तरी उसकी शादी के वक्त भेंट दी थी। ची
बर्तनों की अलमारी में वह इसे ऊपर के भाग में सिर्फ सजाकर रखती थी, इसका
नहीं करती थी और इतना तक कि बाहर भी न निकालती थी। आज उस तश्त
उसकी अनुपस्थिति मे टूट जाना, एक पूरा संकट ही था! इथँन ने इसे समझा।
मैटी को सांत्वना देने की चेष्टा की। उसने कांच के टुकड़ों को जमाया। तश्तरी
साबुत लगने लगी। तब इथँन ने कहा कि कल वह थोड़ा-सा कांच चिपकाने का म
ले आएगा और उसे चिपका देगा।

इसके बाद वे सन्ध्या को प्रसन्नचित्त बैठे रहे। मैटी सिलाई करती रही।
अंगीठी के पास बैठा-बैठा उसे देखता रहा। किन्तु बार-बार उसे ज़ीना की याद आ
और वह मैटी से कुछ भी नहीं कह पाता, मानो ज़ीना की स्मृति उसे रोक लेती थी
ही समय व्यतीत हो गया।

दूसरे दिन जब इथँन दोपहर बाद काम पर से घर लौटकर आया, मैटी ने
बताया कि ज़ीना लौट आई थी और सीधी अपने कमरे में चली गई थी। जब वह रात
खाना खाने भी नीचे नहीं आई तो इथँन अपनी पत्नी ज़ीना के पास ऊपर गया।

ज़ीना उस समय खिड़की के पास कठोर मुद्रा बनाए बैठी थी। अभी तक
अपने कपड़े भी नहीं उतारे थे।

इथँन को देखकर ज़ीना कहने लगी, "डॉक्टर ने कहा है कि शायद मेरी बीम
में उलझनें पैदा हो जाएं। इसीलिए मैं चिन्ता में पड़ गई हूं।"

जब वह अपने विषय में सब कह चुकी तो उसने अन्त में कहा, "मैं एक ल
का इन्तज़ाम कर आई हूं। तनख्वाह लेगी पर काम सब संभालेगी। कल आ जाएगी।

तब इथँन की समझ में आया कि ज़ीना के कहने का मतलब क्या था। वह चाह
थी कि मैटी को तुरन्त निकल जाना होगा और उसकी जगह एक लड़की आ रही थी।

सात वर्ष के विवाहित जीवन मे इतना विसाक्त वातावरण उन दोनों के ब
कभी नहीं हुआ था। खाने के बाद जब ज़ीना ने अचानक अलमारी देखी और उसे अप
शादी की भेंटवाली तश्तरी टूटी मिली तो ऐसा तनाव खिंच गया, जैसा कि इथँन सोच
नहीं सकता था।

इथँन इस सबके बारे में मैटी को सूचना देना चाहता था। वह ज़ीना को रो

सकने में असमर्थ हो गया था। निचली मंजिल में उसने अपने अध्ययन के लिए एक छोटा-सा कमरा चुन रखा था। वह उसीमे चला गया और कोई तरकीब निकालने के लिए विचारों मे डूब गया। उसने जीना को एक पत्र लिखना प्रारम्भ किया : 'मैं मैटी के साथ पश्चिम की ओर जा रहा हूं'''अपना जीवन फिर से प्रारम्भ करने के लिए'''

किन्तु फिर वह रुक गया क्योंकि नये सिरे से जिन्दगी शुरू करने के लिए उसके पास धन कहां था ?

अगले दिन इथैन ने सुबह का वक्त कस्बे में गुजार दिया। आज मैटी का फॉर्म में अन्तिम दिन था। इथैन चाहता था कि किसी प्रकार वह धन एकत्र कर ले और मैटी को लेकर चला जाए'''दूर'''बहुत दूर''', पर जब दोपहर ढले वह लौटा तब उसे मन ही मन यह स्वीकार करना पड़ा कि उसके पास कोई रास्ता नही था'''

जीना ने मैटी को स्टेशन तक पहुचाने का प्रबन्ध कर लिया था। परन्तु जब समय निकट आ गया, इथैन स्वय ही गाड़ी चलाने जा बैठा और उसने किराये पर बुलाए हुए साईस को हटा दिया। जीना उसे नही रोक सकी।

चार बजे के लगभग मैटी और इथैन स्लेज में चल दिए। इथैन ने लम्बा रास्ता पकड़ा। वह उन जगहों पर स्लेज को हांक चला, जहा वे दोनों पहले कभी-कभी मिला करते थे। वह सोच रहा था कि आखिर मैटी अब जाएगी भी कहां ? वह करेगी भी तो क्या ?

इथैन ने कहा, "कहां जाओगी अब ? करोगी क्या तुम ?"

मैटी ने कहा, "मैं स्वय नही जानती।"

फिर मैटी कहने लगी, "मैं तुम्हे प्यार करती हू। मैं तुम्हें बहुत दिनों से चाहती हू।"

छह बजने को आ गए। अब एक-दूसरे से बिछुड़ना उन दोनो के लिए और भी कठिन होता जा रहा था। स्थानीय पहाड़ी की आड़ मे आते-आते जहाज रुका करते थे। उस पहाड़ी के ऊपर इथैन ने गाड़ी रोक दी। दूर ऍल्म नामक जगली वृक्ष अपने विशाल शरीर को लिए दीख रहा था। पहाड़ी के नीचे आते-जाते जहाजों को उसके कारण घूमना पड़ता था।

अचानक मैटी ने कहा, "मुझे पहाड़ी के नीचे पहुचा दो !"

इथैन को वहीं पेड़ो के बीच एक स्लेज गाडी पड़ी दिखाई दी। दोनों उसपर जा बैठे। गाड़ी बर्फ पर फिसलने लगी। मैटी ने कहा, "अबकी बार फिर गाड़ी को फिसलाओ और ऍल्म वृक्ष तक चल

गाड़ी तेजी से फिसल चली। पहाड़ी के नीचे पहुचकर मैटी ने फिर गाडी तेज करने को कहा। सामने ऍल्म का विशाल वृक्ष था, इथैन ने गाडी मोड़ दी'''और फिर एक भयानक टक्कर हुई'''

बीस वर्ष बीत गए। एक व्यक्ति इथैन फ्रोम से मिलने आया। फ्रोम के फार्म पर पहुचते-पहुचते उसे बर्फ के भयानक तूफ़ान ने घेर लिया। तब मजबूर होकर उसे वहा पनाह मांगनी पड़ी।

रसोई में उसने एक लम्बी, पतली-दुबली औरत देखी जो इथैन की सेवा कर रही

थी। एक कुर्सी पर एक स्त्री बैठी थी जो उस स्त्री की तुलना में उम्र में कम थी। ले
इस औरत के बुरी तरह से अंग भंग हो चुके थे और उसकी आँखें बहुत ही अधिक च
दार थी। वह केवल अपना सिर हिला पाती थी और कुछ भी करना उसके लिए अ
था। इथॅन भी कुर्सी पर पंगु बना बैठा था। आगन्तुक को तब ही पता चला कि इथॅन
गत बीस वर्ष से ज़ीना और मैटी के साथ इसी प्रकार जीवित था। स्टार्कफील्ड के
इस दुर्घटना के बारे में बात तक नहीं करते थे। परन्तु कुछ लोगों का कहना था कि
सबमें सबसे अधिक पीड़ा का भागी शायद इथॅन फ्रोम ही था।

प्रस्तुत उपन्यास एक प्रेम-कथा है। प्रेम की घुटन तीनों पात्रों में हमें उत्कट
से मिलती है, कोई भी स्पष्ट नहीं कह पाता। बीस वर्ष तक दुःख-भोग का
रखकर लेखिका ने एक विचित्र वेदना का सृजन कर दिया है। इथॅन के चि
चित्रण में हमें एक अजीब कसक-सी मिलती है। इथॅन फ्रोम संसार में इसी
एक प्रसिद्ध उपन्यास माना गया है।

मैक्सिम गोर्की :

मां

[द मदर[1]]

गोर्की, मैक्सिम : रूसी उपन्यासकार मैक्सिम गोर्की का जन्म १४ मार्च, १८६८ को हुआ और आपकी मृत्यु १४ जून, १९३६ में हुई। आप रूसी थे। नाटक, उपन्यास, कविता, कहानियां, लेख सभी कुछ आपने लिखे हैं। आप बहुत ही दरिद्र परिवार में जन्मे थे और आपने भिखारियों की सी हालत में बहुत यात्रा की थी। आपको जीवन का अगाध अनुभव था। बिना कहीं शिक्षा पाए आप संसार के महान साहित्यकार बने। आपकी प्रतिभा अद्‌भुत थी। आपने रूसी क्रांति में सक्रिय सहयोग दिया था। आपने जनता को जगाया था। आप लेनिन के घनिष्ठ मित्र थे।

'मां' (द मदर) आपका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इस उपन्यास के कारण आप विश्वविख्यात हो गए।

पेलागेया निलोवना का पति मिखाइल व्लासोव फैक्टरी में काम करनेवाला मिस्त्री था। बस्ती-भर में वह सबसे अधिक बलवान और झगड़ालू था। सभी उससे भय खाते थे। वह बोलता बहुत कम था, परन्तु हर छुट्टी के दिन किसी न किसीको पीट देता। प्रतिदिन भोजन करने के पश्चात् वह वोदका (शराब) पीता और बेसुरे कण्ठ से गीत गाता। अपने लड़के पावेल से भी वह बहुत कम बात करता था। उसकी पत्नी पेलागेया तो पिटने के भय से हर समय कांपती रहती। रक्त-स्राव से मिखाइल व्लासोव की मृत्यु हो गई।

पेलागेया लम्बे कद, झुकी हुई कमर, झुर्रियों-भरे चेहरे कोकाली आंखों वाली स्त्री थी। उसकी दाहिनी भौंह पर चोट का एक गहरा निशान था। उसकी आंखों से भय और व्यथा झलकती थी। मिखाइल व्लासोव की मृत्यु के दो सप्ताह बाद ही एक इतवार को पावेल व्लासोव वोदका पीकर लड़खड़ाता हुआ घर आया। पेलागेया ने कहा, "अगर तुमने पीना प्रारम्भ कर दिया तो मेरा पेट कैसे पालोगे ?" ···इसपर पावेल ने उत्तर दिया था, "सभी तो पीते हैं।"

वास्तव में बस्ती के सभी नवयुवक वोदका पीते और झगड़ा करते थे। अभी पावेल की आयु लगभग सोलह साल की थी। वह वोदका पचा नहीं सका और उसे उल्टी हो गई। उसे मां की आंखों में व्यथा देखकर दुःख हो रहा था। कुछ ही दिन बाद पावेल ने अपने लिए एक अकार्डियन (बाजा), एक कलफदार कमीज, एक चमकदार नेकटाई, जूते और एक घड़ी खरीद ली। अब बस्ती के दूसरे युवकों की तरह वह फैक्टरी में काम

१. The Mother (Maxim Gorky)

करता और शाम को उनके साथ हर इतवार को वोदका पीता। न जाने क्यों जब भी वह वोदका पीता, उसकी तबियत खराब हो जाती, दूसरे दिन उसके चेहरे का रंग उड़ जाता, सिर में दर्द रहता और हृदय में जलन होती। पहले तो वह इसे अपनी अल्पायु का प्रभाव मानता रहा परन्तु एक दिन उसने अपनी मां से कहा, "मैं बिलकुल जानवर हो गया हूं। अबकी बार मैं मछली के शिकार को निकल जाऊंगा या फिर मैं एक बन्दूक खरीद लूंगा और शिकार खेलने चला जाया करूंगा।"...इसके बाद पावेल कभी वोदका पीकर नहीं आया। उसके मित्रों ने भी उसके घर आना छोड़ दिया था। अब वह पुस्तकें लाता और चोरी-छिपे उन्हें पढ़कर छिपा देता। प्रतिदिन शाम को वह पढ़ता और इतवार को सुबह घर से निकलता तो रात को लौटता। मां से वह बहुत कम बात करता। पेलागेया ने देखा कि पावेल अब पहले की तरह अशिष्ट भाषा का प्रयोग नहीं करता था। और भी छोटी-छोटी बातें थीं जिनमें उसके स्वभाव-परिवर्तन का पता चलता था। उसने भड़कीले कपड़े पहनना छोड़ दिया था और शरीर तथा कपड़ों की सफ़ाई की ओर अधिक ध्यान देने लगा था। उसकी मां उसके परिवर्तन का कारण नहीं समझ पाई थी। एक दिन पावेल अपने एक बढ़ई मित्र से अलमारियां बनवा लाया था और उन अलमारियों में अब पुस्तकों की संख्या बढ़ती जा रही थी। बेटे की गम्भीरता देखकर पेलागेया चिन्तित रहती थी। अब वह कारखाने के दूसरे नवयुवकों की तरह नहीं रहता था। कभी-कभी वह सोचती : पावेल किसी लड़की के प्रेम के कारण इतना बदल सकता है। परन्तु प्रेम के चक्कर में तो पैसों की आवश्यकता होती है और वह अपना पूरा वेतन मां को दे देता था। मामला उसकी समझ के बाहर था। इसी तरह दो वर्ष बीत गए। अब व्लासोव-परिवार का जीवन शान्ति से व्यतीत हो रहा था।

एक दिन पेलागेया ने पावेल से पूछा कि वह हर समय क्या पढ़ता रहता है। उसने मां को बताया कि वह गैरकानूनी पुस्तकें पढ़ता है जिनमें मजदूरों के सम्बन्ध में सच्ची बातें लिखी रहती हैं। सुनकर पेलागेया रोने लगी, किन्तु जब पावेल ने उसे समझाया कि इनसे मजदूरों के दुःख दूर होंगे और स्वयं पढ़कर वह दूसरों को भी पढ़ाएगा तब वह शान्त हुई। पावेल ने उसे साफ-साफ बता दिया कि यदि वे पुस्तकें उसके पास पकड़ी जाएंगी तो उसको जेल जाना पड़ेगा, परन्तु इस डर से वह उन्हें पढ़ना बन्द नहीं कर सकता। पेलागेया को पावेल की आंखों में दृढ़ता, गम्भीरता और कोमलता दिखाई दी। वह अपने बेटे पर गर्व करने लगी।

पहली बार जब पावेल ने कहा कि उसके मित्र शनिवार को शाम को बाहर से आएंगे तो पेलागेया मन ही मन भयभीत हो उठी थी, किन्तु उनके आने पर उसकी धारणा बिलकुल बदल गई। नताशा और आन्द्रेई नखोदका से बात करके तो वह भयमुक्त हो गई थी। उनका व्यवहार मां को बहुत अच्छा लगा। जब आन्द्रेई ने पेलागेया के माथे की चोट के निशान को देखकर कहा कि उसे जिस स्त्री ने मां की तरह पाला था उसके भी इसी तरह का निशान था और उसके पति के मारने से वह निशान पड़ा था तो वह उसकी तरफ से [illegible] लगी थी। नताशा के सम्बन्ध में जब पेलागेया को मालूम हुआ कि उसका [illegible] में लोहे का व्यापार करता है और बहुत धनी है परन्तु नताशा को उसने

इसीलिए घर से निकाल दिया कि वह मजदूरों से सहानुभूति रखती है और उनके दुःख दूर करना चाहती है, तो वह बहुत दुःखी हुई। पावेल के मित्र काफी रात तक पुस्तक पढ़ते और बातें करते रहे। उन्होंने कारखाने के नवयुवकों की तरह न तो शराब पी और न गन्दी भाषा का ही प्रयोग किया। उनके चले जाने पर पेलागेया ने पावेल से पूछा, 'पावेल, मेरी समझ मे नही आता कि इसमे ऐसी खतरनाक और गैरकानूनी क्या बात है ? तुम कोई गलत काम तो नहीं कर रहे हो न ?" पावेल के समझाने पर वह उस दिन समझ गई थी। फिर भी पावेल ने कह दिया था कि किसी दिन उन्हें जेल मे ठूसा जा सकता है। पेलागेया अपने बेटे की सुरक्षा के लिए चिन्तित हो उठी थी। इसके पश्चात् हर शनिवार की शाम को पावेल के घर बैठक होने लगी। शहर से दूसरे लोग भी आकर इसमे सम्मिलित होने लगे थे। वेसोवाश्चिकोव, समोइलोव तो बस्ती के ही थे। याकोव सोमोव, निकोलाइ इवानोविच पहले से आते ही थे। अब एक दुबली-पतली लड़की साशा भी शहर से आने लगी थी। साशा ने बैठक मे पहली बार अपने-आपको समाजवादी कहा था। पेलागेया तो समाजवादी शब्द सुनकर ही डर गई थी। उसने पावेल से पूछा भी था कि क्या वह भी समाजवादी है, और उसके 'हां' करने पर वह डर गई थी। धीरे-धीरे समाजवादी शब्द सुनने की उसे आदत पड गई। जब भी बैठक मे विदेशों के मजदूर-आन्दोलन का समाचार पढा जाता तब सभी चिल्लाते और खुश होते। वे बहुधा गीत गाते। आन्द्रेई नखोदका को पेलागेया आन्द्र्यूसा कहने लगी थी। वह कारखाने मे वहीं काम करने लगा था और हर रोज शाम को पावेल के साथ पढने उनके घर आता था। धीरे-धीरे पेलागेया उससे इतना स्नेह करने लगी कि उसे अपने ही घर मे रहने के लिए बुला लिया। आन्द्र्यूसा भी मां से प्रेम करता था। वह उसके काम मे भी हाथ बटाने लगा।

कुछ दिन बाद ही पावेल ने फैक्टरी के व्यवस्थापकों के विरुद्ध मजदूरों की आंख खोलने के लिए पर्चे छपवाना प्रारम्भ कर दिया। नवयुवक मजदूर उन्हें बड़े ध्यान से पढते थे और सचाई को महसूस करते थे। हर सप्ताह इस तरह के पर्चे निकलते और मजदूरों में हलचल मच जाती। पर्चे शहर में छपते थे, इसलिए किसीको यह नहीं पता चलता था कि वह किस तरह छपते हैं। पावेल चुपके-चुपके उन्हें बाट देता था। इन पर्चों का पता लगाने के लिए जासूस लगा दिए गए थे और बस्ती के सभी मजदूर आशंकित हो उठे थे। एक दिन मारिया कोरसुनोवा ने पेलागेया के घर जाकर कहा, "पेलागेया, सावधान रहना। भंडा फूट गया। आज तुम्हारे घर की तलाशी ली जाएगी, और माझिन और वेसोवाश्चिकोव के घर की भी।" उस दिन तो तलाशी नहीं हुई, परन्तु एक महीने बाद एक रात को सशस्त्र पुलिस उनके घर आई और घर-भर का सामान उलट-पुलट दिया। अलमारियों में से निकालकर पुस्तकों को इधर-उधर फेंक दिया और पावेल, आन्द्रेई और पेलागेया से ऊट-पटांग सवाल पूछे। भूरी वर्दियोवाले सिपाही निकोलाई और आन्द्रेई को पकड़कर अपने साथ ले गए। निकोलाई और आन्द्रेई को जब मां ने सम्मनो पर हस्ताक्षर करते देखा तो वह दुःखी होकर रो पड़ी। पेलागेया को रोते देखकर पुलिस का अफसर बोला, "बुढ़िया, इतने आसू न बहा, नही तो आगे चलकर कहां से लाएगी···?" इसपर उसने क्रोधित होकर उत्तर दिया, "मां की आंखों मे सदैव हर बात के लिए पर्याप्त

आंसू रहते हैं, हर बात के लिए। अगर तुम्हारी मां है, तो वह इस बात को जानती होगी। यह सुनकर उस अफसर ने कोई उत्तर नहीं दिया था। वह तुरन्त वहां से चल दिया था। दूसरे दिन ही बुकिन, समोइलोव और सोमोव आदि पांच दूसरे लोग भी पकड़ लिए गए। रीबिन को पुलिसवाले गवाह बनाकर अपने साथ पावेल के घर लाए थे। दूसरे दिन वह उसके पास आया और आन्द्रेई तथा दूसरे सभी मजदूरों की प्रशंसा करने लगा। रीबिन ने कहा कि वह चालीस वर्ष का हो चुका था, परन्तु फिर भी उनके साथ कुछ करना चाहता था। वह बहुत देर तक पावेल से बात करता रहा। पेलागेया इन्हीं दिनों एक बार आन्द्रेई से जेल में मिल आई थी।

धीरे-धीरे बस्ती के सभी लोग पावेल की इज्जत करने लगे थे और आवश्यकता पड़ने पर उससे परामर्श लेते थे। फैक्टरी में इन्हीं दिनों एक महत्त्वपूर्ण घटना हो गई जिसने पावेल को सामने ला दिया। फैक्टरी के पास दलदल थी, जिसमें गन्दगी होने से मच्छर पैदा होते और बस्ती में बुखार फैलाते थे। फैक्टरी के डायरेक्टर ने दलदल को सुखाने के लिए मजदूरों के वेतन में से रूबल पीछे एक कोपेक काटने का निर्णय किया था। नाम तो मजदूरों की भलाई का लिया जा रहा था परन्तु दलदल की भूमि का लाभ फैक्टरी को होनेवाला था। फैक्टरी के सारे मजदूर डायरेक्टर के निर्णय के विरुद्ध थे और उन्होंने पावेल से सलाह लेने को सिजोव और माखोतिन को भेजा। उस दिन पावेल फैक्टरी नहीं गया था इसलिए घर पर ही था। पावेल ने दलदलवाली घटना का समाचार लेकर मां को शहर भेजा जिससे अखबार में छप सके। यह पेलागेया को अपने बेटे द्वारा बताया हुआ पहला काम था। वह प्रसन्नतापूर्वक शहर गई और येगोर ईवानोविच को पावेल का पत्र दे आई। यह शनिवार की बात थी। इतवार तो निकल गया, परन्तु सोमवार को ही फैक्टरी के मजदूर एकत्र हो गए। पावेल ने उन्हें कोपेक काटने की अनुचितता समझाई और डायरेक्टर को बुलवाया। डायरेक्टर ने पावेल तथा उसके साथियों की बातों पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया और मजदूरों को काम पर लौटने का आदेश दिया और कहा कि जो काम पर नहीं आएंगे उन्हें नौकरी से निकाल दिया जाएगा। यह कहकर वह चला गया। इसपर मजदूरों ने पावेल से पूछा कि अब वे क्या करें। पावेल ने स्पष्ट रूप से हड़ताल की सलाह दी। हड़ताल के नाम से मजदूर डर गए और काम पर लौट गए। पावेल को इससे बहुत दुःख हुआ। उसी शाम को पावेल के घर पुलिस आई। उन्होंने घर की तलाशी ली और पावेल को पकड़कर ले गए। पेलागेया अब व्यथित हो उठी। कुछ दिन बाद समोइलोव और येगोर इवानोविच रात के समय उसके घर आए। येगोर इवानोविच ने कहा कि सुबह ही निकोलाई इवानोविच जेल से छूटकर आया है और उसके हाथों खोखोल और पावेल ने नमस्ते कहलवाया है। येगोर ने ही पेलागेया को यह बताया कि पावेल के अतिरिक्त और भी बहुत-से लोग जेल भेजे गए हैं, पावेल तो उनका सर्वा आदमी है। इस बात से पेलागेया को ढाढ़स बंधा। येगोर ने पेलागेया से कहा कि अगर उन्होंने फैक्टरी में पर्चे बांटना बन्द कर दिया तो पुलिसवाले समझेंगे कि पावेल और उसके साथी ही यह काम करते थे। पावेल वगैरह के बचाव के लिए अब फैक्टरी में पर्चे बटना आवश्यक है। उसने कहा कि पेलागेया को खोमचेवाली कोरसूनोवा से इस सम्बन्ध

में बात करनी चाहिए। वह पर्चे ले जा सकती है, और लोगों की तो तलाशी होती है। पेलागेया ने येगोर से स्वयं पर्चे ले जाने की बात कही तो वह प्रसन्नता से उछल पड़ा। पेलागेया की समझ में यह बात आ गई थी कि पर्चे बटने से फैक्टरी के मालिक पावेल पर यह आरोप नहीं लगा सकेंगे। दूसरे दिन पेलागेया खोमचेवाली मारिया कोरसुनोवा से मिलने गई। वह पेलागेया की गरीबी समझकर उसे खाने की टोकरी लेकर फैक्टरी ले चलने को राजी हो गई। अगले दिन कोरसुनोवा तो बाज़ार से सामान खरीदने गई और टोकरियां लेकर पेलागेया फैक्टरी गई। दो-तीन दिन बाद ही साशा और येगोर ने पर्चे लाकर पेलागेया को दे दिए जिन्हें वह कपड़ों में छिपाकर फैक्टरी में ले गई। वैसे तो सन्तरी और खुफिया पुलिसवाले प्रत्येक की तलाशी ले रहे थे परन्तु पेलागेया ने टोकरियों के बोझ का बहाना बना दिया, जिससे उसकी तलाशी नहीं ली गई। भीतर पहुंचते ही वासिली गुसेव और इवान गुसेव नामक दो भाई, जोकि वहां मिस्त्री थे, उसके पास आए। पेलागेया ने निश्चित संकेतवाक्य बताने पर उन्हें पर्चों के बंडल दे दिए। दूसरे मजदूर पेलागेया को खोमचा लगाते देखकर सहानुभूति जताने लगे और उसीसे शोरवा तथा सेवइयां खरीदने लगे। पर्चे पहुंचाकर पेलागेया का हृदय उल्लास से भर गया। उसी दिन शाम को आन्द्रेई जेल से छूटकर आ गया। जब पेलागेया ने उससे फैक्टरी में पर्चे पहुंचाने की बात कही तो वह भी बहुत खुश हुआ। उसी दिन आन्द्रेई ने पेलागेया को यह बताया कि साशा और पावेल एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। यह जानकर पेलागेया साशा से और अधिक स्नेह करने लगी। दूसरे दिन पेलागेया फैक्टरी पहुंची तो सन्तरियों ने उसकी तलाशी ली परन्तु उन्हें उसके पास कुछ नहीं मिला। अब हर तरफ पर्चों के बटने की चर्चा होने लगी। कुछ दिन बाद जब पेलागेया पावेल से जेल में मिलने गई तो उसने संकेत से बता दिया कि फैक्टरी में उसने पर्चे पहुंचाए थे, जिनके कारण काफी हलचल मची। पावेल मां के पर्चे पहुंचाने की बात पर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने उसे चूम लिया। अब आन्द्रेई फिर से फैक्टरी में काम करने लगा था और सारा वेतन पेलागेया को देता था। इन दिनों पेलागेया चुपके-चुपके पढ़ने लगी थी। कठिनाई होने पर वह आन्द्रेई से पूछ लेती। वह भी उन सब बातों को जानना चाहती थी जिन्हें पावेल ने उन पुस्तकों से सीखा था। आखिर पावेल भी एक दिन जेल से छूट गया। उसे देखकर पेलागेया बहुत हर्षित हुई।

पावेल के आने के कुछ दिन पश्चात् ही रीबिन एक दिन पेलागेया के यहां आया। उसने बताया कि इन दिनों मैं येगिलदेयेवो नामक कस्बे में तारकोल बनाने का काम करता था तथा किसानों में समाजवादी भावना का प्रचार किया करता था। वह कुछ पुस्तकें लेने आया था, उसके साथ येफीम नाम का एक लड़का भी था। पुस्तकें लेकर तथा किसानों के लिए अखबार और पर्चे निकालने की बात कहकर वह फिर कस्बे को लौट गया।

एक दिन आन्द्रेई पर मां के स्नेह को देखकर पावेल ने उससे कहा, "मां, तुम्हारा हृदय बहुत उदार है।"

पेलागेया बोली, "मैं तो चाहती हूं कि मैं तुम्हारे और तुम्हारे दोस्तों के किसी काम आ सकूं। काश, मैं इन बातों को समझती होती!"

"तुम सीख जाओगी।"

"मुझे तो बस एक बात सीखनी है कि किसी तरह मैं चिन्ता करना छोड़ दूं।"

...और वास्तव में पेलागेया की बात ठीक ही थी, वह पावेल के लिए हर समय चिंतित रहती थी। अब पावेल और आन्द्रेई तो फैक्टरी चले जाते और पेलागेया मई दिवस की तैयारी में उनका योग देती। वह उनके पोस्टरों के लिए लेई बनाती, लाल रोशनाई तैयार करती। इसके अतिरिक्त अपरिचित लोग जोकि रहस्यमय ढंग से आकर पावेल के लिए संदेश दे जाते, उन्हें स्मरण रखती। मजदूरों से मई-दिवस के समारोह में भाग लेने का आग्रह करनेवाले पोस्टर हर रात दीवारों पर चिपकाए जाते। रात-रात-भर जंगलों में आन्द्रेई और पावेल मीटिंग करते। मई दिवस के दिन जलूस में सबसे आगे झंडा लेकर चलने का काम पावेल को करना था। इससे मां मन ही मन चिन्तित थी, परन्तु पावेल के भय से कुछ नहीं कह सकती थी। मई-दिवस के दिन जुलूस में पावेल के साथ आन्द्रेई और पेलागेया भी गए। जुलूस के आगे-आगे पावेल ने लाल झंडा ऊपर उठाया और दर्जनों हाथों ने झंडे का बांस थाम लिया। झंडे का बांस थामनेवालों में पावेल की मां का भी हाथ था। पावेल ने 'मजदूरवर्ग जिन्दाबाद' और 'समाजवादी-जनवादी मजदूरदल जिन्दाबाद' के नारे लगाए। जनसमुदाय ने उन्हें ऊंचे स्वर से दुहराया। इसके पश्चात् क्रांति के गीत गाए गए तथा आन्द्रेई बोला। जब कतार बांधकर जुलूस चलने लगा तो पेलागेया माजिन के पीछे चलने लगी। लोगों का जुलूस में सम्मिलित होने का उत्साह देखकर पेलागेया का हृदय गर्व से भर उठता था। पावेल के सम्मान को देखकर वह उल्लसित हो रही थी। परन्तु रह-रहकर उसे उसके लिए चिन्ता भी हो उठती थी। फिर भी पेलागेया ने अपने मन को समझा लिया था। जुलूस सड़क पर आगे बढ़ रहा था तभी सशस्त्र सिपाही सड़क को घेरकर खड़े हो गए और उनकी संगीनों की चमक दिखाई देने लगी। एक अफसर ने तलवार चमकाकर भीड़ को तितर-बितर हो जाने का आदेश दिया और धीरे-धीरे लोग पीछे हटने लगे। झंडे के साथ केवल कुछ दर्जन लोग रह गए। इसी समय पीछे से पेलागेया ने लोगों के भागने की आवाज सुनी। संगीनें झंडे के सामने चमक रही थीं। निकोलाई ने पावेल के हाथ से झंडा लेना चाहा, परन्तु उसने दिया नहीं। एक अफसर के आदेश पर सिपाहियों ने बन्दूक के कुन्दों के बल पर झंडा छीन लिया और आन्द्रेई, पावेल तथा उनके साथियों को गिरफ्तार कर लिया। इस छीना-झपटी में झंडे का बांस टूट गया, और लोगों पर सिपाहियों का क्रोध उमड़ने लगा। पेलागेया को एक सिपाही ने धक्का दिया और उसके सीने में घूसा मारा। वह जैसे-तैसे उठकर एक गली में घुस गई। टूटा हुआ झंडा उसके हाथ में था। गली में लोगों की भीड़ थी, वहीं खड़ी होकर वह कहने लगी, "हमारे बच्चे सुख की खोज के लिए लड़ाई के मैदान में उतरे हैं और उन्होंने यह हम सबकी खातिर किया है—उस लक्ष्य के लिए किया है जिसके लिए ईसामसीह ने अपने प्राण दिए थे। वे उन तमाम चीजों के खिलाफ लड़ने को मैदान में उतरे हैं जिन्हें पापी लोगों ने, झूठे और लालची लोगों ने, हमें बांधने के लिए, हमारी आवाज बन्द करने के लिए, हमें कुचल देने के लिए इस्तेमाल किया है...."बोलते-बोलते वह मूर्च्छित होने लगी थी कि किसीने उसे थाम लिया और निजोव उसे घर पहुंचाने गया। सब उसे आदर की

दृष्टि से देखने लगे।

उस दिन ही रात को सशस्त्र सिपाही पेलागेया के यहां तलाशी लेने को आ धमके। यह तीसरा अवसर था जबकि सशस्त्र पुलिस उसके यहां तलाशी लेने आई थी। जब तलाशी हो चुकी तो अफसर ने कुछ कागजों पर पेलागेया से हस्ताक्षर करवाए। टेढ़ी-मेढ़ी लिखावट में पेलागेया ने हस्ताक्षर किए :

'पेलागेया ब्लासोवा, एक मजदूर की विधवा'।

यह शब्द उसके मजदूरों के प्रति लगाव को प्रकट करते हैं, जिन्हें पढ़ते ही वह अफसर उससे बोला, "जंगली कहीं की!"

दूसरे दिन ही पेलागेया से मिलने इवानोविच आया। उसने उसे बताया कि पावेल और आन्द्रेई से उसका यह तय हुआ था कि उनके गिरफ्तार होने पर वह उसे शहर पहुंचा आए। उसने तलाशी के बारे में भी पूछा। निकोलाई इवानोविच के साथ पेलागेया शहर जाने को तो तैयार हो गई परन्तु उसने अपने लिए कुछ काम ढूंढ लेने का भी कहा था। निकोलाई ने रीबिन के यहां पर्चे और अखबार पहुंचाने का काम बताया। मां ने स्वीकार किया और निकोलाई के साथ शहर में उसके घर रहने लगी।

शहर के सिरे पर एक सुनसान सड़क के किनारे निकोलाई दुमंजिले मकान में रहता था। निकोलाई ने पेलागेया को बता दिया कि उसकी बहन सोफिया भी उनका काम करती है और कभी-कभी वहां आ जाती है। सोफिया आई तो उसने पेलागेया का उल्लास के साथ स्वागत किया। पेलागेया को सोफिया के चेहरे पर अपार साहस और चंचलता दिखाई दी। उसने बताया कि जैसे ही मुकदमा चलाकर पावेल और उसके साथियों को देश-निकाला देकर कहीं भेजा जाएगा, वे लोग पावेल को भगाने का प्रबन्ध कर लेंगे। निकोलाई और सोफिया का व्यवहार पेलागेया के प्रति बहुत अच्छा था। वह उनके भोजन और कॉफी की व्यवस्था करती थी और आगे की योजनाओं पर उनसे बातें करती थी। सोफिया पियानो बहुत अच्छा बजाती थी। मां उसका पियानो सुनकर बहुत प्रभावित हुई। निकोलाई और सोफिया को मां ने अपनी रामकहानी सुनाई और यह भी बताया कि किस तरह उसका पति उसे पीटा करता था और कैसे-कैसे कष्टों में वह दिन बिता चुकी है, आदि। मां के गत जीवन की बातें जानकर सोफिया उसका बहुत ही आदर करने लगी।

कुछ दिन बाद ही शहर की गरीब स्त्रियों के वेश में सोफिया और पेलागेया शहर की सड़कें पार करके खेतों की ओर चल दी। चलते-चलते सोफिया अपने जीवन के संस्मरण मां को सुनाती जा रही थी। सोफिया की बातें सुनकर पेलागेया प्रसन्न हो रही थी, परन्तु कभी-कभी उसे आशंका होती कि रीबिन सोफिया से मिलकर खुश नहीं हो सकेगा। तीसरे दिन सोफिया और पेलागेया रीबिन के पास तारकोल के कारखाने जा पहुंचीं। रीबिन पेलागेया और सोफिया से बड़ी आत्मीयता से मिला। पावेल के बारे में पूछने पर मां ने जुलूस से लेकर जेल जाने तक की सारी घटना बता दी। रीबिन को उन्होंने पुस्तकें और अखबारों के बंडल दिए। पहले तो रीबिन सोफिया से सीधी-सीधी बातें करने लगा, परन्तु जब उसने उसके जेल जाने तथा दूसरे कामों के बारे में सुना तो उसका विचार बदल

गया। रात को सोफिया और पेलागेया वहीं रहीं। रीबिन ने एक तपेदिक के रोगी को बुलाया जिसने अपनी करुण कहानी सुनाई कि किस तरह उसका शोषण किया गया था। फिर सोफिया ने मजदूरों की एकता और कार्यक्रम की बात कही। चलते समय दूर तक रीबिन और उसके साथी उन्हें पहुंचाने आए। मां यह जानकर खुश थी कि वह पावेल के काम को आगे बढ़ाने में सहायक हो रही थी। अब उसे काम मिल गया था। उसे अपने अस्तित्व का भान हो गया था।

रीबिन के यहां से लौटने पर पेलागेया का जीवन कुछ दिन तो निश्चित क्रम से चलने लगा—सुबह निकोलाई चाय पीकर उसे अखबार पढ़कर सुनाता, फिर दोपहर को वह खाना बनाती, नहा-धोकर पढ़ती। निकोलाई ने जब से मां को पढ़ते देखा, तभी से वह बहुत खुश हुआ और उसने सचित्र पुस्तकें लाकर उसे दीं। कभी-कभी साशा उससे मिलने आती और पावेल की कुशल पूछती और उससे नमस्ते कहकर फिर चली जाती। पेलागेया अपने बेटे पावेल के बारे में जब भी सोचती, उसकी आंखों के सामने आन्द्रेई तथा फ्योदोर आदि के चित्र घूम जाते। कभी-कभी झुंझलाहट अवश्य होती कि पावेल पर शीघ्र मुकदमा क्यों नहीं चलाया जाता; क्यों उसे वैसे ही जेल में बन्द कर रखा है!

कपड़ा बुनने के कारखाने में जब से नताशा ने पढ़ाना प्रारम्भ किया, तभी से पेलागेया ने उसे पुस्तकें, अखबार और पर्चे आदि पहुंचाने काम करना आरम्भ कर दिया था। इन गैरकानूनी चीज़ों को वह बड़ी सावधानी से पहुंचा देती। कुछ दिन बाद तो पूरे इलाके में पेलागेया ने यह काम करना प्रारम्भ कर दिया। वह कभी तो साधुनी का भेष बनाकर जाती और कभी लैस बेचनेवाली का। उसके कंधे पर कभी तो थैला पड़ा होता और कभी वह हाथ में सूटकेस लिए होती।

एक दिन निकोलाई ने उसे समाचार दिया कि उनका कोई एक साथी जेल से भाग आया है परन्तु वह उसका नाम नहीं जानता। उसने यह भी बताया कि येगोर के यहां जाने पर उसका पता चल सकता है। पेलागेया के हृदय में हलचल मचने लगी, उसे रह-रहकर यह ख्याल आता कि कहीं पावेल तो नहीं आ गया। वह तुरन्त येगोर के घर गई। वास्तव में वेसोवाश्चिकोव जेल से भागकर आया था। वेसोवाश्चिकोव ने येगोर और पेलागेया को बताया कि जेल में पावेल ही उनका नेतृत्व करता था, सभी उसका सम्मान करते थे और अफसरों से बात करनी होती तो वही करता था। वेसोवाश्चिकोव की बातें सुनकर मां चुप रही। कभी-कभी वह येगोर के चेहरे को देख लेती जोकि अब सूजा हुआ था। येगोर अब बहुत-बहुत जोर से खांसने लगा था और उसका स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा था। मां बाजार से वेसोवाश्चिकोव के लिए कोट खरीद कर लाई। जब निकोलाई मां से मिला तो उसने बताया कि येगोर इवानोविच की तबीयत बहुत खराब हो गई और उसे अस्पताल ले जाया गया है। पेलागेया शीघ्रता से शलूका पहनकर अस्पताल जा पहुंची। वहां कुछ देर बाद ही येगोर की मृत्यु हो गई। दूसरे दिन वह येगोर के कफन आदि की व्यवस्था करती रही। येगोर की अर्थी निकालने के लिए तीस-चालीस व्यक्ति अस्पताल के फाटक पर एकत्र हो गए थे और प्रदर्शन रोकने के लिए सशस्त्र पुलिस भी चक्कर लगाने लगी थी। जैसे ही अर्थी अस्पताल के द्वार पर आई सबने टोपियां उतारकर

सम्मति प्रकट किया। एक पुलिस-अफसर ने अर्थी पर बंधे हुए लाल फीतों को काट देने की आज्ञा दी। पेलागेया को पुलिस की हरकत देखकर बहुत क्रोध आया। उसने पास में खड़े एक नवयुवक से कहा कि वे उन्हें मर्जी के माफिक अन्त्येष्टि संस्कार भी नहीं करने देते। कितनी शर्म की बात है ! उसी समय अर्थी पर बंधे हुए लाल फीते तलवार से काट दिए गए। अर्थी के साथ जानेवाले लोग शोक में डूबे स्वर से गाने लगे तो उन्हें पुलिसवालों ने रोक दिया। सभी के मन में क्रोध उमड़ा पड़ रहा था, परन्तु कोई भी कुछ नहीं कह रहा था। जब अर्थी कब्रिस्तान में पहुंची तो एक नवयुवक ऊंची आवाज में येगोर की शिक्षा को कभी न भूलने की बात कहने लगा। पुलिस-अफसर ने उसे गिरफ्तार करने का आदेश दिया और पुलिसवाले भीड़ को चीरते हुए वक्ता की ओर बढ़ चले। लोगों ने उसे घेरा बनाकर अपने बीच में कर लिया और नारे लगाने लगे। अन्त में पुलिस ने उस नवयुवक को घेर ही लिया और दूसरे लोगों को मार-मारकर भगाने लगे। पहले तो वे पीछे हटे। फिर चहारदीवारी की टूटी हुई लकड़ियों और बेंतों से पुलिसवालों का सामना करने लगे। पुलिस तलवारें खींचकर उनपर टूट पड़ी। उसी समय निकोलाई ने कहा कि साथियो, अपनी शक्ति व्यर्थ में नष्ट मत करो, और लोग उसकी बात मानकर वहां से भागने लगे। निकोलाई ने उत्तेजित भीड़ को पीछे हटाने के लिए भरसक प्रयास किया। उसी समय सोफिया एक घायल लड़के का हाथ मां के हाथ में पकड़ा गई और उसे घर ले जाने को कहा। पेलागेया लड़के को लेकर घर चली गई।

एक बार जब पेलागेया पावेल से जेल में मिलने गई तो उसे चुपके से एक पर्चा दे आई। पर्चे में उससे वहां से भागने को कहा गया था और इसकी व्यवस्था उसके साथी करनेवाले थे। सोफिया ने पेलागेया को वह पर्चा दिया था। जब भी पेलागेया पावेल से मिलने जेल जाती उसी दिन साशा उससे पावेल के सम्बन्ध में पूछने आती थी। इस बार भी वह आई और कहने लगी कि उसे आशा नहीं है कि पावेल जेल से भागने को राजी हो जाएगा, इसलिए वह समझा-बुझाकर उसे मनाने का यत्न करे। उससे साशा ने यह भी कहने को कहा कि उसे पावेल के स्वास्थ्य की बहुत चिन्ता है और बाहर उसके लिए बहुत काम है। साशा ने बड़ी कठिनाई से मां से इतना सब कहा था। पेलागेया इस बात को अच्छी तरह समझती थी कि वह पावेल से बहुत प्रेम करती है।

दूसरे दिन से ही फिर पेलागेया अपने काम में व्यस्त हो गई। वह घोड़ागाड़ी में बैठकर अखबार और पर्चे देने रीबिन के कस्बे की ओर चल दी। जैसे ही वह अड्डे पर घोड़ागाड़ी से उतरी, उसने एक भीड़ देखी। उत्सुकता से उसने देखा तो बीच में रीबिन बंधे-हाथ पुलिसवालों के बीच खड़ा था। पेलागेया एक बार तो घबराई, परन्तु फिर सभल गई। तभी रीबिन ने अपने एक किसान साथी स्तेपान के कान में कुछ कहा और वह मां को अपने घर लिवा ले गया। मां ने देखा कि थानेदार ने बेदर्दी से रीबिन को घूसों से पीटा, जिससे उसके मुंह में खून आ गया। किसान क्रोधित तो हुए परन्तु कुछ कर नहीं सके। अभी वे विद्रोह के लिए तैयार नहीं थे। पुलिसवाले रीबिन को गाड़ी में बिठाकर शहर ले गए। पेलागेया ने उस किसान के घर पहुंचकर उसे अखबार व पर्चे दे दिए। उसके लड़के के सम्बन्ध में पूछने पर पेलागेया ने बताया कि वह जेल में है। किसान और

उसके साथी पावेल की कहानी सुनकर बहुत प्रभावित हुए। रात-भर पेलागेया वहीं रही और स्तेपान को अपना शहर का पता बताकर सुबह गाड़ी में बैठकर शहर लौट पड़ी। रास्ते-भर उसे रीबिन का चेहरा याद आता रहा। घर पहुंचते ही निकोलाई ने पेलागेया को बताया कि उसके पीछे वहां पुलिस ने तलाशी ली थी और उसे पेलागेया के पकड़े जाने का डर था। जब पेलागेया ने रीबिन की गिरफ्तारी से लेकर स्तेपान किसान के घर रुकने और अखबार तथा पर्चे पहुंचा आने की बात कही तो निकोलाई चिन्तामुक्त हो गया। रीबिन की गिरफ्तारी का समाचार सुनकर निकोलाई को बहुत दुःख हुआ, क्योंकि वह इस तथ्य से परिचित था कि जेल में उसे कष्ट दिया जाएगा। दूसरे दिन सुबह होने से पहले ही इगनात नामक युवक, जो कि रीबिन के साथ तारकोल के कारखाने में काम करता था, वहां आया और रीबिन की गिरफ्तारी के बारे में कहकर उसने रीबिन के हाथ का लिखा एक पर्चा दिया जिसे वह पकड़े जाने से पहले लिख गया था। निकोलाई ने पढ़ा। पर्चे में लिखा था, "मां, हमारे काम से हाथ न खींच लेना और उस लम्बे कदवाली नेक औरत से कह देना कि वह हम लोगों के बारे में पहले से भी ज्यादा लिखा करे। अच्छा विदा! —रीबिन।"

मां ने इगनात को बताया कि जब वह निकोल्स्कोये के अड्डे पर पहुंची तब रीबिन को पुलिसवालों ने बहुत बुरी तरह पीटा। इसके पश्चात् निकोलाई ने रीबिन की गिरफ्तारी के सम्बन्ध में एक पर्चा छपवाने का प्रबन्ध किया।

इतवार को जब पेलागेया फिर पावेल से जेल में मिलने गई तो उसने चुपके से उसके हाथ में एक पर्चा दिया। घर लौटने पर उसने पर्चा निकोलाई को दे दिया। वह आशा कर रही थी कि पावेल जेल से भागने की बात मान गया होगा, परन्तु निकोलाई ने पर्चा पढ़ा: "साथियो, हम भागने की कोशिश नहीं करेंगे। हम यह नहीं कर सकते। हममें से कोई भी नहीं। अगर हम भागे तो हमारे आत्मसम्मान को धक्का लगेगा। लेकिन उस किसान की मदद करने की कोशिश करो जो अभी गिरफ्तार होकर आया है। उसे तुम्हारी मदद की आवश्यकता है। यहां उसकी बड़ी बुरी अवस्था है, रोज अधिकारियों से उसका झगड़ा होता है। वह चौबीस घण्टे तो काल कोठरी में भी बिता चुका है। हम सब यही चाहते हैं कि तुम लोग उसकी सहायता करो। मेरी मां को समझा देना, उसे सब कुछ बता देना, वह समझ जाएगी…।"

पेलागेया पावेल की बातें पहले ही समझती थी, परन्तु मां का हृदय यह मानने को तैयार नहीं था कि वह जेल से नहीं भागेगा। पावेल के ऊपर पेलागेया को पूरा भरोसा था। वह जानती थी कि वह जो करेगा, ठीक ही करेगा। अपने बेटे की इच्छा पूरी करना और उसके काम में सहयोग देना पेलागेया अपना धर्म समझने लगी थी। उसने निकोलाई से कहा भी कि पावेल उसका बहुत ध्यान रखता है। उसने उसे समझाने को लिखा था। निकोलाई ने पावेल की प्रशंसा की। वह हृदय से उसका सम्मान करता था। पेलागेया ने निकोलाई से रीबिन की सहायता करने के लिए कोई योजना बनाने को कहा। वैसे पावेल के उत्तर से पेलागेया भारी थकन अनुभव कर रही थी। साशा के आने पर उसने सारी बातें उसे बताईं और रीबिन के बारे में भी कहा। साशा उसे जेल से भगाने की योजना

बताने लगी। तीसरे दिन ही साशा ने बताया कि रीबिन को जेल से भगाने की तैयारी पूरी हो गई है। उसने यह भी बताया कि रीबिन को छिपाने के स्थान और कपड़ों की व्यवस्था उसने कर दी है। साशा ने कहा कि गोबून और वेसोवाश्चिकोव उसकी सहायता करेंगे। पेलागेया उस दिन उनके साथ गई और जेल के पासवाले कब्रिस्तान की चहार-दीवारी के पास छिपकर खड़ी हो गई। पेलागेया ने देखा कि एक आदमी बत्ती जलाने-वालों की तरह कंधे पर सीढ़ी रखे आया और उसने सीढ़ी जेल की दीवार के सहारे लगा दी। सीढ़ी पर चढ़कर उस आदमी ने हाथ घुमाकर संकेत किया और दीवार पर एक व्यक्ति का सिर दिखाई दिया। वह रीबिन था। उसके बाद ही एक और आदमी दीवार से सीढ़ी पर आया और उतरकर एक तरफ को भागा। रीबिन को देखकर पेलागेया धीरे-धीरे बोली : भागो ! भागो ! !"'उसी समय जेल में सिपाहियों की सीटियां बजने लगी तथा उनके भागने की आवाज़ सुनाई देने लगी। पेलागेया जिस काम को इतना कठिन समझ रही थी वह कितनी सरलता से हो गया था। वह सोच रही थी कि रीबिन की तरह पावेल भी जेल से भाग सकता था। धीरे-धीरे मां वहां से चल दी। घर आकर उसने निकोलाई को रीबिन के भागने का वृत्तान्त सुनाया। निकोलाई ने कहा कि उसे पेलागेया की बहुत चिन्ता थी कि कहीं वह पकड़ी न जाए। पेलागेया अब भी पावेल के मुकदमे से बहुत डरती थी। निकोलाई ने उसे समझाया कि वह मुकदमे से डरना छोड़ दे। पेलागेया ने बताया कि वह स्वयं नहीं जानती कि वह क्यों डरती है। वास्तव में उसका पूरा जीवन भय और चिन्ता में ही बीता था। अब एकदम उनसे मुक्त होना उसके हाथ की बात नहीं थी। उसने स्पष्ट कह दिया कि उसे रह-रहकर यह विचार आता है कि मुकदमे में न जाने क्या होगा। उसने यह भी कहा कि उसे सज़ा से डर नहीं लगता कि पावेल को क्या सज़ा मिलेगी। डर तो मुकदमे की कार्यवाही से लगता है। निकोलाई ने पहले ही पेलागेया को बता दिया था कि पावेल और उसके साथियों को साइबेरिया भेजने का दंड दिया जाएगा, ऐसा समाचार उसे विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ था।

जैसे-जैसे मुकदमे का दिन निकट आता जा रहा था, पेलागेया का भय बढ़ता जाता था। मुकदमे के दिन अदालत जाते समय तो उसके लिए सिर उठाकर चलना भी कठिन हो गया था। अदालत के बाहर और बरामदे में उसे उन लोगों के सम्बन्धी मिले, जिनपर कि मुकदमा चलाया जा रहा था। वह सिजोव के पास जाकर बेंच पर बैठ गई और मुकदमे की कार्यवाही देखने लगी। एक सिपाही के पीछे-पीछे पावेल, आन्द्रेई, फ्योदोर माजिन, गुसेव नामक दोनों भाई, समोइलोव, बूकिन तथा सोमोव आदि आए और कठघरे में रखी बेंच पर बैठ गए। सबके चेहरों पर मुस्कराहट थी। कोई भी मुकदमे से डरा नहीं था। जजों ने उनसे प्रश्न पूछे, जिनका वे निर्भीकता से उत्तर देते रहे। बीच-बीच में वकील भी कुछ बोलने जाते थे। इसके बाद कुछ समय के लिए अदालत उठ गई और सब लोग आपस में बातें करने लगे या बाहर चाय पीने चले गए। कैदियों के सम्बन्धी उनसे बातें करने लगे। थोड़े समय में ही फिर जज लोग कुर्सियों पर आ बैठे और कार्यवाही आरम्भ हो गई। सरकारी वकील सभी कैदियों पर आरोप लगाता रहा। फेदोसेयेव, मारकोव और जगारोव की ओर से सफाई का वकील बोला। पेलागेया समझती थी कि उसके बेटे

उसके साथी पावेल की कहानी सुनकर बहुत प्रभावित हुए। रात-भर पेलागेया वहीं [illegible] और स्तेपान को अपना शहर का पता बताकर सुबह गाड़ी में बैठकर शहर लौट [illegible] रास्ते-भर उसे रीबिन का चेहरा याद आता रहा। घर पहुंचते ही निकोलाई ने पे[illegible] गेया को बताया कि उसके पीछे वहां पुलिस ने तलाशी ली थी और उसे पेलागेया [illegible] पकड़े जाने का डर था। जब पेलागेया ने रीबिन की गिरफ्तारी से लेकर स्ते[illegible] किसान के घर रुकने और अखबार तथा पर्चे पहुंचा आने की बात कही तो निको[illegible] चिन्तामुक्त हो गया। रीबिन की गिरफ्तारी का समाचार सुनकर निकोलाई को [illegible] दुःख हुआ, क्योंकि वह इस तथ्य से परिचित था कि जेल में उसे कष्ट दिया जाएगा। [illegible] दिन सुबह होने से पहले ही इगनात नामक युवक, जो कि रीबिन के साथ तारकोल के कारखाने मे काम करता था, वहां आया और रीबिन की गिरफ्तारी के बारे मे बताया। उसने रीबिन के हाथ का लिखा एक पर्चा दिया जिसे वह पकड़े जाने से पहले लिख [illegible] था। निकोलाई ने पढ़ा। पर्चे में लिखा था, "मां, हमारे काम से हाथ न खींच लेना और उस लम्बे कदवाली नेक औरत से कह देना कि वह हम लोगों के बारे में पहले से भी ज्यादा लिखा करे। अच्छा विदा! —रीबिन।"

मां ने इगनात को बताया कि जब वह निकोल्स्कोये के अड्डे पर पहुंची तब रीबिन को पुलिसवालों ने बहुत बुरी तरह पीटा। इसके पश्चात् निकोलाई ने रीबिन की गिर[illegible] फ्तारी के सम्बन्ध में एक पर्चा छपवाने का प्रबन्ध किया।

इतवार को जब पेलागेया फिर पावेल से जेल में मिलने गई तो उसने चुपके से उसके हाथ में एक पर्चा दिया। घर लौटने पर उसने पर्चा निकोलाई को दे दिया। [illegible] आशा कर रही थी कि पावेल जेल से भागने की बात मान गया होगा, परन्तु निको[illegible] ने पर्चा पढ़ा: "साथियो, हम भागने की कोशिश नहीं करेंगे। हम यह नहीं कर सकते, हममें से कोई भी नहीं। अगर हम भागे तो हमारे आत्मसम्मान को धक्का लगेगा। लेकिन उस किसान की मदद करने की कोशिश करो जो अभी गिरफ्तार होकर आया है। [illegible] तुम्हारी मदद की आवश्यकता है। यहां उसकी बड़ी बुरी अवस्था है, रोज अधिकारियों से उसका झगड़ा होता है। वह चौबीस घण्टे तो काल कोठरी में भी बिता चुका है। [illegible] सब यही चाहते हैं कि तुम लोग उसकी सहायता करो। मेरी मां को समझा देना, [illegible] सब कुछ बता देना, वह समझ जाएगी…।"

पेलागेया पावेल की बातें पहले ही समझती थी, परन्तु मां का हृदय यह मानने को तैयार नहीं था कि वह जेल से नहीं भागेगा। पावेल के ऊपर पेलागेया को पूरा भरोसा था। वह जानती थी कि वह जो करेगा, ठीक ही करेगा। अपने बेटे की इच्छा पूरी करना और उसके काम में सहयोग देना पेलागेया अपना धर्म समझने लगी थी। उसने निकोलाई से कहा भी कि पावेल उसका बहुत ध्यान रखता है। उसने उसे समझाने को लिखा था। निकोलाई ने पावेल की प्रशंसा की। वह हृदय से उसका सम्मान करता था। पेलागेया ने निकोलाई से रीबिन की सहायता करने के लिए कोई योजना बनाने को कहा। [illegible] के उत्तर से पेलागेया भारी थकन अनुभव कर रही थी। साशा के आने पर [illegible] बातें उसे बताईं और रीबिन के बारे में भी कहा। साशा उसे बैठ के .

बताने लगी। तीसरे दिन ही साशा ने बताया कि रीबिन को जेल से भगाने की तैयारी पूरी हो गई है। उसने यह भी बताया कि रीबिन को छिपाने के स्थान और कपड़ों की व्यवस्था उसने कर दी है। साशा ने कहा कि गोबून और वेसोवास्चिकोव उसकी सहायता करेंगे। पेलागेया उस दिन उनके साथ गई और जेल के पासवाले कब्रिस्तान की चहार-दीवारी के पास छिपकर खड़ी हो गई। पेलागेया ने देखा कि एक आदमी बत्ती जलाने-वालों की तरह कंधे पर सीढ़ी रखे आया और उसने सीढ़ी जेल की दीवार के सहारे लगा दी। सीढ़ी पर चढ़कर उस आदमी ने हाथ घुमाकर संकेत किया और दीवार पर एक व्यक्ति का सिर दिखाई दिया। वह रीबिन था। उसके बाद ही एक और आदमी दीवार से सीढ़ी पर आया और उतरकर एक तरफ को भागा। रीबिन को देखकर पेलागेया धीरे-धीरे बोली : भागो ! भागो ! !···उसी समय जेल में सिपाहियों की सीटियां बजने लगीं तथा उनके भागने की आवाज सुनाई देने लगी। पेलागेया जिस काम को इतना कठिन समझ रही थी वह कितनी सरलता से हो गया था। वह सोच रही थी कि रीबिन की तरह पावेल भी जेल से भाग सकता था। धीरे-धीरे मां वहां से चल दी। घर आकर उसने निकोलाई को रीबिन के भागने का वृत्तान्त सुनाया। निकोलाई ने कहा कि उसे पेलागेया की बहुत चिन्ता थी कि कहीं वह पकड़ी न जाए। पेलागेया अब भी पावेल के मुकदमे से बहुत डरती थी। निकोलाई ने उसे समझाया कि वह मुकदमे से डरना छोड़ दे। पेलागेया ने बताया कि वह स्वयं नहीं जानती कि वह क्यों डरती है। वास्तव में उसका पूरा जीवन भय और चिन्ता में ही बीता था। अब एकदम उनसे मुक्त होना उसके हाथ की बात नहीं थी। उसने स्पष्ट कह दिया कि उसे रह-रहकर यह विचार आता है कि मुकदमे में न जाने क्या होगा। उसने यह भी कहा कि उसे सजा से डर नहीं लगता कि पावेल को क्या सजा मिलेगी। डर तो मुकदमे की कार्यवाही से लगता है। निकोलाई ने पहले ही पेलागेया को बता दिया था कि पावेल और उसके साथियों को साइबेरिया भेजने का दंड दिया जाएगा, ऐसा समाचार उसे विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ था।

जैसे-जैसे मुकदमे का दिन निकट आता जा रहा था, पेलागेया का भय बढ़ता जाता था। मुकदमे के दिन अदालत जाते समय तो उसके लिए सिर उठाकर चलना भी कठिन हो गया था। अदालत के बाहर और बरामदे में उसे उन लोगों के सम्बन्धी मिले, जिनपर कि मुकदमा चलाया जा रहा था। वह सिजोव के पास जाकर बेंच पर बैठ गई और मुकदमे की कार्यवाही देखने लगी। एक सिपाही के पीछे-पीछे पावेल, आन्द्रेई, फ्योदोर माजिन, गुसेव नामक दोनों भाई, समोइलोव, बूकिन तथा सोमोव आदि आए और कठघरे में रखी बेंच पर बैठ गए। सबके चेहरों पर मुस्कराहट थी। कोई भी मुकदमे से डरा नहीं था। जजों ने उनसे प्रश्न पूछे, जिनका वे निर्भीकता से उत्तर देते रहे। बीच-बीच में वकील भी कुछ बोलते जाते थे। इसके बाद कुछ समय के लिए अदालत उठ गई और सब लोग आपस में बातें करने लगे या बाहर चाय पीने चले गए। कैदियों के सम्बन्धी उनसे बातें करने लगे। थोड़े समय में ही फिर जज लोग कुर्सियों पर आ बैठे और कार्यवाही आरम्भ हो गई। सरकारी वकील सभी कैदियों पर आरोप लगाता रहा। फेदोसेयेव, मारकोव और जगारोव की ओर से सफाई का वकील बोला। पेलागेया समझती थी कि उसके बेटे

और दूसरे लोगों का फैसला ईमानदारी से किया जाएगा, परन्तु जजों की भावहीन सूरत और वकीलों की ऊल-जलूल बातों ने उसे निराश कर दिया। अब मुकदमे की कार्यवाही में उसे रुचि नहीं रही। अन्त में पावेल और उसके साथी एक-एक करके बोलने खड़े हुए। पावेल ने अपनी सफाई में कुछ भी कहने से इन्कार कर दिया और समाजवादी दल के सम्बन्ध में तथा जारशाही के दोषों के सम्बन्ध में विस्तार से बोलने लगा। जजों ने पहले तो उसे टोका परन्तु वे फिर चुपचाप सुनने लगे। पावेल ने कहा :

"हम क्रान्तिकारी हैं और उस वक्त तक क्रान्तिकारी रहेंगे जब तक इस दुनिया में यह हालत रहेगी कि कुछ लोग केवल आदेश देते हैं और कुछ लोग केवल काम करते हैं। हम उस समाज के विरुद्ध हैं जिसके हितों की रक्षा करने की आप जज लोगों को आज्ञा दी गई है। हम उसके कट्टर शत्रु हैं, और आपके भी; और जब तक इस लड़ाई में हमारी जीत न हो जाए, तब तक हमारा कोई समझौता सम्भव नहीं है।…"

जज, कैदी और दर्शक तथा वकील सभी पावेल का उत्तेजक भाषण सुन रहे थे। उसने जारशाही को खूब खरी-खरी सुनाई। पेलागेया इस बात से खुश थी कि पावेल इतनी निर्भीकता से बोला, फिर भी वह फैसले से डर रही थी। पेलागेया पावेल की बा[illegible] से अपरिचित नहीं थी। वह बहुत बार उन्हें उसके मुंह से सुन चुकी थी। पावेल के ब[illegible] आन्द्रेई, समोइलोव, माजिन आदि से सफाई के सम्बन्ध में पूछा गया; और वे भी इस तरह कुछ कहकर बैठ गए। अन्त में बड़े जज ने देश-निकाले का दंड सुना दिया। जैसे ही पेलागेया अदालत से बाहर निकली, बहुत-से नवयुवक और नवयुवतियों ने उसे घेर लिया। सभी मुकदमे की कार्यवाही और सजा के सम्बन्ध में पूछने लगे। पेलागेया को पावेल व्लासोव की मां जानकर तो सभी पावेल के साहस की प्रशंसा करने लगे। कोई कोई उससे हाथ भी मिलाने लगे। लोगों ने 'रूसी मजदूर जिन्दाबाद' के नारे लगाने भी प्रारम्भ कर दिए। पुलिस की सीटियां बजती रहीं, परन्तु नारे बन्द नहीं हुए। पेलागेया अपने बेटे का इतना सम्मान देखकर अपनी व्यथा भूल गई और हर्ष के आंसू उसकी आंखों में छलछला आए। उसी समय एक व्यक्ति जारशाही के विरुद्ध भाषण देने लगा। तभी साशा वहां आई और पेलागेया को हाथ पकड़कर दूर ले गई। उसने कहा कि गिरफ्तारी शुरू होने से पहले ही उसे वहां से चला जाना चाहिए। साशा ने पेलागेया से पावेल के भाषण के बारे में पूछा कि वह कैसा बोला और यह भी बताया कि उसका काम संभालने-वाला आदमी मिलने पर वह भी शायद साइबेरिया चली जाए। उसने मां को साफ-साफ बताया कि उसे भी सजा सुनाई जानेवाली है और उसे भी साइबेरिया भेजा जा सकता है। मां चुपचाप साशा की बात सुनती रही और पावेल के प्रति उसके प्रेम के बारे में सोचती रही। उसे साशा पर बहुत तरस आने लगा। वहां से साशा और पेलागेया निको-लाई के घर आईं; और पेलागेया कुछ देर तक उससे बातें करती रही, फिर लुद्मीला के घर [illegible]। वह इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रख रही थी कि कोई उसका पीछा तो नहीं [illegible]। लुद्मीला को उसने पावेल के भाषण का पर्चा देकर छाप देने को कहा। वही [illegible] पर्चों को छापा करती थी। पेलागेया तो थकन के मारे सो गई और लुद्मीला भाषण छापने का प्रबन्ध करने लगी। दूसरे दिन, उसने मां को काफी पर्चे छापकर दे दिए।

इसी बीच निकोलाई गिरफ्तार कर लिया गया था, यह समाचार भी लुद्मीला ने हो पेलागेया को सुनाया। लुद्मीला ने मां से कहा,"तुम भी कितनी भाग्यवान हो ! मां और बेटे का कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ चलना कितनी शानदार बात है और ऐसा बहुत कम ही होता है।"

पेलागेया ने धीमे स्वर मे कहा, "हमारे बच्चे दुनिया में आगे बढ़ रहे हैं। मैं तो इसे इसी तरह देखती हूं, वे सारी दुनिया मे फैल गए हैं और दुनिया के कोने-कोने से आकर एक ही लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं।···हमारे बच्चे सचाई और न्याय के पथ पर चल रहे हैं।"···पेलागेया अब पावेल के लक्ष्य को समझने लगी थी। वह उसके साथियों की सद्भावना से परिचित हो गई थी। वह अधिक तो नहीं जानती थी, परन्तु सुन्दर भविष्य का चित्र उसकी आंखों मे भी घूम जाता था। लुद्मीला ने उससे कहा कि उसके साथ रहकर उसे बहुत खुशी होती है।

अब पावेल के भाषण को बांटने का काम पेलागेया को करना था। गाड़ी से दूर-दूर उसे अपने बेटे का भाषण पहुंचाना था। वह गाड़ी के समय से पहले ही स्टेशन जा पहुंची। मुसाफिरखाने की एक बेंच पर जाकर पेलागेया बैठ गई, और कुछ देर बाद ही एक नवयुवक सकेतवाक्य सुनने के बाद उसे पर्चों का बक्सा दे गया। अब पेलागेया को भय लगने लगा था कि कोई उसपर निगाह तो नहीं रख रहा है। एक बार तो उसके मन में प्रश्न उठा कि क्या वह पावेल के भाषण के पर्चों से भरा बक्सा छोड़कर चली जाए ? परन्तु फिर वह साहस बटोरकर वहीं बैठी रही। उसने बक्सा मजबूती से हाथ मे पकड़े रखा। कुछ देर बाद ही एक जासूस उसको देखकर लौट गया। उसने शांति की सांस ली, परन्तु थोड़ी देर में ही वह गार्ड के साथ फिर लौटा। गार्ड उसे घूरने लगा। मां को डर लग रहा था कि कहीं वे उसे पीटें नहीं। गार्ड ने उससे कहा, "अच्छा यह बात है। चोर कहीं की ! इस उम्र मे यह सब करते शर्म नहीं आती ?"···तो पेलागेया क्रोध से कांप उठी और झटका लगने से बक्सा खुल गया। वह और कोई चारा न देखकर चिल्लाने लगी, "कल राजनीतिक कैदियों पर एक मुकदमा चलाया गया था और उनमे मेरा बेटा पावेल व्लासोव भी था। उसने अदालत में एक भाषण दिया था, यही वह भाषण है। मैं इसे जनता के पास ले जा रही हूं ताकि वे इसे पढ़कर सचाई का पता लगा सकें।" और पर्चों की गड्डियां उछाल-उछालकर लोगों की ओर फेंकने लगी। उसके चारों ओर भीड़ लग गई और वह पर्चे बांटती रही। तभी सशस्त्र सिपाही आए और पीट-पीटकर भीड़ को तितर-बितर करने लगे। लोग पेलागेया से भाग जाने को कहने लगे, परन्तु वह गई नहीं। वह शासन के अत्याचारों और अपने बेटे तथा उसके साथियों के उद्देश्य आदि के सम्बन्ध मे उन्हें बताने लगी। जितना वह जानती थी वही बताती रही। भर्राए हुए गले से वह बोली,"मेरे बेटे के शब्द एक ऐसे ईमानदार मजदूर के शब्द हैं जिसने अपनी आत्मा को बेचा नहीं है। ईमानदारी के शब्दों को आप उनकी निर्भीकता से पहचान सकते हैं···"

इसी समय किसी सिपाही ने उसकी छाती पर जोर से घूसा मारा और वह बेंच पर गिर पड़ी। अब सिपाही भीड़ को पीछे धकेलने लगे थे। अपनी बची हुई शक्ति से पेलागेया फिर बोलने लगी तो सिपाहियों ने उसे थप्पड़ और घूसों से मारना प्रारम्भ कर

और दूसरे लोगों का फैसला ईमानदारी से किया जाएगा, परन्तु जजों की [illegible]
और वकीलों की ऊल-जलूल बातों ने उसे निराश कर दिया। अब मुकदमे की [illegible]
में उसे रुचि नहीं रही। अन्त में पावेल और उसके साथी एक-एक करके बोलने [illegible]
पावेल ने अपनी सफाई में कुछ भी कहने से इन्कार कर दिया और समाजवाद [illegible]
सम्बन्ध में तथा जारशाही के दोषों के सम्बन्ध में विस्तार से बोलने लगा। जजों ने [illegible]
तो उसे टोका परन्तु वे फिर चुपचाप सुनने लगे। पावेल ने कहा :

"हम क्रान्तिकारी हैं और उस वक्त तक क्रान्तिकारी रहेंगे जब तक इस दुनि[illegible]
यह हालत रहेगी कि कुछ लोग केवल आदेश देते हैं और कुछ लोग केवल का[illegible]
हैं। हम उस समाज के विरुद्ध हैं जिसके हितों की रक्षा करने की आप जज लोगों को [illegible]
दी गई है। हम उसके कट्टर शत्रु हैं, और आपके भी; और जब तक इस लड़ाई में [illegible]
जीत न हो जाए, तब तक हमारा कोई समझौता सम्भव नहीं है।...."

जज, कैदी और दर्शक तथा वकील सभी पावेल का उत्तेजक भाषण सुन [illegible]
उसने जारशाही को खूब खरी-खरी सुनाई। पेलागेया इस बात से खुश थी [illegible]
इतनी निर्भीकता से बोला, फिर भी वह फैसले से डर रही थी। पेलागेया पावेल [illegible]
से अपरिचित नहीं थी। वह बहुत बार उन्हें उसके मुंह से सुन चुकी थी। [illegible]
आन्द्रेई, समोइलोव, माजिन आदि से सफाई के सम्बन्ध में पूछा गया; और वे [illegible]
तरह कुछ कहकर बैठ गए। अन्त में बड़े जज ने देश-निकाले का दंड सुना दिया। [illegible]
पेलागेया अदालत से बाहर निकली, बहुत-से नवयुवक और नवयुवतियों ने [illegible]
लिया। सभी मुकदमे की कार्यवाही और सजा के सम्बन्ध में पूछने लगे। [illegible]
पावेल व्लासोव की मां जानकर तो सभी पावेल के साहस की प्रशंसा करने लगे।
[illegible] उससे हाथ भी मिलाने लगे। लोगों ने 'रूसी मजदूर जिन्दाबाद' के नारे [illegible]
प्रारम्भ कर दिए। पुलिस की सीटियां बजती रहीं, परन्तु नारे बन्द नहीं हुए। [illegible]
अपने बेटे का इतना सम्मान देखकर अपनी व्यथा भूल गई और हर्ष के आंसू [illegible]
में छलछला आए। उसी समय एक व्यक्ति जारशाही के विरुद्ध भाषण देने लगा। [illegible]
साशा चली आई और पेलागेया को हाथ पकड़कर दूर ले गई। उसने कहा कि [illegible]
शुरू होने से पहले ही उसे वहां से चला जाना चाहिए। साशा ने पेलागेया से पावेल [illegible]
भाषण के बारे में पूछा कि वह कैसा बोला और यह भी बताया कि उसका [illegible]
वाला आदमी मिलने पर वह भी शायद साइबेरिया चली जाए। उसने मां को [illegible]
बताया कि उसे भी सजा सुनाई जानेवाली है और उसे भी साइबेरिया भेजा जा [illegible]
है। मां चुपचाप साशा की बात सुनती रही और पावेल के प्रति उसके प्रेम के [illegible]
सोचती रही। उसे साशा पर बहुत तरस आने लगा। वहां से साशा और पेलागेया [illegible]
[illegible] के घर आईं; और पेलागेया कुछ देर तक उससे बातें करती रही, फिर [illegible]
[illegible] गई। वह इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रख रही थी कि कोई उसका पीछा [illegible]
[illegible]। ल्युदमीला को उसने पावेल के भाषण का पर्चा देकर [illegible]
उसके पर्चे का [illegible] करती थी। पेलागेया तो प्रसन्न के मारे [illegible] और [illegible]
को छापने का प्रबन्ध करने लगी। दूसरे दिन, उसने मां को [illegible]

इसी बीच निकोलाई गिरफ्तार कर लिया गया था, यह समाचार भी लुद्मीला ने ही पेलागेया को सुनाया। लुद्मीला ने मा से कहा,"तुम भी कितनी भाग्यवान हो ! मां और बेटे का कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ चलना कितनी शानदार बात है और ऐसा बहुत कम ही होता है।"

पेलागेया ने धीमे स्वर में कहा, "हमारे बच्चे दुनिया में आगे बढ़ रहे हैं। मैं तो इसे इसी तरह देखती हूं, वे सारी दुनिया में फैल गए हैं और दुनिया के कोने-कोने से आकर एक ही लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं।···हमारे बच्चे सचाई और न्याय के पथ पर चल रहे हैं।"···पेलागेया अब पावेल के लक्ष्य को समझने लगी थी। वह उसके साथियों की सद्भावना से परिचित हो गई थी। वह अधिक तो नहीं जानती थी, परन्तु सुन्दर भविष्य का चित्र उसकी आंखों मे भी घूम जाता था। लुद्मीला ने उससे कहा कि उसके साथ रहकर उसे बहुत खुशी होती है।

अब पावेल के भाषण को बांटने का काम पेलागेया को करना था। गाड़ी से दूर-दूर उसे अपने बेटे का भाषण पहुंचाना था। वह गाड़ी के समय से पहले ही स्टेशन जा पहुंची। मुसाफिरखाने की एक बेंच पर जाकर पेलागेया बैठ गई; और कुछ देर बाद ही एक नवयुवक सकेतवाक्य सुनने के बाद उसे पर्चों का बक्सा दे गया। अब पेलागेया को भय लगने लगा था कि कोई उसपर निगाह तो नहीं रख रहा है। एक बार तो उसके मन मे प्रश्न उठा कि क्या वह पावेल के भाषण के पर्चों से भरा बक्सा छोड़कर चली जाए ? परन्तु फिर वह साहस बटोरकर वहीं बैठी रही। उसने बक्सा मजबूती से हाथ मे पकड़े रखा। कुछ देर बाद ही एक जासूस उसको देखकर लौट गया। उसने शांति की सास ली, परन्तु थोड़ी देर मे ही वह गार्ड के साथ फिर लौटा। गार्ड उसे घूरने लगा। मा को डर लग रहा था कि कहीं वे उसे पीटें नहीं। गार्ड ने उससे कहा, "अच्छा यह बात है। चोर कहीं की ! इस उम्र मे यह सब करते शर्म नहीं आती ?"···तो पेलागेया क्रोध से काप उठी और झटका लगने से बक्सा खुल गया। वह और कोई चारा न देखकर चिल्लाने लगी, "कल राजनीतिक कैदियों पर एक मुकदमा चलाया गया था और उनमे मेरा बेटा पावेल व्लासोव भी था। उसने अदालत मे एक भाषण दिया था, यही वह भाषण है। मैं इसे जनता के पास ले जा रही हू ताकि वे इसे पढ़कर सचाई का पता लगा सकें।" और पर्चों की गड्डियां उछाल-उछालकर लोगों की ओर फेंकने लगी। उसके चारों ओर भीड़ लग गई और वह पर्चे बांटती रही। तभी सशस्त्र सिपाही आए और पीट-पीटकर भीड़ को तितर-बितर करने लगे। लोग पेलागेया से भाग जाने को कहने लगे, परन्तु वह गई नहीं। वह शासन के अत्याचारों और अपने बेटे तथा उसके साथियों के उद्देश्य आदि के सम्बन्ध में उन्हें बताने लगी। जितना वह जानती थी वही बताती रही। भर्राए हुए गले से वह बोली,"मेरे बेटे के शब्द एक ऐसे ईमानदार मजदूर के शब्द हैं जिसने अपनी आत्मा को बेचा नहीं है। ईमानदारी के शब्दों को आप उसकी निर्भीकता से पहचान सकते हैं···" इसी समय किसी सिपाही ने उसकी छाती पर जोर से घूसा मारा और वह बेंच पर गिर पड़ी। अब सिपाही भीड़ को पीछे धकेलने लगे थे। अपनी बची हुई शक्ति से पेला-गेया फिर बोलने लगी तो सिपाहियों ने उसे थप्पड़ और घूसों से मारना प्रारम्भ कर

दिया। उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया और उसके मुंह से रक्त आ गया। बहुत-से लोग सिपाहियों से कहने लगे : खबरदार जो उसे हाथ लगाया।'''वे हमारे दिमाग का तो खून नहीं कर सकते !

परन्तु पेलागेया पर थप्पड़ और घूंसे बरसते रहे। वह बोलती रही, "रक्त की नदियां भी बहा दो, तो सचाई उसमें नहीं डूब सकती!"'''तभी एक सिपाही उसकी गर्दन पकड़कर गला घोंटने लगा, फिर भी वह बोली, "कमबख्तो!'''"

मां अपने बेटे के पथ पर चलती हुई, उसके काम को आगे बढ़ाने के लिए प्रा न्योछावर कर रही थी।

गोर्की का यह उपन्यास विश्वविख्यात है। वर्ग-संघर्ष और दलितों की यातना इसमें बड़ी कलात्मकता के साथ दिखाया गया है। मां का चरित्र बहुत ममतामय, दृढ़ और उदात्त है। मजदूर वर्ग का ऐसा चित्रण गोर्की के अतिरि और कोई नहीं कर सका।

धरती माता
[द गुड अर्थ[1]]

बॅक, पर्ल एस० : अंग्रेजी उपन्यासकार पर्ल एस० बॅक का जन्म सन् १८९२ में वैस्ट वर्जीनिया में हुआ। चार मास की थीं, तब पिता चीन के चिनकियांग प्रांत में आ बसे; और बालिका पर्ल उसी वातावरण में पली। चीन में ही आपकी शिक्षा-दीक्षा हुई। अमरीका पर्ल में कोर्नल तथा रेंडाल्फमैकन से आपने उच्चशिक्षा की डिग्रियां प्राप्त कीं। फिर आप एक मिशनर बनकर चीन लौट गईं और वहीं अंग्रेजी पढ़ाने लगीं। नानकिंग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जे० लॉसिंग बॅक से आपने विवाह कर लिया। सन् १९२७ में जब चीन में दंगे हो गए तो पति-पत्नी बड़ी कठिनाई से वहां से बचकर निकल सके। तब आप अमरीका लौट आईं।

'द गुड अर्थ' (धरती माता) का प्रकाशन सन् १९३१ में हुआ। यह उपन्यास बहुत अधिक बिका। इसमें जापानी आक्रमण-काल तक के जीवन का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास पर श्रीमती बॅक को नोबल पुरस्कार भी मिल चुका है, और पुलिट्ज़र पुरस्कार भी। 'द गुड अर्थ' (धरती माता) संसार के विख्यात उपन्यासों में से एक है।

वांग लुग किसान था। उसके पिता ने उसके लिए वधू ढूंढ ही दी। वह ह्वांग के धनी घराने में एक दासी थी। वधू के लिए सौन्दर्य आवश्यक नहीं था, वह घर-गिरस्ती संभाल सके, बच्चों को जन्म दे सके, खेतों में काम कर सके, तन्दुरुस्त हो—यही देखना आवश्यक था। वांग लुंग ने जब अपनी पत्नी को उत्सुकता से देखा तो उसे संतोष हुआ कि उसकी पत्नी के चेहरे पर चेचक के दाग नहीं थे और उसको लुंठकटी भी नहीं कहा जा सकता था। वैसे उसे 'चोली' कहा जा सकता था।

वधू का नाम था ओ-लैन। वह लम्बी और मजबूत औरत थी; और नीला कोट और पजामा पहनती थी। मुंह जरा छोटा था, जिसपर नाक कुछ चपटी थी; आंखें काली थीं। वह बड़ी ईमानदारी से मेहनत करती थी। एक बार जब अकाल पड़ा था, तब दस साल की उम्र में, उसके माता-पिता उसका भरण-पोषण करने में असमर्थ हो गए थे, और तब उन्होंने ह्वांग के धनी घराने में उसे एक दासी के रूप में बेच दिया था।

पति-पत्नी में विशेष कोई बात नहीं हुई, क्योंकि ओ-लैन बात अधिक नहीं करती थी। वांग लुग उसे खेतों पर ले गया। वहीं निवासस्थान था; और वधू ने ही शादी की दावत का सब सामान तैयार कर दिया। वांग लुग के चाचा वहीं मेहमान के रूप में

---

1. The Good Earth (Pearl S. Buck)

उपस्थित हुए। वे बड़े मजाकिया तबियत के आदमी थे। बड़े चालाक थे और काम-धान के बारे में बिलकुल बेकार थे। चाचा का बेटा पन्द्रह बरस का था—उद्दंड और झगड़ालू। पड़ोसी चिंग के अतिरिक्त कुछ और भी किसान थे।

बहू ने ही रसोई से खाना तैयार करके वांग के हाथों दिया और वांग ने परोसा। नई बहू का सुहागरात के पहले सबके सामने जाना ठीक भी नहीं था। जब सब चले गए तो वांग ने अपने-आपसे कहा : यह औरत मेरी है; और अब मुझे इससे सम्बन्ध स्थापित करना ही होगा। तदुपरांत उसने बिना किसी हिचकिचाहट के अपने वस्त्र उतारे। वह भी विरोधहीन ही रही। वांग हंसा और उसके बाद वे पति-पत्नी बन ही गए। यों उनके जीवन का प्रारम्भ हुआ। अधिक बातचीत की कोई आवश्यकता नहीं हुई।

सुबह हो गई। वह गर्म पानी ले आई। उसने कुछ पानी वांग को दिया और कुछ उसके पिता को। वांग खेत पर चला गया। जब वह लौटा तो खाना तैयार मिला। वह लकड़ियाँ-ईंधन इकट्ठा कर लाती। दोपहर में वह बाहर चली जाती और खाद के लिए बड़ी सड़क पर जाते घोड़ों और खच्चरों की लीद अपनी डलियों में भर लाती।

एक दिन वह फावड़ा लिए खेत में आ गई। बोली : आज रात तक घर में कोई काम बाकी नहीं है; और वहीं कूड़ों में उसके साथ काम करने में जुट गई। धीरे-धीरे सूर्य अस्त हो गया; और जब वांग ने काम बंद करके देह को सीधा किया, उसने अपनी पत्नी की ओर देखा जो पसीने से तर थी और उसपर जगह-जगह भूरी मिट्टी लग गई थी। क्षण-भर उसे लगा जैसे उस मिट्टी और उसकी पत्नी की देह के रंग में कोई भेद नहीं था। बहुत ही बेतकल्लुफी से स्त्री ने कहा, "मैं गर्भवती हूं।"......इस तरह कई मास बीत गए।

एक दिन खेत में उसने वांग से कहा, "बच्चा पैदा होनेवाला है। तुम एक ताजा छिला हुआ नरकुल ले आओ, ताकि मैं बच्चे की नाल काट दूंगी।"

जब वांग घर लौटकर आया तब उसकी स्त्री खाना बना चुकी थी। दरवाजा जरा खुला हुआ था। उसने उसीसे नरकुल बढ़ा दिया। स्त्री ने उसे थाम लिया। उसके बाद वांग ने सुना वह भीतर कराह रही थी। फिर गर्म लहू की सी गंध आई। फिर एक कोमल रुदन सुनाई दिया।

वांग लुंग ने आवेश से पूछा, "क्या लड़का हुआ है ?'

ओ-लैन की धीमी-सी आवाज सुनाई दी, "हां, लड़का है !"

अगले दिन ही ओ-लैन उठ खड़ी हुई और उसने खाना पकाया। कुछ दिन बाद वह फिर खेतों में काम करने आ गई।

नया साल आया। दोनों ही गर्व से हवांग के धनी घराने में जा पहुंचे। घराने में बड़ी शाहखर्ची थी, जो दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी और अब बरबादी के लक्षण प्रकट होने लगे थे। जमीन बिक रही थी। एक टकड़ा वांग लुंग ने भी खरीद लिया।

वसन्त की हवा चलने लगी। ओ-लैन फिर से गर्भवती हो गई। शरद् ऋतु आने पर वह फिर घर चली गई, उसने फावड़ा खेत में ही छोड़ दिया। रात अभी झुकी नहीं थी, जब वह खेत में लौट आई और उसने सहज ही कहा, "एक लड़का और हो गया।"

इस वर्ष वांग लुंग ने ह्वांग के धनी घराने से कुछ और अधिक भूमि खरीदी।

दस महीने बीत गए। वांग लुंग का चाचा अब भी वैसा ही फोकटी था। वह रुपये उधार ले गया और वांग लुंग को देने पड़े। ओ-लैन के अबकी बार एक लड़की पैदा हुई। आकाश में काले कौए उड़ते नजर आए। यह सब अपशकुन थ, जिनका अर्थ था कि आनेवाले दिन अच्छे नहीं थे।

सूखा पड़ने लगा। खेत सूख चले। पर ओ-लैन फिर गर्भवती थी। फिर से चाचा कर्ज मांगने आ गया और वांग लुंग के पास अब रुपये नहीं थे। कुछ चावल थे तथा कुछ सेम और थोड़ा थे। दिन पर दिन यह भी कम होते जा रहे थे। लेकिन चाचा तब ही टूटा जब कुछ ले गया। वह इतना फोकटी था कि फिर मांगने लौट आया। पर अब वांग लुंग के पास कुछ भी नहीं बचा था। चाचा ने पड़ोसियों को भड़का दिया कि वांग लुंग ने अपने पास नाज छिपा रखा है, और ऐसे समय में भी मिल-बांटकर खाने से इनकार कर रहा है। भूखे पड़ोसी उत्तेजित हो गए। चाचा की बातों में पड़ोसी चिंग भी आ गया। भूख, भूख ने सबको व्याकुल कर दिया था। और तब सब भूखों ने उसके घर पर हमला कर दिया। परन्तु घर में सचमुच कुछ नहीं था। उन्होंने काफी सामान नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

ओ-लैन ने फिर एक शिशु को जन्म दिया। किन्तु जब वांग लुंग उसे देखने भीतर गया, धरती पर उसे एक अत्यन्त जर्जर, क्षीण, मृत देह दिखाई पड़ी।

अब कुछ भी शेष नहीं था। सब परिवार ने अपने काठ-कबाड़ को बेचा; और फिर वे रेल की ओर चल पड़े। अन्हवई से वे कियांगसू पहुंचे। वांग लुंग एक रिक्शा खींचने लगा। ओ-लैन और बच्चे पथ पर भीख मांगने लगे। ओ-लैन बच्चों को भीख मांगने की तरकीबें सिखाने लगी। वे पहले वांग लुंग के पिता को खिलाते, तब ही बाकी लोगों के पेट में कुछ जाता। वांग लुंग के बड़े बेटे ने मजबूरी में चोरी की। जब वांग लुंग को पता चला तो उसने उसे खूब मारा।

गरीबों में फौज की भर्ती चल पड़ी थी। दूर कहीं युद्ध हो रहा था। लोग जबरन भी पकड़े जाते थे। वांग लुंग डर गया और उसने दिन में रिक्शा चलाना छोड़ दिया। वह रात के अंधेरे में गाड़ियां ढोने लगा।

गरीबों का हाहाकार दिन पर दिन बढ़ता चला जा रहा था। विशाल प्राचीरों के भीतर धनी लोग और भी अधिक धनी होते चले जा रहे थे और बाहर भीड़ें भूखी मर रही थीं। अन्त में सहिष्णुता की सीमाएं टूट गईं। भूख के जादू ने भीड़ में हलचल भर दी और गरीबों ने धनिकों के भवनों पर आक्रमण कर दिया। उस भीड़ में वांग लुंग भी टूट पड़ा। और उसको मिला एक मोटा-सा डरपोक आदमी। प्राण-भय से उसने वांग लुंग को सोना दिया, ताकि वांगलुंग उसे जान से न मारे। सोना पाकर वांग लुंग लौट आया।

धन आते ही वे सब फिर घर लौट आए। एक रात वांग लुंग को लगा जैसे ओ-लैन के वक्ष के पास कुछ छिपा कर रखा गया था। उसने देखा। एक थैली थी, जिसमें रत्न भरे हुए थे। जब कियांगसू में भीड़ ने हमला किया था, तब एक भवन में कुछ ईंटें ढीली-सी नजर आई थीं। उन्हें सरकाने पर उसमें से यह थैली मिल गई थी।

वांग लुंग ने वे रत्न ले लिए। ओ-लैन ने उनसे दो मोती अपने मूक अनुनय द्वारा मांगे। वांग लुंग ने मोती उसके लिए छोड़ दिए।

कुक्कू हवांग के धनी घराने की चालाक दासी थी। और बाकी सब नौकर बिना तनख्वाह के भाग चुके थे, क्योंकि बड़ा घराना दिन पर दिन बरबादी की तरफ तेज़ी से बढ़ रहा था। वांग ने कुक्कू की मदद से हवांग घराने की जमीनें खरीद डालीं।

एक बार लूटने और कुछ न पाने पर पड़ोसी चिंग के मन में एक प्रकार की लज्जायुक्त ग्लानि भर गई थी। अब वह अकेला रह गया था। उसकी पत्नी मर चुकी थी। वांग ने उसे अपने खेतों की देखभाल करने के लिए रख लिया।

ओ-लैन के जुड़वां सन्तान हुई—एक लड़का, एक लड़की।

अब पता चला कि वांग लुंग की बड़ी लड़की गूंगी थी। सारे परिवार को दुख हुआ, किन्तु कोई उपाय नहीं था। वांग लुंग उसे 'बेचारी गावदू' कहता, परन्तु लड़की फिर भी न बोल पाती।

पांच वर्ष बीत गए। अब वांग लुंग एक धनी व्यक्ति था। किन्तु फिर भी वह अशिक्षित था। उसे यह बात अखरती थी। उसने अपने बड़े लड़के को पढ़ने भेज दिया। दो वर्ष और व्यतीत हो गए। बाढ़ें आईं, परन्तु उन्होंने सारे तूफानों और मुसीबतों का सामना किया। धन का तो अभाव ही न था।

एक दिन जबकि खेतों में पानी भरा था, काम बंद था, वांग को कुक्कू मिली। वह बड़ी चालाक और तर्रार। अब बड़े घराने में उसके लिए कोई काम नहीं रह गया था। वह वेश्याओं की दलाल हो गई थी। वह उसे फुसलाकर ले गई और उसने लोटस (कमल) नामक सुन्दरी से उसकी मुलाकात करा दी। लोटस उतनी युवती नहीं थी, किन्तु किसान ही तो था वांग। वह उसकी नज़ाकत और नखरों से फंस गया। उसने अपने शरीर में सुगन्धि लगाई। अपनी चुटिया काट डाली और आधुनिक बन गया। और तब उसने ओ-लैन पर निगाह डाली। वह घरेलू औरत! उसके पांव कितने बड़े और कुरूप थे! उसका पेट कैसा निकल आया था! ऐसी औरत को अब प्यार करना वांग के लिए असंभव था। ओ-लैन ने उसके कटे बाल देखे तो आतंक से थर्रा उठी। वांग को स्वयं अपने ऊपर झुंझलाहट थी कि वह उस स्त्री के प्रति अब किसी प्रकार के अनुराग का अनुभव नहीं करता था। उसने वह दोनों मोती भी ओ-लैन से ले लिए और लोटस को भेंट कर दिए। ओ-लैन ने इसे भी चुपचाप सह लिया।

वांग लुंग का चाचा लौट आया। वांग कुछ भी नहीं कह सका। समाज के नियमानुसार उसे अपने यहां टिकाने को वह बाध्य हो गया। उसकी मोटी औरत भी आ गई और उसका बेकार नालायक लड़का भी वहीं आ गया, जोकि वासना से विह्वल रहता था। चाची ने जब वांग में लोटस के प्रति ऐसी अनुरक्ति देखी तो उसने कुटनी का काम किया और वह लोटस को घर पर ही ले आई। इस रखैल के साथ घर में आ घुसी कुक्कू। ओ-लैन को एक गहरे विषाद ने घेर लिया किन्तु वह विरोध नहीं कर सकी।

वांग के वैभव ने भी उसे टोका नहीं। वह निरंतर उसी प्रकार उसके खेतों और घर में काम करती रही और वांग उधर लोटस के आंगन में रंगरेलियों में उलझा रहने

लगा।

ओ-लैन को लोटस से इतनी घृणा नहीं थी जितनी कुक्कू से थी, क्योंकि बड़े घराने में रहते समय कुक्कू ने ओ-लैन को पीटा था। वांग का वृद्ध पिता जब भी लोटस को देखता, चिल्ला उठता—'वेश्या! वेश्या!' बच्चे भी लोटस की ओर मंडराते-बढ़ते।

धीरे-धीरे बाढ़ का पानी उतर गया। वांग खेतों पर लौट गया और धरती माता को देखकर उसमें फिर से नई स्फूर्ति लौट आई। तब उसने लियू नामक व्यापारी की लड़की से अपने बड़े बेटे की शादी का प्रबन्ध कर दिया।

चाचा के परिवार की मांगें बढ़ती जा रही थीं। वे वांग को चूसे जा रहे थे। नशा अलग, खाना अलग। तंग आकर उसने चाहा कि चाचा को निकाल बाहर करे, पर तभी उसे पता चला कि इलाके में जगह-जगह डाके डालनेवाले लुटेरे चाचा के गिरोह के लोग थे। बल्कि चाचा की उपस्थिति के कारण ही अभी तक वह डाकुओं से बचा हुआ था। भय से वांग कांप उठा। उसने चाचा से कुछ भी कहना, अपनी मौत को निमंत्रण देना ही समझा।

इसके बाद एक नई मुसीबत आ खड़ी हुई। आकाश में टिड्डियां छाने लगीं। वांग अपनी सारी शक्ति लगाकर जुट गया। जगह-जगह गड्ढे खोदकर उनमें आग लगाई जाने लगी। धुएं की भीतें उठने लगीं और टिड्डियों से युद्ध होने लगा। अंत में मनुष्य ने विजय प्राप्त की।

अब वांग के बड़े लड़के ने दक्षिण जाना चाहा ताकि वह वहीं पढ़ सके, किन्तु वांग ने अस्वीकार कर दिया। इन्हीं दिनों उसे पता चला कि बड़े लड़के का कुछ अनुचित सम्बन्ध लोटस से होने को था। वांग क्रोध से पागल हो उठा। उसने बड़ी निर्दयता से पुत्र को पीटा और उसे दक्षिण भेज दिया। दूसरे लड़के को उसने लियू के पास रख दिया कि वह व्यापार का काम सीख सके। और उसने यह भी निश्चित कर दिया कि उसकी जुड़वां सन्तान वाली लड़की का किसी दिन भविष्य में लियू के दसवर्षीय पुत्र से विवाह हो।

अब वह ओ-लैन पर ध्यान देने लगा, किन्तु वह तभी बीमार पड़ गई। वसंत लगते ही ओ-लैन ने अपने बड़े बेटे और होने वाली वधू को बुलवाया। दावतों के साथ शादी हो गई। तब ओ-लैन का देहान्त हो गया। उस समय वांग ने अनुभव किया कि उसे वे दोनों मोती उससे नहीं छीनने चाहिए थे। वांग का वृद्ध पिता इस संसार से उठ गया और वह तथा ससुर की मनभावनी धरती में एक पहाड़ी पर कब्रें बना दी गईं।

समय की दौड़ में फिर बाढ़ और अकाल आ गए। इतने भयानक, जैसे पहले कभी नहीं आए थे। वांग ने एक दिन चुपचाप अपने चाचा और चाची को अपने विरुद्ध षड्यन्त्र रचते सुन लिया। वांग के बड़े बेटे ने सलाह दी कि दोनों को खत्म करने के लिए उन्हें अफीम की आदत लगा देना आवश्यक था। चाचा का बेटा भी मौजूद था और उसके सामने घर की औरतें भी आने से डरती थीं। यहां तक कि वांग की छोटी बेटी भी उसके सामने नहीं आती थी।

बंद रहा नहीं। इस दौरान कई लोगों ने अपनी [illegible] बेच डालीं। वांग के [illegible] खरीद ली थीं। पियर ब्लॉसम (सुगंध [illegible]) नामक लड़की उसने ओ-लान को भेंट में दी थी। किन्तु [illegible] जब वांग के चाचा के [illegible]। [illegible] वांग ने [illegible] के बीच [illegible] शांति किया [illegible]। वांग का दूसरा पुत्र [illegible] था [illegible]। वांग को अपने इस पुत्र की [illegible] हुआ। बड़े बेटे की [illegible] अपने [illegible], क्योंकि [illegible] बड़े भाई ने [illegible] था। [illegible] डरता था कि कहीं [illegible] होने के पहले ही वह सारी जायदाद को बरबाद न कर दे।

वांग के चाचा के बेटे ने भागे [illegible] और वह युद्ध में दूर देश चला गया।

वांग के बड़े बेटे का पुत्र पैदा हुआ। [illegible] और [illegible] थी। वांग को ओ-लान के मरने [illegible] की याद हो आई।

[illegible] बूढ़ा हो चला था। [illegible] उसकी शक्ति क्षीण हो गई और वांग को [illegible] दुखी करता हुआ वह [illegible] के लिए इस संसार को छोड़कर चला गया।

वांग अपना [illegible] जीवन [illegible], किन्तु उसके मन में शांति नहीं थी। उसका तीसरा बेटा जवान हो रहा था। वांग की इच्छा थी कि उसे ही खेतीबाड़ी देखे। किन्तु यह विद्रोह करने लगा। वांग ने उस पर एक मास्टर लगा दिया।

चार वर्ष में चार नाती, तीन नातिनें आईं और घर भर गया। वांग के मन को कुछ संतोष मिलने लगा। तभी उसका चाचा मर गया। चाची बड़े घर में अपनी अफीम लेकर आ गयी, किन्तु शीघ्र ही वह भी मर गई।

इन्हीं दिनों सैनिक आ गए और बड़े घर में ठहरे। चाचा का बेटा भी इन्हीं में था। आंगन डर से सूने हो गए और औरतें छिप गईं। पियर ब्लॉसम बड़ी हो गई थी। चाचा के बेटे ने उसे लेने की इच्छा प्रकट की, उधर वांग का तीसरा पुत्र भी उस पर मोहित था। लोटस भी उसे चाचा के बेटे को ही देना चाहती थी। किन्तु वांग ने लोटस की चिंता नहीं की। उसने पियर ब्लॉसम न चाचा के बेटे को दी, न अपने तीसरे बेटे को। तीसरा बेटा क्रान्तिकारियों में जा मिला और घर छोड़ गया, क्योंकि सत्तर वर्ष की अवस्था में वांग ने सत्रह वर्षीय उस पियर ब्लॉसम का स्वीकार कर लिया था, जोकि अपनी इच्छा से उसके पास आ गई थी।

यद्यपि वांग के पुत्र अपने बाप का आदर करते थे, परन्तु वांग रहता था अपनी पियर ब्लॉसम और अपनी गूंगी लड़की 'बेचारी गावदू' के साथ ही। वह अपने एकांत को नहीं छोड़ता था। कुछ दिन बाद वांग अपने पुराने घर में लौट आया। पियर ब्लॉसम ने प्रतिज्ञा की वह वांग के बाद सदा ही मुस्कराने वाली गूंगी लड़की 'बेचारी गावदू' की रक्षा तथा सेवा किया करेगी।

वांग लुंग वृद्ध हो गया था। एक दिन वह कूड़ों के बीच ठोकर खाकर गिर पड़ा। [illegible] मरने के बाद जमीन बेच देने की सलाह बना रहे थे। वांग लुंग के असह्य था। उसे पुराने दिन याद आए जब हवांग के धनी घराने ने धरती से

संबंध तोड़ लिए थे और बरबाद हो गया था। वांग लुंग क्रोध से कांप उठा। तब उसके पुत्रों ने उसे आश्वासन दिया कि वे धरती को नहीं बेचेंगे। किंतु वृद्ध वांग लुंग उनके हास्य में व्यंग्य नहीं देख सका।

और एक दिन वृद्ध वांग लुंग सदा के लिए चला गया।

प्रस्तुत उपन्यास में चीन के किसानों के जीवन का चित्रण किया गया है। लेखिका का चीन से बहुत ही गहरा परिचय है। पर्ल बक ने और भी उपन्यासों में चीन का वर्णन किया है। ओ-लॅन के रूप में उसने पितृसत्ता का, चीन की सहिष्णु नारी का बड़ा ही मार्मिक चित्रण उपस्थित किया है। वांग-लुंग के चरित्र में धन और उसके प्रभाव का अच्छा परिचय मिलता है। इसमें चीन की तीन पीढ़ियों की विभिन्न विचारधारा का बहुत ही अच्छा वर्णन है। इस उपन्यास की गाथा एक दीर्घ कालखंड को अपने में समेट लेती है। इसमें चीन के देवी-देवता और अनेक निम्न तथा धनी लोगों के बड़े ही सहज चित्र लेखिका ने उपस्थित किए हैं। इस उपन्यास को यदि एक महान गाथा भी कहा जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास

मेरा पहला प्यार
[माई फर्स्ट लव[1]]

तुर्गनेव, ईवान सर्जियेविच : रूसी लेखक ईवान सर्जियेविच तुर्गनेव का जन्म ओरेल में २८ अक्तूबर, १८१८ को हुआ था और आपकी मृत्यु १८८३ में हुई। आप रूस के एक महान उपन्यासकार थे। मास्को और बर्लिन में आपकी शिक्षा हुई थी। आपने कहानियां तथा नाटक भी लिखे हैं। आपकी भाषा बहुत अच्छी थी। दृश्य-चित्रण में आप बहुत ही कुशल थे। आपकी रचनाओं से रूस का जार इतना प्रभावित हो गया था कि उसने १८६१ में रूस से दास-प्रथा हटा दी थी, क्योंकि आपने खेतिहर दासों के करुणा-भरे दुःखी जीवन का चित्रण किया था।

'मेरा पहला प्यार' ('माई फर्स्ट लव' अंग्रेजी नाम) आपके प्रसिद्ध लघु उपन्यासों में गिना जाता है।

यह व्लादीमीर पेत्रोविच द्वारा कही हुई उसीकी कहानी है। उन दिनों व्लादीमीर पेत्रोविच की आयु सोलह वर्ष थी और वह अपने माता-पिता के साथ मास्को नगर से बाहर नैसकुशनी बाग के पास देहात में एक किराये के मकान में रहता था। वह यूनिवर्सिटी की परीक्षा की तैयारी भी कर रहा था। उसकी माता मारिया निकोलाइवना उसके पिता प्योत्र वेसलेविच से दस वर्ष बड़ी थी। पिता की आयु चालीस से ऊपर हो चुकी थी। मां ता सदैव परेशान और उदास रहा करती थी, वह ईर्ष्याग्रस्त भी थी। पिता प्योत्र वेसीलेविच सुन्दर और युवक लगते थे। मारिया निकोलाइवना से उन्होंने धन के लोभ में ही विवाह किया था। दोनों ही व्लादीमीर के प्रति उदासीन रहते थे, वैसे वह उनका इकलौता लड़का था। माता-पिता से छूट मिलने के कारण व्लादीमीर नैसकुशनी के बागों और मैदानों में घूमा करता और अपने टट्टू पर सवार होकर दूर-दूर तक चक्कर लगाया करता। कुछ दिन पश्चात् ही उसकी दिनचर्या में विचित्र परिवर्तन आ गया। उनके पड़ोस के खाली मकान में प्रिंसेज जैसेकीना नामक महिला रहने लगी। वह बस [illegible]। उसके पास न तो अपनी गाड़ी थी और न ही अच्छा फर्नीचर। [illegible] को अपने पड़ोसियों के सम्बन्ध में मालूम हुआ तो उस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। एक दिन वह बन्दूक

[1] [illegible]v)—इस उपन्यास का अनुवाद 'मेरा पहला प्यार' [illegible] शिवदानसिंह चौहान एवं श्रीमती विजय चौहान ;

मेरा पहला प्यार

[माई फर्स्ट लव[1]]

तुर्गनेव, ईवान सर्जियेविच : रूसी लेखक ईवान सर्जियेविच तुर्गनेव का जन्म ओरेल में २८ अक्तूबर, १८१८ को हुआ था और आपकी मृत्यु १८८३ में हुई। आप रूस के एक महान उपन्यासकार थे। मास्को और बर्लिन में आपकी शिक्षा हुई थी। आपने कहानियां तथा नाटक भी लिखे हैं। आपकी भाषा बहुत अच्छी थी। दृश्य-चित्रण में आप बहुत ही कुशल थे। आपकी रचनाओं से रूस का जार इतना प्रभावित हो गया था कि उसने १८६१ में रूस से दास-प्रथा हटा दी थी, क्योंकि आपने खेतिहर दासों के करुणा-भरे दुःखी जीवन का चित्रण किया था।

'मेरा पहला प्यार' ('माई फर्स्ट लव' अंग्रेजी नाम) आपके प्रसिद्ध लघु उपन्यासों में गिना जाता है।

यह ब्लादीमीर पेत्रोविच द्वारा कही हुई उसीकी कहानी है। उन दिनों ब्लादीमीर पेत्रोविच की आयु सोलह वर्ष थी और वह अपने माता-पिता के साथ मास्को नगर से बाहर नैसकुशनी बाग के पास देहात में एक किराये के मकान में रहता था। वह यूनिवर्सिटी की परीक्षा की तैयारी भी कर रहा था। उसकी माता मारिया निकोलाइवना उसके पिता प्योत्र वेसलेविच से दस वर्ष बड़ी थी। पिता की आयु चालीस से ऊपर हो चुकी थी। मां ता सदैव परेशान और उदास रहा करती थी, वह ईर्ष्याग्रस्त भी थी। पिता प्योत्र वेसीलेविच सुन्दर और युवक लगते थे। मारिया निकोलाइवना से उन्होंने धन के लोभ से ही विवाह किया था। दोनों ही ब्लादीमीर के प्रति उदासीन रहते थे, वैसे वह उनका इकलौता लड़का था। माता-पिता से छूट मिलने के कारण ब्लादीमीर नैसकुशनी के बागों और मैदानों में घूमा करता और अपने टट्टू पर सवार होकर दूर-दूर तक चक्कर लगाया करता। कुछ दिन पश्चात् ही उसकी दिनचर्या में विचित्र परिवर्तन आ गया। उनके पड़ोस के खाली मकान में प्रिंसेज जैसेकीना नामक महिला रहने लगी। वह बस नाम-मात्र की प्रिंसेज थी। उसके पास न तो अपनी गाड़ी थी और न ही अच्छा फर्नीचर। फिर भी जब मारिया निकोलाइवना को अपने पड़ोसियों के सम्बन्ध में मालूम हुआ तो वह खुश हुई। ब्लादीमीर ने उस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। एक दिन वह बन्दूक

---

१. My First Love (Ivan Turgenev)—इस उपन्यास का अनुवाद 'मेरा पहला प्यार' नाम से हिन्दी में छप चुका है ; अनुवादक—शिवदानसिंह चौहान एवं श्रीमती विजय चौहान ; [illegible] एन्ड, दिल्ली।

लेकर कौओं के शिकार को गया तो बाग में उसने प्रिंसेज जैसेकीना की लड़की जिनेदा को देखा। वह दुबली-पतली, लम्बी लड़की गुलाबी रंग की धारीदार पोशाक पहने और सिर पर सफेद रूमाल बांधे घर के छोटे बाग के बीच खड़ी हुई थी। उसके आसपास चार युवक खड़े थे जिनके सिर पर वह बारी-बारी से फूलों से प्रहार कर रही थी। लड़की देखने में शोख, स्नेहपूर्ण और आकर्षक थी। ब्लादीमीर ने जिनेदा को देखा तो देखता ही रह गया। उस दिन उसे इतनी प्रसन्नता हुई कि वह सोते समय तक जिनेदा के बारे में सोचता रहा। दूसरे दिन उठते ही वह किसी तरह भी पड़ोसियों से परिचय करने का ढंग सोचने लगा। तभी प्रिंसेज जैसेकीना का एक पत्र उसकी मां को मिला जिसमें कुछ व्यक्तियों से सिफारिश करने की प्रार्थना की गई थी और प्रिंसेज ने मां से मिलने की इच्छा भी प्रकट की थी। मारिया निकोलाइवना ने ब्लादीमीर को प्रिंसेज के घर यह कहने भेजा कि वह उनकी सहायता करने को तैयार है और बारह से एक बजे के बीच प्रिंसेज उनसे मिल लें। ब्लादीमीर परिचय का इतना अच्छा अवसर छोड़ना नहीं चाहता था और वह तुरन्त प्रिंसेज के घर चला गया। प्रिंसेज जैसेकीना को ब्लादीमीर ने अपनी मां का संदेश कह दिया। तब उन्होंने जिनेदा से उसका परिचय कराया। जैसेकीना की आयु पचास से ऊपर थी और वह पुरानी हरे रंग की पोशाक पहने थी जिससे उनकी विपन्नता का पता चलता था। जिनेदा ब्लादीमीर को अपने कमरे में ले गई और बड़ी बेतकल्लुफी से उससे बातें करने लगी। तभी उसने यह भी बताया कि उसकी आयु इक्कीस वर्ष की है। ब्लादीमीर उसके व्यवहार से प्रसन्न था। हां, एक बात अवश्य थी कि जिनेदा उसे अब भी बच्चा समझती थी। उसके कई प्रेमी थे जो उसकी कृपादृष्टि प्राप्त करने के लिए कुछ भी कर सकते थे। एक घुड़सवार सैनिक बोलोवजोरोव उस समय जिनेदा के लिए एक चितकबरा बिल्ली का बच्चा लाया जब कि ब्लादीमीर उसके घर ही था। जिनेदा बिल्ली के बच्चे को देख ही रही थी कि तभी ब्लादीमीर के घर से उसे बुलाने के लिए नौकर आ गया और वह घर चला गया। घर से आए उसे एक घंटा हो गया था।

प्रिंसेज जैसेकीना ब्लादीमीर की मां से मिलने आईं परन्तु वे मारिया निकोलाइवना को पसन्द नहीं आईं। प्रिंसेज कई तो मुकदमों में फंसी हुई थी। फिर भी उसने प्रिंसेज और उसकी लड़की को डिनर पर आमन्त्रित किया।

दूसरे दिन, प्रिंसेज जैसेकीना और जिनेदा उनके यहां डिनर पर आईं। प्रिंसेज के फूहड़पन से तो सभी परेशान हो गए किन्तु जिनेदा के व्यवहार से शिष्टता झलकती थी। शिष्टता के साथ ही जिनेदा के व्यवहार में अहंकार मिला हुआ था जिससे ब्लादीमीर की मां चिढ़ गई किन्तु उसके पिता ने उसका स्वागत किया। ब्लादीमीर के पिता रह-रहकर जिनेदा की तरफ देख रहे थे। जिनेदा और ब्लादीमीर के पिता फ्रेंच में बात कर रहे थे। जिनेदा का फ्रेंच उच्चारण बहुत शुद्ध था। जाते समय जिनेदा ब्लादीमीर के कान में चुपचाप आठ बजे घर आने को कह गई।

शाम को आठ बजे ब्लादीमीर सज-धजकर जिनेदा के घर गया। कमरे में जिनेदा के साथ उसके पांच प्रेमी भी थे। काउण्ट मेलेवस्की, डाक्टर लूइस, कवि मैदेनोव, रिटायर्ड कैप्टन निमत्सकी और उस दिनवाला घुड़सवार सैनिक बेलोवजोरोव। सबसे

ने ब्लादीमीर का परिचय कराया। वह एक तो पहले ही घबराया हुआ था ऊपर
के खेल को देखकर और चौंका। यह 'फोरफीट' खेल रहे थे। विचित्र खेल था। एक
र एक मर्दाना हैट लिए जिनेदा खड़ी थी और हैट में पांचों व्यक्तियों के लिए पांच
र्चीं। जिसकी पर्ची में 'चुम्बन' लिखा होता वही जिनेदा के हाथ का चुम्बन लेता
पने-आपको भाग्यशाली समझता। ब्लादीमीर के नाम की पर्ची उसमें डाल दी गई
ग्य की बात कि ब्लादीमीर के उठाने पर चुम्बनवाली पर्ची निकली। परन्तु
ट के मारे उससे तो जिनेदा के हाथ का ठीक से चुम्बन भी नहीं लिया गया। इसके
इसी तरह का दूसरा खेल खेला गया जिसमें ब्लादीमीर और जिनेदा के सिर एक
से बांध दिए गए। जिनेदा से अब उसे मन की बात कहने को कहा गया। जिनेदा
साँसों का स्पर्श और और उसके सुवासित केशों की चुभन ब्लादीमीर को उत्तेजित
थी। उसके सारे शरीर में सनसनी-सी फैल गई थी। उससे कुछ भी कहते नहीं
फुसफुसाकर जिनेदा ने कहा, "कहो क्या कहते हो?" हंसकर, लज्जा के मारे
ीर ने अपना मुह दूसरी ओर फेर लिया। और भी तरह-तरह के खेल खेले गए
शाम ब्लादीमीर ने बड़े उल्लास मे बिताई, सोने समय भी उसे जिनेदा याद
ही। दूसरे दिन सुबह मारिया निकोलाइवना ने उसे प्रिंसेज के घर जाने के लिए
र पढ़ने-लिखने को कहा। परन्तु पिता प्योत्र वेसीलेविच उसे बांह पकड़कर बाग
और बड़े मज़े मे प्रिंसेज के घर का हाल सुनने लगे। ब्लादीमीर ने उमग के साथ
घटना उन्हें सुना दी। उसके पिता कभी-कभी ही उससे लाड़ करते थे और उसकी
में कभी बाधा नहीं डालते थे। परन्तु फिर भी वे उससे दूर-दूर रहते थे। जब
र जिनेदा की तारीफ कर रहा था तब वे मन्द-मन्द मुस्कराते रहे। पूरी बात सुनने
प्रिंसेज जैसेकिना के घर गए और वहीं से शहर की ओर चले गए।
कुछ दिन में जिनेदा को ब्लादीमीर के प्रेम की बात विदित हो गई, परन्तु उसके
प्रेमी थे जिनसे वह अपना मनोरंजन करती थी। सभी उसका प्रेम पाने के लिए
रने को तैयार रहते। सैनिक बेलोवज़ोरोव स्वस्थ सुन्दर युवक था। वह जिनेदा
छ भी कर सकता था। डाक्टर लूशन मसखरा था और सामने भी जिनेदा को
देया करता था। मैदेनोव उसकी प्रशंसा मे कविताएं सुनाया करता। मेलेवस्की
र्तीला और चालाक था। वह जिनेदा की चापलूसी किया करता। जिनेदा इनमें
ो प्रेम नहीं करती थी, फिर भी इन सबके साथ हंसती-खेलती थी। एक बार तो
ादीमीर से कहा भी कि वह इनमे से किसीसे प्यार नही करती। ब्लादीमीर
नेदा के घर के चक्कर काटने लगा, परन्तु मां के डर से वह अपनी सब गति-
को गुप्त रखता था। मां प्रिंसेज और उसकी बेटी जिनेदा को पसन्द नही करती
दा कभी तो ब्लादीमीर के साथ खेलती और उसे उकसाती और कभी उसका
करती। ऐसी स्थिति मे वह बाग की दीवार पर जाकर चुपचाप बैठ जाता।
उसने देखा कि जिनेदा बाग में बैठी है और उसके चेहरे पर अवसाद की छाया
ी है। जब उसने कारण पूछा तो वह उलटकर ब्लादीमीर से ही पूछने लगी कि
ार करता है न! जब उसने उत्तर नहीं दिया तो वह स्वयं बोली कि वह इस

बात को जानती है। वह उस दिन बहुत ही दुःखी थी। ब्लादीमीर से उसने 'ज्योर्जिया की पहाड़ियों की कविता' सुनी, और फिर उसे पकड़कर अपने घर ले गई। उसी दिन उसे इस बात का पता चला कि जिनेदा किसी और व्यक्ति से प्रेम करती है और वह छुपकर जिनेदा की गतिविधियों को देखने लगा।

कुछ ही दिनों मे जिनेदा के सब प्रेमियों को उसके प्रेम की बात मालूम हो गई परन्तु वह किस व्यक्ति से प्रेम करती है यह सम्भवतः किसीको विदित नहीं था। तूइस ने तो ब्लादीमीर से कहा भी कि उसे अपनी पढ़ाई में मन लगाना चाहिए और जिनेदा के घर से दूर ही रहना चाहिए, परन्तु ब्लादीमीर पर इस उपदेश का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसी दिन शाम को जिनेदा के घर उसके पांचों प्रेमी एकत्र हुए और ब्लादीमीर भी वहां था। जिनेदा ने उनसे पूछा कि जब क्लियोपेट्रा बजरे में चढ़कर एण्टोनी से मिलने गई थी तब एण्टोनी की आयु क्या थी। तूइस के चालीस से ऊपर बताने पर उसने तूइस को घूरकर देखा था। ब्लादीमीर तभी समझ गया था कि जिनेदा किसीसे प्रेम तो अवश्य करती है परन्तु वह है कौन, यह पता नहीं चलता। धीरे-धीरे दिन बीतते गए और जिनेदा बदलती चली गई। वह दुःखी और उदास रहती। पहले जैसी मुस्कान कभी ही उसके होंठों पर दिखाई देती, तब भी लगता कि वह कुछ छुपा रही है। वह रहस्यमयी होती चली गई। ब्लादीमीर उन दिनों जर्जर हॉट हाउस की चौदह फुट ऊंची दीवार पर एकांत मे बैठा रहता। एक दिन जब वह इसी तरह दीवार पर बैठा था तब नीचे सड़क पर जिनेदा जा रही थी। उसे दीवार पर खड़ा देखकर वह खड़ी हो गई और बोली, "तुम सचमुच मुझे प्यार करते हो तो सड़क पर कूदकर दिखाओ।" जिनेदा का कहना था कि ब्लादीमीर कूद पड़ा और गिरते ही मूर्च्छित हो गया। मूर्च्छा क्षण-भर के लिए आई थी परन्तु जिनेदा ने उसके चहरे पर चुम्बनों की झड़ी लगा दी और चिन्तित हो उठी। जब ब्लादीमीर उठ बैठा तो वह वहां से चली गई। इन्हीं छोटी-छोटी घटनाओं ने ब्लादीमीर के हृदय में प्रेम की आग लगा दी थी। जिनेदा का सम्मोहन ठुकराना उसकी शक्ति से परे था। अगले ही दिन जिनेदा ने बेलोवजोरोव से सवारी के लिए एक घोड़ा लाने को कहा। उसने दूसरे दिन घोड़ा ला दिया। दूसरे दिन ही जब ब्लादीमीर सवेरे-सवेरे उठकर नगर के बाहर घूमने निकल गया तो उसे घोड़े पर सवार उसके पिता और जिनेदा मिले। उनके पीछे बेलोवजोरेव भी था। उसके पिता उसे देखकर अपना घोड़ा जिनेदा के घोड़े से दूर हटा ले गए। इस दिन के पश्चात् पांच-छः दिन तक जिनेदा से ब्लादीमीर मिल नहीं सका। जिनेदा इन दिनों उससे दूर-दूर रहने लगी थी।

कुछ दिनों बाद जब अचानक बाग मे जिनेदा से सामना हुआ तो ब्लादीमीर मुंह फेरकर जाने लगा परन्तु जिनेदा ने उसे रोक लिया। बातों ही बातों में जिनेदा ने उससे कह दिया कि वह उससे बड़ी है और उसकी मौसी हो सकती है या बड़ी बहन। और वह उसके लिए एक बच्चा ही है।" अब वह पहले से अधिक नम्र और शांत हो गई थी। शालीनता उसकी आकृति पर झलकती थी। जिनेदा ने यह भी कहा कि वैसे वह ब्लादीमीर को बहुत चाहती है।

पहले की तरह एक दिन जिनेदा के घर जब सभी एकत्र थे तो जिनेदा एक नया

खेल खेलने लगी। उसने सभी से कहा कि हर कोई अपना देखा हुआ कोई सपना सुनाए। यह सुनकर पहले की तरह शोर मचना बंद हो गया और उछल-कूद भी थम गई। मेदेनोव ने अपना लम्बा सपना सुनाया। इसके बाद स्वयं जिनेदा ने अपनी कल्पना सुनाई। एक महारानी द्वारा रात में पार्क के फव्वारे के पास अपने प्रेमी की प्रतीक्षा की कहानी सुनकर सभीके माथे ठनक गए। काउण्ट मेलेवस्की ने तो ब्लादीमीर से दूसरे दिन कहा भी कि उसे रात-दिन जिनेदा की गतिविधियों को देखना चाहिए। इन्हीं दिनों काउण्ट चापलूसी करके ब्लादीमीर की मां का कृपापात्र बन गया था, परन्तु उसके पिता उसे पसन्द नहीं करते थे। जब मेलेवस्की ने ब्लादीमीर से 'रात, पार्क और फव्वारा' याद रखने को कहा तो वह जिनेदा के अज्ञात प्रेमी से बदला लेने को तैयार हो गया। रात को बारह बजे अपना चाकू लेकर ब्लादीमीर बाग में जा पहुंचा। चारों ओर सन्नाटा था। एक घंटे तक प्रतीक्षा करने के बाद भी उसे कोई दिखाई नहीं दिया। वह अपने-आप पर झुंझलाने लगा था कि उसे दरवाज़ा खुलने की आवाज़ और किसीके पैरों की आहट सुनाई दी। उसने चाकू खोलकर हाथ में ले लिया। आनेवाला उसके निकट आ रहा था। ब्लादीमीर ने देखा कि वह किसी पुरुष की आकृति थी परन्तु पहचानते ही वह ज़मीन पर दुबककर बैठ गया, भय से चाकू घास पर गिर पड़ा। वे उसके पिता थे। उन्होंने गहरे रंगों का एक लबादा ओढ़ रखा था और हैट चेहरे तक झुका रखा था। जब उसके पिता उसके पास से चले गए तो वह भी कुछ देर बाद अपने कमरे में चला आया। पिता के जाने के कुछ देर बाद ही उसने जिनेदा की खिड़की पर परदे गिरते देखे थे। रह-रहकर उसके हृदय में आशंकाएं उठ रही थीं। सत्य उसके सामने था, परन्तु स्वीकार करने का साहस उसमें नहीं था।

दूसरे दिन उठते ही उसने अनुभव किया कि एक दुःखदायी व्याकुलता, गहन उदासी उसपर छा रही थी। वह जिनेदा को सब कुछ स्पष्ट रूप से बता देने के लिए गया भी, परन्तु उसके सामने पहुंचकर उसका साहस जाता रहा। उसी दिन बूढ़ी प्रिंसेज़ का बारह साल का लड़का वोलोद्या पीटर्सबर्ग से आया था। वह वहां सैनिक स्कूल में पढ़ता था। जिनेदा ने ब्लादीमीर से वोलोद्या को सैर करा लाने के लिए कहा और ब्लादीमीर उसके साथ-साथ पार्क में चला गया। उसी शाम ब्लादीमीर बाग के एक एकांत कोने में बैठा था तब जिनेदा वहां आई। जब जिनेदा ने उससे उदासी का कारण पूछा तो वह उसकी बांहों में फूट-फूटकर रोने लगा। जिनेदा की सांत्वना पर भी जब उसके आंसू नहीं रुके तो वह घबरा उठी। कई बार पूछने पर उसने कह ही दिया, "मैं सब कुछ जानता हूं। तुमने मेरी भावनाओं से क्यों खिलवाड़ किया? तुम्हें मेरे प्यार की आखिर क्या ज़रूरत थी?" जिनेदा ने उसे समझाया और मोहक दृष्टि से देखा। वह सब कुछ भूल गया।

एक दिन ब्लादीमीर के माता-पिता में झगड़ा हो गया और सबने शहर चलने की तैयारियां शुरू कर दीं। यह झगड़ा एक पत्र के कारण हुआ जिसे मेलेवस्की ने भेजा था। पत्र में किसीका नाम नहीं था, परन्तु उसमें प्योत्र वेसीलेविच के जिनेदा के साथ सम्बन्ध की बात लिखी थी। उसी शाम वेसीलेविच ने मेलेवस्की को अपने घर से निकाल दिया। ब्लादीमीर को उनके नौकर फिलिप ने बताया था कि वेसीलेविच ने प्रिंसेज़ को कोई

प्रॉमिसरी नोट दिया था और मारिया निकोलायवना ने वेसीलेविच से यह भी कहा कि वे जिनेदा से मेल-जोल बढ़ा रहे थे और यह उनके प्रति बेवफाई थी। मारिया निको-लायवना की इन बातों पर वेसीलेविच कुपित हो गए थे और झगड़ा बढ़ गया था। फिलिप ने तो ब्लादीमीर को साफ-साफ कह दिया कि उसके पिता का जिनेदा से ऐसा ही सम्बन्ध था। ब्लादीमीर को इस घटना से बहुत धक्का लगा था। जिस दिन ब्लादीमीर का परि-वार शहर जा रहा था वह प्रिंसेस के घर गया। जिनेदा से जब उसने 'अलविदा' कहा तो वह बोली, "सचमुच मैं वैसी नहीं हूं। मैं जानती हूं कि मेरे बारे में तुम्हारी राय अच्छी नहीं है।"

ब्लादीमीर ने कहा, "विश्वास करो जिनेदा, तुमने चाहे जो भी किया हो, मुझे कितना ही क्यों न सताया हो, मैं जिन्दगी के आखिरी दम तक तुम्हें प्यार करता रहूंगा और तुम्हारी पूजा करता रहूंगा!" यह सुनकर जिनेदा ने ब्लादीमीर की गर्दन में बांहें डालकर उसे चूम लिया था। शहर जाने पर एक दिन ब्लादीमीर की मुलाकात लूशिन से हुई जिसने बताया कि उसे खांसने की बीमारी है और बेलोवजोरोव काकेशस चला गया है। लूशिन ने वहां भी उसे उपदेश दिया कि उसे साधारण जीवन बिताना चाहिए।

वेसीलेविच को प्रतिदिन घुड़सवारी करने की आदत थी। एक दिन ब्लादीमीर भी उनके साथ अपने टट्टू पर बैठकर घूमने चला गया। उसके पिता वेसीलेविच का घोड़ा 'इलैक्ट्रिक' बड़ा बिगड़ैल घोड़ा था और बहुत तेज दौड़ता था। ब्लादीमीर बड़ी कठिनाई से उसके साथ अपने टट्टू को ले जा रहा था। दूर-दूर तक सवारी करने के पश्चात् वे घोड़े कुदाते हुए नदी के किनारे-किनारे चलने लगे। एक स्थान पर बल्लियों का ढेर था वहां ब्लादीमीर के पिता घोड़े से उतर गए और लगाम उसके हाथ में देकर नुक्कड़ की एक तंग गली में चले गए। जब उसे दोनों घोड़ों की लगाम पकड़कर चहलकदमी करते काफी देर हो गई तो वह उसी गली की ओर चल चल पड़ा जिसमें वेसीलेविच गए थे। एक मोड़ मुड़ने के बाद चालीस कदम की दूरी पर एक छोटे-से लकड़ी के मकान की खिड़की खुली हुई थी जिसपर उसके पिता कुहनियां टिकाए खड़े थे। खिड़की के पर्दों के उस तरफ जिनेदा खड़ी थी। देखते ही ब्लादीमीर सन्न रह गया। पिता के भय से वह चलने ही वाला था कि किसी अज्ञात आकर्षण से वहीं खड़ा रहा। उसे लगा कि वेसीलेविच किसी बात बात के लिए बार-बार आग्रह कर रहे थे और जिनेदा के होंठों पर हठीली मुस्कान थी। जिनेदा ने फिर अपनी बांह आगे कर दी और वेसीलेविच ने घुड़सवारी का चाबुक जिनेदा की नंगी बांहों पर सन्न से जमा दिया। जिनेदा चौंक पड़ी। उसने वेसी-लेविच की ओर देखा और बांह पर पड़े लाल दाग को चूमने लगी। ब्लादीमीर के पिता चाबुक एक ओर फेंककर घर के भीतर चले गए। ब्लादीमीर फिर से घोड़ों को लिए नदी-किनारे आ गया। अब तो छुपाने को कुछ रह ही नहीं गया था। जिनेदा उसके पिता की प्रेयसी थी। कुछ देर बाद ही उसके पिता आ गए और वे घोड़े दौड़ाते घर चले आए। इस घटना के छः महीने बाद ही वेसीलेविच की लकवे से मृत्यु हो गई। उसी दिन उन्होंने अपने बेटे ब्लादीमीर को फ्रेंच में पत्र लिखना शुरू किया था, "मेरे बेटे! औरत के प्यार से सावधान रहना, उस खुशी से, उस जहर से…"

तीन-चार वर्ष बाद यूनिवर्सिटी से डिग्री लेने के पश्चात् भी ब्लादीमीर ने अभी कोई काम प्रारम्भ नहीं किया था। उन्हीं दिनों एक शाम थियेटर में उसकी भेंट मैदेनोव से हो गई। उसने विवाह कर लिया था और अब वह किसी सरकारी दफ्तर में नौकर भी था। मैदेनोव ने उसे बताया कि जिनेदा ने दौलस्की नामक किसी धनी व्यक्ति से विवाह कर लिया था और वह 'मादाम दौनस्काया' कहलाती थी। मैदेनोव ने उसे जिनेदा का 'डेमुथ होटल' का पता भी दिया। दो सप्ताह तक सोचकर भी ब्लादीमीर डेमुथ होटल नहीं जा सका। जब एक दिन वह जिनेदा से मिलने डेमुथ होटल पहुंचा तो उसे मालूम हुआ कि चार दिन पहले ही वह प्रसव में मर गई। ब्लादीमीर फटी-फटी आखों से होटल के उस चौकीदार को देखने लगा जिसने उसे जिनेदा की मृत्यु का समाचार सुनाया था। फिर वह चुपचाप होटल से सड़क पर आ गया और रास्ते पर चल पड़ा। उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। केवल अतीत की स्मृतियां उसके मस्तिष्क में भडरा रही थी।···

इन बातों को वर्षों बीत गए, परन्तु ब्लादीमीर पेत्रोविच जिनेदा के साथ गुज़रे हुए दिनों की स्मृति को जीवन की सबसे ज्वलत और अनमोल वस्तु मानता था।

प्रेम का अनेक रूप से लेखक ने यहां चित्रण किया है। हृदय की जिन गहराइयों को यहां दिखाया गया है, वे हमारे जीवन पर आज भी प्रभाव डाल सकने में समर्थ हैं। तुर्गनेव ने केवल कथा पर अधिक बल नहीं दिया है, वरन् उसने अन्तरात्मा को प्रतिबिंबित किया है।

परिवार और बन्धु

[द ब्रदर्स करामज़ोव[1]]

दॉस्तोएवस्की, फ्योदोर : रूसी लेखक फ्योदोर दॉस्तोएवस्की का जन्म मास्को में २० अक्तूबर, १८२१ को हुआ था। आपके जीवन में बड़े उतार-चढ़ाव आए। आपको प्रारंभ में सेना तथा इंजीनियरी के स्कूलों में शिक्षा दी गई। १८४४ में आपने साहित्य-सेवा के लिए सेना की नौकरी छोड़ दी। आप फिर साम्यवादी विचारधारा के संपर्क में आ गए। आपको १८४६ में गिरफ्तार कर लिया गया और चार वर्ष के लिए साइबेरिया भेज दिया गया। फिर कुछ दिन को आप सेना में आ गए। कुछ दिन पत्रकारिता की और कुछ दिन अपने कर्जों के बोझ से बचने के लिए आप विदेश भाग गए। बाद में आप उदार विचारधारा के संपादक कहलाए। आपकी मृत्यु २८ जनवरी, १८८१ को हुई। आपने विचित्र मानसिक संघर्षों का चित्रण करनेवाले उपन्यासों का सृजन किया है।

'द ब्रदर्स करामज़ोव' (परिवार और बन्धु) अपनी मूल भाषा रूसी में १८८० ई० में प्रकाशित हुआ। इसने पर्याप्त ख्याति अर्जित की है।

"ईवान ! मेरे बेटे, अगर तुम चर्माश्नेया जाकर मेरी वह जायदाद बेच आओ, तो तुमको रूस की सबसे सुन्दर लड़की दे दूंगा ! यह सच है कि उसके पांव नंगे हैं पर उस जैसी अनन्य सुन्दरी तुम्हें अन्यत्र नहीं मिलेगी। इन गरीब लड़कियों से तुम नफरत नहीं किया करो। ये गुण देनेवाले मोती के समान होती हैं।" यह कहकर फ्योदोर पावलोविच करामज़ोव खुशी से हंस उठा। उसकी गुरियों-सी बूढ़ी आंखें हर्ष से चमकने लगीं और वह अपने कांपते हुए हाथों से ब्रांडी का दूसरा गिलास भरने लगा।

ईवान ने अपने पिता की ओर प्रकट घृणा से देखा और कहा, "आप ही वहां क्यों नहीं चले जाते ?"

वृद्ध ने हंसते हुए कहा, "बात असल में यह है कि यहां मुझे एक बड़ा जरूरी काम है !"

ईवान के पास ही उसका छोटा भाई अल्योशा बैठा हुआ था, उसने उसकी ओर रहस्यमय दृष्टि से देखा। आज उसका भाई पिता से मिलने के लिए अपने मठ में से विशेष आज्ञा प्राप्त करके आया था।

दोनों बेटों और बाप में यह एक विचित्र-सा नाता था। उनमें एक अजीब-सी

---

१. The Brothers Karamazov (Feodor Dostoevsky)

आज़ादी थी। करामज़ोव परिवार के बारे में सब लोगों को यह विचित्रता सहज प्रतीत होती। उन लोगों में परस्पर जैसे कोई भेद-भाव नहीं था। वृद्ध फ्योदोर एक धनी ज़मींदार था, जिसने मदिरापान, वासनामय जीवन व्यतीत करना और स्वेच्छा से विचरण करना ही अपने जीवन का आधार बना रखा था। यह गुण उसकी चुभती हुई आंखों में मानो बहुत गहरे तक उतर गया था। उसके गालों पर अभी तक इस वासना का उफ़ान लालिमा पोत दिया करता था और उसके भरे हुए होंठ फफकते-से दिखाई देते थे।

ईवान चौबीस साल का था। उसका चेहरा शांत था—गम्भीर, जैसे वह एक बड़ा चतुर सांसारिक व्यक्ति हो। शालीनता उसके व्यवहार से प्रकट होती थी, लेकिन मानो उसमें हर वस्तु के प्रति एक तिरस्कार था।

छोटा भाई अल्योशा बीस वर्ष का था। वह एक पादरी बनने की तैयारी कर रहा था, लेकिन तपस्वी जीवन का कोई गर्व उसमें दिखाई नहीं देता था। उसके गाल लाल थे। स्वच्छ यौवन उनपर झिलमिलाया करता था। आंखों में आनन्द की चमक तैरा करती थी और देखने में ही प्रकृति से वह सहज और सीधा-सादा लगता था।

अल्योशा और ईवान दोनों ही इस बात को खूब जानते थे कि वृद्ध पिता वहां जाने में क्यों हिचकिचा रहा था। उनको यह भी पता था कि वह ज़रूरी काम, जोकि पिता को यहां रोक रहा था, अपने-आपमें कुटिलता का संदेश लिए था। मित्या उनका सबसे,बड़ा भाई था। उसमें और पिता में एक मरणान्तक संघर्ष चल रहा था। मित्या करामज़ोव सेना में लेफ्टिनेण्ट था, उसका जीवन बहुत ही उच्छृंखल था, इसलिए उसे अपनी नौकरी से त्यागपत्र देना पड़ा। उसने एक सेना के जनरल को अपमान से बचाया था और इस कृतज्ञता के लिए उस जनरल की पुत्री केतरीना इवानोवना को उससे सगाई हो गई और ब्याह हो गया। मित्या अपने पिता की तरह ही महाप्रचंड और गुस्सैल था। वह अपनी पत्नी का बुरी तरह अपमान किया करता था। एक दफा स्त्री ने उससे तीन हज़ार रूबल मांगे जो वह मास्को में अपनी बहन को भेजना चाहती थी। लेकिन वह धन मित्या ने वेश्याओं पर लुटा दिया और उसके बाद वह केतरीना को मायके छोड़ आया। एक पोलिश अफ़सर की पहली प्रिया ग्रूशका नाम की स्त्री थी। अब मित्या उसकी सुन्दरता देखकर उसपर पागल हो गया था।

वृद्ध फ्योदोर ने जब ग्रूशका को देखा तो उसके लावण्य ने उसे बन्दी बना लिया। उसे मालूम था कि उसका पुत्र मित्या इस स्त्री से सम्पर्क रखे हुए था, किन्तु न जाने क्यों इस भावना ने उसकी वासना को और भड़का दिया और वह निर्लज्ज रूप से यह प्रयत्न करने लगा कि किस प्रकार अपने पुत्र की प्रिया को अपनी बना सके। उसने ग्रूशका से कहा कि यदि वह एक रात ही के लिए भी उसके पास आ जाएगी तो वह उसे तीन हज़ार रूबल देगा। उस धनराशि को उसने अपने तकिये के नीचे एक लिफ़ाफ़े में बन्द करके रख छोड़ा था।

मित्या घोर ईर्ष्या से कांपता हुआ विकराल हो उठा था। वह अपने पिता के घर पर दिन-रात नज़र रखता था।

वृद्ध करामज़ोव ने हिचकियां लेते हुए फिर कहा, "मैंने कभी जीवन में स्त्री को

कुरूप नहीं माना। मेरे बेटे, तुम इस बात को नहीं समझ सकते। तुम अभी बच्चे हो। तुम्हारी नसों में अभी तक दूध है—रक्त नहीं बहता। तुम तो सहज ही किसी भी स्त्री पर लट्टू हो सकते हो। सुनो, तुम्हारी मां अब मर चुकी है। मैं उसके साथ विचित्र मनोरंजन किया करता था। मैं अपने हाथ पृथ्वी पर रखकर घुटनों के बल चलता था और उसके पांवों को चूमा करता था। यहां तक कि आखिर वह हंसने लगती थी जैसे कि मीठी घंटियां बज रही हों और कुछ ही देर में वह ऐसी हो जाती थी जैसे उसे दौरा पड़ गया हो, लेकिन हर्ष के उन्माद में भी उसके कंठ से जैसे चीत्कार फूटता रहता था। उसको फिर होश में लाने के लिए मुझे हर बार किसी मठ की ओर ले जाना पड़ता था ताकि वहां के शान्त और पवित्र वातावरण से उसकी चेतना फिर लौट सके। पवित्र पादरी लोग उसको आशीर्वाद दिया करते थे। लेकिन तुम्हारी माता धर्म के कारण ही ऐसी नहीं हो जाती थी। मैं उसके अन्दर के सारे रहस्यवाद को नष्ट कर देना चाहता था और एक दिन मैंने इसका निश्चय कर लिया। एक दिन मैंने उससे कहा, 'तुम अपने पवित्र देवता को देखती हो। तुम समझती हो कि यह चमत्कार है तो देखो मैं इसपर थूकता हूं और तुम देखना कि मुझे कुछ भी नहीं होगा।' हे भगवान, मुझे वह क्षण ऐसा लगा जैसे वह मेरी हत्या कर देगी। लेकिन उसने कुछ नहीं किया। वह केवल उछली और उसने अपने हाथों को मला और क्षण-भर में ही अपने हाथों से अपने मुंह को ढंक लिया और कांपती हुई पृथ्वी पर गिर पड़ी, मानो वह एक मांस की ढेर थी—संघर्ष करती हुई'''अल्योशा, अल्योशा, क्या हुआ, क्या हुआ!"

वृद्ध हठात् भयभीत-सा खड़ा हो गया। अल्योशा अपनी कुर्सी से ठीक वैसे ही उछलकर खड़ा हो गया था जैसे कि पिता ने माता के बारे में बताया था। वह अपने हाथ-मलने लगा। उसने अपने हाथ से अपने मुंह को छिपा लिया। और अपनी कुर्सी पर गिरकर बुरी तरह से कांपते हुए, जैसे उसपर जूड़ी का बुखार चढ़ आया था, वह चुपचाप रो रहा था।

वृद्ध चिल्लाया, "ईवान, ईवान, पानी लाओ, पानी! बिलकुल अपनी मां जैसा है'''वही मेरा'''वही देवता का चित्र'''और ऐसी ही धार्मिक दौरा उसपर भी आता था।'''अपने मुंह में से थोड़ा पानी इसपर डालो। मैं भी तुम्हारी माता के लिए यही करता था। यह लड़का अपनी माता की याद में पागल हो गया है!" वृद्ध ने बड़बड़ाते हुए कहा।

ईवान ने बहुत ठंडे स्वर से कहा, "इसकी मां शायद मेरी भी मां थी। थी ना?" और यह कहते हुए उसकी काली उदास आंखों में आग-सी जलने लगी। वृद्ध उसको देखकर भयभीत-सा पीछे हटा और पीछे रखी कुर्सी से टकरा गया।

उसने अल्योशा के स्वर में बड़बड़ाते हुए कहा, "तुम्हारी मां, हां तुम्हारी मां सचमुच वह थी, मुझे माफ करो। मैं यह सोच रहा था ईवान'''यह कहकर शब्दों के अभाव में वह हंसने की चेष्टा करने लगा। शराब का नशा एक झूठी-सी व्यर्थ की हंसी बनकर उसके होंठों को कुछ ऊपर की तरफ सिकोड़ गया।

उस समय हॉल में बहुत जोर से कोलाहल उठने लगा। बड़े जोर-जोर की आवाजें

सुनाई देने लगी। भोजन के कमरे में एकदम द्वार खुल गया और एक आदमी बड़ी तेजी से कमरे में घुस आया। लगभग २८ वर्षीय युवक था वह। हट्टा-कट्टा, बलिष्ठ; लेकिन उसके गाल पीले थे, कुछ धसे हुए। उसके ललाई लिए माथे पर काले घने बालों का गुच्छा लटक रहा था और उसकी विशाल आंखों में पागलपन की एक चमक-सी दिखाई देती थी। जब उसने फ्योदोर की वृद्ध और डरी हुई आंखों को देखा तो यह पागलपन जैसे और भी अधिक सुलग उठा।

वृद्ध ने चिल्लाकर कहा, "मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। यह मुझे मार डालेगा! यह मुझे मार डालेगा!" यह कहकर उसने ईवान के गले में हाथ डाल लिए और वह चिल्लाया, "इस मित्या के पास मुझे अकेला मत छोड़ो। इस मित्या को मेरे पास मत आने दो!"

मित्या कमरे में आगे बढ़ा और चिल्लाया, "वह यहीं है। मैंने उसे घर की ओर मुड़ते हुए देखा था। वह निकल गई···और मैं उसे पकड़ नहीं पाया। कहां है वह इस समय? मुझे बताओ वह कहां छिपी है? भीतरी हिस्से में जानेवाले दोहरे दरवाज़ों की ओर वह तेज़ी से बढ़ा। दरवाज़ों में इस समय ताला लगा हुआ था। मित्या ने एक कुर्सी उठा ली और बड़े ज़ोर से उस दरवाज़े पर फेंककर मारी। दरवाज़ा अर्राकर टूट गया। मित्या वेग से भीतर चला गया।

वृद्ध ने कांपते हुए कहा, "ईवान! अल्योशा! वह यहीं है। अल्योशा! वह यहीं है। मित्या ने उसे मेरे घर की ओर आते देखा है!" उसने अपने होंठों को चाटा और दोहरे दरवाज़े की ओर बढ़ा।

ईवान चिल्लाया, "अरे बुड्ढ़ऊ, लौट आओ! वह तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर देगा! तुम जानते हो कि वह यहां नहीं आई है।"

मित्या फिर से भोजनगृह में आ गया था। उसने दूसरी ओर के दरवाज़े में ताला लगा हुआ देखा था। दूसरे कमरों के वातायन और खिड़कियां भी बन्द थीं। इसलिए यह निश्चय हो गया कि ग्रूशेंका कहीं से भी भीतर नहीं आ पाई थी। वृद्ध चिल्लाया, "पकड़ लो इसे। इसने मेरे तकिये के नीचे से मेरा धन चुरा लिया है।"

और ईवान के हाथ से छूटकर वृद्ध मित्या की ओर बढ़ा। मित्या ने उसे पकड़ लिया और ज़ोर से दे मारा। मित्या बढ़ा और उसने जंगलियों की तरह अपने जूते की एड़ी से बूढ़े को ठोकर मारी। ईवान और अल्योशा झपटकर उसको अपने कराहते हुए शिथिल पड़े पिता के पास से दूर धकेलने लगे। ईवान चिल्लाया, "तुमने पिता को मार डाला है!"

मित्या ने बलपूर्वक अपने को उन दोनों से छुड़ा लिया और पागल की तरह अपने भाइयों को देखने लगा। "तुम मुझे देखते क्या हो?" उसने कहा, "लेकिन यह समझ लेना कि आज भले ही भाग्य मेरी ओर न हो, लेकिन शीघ्र ही मैं अपना यह काम पूरा कर दूंगा!" यह कहकर उसने अल्योशा की ओर प्रार्थना-भरी आंखों से देखा और कहा, "अल्योशा एक तुम ही हो जिसपर मैं विश्वास कर सकता हूं। सच बताओ, क्या वह यहां अभी आई थी; या यह मेरा भ्रम है?"

अल्योशा ने कहा, "मैं कसम खाकर कहता हूं कि वह यहां नहीं आई और इनमें से किसीको यह आशा भी नहीं थी कि वह यहां आएगी।"

बिना एक शब्द कहे मित्या मुड़ा और कमरे से भाग निकला। रास्ते में दो नौकरों ने उसे रोकने की चेष्टा की लेकिन वह उन्हें धक्के देकर निकल गया। वृद्ध सेवक ग्रिगोरी जब उठा तब उसके सिर से रक्त बह रहा था। वह अपने वृद्ध स्वामी के पास आ गया। उसके पीछे-पीछे एक पतला-दुबला मुंहासे-भरे चेहरेवाला स्मरद्याकोव था जोकि वृद्ध फ्योदोर का सेवक और रसोइया था।

ईवान और ग्रिगोरी ने वृद्ध को उठाया और आरामकुर्सी पर बिठाया। वृद्ध के चेहरे से रक्त बह रहा था। उन्होंने रक्त धोया। घाव पर पट्टी बांधी। उसके कपड़े बदले और उसे शय्या पर लिटा दिया। अचानक वृद्ध ने अपनी आंखें खोलीं और कहा, "वह यहां है। वह यहीं होगी!" यह कहते हुए उसके मुख पर विषाद और वासना की एक घृणित सिहरन-सी जाग उठी और उसके बाद वह मूर्च्छित हो गया।

ईवान अल्योशा की ओर मुड़ा और बोला, "यदि मैं मित्या को दूर नहीं ले जाता तो आज उसने काम खत्म कर दिया होता!" अल्योशा कांप उठा। उसने कहा, "भगवान बचाए!"

ईवान ने मुस्कराकर कहा, "क्या बचाए भगवान! इसमें क्या बात है! एक सांप दूसरे सांप को निगल गया! इससे अधिक इसमें कोई तथ्य तो था नहीं।" जब अल्योशा को यह निश्चय हो गया कि उसके पिता को अब कुछ आराम है, वह फिर मठ जाने के लिए तैयार हो गया। ईवान उसके काफी देर बाद गया। जब वह फाटक पर पहुंचा, स्मरद्याकोव ने उसे रोका। ईवान ने पूछा, "क्यों क्या बात है?" उसे यह चालाक लगनेवाला युवक बहुत ही घृणित-सा लगता था। स्मरद्याकोव पर सब लोग दया करते थे, क्योंकि उसे मिरगी के दौरे आया करते थे। वृद्ध फ्योदोर उसे बहुत पसन्द करता था क्योंकि स्मरद्याकोव एक बहुत ही अच्छा रसोइया था और यह भी एक अफवाह थी, जिसे न कोई प्रमाणित कर सकता था और न अप्रमाणित ही कर सकता था, कि स्मरद्याकोव उस वृद्ध का ही पुत्र था।

स्मरद्याकोव ने बड़बड़ाकर कहा, "श्रीमान ईवान! मैं बहुत ही दयनीय अवस्था में हूं। आपके भाई श्रीमान मित्या और आपके पूज्य पिता आपकी अनुपस्थिति में दोनों ही पागलों जैसा व्यवहार करते हैं। हर रात वृद्ध महोदय घर-भर में घूमा करते हैं और हर मिनट पूछा करते हैं, 'क्या वह आ गई है? वह अभी तक क्यों नहीं आई?' और दूसरी ओर से भी मुझसे ऐसे प्रश्न किए जाते हैं, 'क्या वह आज यहां आई थी? क्या वह आज आनेवाली है?' अंधेरा होते ही आपके बड़े भाई मेरे पास आकर कसम खिला-खिलाकर इस तरह के प्रश्न पूछते हैं और अंत में कहते हैं, 'ओ बेहूदे रसोइये, ज़रा पैनी आंखों से देखा कर। अगर वह तेरी नजर से निकल गई और भीतर पहुंच गई, या तूने उसके आने पर मुझे नहीं बताया, तो मैं तुझे एक मक्खी की तरह मसल दूंगा!' दोनों ही एक-दूसरे से अधिक क्रुद्ध होते चले जा रहे हैं। कभी-कभी तो मुझे ऐसा लगता है कि मैं डर के मारे ही मर जाऊंगा। मुझे डर है, ग्रूशंका यहां आए या न आए, लेकिन श्रीमान मित्या

मौका पाते ही वृद्ध महोदय की हत्या कर देंगे, ताकि उनके शयनकक्ष से वे उनके सारे धन को चुराकर ले जा सकें। मित्या महोदय के पास अपना तो धन तनिक भी शेष नहीं रहा है, और का ग्रुशंको किसी दूर-दराज देश में ले जाने के लिए उन्हें तीन हज़ार की इस समय बड़ी आवश्यकता है।"

ईवान ने पूछा, "लेकिन, इस सम्बन्ध में मैं क्या करस कता हूं ?"

रसोइये ने उत्तर दिया, "जैसा आपके पिता चाहते हैं, चर्माश्नेया की ओर आप प्रात:काल चले जाएं। अल्योशा मठ में होंगे। ग्रुशंका के आने के समय वे आप दोनों को यहां रखना नहीं चाहते, यहां से दूर रखना चाहते हैं।"

ईवान ने उत्तर दिया, "तुम समझते हो कि तुम और ग्रिगेरी दोनों मिलकर मेरे भावावेश से भरे हुए बड़े भाई के लिए काफी साबित होगे ?"

"नहीं।" उसने उत्तर दिया। "वृद्ध ग्रिगेरी सोता रहेगा और मुझे कल रात को एक भयानक मिरगी का दौरा आएगा जो सवेरे तक चलता रहेगा।"

"तुम्हें यह कैसे पता है कि कल रात तुम्हें दौरा आएगा ही ?"

"मैं हमेशा बता सकता हूं कि मुझे दौरा कब आनेवाला है।"

ईवान ने कहा, "अच्छा, तब तो निश्चय ही मेरी यह इच्छा है कि मैं यहीं रहूं और अपने पिता की रक्षा करूं। मैं चर्माश्नेया नहीं जाऊंगा।"

इसपर रसोइया बोला, "श्रीमान ईवान, इस बात पर और सावधानी से विचार कर लें। आपके पिता ने निकट भविष्य में ग्रुशंका से विवाह करने का विचार प्रकट किया है। यदि वे ऐसा करेंगे तो उनके पुत्रों को पुत्राधिकार से वंचित होना पड़ेगा, लेकिन यदि उनके विवाह के पहले ही उनकी मृत्यु हो गई तो आपमें से हर एक को चालीस हज़ार पौंड मिल जाएंगे।"

ईवान का मुख कठोर हो गया।

"आपने हर बात को सोच लिया है," रसोइये ने धीरे से कहा, "सोच लिया है ना ?" उसने फिर ईवान से पूछा, "आप चले जाएंगे ना ?"

अंधकार में बढ़ते हुए ईवान ने उत्तर दिया, "ओ चूहे ! मैं इस बारे में और सोचूंगा !"

अगले दिन प्रातःकाल ईवान चर्माश्नेया चला गया था।

ग्रुशंका अपनी सेविका फेनिया के साथ कैथेड्रल स्क्वायर के पास एक छोटे-से लकड़ी के मकान में रहा करती थी। सांझ हो गई थी और अंधेरा हुए लगभग एक घंटा हो गया था। फेनिया रसोई में बैठी कुछ सिलाई कर रही थी, उसी समय मित्या ने ज़ोर से दरवाज़ा खोला और उस छोटे-से घर के कमरे की तलाशी लेने लगा और वह फिर फेनिया के पास लौट आया और चिल्ला उठा, "कहां गई है वह ?"

फेनिया बुरी तरह डर गई। उसको सांस लेने का भी उसने एक क्षण नहीं दिया और व्याकुल-सा उसके चरणों पर गिर पड़ा। उसने रोते हुए कहा, "फेनिया, ईश्वर के लिए मुझे बता दो कि वह कहां चली गई है।"

"मैं नहीं जानती !" लड़की ने कहा, "मैं नहीं जानती मित्या फ्योदोरोविच, तुम भले ही चाहे मुझे जान से मार डालो, लेकिन मैं नहीं बता सकती ! क्योंकि मुझे पता ही नहीं है।"

मित्या चिल्लाया, "तू झूठ बोलती है ! तू जो डर रही है, तुझे जो अपने अपराध का आभास हो रहा है उससे मुझे पता चल रहा है कि वह इस समय कहां है।"

मेज पर एक मूसल रखा था मित्या ने उसे झपटकर उठा लिया और सड़क पर भाग चला। उसने चौराहा पार किया। एक लम्बे रास्ते पर दौड़ चला। फिर पुल पार किया और एक सूनी गली में होता हुआ आखिर वह अपने पिता के बगीचे की ऊंची बाड़ के समीप आ गया। उसने भीमवेग से एक उछाल लगाई और उस बाड़ के ऊपरी भाग को पकड़ लिया और वह उस ऊंचाई पर झूलने लगा। एक क्षण में ह। वह ऊपर चढ़ गया।

उसने अपने-आपसे कहा, "बूढ़े के सोने के कमरे में उजाला हो रहा है, जरूर वह वहीं होगा।" बिना आवाज किए वह नीचे की हरी घास पर उतर आया और मुलायम दूब पर वह बिल्ली की तरह चलता हुआ जरा-सी भी आवाज़ पर चौंक-चौंक उठता हुआ आगे बढ़ चला। उसे उजालेदार खिड़की के पास पहुंचने में पाच मिनट लग गए। उसने उसे धीरे से थपथपाया और फिर घनी झाड़ी की छाया में छिप गया। खिड़की खुल गई और वृद्ध फ्यादोर तेज लैंप की रोशनी से भरे हुए कमरे में दिखाई दिया। लैंप एक किनारे रखा था। उसके आलोक की किरणें उसपर तिरछी होकर गिर रही थीं। वह रेशम का एक नया ड्रैसिंग गाउन पहने था जो गरदन पर खुला था। भीतर से सोने के बटन-वाली बहुत ही फैशनेबल लिनिन की कमीज़ दिखाई दे रही थी। बूढ़े ने बाहर झांका और हर ओर देखने लगा और बोला, "ग्रूशका, तुम आ गई हो, तुम आ गई हो, तुम आ गई हो, ग्रूशका ?" उसकी आवाज़ कांप रही थी और वह फिर बड़बड़ाया, "मेरी चिड़िया, तुम कहां हो ? देखो, मैं तुम्हें कुछ भेंट देना चाहता हूं।"

मित्या ने सोचा, 'उस लिफाफे में रखे हुए तीन हजार रूबल बूढ़ा ग्रूशका को देना चाहता है।' अचानक ही उसके मस्तिष्क में एक विचार कौंध गया, 'काश यह धन उसको मिल जाए, तो वह उससे क्या नहीं कर सकता !'

बूढ़े ने भरभराए स्वर से कहा, "लेकिन तुम हो कहां ? मेरे सामने क्यों नहीं आती ?" और अपने इस उन्माद में वह खिड़की में से आधा बाहर झुक गया, मानो देखने की चेष्टा कर रहा था कि वह किस ओर छिपी खड़ी थी। अब वह मित्या से हाथ-भर की दूरी पर था। उसका सिर झुका हुआ था। उसकी नुकीली नाक, कांपते हुए होंठ, दोहरी ठोड़ी और गले की कांपती हुई हड्डी दूसरी ओर से आते लैंप के प्रकाश के सामने बिलकुल स्पष्ट दिखाई दे रही थी। मित्या का हृदय घृणा की भयानक लहर से भीग गया। उसने अपनी जेब से मूसल को बाहर निकाल लिया। लाल-लाल-सा कोहरा-सा उसकी आंखों के सामने तैर गया। कुछ देर तक उसको यह पता ही नहीं चला कि उसकी सांस कम क्यों पड़ गई थी और वह हरियाली दूब को इतनी कठिनाई से क्यों पार कर रहा था। वह बाड़ के पास पहुंच गया, एक बार फिर उछला और जब वह चला तो उसे लगा कि बाड़ पार करने के बाद उसमें शक्ति बाकी नहीं रही थी, मानो भारी पत्थर उसके पैर में

बांध दिया गया था। उसे लगा कि किसी ने उसका पांव पकड़ लिया था और एक व्याकुल घुटी हुई सी आवाज सुनाई दी, "हत्यारे!" यह वृद्ध ग्रिगेरी की आवाज थी। मित्या का हाथ बिजली की तरह नीचे गिरा। बूढ़ा नौकर कराह कर गिर गया। मित्या क्षण-भर तक उसे देखता रहा और फिर उसके पास ही गिर पड़ा। अचानक उसने यह अनुभव किया कि उसके हाथ में एक भयानक चीज अभी तक मौजूद थी। उसने उसकी ओर आश्चर्य से देखा और फिर उसे अपने-आपसे दूर फेंक दिया।

वह ग्रिगेरी के पास झुक गया। बूढ़े नौकर के सिर से रक्त बह रहा था। मित्या ने अपना रूमाल निकाल लिया और उसके बहते खून को रोकने के लिए उसके घाव पर लगाया। रूमाल लहू से तर-बतर हो गया। मित्या के रग-रग मे आतंक की लहर दौड़ गई और वह दहशत से थर्रा उठा। एक कौंध-सी उसके दिमाग में घूम गई और उसे लगा कि जैसे उसके भीतर से कोई कह रहा था, 'मैंने इसकी हत्या कर दी है!' एक झपाटे में वह बाड़ को पार कर गया और पागल की तरह भागता हुआ नगर में घुस गया। अब अनन्त संकट और असीम कष्ट में डूबने के पहले उसकी एक ही तृष्णा बाकी रह गई थी कि वह एक बार फिर ग्रूशाका के दर्शन कर ले।

फेनिया अपनी दादी के साथ रसोई में बैठी थी। मित्या ने तेजी से प्रवेश किया और उसकी गरदन पकड़ ली। और वह गरज उठा, "बताती है, या मरती है, बोल! कहां गई है वह?"

दोनों स्त्रियां भय से चिल्ला उठीं। फेनिया कुर्सी में सिकुड़ गई और मित्या की बलिष्ठ उंगलियों के दबाव से उसकी गरदन दर्द करने लगी और निरन्तर कसते वेग के कारण उसकी आंखें बाहर निकल आई। वह घबराकर बोली, "ठहरो, ठहरो! मैं तुम्हें बताती हूं, लेकिन मैं मरी जा रही हूं। मित्या प्यारे, मुझे छोड़ दो! वह अपने अफसर के पास मोकरो गई है!"

मित्या गुर्राया, "कौन अफसर?"

फेनिया ने कहा, "वही पोलिश सज्जन, जिसने उसे पांच वर्ष पूर्व निकाल दिया था। आपके मित्र कालगानोव और मैक्सिमो उसके साथ हैं। वे लोग त्रिफनी बोरिसोविच की सराय में इकट्ठ होंगे। ओह मित्या, तुम इतने पागल-से क्यों देख रहे हो! तुम क्या उसकी हत्या करना चाहते हो!"

लेकिन मित्या अब तक सड़क पर आ गया था और प्लोपनीको के बड़े स्टोर की तरफ तेजी से भागा चला जा रहा था। स्टोर के मालिक ने उसे देखा तो उसकी आतुरता को देखकर उसे आश्चर्य हुआ। मित्या ने चिल्लाकर कहा, "मुझे तुरन्त घोड़े दो और गाड़ी जुतवाओ और मुझे शैम्पेन शराब दो! कम से कम तीन दर्जन बोतल! मैं मोकरो जाना चाहता हूं! अगर तुम्हारा गाड़ीवाला आधी रात से पहले मुझे वहां पहुंचा देगा तो मैं उसे इनाम दूंगा!" और यह कहकर मित्या ने अपनी जेब से निकालकर बीस रूबल साईस के लिए फेंके और बाकी नोट जेब मे रख लिए। मालिक ने देखा कि नोटो पर कहीं-कहीं खून के दाग लग रहे थे। उसने बाकी नोटों की प्रतीक्षा में हाथ फेरा दिए और मित्या क्रूरता के से भाव से उसका हिसाब चुकाने लगा।

ज्योंही मित्या ने त्रिफानोविच होटल के उस नीले कमरे में प्रवेश किया, ग्रूशंका के मुंह से भयानक चीत्कार निकल गई। वह लगभग बाईस वर्ष की एक सुन्दर युवती थी। लम्बी, कोमल, मांसल, वही सौंदर्य जो रूस की औरतों में *बहुत जल्दी आ जाता है* और बहुत ही जल्दी समाप्त भी हो जाता है। उसका मुख अत्यन्त श्वेत था और गालों पर बहुत ही मनोहर गुनी हुई सी ललाई दिखाई देती थी। वह इस समय एक नीची कुर्सी पर बैठी हुई थी। एक लम्बे सोफे पर उसके सामने कालगानोव बैठा था, जिसके कि बाल बड़े सुन्दर थे और जो देखने में भी बड़ा आकर्षक विद्यार्थी था। उसके पास मैक्सिमोव था। वह एक अधेड़ जमींदार था जोकि अपनी सम्पत्ति को हाल ही में विनष्ट कर चुका था। वह सुदृढ़ और छोटे कद का आदमी था जो मित्या के इस प्रकार प्रवेश करने पर अत्यन्त क्रुद्ध हो उठा था। मुसूयोलाविच, जिसपर ग्रूशंका गत पांच वर्षों से इतनी मोहित थी, भी उनके निकट ही बैठा था। वह एक पोलिश अफसर था और उसके पीछे एक विशालकाय व्हब्लेयस्की नाम का व्यक्ति खड़ा था। वह ग्रूशंका के पीछे झुकता हुआ उसकी कुर्सी के समीप था।

मित्या ने प्रचण्ड स्वर से कहना प्रारम्भ किया, "सज्जनो!" लेकिन वह प्रत्येक शब्द पर अटकने लगा, "मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मुझे अपने साथ प्रातःकाल तक यहां रहने की आज्ञा दें। मैं भी आपका एक सहयात्री हूं, अनन्त की ओर जाता हुआ मैं··· नहीं, नहीं, नहीं, बात तो कोई भी नहीं है।" और फिर ग्रूशंका की ओर मुड़कर उसने कहा, *"मैं क्या चाहता हूं, मैं नहीं जानता।"*

ग्रूशंका कुर्सी में जैसे सिकुड़ गई थी। गठीले और छोटे कद के पोलिश अफसर ने कहा, "श्रीमान, यह एक आपसी लोगों का मिलन है, इसको ध्यान रखिए।" और उसने अपने मुंह से अपना पाइप हटाते हुए कहा, "यहां और भी कमरे हैं।"

मित्या ने बाकी और दो आदमियों की ओर मुड़कर कहा, "सज्जनो, मेरे इस प्रकार आ जाने के लिए आप मुझे क्षमा करिए।" उसके स्वर में याचना की झलक थी, "मैं अपनी आखिरी रात अपनी रानी के साथ बिताना चाहता था। मैंने उसको जीवन-भर प्यार किया है। सज्जनो! मुझे क्षमा कर दीजिए।" और वह *पागल की तरह चिल्लाया,* "मैं भागकर आया हूं। आओ हम लोग सब मित्र बन जाएं। मैं ढेर-ढेर शराब अपने साथ लाया हूं। देखिए, देखिए, नौकर उस शराब को भीतर ला रहे हैं! आप लोग पोलैंड के निवासी हैं, तब फिर हम लोग पोलैंड के कल्याण के लिए ही आज मदिरा पीएं!"

त्रिफन, जोकि इस सराय का मालिक था, अपने नौकरों के साथ भीतर घुस आया। मित्या की लाई हुई बोतलों में से शराब उंडेली जाने लगी, और गिलास उन लोगों के हाथों में उठ गए। उन लोगों ने गिलास एक-दूसरे से टकराए और पोलैंड के कल्याण के लिए पीने लगे। मित्या चिल्लाया, "और बोतलें खोलो! *और अब हम रूस के कल्याण* के लिए पिएंगे! हम लोग आज से भाई-भाई हैं!"

लम्बे पोल ने उठकर अपने गिलास को उठाया और उसने व्यंग्य से कहा, "रूस के लिए—जैसाकि रूस १७७२ से पहले था, उसी रूस के लिए!"

मित्या का चेहरा लाल हो गया। वह चिल्लाया, "तुमने मेरे देश का अपमान

किया है !"

"चुप रहो" यूशका उत्तेजित होकर बोली, "यहां मैं किसी प्रकार का लड़ाई-झगड़ा पसन्द नहीं करूंगी, समझे !" यह कहकर उसने पृथ्वी पर अपने पैरों को ज़ोर से पटका।

मित्या बड़बड़ाया, "सज्जनो ! मुझे क्षमा कीजिए, यह सब मेरा ही अपराध था। मुझे खेद है। अच्छा, आपके पास ताश की गड्डी भी है। आइए, देखें कौन जीतता है।"

एक घंटे के बाद इन पोल लोगों से मित्या लगभग २०० रूबल हार चुका था। कालगानोव ने अपना हाथ फैलाया और पत्तों को मेज़ के नीचे गिरा दिया और कहा, "नहीं मित्या, मैं तुम्हें इस तरह खेलने नहीं दूंगा !" उसकी आवाज़ नशे से भर्रा गई और उसने फिर कहा, "तुम बहुत ज़्यादा हार चुके हो।"

मित्या ने कहा, "लेकिन तुमको इससे क्या !"

लेकिन ग्रूशेंका ने तभी मित्या के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "कालगानोव ठीक कहता है।" उसके स्वर में एक विचित्रता आ गई थी और वह बोली, "बस, अब तुम मत खेलो !"

ग्रूशेंका की आंखों की ओर देखकर उसकी आंखों में एक विचित्र-सी प्रेरणा-भरी चमक आ गई। वह उठ खड़ा हुआ और मुसूयालोविच के कंधे को थपथपाकर कहा, "मेरे दोस्त, आओ ज़रा बगल के कमरे में चलें, मुझे तुमसे कुछ कहना है। अपने अंगरक्षक को भी अपने साथ ले आओ।" यह कहते हुए उसने उस विशालकाय पोल की तरफ देखा जो कि उस अफसर का रक्षक था। और वह उन दोनों को लेकर दायीं ओरवाले कमरे में चला गया और तब मित्या ने दबी लेकिन तनाव-भरी आवाज़ में कहा, "श्रीमान, मेरी बात ध्यान से सुन लें। ये तीन हज़ार रूबल हैं। इन्हें मुझसे ले लीजिए और दोज़ख का रास्ता नापिए। मैं आप लोगों का सब इन्तज़ाम कर दूंगा, घोड़े अभी तैयार हो जाएंगे और आप बिना अधिक झंझट किए शीघ्र ही यहां से जा सकते हैं।"

दोनों पोल क्रोध से भरे फिर उसी कमरे में लौट गए। मुसूयोलोविच ने अहंकार से भरे हुए कहा, "यूशका, मेरा घोर अपमान हुआ है। मैं अतीत की बातों को क्षमा करने यहां आया था।"

ग्रूशका झपटकर अपनी कुर्सी से खड़ी हो गई और चिल्लाई, "तुम'''तुम, मुझे क्षमा करने के लिए आ गए थे !"

"हां," पोल ने कहा, "मैं सदा से ही कोमल हृदय का व्यक्ति हूं। लेकिन मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि तुमने हम लोगों की उपस्थिति में ही अपने एक मित्र को भी यहां निमंत्रित किया; और यही नहीं, उसने मुझे तुरन्त यहां से चले जाने के लिए तीन हज़ार रूबल लेने की भी बेहूदा पेशकश की है !"

यह सुनकर यूशका जैसे पागल हो गई थी। उसने कहा, "क्या कहा ! उसने मेरे लिए तुम्हें धन दिया है ? मित्या, क्या यह सच है ? मैं कहती हूं, तुम्हारा इतना साहस कैसे हुआ ? क्या मैं बिकाऊ हूं ?'''और तुमने धन लेने से इन्कार कर दिया ?"

मित्या ने पुकारकर कहा, "वह ले चुका है, वह उस धन को ले चुका है ! लेकिन वह चाहता था कि पूरे के पूरे तीन हज़ार उसको एकसाथ मिल जाएं और मेरे पास इस

समय पूरे नहीं है।"

ग्रुशंका कुर्सी पर गिर गई और उसने एक विचित्र स्वर से कहा, "अब मुझे पता चला कि इसको इस बात का ज्ञान हो गया था कि मेरे पास काफी धन है और इसलिए यह मुझे क्षमा करने आया था और इसलिए इसने मुझसे विवाह की बात चलाई थी।"

लाल चेहरेवाले नाटे कद के पोल अफसर ने गर्जन किया, "ग्रुशंका, मैं अतीत की बातों को भूल जाना चाहता था और तुम्हें अपनी पत्नी बनाना चाहता था, लेकिन तुम तो बिलकुल बदल गई हो ! बिलकुल विचित्र हो गई हो—घृणित और निर्लज्ज !"

ग्रुशंका ने उदास स्वर में कहा, "तुम जहां से आए हो वहीं चले जाओ, मैं ही एक मूर्ख हूं। मैं सचमुच बड़ी मूर्ख हूं कि मैंने तुम जैसे प्राणी के लिए अपने को पांच वर्ष तक असह्य यातना दी। तुम इतने मोटे और बूढ़े हो कि तुम खुद अपने बाप भी हो सकते हो। यह तुमने नकली बाल कहां से लगा लिए हैं। हे भगवान, तुम्हारा यह रूप, और मैं तुम्हें प्यार करती थी ! पांच वर्ष तक मैंने रो-रोकर तुम्हारे लिए आंखें सुजाई थीं, लेकिन पांच वर्ष तक वास्तव में मैंने इस मित्या से प्रेम किया था। फिर भी आज तक मैंने कभी इसका अनुभव नहीं किया, कैसी पागल हूं मैं ! इस सारे संसार में वही एक व्यक्ति है जो मेरा है, जो मेरे लिए सब कुछ करने के लिए तत्पर है ! मित्या, मुझे क्षमा कर दो ! मैंने तुम्हें असह्य यंत्रणा दी है, लेकिन मैं अब तुम्हारे चरणों पर गिरती हूं। अपना बाकी जीवन मैं तुम्हारी सेवा में व्यतीत करूंगी। मैं जब तक जिऊंगी तब तक तुम्हें प्यार करूंगी ! अब हम सदा के लिए सुखी हो जाएंगे, क्योंकि फिर हम दोनों एक-दूसरे से मिल जाएंगे।"

उसी समय दरवाजे पर बड़ी जोर की खटखटाहट सुनाई दी। कालगानोव उठ खड़ा हुआ और उसने द्वार खोल दिया। एक लम्बा मजबूत आदमी पुलिस-कप्तान की वर्दी पहने हुए कमरे के बीच में आ गया और उसने कठोरता से कहा, "मित्या फ्योदोरोविच करामजोव, मैं तुम्हें अपने पिता की हत्या करने के अपराध पर गिरफ्तार करता हूं।"

अल्योशा ने कहा, "वह निरपराध है !"

ईवान ने पूछा, "तुम्हारे पास इसका प्रमाण भी है ?"

अल्योशा उसी समय मित्या से बन्दीगृह में मिलकर आया था। उसने कहा, "उसने मुझसे स्वयं कहा है और मैं उसका विश्वास करता हूं। ईवान ! जब उन्होंने उसको गिरफ्तार किया था तब वह स्वयं नहीं जानता था कि उसने अपने पिता की हत्या की थी। उसे विचार आया था कि शायद उन लोगों ने ग्रिगेरी को ही उसका पिता समझ लिया था। उसे केवल ग्रिगेरी की हत्या की अत्यधिक चिन्ता हो रही थी, लेकिन उन लोगों ने बताया कि ग्रिगेरी का घाव भयानक नहीं था और वह ठीक हो जाएगा।"

"और स्मरद्याकोव कैसा है ?" ईवान ने पूछा।

"वह बिलकुल ठीक है, उसका दौरा तो सुबह तक चलता रहा और वह बिलकुल निर्बल होकर पड़ा रहा, और तभी यह भयानक खबर आई।...."

ईवान ने बीच में ही रोककर कहा, "मैं चलता हूं और उसे देखना चाहता हूं।"

"लेकिन वह तो मेरिया कोंद्रोनेवना के घर पर है, क्योंकि हमारे पिता के घर में उसकी देखभाल करनेवाला कोई भी नहीं था।"

दोनों भाइयों ने अगले दिन स्मरद्याकोव से भेंट करने की योजना बनाई। अगले दिन मेरिया के घर में स्मरद्याकोव से मिलने के लिए ईवान गया।

स्मरद्याकोव अपना ड्रेसिंग गाउन पहने एक पुराने सोफे पर लेटा हुआ था। उसकी आंखें मटमैली और कुछ विषादयुक्त थीं। आंखों के नीचे के गड्ढे स्याह दिखाई दे रहे थे।

ईवान ने कहा, "तुम्हें इस तरह बीमार देखकर मुझे अफसोस होता है।"

स्मरद्याकोव ने आश्चर्य से उसकी ओर देखकर कहा, "तुम भी तो पहले जैसे ठीक दिखाई नहीं दे रहे हो, पीले पड़ गए हो, और तुम्हारे हाथ कांप क्यों रहे हैं ? श्रीमान ईवान, आप इतने बेचैन क्यों हैं ? क्या इसलिए कि कल से मुकदमा शुरू होनेवाला है ? घर जाइए और आराम से सो जाइए। किसी बात के लिए डरने की वजह नहीं।"

ईवान ने आश्चर्य से कहा, "मैं तुम्हारी बात नहीं समझा, मेरे लिए डरने की बात भी क्या है ?"

स्मरद्याकोव ने उत्तर दिया, मानो वह अपने-आपमें बड़बड़ा रहा हो, "मैं तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं कहूंगा, कोई भी प्रमाण मौजूद नहीं है। मैं कहता हूं कि तुम्हारे हाथ इतने कांप क्यों रहे हैं ? घर जाओ, और सो जाओ। किसी तरह का भी डर मत करो। तुम्हारा कुछ भी नहीं होगा।"

ईवान उठ खड़ा हुआ और उसने उसके कंधों को पकड़कर कहा, "मुझे हर बात बता दे कुत्ते, मुझे सच बात बता !"

स्मरद्याकोव की आंखों में एक पागलपन उभर आया था और उसकी इधर-उधर घूमती आंखें मानो घृणा बरसाने लगीं। उसने फुसफुसाकर कहा, "अच्छा, तो तुम्हीं ने अपने बाप की हत्या की थी ! बोलो, ठीक कहता हूं न ?"

ईवान एक नीरस हास्य के साथ अपनी कुर्सी पर बैठ गया और बोला, "मैं चर्मासिया चला गया था, और वृद्ध को बिना किसी सहायक के छोड़ गया था, इसलिए तुम मुझसे ऐसा कहते हो ?"

स्मरद्याकोव की आंखें पूरी तरह खुल गईं। उसने कहा, "अरे, अब इस तरह का बातें बनाने से फायदा ही क्या है ! तुम मेरे ही गुह पर मुझी पर सारी बात थोप देना चाहते हो। तुम असली हत्यारे थे ! मैं तो सिर्फ तुम्हारा औजार था। क्योंकि मैं तुम्हारा वफादार नौकर था। मैंने अपनी ओर से कुछ नहीं किया, मैं तो केवल तुम्हारी आज्ञा का पालन कर रहा था।"

ईवान का जैसे लहू ठंडा हो गया। उसने लड़खड़ाते स्वर से पूछा, "तुमने क्या किया ?"

"मैंने…," स्मरद्याकोव ने कहा, "उसके सिर पर चोट की ! यह देखो !" यह कहकर उसने अपने ड्रेसिंग गाउन के अन्दर कुछ खोजा और नोटों का बंडल निकालकर

मेज पर फेंक दिया।

ईवान ने देखा तीन बण्डल थे और हर एक में एक-एक हज़ार रूबल के नोट थे।

ईवान ने उतावली से पूछा, "तुमने ऐसा कैसे किया ?" उसका चेहरा बिलकुल सफेद हो गया था।

"आठ बजे थे। कल रात में मैं दौरे की वजह से तहखाने की सीढ़ियों पर गिर पड़ा। लेकिन वह मेरा असली दौरा नहीं था। मैंने इस तरह एक नकली खेल खेला था। ग्रिगेरी मुझे उठाकर मेरे बिस्तर पर छोड़ आया था। तुम तो जानते हो कि मेरा शयन-कक्ष उसके शयनकक्ष के बिलकुल बगल में है। थोड़ी देर में आंखें झपकाए रहा और तभी मुझे मालिक की आवाज़ सुनाई दी, 'मित्या आया था ! वह भाग गया है ! उसने ग्रिगेरी की हत्या कर दी है !' मैंने जल्दी से कपड़े पहने और बाग में भागकर गया। मैंने देखा, बाड़ के पास ग्रिगेरी बेहोश पड़ा था। तभी मैंने सोचा बूढ़े करामज़ोव को मारने का इससे अच्छा अवसर नहीं आ सकता—मित्या यह काम (ग्रिगेरी की हत्या) कर गया है; अतः हर कोई यही सोचेगा कि दूसरा काम (बूढ़े करामज़ोव की हत्या) भी उसीने किया होगा। मैं तुरन्त मालिक के कमरे में गया। वे खाली खिड़की के पास खड़े हुए थे। मैंने बड़बड़ाकर कहा, 'ग्रूशंका यहां आ गई है।' ओह ! मेरा यह कहना था कि वृद्ध के मुख पर एक विचित्र भाव आ गया, मानो आवेश के कारण उसकी नसें फटने-फटने को हो गई थी। 'कहां है वह, कहां है वह ?' उन्होंने मुझसे कहा। मैंने कहा, 'उस झाड़ी में। वह आपको देखकर हंस रही है। क्या आप उसे नहीं देख सकते ?' यह सुनकर मालिक खिड़की से बिलकुल बाहर की तरफ झुक गए। मैंने उसकी मेज पर से लोहे का पेपरवेट उठा लिया। तुम तो जानते हो ना कि उसका वज़न तीन पौंड है, और मैंने ज़ोर से उसे उनके सिर पर दे मारा। वे चिल्ला भी नहीं सके। उनकी मृत्यु को और निश्चित कर लेने के लिए मैंने दो भयानक आघात और किए। तब मैंने अपने-आपको देखा कि मैं कितना साफ था। मुझपर खून की एक बूंद भी नहीं थी। मैंने पेपरवेट को फेंक दिया और उसे ऐसी जगह छुपा दिया—ईवान तुम कुछ चिन्ता मत करो—उसे कोई नहीं ढूंढ सकता और तभी मैंने वह धन ले लिया। मित्या उस धन को कभी ढूंढ भी नहीं सकता था। बूढ़े और मेरे सिवाय कोई भी नहीं जानता था कि वह किस कोने में छिपाकर रखा जाता था। मैंने लिफाफे को खोल डाला। नोटों को निकाल लिया और लिफाफा फाड़कर फर्श पर फेंक दिया।"

ईवान चिल्लाया, "ठहरो, तुमने लिफाफे को नीचे क्यों पटक दिया ?"

स्मरद्याकोव ने मुस्कराकर कहा, "ताकि जासूसों को अपने से दूर रख सकूं। हर कोई जानता था कि मुझे उस लिफाफे के बारे में मालूम है, क्योंकि मैंने ही उसके अन्दर सारे नोट रखे थे, मोहर लगाई थी और उस नीच बुड्ढे के कहने से मैंने ही उसपर लिखा था, 'मेरी प्रिय ग्रूशंका के लिए।' अगर मैं लिफाफा चुरा लेता तो जासूस लोग यह सोचते कि मैं जब भी उस लिफाफे को पाऊंगा तुरन्त जेब में रख लूंगा, उसे खोलूंगा नहीं, क्योंकि मुझे मालूम ही था कि उसके अन्दर क्या था। मित्या को तो लिफाफे के बारे में एक उड़ती हुई खबर मिली थी, उसने उसे देखा तो नहीं था, और अगर वह उसे लेता तो

अपने को यकीन दिलाने के लिए, कि धन उस लिफाफे के अन्दर था, वह जरूर उस लिफाफे को खोलता और नीचे फेंक देता। क्योंकि मित्या के पास इतना समय न होता कि वह इस बारे में कुछ सोचता कि यह फटा लिफाफा उसके विरुद्ध प्रमाण बन जाएगा।"

ईवान खड़ा हो गया और बेचैनी से कमरे में कई मिनट तक टहलता रहा। फिर वह रुक गया और फिर उसने स्मरद्याकोव की तरफ ऐसे देखा जैसे वह उसकी हत्या करेगा। उसने रुककर कहा, "शैतान, मैं इन नोटों को लेकर सीधे पुलिस के पास जा रहा हूं और मैं उन्हें सारी बात बता दूंगा!"

स्मरद्याकोव ने जम्हाई ली और कहा, "बेकार कष्ट मत करो। नोटों के नम्बर किसीको नहीं मालूम थे और न मालूम हैं। ये तो किसीके भी नोट हो सकते हैं, तुम्हारे भी हो सकते हैं और जो कहानी मैंने तुम्हें बताई है उसके लिए एक भी सबूत तुम्हारे पास नहीं है।"

ईवान की आंखें चमक उठीं और उसने कहा, "जब तुम मेरे पिता के कमरे में से निकल आए तो तुमने क्या किया?"

"मैंने कपड़े उतारे और मैं अपनी शय्या पर चला गया। जबकि बगीचे से लौट-कर ग्रिगेरी लड़खड़ाते हुए आया तो उसने मुझे खड़े हुए देखा।"

ईवान ने विजय के स्वर से कहा, "अब मैंने तुम्हें पकड़ लिया। ग्रिगेरी ने जरूर देख लिया होगा कि तुम महज दौरा पड़ने का मक्कर मार रहे हो—क्योंकि इतनी देर तक कोई भी आदमी मिरगी के दौरे का बहाना नहीं कर सकता।"

स्मरद्याकोव ने सिर हिलाकर कहा, "ठीक कहते हो। लेकिन जब मैं शय्या पर लौटकर गिरा, ठीक उसी समय मुझे असली दौरा आ गया—शायद इतना बड़ा जो आवेश मेरे भीतर भर गया था, उसने मुझे सचमुच पागल कर दिया था।"

ईवान के माथे पर की नसें जैसे तन गईं। कुछ देर तक वह बोलने के लिए बेकार चेष्टा करने लगा और वह स्मरद्याकोव को देखकर चिल्लाया, "अभी तुम्हारी पूरी जीत नहीं हुई। मैं अभी पुलिस को यहां लाता हूं और भगवान साक्षी है कि तुम्हारे अन्दर से सारी सच्चाई किसी न किसी तरह से निकलवा ली जाएगी।"

स्मरद्याकोव की हंसी झनझना उठी। उसने कहा, "अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो ऐसा कभी नहीं करता। यह तो बिलकुल बेकार है, इससे फायदा ही क्या है। और हम दोनों के लिए यह कोई सुखद समाचार भी नहीं है। मुझे निश्चय से मालूम है कि तुम केतरीना इवानोवना को यह बताना नहीं चाहते थे कि तुम चर्माश्नेया क्यों.गए थे। मुझे मालूम है, तुम उसे प्यार करते हो। जब से मित्या उसे छोड़ गया था तुम उससे मिलने रोज जाया करते थे। सुनो, मैं तुम्हारी हिम्मत बढ़ानेवाली एक बात कहता हूं, वह भी तुम्हें प्यार करती है। आज सुबह वह मुझसे मिलने आई थी तो उसने मुझसे यह कहा था। इसलिए, मेरे प्यारे ईवान, घर लौट जाओ और तुम आराम से सोओ और मीठे सपने देखो।"

जब स्मरद्याकोव के घर से ईवान चला तो उसमें दुतरफा भावों की मार चल रही थी। मानो वह एक तूफान में घिर गया था और समझ नहीं पा रहा था कि क्या

करे। वह सड़क पर चलने लगा। वह सोचता जा रहा था कि केतरीना उसे प्यार करती है, मित्या निरपराध है—लेकिन वह एक बेकार का आदमी है, उसके फांसी हो जाने में कोई हर्ज नहीं है। लेकिन एक बात और भी तो थी कि वह उसका भाई था और हर हालत में उसे उसकी जान बचानी थी।

पुलिस स्टेशन के सामने ईवान मन में आशंका लिए डावांडोल-सा खड़ा रहा और फिर उसने अपने कंधे हिलाए, मानो सारे बोझ को अपने से दूर कर देना चाहता हो और फिर वह अपने घर की ओर चल पड़ा।

अनिश्चय की भावना में वह घण्टों अपने कमरे में घूमता रहा। तभी दरवाजे पर थपथपाहट सुनाई दी। उसने द्वार खोला।

सामने अल्योशा खड़ा था; उसने पूछा, "तुम अकेले हो?"

अल्योशा के मुख पर एक पवित्रता थी—एक अटूट शान्ति विराजमान थी, ऐसी कि ईवान ने कभी पहले देखी नहीं थी। वह उस पवित्रता को देखकर हतबुद्धि-सा रह गया। अचानक ही पागल की तरह वह हंस उठा और बोला, "अकेला नहीं हूं, शैतान मेरे साथ है!"

अल्योशा उसकी ओर करुणा-भरे नेत्रों से देखता रहा और उसने कहा, "ईवान, तुम बीमार हो गए हो। ऐसा लगता है, मुझे तुम्हारी देखभाल करनी होगी। तुम्हें ज्वर भी है। और दूसरे, मैं तुम्हारे लिए एक बड़ा गम्भीर सम्वाद लाया हूं।…स्मरद्याकोव ने अभी-अभी अपने गले में फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली है!"

न्यायालय में जज के आने के पहले ही ठसाठस भीड़ हो रही थी। मॉस्को और पीटर्सबर्ग जैसे सुदूर स्थानों से भी दर्शक आए थे। उनमें कितनी ही उच्चकुल की महिलाएं थीं। दूर-दूर तक मित्या के नाम की धूम मच गई थी कि वह स्त्रियों का हृदय जीतने में सिद्धहस्त है। अतः स्त्रियों को उसके प्रति बड़ा कौतूहल था। धीरे-धीरे फुसफुसाती आवाजें चुप हो गईं; और जब मुकदमा शुरू हुआ, चारों ओर ऐसी घोर निस्तब्धता छा गई कि एक पत्ता भी हिलता तो उसकी सरसराहट सुनाई देती। सरकारी वकील बड़े जोर-शोर से बोलने लगा और उसने न जाने कितनी गवाहियां, कितने प्रमाण मित्या के विरुद्ध एकत्र कर दिए—मित्या अपने पिता से घृणा करता था, हत्या करने के पहले उसने अपने पिता पर आक्रमण भी किया था, ग्रुशेन्का के पास पहुंचने के लिए उसे धन की अत्यन्त आवश्यकता थी, हत्या के समय वह बाहर मौजूद था, ग्रिगोरी ने अपनी गवाही दी थी, खून में भीगा हुआ मूसल मिला था, फटा लिफाफा वहां पड़ा था, इस प्रकार के अनेक प्रमाण थे जो सब अपराधी के विरुद्ध बोलते थे। जब मित्या गिरफ्तार हुआ तो उसके पास कुल सौ रूबल ही थे। अगर मान लिया जाए कि मोकरो में उसने जश्न में ज्यादा धन खर्च किया था तब भी कम से कम दो हजार रूबल तो उसके पास बाकी होने ही चाहिए थे। वकील ने उससे पूछा, "बाकी धन का तुमने क्या किया? क्या तुमने उसे शहर में कहीं छिपा दिया?"

मित्या ने दृढ़ता से उत्तर दिया, "मैं तुमसे सौ बार कह चुका हूं कि मैंने वह धन

नहीं किया।" इस समय वह एक बिलकुल नया फ्रोक कोट (मर्दाना लंबा कोट) पहने था। उसके हाथ पर बकरी के बच्चे की नरम खाल के काले दस्ताने चढ़े हुए थे। यद्यपि ये उसके जीवन के गम्भीर क्षण थे, लेकिन तब भी उसे इस बात का ध्यान था कि जो 'लिबास' वह पहने हुए था, उसने उसके सौंदर्य को द्विगुणित कर दिया है। उसे पता था कि न्यायालय में स्त्रियां उसके प्रति किस प्रकार आकर्षित हो रही हैं। उसने फिर कहा, "मैं जब मोकरो की ओर चला था, तब मेरे पास केवल १५०० रूबल थे। केतरीना इवानोवना ने जो मुझे तीन हजार रूबल दिए थे उसमें से केवल यही मेरे पास बच रहे थे।" यह कहते हुए उसके नयन लज्जा से झुक गए।

"तुम अपना धन कहां रखा करते थे।" वकील ने अगला सवाल किया।

"एक छोटे-से कपड़े के बटुए में, जिसे मैं तनियों से बांधकर गले में लटकाए रखता था।"

"तुमने उस बटुए का क्या किया ?"

"मैंने उसे मोकरो के बाजार में फेंक दिया था।"

विजय की भावना से वकील ने चारों ओर गर्व से देखा, मानो उसने एक नई खान निकलवा ली थी, और अपनी कुर्सी पर बैठ गया। तब मित्या की ओर से वकील खड़ा हुआ—फेत्यूकोविच। वह एक लम्बा, दुबला व्यक्ति था, उसकी दाढ़ी-मूंछ बिलकुल साफ थी और उसे देखकर ऐसा लगता था कि जैसे यह आदमी कभी भी परिभ्रांत होना नहीं जानता हो।

कचहरी में एक फुसफुसाहट की लहर दौड़ गई। किसीने कहा, "कहते हैं यह अद्भुत वक्ता है, बड़ा चतुर है!"

फिर किसी स्त्री ने धीरे से बड़बड़ाकर कहा, "लेकिन सरकारी वकील का केस ऐसा नहीं है कि यह उसको हरा सके।"

मित्या के वकील ने फिर से एक-एक गवाह को बुलाया और उससे जिरह की। पहले तो जज ने उसके प्रश्नों को व्यर्थ समझा किन्तु थोड़ी ही देर में यह साबित हो गया कि उसके तर्क-वितर्क यह प्रमाणित कर सकते हैं कि देखने को तो मित्या के विरुद्ध सब कुछ सच प्रतीत होता है, लेकिन अगर सबको मिलाकर देखा जाए तो उन गवाहों की बातों में कोई तारतम्य नहीं था। अलग-अलग परीक्षा लेते समय सारा केस जैसे टुकड़े-टुकड़े हो गया। उसने अनेक गवाहों की धज्जियां उड़ा दीं। त्रिफन बोरिसोविच को उसने एक झूठा गवाह प्रमाणित कर दिया और ग्रिगेरी के मुंह से ऐसी विरोधी बातें निकलीं कि न्यायालय में लोग देख-देखकर हंसने लगे और उसके बाद उसने अकस्मात् ही अल्योशा को गवाहों के कटघरे में बुलाया।

पहले सरकारी वकील ने उससे पूछताछ की। उसने पूछा, "क्या तुम यह विश्वास करते हो कि तुम्हारे भाई ने तुम्हारे पिता की हत्या की है ?"

अल्योशा ने जोर से स्पष्ट स्वर में कहा, "बिलकुल गलत! मैं उसे बिलकुल निरपराध मानता हूं। उसने हत्या नहीं की!"

सनसनी की एक लहर न्यायालय में दौड़ गई। प्रत्येक व्यक्ति अल्योशा से प्रेम

करता था और उसका सम्मान भी। लोग जानते थे कि वह किसी भी अवस्था में भूठ नहीं बोल सकता था। सरकारी वकील गुस्से से लाल हो गया। उसने पूछा, "तुम्हारे पास अपने भाई के निरपराध होने का क्या प्रमाण है जो तुम इतने निश्चय से यह बात कहते हो?"

"मैं जानता हूं," अल्योशा ने कहा, "वह मुझसे भूठ नहीं कह सकता। मैंने उसके मुख पर देखा था, वहां अपराध की कलुषित छाया नहीं थी।"

वकील ने कहा, "यह बात तुमने केवल उसके चेहरे को ही देखकर कही है? क्या यही तुम्हारे पास एकमात्र प्रमाण है?" वकील के स्वर में व्यंग्य फूट निकला।

अल्योशा ने सिर हिलाकर कहा, "हां, मेरे पास और कोई प्रमाण नहीं है, और न मुझे किसी प्रमाण की आवश्यकता ही है।"

सरकारी वकील हंसा और बैठ गया। और किसी भी तथ्य से मित्या का निरपराध होना साबित नहीं हो रहा था, लेकिन उसका वकील खड़ा हो गया। यह जानता था कि अल्योशा के शांत सत्य ने जूरी पर अपना प्रभाव डाल दिया है। उसने फिर सरकारी वकील के ऊपर एक नया प्रहार किया। उसने अल्योशा से पूछा, "क्या मित्या के गले में कैतरीना इवानोवना द्वारा दिया धन बटुए में लटका रहता था?"

अल्योशा ने कहा, "मैंने वह बटुआ कभी नहीं देखा। लेकिन जिस दिन मित्या मोकरो जाने वाला था उसके एक दिन पहले मैंने यह जरूर देखा था कि मित्या बार-बार अपने सीने पर हाथ रखता था, और कहता था, 'यहीं मेरे पास, इस जगह वह सब कुछ है, जिसकी मुझे आवश्यकता है।' पहले मैं समझा कि वह अपने दिल को ही ठोक-ठोककर मुझे दिखाने की चेष्टा कर रहा था। पर फिर मैंने गौर किया तो मुझे पता चला कि गरदन के नीचे कुछ चीज फूली हुई सी थी। हो सकता है, वह उस छोटे बटुए की तरफ ही कुछ इशारा कर रहा हो।"

मित्या अपनी कुर्सी से उठकर चिल्लाया, "ठीक कहते हो अल्योशा, मैंने उस बटुए को ही अपने हाथ से दबाया था!"

ऐसा प्रमाण भी यदि किसी दूसरे गवाह के मुंह से आया होता तो वह उपहासास्पद दिखाई देता, लेकिन अल्योशा के बारे में लोगों का दूसरा ही मत था। न्यायालय में अधिकारीगण भी उसकी बात का सम्मान करते थे। चारों ओर फिर फुसफुसाहट होने लगी और किसीने स्पष्ट कहा, "शायद मित्या छूट जाए।"

ईवान को न्यायालय में बुलाया गया। उसके चेहरे पर मुर्दनी-सी छाई हुई थी। एक बार उसने अपनी आंखें मूंद लीं, फिर जैसे वह हिल उठा और यदि ठीक समय पर वह सामने की छड़ को नहीं पकड़ लेता तो शायद गिर जाता।

सरकारी वकील उससे प्रश्न करने के लिए उठा, लेकिन इससे पहले कि सरकारी वकील कुछ बोलता ईवान ने अपने अन्दर की जेब से नोटों की एक गड्डी निकाली और उसे मेज़ पर फेंक दिया—जहां पहले से अपराध-प्रमाण के रूप में पेश किया गया फटा लिफाफा पड़ा था और दूसरे अनेक प्रकार के मित्या को अपराधी प्रमाणित करनेवाले साधन एकत्रित किए गए थे। उस मेज़ पर नोटों की वह गड्डी जाकर शान्त

हो गई। फिर ईवान ने चिल्लाकर कहा, "यही नोट इस लिफाफे में से निकले थे। कल मैंने इनको पाया था।" और यह कहकर उसने फिर सिर उठाकर कहा, "कल ये मुझे हत्यारे स्मरद्याकोव से मिले थे। जब उसने अपने गले में फांसी लगाई थी उससे थोड़ी ही देर पहले मैं उसके साथ था। उसीने मेरे पिता की हत्या की थी, न कि मेरे भाई ने! उसने उनकी हत्या की थी, और मैंने उसे इसकी प्रेरणा दी थी। दुर्भाग्य से इन नोटों के नम्बरों का कहीं विवरण नहीं है, वे किसीके भी हो सकते हैं। लेकिन यह कितना विचित्र है, कितने नारकीय रूप से भयानक है!" और वह बौराए स्वर में हंस उठा, मानो वह अपने विकराल हास्य को रोक नहीं पाया था।

न्यायालय के अध्यक्ष ने कहा, "क्या तुम्हारा दिमाग ठीक है?"

"मैं समझता हूं कि मैं बिलकुल ठीक हूं। जिस प्रकार आप लोगों का दिमाग ठीक है। ये जो घृणित चेहरे यहां पर इकट्ठे हैं, जिनके अन्दर कुटिलताएं भरी हुई हैं, जिस प्रकार ये सब जागरूक हैं उसी प्रकार मैं भी सचेत हूं।" और यह कहते हुए उसने न्यायालय में न्यायकर्त्ताओं की ओर देखा और फिर वह गुर्राया, "मेरे पिता की हत्या कर दी गई है! और तुम इस तरह से देख रहे हो जैसे तुम डर गए हो…परन्तु यह सब झूठ है, तुम सब झूठे हो! यदि हत्या नहीं होती तो तुममें से किसीको चिन्ता भी नहीं होती! तुम लोगों के लिए यह सस्ती सनसनी की चीज़ है। अरे, मुझे कोई पानी दो! ईसामसीह के नाम पर मुझे कोई पानी पिलाओ!…" और उसने सिर को पकड़ लिया।

अल्योशा उठ खड़ा हुआ और चिल्लाया, "वह बीमार है! उसकी बात का विश्वास मत करो! मालूम होता है उसका दिमाग पागलपन की तरफ खिंच गया है।"

एक काले बालोंवाली स्त्री, जिसका मुख सुन्दर और आकर्षक था, अपनी जगह से उठ खड़ी हुई और भयभीत दृष्टि से ईवान की ओर टकटकी लगाकर देखने लगी, वह केतरीना इवानोव्ना थी।

ईवान ने फिर कहना शुरू किया, "तुम मत घबराओ, मैं पागल नहीं हूं, मैं केवल एक हत्यारा हूं! हत्यारा कोई अच्छा वक्ता नहीं हो सकता।"

सरकारी वकील अध्यक्ष के पास निराश-सा गया। बाकी दोनों न्यायाधीशों ने जल्दी-जल्दी कुछ परामर्श किया। अध्यक्ष ने आगे झुककर सुना और फिर कहा, "तुम बखूबी समझ सकते हो कि तुम्हारा बयान, तुम्हारे शब्द ऐसे नहीं हैं, कि जिनका कोई स्पष्ट अर्थ लगा सके। यदि हो सके तो पहले तुम अपने-आपको शांत करो और तब अपनी पूरी कहानी सुनाओ। जो कुछ तुमने कहा है उसके लिए तुम प्रमाण क्या दे सकते हो?"

ईवान ने कहा, "यही तो बात है, मेरे पास प्रमाण के लिए कुछ भी नहीं है। वह घृणित स्मरद्याकोव मर चुका है और अब उस परलोक से वह आपके पास कोई प्रमाण नहीं भेज सकता! अब उसका दूसरा लिफाफा नहीं आ सकता। मेरे पास कोई गवाह नहीं है। शायद एक है!…" यह कहकर वह गम्भीरतापूर्वक मुस्करा पड़ा जैसे कुछ सोच रहा हो।

"अपने गवाह को पेश करो।" अध्यक्ष ने कहा।

"श्रीमान, उसके पूंछ है और उसको कचहरी में लाना ठीक नहीं होगा, क्योंकि

कानून के पास शैतान के लिए जगह नहीं है !" ईवान ने ऐसे कहा, मानो वह कोई बड़ा भारी गुप्त रहस्य प्रकट कर रहा हो, "श्रीमान, वह यहीं है, यहीं कहीं है ! उसके पास सारे प्रमाण हैं और वह उस मेज़ के पीछे है। मैंने उससे कहा था कि मैं अपनी जीभ पर लगाम नहीं लगाऊंगा, और इसलिए वह मेरे साथ आ गया है, कि जो कुछ मैं कहूं उसको वह झुठलाता चले। ओह ! यह सारी मूर्खता कितनी विचित्र है ! मैं आपका आदमी हूं—अपराधी हूं, मैं मिरगा नहीं हूं। मैं यहां व्यर्थ के लिए तो नहीं आया। आप लोग प्रतीक्षा किसलिए कर रहे हैं ? मुझे पकड़ क्यों नहीं लिया जाता ? सब लोगों को क्या किसी मूर्खता ने पकड़ लिया है, कोई हिल क्यों नहीं रहा है ?"

न्यायालय के अर्दली ने ईवान की भुजा पकड़ ली। ईवान ने मुड़कर उसकी ओर घूरकर देखा और उसका कंधा पकड़कर उसे ज़ोर से पृथ्वी पर दे मारा। एक ही क्षण में पुलिस ने ईवान को घेर लिया। ईवान चिल्लाता हुआ हाथ-पैर चलाने लगा। वे लोग उसे न्यायालय से बाहर खींच ले चले।

कचहरी में सब लोग खड़े हो गए थे। सब लोग चिल्लाने लगे थे। कोई हाथ हिला रहा था। कई मिनट बीत गए, तब कहीं जाकर फिर से न्यायालय में शांति स्थापित हो सकी। अध्यक्ष लोगों से कुछ कहने ही लगे थे कि इसी समय कैतरीना ईवानोवना की तीखी और पैनी चीख गूंज उठी, जिसने अध्यक्ष की बात को रोक दिया। उसे दौरा पड़ गया था। वह बुरी तरह से रो रही थी, वह चिल्लाती थी और प्रार्थना करती थी "मुझे यहां से न हटाया जाए !" आखिर उसने अध्यक्ष से कहा, "अभी और भी सबूत हैं, जो मैं पेश करूंगी—यहां, यहीं पेश करूंगी ! यह एक दस्तावेज़ है, एक पत्र—इसे देखिए, इसे जल्दी से पढ़िए। मैंने इसे इस हत्या के एक दिन पहले पाया था। यह उस दैत्य का पत्र है—वह आदमी, जो वहां खड़ा है; वही अपने पिता का हत्यारा है !" यह कहकर उसने मित्या की ओर उंगली उठाई। वह फिर चिल्लाई, "ईवान बीमार है, वह बीमारी में पागल हो गया है !" वह बराबर यही चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगी।

पत्र को ज़ोर से पढ़कर सुनाया गया :

"कत्या,

कल मुझे रुपया मिल जाएगा और मैं तुम्हारे तीन हज़ार वापस कर दूंगा। फिर अलविदा ! यदि वहां मुझे कर्ज़ नहीं मिलेगा तो मैं तुम्हें यह वचन देता हूं कि मैं अपने पिता के पास जाऊंगा, उनका सिर तोड़कर उनके तकिये के नीचे से वह धन निकाल लूंगा—लेकिन एक शर्त पर, यदि ईवान वहां नहीं रहा तो। यदि मुझे इसके लिए साइबेरिया भी जाना पड़ा तो भी तुम्हारे तीन हज़ार वापस कर दूंगा। कत्या, ईश्वर से प्रार्थना करो, कोई न कोई मुझे वह धन दे दे, और तब मुझे कल की हत्या के लहू से भीगना नहीं पड़ेगा।

—मित्या"

क्लर्क ने ज्योंही पत्र पढ़ना समाप्त किया, इससे पहले कि उसे कोई रोक सके, ग्रूशका दौड़कर आगे आ गई। उसका चेहरा आंसुओं से भीगा हुआ था। उसके केश उसके कंधों पर बिखरे हुए थे। वह आर्त स्वर से चिल्ला उठी, "मित्या ! उस सांप ने तुम्हें नष्ट कर दिया है !"

सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और पीछे खींच ले चले, चूंकि वह मित्या के समीप जाने के लिए जगली पशु की भांति संघर्ष करने लगी थी। मित्या चिल्ला उठा और उसके निकट पहुंचने का प्रयत्न करने लगा, किन्तु उसको उसी समय सिपाहियों ने रोक लिया।

सब प्रमाण सुन लिए गए थे। अतः जूरी विचार करने के लिए उठ गई। अब निर्णय और दंड के विषय में लोगों को अधिक संदेह नहीं था। एक घंटे बाद घंटी बजी, और जूरी ने फिर से अपने स्थान को ग्रहण किया।

अध्यक्ष ने मृत्यु जैसी नीरवता में पूछा, "क्या अपराधी ने हां वस्तुतः हत्या की है?" जूरी का अगुआ स्पष्ट स्वर में बोल उठा, "हां, वह निःसंदेह अपराधी है!"

मित्या खड़ा हो गया और हृदयविदारक स्वर से चिल्ला उठा, "मैं ईश्वर की सौगंध खाकर कहता हूं, मैं कयामत के दिन की कसम खाकर कहता हूं, कि मैंने अपने पिता की हत्या नहीं की! कत्या, मैं तुम्हें क्षमा करता हूं। भाइयो, मित्रो, परायी स्त्रियों पर दया करो!"

प्रस्तुत उपन्यास 'परिवार और बन्धु' (द ब्रदर्स करामजोव) में लेखक ने पाप और पुण्य की बहुत सुंदर विवेचना की है। मनुष्य की वासना और तृष्णा के साथ ही उसके असीम दुःख और पीड़ा को भी स्पष्ट किया गया है। लेखक में उदासीनता है और वह आर्त मानव का चित्रण करने में सिद्धहस्त है।

अधूरा स्वप्न

[मादाम बावेरी[1]]

फ्लॉबेयर, गस्ताव : फ्रेंच कलाकार गस्ताव फ्लॉबेयर का जन्म १२ दिसम्बर, १८२१ को र्‌यून में हुआ था। आपके पिता पशु-चिकित्सक थे। गस्ताव एक सुन्दर व्यक्ति थे। आपने बहुत जल्दी ही निर्णय कर लिया कि आप लेखक बनेंगे। आप अपनी माता के प्रति इतने अधिक अनुरक्त थे कि आपने जीवन-भर विवाह ही नहीं किया। आप लेखन में डूबे रहते थे। मां विधवा थीं, अतः आप ही उसके सहारे थे। पेरिस में रहने के कुछ दिन बाद आपका निवास स्थान र्‌यून के पास ही क्रोइसेट नामक स्थान हो गया। वहां आपकी लुइज़े कोलेट नामक स्त्री से घनिष्ठता हो गई, परन्तु वह भी आपके साधुवत् जीवन से आपको बाहर नहीं ला सकी। अत्यधिक कार्य ने आपको जर्जर बना दिया। आप खाने-पीने के शौकीन थे, और बहुत अधिक मात्रा में शराब पीते थे। आपका स्वर्गवास १८८० ई० में हुआ।

'मादाम बॉवेरी' (अधूरा स्वप्न) आपकी एक बहुत प्रसिद्ध रचना है।

फार्म-हाउस के सामने की सड़क के पार एक आदमी खड़ा था। रसोई की खिड़की की ओर देखते हुए उसके हृदय की गति बार-बार बढ़ जाती और रह-रहकर उसका शरीर कांप उठता था। उसी समय एक खड़खड़ाहट-सी सुनाई दी और खिड़की ज़ोर से खुल गई। बहुत दिनों के बाद आज उसके स्वप्नों के पूरा होने का दिन आ गया था। चार्ल्स बॉवेरी को पता चल गया कि एम्मा रोल्ट अन्त में उसकी पत्नी बनने के लिए तैयार थी। उन्होंने आपस में यही 'इशारा' तय किया था कि जिस दिन वह झटके के साथ खिड़की के पट खोल देगी उस दिन मानो वह चार्ल्स के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेगी। एम्मा चाहती थी कि उसका विवाह आधी रात के समय हो और चारों ओर दीपों का प्रकाश फैला रहे। लेकिन वृद्ध चार्ल्स किसान था, वह परम्परा की सारी रीतियों का निर्वाह करना उचित समझता था। उसने शादी के दिन अपने तैंतालीस मित्रों को निमंत्रित किया। अगले दिन दम्पती टास्टीज चले गए, जहां चार्ल्स का घर था। वहां वह हिकमत भी किया करता था। उसने वृद्ध रोल्ट के टूटे हुए पैर को जोड़ दिया था, इसलिए उसको वहां श्रेष्ठ डाक्टर माना जाता था। एम्मा और उसके पिता को यह नहीं मालूम था कि वह एक मामूली-सी चोट थी, जिसमें कि हड्डी साधारण तौर पर चटक गई थी। चार्ल्स

---

1. Madame Bovary (Gustave Flaubert)—इस उपन्यास का अनुवाद 'अधूरा स्वप्न' नाम से छप चुका है। अनुवादक हैं [illegible]

के सुख का प्याला मानो लबालब भर गया था। पति-पत्नी दोनों साथ-साथ खाते, सन्ध्या समय भ्रमण के लिए साथ-साथ जाते। एम्मा अकसर अपने हाथ ऊपर उठाकर अपने गहरे रंग के बालों को इकट्ठा किया करती; उसका टोप खिड़की के सहारे लटका रहता—और यह सब उसके पति को अनन्त सुख प्रदान करनेवाली वस्तु थी। अब तक उसे जीवन में मिला ही क्या था! जब वह स्कूल जाता था तो उसे यही अनुभूति होती थी कि उसके साथी उससे अधिक धनी और बुद्धिमान थे। वे उसके ग्रामीण उच्चारण पर हंसा करते थे और उसके कपड़ों का मज़ाक उड़ाया करते थे। बाद मे वह जब डाक्टरी पढ़ने लगा तो फिर वह अकेला रह गया। किसी भी दिन उसकी हालत ऐसी नहीं हुई कि वह किसी दुकान में काम करनेवाली लड़की को अपने साथ शाम को घुमाने ले जा सके। उसकी कोई प्रिया नहीं थी। इसके बाद उसने विवाह किया। उसकी माता ने उसके लिए एक विधवा चुन ली जो जब शय्या मे लेटी रहती तब भी उसके पांव बर्फ की तरह ठंडे रहते। विवाह के चौदह महीने के बाद वह उसे विधुर बनाकर चली गई थी। अब उसे अपने जीवन में एक सुन्दर सहारा मिला था—ऐसा, जिसको वह प्यार कर सके। उस स्त्री के बाहर जैसे उसके लिए संसार ही नहीं था और उसे मन ही मन यह खेद होता कि जितना उसे अपनी पत्नी से प्रेम करना चाहिए था उतना सम्भवतः वह नहीं करता था। और एम्मा की हालत यह थी कि हाथों की अगुलियों की पोरों से लेकर कंधों तक (समूची बांहो पर) और कंधों से लेकर गालों तक वह चुम्बनों से अटी रहती। इतना ही नहीं, कभी-कभी तो उसे मानपूर्वक अपने प्रेम-विभोर पति को पीछे धकेलना पड़ जाता। वैसे वह पति का प्यार पाकर मन ही मन प्रसन्न होती थी, पर ऊपर से नाराज़गिया दिखाती, मानो वह उसका पति नहीं, कोई बच्चा हो, जो उसे परेशान किया करता हो। विवाह के पहले वह समझती थी कि उसे चार्ल्स से प्रेम था किन्तु विवाह के उपरान्त उसे वह सुख नहीं मिला। वह जिस आनन्द की कल्पना करती थी वह मानो उसको मिला ही नहीं। और उसे लगने लगता कि उसने ऐसा विवाह करके एक भूल कर दी थी। वह सदैव इस बात पर आश्चर्य किया करती थी कि पुस्तकों में जो शब्द इतने सुन्दर लगते थे—वासना, आवेश, प्रेम—ये सब उसके जीवन मे क्यों नहीं आए थे!

तेरह वर्ष की अवस्था में उसके पिता ने उसे रूयून के कॉनवेंट में भेज दिया था। पहले तो वहा की विनम्र वैरागिनो के बीच जीवन उसे बड़ा अच्छा, सुहावना लगा। शान्त वातावरण था। वह जैसे मंत्रमुग्ध हो गई। वेदी पर सुगन्धिया फैलती और लोबान की मादक गध से उसका घ्राण तृप्त हो जाता। एक विचित्र रहस्यमय-सा आलस उसके रोम-रोम मे व्याप्त हो जाता। और न जाने वह कहां से कहा पहुच जाती! उसके बाद 'अपराधों की स्वीकृति' आई। यह काम उसे इतना अच्छा लगा कि अपराध न करते हुए भी वह झूठमूठ उनकी स्वीकृति करती। उनकी नई-नई कल्पना कर लेती। उपदेशक लोग जब रहस्यवादी ढग से तुलनाएं करते और उनके मुख से 'अनन्त विवाह', 'दूल्हा', 'दुलहन' आदि शब्द निकलते तो उसकी आत्मा के भीतर तक मानो एक मिठास-सी भर जाती।

एक वृद्धा, जो उनके कपड़ों की मरम्मत करने आती थी, बड़ी लड़कियों के लिए

अधूरा स्वप्न
[मादाम बावेरी[1]]

फ्लॉबेयर, गस्ताव : फ्रेंच कलाकार गस्ताव फ्लॉबेयर का जन्म १२ दिसम्बर, १८२१ को र्‌यून में हुआ था। आपके पिता शल्य-चिकित्सक थे। गस्ताव एक सुन्दर व्यक्ति थे। आपने बहुत जल्दी ही निर्णय कर लिया कि आप लेखक बनेंगे। आप अपनी माता के प्रति इतने अधिक अनुरक्त थे कि आपने जीवन-भर विवाह ही नहीं किया। आप लेखन में डूबे रहते थे। मां विधवा थीं, अतः आप ही उसके सहारे थे। पेरिस में रहने के कुछ दिन बाद आपका निवास स्थान र्‌यून के पास ही क्रोइसैट नामक स्थान हो गया। वहां आपकी लुइज़े कोलैट नामक स्त्री से घनिष्ठता हो गई, परन्तु वह भी आपके साधुवत् जीवन से आपको बाहर नहीं ला सकी। अत्यधिक कार्य ने आपको जर्जर बना दिया। आप खाने-पीने के शौकीन थे, और बहुत अधिक मात्रा में शराब पीते थे। आपका स्वर्गवास १८८० ई० में हुआ।

'मादाम बॉवेरी' (अधूरा स्वप्न) आपकी एक बहुत प्रसिद्ध रचना है।

फार्म-हाउस के सामने की सड़क के पार एक आदमी खड़ा था। रसोई की खिड़की की ओर देखते हुए उसके हृदय की गति बार-बार बढ़ जाती और रह-रहकर उसका शरीर कांप उठता था। उसी समय एक खड़खड़ाहट-सी सुनाई दी और खिड़की ज़ोर से खुल गई। बहुत दिनों के बाद आज उसके स्वप्नों के पूरा होने का दिन आ गया था। शार्ल्स बॉवेरी को पता चल गया कि एम्मा रोल्ट अन्त में उसकी पत्नी बनने के लिए तैयार थी। उन्होंने आपस में यही 'इशारा' तय किया था कि जिस दिन वह झटके के साथ खिड़की के पट खोल देगी उस दिन मानो वह शार्ल्स के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेगी। एम्मा चाहती थी कि उसका विवाह आधी रात के समय हो और चारों ओर दीपों का प्रकाश फैला रहे। लेकिन वृद्ध रोल्ट किसान था, वह परम्परा की सारी रीतियों का निर्वाह करना उचित समझता था। उसने शादी के दिन अपने तैतालीस मित्रों को निमंत्रित किया। अगले दिन दम्पती टास्टीज चले गए, जहां शार्ल्स का घर था। वहां वह हिकमत भी किया करता था। उसने वृद्ध रोल्ड के टूटे हुए पैर को जोड़ दिया था, इसलिए उसको वहां श्रेष्ठ डाक्टर माना जाता था। एम्मा और उसके पिता को यह नहीं मालूम था कि वह एक मामूली-सी चोट थी, जिसमें कि हड्डी साधारण तौर पर चटक गई थी। शार्ल्स

1. Madame Bovary (Gustave Flaubert)—इस उपन्यास का अनुवाद 'अधूरा स्वप्न' नाम से छप ही चुका है। अनुवादक हैं प्रकाश पण्डित, और प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।

सुख का प्याला मानो लबालब भर गया था। पति-पत्नी दोनों साथ-साथ खाते, सन्ध्या य भ्रमण के लिए साथ-साथ जाते। एम्मा अकसर अपने हाथ ऊपर उठाकर अपने गहरे के बालों को इकट्ठा किया करती; उसका टोप खिड़की के सहारे लटका रहता—और सब उसके पति को अनन्त सुख प्रदान करनेवाली वस्तु थी। अब तक उसे जीवन में ला ही क्या था! जब वह स्कूल जाता था तो उसे यही अनुभूति होती थी कि उसके थी उससे अधिक धनी और बुद्धिमान थे। वे उसके ग्रामीण उच्चारण पर हँसा करते थ ार उसके कपड़ों का मज़ाक उड़ाया करते थे। बाद में वह जब डाक्टरी पढ़ने लगा तो र वह अकेला रह गया। किसी भी दिन उसकी हालत ऐसी नहीं हुई कि वह किसी ान में काम करनेवाली लड़की को अपने साथ शाम को घुमाने ले जा सके। उसकी ाई प्रिया नहीं थी। इसके बाद उसने विवाह किया। उसकी माता ने उसके लिए एक धवा चुन ली जो जब शय्या में लेटी रहती तब भी उसके पांव बर्फ की तरह ठंडे रहते। वाह के चौदह महीने के बाद वह उसे विधुर बनाकर चली गई थी। अब उसे अपने वन में एक सुन्दर सहारा मिला था—ऐसा, जिसको वह प्यार कर सके। उस स्त्री के हर जैसे उसके लिए संसार ही नहीं था और उसे मन ही मन यह खेद होता कि जितना मे अपनी पत्नी से प्रेम करना चाहिए था उतना सम्भवतः वह नहीं करता था। और म्मा की हालत यह थी कि हाथों की अंगुलियों की पोरों से लेकर कंधों तक (समूची ांहों पर) और कंधों से लेकर गालों तक वह चुम्बनों से अटी रहती। इतना ही नहीं, कभी-कभी तो उसे मानपूर्वक अपने प्रेम-विभोर पति को पीछे धकेलना पड़ जाता। वैसे वह पति का प्यार पाकर मन ही मन प्रसन्न होती थी, पर ऊपर से नाराज़गियां दिखाती, मानो वह उसका पति नहीं, कोई बच्चा हो, जो उसे परेशान किया करता हो। विवाह के पहले वह समझती थी कि उसे चार्ल्स से प्रेम था किन्तु विवाह के उपरान्त उसे वह सुख नहीं मिला। वह जिस आनन्द की कल्पना करती थी वह मानो उसको मिला ही नहीं। और उसे लगते लगता कि उसने ऐसा विवाह करके एक भूल कर दी थी। वह सदैव इस बात पर आश्चर्य किया करती थी कि पुस्तकों में जो शब्द इतने सुन्दर लगते थे—वासना, आवेश, प्रेम—ये सब उसके जीवन में क्यों नहीं आए थे!

तेरह वर्ष की अवस्था में उसके पिता ने उसे रयून के कॉनवेंट में भेज दिया था। पहले तो वहां की विनम्र वैरागिनों के बीच जीवन उसे बड़ा अच्छा, सुहावना लगा। शान्त वातावरण था। वह जैसे मन्त्रमुग्ध हो गई। वेदी पर सुगन्धियां फैलतीं और लोबान की मादक गंध से उसका घ्राण तृप्त हो जाता। एक विचित्र रहस्यमय-सा आलस उसके रोम-रोम में व्याप्त हो जाता। और न जाने वह कहां से कहां पहुंच जाती! उसके बाद 'अपराधों की स्वीकृति' आई। यह काम उसे इतना अच्छा लगा कि अपराध न करते हुए भी वह झूठमूठ उनकी स्वीकृति करती। उनकी नई-नई कल्पना कर लेती। उपदेशक लोग जब रहस्यवादी ढंग से तुलनाएं करते और उनके मुख से 'अनन्त विवाह', 'दूल्हा', 'दुलहन' आदि शब्द निकलते तो उसकी आत्मा के भीतर तक मानो एक मिठास-सी भर जाती।

एक वृद्धा, जो उनके कपड़ों की मरम्मत करने आती थी, बड़ी लड़कियों के लिए

कॉनवेंट में चोरी-छिपे उपन्यास लाया करती। उन उपन्यासों में वासना से मत्त नारियों का वर्णन होता। उन उपन्यासों में पढ़ा करने वाले जंगलों के अन्दर आहें भरता, आंसू गिराता, कसमें खाना, कभी-कभी एम्मा की आंखों के सामने से गुजर जाता। और उन पुस्तकों में वह उन राज-दरबारियों के बारे में भी पढ़ती जो एक ओर मेमने से कोमल होते थे और दूसरी तरफ सिंहों से भी ज्यादा पराक्रमी। उस जमाने में उसने ऐसी पुस्तकें खूब पढ़ीं। अभागिनी मेरी स्टूअर्ट, जोन ऑफ आर्क, हिलोय आदि वीर नायिकाएं उसकी कल्पना में खेलने लगी थीं।

किन्तु, जब उसके पिता उसे लेने आए, उस समय कॉनवेंट छोड़ते समय उसे खेद नहीं हुआ। गिरजा उसे इसलिए अच्छा लगता था कि उसमें एक फूलों से भरा रहस्यवाद था जिसकी कल्पना भी उसे मनोरम प्रतीत होती थी; किन्तु प्रार्थनाएं, जीवन की नियमित मर्यादा और कठिन आचरण यह सब उसे अच्छा नहीं लगता था। जब वह घर आ गई तो पहले घर पर अपनी आज्ञा चलाकर सुख प्राप्त करने का साधन ढूंढ़ने लगी, किन्तु शीघ्र ही दिनों-दिन इस जीवन से वह ऊबने लगी और उसे फिर से कॉनवेंट की याद सताने लगी। जब चार्ल्स पहली बार उसके यहां आया उस समय तक उसकी आंखों का पर्दा फट चुका था, जैसे उसके पास सीखने के लिए कुछ भी बाकी नहीं रहा था, जैसे वह अपने जीवन के स्वप्नों को खो चुकी थी। चार्ल्स के आने से एक परिवर्तन हुआ। अपने मन की अनुभूतियों को उसने प्रेम में परिवर्तित करने की चेष्टा की, जैसाकि आज तक उसने प्रेम के बारे में पढ़ा था। अन्त में यह उसके जीवन में अवतरित होनेवाला था, किन्तु अब वह देख रही थी कि चार्ल्स अपने काले मखमली फ्रॉक-कोट (लम्बा मर्दाना कोट) पहने हुए अपने नुकीले होंठ और तंग जूतों में वह नहीं बन पाया था, जिसकी उसने कल्पना की थी। उसके स्वप्न का पति कोई और ही था। चार्ल्स की बातचीत उसे ऐसी लगती जैसे सड़क का कोई शोरगुल। उसके अन्दर कोई भी बात आकर्षक नहीं थी। भाव, हास्य या विचार कुछ भी चार्ल्स जगा नहीं पाता था। पुरुष को सब कुछ समझना चाहिए। उसे हर प्रकार के कार्यों में कुशल होना चाहिए। जिसमें वासना का महासागर लहरा रहा हो, उसमें कम से कम इतना सामर्थ्य तो होना चाहिए कि औरत को उसमें से पार करा सके। उसे जीवन की सुन्दरता के प्रति जागरूक होना चाहिए, जिससे वह औरत के सारे रहस्यों का उद्घाटन कर सके। लेकिन यह आदमी (चार्ल्स) मानो कुछ सीखना था न कुछ जानता था और न उसकी कोई कामना ही थी। वह यह समझता था कि जो [illegible] जीवन उसने एम्मा के लिए जुटा दिया था, वह उसके लिए बहुत काफी था। किन्तु चार्ल्स इसका पता नहीं था कि वह इसी बात से चिढ़ती थी। वह इसे अपने जीवन का अन्त नहीं मानती थी।

उसने यही चेष्टा की कि वह उससे प्रेम कर सके। जब आकाश में चांद आता और पूर्णिमा चांदनी [illegible] खिड़की खोलती तब वह उठती और उसे आंगन में ले जाती। वह उसे [illegible] गाती, कविताएं सुनाती और बजाती थी, [illegible] की तो भी तब उसके [illegible] के लिए [illegible]। किन्तु न तो कविता, न संगीत — कोई भी उसके जीवन की एकरसता का अन्त नहीं कर सका, और न उसके पति की भावुकता [illegible] का [illegible]

सका। उसे यह मन ही मन स्वीकार करना पड़ा कि शार्ल्स उसके प्रति एक सीमा में अनुरक्त था; और वास्तव में, उसमें प्रेम की ऊष्मा और गहराई नहीं थी।

इन्हीं दिनों वोबीएसार मार्क्विस दादरवेलिए ने पति-पत्नी दोनों को अपने यहां बॉल-नृत्य पर निमन्त्रित किया। वहां जो वैभव एम्मा ने देखा, उससे वह ठगी-सी रह गई! खूब राग-रंग उसके देखने में आया। वह इन सबसे इतनी प्रभावित हुई कि वहां से लौटने के बाद भी उस बॉल-नृत्य के विषय में ही सोचते रहना अब उसके लिए एक काम हो गया। वह सोते में से जाग उठती और अपने-आप याद करने लगती, 'अरे, मैं एक हफ्ते पहले गई थी, मुझे वहां गए पन्द्रह दिन हो गए! ओह, उस वातावरण में गए मुझे तीन हफ्ते हो चुके!' उस बॉल-नृत्य के दौरान मिले लोगों के चेहरे घुल-मिलकर अब उसकी स्मृति में धूमिल हो चुके थे। वहां सुनी संगीत की तानें भी धीरे-धीरे उसके कानों में अस्पष्टतर होती चली गईं। वहां हुई सारी बातें, सारी घटनाएं अब उसके सामने साफ नहीं थीं। लेकिन उसकी स्मृति बड़ी मादक थी, अत्यन्त व्याकुल कर देनेवाली।

शादी के प्रारम्भ में एम्मा अपने-आपको पियानो बजाने में लगाए रखती और शार्ल्स को बजा-बजाकर सुनाती। कभी वह चित्र बनाती। इस प्रकार वह अपने को व्यस्त रखने की चेष्टा किया करती थी। उसे सदैव अपने सौन्दर्य का ध्यान रहता। हमेशा सजी-बनी रहती। उसने यह भी प्रयत्न किया कि ग्रामीण लगनेवाले शार्ल्स के वस्त्रों में भी कुछ नागरिकता का प्रादुर्भाव हो। वह घर की एक-एक चीज को करीने से रखती। घर ऐसा सजा-सजाया बनाए रखती कि देखते ही बनता। लेकिन धीरे-धीरे उसकी आदतें भी बदलने लगीं। अब वे पुराने शौक उसके मन को बहलाने के लिए काफी नहीं थे। घर के सब काम उसने नौकरों पर छोड़ दिए। सारे दिन अपने कमरे में उदास पड़ी रहती। न पढ़ती, न सीना-परोना करती। यहां तक कि अब अपना शृंगार करने में भी उसे अधिक रुचि न थी। उसको समझना अब कठिन हो गया था—जैसे उसमें एक स्वेच्छा भर गई थी। उसका आचरण भी कुछ विचित्र हो गया था। गालों पर एक पीलापन छा गया था और कभी-कभी उसे दिल की धड़कन तकलीफ देने लगी। उसे एक तरह के दौरे आने लगे। या तो वह बहुत ज्यादा बात करती या फिर बिलकुल सन्नाटे में डूब जाती। हमेशा ही वह टास्टीज की निन्दा करती। यहां तक कि अन्त में शार्ल्स ऊब गया और उसने उस गांव को छोड़ देने का निश्चय किया। ऐसा निश्चय करना सहज बात नहीं थी। चार वर्ष वहां रहकर उसने वहां अच्छी-खासी प्रैक्टिस जमा ली थी। लेकिन अब जीवन की समस्या दूसरी थी और व्यावहारिक मनुष्य होने के नाते वह उनका हल निकालने लगा। दौड़-धूप करके और अच्छी आय करने के उपरान्त उसने न्यूचेटिल के कस्बे में जगह ढूंढ़ ली। जब उन्होंने टास्टीज छोड़ा, श्रीमती बॉवेरी उस समय गर्भवती थी।

जब वे लोग अपने नये घर में पहुंचे, सांझ घिर चुकी थी। आज जीवन में चौथी बार वह एक नई जगह में सो रही थी—पहली बार कॉनवेंट में, फिर टास्टीज में और फिर वोबीएसार में, और अब यहां न्यूचेटिल में—रात को अपने मायके के घर के अलावा किसी नये स्थान पर। इनमें से हर रात ने उसकी जिन्दगी में एक नया पहलू शुरू किया था। वह यह नहीं मानती थी कि हर नई जगह जीवन एक-सा ही प्रारम्भ

होगा और हर जगह यही बात दोहराई जाएगी। उसको यह लगा कि उसके विचार में दोनों खराब थे और एक अतीत की तुलना में उसके बाद का अतीत अच्छा हो गया था। इसीसे उसको आशा हो गई कि अब जो कुछ होगा सम्भवतः वह बीते हुए कल की तुलना में अधिक ही अच्छा होगा। लेकिन नये स्थान ने शार्ल्स के लिए परेशानियां खड़ी कर दीं। यहां मरीज़ पहले की तरह नहीं आते थे। हाल में उसने एम्मा के कपड़ों में बहुत अधिक खर्च कर दिया था और फिर घर बसाने में भी काफी खर्चा हुआ था। लेकिन जब वह एम्मा को देखता तो हर्ष से भर जाता। वह जानता था कि कुछ दिन बाद वह मां होने वाली थी और इस बात से उसका हृदय गर्व से भर जाता था। इस विषय में जब भी वह सोचता एक कृतज्ञता की भावना उसके अन्दर भर जाती। उसके प्रति उसे अत्यन्त स्नेह हो गया था और अन्य सारे विचारों को वह अपने दिमाग से दूर कर देता। एम्मा ने जब अपनी इस नई परिस्थिति को देखा तो वह जैसे पागल-सी हो गई। लेकिन बाद में यह भावना बदल गई। उसके अन्दर एक कौतूहल-सा जाग उठा। वह जानना चाहती थी कि मां होकर वह कैसा अनुभव करेगी। वह एक पुत्र चाहती थी—सुन्दर और दृढ़; और वह उस बच्चे में अपने जीवन के बीते हुए सारे व्यर्थ दिनों को सहेज लेगी और जो कुछ भी उसमें अभाव था उसे पूरा कर लेगी। पुत्र की यह नई कल्पना उसे एक विचित्र प्रकार से सुख देने लगी। किन्तु भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया। उसने एक कन्या को जन्म दिया। लड़की का नाम उसने रखा बर्थ। उसको याद आया कि इस नाम की एक युवती को उसने बॉल-नृत्य में देखा था। वृद्ध रोल्ट की जगह होमे नाम का एक केमिस्ट आ गया था। उसके साथ एक तरुण सॉलिसिटर क्लर्क एनलीयो आया था जो पेरिस में वकालत करने से पहले अपने अध्ययन को पूर्ण कर रहा था। एम्मा जब उससे मिली तो मन ही मन एक विचित्र आनन्द उसे हुआ। वह भी पेरिस का दीवाना था। गांव के लोग उसे पसन्द नहीं थे। उसे कविता पसन्द थी और श्रीमती बॉवेरी से उसकी रुचि इस बात में मिल गई थी कि वेदनात्मक जर्मन गीत उसे भी उतने ही प्रिय थे जितने श्रीमती बॉवेरी को। उसके जीवन में भी ऐक्टर, सगीत, अच्छे वस्त्र और ऐसी ही वस्तुओं की भरमार थी जो श्रीमती बॉवेरी के कल्पनालोक में सदैव विद्यमान रहती थीं। उसको यह देहाती जीवन पसन्द नहीं था। इतनी सुन्दर स्त्री को वहां देखकर उसे लगा, जैसे सही मायनों में उसका जीवन अब प्रारम्भ हुआ हो। यह स्त्री उस देहात से बिलकुल अलग थी। वह बॉवेरी परिवार में अकसर आने लगा, लेकिन जब उसे मालूम पड़ा कि शार्ल्स को उसका आना-जाना पसन्द नहीं है तब वह यह नहीं सोच पाया कि वह शार्ल्स को कुछ किए बिना वहां कैसे पहुंचे और यह भी वह जानता था कि एम्मा उसके प्रति अनुरक्त थी। लेकिन हर संध्या को उसे दवाखाने में उससे मिलने का एक न एक अवसर प्राप्त हो जाता। शार्ल्स और होमे वहां खेला करते थे और लीयो और एम्मा चिमनी की आग के पास बैठे हुए स्त्रियों की फैशनेबल पत्रिकाओं में से कविताएं पढ़ते रहते। अपने पढ़े हुए उपन्यासों के बारे में विचार-विनिमय करते। इस प्रकार उन दोनों के बीच में एक सम्बन्ध स्थापित हो गया। प्रेम-कथानकों के विषय में बार-बार बात करते-करते उनमें एक अजीब-सा सम्बन्ध पैदा हो गया। इस बढ़ती हुई मित्रता को देखकर उसके पति को कोई ईर्ष्या नहीं

हुई क्योंकि उसका यह स्वभाव नहीं था। अचानक एम्मा ने यह अनुभव किया कि वह उस तरुण के प्रेम में पड़ गई थी। वह सोचने लगी कि उसके जीवन में एक नया अध्याय खुल गया था। वह सुन्दर था। उसके केशों में भी एक कोमलता थी। वह सोचने लगी कि उसके प्रेम का प्रत्युत्तर मिल रहा था और हृदय की गहराई में से एक आवाज़ उठी, 'काश, यह हो सकता!' फिर उसे विचार आया कि ऐसा क्यों नहीं हो सकता, उसे रोकनेवाला है ही कौन?

इस विचार-मात्र ने कि वह प्रेम में थी उसमें एक नया परिवर्तन भर दिया। उसने संगीत का बिलकुल परित्याग कर दिया ताकि वह घर की देखभाल अच्छी तरह कर सके। बचपन में ही बच्चे की देखभाल एक धाय किया करती थी। अब वह स्वयं उसकी देखभाल करने लगी और पति के प्रति उसमें एक नई अनुरक्ति आ गई। बाहर वह बिलकुल शांत थी, गम्भीर और विनम्र; लेकिन भीतर ही भीतर घृणा और क्रोध जैसे उसे खाए जा रहे थे और वह सारा जोश धीरे-धीरे चार्ल्स के विरुद्ध इकट्ठा होने लगा। चार्ल्स उसके इस आंतरिक क्षोभ की बात बिलकुल नहीं जानता था। यदि चार्ल्स उसे मारता और अपने से घृणा करने का कोई कारण देता, अपने ऊपर प्रतिहिंसा उतारने का कोई सुयोग देता तो कितना अच्छा होता। कभी-कभी उसे अपने विचार स्वयं डराने लगते। वे कितने भयानक थे! जब वह उनके बारे में सोचती तो स्वयं आश्चर्य से चकित रह जाती और अपनी ही कल्पना से अपने-आप भयभीत हो जाती। तब शांति के लिए उसने गिरजे की ओर निगाह उठाई। किन्तु बेचारा पादरी अत्यधिक कार्य-व्यस्त था। वैसे ही लोगों से परेशान रहता था। वह जो उससे दबी-मुंदी बातें कहती उन पहेलियों को सुलझाने का उसके पास समय नहीं था और न उसमें इतनी सामर्थ्य ही थी कि उसके रहस्यमय वाक्यों समझ सके।

लीयो की परिस्थिति दूसरी थी। उसको लगता था कि वह अत्यन्त पवित्र थी और धीरे-धीरे उसने यह जान लिया कि उसको प्राप्त करना उसके लिए असम्भव ही था। उसने उसका परित्याग कर दिया, किन्तु ऐसा करते समय भी उसने उसकी स्थिति की कल्पना की और उसको 'मैडेना' का गौरवमय नाम दिया, जिस तक पहुंच सकना कठिन था, क्योंकि उसकी पावनता का स्पर्श करना भी एक पाप के समान था। इसके बाद उसके लिए वहां रहना कठिन हो गया और उसने पेरिस जाने का निश्चय कर लिया।

केमिस्ट के घर से इस व्यक्ति का चला जाना एक विशेष घटना के रूप में आया और तरुणों को अपनी ओर खींच लेनेवाली राजधानी का ध्यान एक बार फिर लोगों के सामने मंडरा गया, लेकिन इस विदा की वेला में एम्मा मानो उपेक्षापूर्ण थी। लीयो को लगा, वह इस तरह से दूर होकर मानो उसके पास आ गई है। यही एम्मा के जीवन में हुआ। उसकी कल्पना के लीयो अधिक लम्बा हो गया, अधिक सुन्दर दिखाई देने लगा और मानो उसमें पहले से अधिक मंत्रमुग्ध करने की शक्ति आ गई थी। उसे लगता कि वह सर्वत्र उपस्थित था। अब लीयो की छाया भी उसको सताने लगी। उसे लगता कि घर की हर दीवाल में वह मौजूद था। अब उसे इस बात का खेद होने लगा कि इतने दिनों तक समीप रहकर भी क्यों एक दिन भी वह उसके सामने समर्पण न कर सकी। क्यों एक बार भी शरीर का सुख न ले सकी, न दे सकी। उसने उसको एक बार भी इसका

अवसर नहीं दिया; और उसमें तृष्णा भरने लगी कि वह उसके पीछे पेरिस चली जाए, उसकी भुजाओं में अपने-आपको समर्पित कर दे और पुकार उठे, 'मैं आ गई हूं! मैं तुम्हारी हूं!' किन्तु वास्तविकता में यह कार्य अत्यन्त कठिन था और उसके हृदय में एक नई विरक्ति भरने लगी। विरक्ति के मूल में एक उत्कंठा, चाहना थी, वासना अपनी सम्पूर्ण उद्विग्नता के साथ मानो भीतर ही भीतर बिजली की तरह कौंधने लगी थी।

जो टास्टीज में हुआ था वही अब फिर उसके सामने उपस्थित हो गया। अब वह अपने को पहले से भी अधिक दुःखी समझती क्योंकि उसको अपने दुःखों का कहीं भी अन्त नहीं दिखाई देता। उसे ऐसा लगता कि वह विवाह की वेदी पर शहीद हो गई थी और इसलिए उसका स्वेच्छाचार सम्पूर्ण रूप से उचित था। अब वह बहुत अधिक खर्च करने लगी। कपड़ों पर खूब पैसा लुटाती, अपने शृंगार के साधन जुटाती और ऐसी ही छोटी-मोटी वस्तुओं को खरीद-खरीदकर रुपया बहाने का उसे शौक हो गया। उसने इटैलियन सीखने का प्रयत्न किया। न जाने कितने कोश खरीद लिए, व्याकरण-पुस्तकें ढेर की ढेर इकट्ठी कर लीं। लेकिन उनमें से एक को भी न पढ़ा। अब कभी-कभी उसे बेहोशी के दौरे आ जाते और वह खून थूकने लगी। शार्ल्स जब व्याकुल होकर उससे कुछ प्रश्न करता तो वह कह देती, 'क्या है, कोई खास बात तो नहीं!'

योनविले में बुधवार को हाट लगा करती थी और एम्मा खिड़की में से भीड़ को देखना बहुत पसन्द करती थी। एक दिन सवेरे उसने हरे मखमली कोट और पीले दस्ताने पहने हुए एक व्यक्ति को देखा। उसके एक नौकर के शरीर में कुछ कष्ट था और वह चाहता था कि उसका कुछ रक्त निकाल दिया जाए। इसलिए वह नौकर को लेकर शार्ल्स के पास आया। एम्मा ने नर्स का काम किया और उस सज्जन से दो-एक बातें भी कीं। बातों में उसे पता चला कि वह हाउचेट की छोटी रियासत का मालिक पड़ोस का ज़मींदार रोदोल्फ बोलांजे था।

रोदोल्फ जब डाक्टर के घर से निकला तब गहन चिंतन में लीन था। उसको श्रीमती बॉवेरी पसन्द आ गई थी। वह सुन्दर स्त्री उसके मन को भा गई। उसके सुन्दर दांत, उसकी काली आंखें, उसके सुन्दर टखने, उसका दुबला-पतला शरीर, जो विचित्र रूप में मांसल था, उसे ऐसा भा गया जैसे वह खास पेरिस की निवासिनी थी, न कि कोई ग्रामीण स्त्री। वह अपने पति की तुलना में कितनी अच्छी थी। डाक्टर कितना बेवकूफ लगता था। उसके नाखून कितने गन्दे थे और कम से कम तीन दिन की हजामत बढ़ी हुई थी। रोदोल्फ ने मन ही मन कल्पना की और वह समझ गया कि यह स्त्री अवश्य ही अपने पति से ऊबी हुई है और अवश्य ही उससे घृणा भी करती है। इस स्त्री के लिए उचित स्थान पेरिस ही था जहां वह नृत्य में और भोजों में मग्न रहने का आनन्द प्राप्त कर सकती थी। बेचारी प्रेम के लिए तरस-तरस जाती होगी। पानी के पास रहकर भी वह मानो प्यासी थी। यदि वह किसीका मनोरंजन करने के लिए खिलौना बनकर रहे तो वह जीवन का कितना आनन्द दे सकती थी! लेकिन एक बात और थी। एक बार उसे बसा लेने के बाद क्या उससे पीछा छुड़ाना भी आसान होगा? वह इसी बारे में सोचने लगा। चौंतीस वर्ष का रोदोल्फ प्रकृति का कठोर था और व्यावहारिक बुद्धि उसमें बहुत

अधिक थी। उसने पहले ही से सोच लिया कि इस स्त्री से सम्बन्ध बढ़ाने में क्या-क्या बाधाएं उपस्थित हो सकती हैं। लेकिन जब वह उसकी आंखों के बारे में सोचता तब उसे लगता जैसे वह आंखें तीर की तरह उसके हृदय में घुस गई थीं। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि एम्मा का रंग सुनहला-सा था और सुनहरे रंग पर रोदोल्फ जान देता था। घर पहुंचने के पहले ही रोदोल्फ ने यह निश्चय कर लिया कि किसी न किसी प्रकार वह उस स्त्री को अवश्य प्राप्त करेगा।

एक कृषि-प्रदर्शनी में वे लोग दूसरी बार मिले। मेयर और गणमान्य नागरिक भीड़ को अपने भाषण सुनाने लगे। उस समय रोदोल्फ एम्मा को टाउनहाल के एक खाली कमरे में ले गया। उसने कहा कि वहां से सारा दृश्य अच्छी तरह दिखाई दे सकेगा। वहां ले जाकर उसने अपने व्यथित हृदय की वेदना उसके सामने खोल दी। अपनी कल्पना के और तृष्णाओं के संसार का उसने उसके सामने उद्घाटन कर दिया। उसने एम्मा को कहा कि वह भी जीवन की द्वन्द्व से ऊब चुका है और अपनी कल्पना-लोक की नारी की प्रतीक्षा कर रहा है। और यह कहकर उसने श्रीमती बॉवेरी की ओर भाव-भरी आंखों से देखा। फिर कहने लगा कि विश्व के अनन्त स्रोत और विस्तार के सम्मुख मनुष्य द्वारा निर्मित ये कृत्रिम व्यवधान कितने तुच्छ हैं—और गौरत्व और सौन्दर्य का उत्तर प्रेम है। प्रेम ही इस पृथ्वी पर सर्वश्रेष्ठ वस्तु है, जिसमें व्याघात डालने के लिए अनेक प्रकार के व्यवधान समाज ने उपस्थित कर दिए हैं। आवेश, कविता, संगीत इत्यादि के विषय में वह बोलता ही चला गया और उसने एक रंगीन स्वप्न-सा एम्मा की आंखों के सामने जाग्रत् कर दिया।

वह एक छोटे स्टूल पर अपने घुटनों को अपने हाथों में समेटे एम्मा के चरणों के पास बैठा था। उसका शरीर उसके समीप था और सिर ऊपर उठा हुआ था। एम्मा दो बातें देख रही थी—रोदोल्फ की काली पुतलियों में से जैसे सुनहली किरणें निकल रही थीं, उसके केशों में से सुगन्ध आ रही थी—वही सुगन्ध, जो वोबीएसार में नृत्य करते समय वाईकाउंट के केशों में उसने सूंघी थी। एम्मा को लगा कि वह शिथिल हो गई थी। उसे लगा मानो वह उसी गाड़ी को देख रही थी जो लीयो को लेकर चली गई थी योन-विले से दूर। उसे लगा उसके चरणों पर स्वयं लीयो बैठा था और एक बार फिर वह मादकता उसकी रग-रग में थिरक उठी। उसके रोम-रोम में जैसे वासना अतलांत हाहाकार कर उठी। और इस विह्वल अनुभूति के साथ ही साथ रोदोल्फ के केशों की गंध धीरे-धीरे उसकी सांसों में समाती रही। कितनी प्यारी लग रही थी उसे यह सुगंध। रोदोल्फ ने हाथ बढ़ाकर उसकी उंगलियों को पकड़ लिया। एम्मा ने रोका नहीं। उनके होंठों में एक उत्कट चाहना ने एक अजीब-सी गर्मी पैदा कर दी थी। उंगलियां आपस में गुंथ गईं, मानो उनकी तृष्णाओं के घट जाने का यह पहला प्रतीक था।

लगभग छः हफ्ते बीत गए। रोदोल्फ एक दिन उनके घर आया और सीधा भीतर चला आया। एम्मा जैसे पीली पड़ गई। तब वह समझ गया कि शीघ्र ही न आकर उसने ठीक ही किया है। उसने शार्ल्स से पूछा कि उसकी पत्नी ऐसी रोगिणी क्यों दिखाई दे रही थी और सुझाव दिया कि यदि श्रीमती बॉवेरी घुड़सवारी प्रारम्भ कर दे तो शायद

उसका स्वास्थ्य फिर से ठीक हो गया। शार्ल्स अपनी पत्नी के स्वास्थ्य के बारे में अधिक चिन्तित था। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह किस प्रकार उसको ठीक करे। इस सुझाव ने उसे एकदम पुलकित कर दिया।

लेकिन एम्मा घुड़सवारी के लिए नहीं जाना चाहती थी। उसने उसका घोर विरोध किया और अन्त में उसने कहा कि उसे आदत तो थी नहीं और बिना आदत के घोड़े पर वह चढ़ भी कैसे सकती थी।

शार्ल्स ने उत्तर दिया, "आदत तो डालने से पड़ती है।" और इस बात ने मामला तय कर दिया। पहली बार वे लोग जब घोड़े पर चले तो वह सहर्ष चली गई। अब घर पर वह निरन्तर दर्पण में अपने मुख को देखा करती। उसमें कैसा परिवर्तन आ गया था। उसकी आंखों में गहराई पहले कभी नहीं थी, और न वह इतनी ज्यादा ही थी। कैसी विलासमग्न प्रतीत होती थी वह, और वह धीरे-धीरे बड़बड़ाया करती, 'मेरा एक प्रेमी है, जो मुझे प्यार करता है।' उसको ऐसा लगा, जैसे एक बार फिर से उभरकर यौवन आ गया हो। बांध टूट गया था, और प्रेम का आनन्द फिर से उमड़ने लगा था। अन्त में स्वतन्त्रता की हिलोर पर उसने अपने-आपको छोड़ दिया और बाढ़ उसे बहा ले चली। वे लोग अब गुप्त रूप से पत्र-व्यवहार करने लगे, किन्तु उसके पत्रों को उसने सदैव बहुत छोटा पाया। एक दिन सुबह वह जल्दी उठ गई और उसके मन में यह आया कि वह रोदोल्फ से मिल ले। शार्ल्स उस दिन तड़के ही कहीं चला गया था। वह चुपचाप खेतों की ओर निकल पड़ी और उसने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा। ओस से भीगी हुई जब वह रोदोल्फ के घर पहुंची तो जाकर अपने प्रेमी की शय्या पर लेट गई।...

सारे जाड़े की ऋतु हर हफ्ते में दो-तीन बार रोदोल्फ उनके बगीचे में आया करता था। वह बड़े आतुर हृदय से शार्ल्स के सो जाने की प्रतीक्षा किया करती। बगीचे में सघन कुंज में एक पुरानी बैंच पड़ी थी। पहली गर्मी की ऋतु में वहां वह लीयो के साथ बैठा करती थी और लीयो उसका मन बहलाया करता था। अब वह लीयो की कोई चिन्ता नहीं करती थी और उसका स्थान रोदोल्फ ने ले लिया था। कभी-कभी रोदोल्फ को लगता कि वह आवश्यकता से अधिक अनुभूतिशील थी, क्योंकि वह बार-बार अपने बालों की लट उसे देकर उससे उसके बालों की लट मांगा करती थी। अन्त में उसने एक दिन उससे एक असली विवाह की अंगूठी मांगी। वह अब भी सुन्दर थी, और प्रेम के क्षेत्र में इतनी रंगीली स्त्रियां रोदोल्फ को कम ही मिली थीं और इस प्रेम में एक विचित्रता थी कि यह व्यभिचार नहीं था। इससे उसकी वासना भी तृप्त होती थी और गर्व भी। जिस रूप में वह अपने-आपको समर्पित करती उससे उसके मध्यवर्गीय नैतिक विचारों को धक्का लगता, किन्तु यह सोचकर उसकी कल्पना-विभोर हो जाती कि वही उसका केन्द्र था। किन्तु जब प्रेम चरमता पर पहुंच गया तो उसका रुख बदलने लगा। उसके कोमल शब्द चले गए। सब कुछ महज उसकी वासना के दुलार की चीज होकर रह गया। अब वह अपनी उपेक्षा को छिपाने में भी असमर्थ हो गई थी।

एम्मा को प्रायश्चित्त की भावना ने ग्रस लिया अब वह सोचने लगी कि आखिर वह शार्ल्स से घृणा क्यों करती थी। क्यों न वह उसीको प्रेम करना प्रारम्भ कर दे? क्या

यह अच्छा नहीं होगा ? यदि यह न भी हो तो यह अच्छा डाक्टर तो था ही । क्या इसी-लिए उसका आदर करना आवश्यक नहीं था ? उन्हीं दिनों केमिस्ट ने होटल में रहनेवाले एक लड़के के पांव का नया आपरेशन करने के लिए शार्ल्स को तैयार कर लिया। लड़के के पांव में तकलीफ थी और उसका काम था इधर-उधर सदेश पहुचाना । केमिस्ट रोज-रोज शार्ल्स का दिमाग खाता था और शार्ल्स की हिम्मत नहीं पड़ती थी। एम्मा ने भी केमिस्ट का समर्थन किया। और अन्त मे शार्ल्स ने यह खतरा मोल लेना स्वीकार कर लिया । आपरेशन बिलकुल असफल हुआ और लड़के की टांग काटनी पड़ी । इस बात से व्यथित होकर एम्मा ने लड़के को एक बहुत महंगी लकड़ी की टाग खरीदी । जब चलते समय वह लकड़ी की टांग धरती पर खटपट करती तो शार्ल्स अपने द्वारा घायल किए गए उस लड़के को देखकर भय से कांप उठता और चाहता कि वह कभी भी उस खटपट को न सुने ।

एम्मा का मानसिक सतुलन धीरे-धीरे खोने लगा । उसके सभी सपने लगभग नष्ट हो चुके थे । जिससे उसमे एक बार फिर नया आवेश आ गया । अपने व्यभिचारी हृदय की उसने समग्र शक्ति के साथ नई वासनाओं की ओर प्रवृत्त करने की चेष्टा की । अपनी जितनी वासनाएं थी उनको उसने जागरूक किया और स्वेच्छा की लपटों को अपनी ही तृष्णाओं के पवन से वह भड़काने लगी । अब वह दिन-दहाड़े अपने प्रेमी के घर चली जाती थी । उसे वहां से निकलते हुए डर नहीं लगता था । वह उसे बहुमूल्य उपहार देती और जब उसका मूल्य नहीं चुका पाती तब कस्बे के बोहरे, मुखिए, लेहूरे आदि महाजनों के पास कुछ न कुछ गिरवी रख आती । एक बार तो पति के एक बिल की धनराशि को उसने बीच में से ही ले लिया । शार्ल्स की माता तक से उसका झगड़ा हुआ । वह कुछ ही दिन के लिए रहने के लिए आई थी । श्रीमती बॉवेरी अपने पुत्र की कल्याण-कामना में उसे सुखी देखना चाहती थी । लेकिन एम्मा के व्यवहार ने उसको अधिक से अधिक व्याकुल किया । अब एम्मा ने यह निश्चय कर लिया कि वह अपने पति के साथ नहीं रहेगी, क्योंकि यह उसके लिए अब बहुत कठिन काम था । उसने रोदोल्फ से प्रार्थना की कि वह उसे एक सुदूर देश मे ले जाए जहां उनका प्रेम बिना किसी व्याघात के चल सके । रोदोल्फ उसे स्वीकार तो करना चाहता था, लेकिन अन्ततः उसने कोई सन्तोषजनक रुख नहीं दिखाया । उसने एम्मा से कहा कि वह सारी तैयारी कर ले और ठीक जिस दिन कि वे जानेवाले थे, उससे एक दिन पहले उसने बहुत सावधानी से बन्द एक पत्र उसे भेजा, जिसमे उसने लिखा कि उसे उसके साथ नहीं जाना चाहिए, क्योंकि उसके साथ जाने के उपरान्त वह शीघ्र ही पश्चात्ताप करने की अवस्था में आ जाएगी । एम्मा इस उद्वेग को नहीं सह सकी और उसने खिड़की से कूदकर जान देनी चाही । उसे बड़ी मुश्किल से उसके परिवार-भर ने मिलकर रोका । किन्तु मानसिक आघात ने उसे कुछ पागल-सा कर दिया और उसकी दशा ऐसी हो गई जैसे अब वह नहीं बचेगी । शार्ल्स के लिए जीवन नरक हो गया । उसे ऐसा लगने लगा कि जिस पत्नी को वह प्राणों से भी अधिक प्यार करता था वह उसे सदैव के लिए छोड़ जाएगी । और उन्हीं दिनों उसके पास दुकानवालों के बिल पर बिल आने लगे जिनको चुकाना उसके लिए असम्भव था । एम्मा की बीमारी का खर्च और

रोदोल्फ को देने के लिए उसके द्वारा खरीदे हुए बहुमूल्य उपहारों का भुगतान शार्ल्स को महाजन-बोहरे के हाथ में फंसा गया। अपना कर्ज चुकाने के लिए उसे दूसरी जगह से ऋण लेना पड़ा। वह मन में अच्छी तरह से जानता था कि शायद वह लेहूरे के कर्ज को कभी वापस नहीं चुका सकेगा। लेकिन एम्मा नहीं मरी। धीरे-धीरे, धीरे-धीरे वह ठीक होने लगी। जब वह फिर बाहर आने-जाने के योग्य हो गई, तो उसका ध्यान बटाने के लिए शार्ल्स उसे रूयुन ले गया। वहां एक प्रसिद्ध नाटक होनेवाला था और कोई संगीतज्ञ भी आया था। ऑपेरा हाउस में उन लोगों को लीयो मिल गया। पेरिस में अपना अध्ययन समाप्त करने के उपरान्त लीयो एक वकील के यहां क्लर्क हो गया था। पहले की तुलना में वह अब परिपक्व दिखाई देता था। पेरिस की दुकानों में काम करनेवाली लड़कियों और वेश्याओं तथा संग पढ़नेवाली लड़कियों से अनेक प्रकार का व्यभिचार करने के उपरान्त उसमें एक बाहरी आत्मविश्वास-सा आ गया था। लेकिन वैसे वास्तव में वह अब भी उतना ही लजीला था। इन सारे दिनों उसके हृदय में एम्मा की छवि जीवित रहती। उसे ऐसा लगता था कि जैसे वह एक धुंधली-सी प्रतिज्ञा थी, जो न जाने उसके जीवन में कब पूरी होगी—मानो वह किसी वृक्ष से लटका हुआ स्वर्ण-फल था, जिस तक वह पहुंचना चाहता था, लेकिन पहुंच नहीं पाता था। उसने शार्ल्स को इस बात के लिए आसानी से मना लिया कि अगले दिन का नाटक देखने के लिए एम्मा रूयुन में रह जाए। और एम्मा से एकांत में मिलने के अवसर की ताक में वह लगा रहा। जिस समय होटल के कमरे में वह उसे अकेली मिली तब उसने अपना प्रेम उसपर प्रकट कर दिया और उसकी अनुपस्थिति में अनुभव की हुई पीड़ा का संकोचपूर्वक प्रकाश करते हुए उसने कहा, "न जाने मैंने कितने स्वप्न तुम्हारे वियोग में झेले हैं।"

एम्मा सुनती रही और उसने धीरे से कहा, "मैं भी सदैव तुम्हारे विषय में सोचा करती थी।"

लीयो का संकोच एम्मा के लिए रोदोल्फ की मुखरता की तुलना में अधिक भयानक प्रमाणित हुआ। उसी दिन सन्ध्या के समय एम्मा ने लीयो को पत्र लिखा कि उन दोनों में अब किसी प्रकार का सम्बन्ध भी वांछनीय नहीं है। किन्तु वह उसका पता नहीं जानती थी। इस पत्र को पहुंचाने के लिए उसे गिरजे तक जाना पड़ा। गिरजे में इसलिए कि यह उन्होंने पहले दिन तय किया था कि वहां मिलेंगे। लीयो एक गाड़ी लेकर आया था। वह उसपर बैठना नहीं चाहती थी। लेकिन जब लीयो ने उससे कहा कि यह यह गाड़ी पेरिस से ही लाया है, तब वह मान गई। जब गाड़ी चलने लगी तब वह मानो उसकी प्रिया हो गई।'''और एक बार फिर शार्ल्स ने अपनी पत्नी के लिए वासना के व्यापार का मार्ग खोल दिया।'''

लेहूरे ने अब तक शार्ल्स पर पूरा कब्जा कर लिया था। अपने धन को वसूल करने का उसे एक ही तरीका नजर आया कि वह एम्मा के ऊपर ध्यान केन्द्रित करे। उसने एम्मा से कहा कि अपने पति के कर्ज को चुकाने के लिए सारा काम-काज और तत्सम्बन्धी अधिकार वह अपने हाथ में ले ले। इतनी जिम्मेदारी लेने की एम्मा की कोई इच्छा नहीं थी। पर उसने यह भी अनुभव किया कि यह एक कानूनी मामला है और इसमें किसी

वकील की राय की जरूरत है। उसने शार्ल्स से बात की। वह किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानता था जिससे कि वह सलाह ले सके। बेचारा शार्ल्स फिर जाल में फंस गया—उसने लीयो का नाम लिया, क्योंकि वह वकालत के पेशे में था। तब एम्मा रूयून गई लीयो से सलाह लेने। तीन दिन उसके पास रुकी। वे उनकी सुहागरात के दिन थे। जब वह लौटी तो मानो उसका रोम-रोम संगीतमय हो गया था। अब वह संगीत की ओर झुकना चाहती थी, किन्तु उसकी उंगलियां अभ्यास के बिना पहले की तरह लोचदार नहीं रही थीं। शार्ल्स ने सलाह दी कि वह रूयून में जाकर संगीत की शिक्षा ले। रूयून के होटल में उन्होंने एक कमरा किराये पर लिया और उसे वे अपना घर कहने लगे। कमरे के अन्दर अच्छी सजावट थी। उसमें खासा फर्नीचर था। उन्हें सचमुच ऐसा लगने लगा जैसे वे किसी घर में रहते थे। उसका पारिवारिक जीवन फिर लौट आया। रोदोल्फ वाली वेला फिर लौट आई। वह सुन्दर थी और पति के प्रति अनुरक्त भी दिखाई देती थी। शार्ल्स समझता था कि वह संसार का सबसे सुखी व्यक्ति है।

जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया। अपनी तृष्णा को जीवित रखने के लिए एम्मा को अधिक से अधिक बाह्य उपकरणों की आवश्यकता पड़ने लगी। उसने कई-एक अभिसार यात्राएं कीं। यद्यपि सदैव वह अपनी इस तरह की यात्रा के अन्त के लिए तैयार रहती थी, किन्तु यात्रा से लौटते वक्त रेल में उसके भीतर यह भावना जाग उठती थी कि उसे यात्रा के दौरान कोई असाधारण अनुभूति नहीं हुई। मानो उसके अन्दर एक निराशा बढ़ती जा रही थी। हर निराशा उसे एक नई आशा की ओर लालायित करती थी।

हर बार वह अपने प्रेमी के पास पहले से भी अधिक उत्सुकता से जाती थी और प्रत्येक बार उसकी वासना पहले की तुलना में कहीं बढ़ी-चढ़ी होती। वह अपने वस्त्रों का अनावरण निर्लज्जता से करती थी, मानो वह उन्हें फाड़कर उनमें से बाहर निकल आती थी। नंगे पांव, पंजों पर चलकर वह अपने प्रेमी के दरवाज़े तक जाती और देखती कि वह सचमुच बन्द है कि नहीं और तब गम्भीरता और संकोच से, बिना एक शब्द भी बोले, वह लीयो के वक्ष पर कांपती हुई अपने-आपको समर्पित कर देती। लीयो उससे कोई प्रश्न नहीं करता था, लेकिन वह काम-कला में प्रवीण था। इसलिए उसकी यह अवस्था देखकर वह समझ जाता था कि वासना और प्रेम की समस्त घुमड़न एम्मा के अन्दर घूम रही है। यहां तक तो सब ठीक था। किन्तु उसे एतराज़ इस बात से था कि वह उसके व्यक्तित्व को जैसे अपने भीतर समेटे ले रही थी, वह उसपर छाए जा रही थी। हर बार मानो एम्मा की ही विजय होती थी और मन ही मन लीयो इस बात से अपने मन में एक कचोट खाता था। अब मानो एम्मा उसकी रखैल नहीं थी, लीयो स्वयं एम्मा की एक रखैल के समान था। इसके अतिरिक्त जिस वकील के यहां वह काम करता था उसे किसी प्रकार इन सब घटनाओं की सूचना मिल गई थी, और उसने इस विषय में उसे सावधान भी किया था कि वह एक स्त्री के पीछे अपने भविष्य को बिगाड़ रहा है। किन्तु एम्मा फिर भी संतुष्ट नहीं थी। जीवन जैसे उसकी मादकता के लिए अपूर्ण था। जिसका भी वह सहारा लेती थी वही उसके चरणों के नीचे टूटकर गिर जाता था। जीवन ने उसे

जितनी आशाएं दिखाई थीं, किन्तु वे सब मिथ्या में परिणत होती चली जा रही थीं। हर मुस्कराहट के पीछे एक ऊबी हुई जम्हाई थी। हर आनन्द के पीछे मानो कुतर-कुतरकर खाता हुआ कोई अभिशाप झांक रहा था। हर वासनामय सुख के पीछे एक अतृप्ति उचक-उचक उठती थी। अधरों पर प्रेम के उन मधुर चुम्बनों से पीछे भी उस अप्राप्य सुख की कामना प्यासी ही रह जाती थी, जिसके लिए कि यह सारा खेल हो रहा था।

एक रात जब वह रुयून से लौटी तो उसे एक पत्र मिला भूरे कागज पर लिखा हुआ। उसने पढ़ा—"कानून के हिसाब से, जैसाकि आपका-हमारा समझौता हुआ था, चौबीस घंटे में, बिना किसी बाधा के, निश्चित रूप से हमारे आठ हजार फ्रैंक चुका दिए जाएं।" धन की राशि बहुत बड़ी थी। वह समझी, यह जरूर लेहरे का पत्र है। किन्तु वास्तविकता यह थी कि एक न एक प्रकार से कर्ज लिए जाते थे, और हुंडियां बदली जाती थीं। और अब अंततः घूम-फिरकर बोहरे को इतनी बड़ी राशि मांगने का अवसर मिल गया था, क्योंकि उसे एक महत्त्वपूर्ण कार्य में उस धन को लगाना था। सत्य जब उसके सामने आया, तब एम्मा के पांवों के नीचे से धरती खिसक गई। शार्ल्स भी देख रहा था कि उसका घर नीलाम होगा, वह बर्बाद हो जाएगा, उसका जीवन समाप्त हो जाएगा; और यह सब किसलिए—केवल एम्मा के कारण।

एम्मा गई और जाकर लेहरे के चरणों पर लोट गई। किन्तु अब यह व्यर्थ था। तब वह लीयो के पास गई, किन्तु कर्जा इतना बड़ा था कि जब लीयो ने सुना तो उसके छक्के छूट गए। शायद एक हजार फ्रैंक तक होता तो वह प्रयत्न भी करता, किन्तु फिर उसने उस विषय में चर्चा भी नहीं की। अब वह योनविले के वकील के पास गई, किन्तु जब उसने कहा कि धन तो वह दे देगा, लेकिन उसका भुगतान उसके शरीर से करेगा। तब वह उसके दफ्तर से भाग गई। अब वह रोदोल्फ के पास गई। वह जानती थी कि इस समय वह उस वेश्या के समान थी, जो पैसे के लिए अपना शरीर बेचती है। जिस चीज को उसने वकील के यहां त्याज्य समझा था, वह उसको मन ही मन स्वीकार करके रोदोल्फ के यहां पहुंची। लेकिन रोदोल्फ भी उसकी कोई सहायता नहीं कर सका। अब एम्मा के पास एक ही मार्ग था—आत्महत्या। वह केमिस्ट के घर में गई और उसने संखिया खा लिया। जब शार्ल्स घर आया तो उसने उसे पत्र लिखते हुए पाया। वह बिलकुल शान्त दिखाई दे रही थी। फिर वह शय्या पर लेट गई, सो गई, और जब उठी तब मुंह कड़वा हो रहा था। अब वह कौतूहल से अपनी अवस्था को स्वयं निरखने लगी। उसे कोई कष्ट नहीं हो रहा था। आग जल रही थी। उसे आवाज सुनाई दे रही थी। घड़ी की टिक-टिक उसके कानों में स्पष्ट आ रही थी। शार्ल्स उसके सिरहाने बैठा था। उसकी सांसों की आवाज वह सुन सकती थी। उसे ऐसा लगा जैसे वह सिर्फ प्यासी थी, बहुत प्यासी थी। उसने पानी मांगा, और लगा जैसे वह रक्त वमन करेगी। शार्ल्स ने धीरे से उसके पेट को थपथपाया मानो वह उसको प्यार कर रहा था, सहला रहा था। एकाएक वह बड़े जोर से चिल्ला उठी। घबराकर शार्ल्स पीछे हट गया। एम्मा का चेहरा नीला पड़ गया। पसीना बहने लगा, उसके दांत बजने लगे और उसने शून्य दृष्टि से चारों ओर देखना प्रारम्भ किया। एक-दो बार वह मुस्कराई भी और फिर उसकी कराहें बढ़ने लगीं,

और हठात् वह एक बार फिर बड़ी ज़ोर से चिल्ला उठी।

दो डाक्टर बुलाए गए। लेकिन अब करने के लिए कुछ भी शेष नहीं था। वह खून उगलने लगी। उसके सारे शरीर पर भूरे चकत्ते पड़ गए। पीड़ा के कारण उसका आर्तनाद गूंजने लगा और उसकी नब्ज उंगलियों में ऐसे स्पंदित होने लगी, जैसे अब कहीं सरककर भाग जाना चाहती हो। पादरी आया और उसने अंतिम प्रार्थना की। कुछ ही देर बाद एम्मा सदा के लिए चल बसी।

शार्ल्स की इच्छा यह थी कि वह अपने विवाह के वस्त्रों में दफनाई जाए—सफेद जूते और फूलों की माला पहने हुए। उन्होंने उसके केशों को उसके कंधों पर फैला दिया, और बलूत तथा महोगनी की लकड़ी तथा रांगे से बने कफन-सन्दूक में उसको लिटा दिया। एम्मा की मृत्यु शार्ल्स का भी अन्त था। वह फिर कभी बाहर नहीं निकला। किसीसे नहीं मिला और उसने अपने रोगियों को भी देखना बन्द कर दिया। राहगीर उसको बगीचे में खड़ा हुआ देखते—गन्दा, बिना नहाए-धोए, कुछ जंगली-सा जो पौधों के बीच में इधर-उधर घूमते समय ज़ोर-ज़ोर से रो उठता था। एक दिन उसकी बेटी ने उसे कुंज में मरा पड़ा पाया। लम्बे बालों की एक फैली लट उस समय भी उसके हाथ में दिखाई दे रही थी।

नारी की वासना असीम भी हो सकती है। प्रेम अतृप्त रह जाने पर भयानक रूप धारण कर लेता है। वह एक ऐसा हाहाकार बन जाता है जो अन्तर को खोखला कर देता है। ऐसा ही है एम्मा का चरित्र। वह अपने हृदय को ढूंढती है। उस पर काबू करना चाहती है, किन्तु कर नहीं पाती। और अन्त में वह विनाश के गर्त में डूब जाती है। लेखक ने उसकी द्वन्द्व-भरी घुटन का बहुत ही सुन्दरता से अन्त तक निभाव किया है।

इन्सान या शैतान

[डॉक्टर जेकिल एण्ड मिस्टर हाइड[1]]

स्टीवेन्सन, रॉबर्ट लुई : अंग्रेजी कथाकार रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन का जन्म एडिनबरा में १३ नवम्बर, १८५० को हुआ। अपने जीवन के प्रारम्भिक दिनों में ही आपमें साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत् हो गई। अपने पिता को प्रसन्न करने के लिए सिविल इन्जीनियरिंग का अध्ययन किया और कानून भी पढ़ा। लेकिन लेखन के लिए दोनों का ही परित्याग कर दिया। बचपन से ही आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था, प्रायः अस्वस्थ रहते थे। आपने अपना स्वास्थ्य सुधारने के लिए फ्रांस, कैलिफोर्निया, एडिरोन डेक्स और दक्षिणी समुद्र के द्वीपों की यात्राएं कीं। आपकी पत्नी निरन्तर आपकी सहायता करती रही और आपके लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रही। स्टीवेन्सन इस विषय में दुःखी रहे कि उन्हें अपने मित्रों से बिछुड़कर दूर रहना पड़ता था। अधिकांश साहित्यिक रचनाओं का जन्म आपकी रोग-शय्या पर हुआ। ३ दिसम्बर, १८९४ को आपका देहान्त समोआ नामक द्वीप में हुआ। स्टीवेन्सन ने कविताएं भी लिखीं। बालकों को अत्यन्त रुचिकर लगनेवाली कृतियों के लिए आप बहुत प्रसिद्ध हैं।

'डॉक्टर जेकिल और मिस्टर हाइड' (इन्सान या शैतान) आपका एक बड़ा मार्मिक उपन्यास है। यह पहली बार १८८६ में छपा था।

अटरसन एक वकील था। रिचर्ड एनफील्ड नामक एक व्यक्ति उनका दूर का सम्बन्धी था। एक दिन वह लन्दन के समीप रविवार को घूम रहा था, कि उसे एक विचित्र-सा मकान दिखाई दिया। यह मकान एक गली में था। दुमंज़िला था, लेकिन उसमें खिड़की एक भी नहीं थी; और देखकर ही वह कुछ अजीब-सा, डरावना-सा लगता था। एनफील्ड को वह मकान देखते ही एक भयानक दृश्य याद आ गया। उसने उस दृश्य के बारे में अटरसन को बताया, "एक सवेरे पौ फटी ही थी कि एक आदमी बड़ी तेज़ी से चलते समय एक छोटी-सी लड़की से टकरा गया, और वह बच्ची गिर पड़ी। लेकिन उस आदमी के ऊपर कोई भी असर नहीं पड़ा, और वह बड़ी शांति से उस बच्ची के शरीर को अपने पैरों से रौंदता हुआ उसके ऊपर से निकल गया!" यह कहते हुए एनफील्ड को जैसे फुरफुरी आ गई और उसने कहा, "मैं इस दृश्य को नहीं देख सका। मैंने तेज़ी से भागकर उस आदमी को पकड़ लिया और गरदन पकड़कर उस बच्ची के

---

१. Dr. Jekyll and Mr. Hyde (Robert Louis Stevenson)—इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद 'इन्सान या शैतान' छप चुका है। प्रकाशक : हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लिमिटेड, शाहदरा, दिल्ली-३२; अनुवादक : देवेन्द्रकुमार विद्यालंकार।

पास खींच लाया। वह आदमी बड़ा कुरूप था। उसने बच्ची के परिवार को हर्जाने के तौर पर धन देना स्वीकार कर लिया और वह इसी रहस्यमय मकान में घुस गया और दस सोने के पौंड ले आया। और उसने एक चैक भी दिया, जिसके ऊपर कि एक अत्यन्त सम्मानित व्यक्ति के हस्ताक्षर थे।" एनफील्ड ने यह कहकर मि० अटरसन की ओर देखा।

वकील अटरसन ने कहा, "मैं उस आदमी का नाम जानना चाहता हूं जो उस बच्ची को इस तरह कुचलकर चला गया था।"

एनफील्ड ने हिचकिचाते हुए उत्तर दिया, "उस आदमी का नाम हाइड था।"

अटरसन ने कहा, "यह जो मैं उस दूसरे आदमी का नाम नहीं पूछ रहा, जिसने चैक दिया था, इसकी भी एक वजह है।"

एनफील्ड ने पूछा, "वह क्या ?"

वकील ने उत्तर दिया, "वह सीधी-सी बात है, कि मैं उस नाम की कल्पना कर सकता हूं, और मैं उसे जानता हूं।"

उस रात वकील अटरसन ने डा० हेनरी जेकिल की वसीयत को फिर बारीक नजरों से देखा। उसमें लिखा हुआ था कि जेकिल की मृत्यु के उपरांत उसकी सारी जायदाद एडवर्ड हाइड को मिल जानी चाहिए। लेकिन उसमें यह भी शर्त थी कि यदि जेकिल *गायब हो जाए या तीन महीने तक, किसी अज्ञात कारण से ही सही,* उसका पता न चले तो हाइड को चाहिए कि वह जेकिल का स्थान तुरन्त ले ले।

एटरसन सोचने लगा, 'यह तो बिलकुल पागलपन की सी बात है !' और उसने वसीयत को रखते हुए फिर सोचा, 'बड़ी अपमानजनक-सी बात मालूम देती है।'

जेकिल का एक पुराना मित्र था डा० लेनियन। अटरसन डा० लेनियन से मिलने गया तो उसको पता चला कि डा० लेनियन के सम्बन्ध जेकिल से बहुत दिनों से टूट चुके थे। लेनियन ने कहा, "जेकिल जाने किस धुन में रहा करता था। मैं तो उसकी बात कुछ समझ नहीं सका। और इस हाइड नाम के व्यक्ति को तो मैं जानता ही नहीं। यह कौन है ?"

वकील अटरसन का कौतूहल होने लगा। उसने उस अजीब मकान पर नजर रखनी शुरू की और काफी देखभाल के बाद उसे एक आदमी वहां मिला। उस अजीब-से मकान के दरवाजे पर उस आदमी ने अपना परिचय हाइड नाम से दिया। वह साधारण छोटा-सा आदमी था। सादे कपड़े पहने था। घर के भीतर जाने से पहले दोनों ने एक-दूसरे को घूरकर देखा। मुलाकात के दौरान हाइड ने वकील को अपना पता बताया। डा० जेकिल के मकान से बाहर निकलने पर निकट ही एक मोड़ पर अटरसन को जेकिल का रसोइया मिल गया। वह घर का बहुत पुराना सेवक था। उसने बताया कि जेकिल घर पर नहीं थे और हाइड के ही पास डाक्टर के चीरा-फाड़ी करनेवाले कमरे के दरवाजे की चाभी थी।...

इसके लगभग एक वर्ष बाद इंग्लैंड में सनसनी फैल गई। सर डेनवर्स केर्यू वयो-वृद्ध थे और उनकी किसीने बर्बरता से हत्या कर दी थी। हत्यारा अपने दड़ों को वहीं

छोड़ गया था, जहां उसने मार-मारकर केरयू की हत्या की थी। वह एक भयानक हत्या थी। जब अटरसन को यह पता चला तो वह तुरन्त घटनास्थल पर पहुंचा क्योंकि सर केरयू उसके मुवक्किल थे। उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह छड़ी उसकी पहचानी हुई थी। किसी समय अटरसन ने ही वह छड़ी अपने हाथों से डा० जेकिल को दी थी। इस बात ने उसके कौतूहल को और भी बढ़ा दिया। वह तुरन्त हाइड के पते पर पहुंचा। हाइड सोहो में रहता था और इस समय वहां से गायब हो चुका था। मकान में केवल चैक-बुक पड़ी मिली। और उसके अतिरिक्त वहां कुछ भी नहीं था। बैंक से जब दरियाफ्त किया गया तो पता चला कि हाइड के एकाउण्ट में सैकड़ों-हज़ारों पौंड थे। उनको निकाल लिया गया था, पर इसके बारे में बैंकवालों को भी कुछ पता नहीं था।

अटरसन के पता करने पर उसे वैज्ञानिक जेकिल मिल गया—वह अपने घर में ही उसके चेहरे पर एक अजीब मौत की सी खामोशी थी। वह चीर-फाड़ करनेवाले कमरे के भीतर बैठा था। आग उसके सामने जल रही थी, जिसे वह ताप रहा था। उसकी बातचीत से यह भी प्रकट हुआ कि उसे इस भयानक हत्या के बारे में पता था।

अटरसन ने कहा, "मालूम देता है तुम अभी इतने पागल नहीं हुए हो कि उस हत्यारे को छिपा दो।"

जेकिल ने जब यह सुना तो वह कसम खाने लगा और उसने कहा, "मैं हत्यारे को नहीं छिपा रहा हूं और अब उसके बारे में शायद कभी किसीको सुनाई भी नहीं देगा।"

यह कहकर जेकिल ने वकील के सामने एक पत्र रख दिया जिसके नीचे हस्ताक्षर थे—एडवर्ड हाइड। वकील ने देखा कि डा० जेकिल ने यह पत्र अपनी बात के प्रमाण में प्रस्तुत किया है। वकील पत्र को अपने साथ ले आया। उसने पत्र एक हस्तलिपि-विशारद को दिखाया। हस्तलिपि-विशारद की बात सुनकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। विशारद ने कहा, "यह पत्र जेकिल के हाथ की लिखावट से बहुत ज्यादा मिलता-जुलता है।"

वकील ने चिढ़कर पूछा, "क्या कहते हो? हेनरी जेकिल ने एक हत्यारे के लिए जाली पत्र लिखा है? यह कैसे हो सकता है?"

कुछ दिन और बीत गए। एक दिन वकील अटरसन ने डा० लैनियन के यहां पहुंचकर देखा कि वहां एक व्यक्ति बैठा था। उसके चेहरे पर जैसे मौत झांक रही थी।

लैनियन ने उस व्यक्ति की ओर दिखाते हुए कहा, "इस व्यक्ति को कोई बड़ा सदमा पहुंचा था, जिससे बचना बहुत कठिन लग रहा था।"

अटरसन ने जेकिल की बात बताई। लैनियन कांप उठा और उसने कहा, "उसके बारे में मुझसे कोई बात मत करो! डा० जेकिल इस संसार में नहीं है। वह मर चुका है।"

इस बात के करीब पन्द्रह दिन के भीतर लैनियन का देहान्त हो गया। वकील अटरसन को एक पत्र मिला जो मुहरबन्द था। उसने मोहर तोड़कर देखा तो पत्र मिला। स्वर्गीय लैनियन ने ही यह पत्र उसको लिखा था। उस पत्र के अन्दर एक और पत्र था जिस पर लिखा हुआ था—"जब तक हेनरी जेकिल मर न जाए, या गायब न हो जाए,

तब तक इस पत्र को न खोला जाए।"

जेकिल के रसोइये का नाम पूल था। वकील अटरसन को उसके द्वारा यह ज्ञात हुआ कि डाक्टर बहुत निराश, गम्भीर और मौन रहा करता था। ऐसा लगता था जैसे उसके मस्तिष्क पर कोई भयानक भार आ गया था और अपनी प्रयोगशाला से बाहर निकलना उसने लगभग बन्द ही कर दिया था। उसका जीवन बिलकुल एकाकी हो गया था।

एक दिन रविवार को एनफील्ड के साथ घूमते हुए अटरसन ने जेकिल को अपने घर की खिड़की पर देखा। उसपर जैसे असीम निराशा और उदासी घिर आई थी। ऐसा लगता था जैसे वह एक बहुत ही बेचैन बन्दी था। दोनों घर के भीतर गए। डाक्टर को सैर पर चलने के लिए कहा। पर उसने इन्कार कर दिया, और अचानक ही उसके चेहरे पर ऐसे भयंकर आतंक और निराशा का भाव आ गया कि वकील अटरसन और एनफील्ड दोनों का ही भय के कारण जैसे रक्त जम गया···

एक रात पूल अचानक ही बहुत घबराया हुआ सा अटरसन के घर आ गया। उसने कहा कि सात दिन से उसके मालिक उस कमरे में बन्द हैं और उनका कुछ पता नहीं चल रहा है।

रसोइये की हालत बहुत ज्यादा खराब थी। वह बहुत ज्यादा डरा हुआ था। उसने बहुत ही याचना-भरे हुए स्वर से कहा, "वकील साहब, आप मेरे साथ चलिए।"

अटरसन डा० जेकिल के घर पहुंचा। सब नौकर बहुत ही डरी हुई हालत में थे। चीर-फाड़ के कमरे में पूल के साथ प्रवेश करके अटरसन ने जब दरवाजा खटखटाया तो भीतर से आवाज आई, "मैं किसीसे नहीं मिल सकता। इस वक्त मैं किसीसे मिलना नहीं चाहता।" द्वार नहीं खुला। तब वे लोग रसोई की ओर चले गए।

पूल ने कहा, "हुजूर, क्या यह मेरे मालिक की आवाज थी ?"

वकील ने कहा, "यह तो बड़ी बदली हुई आवाज मालूम पड़ती थी।"

पूल ने कहा, "मुझे ऐसा लगता है कि मेरे मालिक की हत्या कर दी गई है।"

"किसने की है ?" वकील ने पूछा।

पूल ने कहा, "उसीने की होगी जो वहां मौजूद है।"

वकील ने कहा, "यह कैसे हो सकता है ? अगर उसने हत्या की है तो अभी तक वह वहां मौजूद क्यों है ?"

पूल ने कहा, "जो भी उस कोठरी में बन्द है, वह दिन-रात किसी दवाई के लिए बुरी तरह चिल्लाता है। लेकिन जैसे उसे याद नहीं आता कि वह कौन-सी दवाई है।"

"तुम्हें यह बात कैसे मालूम हुई ?"

पूल ने एक कागज निकालकर उसके सामने रखा और कहा, "इस कोठरी के बाहर फेंका गया था।"

वकील ने उसको पढ़ा। वह एक बड़ी दुःखभरी याचना थी—जिसमें कहा गया था कि वह पहले किसी 'विशेष' प्रकार के नमक का प्रयोग करता रहा है, और उसे उस नमक की और ज़रूरत है। वह पत्र जेकिल के नाम लिखा गया था, लेकिन उसका लेख

जेकिल की लिखावट से बहुत कुछ मिलता-जुलता था।

पूल ने कहा, "मैंने उसको देखा है। वह मेरा मालिक नहीं है। वे तो बड़े लम्बे और अच्छी तन्दुरुस्ती के व्यक्ति हैं, और यह भीतरवाला तो कुछ बौना-सा नज़र आता था।"

सब लोग इकट्ठे हो गए। अटरसन ने कहा, "दरवाज़ा नहीं खुला, तो कोई परवाह नहीं। कुल्हाड़ा ले आओ, और दरवाज़ा तोड़ दो।"

भीतर से आवाज़ आई, "अटरसन, भगवान के लिए दया करो।"

अटरसन पुकार उठा, "यह जेकिल की आवाज़ नहीं है! यह हाइड की आवाज़ है! पूल दरवाज़ा तोड़ दो।"

कुल्हाड़ा दरवाज़े से टकराया। भीतर से ऐसी आवाज़ आई जैसे किसी जानवर ने भयभीत होकर चीत्कार किया हो। दरवाज़ा गिर गया। एक आदमी का शरीर वहां पड़ा हुआ था। अब भी उसमें फड़क मौजूद थी और वह अत्यन्त विकृत हो चुका था। उसके पास ही ज़हर की शीशी खाली पड़ी थी। उसने शरीर को सीधा किया। यह एडवर्ड हाइड का शव था जिसने कपड़े डा० जेकिल के पहन रखे थे। लेकिन डा० जेकिल का कहीं पता नहीं था। न उसकी लाश मौजूद थी, न वह वहां ज़िन्दा ही था। तलाश करने पर उसको एक कागज़ मिला। उसमें अटरसन के नाम एक वसीयत थी।

तब अटरसन ने डा०लेनियनवाला वह पत्र खोलकर देखा, जिसे जेकिल के मरने या खो जाने के बाद ही खोलने की आज्ञा थी। उस पत्र ने सारी समस्या को सुलझा दिया।

···एक रात हाइड बहुत ढीले-ढाले कपड़े पहने हुए लेनियन के दफ्तर में बहुत ही बेचैन-सा पहुंचा था। जेकिल उसके लिए कुछ देर पहले कुछ दवाई की पुड़ियां वहां छोड़ गया था। हाइड इस समय उन्हींको लेने के लिए आया था। बड़ी उत्सुकता से हाइड ने उस पुड़ियां को ले लिया था और उसने पुड़ियों की दवाई में कोई तरल पदार्थ मिलाया था जिससे दवाई का बैंगनी रंग शीघ्र ही हरा हो गया था। उसने उसे एक ही घूट में पी लिया था। उसके बाद उसने चीत्कार किया था। वह अपनी जगह लड़खड़ा गया था और उसका शरीर कुछ फूलने लगा था। ऐसा लगने लगा था जैसे वह बदल रहा हो, जैसे उसका शरीर फूल रहा हो। उसकी शक्ल बदलती जा रही थी, जैसे वह कोई नरम घुलनेवाली चीज़ हो। लेनियन डर के मारे पीछे हट गया था। और तब उसने देखा था, उसके सामने स्वयं डा० जेकिल खड़ा था।···

डा० जेकिल ने अपने बारे में जो पूरा बयान दिया था, उसमें साफ लिख दिया था कि उसने एक ऐसा नमक ईजाद कर लिया था जो उसे अत्यन्त सम्मानित, दयालु और विज्ञान के प्रवीण प्रयोगकर्ता की जगह मि० हाइड नामक भयानक शैतान बना देने की सामर्थ्य रखता था। ज्यों-ज्यों वह नमक का प्रयोग करता रहा, हाइड का भयानक व्यक्तित्व उसका अपना स्वाभाविक स्वरूप बन गया। लेकिन एक समय ऐसा आया कि उसको वह नमक नहीं मिल सका, जो उसे कभी-कभी जेकिल बना दिया करता था। उस समय आत्महत्या के अतिरिक्त उसके पास कोई और मार्ग नहीं रहा।

इस उपन्यास में स्टीवेन्सन ने विज्ञान के विकास पर परोक्ष रूप से व्यंग्य किया है। देखने में यह एक रहस्य-भरी कहानी-मात्र ही दिखाई देती है, लेकिन इसके पीछे व्यक्तित्व के दो रूपों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी है। एक यह कि विज्ञान की सामर्थ्य मनुष्य की सज्जनता का नाश करती है, और दूसरे यह कि आविष्कार के पीछे की महत्त्वाकांक्षा जैसे अपने भीतर एक पुनीत अवधारणा लिए हुए न हो तो वह अवश्य ही मनुष्य को निकृष्ट पथ की ओर ले जाती है। इसीलिए इस उपन्यास ने अपने युग में इतना अधिक प्रभाव डाला था। इसमें एक रोमांचक वातावरण प्रारम्भ से अंत तक रखा गया है और व्यक्तित्व के द्वन्द्व इसमें बहुत ही सुन्दरता से अपना निर्वाह कर सके हैं।

एक औरत की ज़िन्दगी

[यूने वी[1]]

मोपासां, गाय द : फ्रेंच कथाकार मोपासां का जन्म एक सम्भ्रान्त कुल में हुआ। आपका परिवार अभिजात कुलीन था। फ्रांस में सेनइन्फ र्‌यूरे नामक स्थान के निकट आप ५ अगस्त, १८५० को पैदा हुए। आपकी माता का उपन्यासकार फ्लावेयर से अच्छा परिचय था। मोपासां पर फ्लॉबेयर का साहित्यिक प्रभाव बहुत अधिक पड़ा। प्रारम्भ से ही मोपासां को रुचि साहित्य की ओर हो गई। बड़े होने पर पेरिस में जन-सेवा-विभाग में आपकी नियुक्ति क्लर्क के रूप में हो गई। फ्रेंको-प्रशियन युद्ध में आपने काम किया। इसके उपरान्त आप कविताएं और कहानियां प्रकाशित कराने लगे, जिनमें निराशा की गहरी भावना थी और नैतिक भावना का एक अभाव भी था। मोपासां का बौद्धिक संतुलन धीरे-धीरे विनष्ट होने लगा और १८९२ में आपका दिमाग बिलकुल खराब हो गया। ६ जुलाई, १८९३ को आपकी एक पागलखाने में मृत्यु हो गई। आप मुख्यतः कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। किन्तु उपन्यास के क्षेत्र में भी आपने विश्व-साहित्य को अद्वितीय रचनाएं दी हैं।

'यूने वी' (एक औरत की ज़िन्दगी) १८८३ ई० में प्रकाशित हुआ था। यह आपका अत्यन्त विख्यात उपन्यास है।

जीन ले परश्यू र्‌यून में अपने घर लौट आई। वह अपने कॉन्वेंट की शिक्षा समाप्त कर चुकी थी। वह बहुत सुन्दर थी—अट्ठारह साल की एक सरल बालिका। प्रकृति का सौन्दर्य उसपर गहरा प्रभाव डालता और उसको भावुक बना देता। अपने माता-पिता के निकट आकर एक बार फिर उसमें जीवन के आनन्द की हिलोर लहराने लगी। परिवार का पुराना मकान नॉर्मन समुद्र तट पर था। उसको पोपलर्ज़ कहते थे। उसकी बड़ी इच्छा थी कि वह वहां जाए और आनन्द से अपने दिवस व्यतीत करे।

जीन गांव आ गई। यहां एक स्वतन्त्र और आनन्दमय जीवन प्रारम्भ हुआ। देहात की हवा में ताज़गी थी। सदरू के फूलों की सेगन्ध उस एकान्त स्थान में भुमराया करती थी और जीन विभोर होकर वहां घूमा करती थी।

समुद्र दूर तक फैला हुआ दिखाई देता, उसकी लहरें आतीं और बिखर जातीं। फेन-राशि पीछे लौट जाती। क्षितिज तक आकाश को देखने पर भी उसकी आंखें तृप्त

---

१. Une Vie (Guy De Maupassant)—इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद हो चुका है : 'एक औरत की ज़िन्दगी'; अनुवादक : श्री शिवदानसिंह चौहान एवं श्रीमती विजय चौहान; प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।

हीं होती। घंटों तक एकान्त में वह बैठी समुद्र के गहन गर्जन को सुना करती। उसके
ता बैरन थे जो कुलीन थे। उन्हें अपने काश्तकारों को सुखी देखने में बड़ी दिलचस्पी
ी। खेत की उन्नति करना उन्हें बहुत रुचिकर था। उनकी पत्नी बैरोनेस अस्वस्थ रहा
रती थी। उसके दिल पर बड़ा जल्दी असर हो जाया करता था, इसलिए वह लम्बी यात्रा
पक्ष में नहीं थी। घर के आस-पास ही घूम लिया करती थी। जीन की एकमात्र मित्र
ी—एक किसान की लड़की रोज़ाली। दोनों की एक ही उम्र थी। रोज़ाली उनके घर
 काम किया करती थी, लेकिन उसे ऐसे पाला गया था जैसे वह जीन की बहन ही हो।
क दिन पादरी पिको बैरोनेस से मिलने आया। यह एक स्थानीय पादरी था। यद्यपि
रन और बैरोनेस दोनों ही कैथोलिक मत का प्रतिपालन कठोरता से नहीं करते थे फिर
ी पादरी से उनकी मित्रता थी। पादरी उन्हें गिरजे में आने को कह गया।

इतवार आया। मां-बेटी दोनों गिरजे गईं। गिरजे में सामूहिक प्रार्थना समाप्त
हुई। पादरी ने इन लोगों का परिचय वाईकाउण्ट जूलियन द लामार नामक पड़ोस के
एक तरुण अभिजात कुलीन व्यक्ति से कराया। उसके परिवार की जो कुछ सम्पत्ति शेष
थी, वह उसीपर गुज़ारा करता था और बहुत ही किफायत से अपनी जिन्दगी गुज़ारता
था। जीन के माता-पिता को वह व्यक्ति पसन्द आया। उसकी बोल-चाल, रहन-सहन,
उसके परिवार का नाम—सब कुछ उनको अच्छा लगा और उसका सुन्दर मुख, सुडौल
शरीर उन्हीं को नहीं, जीन के हृदय में भी अपना प्रभाव डाल गया। अब जीन अपने पिता
की नाव में जूलियन के साथ इधर-उधर के कस्बों तक घूमने जाने लगी। बड़े आनन्द से
जल-यात्राएं होतीं। शाम को पोपलर्ज़ के निकट जब जीन उसके साथ घूमती तो प्रेम की
सुखद कल्पना जैसे साकार हो उठती और उसके मन में पला हुआ बहुत दिनों का एक
मधुर सपना जैसे जीवित हो उठता। जूलियन ने एक दिन बैरन से निवेदन किया कि वह
जीन से विवाह करना चाहता था। जीन इस बात को सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हो गई।
माता-पिता को कोई विरोध नहीं था इसलिए सगाई हो गई और शादी का दिन भी तय
हो गया और विवाह के उपलक्ष्य में कौरसिका नामक स्थान पर जाने की योजना भी बना
ली गई। विवाह में जीन की तरुण चाची लिसों एकमात्र अतिथि बनकर आई।

लेकिन जीन को किसी ने भी यह नहीं बताया था कि पत्नी के कर्त्तव्य क्या होते
हैं। माता-पिता ने कभी उसे इसकी शिक्षा नहीं दी कि एक पति अपनी से क्या आशा कर
सकता है और उसके सम्बन्ध क्या होने चाहिए, इसलिए सुहागरात को अपने पति के साथ
रहने पर उसको विचित्र-सा धक्का लगा। उसकी कोमल भावुकताएं जैसे खंडित हो गईं।
यह सब कुछ वह जानती ही नहीं थी और उसे यह सब बड़ा कुरूप और अनगढ़-सा दिखाई
दिया। विवाह के उपरान्त वे लोग जब यात्रा में चले तो उसका पति उसके प्रति जो अनु-
रक्ति दिखाता, जीन को उस सबसे घृणा हो आती और वह बेचैन-सी घबराने लगती। वे
लोग कौरसिका के देहात की ओर चल पड़े और यात्रा के दिनों में पर्वतों और कन्दराओं
के अनिंद्य प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर जीन का हृदय अत्यन्त प्रभावित हुआ। उसकी
चेतनाएं जाग उठीं और अपने पति के आवेग का प्रत्युत्तर वह स्नेह से देने लगी।

लेकिन जब वे लोग पोपलर्ज़ में लौट आए तो जूलियन में एक विचित्र उपेक्षा दा

गई। उसे लगा जैसे जादू उतर गया है और जैसे जीन भी रिक्त हो गई है। दैनिक जीवन की उबा देनेवाली गतिविधि में जीन का मन ऐसा हो गया जैसे कि इन्द्रजाल उसके ऊपर से उतर गया, कुछ बाकी न रहा। उसे लगता कि उसकी किसी बात में दिलचस्पी नहीं रह गई है, जिसमें मन लगाकर वह अपने-आपको भुला सके, अर्थात् जिसमें उसे आनन्द मिल सके। उसे ऐसा लगता था जैसे कि जो कुछ हो रहा है, उसे होने देना चाहिए—वह सब होने ही के लिए है। जूलियन अब फिर अपने फार्म के पास आ गया था और छोटी-छोटी किफायतें करना उसने प्रारम्भ कर दिया था। बेरन देखते तो उन्हें कुछ मनोरंजन-सा होता पर जीन कभी-कभी इससे चिढ़ जाती। वे पड़ोसियों से मेल-जोल बढ़ाने लगे। वर्ष समाप्त होने के समय जीन के माता-पिता ने निश्चय किया कि वे अब रयून लौट जाएंगे। उनके चले जाने पर जीन को उदासी ने घेर लिया। उसके लिए जैसे जगह बदल गई। अब रोज़ाली भी बहुत पहले जैसी नहीं रही। वह अस्वस्थ थी और उसके जीवन में दुःख ही दुःख था। एक रात जीन ने देखा रोज़ाली शयनगृह में फर्श पर पड़ी कराह रही थी। उसके उसी समय एक बच्चा पैदा हुआ था। जूलियन को जब इस बारे में पता चला, वह क्रोध से भर गया और दोनों को उसने वहां से निकाल देने के लिए तुरन्त जोर दिया। जीन पूछ-पूछकर हार गई, लेकिन रोज़ाली ने बच्चे के पिता का नाम नहीं बताया।

कई हफ्ते बीत गए। एक रात जीन को यह पता चला कि रोज़ाली का प्रेमी जूलियन ही था। इस खबर से जीन को ऐसा लगा कि धरती उसके पांव के नीचे से सरक गई है। उसके मस्तिष्क का सतुलन बिलकुल बिगड़ गया। उसने जल्दी से कपड़े पहने और समुद्र की ओर भाग चली। बाहर बर्फ पड़ रही थी। जूलियन उसके पीछे भागा। अन्त में उसने जीन को पकड़ लिया। चट्टान के ऊपर खड़ी वह नीचे कूदने को तैयार थी और बुरी तरह थक चुकी थी। बर्फ ने उसे बीमार कर दिया। जब उसकी बीमारी की खबर उसके माता-पिता को पहुंची तब वे लोग मिलने आए। जूलियन ने अपने को निरपराध घोषित किया। तब जीन ने निश्चय किया कि रोज़ाली से असली बात का पता लगाया जाय। पादरी को बुलाया गया। पादरी के सामने रोज़ाली ने अपना बयान दिया कि जब पहली बार जूलियन पोपलर्स में आया था, तभी उसने उसपर अपने डोरे डाल दिए थे और बच्चा उसीका था। बेरन ने रोज़ाली के लिए पच्चीस हजार फ्रैंक की कीमत का फार्म अलग निश्चित करना स्वीकार कर लिया और पादरी ने उसके लिए पति ढूंढने का उत्तरदायित्व लिया। इन्हीं दिनों जीन को ज्ञात हुआ कि वह गर्भवती है। इससे उसके मन के घाव धीरे-धीरे जैसे कुछ ठीक होने लगे। अपने जीवन की जितनी भी शिकायतें थीं, दुर्निरोध थे उन सबको उसने दिशा बदलकर अजन्मे शिशु की ओर मोड़ दिया; और जब बालक का जन्म हुआ, उसने अपना सारा प्यार उसी पर केन्द्रित कर दिया।

इस बीच उनके मित्रों का समुदाय बढ़ता गया था। पड़ोस में ही काउन्ट और काउन्टेस द फोर्विल रहते थे। जूलियन की उनसे बहुत अधिक मित्रता हो गई। वे दोनों ही जैसे उसे बहुत सुख देते थे और जीन के प्रति दोनों ही का ध्यान बहुत अधिक था। लेकिन जूलियन को अपने पुत्र पॉल में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

इधर पिछले दिनों से जूलियन कुछ बदल गया था। जीन को पता चला कि

जूलियन और काउण्टेस द फोरवील में परस्पर प्रेम-व्यवहार चल रहा है। दोनों ही घोड़ों की पीठ पर बैठकर देहात मे घूमने जाया करते थे। एक दिन जीन ने भी उन लोगों का पीछा किया। दोपहर ढल चुकी थी और घोड़ पर बैठे हुए जीन ने देखा—जूलियन और काउण्टेस के घोड़े एक एकान्त कुज के निकट बधे खड़े थे, किन्तु प्रेमी और प्रेमिका दीख नही रहे थे।

उन्ही दिनों जीन की मां पोपलर्ज की ओर लौट गई। अकस्मात् उनको दिल का दौरा हुआ और वे मर गई। जीन के लिए यह एक नया आघात हुआ और अब वह अपनी मां के पुराने पत्रों को पढकर उस दु ख को घटाने का प्रयत्न करने लगी। मां के पत्रों को पढ़ते-पढ़ते उसे यह जानकर बहुत ही दु ख हुआ कि अपने जमाने मे स्वय उसकी मा का भी बैरन के एक पुराने और बहुत अच्छे मित्र से प्रेम-सम्बन्ध रहा था।

एक दिन पोपलर्ज के हरे-भरे लॉन पर गभीरतापूर्वक चहल-कदमी करता हुआ काउण्ट द फोरविल जीन के पास आया। उसके मुख पर एक कठोर भयानकता थी। जीन उसको देखकर ही समझ गई कि शायद उसे जूलियन और अपनी पत्नी काउण्टेस के प्रेम-सम्बन्ध का पता चल गया है। जीन उसे अभी कुछ कह भी नही पाई थी, कि वह उन दोनो—काउण्टेस और जूलियन को फिर ढूढ़ने चल पडा।···

जाड़े के दिनों में गड़रिये और चरवाहे बर्फ से बचने के लिए चरागाहो मे झोपडे से बना लेते थे। ऐसे ही एक झोंपड़े के पास काउण्ट को दो घोडे दिखाई दिए। काउण्ट ने झोपड़े के अन्दर झांका। दोनों प्रेमी केलि-क्रीड़ा मे मस्त थे। काउण्ट के क्रोध का पारावार न रहा। प्रचड उन्माद से भरकर उसने झोपडे को सरकाना शुरू किया। काउण्ट बहुत हट्टा-कट्टा था, अतः झोंपडे को एक चट्टान के ऊपर तक खीच ले जाने मे सफल हो गया। चट्टान के ऊपर से उसने झोपड़े को युगल-प्रेमियों समेत एक गर्त में नीचे ढकेल दिया।

किसानों ने जब नीचे के चकनाचूर झोंपड़े को देखा तो उन्हे बहुत नीचे खड्ड में जूलियन और काउण्टेस के शव दिखाई दिए।

इस घटना के बाद जीन ने अपने सारे जीवन को पॉल की देख-रेख मे लगा दिया। उसने उससे इतना दुलार किया कि लाड़ ने उस बच्चे को बिगाड़ना शुरू कर दिया। उस बच्चे के नाना अर्थात् बैरन और चाची उस की छोटी से छोटी इच्छा के दास बन गए और स्वभावतः ही इसका परिणाम अच्छा नहीं हुआ। जब वह पन्द्रह साल का हुआ तब शिक्षा के लिए उसे बाहर भेजने की बात उठी। जीन ने कभी इस बात की कल्पना भी नही की थी कि शिक्षा के लिए उसको दूर भेज दिया जाएगा। वह सदा उसे अपने पास रखना चाहती थी। उसकी राय यह थी कि उसको दूर क्यो भेजा जाय। यही गाव में पढ़ा-लिखाकर खेती-बाड़ी सिखाई जाए और वह एक इज्जतदार जमीदार बनकर अपना जीवन व्यतीत करे। लेकिन बैरन के मत मे ऐसा ठीक नही था। बैरन की राय थी कि पॉल को कालेज भेजा जाय और अन्त में जीन को इसे स्वीकार करना पड़ा। कालेज मे दूसरा साल खत्म कर लेने पर पॉल का पोपलर्स मे आना धीरे-धीरे कम हो गया। अब उसके नये-नये दोस्त हो गए थे। उसके आनन्द के लिए नये विलास-भरे साधन इकट्ठे होने लगे

थे। इससे पहले कि जीन इस परिवर्तन को देखती, तब तक वह बढ़-चढ़कर पूरा आदमी बन गया था और और अब अपने से दुलार करनेवाले परिवार के प्रति उसकी अनुरक्ति बहुत ही कम हो गई थी। चौथे साल उसने जीन को बिना सूचना दिए ही कालेज छोड़ दिया। उसने एक रखैल भी रख ली थी।

आगामी कुछ सालों में परिवार से उसका पत्र-व्यवहार केवल इसलिए हुआ क्योंकि उसे बार-बार धन की याचना करनी होती थी। वह अब काफी बड़ा हो गया था। वह अपनी विरासत को देखने के लिए छः महीने में कभी-कभार आता। उसके ऊपर बहुत-से कर्ज़े हो गए थे। उसका नाना अपनी जायदाद को बार-बार गिरवी रखने लगा, ताकि पॉल को किसी प्रकार बचाया जा सके। पॉल पर एक बार इतना कर्ज़ा हो गया कि उसको चुकाने के इन्तज़ाम में बैरन की मृत्यु हो गई।

जीन तेज़ी से बूढ़ी हो रही थी। उसकी आमदनी करीब-करीब खत्म हो चुकी थी। पॉल की रखैल के प्रति उसे घोर घृणा थी। यह घृणा उसे मन ही मन खाए जा रही थी। अब उसका मस्तिष्क केवल अतीत की ओर दौड़ता और वह वर्तमान में रहना भूल गई थी। पुरानी कल्पनाओं में ही वह अपने-आपको उलझाए रखती और उसका जीवन एकाकी हो गया।

एक दिन रोज़ाली पोपलर्ज़ में लौट आई। जीन ने उसे देखा तो उसे बहुत आनन्द हुआ। रोज़ाली ने जीन के हिसाब-किताब अपने हाथ में ले लिए और कहा कि जो कुछ बचाया जा सके उसको कड़ाई से बचाना चाहिए और उसने उससे स्पष्ट क दिया कि पोपलर्ज़ को बेच देना चाहिए। जीन इस विचार के पक्ष में नहीं थी, लेकि उसने इसे स्वीकार कर लिया, क्योंकि मजबूरी थी। वह रोज़ाली के साथ कुछ दूर प एक छोटी-सी कोठरी में रहने के लिए चली गई। वह पॉल से मिलने के लिए पेरिस भ गई। लेकिन वहां पॉल की जगह अपना कर्ज़ वसूल करनेवाले लोग उसको मिल गए अन्त में जीन ने यही निश्चय किया कि वह पॉल से मिलने भी नहीं जाएगी। अभी उसने यह विचार किया ही था कि उसको यह सूचना मिली कि जिस स्त्री से पॉल ने प्रेम किया था वह एक बच्चे को जन्म देकर बीमार पड़ गई थी और मरनेवाली थी। रोज़ाली तुरन्त पेरिस गई, ताकि बच्चे को ले आए और उसके माता-पिता का विवाह करा दे। अगले दिन सूचना आई कि पॉल की रखैल मर चुकी है और वह घर आ रहा है। अनेक वर्षों के बाद जीन को प्रसन्नता हुई।

रोज़ाली ने जीन से कहा, "देखती हो, जीवन न तो उतना बुरा ही है, न उतना अच्छा ही, जितनी कि हम कल्पना करते हैं।"

प्रस्तुत उपन्यास में मोपासां ने जीन के माध्यम से मनुष्य-जीवन के उतार-चढ़ाव को चित्रित किया है। इस संसार में मनुष्य की कल्पना अपने व्यक्तिगत दायरों के भीतर बनती है, किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि हर व्यक्ति उस कल्पना के अनुरूप ही चलता रहे। एक-दूसरे के आनन्दों की कल्पना का संघर्ष हमारे दैनंदिन जीवन में उतरता रहता है और हमारे सुख-दुःख की भावना से हमारी परिस्थितियां जन्म लेती हैं, किन्तु परिस्थितियां उनका निर्माण भी करती चलती हैं।

ऑस्कर वाइल्ड :

अपनी छाया

[द पिक्चर ऑफ़ डोरियन ग्रे[1]]

ऑस्कर वाइल्ड : आपका पूरा नाम ऑस्कर फ़िंगाल ओ' फ्लाहर्टी विल्स वाइल्ड था। पर आप ऑस्कर वाइल्ड के नाम से ही प्रसिद्ध थे। आप एक प्रसिद्ध सर्जन के पुत्र थे। आपकी माता कवयित्री थीं। आपका जन्म डबलिन में १५ अक्तूबर, १८५४ को हुआ। ट्रिनिटी कॉलेज और ऑक्सफ़ोर्ड में क्लासिक्स तथा कविता में आपको डिस्टिंक्शन मिला। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में लन्दन में 'सौन्दर्य-वादी' आन्दोलन के नेता के रूप में आपने बहुत अधिक यश अर्जित किया। आप अपने समय में अत्यन्त विख्यात थे। आपकी वाक्-चतुरता से लोग बहुत प्रभावित थे। आप कवि, उपन्यासकार और नाटककार थे। किन्तु आपने १८९५ में समाज के नैतिक नियमों का उल्लंघन कर दिया, इसलिए आपका सामाजिक सम्मान गहरे धक्के के कारण लड़खड़ा गया और दो वर्ष के लिए आपको कड़ी सज़ा मिली। ३० नवम्बर, १९०० को पेरिस में आपकी मृत्यु हुई। ऑस्कर वाइल्ड अपने समय के प्रबुद्ध विचारकों में से भी थे।

'द पिक्चर ऑफ़ डोरियन ग्रे' (अपनी छाया) आपका एक प्रसिद्ध उपन्यास है। यह पहली बार १८९० में प्रकाशित हुआ।

लार्ड हेनरी वोटन दीवान पर लेटा हुआ था। स्टूडियो में गुलाबों की मधुर गन्ध भरी हुई थी। दीवान के कोने पर हुआ लार्ड वोटन मधुवर्णी कुसुमों के गुच्छों को उपवन के पादपों पर लिपटे हुए देख रहा था। मधुमक्खियाँ गुंजन कर रही थीं। चारों ओर एक निस्तब्धता छा रही थी और ऐसा लगता था जैसे कोलाहल किसी स्वप्न-लोक में जाकर निद्रित हो गया था। भीने-भीने सुरभित कुसुम आलोड़ित पवन पर झूम उठते थे और स्टूडियो में उनकी गन्ध वायु पर बैठकर धीरे-धीरे से बह-बह आती थी। किन्तु यह निस्तब्धता लार्ड वोटन को मानो आराम किए दे रही थी। कमरे के मध्य में एक असाधारण सौन्दर्य-युक्त व्यक्ति का चित्र था। निस्सन्देह चित्र का व्यक्ति युवक था और उसको देख-कर आँखें जैसे तृप्त हो जाती थीं। चित्र के सम्मुख बेसील हालवर्ड नामक चित्रकार बैठा था। बेसील कुछ दिनों पहले अचानक ही गायब हो गया था। उसके बारे में लोगों में बड़ा कौतूहल पैदा हो गया था; और उसके लिए लोग रहस्यात्मक शब्दों का प्रयोग किया करते थे।

---

१. The Picture of Dorian Gray (Oscar Wilde)—इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुका है—'अपनी छाया'; अनुवादक—रामकुमार; प्रकाशक—राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।

लार्ड हैनरी ने कहा, "वैसील, क्या यह तुम्हारा सर्वश्रेष्ठ चित्र है ? तुम्हें इसको ग्रोस वीकर के पास भेज देना चाहिए।"

वैसील ने कहा, "इसको मैं कहीं नहीं भेजूंगा—मैंने मानो इसमें अपने-आपको ही उडेलकर रख दिया है। इस चित्र में मैं इतना अधिक उतर आया हूं कि इसे कहीं भी भेजना नहीं चाहता।" और तब चित्रकार वैसील ने बताया कि चित्र के युवक का नाम डोरियन ग्रे था। जिस समय उसने उसे देखा था, तभी उसपर जैसे एक जादू-सा हो गया था। उसने जैसे उसे पराभूत कर लिया था अपने सौन्दर्य से। उसको देखकर वैसील को लगा था कि उसका चित्र बनाने के लिए, कला की एक नई अभिव्यक्ति, उसके अपने व्यक्तित्व को सराबोर करके, अपने-आपको प्रकट करने की चेष्टा कर रही थी। वह इसमें सफल भी हुई। और उसके बाद चित्रकार ने कुछ उदासी से कहा, "लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि मैंने अपनी सारी आत्मा उड़ेलकर एक ऐसे व्यक्ति को दे दी है जो उसका मूल्यांकन तदनुरूप नहीं करता। उसके लिए मानो यह एक कोट में लगाने के, मात्र एक फूल के समान है।" चित्रकार ने लार्ड हेनरी की ओर देखा और विनीत स्वर में कहा कि वह उसके मित्र के सादे और मधुर स्वभाव को बिगाड़े नहीं। क्योंकि वह जानता था कि लार्ड हेनरी वोटन प्रत्येक वस्तु के प्रति एक उपेक्षा का भाव रखता था और अविश्वास-भरा व्यंग्य उसके होंठों पर थिरका करता था।

अभी वे लोग बातें ही कर रहे थे कि डोरियन ग्रे के आने की सूचना मिली।

लार्ड हेनरी वोटर ने देखा कि डोरियन के होंठ गुलाबी थे—स्वच्छ। आंखें नीली थीं—निर्मल। केश कोमल और स्वर्णिम थे। और लार्ड हेनरी को लगा कि यह एक पवित्र यौवन था; अभी इस पर किसी प्रकार की कलक-कालिमा का प्रभाव नहीं पड़ता था।

चित्रकार अपनी तूलिका लेकर पुनः मग्न हो गया। डोरियन लार्ड हेनरी से बातें करता रहा।

लार्ड हेनरी ने कहा, "किसी भी प्रकार की लालसा से मुक्त होने के लिए आवश्यक है कि एक बार उसके सम्मुख समर्पण करके उसको प्राप्त कर लिया जाए। और तृप्ति हो जाने पर मन में अवश्य ही अनुरक्ति का स्थान विरक्ति ग्रहण कर लेगी।"

इस वाक्य ने जैसे डोरियन ग्रे पर अपना प्रभाव दिखलाया। ऐसा लगा कि यह ध्वनि उसके हृद्तन्त्री के तार को बजा गई।

लार्ड हेनरी ने डोरियन को यह भी कहा कि जब उसे सौन्दर्य मिला है तो उसे अवश्य ही उसका सम्पूर्ण उपभोग करना चाहिए, क्योंकि यौवन सदैव स्थिर नहीं रहता। वस्तु की सार्थकता उसके नियोजित भोग में है, उसके सापेक्ष सम्बन्धों में है। क्योंकि व्यक्तित्व अपने-आपमें तब तक पूर्ण नहीं होता जब तक कि पार्थिव रूप तृप्ति की अनुभूतियों के माध्यम से अपना सम्पूर्ण उपभोग नहीं कर लेता।

चित्रकार ने पुकारकर कहा, "लो, मेरा चित्र समाप्त हो गया।"

तीनों ने उस अत्यन्त सुन्दर कलाकृति को देखा। डोरियन ग्रे ने धीरे से बुदबुदाकर कहा, "यह कितने विषाद का विषय है, बुढ़ापा आएगा और मेरे इस रूप को कुरूपता

ग्रस लेगी ! किन्तु यह चित्र कभी वृद्ध नहीं होगा। अगर मैं सदैव युवक ही बना रहूं जो कि असम्भव है, तो सम्भवत: मेरा सौन्दर्य नष्ट नहीं होगा। उस अवस्था में मेरी जगह मेरा यह चित्र बूढ़ा होता चला जाए तो कैसा विचित्र हो। इसके लिए मैं अपनी आत्मा तक को बेचने के लिए तैयार हूं।"

डोरियन विशाल सम्पत्ति का स्वामी होनेवाला था। उसकी माता एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री थी। कुलीन परिवार की होते हुए भी वह एक बहुत साधारण व्यक्ति के साथ भाग निकली थी। उस व्यक्ति और उसके पिता का द्वन्द्व-युद्ध हुआ। पिता उसमें मारा गया, और माता भी अधिक जीवित नहीं रही। उसको उस दूसरे व्यक्ति ने पाला। डोरियन उसके साथ-साथ नाटक देखने जाता। भोज में सम्मिलित होता। किन्तु जब उस व्यक्ति को यह ज्ञात हुआ कि डोरियन एक छोटे थियेटर में काम करनेवाली सत्रह वर्षीय अभिनेत्री सिबिल वैन के प्रेम में पड़ गया है, तो उसने रोष प्रकट किया। लार्ड हेनरी वोटन को जब यह सब ज्ञात हुआ तो मन ही मन एक विचित्र भावना ने जन्म लिया।

डोरियन ग्रे अपने मित्रों को लेकर थियेटर में जाता। जब उसकी अभिनेत्री से सगाई तय हो गई तो वह अपने मित्रों को लेकर उसका अभिनय देखने गया। अभिनेत्री उसको 'जादूगर राजकुमार' कहा करती थी, क्योंकि वह उससे अत्यन्त प्रभावित थी। इस बार वह सुन्दर अभिनय नहीं कर सकी। डोरियन ने देखा कि पहली बार वह अपने काम में असफल हो गई थी। डोरियन को धक्का लगा। वह उसको सौन्दर्य और कला की देवी मानता था। जब उसने इस विषय में अभिनेत्री से प्रश्न किया तो सिबिल वैन ने कहा, "रंगमंच मेरे लिए अब वास्तविकता और यथार्थ का प्रतीक नहीं है।"

डोरियन ग्रे आहत-सा कह उठा—तुमने मेरे प्रेम की हत्या कर दी है !" और उसको रोते हुए छोड़कर चला गया।

जब वह घर आया और उसने अपना चित्र देखा तो उसके मुख पर एक निष्ठुरता की भावना उदित हो आई थी। चित्र देखकर उसे आश्चर्य हुआ। उसने दर्पण में अपना मुख देखा—वही आकृति थी, वही मुद्रा थी, सब कुछ वैसा ही था। कुछ भी परिवर्तित नहीं हुआ था। किन्तु चित्र में अकस्मात् ही एक ऐसा परिवर्तन आ गया था। और तभी उसे अपनी चाहना की याद हो आई जब उसने कहा था, 'मैं ऐसा ही बना रहूं, और जितने भी परिवर्तन हों, वे सब इस चित्र में ही हुआ करें।' इस विचार ने उसके हृदय को धक्का पहुंचाया; किन्तु उसने अपने मन को यह कहकर सान्त्वना दी, 'मैं निष्ठुर नहीं हूं। यह तो सिबिल वैन का अपराध है।'

अगले मध्याह्न की वेला में उसने सिबिल को क्षमा-याचना करते हुए एक पत्र लिखा। किन्तु इतने में लार्ड हेनरी वोटन ने उसे सूचना दी कि सिबिल ने विष खाकर आत्महत्या कर ली है।

"अच्छा ही हुआ।" लार्ड हेनरी ने कहा, "वरना वह तुम्हें बिलकुल उबा देती।"

डोरियन को लगा कि उसके इस वाक्य में कुछ तथ्य अवश्य है उसने यह अनुभव किया कि वह लार्ड की बात से सहमत है। यह दुःख-भरा प्रकरण बिलकुल नाटकीय ढंग से हुआ था। स्वयं डोरियन ग्रे उसका एक भाग था, इसको डोरियन को एक विचित्र अनुभूति

हुई, और मुस्कराते हुए उसने चित्र पर एक पर्दा डाल दिया। अब वह उसकी आत्मा के लिए एक दर्पण के समान हो गया। जो परिवर्तन उसके लिए बाह्य रूप में अप्रकट थे उनको वह इस चित्र में देख सकता था। अगले दिन सवेरे चित्रकार बेसिल उसके पास आया। उसने डोरियन को फिर मॉडल बनने के लिए कहा। किन्तु डोरियन ने चित्रकार को वह चित्र देखने की भी आज्ञा नहीं दी। चित्रकार ने डोरियन की प्रशंसा में कहा कि डोरियन उसकी कल्पना में एक आदर्श पुरुष है। उसने उसके सौन्दर्य के रूप में अपनी कल्पना को साकार कर लिया है। लेकिन डोरियन किसी भी तरह उसके लिए फिर से मॉडल बनकर बैठने को तैयार नहीं हुआ। चित्रकार के चले जाने के बाद डोरियन ने चित्र को उठा लिया। उसके घर से ऊपर की मंजिल में एक कमरा था जिसका कोई प्रयोग नहीं होता था। उसने उस चित्र को उस कमरे में पहुंचा दिया और दरवाजा बन्द करके ताला लगा दिया।

लार्ड हेनरी वोटन ने डोरियन के पास एक उपन्यास भेजा। यह पेरिस के एक युवक की कहानी थी। पेरिस के इस युवक ने जीवन के विचित्र अनुभव किए थे। अतीत की शताब्दी से पाप और पुण्य की सारी भावनाओं को अपने अनुभव में उतारने के लिए उसने जीवन की समस्त वासनाओं को अपने ऊपर खेल जाने दिया था। यह एक विषाक्त वासनात्मक पुस्तक थी। डोरियन पर उसका जादू का सा प्रभाव हुआ। वर्षों तक वह उससे प्रभावित होता रहा। उसे ऐसा लगता जैसे वह उसका अपना ही जीवन-चरित्र था—और वह जब पैदा भी नहीं हुआ था, जब उसने उस जीवन को जिया भी नहीं था, तभी मानो उसको लिख दिया गया था।

डोरियन के अद्भुत सौन्दर्य और उसके मुख की पवित्रता आज भी उसके साथ थी। ऐसा लगता था जैसे उसमें कभी कोई परिवर्तन नहीं आएगा। लेकिन लन्दन में उसके बारे में तरह-तरह की अफवाहें उड़ रही थीं। हर बुरी घटना से लोग उसे सम्बद्ध करते थे। वह कई दिनों तक घर से गायब रहता, रहस्यमय तरीके से इधर-उधर विचरण करता; लेकिन जब वह घर लौट कर आता तो अपने हाथ में दर्पण लेकर वह उस एकान्त कमरे में चित्र के सम्मुख खड़ा हो जाता। उसे यह देखकर विचित्र-सा आनन्द होता कि दर्पण में उसकी मुखाकृति वैसी ही निष्कलंक और सुन्दर दीखती है। लेकिन चित्र की मुखाकृति पर बुढ़ापा आता जा रहा था और कुटिलता अपनी कुरूपता को प्रदर्शित करने लगी थी। चित्र के व्यक्ति का आनन वासना-ग्रस्त था, भारी था, माथे पर घृणित रेखाएं उभर आई थीं, और शरीर भी बेडौल होता जा रहा था। लेकिन वह स्वयं वैसा ही सुन्दर और सुडौल था।

अपनी वेष-भूषा बदलकर डोरियन डोक्स के निकट एक बदनाम सराय में जाया करता था। उसकी भावनाएं अधिक भयंकर होती जा रही थीं। ज्यों-ज्यों उसकी अपने को तृप्त करने की चेष्टाएं बढ़ती जातीं, त्यों-त्यों उसकी क्षुधा और भयंकर होती जाती। वह लोगों को भोज पर बुलाता था, संगीत-पार्टियों का आयोजन करता था, ताकि लोग उससे प्रभावित हों और यही समझें कि वह एक नई विचारधारा का प्रतिपादन कर रहा है जिसमें सौन्दर्य की सूक्ष्म अनुभूतियों द्वारा प्रेरित एक नई आध्यात्मिकता प्राप्त की जा

सकती है।

इसी बीच डोरियन को रोमन कैथोलिक उपासना-पद्धति ने प्रभावित किया। उसने सुगन्धियों का अध्ययन किया। संगीत की ओर वह अनुरक्त हुआ। उसने रत्नों और बेशकीमती वस्तुओं को इकट्ठा किया और उनपर गहरी खोज-जांच की। अपने चित्र के प्रति वह बहुत अधिक अनुरक्त था। इसलिए वह लन्दन से दूर नहीं जाता था। किन्तु अब कुछ लोग उसके विरुद्ध हो चले थे, और जब वह पचीस वर्ष का हुआ तब उसके बारे में अफवाहें उड़ने लगी कि उसकी सोहबत बहुत खराब है। लेकिन बहुत-से लोगों के लिए तो ये अफवाहें भी उसके प्रति आकर्षण बनाए रखने के लिए काफी थी।...

डोरियन को अड़तीसवां साल लगा। उस शाम को बैसील हारवर्ड उससे मिलने आया। रात काफी बीत चुकी थी। चित्रकार गुप्त रूप से कार्य करने के लिए अगले दिन चुपचाप पेरिस जानेवाला था। उसने सोचा कि डोरियन से मिलता चलू। चित्रकार ने डोरियन को बताया कि लोग उससे घृणा करते हैं—वह बहुत बदनाम हो गया है। डोरियन क्रुद्ध होकर उसे अपने एकांत कमरे में ले गया। चित्रकार ने चित्र की ओर देखा और वह कांप उठा। चित्र के व्यक्ति का रूप भयंकर था, घृणित था। उसको देखकर जुगुप्सा हो आती थी। बैसील ने विनय के स्वर में कहा, "डोरियन, तुम अपने पापों के लिए प्रायश्चित करो। तुम परमात्मा से प्रार्थना करो। तुम्हारे लिए मुक्ति का अन्य कोई मार्ग नहीं।"

किन्तु यह सुनकर डोरियन पर एक आवेश-सा छा गया और उसने चित्रकार की छुरा भोंककर हत्या कर दी। चित्रकार गुप्त रूप से आया था, इसलिए कोई नहीं जानता था कि डोरियन की उससे मुलाकात हुई है। डोरियन ने ऐलेन कैम्पबेल नामक व्यक्ति को बुलाया। डोरियन ने ही कैम्पबेल के जीवन को विनष्ट किया था। कैम्पबेल रसायन-शास्त्र का विद्यार्थी था। डोरियन ने उसको मजबूर किया कि वह चित्रकार के शरीर को विनष्ट कर दे। इसके बाद डोरियन लेडी नारबरो के यहां भोज पर गया। वहां लार्ड हेनरी भी उपस्थित था। दोनों में बहुत दिलचस्प बातचीत हुई। लेकिन डोरियन भीतर ही भीतर घबराया हुआ था। उसके अन्दर भय की एक भावना उतर गई थी। उस रात डोरियन अफीमचियों के एक अड्डे पर पहुंचा। वहां एक मल्लाह था। एक स्त्री ने डोरियन को 'जादूगर राजकुमार' कहकर पुकारा। मल्लाह ने इस बात को सुन लिया। मल्लाह का नाम जिम वेन था। वह सिबिल वेन (डोरियन की मृत प्रेमिका) का भाई था। क्रोध के कारण उसने डोरियन पर आक्रमण किया और शायद उसकी हत्या ही कर दी होती, किन्तु डोरियन अपने सुन्दर मुख के कारण लोगों की सहायता से जीवन प्राप्त कर सका और वहां से बचकर निकल भागा।

एक सप्ताह के बाद जबकि डोरियन देहात के एक मकान में ठहरा हुआ था, उसको लगा कि वेन उस पर नजर रखे हुए है। डोरियन को लगा कि उसका अन्त नजदीक है। वेन अब इस तरह के मार-पीट के कामों में लग गया था। डोरियन के भाग्य से अकस्मात् एक दिन वेन एक शिकारी की गोली का शिकार हो गया। डोरियन ने सुख की सांस ली।

इसी तरह कुछ सप्ताह और बीत गए। एक दिन लार्ड हेनरी वोटन से डोरियन

ने कहा, "अब मैं अपने अच्छे कार्यों का प्रारम्भ कर रहा हूं।"

"मुझे बताओ, वह क्या काम है ?"

"देहात की एक सुन्दर लड़की है। मैं उसको फंसा नहीं रहा हूं।"

लार्ड हेनरी और बैसील के गायब हो जाने के बारे में बात करता रहा। लार्ड की पत्नी भी किसी व्यक्ति के साथ भाग चुकी थी। लार्ड कहने लगा कि बैसील भी अब अपना कला-कौशल लगभग खो चुका है। इसके बाद वे दोनों अलग हुए। डॉरियन घर की ओर चल पड़ा।...

अब उसमें अपने बचपन के निष्कलंक जीवन की स्मृति जाग उठी। उसका मन करने लगा कि किसी प्रकार वह अपनी उस पवित्रता को फिर से प्राप्त कर सके जिसको उसने इतना कलंकित कर दिया था। पर क्या अब यह सम्भव था ? वह चित्र ही उसकी असफलताओं का कारण था। लेकिन वह अपने भविष्य को बदल सकता था, क्योंकि ऐलेन कैम्पबेल भी अब तक मर चुका था और डॉरियन अब पूर्णतः सुरक्षित था। अपने मन में अपने भविष्य को सुधारने का निश्चय करने के उपरान्त, वह कमरे में उस चित्र को देखने गया। उसने सोचा कि शायद उसमें कोई परिवर्तन आ गया हो, क्योंकि उसने अपने मन को पवित्र करने का निश्चय कर लिया था। पर चित्र को देखकर उसके मुख से एक दुःख-भरा चीत्कार निकल गया। चित्र पर एक ढोंग और चालाकी का भाव और आ गया था, और हाथ पर रक्त का निशान भी दिखाई देने लगा था। डॉरियन ने एक चाकू उठा लिया और चित्र पर जोर से दे मारा। एक भयानक चीत्कार हुआ और किसी के नीचे गिरने की आवाज़ आई। नौकर दौड़ पड़े। उन्होंने बलपूर्वक कमरे का दरवाज़ा खोला। उन्होंने देखा कि उनके स्वामी का चित्र दीवार पर लटक रहा था। जैसा उन्होंने अपने स्वामी को कभी देखा था वैसा ही सौन्दर्य उस चित्र में अंकित था—निष्कलंक और निर्मल, अद्भुत सौन्दर्य, अनुपमेय यौवन; किन्तु फर्श पर एक मुर्दा पड़ा था। उस मुर्दे के चेहरे पर झुर्रियां पड़ी हुई थीं। उसका रूप विकृत था; और वह अत्यन्त घृणित दिखाई देता था। वे उस व्यक्ति को नहीं पहचान सके, किन्तु बाद में जब उन्होंने उस मुर्दे की अंगुलियों पर अंगूठियां देखीं, तब उन्हें मालूम पड़ा कि वह मुर्दा और कोई नहीं, स्वयं उनका स्वामी डोरियन ग्रे था।

प्रस्तुत कथा में ऑस्कर वाइल्ड ने बहुत ही कलात्मक रूप से मनुष्य के अन्तस्थ और बाह्य का अनन्योश्रित सम्बन्ध प्रदर्शित किया है। व्यक्ति अपने स्वार्थ और वासनाओं के कारण अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं देख पाता, किन्तु पाप अपनी छाया अवश्य डालता है। ऑस्कर वाइल्ड के इस उपन्यास में हमें इसका बड़ा भव्य चित्रण मिलता है। इस उपन्यास का डोरियन ग्रे एक ऐसा पात्र है, जो मनोविज्ञान और धर्म-भावना, दोनों का ही बड़ा संश्लिष्ट चित्र उपस्थित करता है।

रोम्यां रोलां :

जां क्रिस्तोफ[1]

रोम्यां रोलां : फ्रेंच साहित्यकार रोम्यां रोलां का जन्म २९ जनवरी, १८६६ को फ्रांस में क्लेमेसी नामक स्थान में हुआ था। आपने बचपन में ही संगीतज्ञ बनने का निश्चय कर लिया था। आपकी शिक्षा इकोल नोरमेल सुपीरियर में हुई और संगीत-सम्बन्ध अध्ययन पर ही आपको 'डॉक्टर ऑफ लेटर्स' की डिग्री मिली। आप वहीं 'कला के इतिहास' के प्रोफेसर बन गए। बाद में सोरबिन में 'संगीत के इतिहास' को पढ़ाने लगे। इस बीच में आपको अनेक सम्मान प्राप्त हुए। १९१५ में आपको नोबल पुरस्कार मिला, क्योंकि आपके नाटक और उपन्यास बहुत उच्च कोटि के माने गए। प्रथम महायुद्ध में आप शांतिवादी बन गए और स्विटज़रलैंड चले गए। १९४० में जर्मनों ने जब फ्रांस को पराजित किया तब आप वहीं रहते थे। ३० दिसम्बर, १९४४ को आपकी मृत्यु हुई। अपने जीवनकाल में आप बहुत ही विख्यात रहे। संसार के अत्यन्त प्रसिद्ध व्यक्तियों से आपका व्यक्तिगत परिचय भी रहा।

'जां क्रिस्तोफ' (१९१२) में आपने व्यक्ति-चित्रण के माध्यम से मानस की उन गहराइयों का पर्यवेक्षण किया है जिनको देखकर आश्चर्य होता है।

जां क्रिस्तोफ क्रोप्ट मेलकायर का पुत्र था। मेलकायर एक नशेबाज़ संगीतज्ञ था। उसका लूईसा नामक रसोईदारिन से सम्बन्ध हो गया था और इसके दुष्परिणाम-स्वरूप जां क्रिस्तोफ का जन्म हुआ।

राहिन नामक एक छोटे कस्बे में जां मिचेल नामक व्यक्ति ने पचास वर्ष पहले अपना निवास-स्थान बनाया था। यह जां मिचेल जां क्रिस्तोफ का बाबा था। बहुत छुटपन में ही क्रिस्तोफ की रुचि संगीत की ओर हो गई। मेलकायर नित्य ही अपने पुत्र को पियानो के पास ज़बरदस्ती बिठा लेता और रोज़ उससे अभ्यास करवाता। बच्चे को यह चीज़ पसन्द नहीं थी।

एक दिन जां मिचेल उसको ऑपेरा दिखाने ले गया, जहां जां क्रिस्तोफ पर इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि उसने संगीतज्ञ बनने का निश्चय कर लिया।

कुछ समय बाद एक दिन जां मिचेल ने अपने पोते क्रिस्तोफ द्वारा अब तक लिखे सभी गीतों को संगृहीत कर लिया। क्रिस्तोफ खेलते वक्त इन गीतों को वैसे ही बना लिया करता था। बाबा ने इन गीतों के संग्रह का नाम रखा 'शैशव के सुख'। मेलकायर

---

१. Jean Christophe (Romain Rolland)

ने कहा, "अब मैं अपने अच्छे कार्यों का प्रारम्भ कर रहा हूं।"

"मुझे बताओ, वह क्या काम है ?"

"देहात की एक सुन्दर लड़की है। मैं उसको फंसा नहीं रहा हूं।"

लार्ड हसा और बेसील के गायब हो जाने के बारे में बात करता रहा। लार्ड की पत्नी भी किसी व्यक्ति के साथ भाग चुकी थी। लार्ड कहने लगा कि बेसील भी अब अपना कला-कौशल लगभग खो चुका है। इसके बाद वे दोनों अलग हुए। डोरियन घर की ओर चल पड़ा।···

अब उसमें अपने बचपन के निष्कलंक जीवन की स्मृति जाग उठी। उसका मन करने लगा कि किसी प्रकार वह अपनी उस पवित्रता को फिर से प्राप्त कर सके जिसको उसने इतना कलंकित कर दिया था। पर क्या अब यह सम्भव था ? वह चित्र ही उसकी असफलताओं का कारण था। लेकिन वह अपने भविष्य को बदल सकता था, क्योंकि ऐलेन कैम्पबेल भी अब तक मर चुका था और डोरियन अब पूर्णतः सुरक्षित था। अपने मन में अपने भविष्य को सुधारने का निश्चय करने के उपरान्त, वह कमरे में उस चित्र को देखने गया। उसने सोचा कि शायद उसमें कोई परिवर्तन आ गया हो, क्योंकि उसने अपने मन को पवित्र करने का निश्चय कर लिया था। पर चित्र को देखकर उसके मुख से एक दुख-भरा चीत्कार निकल गया। चित्र पर एक ढोंग और चालाकी का भाव और आ गया था, और हाथ पर रक्त का निशान भी दिखाई देने लगा था। डोरियन ने एक चाकू उठा लिया और चित्र पर ज़ोर से दे मारा। एक भयानक चीत्कार हुआ और किसी के नीचे गिरने की आवाज़ आई। नौकर दौड़ पड़े। उन्होंने बलपूर्वक कमरे का दरवाज़ा खोला। उन्होंने देखा कि उनके स्वामी का चित्र दीवार पर लटक रहा था। जैसा उन्होंने अपने स्वामी को कभी देखा था वैसा ही सौन्दर्य उस चित्र में अंकित था—निष्कलंक और निर्मल, अद्भुत सौन्दर्य, अनुपमेय यौवन; किन्तु फर्श पर एक मुर्दा पड़ा था। उस मुर्दे के चेहरे पर झुर्रियां पड़ी हुई थीं। उसका रूप विकृत था; और वह अत्यन्त घृणित दिखाई देता था। वे उस व्यक्ति को नहीं पहचान सके, किन्तु बाद में जब उन्होंने उस मुर्दे की अंगुलियों पर अंगूठियां देखीं, तब उन्हें मालूम पड़ा कि वह मुर्दा और कोई नहीं, स्वयं उनका स्वामी डोरियन ग्रे था।

प्रस्तुत कथा में ऑस्कर वाइल्ड ने बहुत ही कलात्मक रूप से मनुष्य के अन्तर और बाह्य का अनन्योश्रित सम्बन्ध प्रदर्शित किया है। व्यक्ति अपने स्वार्थ और वासनाओं के कारण अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं देख पाता, किन्तु पाप अपनी छाया अवश्य डालता है। ऑस्कर वाइल्ड के इस उपन्यास में हमें इसका बड़ा भव्य चित्रण मिलता है। इस उपन्यास का डोरियन ग्रे एक ऐसा पात्र है, जो मनोविज्ञान और धर्म-भावना, दोनों का ही बड़ा संश्लिष्ट चित्र उपस्थित करता है।

जां क्रिस्तोफ[1]

रोम्यां रोलां : फ्रेंच साहित्यकार रोम्यां रोलां का जन्म २६ जनवरी, १८६६ को फ्रांस में क्लेमेसी नामक स्थान में हुआ था। आपने बचपन में ही संगीतज्ञ बनने का निश्चय कर लिया था। आपकी शिक्षा इकोल नोरमेल सुपीरियर में हुई और संगीत-सम्बन्ध अध्ययन पर ही आपको 'डॉक्टर ऑफ लेटर्स' की डिग्री मिली। आप वहीं 'कला के इतिहास' के प्रोफेसर बन गए। बाद में सोरबिन में 'संगीत के इतिहास' को पढ़ाने लगे। इस बीच में आपको अनेक सम्मान प्राप्त हुए। १९१५ में आपको नोबल पुरस्कार मिला, क्योंकि आपके नाटक और उपन्यास बहुत उच्च कोटि के माने गए। प्रथम महायुद्ध में आप शांतिवादी बन गए और स्विटज़रलैंड चले गए। १९४० में जर्मनी ने जब फ्रांस को पराजित किया तब आप वहीं रहते थे। ३० दिसम्बर, १९४४ को आपकी मृत्यु हुई। अपने जीवनकाल में आप बहुत ही विख्यात रहे। संसार के अत्यन्त प्रसिद्ध व्यक्तियों से आपका व्यक्तिगत परिचय भी रहा।

'जां क्रिस्तोफ' (१९१२) में आपने व्यक्ति-चित्रण के माध्यम से मानस की उन गहराइयों का पर्यवेक्षण किया है जिनको देखकर आश्चर्य होता है।

जां क्रिस्तोफ क्रोफ्ट मेलकायर का पुत्र था। मेलकायर एक नशेबाज़ संगीतज्ञ था। उसका लूईसा नामक रसोईदारिन से सम्बन्ध हो गया था और इसके दुष्परिणाम-स्वरूप जां क्रिस्तोफ का जन्म हुआ।

राइन नामक एक छोटे कस्बे में जां मिचेल नामक व्यक्ति ने पचास वर्ष पहले अपना निवास-स्थान बनाया था। यह जां मिचेल जां क्रिस्तोफ का बाबा था। बहुत छुटपन से ही क्रिस्तोफ की रुचि संगीत की ओर हो गई। मेलकायर नित्य ही अपने पुत्र को पियानो के पास ज़बरदस्ती बिठा लेता और रोज़ उससे अभ्यास करवाता। बच्चे को यह चीज़ पसन्द नहीं थी।

एक दिन जां मिचेल उसको ऑपेरा दिखाने ले गया, जहां जां क्रिस्तोफ पर इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि उसने संगीतज्ञ बनने का निश्चय कर लिया।

कुछ समय बाद एक दिन जां मिचेल ने अपने पोते क्रिस्तोफ द्वारा अब तक लिखे सभी गीतों को संगृहीत कर लिया। क्रिस्तोफ खेलते वक्त इन गीतों को वैसे ही बना लिया करता था। बाबा ने इन गीतों के संग्रह का नाम रखा 'शैशव के सुख'। मेलकायर

---

१. Jean Christophe (Romain Rolland)

ने अपने पुत्र की प्रतिभा को पहचाना और शीघ्र ही एक संगीत-सभा का आयोजन किया। उसमें ग्रांडड्यूक और मीलोफोल्ड को निमंत्रित किया गया और जां क्रिस्तोफ नामक साढ़े सात वर्ष के संगीतज्ञ ने अपने बनाए गीतों को उस सभा में गाया-बजाया। वे सब गीत ग्रांडड्यूक को समर्पित कर दिए गए थे। क्रिस्तोफ को दरबार की कृपा प्राप्त हुई। उसको सरकार की ओर से वजीफा बांध दिया गया और महल में बाजा बजाने का काम भी मिल गया।

इन्हीं दिनों उसके बाबा की मृत्यु हो गई और आमदनी का एक जरिया खत्म हो गया। उसके पिता की नशेबाजी भी अब और बढ़ गई। परिणाम यह हुआ कि होंव थियेटर के ऑरकेस्ट्रा में से उसे निकाल दिया गया। शराब ने उसके पिता की नौकरी छुड़वा दी थी, अतः चौदह वर्ष की अवस्था में हो वायलिन की केवल पहली धुन बजा पानेवाले क्रिस्तोफ को सारा परिवार संभालने का बोझ उठाना पड़ा।

क्रिस्तोफ के मामा का नाम गोटफ्रीड था। वह सीधा-सादा ईमानदार आदमी था। उसकी आमदनी के आधार पर क्रिस्तोफ ने एक जीवन-दर्शन बनाया और उसको अपनाने की चेष्टा की। अब क्रिस्तोफ इधर-उधर संगीत सिखाने भी जाया करता था। एक धनी परिवार में एक लड़की को वह संगीत सिखाने लगा। वह उस लड़की से प्रेम करने लगा, किन्तु लड़की ने उसका मजाक उड़ा दिया। इस बात से जां क्रिस्तोफ को बहुत दुःख हुआ। कुछ ही दिन बाद उसके पिता की भी मृत्यु हो गई। इसका परिणाम यह हुआ कि क्रिस्तोफ का मन रग-रग से उचाट सा गया और वह नीरस विशुद्धतावादी-सा बन गया। किन्तु फिर भी उसका मन इतनी नीरसता से अपने-आपको बांध नहीं सका और कुछ दिनों में ही जां क्रिस्तोफ सेबीन नामक एक विधवा युवती के प्रेम में फंस गया। किन्तु इससे पूर्व कि वह प्रेम परिपक्व होता, बढ़ता, सेबीन मर गई। इस घटना ने क्रिस्तोफ को बहुत ही विरक्त कर दिया और वह देहात की ओर घूमने का शौकीन हो गया। दूर-दूर तक घूमता। ऐसे ही घूमते-घूमते एक बार उसकी एडा नामक एक लड़की से मुलाकात हुई। उन्होंने होटल में रात साथ-साथ गुजारी और क्रिस्तोफ उसके प्रेम में पड़ गया। लेकिन जब उसे यह पता चला कि उसके छोटे भाई के साथ एडा का प्रेम-सम्बन्ध चल रहा है तो उसे बड़ा भारी धक्का लगा। अब वह पूरी शक्ति से अपने काम में लग गया। जैसे-जैसे उसकी परिपक्वता बढ़ती जा रही थी, उसकी परख, ईमानदारी, सचाई और चेतना में पुष्टि आ रही थी। उसके संगीत-रचना के नियम जर्मन नियमों से टकराने लगे और एक स्थानीय पत्र में उसने जर्मन पद्धति को बर्बर कहना प्रारम्भ किया। इसका परिणाम यह हुआ कि सम्पादकों से उसका झगड़ा हो गया और वह एक साम्यवादी पत्र में लिखने लगा। इस बात से ग्रांडड्यूक भी क्रुद्ध हो गया और क्रिस्तोफ को राज्य की ओर से मिलनेवाली सहायता भी बन्द हो गई। किन्तु जां क्रिस्तोफ की विपत्ति का यहीं अन्त नहीं हुआ। कस्बे के लोग उसके विरुद्ध हो गए और धीरे-धीरे सारे मित्र भी उसे छोड़ने लगे। केवल बूढ़ा पीटर शेट्ज, जो संगीत के इतिहास का रिटायर्ड प्रोफेसर था, उसकी बात को समझता था।

एक बार एक सराय में एक किसान लड़की के साथ नृत्य करते समय क्रिस्तोफ

का कुछ शराबी सैनिकों के साथ झगड़ा हो गया। उस समय वह बीस वर्ष का था। सैनिकों से झगड़ा करने के अपराध में जेल हो जाने का खतरा था, इसलिए क्रिस्तोफ़ को मजबूर होकर पेरिस भाग जाना पड़ा। पेरिस में अपने जीवन-यापन के लिए वह संगीत की ट्यूशन करने लगा। वहां उसे बचपन का एक दोस्त मिल गया—सिलवे कोहन, जो पेरिस में अपनी स्थिति बना चुका था। उसने क्रिस्तोफ़ को पेरिस के समाज में घुसा दिया, किन्तु क्रिस्तोफ़ को वह सब पसन्द नहीं आया। उस समाज में एक खोखलापन था, काहिली थी, नैतिक निर्वीर्यता थी, उद्देश्यहीनता, व्यर्थता अपने-आपको नष्ट कर देनेवाली अनावश्यक आलोचना थी; जैसे उस समाज में एक सार्वजनिक तनाव था जिसने लोगों की सहजता को विनष्ट कर दिया था। ऐसे समाज में प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए क्रिस्तोफ़ को इन सब बातों से समझौता करने की आवश्यकता थी, जो करना उसने स्वीकार नहीं किया। और इसलिए वह ट्यूशन से अपना काम नहीं चला पाया। क्योंकि वह धीरे-धीरे सबसे दूर होता चला गया था। अब वह एक प्रकाशक के लिए संगीत-लिपि लिखने लगा।

इसी बीच वह बहुत बीमार पड़ गया। उसके पड़ोस में कुछ लोग रहते थे, जिनमें सीडोनी ने उसकी बहुत सेवा-सुश्रूषा की। यहां उसकी इकोल नोरमेल के एक तरुण लेक्चरर ओलिवियर ज्यानिन से मुलाकात हो गई। उसको पता चला कि ओलिवियर एंतोनित का भाई था, जिससे कि उसकी जर्मनी में मुलाकात हुई थी। यद्यपि जां क्रिस्तोफ़ का कोई दोस्त नहीं था, फिर भी उसका परिचित होने के कारण एंतोनित का समाज में सम्मान नष्ट हो गया था। उसे पता चला कि एंतोनित को तपेदिक हो गई थी और अपने भाई को पढ़ाने के प्रयत्न में घोर परिश्रम करने और उस अवस्था में अपनी देख-रेख न कर पा सकने के कारण उसकी मृत्यु हो गई थी।

एक दिन ओलिवियर ने क्रिस्तोफ़ से कहा कि अब तक वह असली फ्रांस के सम्पर्क में नहीं आया है—असली फ्रांस की जनता के सम्पर्क में। दोनों ही एक-दूसरे को नई-नई जानकारी जुटाने। दोनों एक-दूसरे की प्रकृति से अवगत हो गए थे। ओलिवियर स्वभाव का गम्भीर था, किन्तु शारीरिक रूप से वह स्वस्थ नहीं था। क्रिस्तोफ़ में अपार शक्ति थी और उसकी आत्मा भी तूफ़ानी थी। दोनों की जोड़ी ऐसी थी जैसे एक लंगड़ा था और एक अंधा।

कुछ दिन बाद कोलेथ नामक लड़की के पीछे दोनों मित्रों में एक तनाव आ गया। क्रिस्तोफ़ कोलेथ को पहले प्यार करता था, और अब ओलिवियर उसका नया प्रेमी था। कोलेथ ने लूशियन लेवीकोर नामक एक व्यक्ति को बीच में लिया। वह क्रिस्तोफ़ का पुराना शत्रु था और उसने एक प्रकार की उलझन पैदा कर दी थी। नासमझी में क्रिस्तोफ़ बहुत क्रुद्ध हो गया उसने एक पार्टी में लेवीकोर का अपमान कर दिया और परिणाम यह हुआ कि लेवीकोर ने द्वन्द्व के लिए उसे ललकारा। दोनों युद्ध के लिए तैयार हुए, किन्तु दोनों की गोलियां खाली चली गईं। इसका परिणाम यह हुआ कि क्रिस्तोफ़ और ओलिवियर का तनाव दूर हो गया और दोनों एक-दूसरे के मित्र हो गए।

इस बीच में फ्रांस और जर्मनी के बीच युद्ध की भयानक खबरें आने लगीं। चारों

हुआ, तो भी वह दोनों देशों के बीच भाईचारे के सम्बन्ध को नष्ट नहीं कर पाएगा।

अन्तिम समय तक क्रिस्तोफ संगीत-रचना करता रहा। यहां तक कि जब मृत्यु निकट आ गई, तो भी उसने अपनी कलम उठाई और अपना बनाया हुआ गीत लिखा :

"तू फिर से जन्म लेगा, विश्राम कर।
अब सब कुछ एक हो गया है।
रात और दिन की मुसकानें मिल गई हैं।
प्रेम और घृणा परस्पर समरसता में परिणत हो चुके हैं।
मैं दो विशाल पंखोंवाले देवता का आराधन करूंगा।
जीवन की जय, मृत्यु की जय!…"

प्रस्तुत उपन्यास एक बहुत बड़े कैनवैस (पृष्ठभूमि) पर लिखा गया है। इसमें मनुष्य की सत्य की खोज प्रमुख है, क्योंकि इसमें घटना-क्रम इतना महत्त्व नहीं रखता, जितना चरित्र का विकास। कला, जनता, राजनीति तथा साहित्य और दर्शन आदि अनेक विषयों को प्रबुद्ध विचारक रोम्यां रोलां ने गहन मनो-विश्लेषण के साथ प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास के बारे में लेनिन ने कहा था कि 'यह हमारे युग का एक महान काव्य है, क्योंकि इसमें कलाकार ने निष्पक्ष रूप से जीवन के सांगोपांग रूपों को प्रस्तुत किया है।' यद्यपि देखने में ऐसा लगता है कि क्रिस्तोफ अपने एक के बाद एक होनेवाले प्रेम-सम्बन्धों के कारण विलासी है, किन्तु इसमें हमें यह भी ध्यान रखना पड़ेगा कि यह वातावरण फ्रांस की सांस्कृतिक विरासत पर आधारित है जो हमारी नैतिकता से कुछ अलग है। हमारी बहुत-सी मान्यताएं ऐसी हैं जो अपना अधिक विकास कर चुकी हैं। यह मतभेद का भी विषय हो सकता है किन्तु रोलां के उपन्यास की गहराई हमें अवश्य स्वीकार करनी पड़ती है।

सॉमरसेट मॉम :

वरसात

[द रेन[1]]

मॉम, विलियम सामरसेट : अंग्रेजी कथाकार विलियम सामरसेट माम का जन्म २५ जनवरी, १८७४ ई० में हुआ। आप पेरिस में जनमे, क्योंकि आपके पिता वहां ब्रिटिश राजदूतावास में काम करते थे। माता-पिता से आप बचपन में ही वंचित हो गए। आपने प्रारम्भिक जीवन कष्ट से बिताया। डाक्टरी पढ़ी, परन्तु लग पड़े साहित्य-सृजन में। भूखे मरे, पर साहित्य नहीं छोड़ा। आपने विवाह किया था, पर १९२७ में पति-पत्नी में तलाक हो गया। फिर आपने विवाह नहीं किया। आपने उदीयमान लेखकों के लिए ही अपने समस्त धन की वसीयत कर दी। आपने अनेक उपन्यास लिखे हैं। 'द रेन' (वरसात) आपका एक सुप्रसिद्ध उपन्यास है।

डा० मैकफेल दो साल तक युद्ध में रहने के पश्चात् जहाज द्वारा अपनी पत्नी के सा सफर कर रहे थे। उन्हें इस बात का संतोष था कि वे कम से कम एक साल तक एपिय में शान्तिपूर्वक रह सकेंगे। जहाज पर ही उनकी मुलाकात डेविडसन-परिवार से हो ग थी। डा० मैकफेल की उम्र चालीस के लगभग थी—लम्बा-पतला शरीर, और सूखक सिकुड़े हुए चेहरे पर एक भरे हुए घाव का निशान। वे बहुत धीरे-धीरे, ठहर-ठहरक बोलते थे, जिससे उनके स्काच होने का अन्दाजा सहज में ही लगाया जा सकता था।

मि० डेविडसन पादरी थे। कद लम्बा, बैठे हुए गाल, उभरी हुई हड्डियां और मुटाई पकड़ता हुआ चेहरा। आंखें अन्दर धंसी हुई और काली थीं। हाथों की अंगुलियां उनकी शक्ति का परिचय देती थीं। उनका कार्य-क्षेत्र समोआ टापू के उत्तर के कुछ छोटे-छोटे टापुओं में था जो एक-दूसरे से काफी दूर थे। अतः उन्हें अधिकतर नाव से सफर करना पड़ता था। उनकी अनुपस्थिति में श्रीमती डेविडसन ही मिशन का काम संभालती थीं। श्रीमती डेविडसन का कद छोटा था। अपने भूरे बालों को वे बड़ी तरतीब से संवारे रखती थीं तथा अपनी नीली आंखों पर हमेशा सुनहरे फ्रेम का चश्मा लगाए रहती थीं।

जहाज पर श्रीमती डेविडसन ने डा० मैकफेल को बताया कि जब उन लोगों ने वहां मिशन का कार्य आरम्भ किया था तो उन्हें बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था। वहां के निवासियों में बहुत अनैतिकता और बुराइयां फैली हुई थीं, जिन्हें वे लोग बुराइयां और पाप नहीं समझते थे। उनके विवाह का ढंग निहायत भद्दा और अश्लील था, जिसके

---

१. The Rain (William Somerset Maugham)

बारे में श्रीमती डेविडसन ने श्रीमती मैकफेल को अलग से बताया, क्योंकि स्त्री-सुलभ लज्जा के कारण वे डाक्टर को यह सब बता नहीं सकती थीं। उनके कार्य-क्षेत्र के किसी भी गांव में एक भी सच्चरित्र लड़की का मिलना प्रायः असम्भव था। मिस्टर डेविडसन ने इसके कारणों की खोज की तो वे इस परिणाम पर पहुंचे कि इसका एकमात्र कारण वहां के निवासियों का वह भद्दा, अश्लील नृत्य है, जो वे अक्सर करते रहते हैं। उन्होंने वह बन्द करवा दिया। श्रीमती डेविडसन ने डा० मैकफेल को यह भी बताया कि अपने मिशन के कार्य में मिस्टर डेविडसन इतने व्यस्त रहते हैं कि उनको अपने शरीर की तनिक भी परवाह नहीं रहती।

दूसरे दिन जहाज़ पैंगो बन्दरगाह के किनारे रुका। जब उनका सामान उतारा जा रहा था, डाक्टर गौर से वहां के निवासियों को देख रहे थे उनमें कई फीलपांव के रोगी थे। पुरुष और स्त्रियां सभी 'लावा लावा' (दक्षिणी टापुओं के निवासियों के घास के बने लहंगे) वस्त्र-विशेष पहने हुए थे।

कुछ देर बाद मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई। बारिश से बचने के लिए और लोगों के साथ डा० मैकफेल, उनकी पत्नी और श्रीमती डेविडसन भी भागते हुए एक बचाव के स्थल पर पहुंचे, जहां कि जहाज़ों ने लंगर डाल रखे थे। कुछ देर बाद मिस्टर डेविडसन भी वहां आ गए। मिस्टर डेविडसन ने उन्हें बताया कि टापू के निवासियों में खसरे का रोग फैला हुआ है। जहाज़ का एक खलासी भी बीमार पड़ गया था, जिसे अस्पताल में भर्ती करा दिया गया था।

इतने में एपिया से तार आया कि उस जहाज को एपिया में अभी नहीं आने दिया जाएगा। इस खबर से डा० मैकफेल भी बहुत चिन्तित हुए, क्योंकि उन्हें एपिया जल्दी ही पहुंचना था। मिस्टर डेविडसन भी मिशन के कार्य के लिए चिन्तित थे, क्योंकि उन्हें एक साल से वहां से दूर रहना पड़ रहा था और मिशन का काम एक देशी पादरी के हाथ में था।

मिस्टर डेविडसन को टापू के गवर्नर से मालूम हुआ था कि वहां एक व्यापारी किराये पर मकान देता है। अतः वे बरसाती पहनकर उसके यहां पहुंचे। मकान का मालिक हार्न वर्णसंकर था। उसकी पत्नी वहीं की मूलनिवासिनी थी, जो अपने भूरे-भूरे बच्चों से घिरी रहती थी। हार्न ने उनको मकान दिला दिया। उन लोगों ने अपना सामान खोलना शुरू किया।

जब डा० मैकफेल अपना सामान संभालने नीचे अपने केबिन में आए तो उन्हें मालूम हुआ कि मिस थाम्पसन नामक एक युवती ने भी, जो उन्हींके जहाज़ में सफर कर रही थी, एक कमरा किराये पर लिया है जिसे उसने मकान-मालिक हार्न से खूब तर्क-वितर्क करके एक डालर रोज पर तय किया है। उसका कमरा नीचे की मंज़िल में था। मिस थाम्पसन की अवस्था लगभग सत्ताईस वर्ष की थी, शरीर मोटा था परन्तु उसे असुन्दर नहीं कहा जा सकता था। उसने सफेद कपड़े पहन रखे थे और सिर पर एक चौड़ी सफेद टोपी लगा रखी थी। मिस थाम्पसन के साथ स्वान नामक एक व्यक्ति और था जिसने मकान-मालिक हार्न से उसकी सिफारिश की थी।

किराये के मकान में मिस थाम्पसन ने डाक्टर को भी शराब के लिए निमन्त्रित किया, परन्तु डाक्टर धन्यवाद देकर अपना काम करने लगे।

अगले दिन जब दूसरे लोग टहलकर लौटे तो मि० डेविडसन ने बताया कि उन्होंने गवर्नर से काफी बहस की है पर शायद उन्हें पंद्रह रोज़ तक और ठहरना पड़े। मि० डेविड-सन मिशन के कार्यों में इस तरह हो रही देरी से काफी परेशान हो रहे थे। शाम को जब सब लोग मिलकर बैठे, तो पादरी डेविडसन ने अपने जीवन की विस्तृत व्याख्या की उन्होंने बतलाया कि किस प्रकार श्रीमती डेविडसन से उनकी प्रथम बार मुलाकात हु और फिर किस प्रकार शादी। उन्होंने अपने अब तक के उस सारे जीवन का भी वर्ण किया, जब से कि वे पति-पत्नी, एकसाथ रहकर मिशन का कार्य कर रहे थे। बातचीत दौरान में उन्हें ऊंची आवाज़ में एक बाज़ारू प्रेम के गाने के बोल सुनाई दिए।

नीचे के कमरे में मिस थाम्पसन ग्रामोफोन बजा रही थी, और कुछ नाविक मदिरा पीकर नृत्य कर रहे थे और साथ ही अश्लील गाने भी गा रहे थे। मिस थाम्पसन भी उनका साथ दे रही थीं। इस समय बरसात फिर शुरू हो गई थी। उस समय उन लोगों ने सोचा, शायद मिस थाम्पसन अपने मित्रों को दावत दे रही हैं।

उसके दूसरे रोज़ भी शाम को जब डा० मैकफेल और डेविडसन-परिवार खाना खा रहे थे, नीचे से फिर मिस थाम्पसन ने ग्रामोफोन बजाना आरम्भ कर दिया; और कुछ देर बाद मदमस्त नाविकों के ज़ोरदार कहकहे और भद्दी-भद्दी बातें उन्हें सुनाई दीं। मिस थाम्पसन अपने मित्रों (नाविकों) के साथ एक बाज़ारू गाना गा रही थी और साथ में मदिरा-पान भी। मिस्टर डेविडसन को मिस थाम्पसन के प्रति शंका होने लगी कि शायद वह वेश्या है, और इबोली से भागकर आई है, और यहां अपना पेशा करना चाहती है। मिस्टर डेविडसन ने इबोली मोहल्ले के बारे में बताया कि वहां औरतों के शरीर का व्यापार बहुत भद्दे ढंग से होता था, लेकिन उनके मिशन ने अब इस मोहल्ले को पूर्ण रूप से बदल दिया था।

मिस्टर डेविडसन नीचे मिस थाम्पसन के कमरे में गए, लेकिन वहां उसके प्रेमी नाविकों ने मि० डेविडसन को बुरी तरह पीट-घसीटकर कमरे से बाहर निकाल दिया। उन लोगों ने मि० डेविडसन पर एक गिलास शराब भी उंडेल दी। दूसरे रोज़ मिस थाम्पसन ने श्रीमती डेविडसन की भी दो बार मज़ाक बनाई। शाम को मि० डेविड-सन फिर मिस थाम्पसन के कमरे में गए और एक घंटे तक उसको समझाते रहे। उस समय भी बरसात हो रही थी। यहां की बरसात की विशेषता है कि जब एक बार शुरू हो जाए तो रुकने का नाम नहीं, कई दिनों तक बरसती रहती है। मच्छरों के कारण लोगों का सोना भी हराम हो जाता है। साल में तीन सौ इंच तक वर्षा होती है।

मि० डेविडसन ने डाक्टर मैकफेल को बताया कि उन्होंने मिस थाम्पसन को हर प्रकार से समझाया, पर वह नहीं समझी। अब उसकी आत्मा के उद्धार के लिए वे शक्ति का प्रयोग करेंगे। मि० डेविडसन ने मि० हार्न को भी उसको कमरा देने के लिए भला-बुरा कहा। मि० हार्न ने पादरी (मि० डेविडसन) से वायदा किया कि अब मिस थाम्प-सन के पास कोई व्यक्ति नहीं आएगा।

उसके दूसरे रोज़ की शाम को मिस्टर डेविडसन अपने छात्र-जीवन की बातें डा० मैकफेल आदि को बता रहे थे और नीचे मिस थाम्पसन ग्रामोफोन बजा रही थी, परन्तु आज उसके पास और कोई व्यक्ति न था। मिस थाम्पसन रात को देर तक ग्रामोफोन बजाती रही और मिस्टर डेविडसन अपने कमरे में एक रस प्रार्थना करते रहे।

दो-तीन रोज तक कोई विशेष बात नहीं हुई और इन दिनों में मिस थाम्पसन ने अपने लिए कहीं और जगह देखने की कोशिश की, पर सफलता न मिली। वह रात को बहुत देर तक अकेली ग्रामोफोन बजाती रही। रविवार के दिन मिस्टर डेविडसन ने हार्न को कहा कि आज प्रभु के विश्राम और प्रार्थना का दिन है अतः मिस थाम्पसन को कह दे कि ग्रामोफोन न बजाए। हार्न के वैसा कहने पर उस दिन मिस थाम्पसन ने ग्रामोफोन बन्द कर दिया।

इसी बीच मि० डेविडसन रोज गवर्नर से मिलते और मिस थाम्पसन के बारे में बताते तथा उन्हें इस बात पर मजबूर करते कि वे मिस थाम्पसन को वहां से चली जाने की आज्ञा दे दें। पहले तो गवर्नर राज़ी नहीं हुआ, परन्तु बाद में मि० डेविडसन ने उनपर चर्च की तरफ का ज़ोर देकर उनको मजबूर कर दिया। जब मिस थाम्पसन को इसका पता लगा तो उसने मिस्टर डेविडसन को बहुत गालियां दी और उनका अपमान किया। मि० डेविडसन ने उससे शान्तिपूर्वक बातें कीं पर वह झल्लाकर नीचे चली गई। गवर्नर ने उसे मंगलवार को सेनफ्रांसिस्को जानेवाले जहाज़ से चले जाने की आज्ञा दे दी थी। उसके दूसरे दिन हार्न डा० मैकफेल को मिस थाम्पसन के कमरे में ले गया और बताया कि उसकी तबीयत खराब है। मिस थाम्पसन ने डाक्टर की सहायता चाही और कहा कि वह सेनफ्रांसिस्को नहीं जाना चाहती। डा० मैकफेल ने कोशिश करने का वायदा किया। डा० मैकफेल ने मि० डेविडसन से इस बात पर वाद-विवाद भी किया और उसको पन्द्रह रोज़ और ठहर जाने की इजाजत दिलानी चाही, परन्तु मि० डेविडसन राज़ी न हुए। डा० मैकफेल गवर्नर से भी मिले, परन्तु उन्हें वहां भी सफलता न मिली।

दूसरे दिन स्वयं मिस थाम्पसन मिस्टर डेविडसन से मिली और रोती हुई उनसे प्रार्थना करने लगी। उसने मि० डेविडसन को बताया कि वह सेनफ्रांसिस्को नहीं जाना चाहती क्योंकि वहां उसके घरवाले रहते हैं। चूंकि मिस थाम्पसन वेश्या-सुधार जेल से भागकर आई है, अतः उसे तीन साल की सैज़ा का भी डर था। उसने मिस्टर डेविडसन से वायदा किया कि अब वह अपना चरित्र सुधार लेगी। परन्तु मिस्टर डेविडसन ने उसे बताया कि उसे वहां जाना चाहिए और जो दण्ड उसे मिले उसे सहर्ष स्वीकार करना चाहिए, इसीसे उसकी आत्मा का उद्धार हो सकेगा। मिस थाम्पसन ने हर सम्भव प्रार्थना की, गिड़गिड़ाई, पर मिस्टर डेविडसन पर उसका कोई असर नहीं पड़ा। आखिर डाक्टर की सहायता से वह अपने कमरे में आई और देर तक रोती रही। और मिस्टर डेविडसन बाइबिल निकालकर सबके साथ मिस थाम्पसन की आत्मा के उद्धार के लिए प्रार्थनाएं करने लगे। काफी देर तक वे लोग प्रार्थना करते रहे। इस बीच डा० मैकफेल नीचे जाकर मिस थाम्पसन को देखने चले गए। वह अब भी आरामकुर्सी पर बैठी सिसक रही थी।

मिस थाम्पसन ने मिस्टर डेविडसन से मिलने की इच्छा प्रकट की। मिस्टर

डेविडसन के आने पर मिस थाम्पसन ने कहा कि वह बहुत खुशी है और अब पश्चात्ताप करना चाहती है। मिस्टर डेविडसन बहुत प्रसन्न हुए। डा० मैकफेल और हार्न को यह समाचार अपनी पत्नी को सुनाने को कहकर वे दरवाज़ा बन्द कर मिस थाम्पसन के साथ रात को दो बजे तक प्रार्थना करते रहे। बाद में भी वे अपने कमरे में रात-भर प्रार्थना करते रहे।

दूसरे दिन जब डा० मैकफेल मिस थाम्पसन को देखने गए तो मिस थाम्पसन बताया कि वह मि० डेविडसन से मिलना चाहती है। मिस्टर डेविडसन जब तक उस पास रहते हैं उसे बहुत शान्ति मिलती है। अगले दो दिनों तक मिस्टर डेविडसन व अधिकतर समय मिस थाम्पसन के साथ प्रार्थना करने में ही व्यतीत होता रहा। जब त वे बिलकुल थककर चूर न हो जाते, वे प्रार्थना करते रहते। इन दिनों उनको विचित्र विचित्र स्वप्न भी आते रहते। मिस्टर डेविडसन उस बदनसीब औरत के हृदय में छिपे पाप की जड़ों को छांट-छांटकर फेंकते जा रहे थे। वे उसके साथ बाइबिल पढ़ते औ प्रार्थना करते।

दिन धीरे-धीरे बीतते चले जा रहे थे। मिस थाम्पसन अस्त-व्यस्त रहती, कमरे मे टहलती, कपड़ों की उसे परवाह न रहती। उसको एकमात्र डेविडसन का ही सहारा था। वह उनके साथ बाइबिल पढ़ती और प्रार्थना करती रहती। मि० डेविडसन को वह एक क्षण भी अलग नहीं करना चाहती थी। ऐसे तमाम समय में वर्षा अविराम गति से होती जा रही थी। ऐसा मालूम होता था मानो इन्द्र का खज़ाना खाली होते जा रहा है।

सभी मंगलवार का इन्तज़ार कर रहे थे, जब सेनफ्रांसिस्को जानेवाला जहाज़ जाएगा। सोमवार की शाम को गवर्नर के आफिस का एक क्लर्क आकर मिस थाम्पसन को दूसरे दिन ग्यारह बजे तक तैयार होने को कहकर चला गया। मि० डेविडसन भी उस समय उसके साथ थे। श्रीमती डेविडसन को उसके चले जाने की खुशी थी। सब लोग थक चुके थे, अतः सोने चले गए।

सवेरे डाक्टर के कंधे पर किसीने हाथ रखा कि वे चौंककर उठ बैठे, हार्न उनको जगा रहा था। हार्न ने डाक्टर को इशारे से अपने पीछे-पीछे आने को कहा। डाक्टर अपना बैग लेकर उसके पीछे-पीछे चल पड़े। उन्होंने समझा—शायद मिस थाम्पसन की तबीयत अधिक खराब है। मि० हार्न जो हमेशा जीन का सूट पहनता था आज 'लावा-लावा' पहन रखा था। दोनों नीचे उतरे, बाहर पांच देशी लोग खड़े थे। वे सड़क पर आ गए, सड़क पार करके वे बन्दरगाह पर पहुंचे। डाक्टर ने देखा; कुछ लोग तट पर किसी चीज़ को घेरकर खड़े हैं। उन्होंने डाक्टर को रास्ता दिया। डाक्टर ने देखा कि मिस्टर डेविडसन की लाश आधी पानी में और आधी बाहर पड़ी थी। उनके दायें हाथ में एक उस्तरा था जिससे उन्होंने अपना गला काट डाला था। लाश एकदम ठण्डी हो चुकी थी। डाक्टर ने पुलिस को इत्तला देने को कहा। हार्न ने डाक्टर से पूछा कि क्या मि० डेविडसन ने आत्महत्या की है और डाक्टर के 'हां' कहने पर उसने दो आदमियों को पुलिस बुलाने भेजा। पुलिस पहुंची और डाक्टर श्रीमती डेविडसन को यह बुरी खबर

सुनाने चले गए। लाश को शवगृह में रख दिया गया।

श्रीमती डेविडसन अकेली लाश के पास पहुंचीं और थोड़ी देर में ही खामोशी से बाहर आ गईं। उन्होंने सबको वापस चलने को कहा। उस समय उनका स्वर कठोर और संयत था। जब वे मकान के पास पहुंचीं, उनको अचानक ग्रामोफोन का कर्कश स्वर सुनाई दिया जो एक अर्से से शान्त था। मिस थाम्पसन अपने दरवाज़े पर खड़ी हंस-हंसकर एक नाविक से बातें कर रही थी। वह एकदम बदल गई थी। आज भी उसकी पोशाक वैसी ही थी जैसी पहनकर उसने शुरू में मकान लिया था। आज उसने अपने-आपको विशेष प्रकार से सजा रखा था। जब वे लोग दरवाज़े में घुसे तो उसने व्यंग्यपूर्वक अट्टहास करते हुए श्रीमती डेविडसन के मुंह पर थूक दिया। डाक्टर ने मिस थाम्पसन को कमरे में धकेल दिया और ग्रामोफोन बन्द करने को कहा। मिस थाम्पसन ने कठोर स्वर में डाक्टर से कहा कि वह उसकी इजाज़त लिए बिना कैसे उसके कमरे में चला आया। डाक्टर ने इसका मतलब पूछा तो मिस थाम्पसन ने संयत होकर स्वर में असीम घृणा और तिरस्कार भरकर कहा, "तुम पुरुष लोग, तुम सभी कुत्ते हो! ज़लील घृणित कुत्ते!"

डाक्टर चकित रह गए और कुछ भी न समझ पाए।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने नारी के अनेक अंतर्द्वन्द्वों का चित्रण किया है। हम दूसरों से कितनी अपेक्षा करते हैं, किन्तु स्वयं अपनी मर्यादाओं के ढोंग में डूबे रहते हैं। यह बात बहुत ही कम लोग समझ पाते हैं। उपन्यास में बड़ी तीखी चुभन है और समाज पर गहरा व्यंग्य है।

पुत्र और प्रेमी

[सन्ज एण्ड लवर्स[1]]

लारेन्स, डी० एच: अंग्रेजी साहित्यकार डी० एच० लारेन्स के पिता एक निर्धन व्यक्ति के पुत्र थे जो कोयले की खदान में काम करने लगे थे। आपका जन्म ११ सितम्बर, १८८५ को ईस्टवुड नाटिंघम शायर, इंग्लैंड हुआ। आपकी शिक्षा नाटिंघम में हुई। आपको पढ़ते समय स्कालरशिप मिली। आपने बहुत अच्छे नम्बरों से परीक्षा पास की और सारे इंग्लैंड में अध्यापन-शिक्षण में आपको सबसे अधिक नम्बर मिले। आपके सीने में कुछ शारीरिक निर्बलता थी और आप कोई काम निरन्तर नहीं कर पाते थे। आपने फिर उपन्यास लिखना शुरू किया। १९११ में आपको एक सशक्त और मौलिक प्रतिभा के रूप में स्वीकार कर लिया गया। आपकी कृतियों में मनोविश्लेषण का भास अधिक मिलता है। आपने इटेली, न्यू-मैक्सिको और आस्ट्रेलिया की यात्राएं कीं। २ मार्च, १९३० को रीविरिया में नाइस के निकट वेन्स में आपकी मृत्यु हो गई।

'पुत्र और प्रेमी' (सन्ज एण्ड लवर्स) १९१३ई० में प्रकाशित हुआ। यह आपका एक प्रसिद्ध उपन्यास है जो आपके 'लेडी चेटरलीज लवर' के साथ गिना जाता है। अपने समय में आपपर अश्लीलता के दोष लगाए गए, किन्तु आप निर्भीक होकर लिखते रहे। आप कवि भी थे, अतएव आपमें भावुकता भी प्रचुर मात्रा में मिलती है।

गर्टरूड कोपर्ड एक दरिद्र इन्जीनियर की पुत्री थी, जिसने वाल्टर मोरेल नामक कोयले की खदान में काम करनेवाले एक व्यक्ति से विवाह किया। उस समय वह २३ साल की थी और वाल्टर २७ वर्ष का था। वह बहुत बलिष्ठ था, उन्मुक्त भाव से हंसता था और देखने में सुन्दर था। किन्तु दुर्भाग्य से वह शिक्षित नहीं था। और दूसरी ओर गर्टरूड थी छोटी-सी, सुन्दर और गर्वीली। उसने बहुत कुछ पढ़ रखा था और बौद्धिक वातावरण में पली हुई थी। वह बातचीत में कुछ ऐसी बात चाहती थी जिसमें चातुर्य हो और जिसमें मानसिक विराम को कुछ न कुछ भोजन मिलता रहे। नाटिंघम के ऊपर की ओर की खदानों के पास बेस्टवुड में कोयले की खदानों में काम करनेवाले लोगों की बुस्तियां थीं, छोटे-छोटे घर थे और इन्हीं में से एक में यह दम्पती रहने लगा। छः महीने आनन्द से व्यतीत हो गए; किन्तु गर्टरूड ने, जो अब श्रीमती मोरेल थी, क्रमशः यह अनुभव किया कि उन दोनों में कोई गम्भीर वार्तालाप नहीं होता था क्योंकि पति शिक्षित नहीं

---

१. Sons And Lovers (D. H. Lawrence)

था। उसके सपने धीरे-धीरे मन ही मन चकनाचूर होने लगे। उसे कुछ खाली-खाली-सा लगता और सबसे बड़ी मुसीबत थी गरीबी जिसके कारण अभाव सदैव बने रहते थे। मोरेल सहज स्वभाव से फिर शराब पीने लग गया था। उसकी पत्नी अपने नैतिक आचरण में जिन बातों को आवश्यक समझती थी, उनकी ओर उसका ध्यान नहीं था। उसकी वासना प्रकृतिमय थी और अपनी पत्नी द्वारा लगाये गए नैतिक बन्धनों को वह तनिक भी स्वीकार नहीं करता था। इस मनोमालिन्य का परिणाम यह हुआ कि कुछ ही दिन बाद वह चिड़चिड़ा हो गया, उसके जीवन में अनवरत संघर्ष चलने लगा और दाम्पत्य जीवन विषमय हो गया। गर्टरूड की महत्त्वाकांक्षाएं नष्ट हो गईं और अब उसका एक-मात्र सहारा रह गया—उसके बच्चे। वह उनकी देखभाल में अपना समय व्यतीत करने लगी, मानो पति के प्रति मानस में जो अभाव हो गया था उसको पूर्ण करने के लिए उसने दूसरे सहारे की खोज की थी। उसके पहले पुत्र का नाम विलियम था। जब वाल्टर को अत्यधिक क्रोध आ जाता, तब वह विलियम की उससे रक्षा किया करती। वाल्टर उग्र स्वभाव का था और उसे क्रुद्ध होने में देर नहीं लगती थी। वह वाल्टर को दैनन्दिन जीवन के अभावों से पीड़ित किया करती। अब वह उससे प्यार नहीं करती थी। उसके लिए वह मानो एक बाहरी आदमी था। विवाह के दो वर्ष बाद विलियम का जन्म हुआ था और उसके दो वर्ष के उपरान्त ऐनी पैदा हुई थी। पांच साल बीत जाने पर पोल पैदा हुआ था। पोल एक नाजुक बच्चा था। वह अल्हड़ नहीं था। उसकी प्रकृति गम्भीर थी। और गर्टरूड ने जैसे उसपर अपना सारा प्यार उड़ेल दिया था। इन्हीं दिनों वाल्टर बीमार पड़ गया। इस बीमारी में खिंचाव कुछ दूर हुए और अब वह ठीक हुआ तो घर में कुछ दिनों के लिए एक स्नेह की भावना उदित हुई और परिणामस्वरूप घर में चौथी संतान का जन्म हुआ। इस पुत्र का नाम था आर्थर।

विलियम एक शार्टहैंड क्लर्क बन गया और रात्रि-पाठशाला में पढ़ाने लगा। उसकी सामाजिक महत्त्वाकांक्षा बढ़ गई। गर्टरूड को अपने इस पुत्र पर गर्व था, क्योंकि उसे नाटिंघम में एक स्थान मिल गया था। लेकिन वह यह पसन्द नहीं करती थी कि उसका पुत्र नृत्यों में सम्मिलित होने के लिए जाए। जब विलियम २० वर्ष का हुआ तो उसे लन्दन जाना पड़ा क्योंकि वहां उसे १२० पौंड सालाना की आमदनी बंध गई थी। इससे मां को बहुत दुःख हुआ। वह मां थी और उसे ऐसा लगता जैसे विलियम उसके पास से दूर हो जाने पर सचमुच उससे अलग हो जाएगा और यह बात उसके हृदय में एक वेदना-सी भर देती।

इस बीच एनी शिक्षिका बनने के लिए अध्ययन कर रही थी और पोल बच्चे के पादरी की सहायता से बीजगणित तथा फ्रेंच और जर्मन भाषाएं पढ़ रहा था। ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता गया, वह बलिष्ठ होता गया। किन्तु उसका वर्ण पांडुर ही बना रहा और प्रकृति से वह अब भी गम्भीर था, चुप रहनेवाला। माता के प्रति वह सदैव बहुत चैतन्य रहता। उसकी आज्ञाओं का पालन करता। उसकी प्रकृति बड़ी भावुक थी। वह लोगों के बारे में क्या सोचता है और लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं, इन दोनों बातों में वह नितान्त जागरूक रहता। पिता की शराब पीने की आदत उसके लिए अरुचिकर थी

और पोल को यही वेदना होती जिसने गर्टरूड के जीवन को विषाक्त कर दिया था। पिता की प्रकृति का बर्बर रूप उसे पसन्द नहीं था। परिवार में वाल्टर मोरेल का जैसे कोई स्थान नहीं था। जब कभी त्योहारों पर कोई आनन्द इत्यादि मनाया जाता तब अवश्य उसे लगता कि उसका भी अपना महत्त्व है, अन्यथा वह जैसे रहते हुए भी नहीं रहता था।

विलियम वकील के दफ्तर में काम करने लगा और जब छुट्टियों में घर आता तब वह मजदूरवर्ग का नहीं दिखता था। वह मध्यमवर्गीय नागरिक जैसा भद्रपुरुष दिखाई देता था। यह सच था कि वह अपने परिवार को भूला नहीं, लेकिन उसके साथ परेशानी यह थी कि लन्दन की जिन्दगी बड़ी खर्चीली थी और घर भेजने के लिए उसके पास पैसा नहीं बचता था।

उसका लिली वेस्टर्न नामक एक अभिमानिनी युवती से सम्बन्ध स्थापित हुआ। मोरेल परिवार पर इस युवती ने अपनी आज्ञा चलाना प्रारम्भ किया। अधिक दिन नहीं रही वह, मिलने आई थी वेस्टर वुड में, अपने होनेवाले पति के साथ, उसके परिवार से। विलियम इस तुनकमिजाज और गर्वीली लड़की को अपनी पत्नी के रूप में पाने की कल्पना से विचलित हो उठा, क्योंकि इस घर में वह ठीक नहीं बैठती, किन्तु इन्हीं दिनों उसे निमोनिया हो गया और मृत्यु ने उसकी समस्याओं का अन्त कर दिया। गर्टरूड के जीवन में मृत्यु ने एक रेखा खींच दी। महीनों तक वह इस दुःख से पीड़ित रही और तब उसने अपने जीवन का आधार पोल में ढूंढना शुरू किया।

मिस्टर जार्डन नाटिंघम में डाक्टरी औज़ार और ओषधि इत्यादि बनाने का काम किया करते थे। चार वर्ष की अवस्था में पोल उनके यहां काम करने चला गया। रहता वह अब भी घर ही था और रोज रेल से उसके यहां काम करने जाता और लौट आता। उसे हफ्ते में आठ शिलिंग मिलते थे। और पैसे उसके पास नहीं बच पाते थे, लेकिन कारखाना उसे अच्छा लगता था और उसे वहां काम करना पसन्द था।

मोरेल परिवार के मित्रों में एक लिवियर परिवार भी था। लिवियर परिवार ने विली फार्म ले लिया था। वह उजाड़-सा पड़ा था। उन लोगों ने उसको ले लिया और धरती को बोना प्रारम्भ किया। उनके परिवार में कई अन्य लड़के थे और पोल की उनसे मित्रता थी। वह उन लोगों से मिलने के लिए अकसर वहां जाया करता था। धीरे-धीरे अपने मित्रों की एक बहन मरियम पर उसका ध्यान केन्द्रित होने लगा। मरियम उससे एक साल छोटी थी, लजीली, सुन्दर, धार्मिक और रोमांटिक थी, जैसे उसे उसके रहस्यवाद ने प्रभावित कर लिया था। पोल के प्रति वह इतनी अनुरक्त हो गई कि मन ही मन जैसे उसकी पूजा करने लग गई। उसके भाई बलिष्ठ और पौरुष के प्रतीक थे। पोल उनसे कम नहीं था, लेकिन वह उनसे अधिक चतुर था और कोमल विनम्रता उसमें उन लोगों से कहीं अधिक थी। उसकी माता अत्यन्त धार्मिक थी और पुत्री में भी उसका प्रभाव था मानो वह निरन्तर एक आवेश में रहती और पवित्र अनबन्य जैसे उसे अनुप्राणित किए रहते। एक बार पोल बीमार पड़ा। दस महीने तक वह कुछ नहीं कर सका और इस समय में मरियम से उसका सान्निध्य अधिक बना रहा। उसे मरियम का अध्ययन करने का काफी समय मिला। वे लोग सचमुच एक-दूसरे के प्रेम में पड़ गए थे। किन्तु मरियम

कभी भी जैसे साधारण बनकर नहीं रहती थी। वह अपने को असाधारण बनाए रहने की चेष्टा करती और इसलिए कभी-कभी पोल को उससे घृणा होने लगती। पोल उसको गणित सिखाने लगा। उसने उसे फ्रेंच भाषा सिखाना प्रारम्भ किया और इस भाषा को सिखाने में वे अपने प्रेम को मुखरित करने में समर्थ हुए। लेकिन कभी-कभी ऐसा लगता जैसे वह केवल एक बाह्य अनुकृति-मात्र थी। इन्हीं दिनों पोल चित्र बनाने लगा था और वह देखती थी, उसके चित्रों में उसकी आत्मा थी। इसको वे चित्र पोल से भी अधिक आकर्षक दिखाई देते और इस प्रकार मरियम ने अपने प्रेम को ऐसा आध्यात्मिक आवरण दे दिया कि वह इन दोनों के शारीरिक सम्पर्कों के बीच में एक व्यवधान बन गया मानो उसका प्रेम केवल मानसिक था, उसका आश्रय कहीं देह में नहीं था।

गर्टरूड को यह लड़की पसन्द नहीं थी जो कि उसके पुत्र पर पूरी तरह छा जाना चाहती थी। पोल अपनी वासनाओं का दमन करता था और इसमें उसपर बड़ी उदासी छा जाती थी, एक प्रकार की निराशा-सी व्याप्त हो जाती थी। गर्टरूड इस बात को चुपचाप देखती थी और उसे उस लड़की से चिढ़ होती थी।

किन्तु अब गर्टरूड के स्वास्थ्य ने जवाब देना प्रारम्भ कर दिया था। वह पोल को बराबर इस विषय में डांटती कि वह अपना इतना अधिक समय मरियम के साथ नष्ट न करे। पोल कहता : मुझे मरियम से कोई प्रेम नहीं, मैं तो केवल उससे बात करने का शौकीन हूं, आदि। और इन विवादों में पोल ने अचानक ही यह अनुभव किया : मैं अपनी माता के जीवन का आधार हूं और मां मेरे लिए कितना बड़ा सहारा है। मरियम के साथ वह रहता तो वह अपने को अनिश्चय के जाल में फंसा हुआ पाता। लेकिन मां के पास जब वह रहता तो उसे लगता कि उसका जीवन अस्थिर नहीं है, उसे एक अटूट विश्राम मिल रहा है। यहां एक आधार है जिसमें समन्वय है, एक-दूसरे को समझने की ताकत है। यहां मान-मनौव्वल और गर्व की अहम्मन्यता नहीं। यहां समन्वय है, समर्पण है और एक-दूसरे के लिए मिट जाने की भावना है जो किसी अपेक्षा पर आधारित नहीं। इसमें कोई स्पर्द्धा नहीं। मां ने कहा—और कोई स्त्री हो तो मुझे कोई विरोध नहीं लेकिन मरियम नहीं क्योंकि वह तो मुझसे मेरे पुत्र को बिलकुल छीन लेगी। उसके आ जाने पर मेरे लिए कोई स्थान नहीं रह जाएगा आदि। और जब पोल ने कहा कि वह मरियम से प्रेम नहीं करता तो उसकी माता ने उसे हर्षातिरेक से चूम लिया, जैसे चिरकाल से कष्टों में पाला हुआ यह पुत्र अब भी उसी का था, वह उसके पास से छिना नहीं था। नारी का यह द्वन्द्व कितना विचित्र था! नई स्त्री सम्पूर्णता से पोल को जीत लेना चाहती थी और दूसरी ओर माता अपने समस्त अधिकारों को खोना नहीं चाहती थी।

मरियम को पोल पर पूर्ण विश्वास था। जब पोल ने उससे कहा कि वह उसे नहीं चाहता तो उसने इसपर विश्वास ही नहीं किया। उसने अपने-आपसे कहा पोल की आत्मा को मरियम की आवश्यकता है। धीरे-धीरे पोल का आना कम हो गया और उसने कहा कि वह अब उसके पास नहीं आएगा और अच्छा हो कि मरियम अपने लिए कोई दूसरा व्यक्ति चुन ले। मरियम ने जब ऐसा सुना तो उसकी इच्छा हुई कि वह जी-भरकर रो ले। और इसके बाद वह सचमुच बहुत कम आता। मरियम ने निश्चय किया

कि वह एक बार इस विषय में पोल की परीक्षा ले। उसने श्रीमती क्लारा डोवेस नामक एक सुन्दर स्त्री से उसका परिचय कराया। क्लारा का पति एक लोहार था। वह उससे अलग रहती थी और नारी आन्दोलन में स्त्रियों के अधिकारों के लिए लड़ने लगी थी। स्त्री को मत देने का अधिकार होना चाहिए—उन दिनों इसपर काफी सरगर्मी थी। क्लारा सुन्दरी थी। उसकी शारीरिक गठन बहुत आकर्षक थी। और मरियम उसके इस सौन्दर्य के प्रति अनुरक्ति को निचले स्तर की बात समझती थी। वह यह देखना चाहती थी कि पोल में निचले स्तर की अनुरक्ति थी या उच्च स्तर की। उच्च स्तर में वह शारीरिक आकर्षण को अधिक महत्त्व नहीं देती थी। पोल क्लारा से आजादी के साथ मजाक किया करता था। उसके साथ उसे सहज स्वाभाविकता का आनन्द मिलता था जो उसे मरियम के साथ कभी भी प्राप्त नहीं हुआ, लेकिन मरियम के आत्मविश्वास में जैसे वह यही पुष्टि दे रहा था कि वह अब भी उसीका था और क्लारा उसको नहीं जीत पाई थी।

पोल के जीवन में और भी परिवर्तन आए। घटनाएं उसके भावुक दैनन्दिन उतार-चढ़ाव को प्रभावित करती रहीं।

ऐनी का विवाह हो गया। आर्थर सेना में भरती हो गया और उसने भी विवाह कर लिया। पोल की चित्रकला बढ़ती रही और उसे अब पुरस्कार भी मिलने लगे। एक दिन वाल्टर मोरेल के साथ खान में दुर्घटना हो गई। उसका पैर कुचल गया और परिणामस्वरूप अपनी ढलती आयु में वह कुछ लंगड़ाने लगा।

पोल तेईस वर्ष का हो गया था। आज तक उसका किसी स्त्री से शारीरिक सम्पर्क नहीं हुआ था। उसे प्रेम का यह स्थूल अनुभव प्राप्त नहीं हो सका था। अब भी वह अपनी माता की सेवा में रहता। यद्यपि मां बीमार थी, गरीब थी, किन्तु उसे इसका गर्व था कि उसका पुत्र उसके पास था और वह अपने सारे कष्टों को बड़े साहस के साथ झेलती थी। उसके लिए उसका पुत्र ही सब कुछ था। अब भी वह यही सोचती थी कि पोल के जीवन का सुख नष्ट करनेवाली स्त्री मरियम ही थी और जब वह इस बात को याद करती तो पुत्र की वेदना उसके हृदय को व्याकुल कर देती। पोल बहुत दिन तक मरियम के पास नहीं गया। महीनों बीत गए। लेकिन जब वसन्त आया तो अब की बार वह स्वयं उसकी परीक्षा लेने गया। आज तक वह उसे कभी चूम नहीं सका था। वह कभी अपने प्रेम की अभिव्यक्ति नहीं कर सका था। उसने उस व्यवधान को तोड़ दिया। एक दिन वन में सांझ घिरने लगी और उस ढलते अन्धकार में मरियम ने पोल के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। किन्तु यह मानो मरियम की ओर से किया गया एक बलिदान था जिसमें उसे एक विचित्र-सा भय हुआ। भारी आवाज़ का यह बलिष्ठ युवक उसके लिए जैसे एक अजनबी था। पोल को लगा कि वह उसके आलिंगन में बद्ध एक विचित्र विरोध का अनुभव कर रहा था। और क्षण-भर उसे ऐसा लगा कि यह एक उन्मुक्त तन्मयता थी जिसमें कोई भी व्यवधान नहीं था। एक क्षण उसे ऐसा लगा जैसे वह उसे बहुत, बहुत अधिक प्यार करता था। किन्तु यह एक छाया थी। आई और चली गई और चले जाने के बाद फिर कभी लौटकर नहीं आई।

अब क्लारा उसके जीवन में प्रमुख हो गई। उसका स्नेह उसको अपनी ओर

खीचने लगा। जार्डन फैक्टरी में पोल ने ही उसको काम दिलाया था। और इस बीच में उसने उसके सम्पर्क में आने पर उसके स्वभाव के अनेक रूप देखे। मरियम से आठ वर्ष के सम्पर्क एक दिन बातों ही बातों में टूट गए। उन बातों में स्नेह नहीं था, एक कटुता थी और अब वह क्लारा के साथ घूमने लगा और एक दिन वह उसे ट्रेन्ट के तीर पर ले गया। अपनी बरसाती को उसने वृक्षों के बीच की भीगी हुई धरती पर बिछा दिया। उसने अपने मुख को उसकी ग्रीवा पर रख दिया। सब कुछ प्रशान्त निस्तब्ध था। दोपहर ढलने लगी थी और वहां कोई नहीं था। तब क्लारा ने उसे अपने पति बेक्स्टर डोवेस के बारे में बताया कि वह उसके साथ तीन वर्ष रहकर भी उसे कभी समझ नहीं पाई थी।

और क्लारा का गर्टरूड ने स्वागत किया, ऐसा जैसा उसने मरियम का कभी नहीं किया था। यह बात धीरे-धीरे बेक्स्टर तक पहुंच गई। सराय में बेक्स्टर ने इसपर एक दिन व्यंग्य भी किया। पोल क्रुद्ध हो उठा और उसने सबके बीच में अपने हाथ की शराब बेक्सटर के मुंह पर उछाल दी। बेक्स्टर लोहार था और उसने इसका प्रतिशोध लेने की प्रतिज्ञा की। क्लारा ने पोल से कहा : बात बढ़ चुकी है। कौन जानता है वह किस समय क्या कर देगा, इसलिए तुम्हें अपनी रक्षा करने को अपने पास आयुध अवश्य रखना चाहिए। जब पोल ने अस्वीकार कर दिया तो वह क्रुद्ध हो गई। पोल और क्लारा के बीच का मुख्य सम्बन्ध शारीरिक था। और पोल ने उसके मुख से यह भी निकलवा लिया कि अब भी वह डोवेस को अपना समझती थी। क्लारा ने यह भी कहा कि बेक्स्टर ने अपना सब कुछ क्लारा को दे दिया था और वह जानती थी कि पोल वैसा सम्पूर्ण समर्पण उसके सामने कभी भी नहीं कर सकेगा।

एक रात डोवेस ने पोल को अकेले में घेर लिया। पोल ने उससे यद्यपि लड़ाई लड़ी लेकिन फिर भी उसने उसकी कसकर पिटाई कर दी और इसके बाद पोल क्लारा से दूर-दूर रहने लगा।

गर्टरूड ऐनी से मिलने के लिए शेफील्ड चली गई और वहां इतनी बीमार पड़ गई कि उसके बचने की उम्मीद नहीं रही। उसे भयानक कष्ट हो रहा था और उस पीड़ा में ही उसे घर ले आया गया और उसकी मौत का इन्तजार किया जाने लगा। इस बीच पोल ने डोवेस से मित्रता कर ली और क्लारा को उससे मिला दिया। पोल अपनी माता का इस प्रकार धीरे-धीरे मरना न देख सका। गर्टरूड जीवन के यथार्थ को अब भी नहीं भूली थी और वह जान-बूझकर इसलिए बहुत कम खाती थी ताकि जल्दी से जल्दी मर सके। किन्तु इस प्रकार उसे मरते हुए देखना एक बहुत ही कठिन काम था। अन्त में पोल और ऐनी ने उसे दवाई के रूप में अधिक मात्रा में अफीम दे दी। पोल उसकी शय्या के समीप घुटने टेककर बैठ गया। उसने माता के क्षीण शरीर से आलिंगन किया और बुदबुदाया : 'मां, ओ मेरी मां, ओ मेरे जीवन के प्यार की आधार!' पोल को ऐसा लगा जैसे मां को वह कभी जाने नहीं देगा। मां के प्रति जो उसका प्यार था वह उसके लिए सर्वश्रेष्ठ था, सर्वोपरि था। आज यह उसका सम्बल था। महीनों और बीत गए। जैसे उसे एक धुंधियाली-सी चौंध घेरे रही।

अब पोल को पता नहीं था कि क्या करे। और तभी उसे नॉटिंघम में फिर

मरियम मिली। लेकिन अब भी वह केवल उसके सामने अपना बलिदान दे सकती थी। वह उसके साथ उसका भार उठाने में असमर्थ थी।

मरियम का ध्यान छोड़कर पोल फिर अपनी मां के बारे में सोचने लगा। वही तो एक चीज़ थी जिसने उसे जीवन में अभी तक बनाए रखा था। पर नहीं, अब वह सब-कुछ त्याग करना नहीं चाहता था। उसने उसके पास जाकर अपने-आपको खो देने की कल्पना को भी त्याग दिया और नगर की चकाचौंध की ओर चल पड़ा।

> इस उपन्यास में लारेन्स ने एक विचित्र मानसिक विश्लेषण की प्रक्रिया दिखाई है—जीवन के शाश्वत अनुबन्धों में पुरुष मां और प्रिया के बीच अपने क्षणों को व्यतीत करता है। दोनों ही मूल प्रवृत्तियां हैं—एक में उदारता का उत्तरदायित्व मिलता है और दूसरी ओर रहती है वासना। इन दोनों संघर्ष में व्यक्ति एक समन्वय करता हुआ सा डोलता है। यह सत्य है कि मनुष्य के जीवन में एक शारीरिक भूख है किन्तु उससे भी बड़ी प्यास उसकी आत्मा को है और यह भी एक बड़ा सत्य है कि यदि दोनों का समन्वय-रेखा पर मिलात नहीं होता तो जीवन में एक सूनापन-सा आ जाता है: लॉरेन्स ने इन्हीं उतार-चढ़ावों का वर्णन किया है और पोल के चरित्र के माध्यम से उसने इन समस्याओं को सुलझाने की बजाए उजागर करने की चेष्टा की है।

सागर और मनुष्य

[द ओल्ड मैन एण्ड द सी[1]]

हेमिंग्वे, अर्नेस्ट : अंग्रेजी साहित्यकार अर्नेस्ट हेमिंग्वे का जन्म २१ जुलाई, १८९८ को ओक पार्क, इलिनोइस में हुआ। आप कैन्सास के पत्र-संवाददाता हो गए और लिखना शुरू किया। प्रथम महायुद्ध में आप फ्रेंच सेना में एम्बुलेन्स ड्राइवर बन गए और बाद में आपने इटैलियन सेना में कार्य किया। युद्ध के बाद आप टॉरेंटो के पत्र 'स्टार' के लिए पूर्वी संवाददाता बनकर युद्ध का वर्णन लिखने लगे। फिर अमेरिकन एक्स-पैट्रियेट ग्रुप के सदस्य बनकर पेरिस में बस गए। १९२७ में आपका प्रसिद्ध उपन्यास 'ए फेयरवैल टु आर्म्स' निकला। १९३७-३८ में स्पेन के गृहयुद्ध में संवाददाता बनकर गए। आपने एक पत्रकार तथा लेखिका मर्था हौलहॉर्न से १९४१ में विवाह किया। १९६१ में बंदूक साफ करते समय गोली चल जाने से आपकी मृत्यु हो गई। आपको नोबल पुरस्कार मिला था।

'सागर और मनुष्य' (द ओल्ड मैन एण्ड द सी) आपका एक महान उपन्यास है, यद्यपि यह बहुत बड़ा नहीं है।

उष्णप्रदेशीय समुद्र में एक छोटी-सी नाव पर सैंटियागो नामक बूढ़ा मछुआ मछली पकड़ा करता था। दुबला-पतला शरीर, गर्दन की पिछली ओर पड़ी झुर्रियां, गालों पर भूरे धब्बे और हाथों के ऊपर मछली पकड़नेवाले रस्सों के चिह्नवाला सैंटियागो साहसी और आशावादी था, पराजय स्वीकार करना तो वह जानता ही न था। मैनोलिन नामक एक लड़का उसके साथ मछली पकड़ा करता था। मैनोलिन को उसने पांच वर्ष की आयु से ही मछली पकड़ना सिखाया था, इसलिए वह उससे बहुत स्नेह करता था। एक बार चालीस दिन तक उनके हाथ एक भी मछली नहीं लगी तो मैनोलिन के मा-बाप ने उसे दूसरी नाव पर मछली पकड़ने भेज दिया। अब भी मैनोलिन रस्से, अंकुश, भाले और पाल को घर तक लाने में बूढ़े की सहायता करता था और उसे बीयर, काफी, भोजन की अन्य वस्तुएं तथा चारे के लिए मछलियां दे जाता था। इसी तरह बूढ़ा सैंटियागो भी लड़के से प्रेम करता था। वह उसे अपने यौवन की साहसपूर्ण कहानियां सुनाया करता। दूसरी नाव पर जाने के पश्चात् मैनोलिन को तो मछलियां हाथ लगने लगी थीं, परन्तु सैंटियागो चौरासी दिन

---

१. The Old Man And The Sea (Ernest Hemingway) —इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद हो चुका है : 'सागर और मनुष्य'; अनुवादक—आनन्दप्रकाश जैन ; प्रकाशक—राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।

तक मानो हाथ ही मोड़ता रहा। वह दूर-दूर तक समुद्र में निकल जाता किन्तु भाग्य उसका साथ नहीं दे रहा था। दूसरे मछुओं ने बूढ़े सैंटियागो की हंसी उड़ाना आरम्भ कर दिया था, फिर भी वह विचलित नहीं हुआ। मैनोलिन को बूढ़े की शक्ति और मछली पकड़ने की कुशलता पर पूर्ण विश्वास था। दूसरों के द्वारा हंसी उड़ाए जाने पर भी वह निराश नहीं हुआ था।

८५वें दिन जब बूढ़ा सैंटियागो नाव लेकर चलने लगा तो मैनोलिन ने उसे एक बहुना और दो चारा मछलियां दीं। सैंटियागो नाव खेता हुआ सुदूर समुद्र में बढ़ता ही चला गया। उसके आसपास कोई भी दूसरी नाव नहीं थी। इस प्रकार अकेले में उसे उड़न-मछलियां और छोटी चिड़ियाएं बहुत अच्छी लगती थीं। समुद्र की कल्पना वह स्त्री-रूप में किया करता था। बन्दरगाह से वह मुंह अंधेरे ही चल दिया था और जब सूर्य की किरणें सागर के वक्ष पर चमकने लगीं तो उसने कांटों में चारा मछली लगाई और उन्हें पानी में छोड़ दिया। कुछ देर बाद अचानक ही उसकी दृष्टि पानी में से उछलती हुई उड़नमछलियों पर पड़ी और उसे उस स्थान पर घनिष्ठा मछली के होने का विश्वास हो गया। एक छोटे कांटे में बहुना मछली फंसाकर सैंटियागो ने उसी स्थान पर छोड़ दी। कुछ देर बाद ही बूढ़े के कांटे में लगभग दस पौंड की एक सारिका मछली फंस गई, जिसे उसने नाव पर खींच लिया।

दोपहर के समय सौ धनुमान नीचे लटकते कांटे में एक बड़ा मच्छ फसा और उत्तर पश्चिम की ओर चल पड़ा। बूढ़ा पहले तो रस्से को हाथ से ही पकड़े रहा फिर कमर पर थामे रखा। मच्छ इतना शक्तिशाली था कि नाव को खींच ले चला। बूढ़े ने मुड़कर देखा परन्तु कहीं थल दिखाई नहीं देता था। प्यास लगने पर उसने घुटनों के बल झुककर बोतल में से पानी पिया और नाव में पड़े हुए मस्तूल और पाल पर बैठ गया। उसकी पीठ और हाथ-पैरों पर पसीना बह रहा था तथा सिर पर फंसा हुआ तिनके का टोप उसे काटने लगा था। इसी तरह कष्ट सहते सैंटियागो को रात हो गई और शरीर पर का पसीना ठंड पाकर जम गया। रस्सा अब उसकी कमर पर गड़ने लगा था इसलिए कांटे के बक्स को ढकनेवाले बोरिए को उसने गरदन से इस तरह बांधा कि पीठ पर लटककर वह रस्से के नीचे गद्दे का काम देने लगा। अब बूढ़ा सैंटियागो नाव के धनुष के सहारे कुछ इस तरह झुक गया कि उसे पहले से कम कष्ट अनुभव होने लगा। इस समय रह-रहकर उसे मैनोलिन की याद आ रही थी, अकेलापन उसे खलने लगा था। सवेरा होने से कुछ पहले एक कांटे को किसी मछली ने निगला, बूढ़े ने इस रस्से को ही काट दिया। वह इस बड़े मच्छ को छोड़ना नहीं चाहता था जोकि नाव को खींचे चल रहा था। बूढ़े ने अंधेरे में ही शेष डोर को काटकर आपस में बांध लिया। इसी बीच मच्छ ने एक ज़ोर का झटका दिया जिससे बूढ़ा मुंह के बल गिर पड़ा और उसकी एक आंख के नीचे घाव हो गया। सुबह होते ही सैंटियागो ने रस्से का तनाव बढ़ा लिया, जिससे मच्छ उछले और उसकी रीढ़ की थैलियों में हवा भर जाए; क्योंकि हवा भरने से फिर वह गहरे पानी में नहीं जा सकता। कुछ देर में ही बूढ़े ने देख लिया कि रस्सा अधिक नहीं ।। जा सकता अन्यथा टूट जाने का भय है। तभी एक छोटी-सी चिड़िया नाव में आ

बैठी और बूढ़ा उसमें बात करने लगा। उसी समय मच्छ ने अचानक ऐसा झटका दिया कि सैंटियागो को धनुष तक खींच लिया। बूढ़ा यदि रस्से को थोड़ी ढील न देता तो उचटकर पानी में गिर पड़ता। इस झटके से बूढ़े का हाथ भी कट गया था जिसे उसने समुद्र के पानी में भिगोकर ठीक करने की चेष्टा की। जब हाथ को सुखा लिया तो रस्से को बायें कंधे पर रखे-रखे ही उसने चिपिटा मछली को चाकू से काटकर खाया। उसका बायां हाथ अब अकड़ने लगा था और रस्से पर कसी हुई उंगलियां दोहरी होने लगी थीं। बायें पैर को रस्से पर रखकर वह पीछे झुका और पीठ के सहारे लेट गया। अकड़े हुए हाथ की उंगलियों को पतलून से रगड़कर उसने खोलना चाहा परन्तु उसे सफलता नहीं मिली। प्रातःकाल ही मच्छ पानी के ऊपर आया और फिर पानी के भीतर चला गया। बूढ़े ने देखा कि मच्छ का आकार नाव से भी दो फुट अधिक लम्बा था। हाथ के न खुलने से बूढ़ा बड़बड़ाने लगा था किन्तु दोपहर के समय वह भी खुल गया। अब मच्छ उत्तर-पूर्वी कोण की ओर घूमने लगा। बूढ़े की पीठ में बहुत जोर से दर्द होने लगा था, किन्तु वह निराश नहीं हुआ। साहस जुटाने के लिए वह माता मेरी की प्रार्थना करने लगा। अब उसके मस्तिष्क में पानी के भीतर तैरते मच्छ का चित्र बन रहा था और वह उसका शिकार करने की योजना बना रहा था। मच्छ समुद्र के गहरे पानी में आगे बढ़ता रहा और साथ-ही-साथ सैंटियागो की नाव भी चलती गई।

इसी प्रकार सूर्य डूब गया और रात्रि का अन्धकार समुद्र के वक्ष पर दूर-दूर तक फैल गया। सैंटियागो आत्मविश्वास जगाने के लिए अपने यौवन के साहसिक कार्यों को स्मरण करने लगा। वह जब युवक था तब कैसाब्लेंका के एक मदिरालय में उसने एक विशालकाय नीग्रो से पंजा लड़ाने का खेल खेला था। पूरे एक दिन और एक रात तक खेल चलता रहा था, फिर भी अन्त में उसने हब्शी पहलवान का पंजा झुकाकर बाजी जीत ली थी। इस घटना के बाद से ही सब लोग उसे 'चैम्पियन' के नाम से पुकारने लगे थे। इस घटना का स्मरण करके बूढ़ा सैंटियागो अपने-आपमें शक्ति अनुभव करने लगा। अंधेरा होने से पूर्व बूढ़े ने छोटे कांटे में फंसाकर एक धनिष्ठा मछली पकड़ ली थी। नाव पर खींचने के बाद जब मछली फड़फड़ाने लगी तो उसने मुगरी के प्रहार से उसे ठंडा कर दिया। कांटा मछली से निकालकर उसने दूसरी बहुला का चारा लगाया और फिर समुद्र में फेंक दिया। अब बूढ़े ने रस्सा अपने दूसरे कन्धे पर बदल लिया था। सैंटियागो की शक्ति अब जवाब देने लगी थी, उसकी कमर में दर्द था और अब अवसन्नता में बदलने लगा था। कुछ आराम करने के विचार से वह नाव के धनुष की लकड़ी से सीना लगाकर पड़ गया। उसे हर समय यह आशंका सता रही थी कि यदि मच्छ सारी रस्सी खींच ले गया तो क्या होगा। पहले तो उसने रस्से को नौका से बांधने की बात सोची फिर मच्छ द्वारा तोड़ देने के डर से उसने वैसा नहीं किया। बायें हाथ से रस्से को सभाले वह घुटने के बल चलते हुए नाव के पिछले भाग में गया और दायें हाथ से चाकू खोलकर धनिष्ठा को चीर डाला। जब उसने मछली की अन्तड़ियां निकालकर समुद्र में फेंक दीं तो उसे मछली का मेदा कुछ भारी लगा। मेदे को चीरने पर सैंटियागो को उसमें दो उड़नमछलियां मिलीं जोकि अभी तक ताजी थीं। धनिष्ठा की पांखें उतारकर बूढ़े ने अस्थिपंजर सागर

में फेंक दिया और उड़नमछलियों को धनिष्ठा की कटी हुई पट्टियों में लपेटकर रख दिया। इतना कुछ करने के बाद उसे रस्से की चुभन अनुभव होने लगी और उसने रस्सा दूसरे कन्धे पर बदल लिया। शक्ति बनाए रखने को बूढ़ा धनिष्ठा की कटी हुई फांकों को खाने लगा। रह-रहकर उसे नमक तथा नींबू का अभाव खटक रहा था। फिर भी वह उसे कच्ची चबा गया।

इसके पश्चात् सैंटियागो ने सोने की आवश्यकता अनुभव की। रस्से को दायें हाथ से पकड़कर वह धनुष की लकड़ी के सहारे पड़ गया, बायां हाथ उसने रस्से के ऊपर रख लिया जिससे सोते-सोते यदि दायां हाथ ढीला पड़े तो बायां उसे जगा दे। सारे शरीर का बोझ रस्से पर डाले हुए ही वह औंधे मुंह सो गया। नींद में, जैसाकि उसका स्वभाव था, उसने सपना देखा। सपने में उसे शेर दिखाई देते रहे; और नाव स्वाभाविक गति से मच्छ के साथ-साथ आगे बढ़ती गई। अचानक रस्सा नाव से बाहर खिंचने लगा और बूढ़े के दायें हाथ की मुट्ठी झटके से मुंह पर लगी जिससे उसकी आंख खुल गई। जैसे-तैसे बायें हाथ से उसने रस्सी पकड़ी और पीछे की ओर झुक गया। रस्से के खिंचाव से उसकी पीठ और हाथ में जलन होने लगी थी। धीरे-धीरे मच्छ ऊपर आया और उछलकर फिर पानी में गिरा। इसी तरह मच्छ ने एक दर्जन से ऊपर उछाले लिए जिससे उसकी थैलियों में हवा भर गई। बूढ़ा सोच रहा था कि अब मच्छ चक्कर काटना प्रारम्भ कर देगा और तभी उसका शिकार करना होगा। मच्छ अब थककर धारा के साथ ही पूरब की ओर चलने लगा था। बूढ़े का बायां हाथ रस्से की रगड़ से कट गया था, उसे उसने नाव के एक तरफ से समुद्र में डाले रखा। जब बूढ़े के मस्तिष्क में धुंधलका छाने लगा तो उसने शक्ति अर्जित करने के लिए धनिष्ठा के पेट से निकली उड़नमछली खा ली। मच्छ ने भी चक्कर काटना प्रारम्भ कर दिया था। मच्छ चक्कर काटता ही रहा और बूढ़ा पसीने से तर हो गया, उसकी आंखों के आगे तिरमिरे आते रहे। दो बार तो उसे मूर्च्छा-सी आती प्रतीत हुई, जिससे वह चिंतित हो उठा।

सूर्योदय पहले ही हो चुका था और तिजारती हवा भी उठने लगी थी। धीरे-धीरे विशालकाय मच्छ, जिसके ऊपर कि जामनी धारियां पड़ी हुई थीं, पानी के ऊपर आ गया। प्रत्येक चक्कर के बाद बूढ़ा रस्सा कसता जा रहा था और सोच रहा था कि जैसे ही मच्छ नाव के निकट आए वह भाले से उसे मार दे। बूढ़े को एक बार फिर मूर्च्छा आने लगी, परन्तु पूरी शक्ति से उसने रस्सा खींचना जारी रखा। रह-रहकर सैंटियागो के सिर में चक्कर आ रहे थे, वह कमजोरी महसूस कर रहा था। कई बार के प्रयत्न के पश्चात् उसने मच्छ को नाव के निकट खींच लिया और मच्छ एक तरफ से उलट गया। पूरी शक्ति लगाकर बूढ़े सैंटियागो ने भाला मच्छ की पाख में घोंप दिया। मच्छ धमाके के साथ बूढ़े की नाव पर छींटे मारता हुआ जल में गिर गया और बूढ़े को फिर मूर्च्छा ने दबाना प्रारम्भ किया। उसे स्पष्ट रूप से दिखाई देना भी कठिन हो गया। आत्मविश्वास के साथ सैंटियागो ने अपने-आपको संभाला। मच्छ अब पलट गया था और उसका पेट आकाश की ओर था। घाव से रक्त बह-बहकर पानी में फैल गया था। बूढ़े ने रस्से को खींचकर मच्छ को अपनी ओर खींच लिया और उसे नाव के साथ बांध दिया। मच्छ को

देखकर बूढ़े ने मन ही मन हिसाब लगाया कि उसका वजन डेढ़ हजार पौंड के लगभग होगा। मस्तूल खड़ा करके उसने पाल उठा दिया और नाव के पिछले भाग में लेटा हुआ दक्षिण-पश्चिम की ओर चल पड़ा। चकरी से वह नाव चलाता जा रहा था।

अब बूढ़े सैंटियागो को ग्राह मच्छों के आने का भय था। यदि वे दल बांधकर आए तो मच्छ का सफाया कर जाएंगे, यही सोचकर बूढ़ा चिंतित हो उठा। समुद्र में दूर-दूर तक बूढ़े की नाव से बंधे मच्छ का रक्त फैल गया था जिसकी गन्ध पाकर एक माको ग्राह बूढ़े की नाव की ओर बढ़ा आ रहा था। बूढ़े ने मच्छ की रक्षा के लिए भाला तैयार कर लिया। अब तक बूढ़ा फिर से स्वस्थ हो चुका था। ग्राह ने नाव के पीछे से आकर मच्छ के पिछले भाग में मुंह मारा। जैसे ही बूढ़े ने मच्छ की खाल फटने का शोर सुना वह क्रोधित हो उठा और ग्राह के मस्तक में उसने भाला घोंप दिया। ग्राह तड़पकर मर गया और भाले को साथ लिए समुद्रतल में चला गया। बूढ़े को यह आशंका होने लगी थी कि इतना अच्छा मच्छ वह बन्दरगाह तक कठिनाई से ही सुरक्षित ले जा सकेगा। ग्राह के द्वारा मच्छ का मांस कटने से भी बूढ़ा चिंतित हो उठा।

सब कुछ होने पर भी बूढ़े सैंटियागो के दुर्दमनीय आत्मविश्वास को देखकर मानव-प्रकृति का एक उज्ज्वल पक्ष सामने आता है। "मनुष्य का निर्माण पराजय स्वीकार करने के लिए नहीं हुआ। मनुष्य नष्ट किया जा सकता है, परन्तु हराया नहीं जा सकता।"—बूढ़े सैंटियागो के ये शब्द मानव की अपराजेय भावनाओं का प्रतीक है।

जब से ग्राह ने मच्छ का मांस काटा और वह बूढ़े के भाले को लेकर समुद्रतल में बैठ गया, तभी से उसे मच्छ की रक्षा की चिंता हो उठी। अब उसके पास ग्राहों का सामना करने के लिए कोई शस्त्र न था। साहसी बूढ़े ने अन्त में एक उपाय खोज ही लिया। उसने एक चप्पू के एक डंडे में चाकू बांधकर भाला जैसा बना लिया। जिस स्थान से ग्राह मच्छ का मांस नोच ले गया था वहीं से सैंटियागो ने थोड़ा-सा मांस नोचा और चबाने लगा। उसे मांस मधुर लगा और वह कई टुकड़े खा गया। दो घंटे तक बूढ़ा आराम से नाव में चलता रहा, इसके पश्चात् दो भयंकर ग्राहों ने मच्छ पर आक्रमण किया। एक ग्राह की आंख में बूढ़े ने चाकू घुसेड़ दिया और फिर मस्तक में घोंपा जिससे मच्छ को छोड़कर वह चक्कर खाता हुआ समुद्र में खो गया। दूसरा ग्राह नाव के नीचे था, परन्तु बूढ़े ने नाव को एक ओर झुकाकर उसके सिर में चाकू घोंप दिया। ग्राह पर इसका जब कोई प्रभाव नहीं हुआ तो बूढ़े ने उसकी रीढ़ व सिर के बीचवाले स्थान में ज़ोर से चाकू घुसेड़ा, जिससे ग्राह के कोमल तन्तु कट गए और वह मच्छ को छोड़कर पानी में बैठ गया।

कुछ ही देर बीती होगी कि फिर एक ग्राह ने मच्छ पर चोट की। बूढ़े सैंटियागो ने ग्राह के सिर में चाकू घोंपा तो उसने पीछे की ओर झटका मारा और चाकू का फलका टूट गया। ग्राह तो धीरे-धीरे पानी में डूब गया किन्तु बूढ़े सैंटियागो के पास आगे आने-वाले ग्राहों से लड़ने के लिए छोटी मुगरी, चकरी का डंडा तथा दो चप्पुओं के अतिरिक्त कुछ नहीं रह गया था। अंकुश तो था परन्तु उससे लड़ने में कोई लाभ नहीं था। इतने ग्राहों से लड़कर बूढ़ा अब थक भी गया था। उसने सूर्यास्त के समय फिर दो ग्राहों को आते देखा। जब मच्छ के शरीर में ग्राहों ने दांत गड़ाए तो बूढ़े ने ग्राहों के जबड़ों पर

मुगरी बरसाना प्रारम्भ कर दिया। एक ग्राह तो पहली चोट में ही मर गया परन्तु दूसरा मच्छ का मांस नोचता रहा। बूढ़े ने उसके मस्तक के नीचे की हड्डी मुगरी की चोट से तोड़ दी जिससे वह भी चक्कर लगाता हुआ जल में बैठ गया। जैसे-जैसे अंधेरा बढ़ता जा रहा था, बूढ़ा चिन्तित होता जा रहा था। मच्छ का केवल आधा भाग ही अब बच रहा था। लगभग दस बजे उसे नगर का प्रकाश दिखाई पड़ने लगा, उसी ओर उसने नाव खेना आरम्भ कर दिया। उसके शरीर में अब पीड़ा होने लगी थी, शरीर कड़ा-सा पड़ गया था और घावों में जलन मचने लगी थी। आधी रात के समय ग्राह दल बांधकर मच्छ पर टूट पड़े। बूढ़े ने प्राणों का मोह छोड़कर ग्राहों पर मुगरी बरसाई जिससे बहुत-सों के जबड़े टूट गए, परन्तु किसी ग्राह के पकड़ लेने से मुगरी उसके हाथ से छूट गई। झल्लाकर बूढ़े ने नाव चलाने का डंडा उखाड़ लिया और ग्राहों को मारने लगा। ग्राहों के द्वारा नोचा हुआ मच्छ का मांस समुद्र में छितरा रहा था। एक बार तो ग्राह लौटकर चले गए किन्तु कुछ देर पश्चात् ही एक ग्राह मच्छ के मस्तक पर झपटा। ग्राह के दांत मच्छ के मस्तक में घुस गए तो बूढ़े ने उसे डंडा मारना आरम्भ कर दिया। मारते-मारते डंडा टूट गया तो बूढ़ा टूटे हुए डंडे से ही उसे मारता रहा। टूटा हुआ डंडा बूढ़े ने ग्राह के शरीर में घुसेड़ दिया जिससे वह चक्कर लगाता हुआ उलट गया। इस लड़ाई में बूढ़े सैंटियागो ने अपनी पूर्ण शक्ति लगा दी थी। उसके मुह में रक्त आ गया था और सांस कठिनाई से चल रही थी। ग्राहों ने मच्छ का पूरा मांस नोच लिया था और बूढ़ा समझ गया था कि अब वह पराजित हो चुका है। उसने बोरा अपने कन्धों पर डाल दिया और नाव खेने लगा। अब वह अपने बिस्तर के बारे में सोचने लगा और बन्दरगाह की ओर बढ़ चला। ग्राहों का दल फिर से मच्छ के ढांचे पर टूट रहा था परन्तु बूढ़ा अब निश्चित होकर बैठा था। वह जानता था कि बचाने को अब कुछ रह ही नहीं गया था।

जब सैंटियागो की नाव बन्दरगाह में पहुची तो वहां सन्नाटा छाया हुआ था। सब मछुए उस समय तक अपने-अपने घरों में सोए हुए थे। बूढ़े ने मस्तूल को उखाड़कर पाल उससे लपेटा और कंधे पर रखकर अपनी झोंपड़ी की ओर चलने लगा। नाव उसने वहीं एक चट्टान से बांध दी थी। जब मुड़कर उसने नाव के साथ बंधे विशाल मच्छ के अस्थि-पंजर को देखा तो उसकी शक्ति क्षीण होने लगी। अपनी झोंपड़ी तक पहुंचने में उसे रास्ते में पांच बार बैठना पड़ा। एक बार तो वह गिर ही पड़ा था। झोपड़ी में पहुचकर उसने मस्तूल दीवार के सहारे रखा और बोतल से पानी पीकर बिस्तर पर लेट गया। कम्बल से उसने अपना शरीर ढक लिया।

सवेरा होते ही मैनोलिन उसकी झोंपड़ी में आया और बूढ़े के लिए कॉफी ले आया। घाट पर बहुत-से मछुए बूढ़े की नाव के पास खड़े थे। एक मछुए ने रस्से से नाप-कर बताया कि मच्छ की लम्बाई अट्ठारह फुट थी। सभी इसपर आश्चर्य कर रहे थे। इतना बड़ा मच्छ कभी किसीने नहीं पकड़ा था।

जब मैनोलिन ने बूढ़े को कॉफी का गिलास पकड़ाया तो सैंटियागो ने कहा कि उसे मच्छों ने हरा दिया था। उसने अपने भाग्य को कोसा। अन्त में, मैनोलिन के यह कहने पर कि वह अब उसीके साथ मछली पकड़ेगा और उसने अब कुछ पैसा जोड़ लिया है, बूढ़ा

अपनी पराजय की बात भूल गया और नये चाकू, भाले और दूसरी अन्य वस्तुएं खरीद-कर मछली पकड़ने की योजना बनाने लगा।

मैनोलिन बूढ़े के लिए भोजन और अखबार लेने चला गया। साथ ही उसके हाथों के लिए दवा लाने को भी कह गया। बूढ़ा फिर अपनी झोपड़ी में सो गया और शेरों के सपने देखने लगा।

इस उपन्यास में समुद्र की भयंकरता की पृष्ठभूमि पर मनुष्य के अदम्य जीवन का जो चित्रण किया गया है, वह वास्तव में बहुत ही प्रभावोत्पादक है। लेखक ने जीवन के संघर्ष को बहुत ही निकटता से देखा है।

डॉ० ज़िवागो[1]

पास्तेरनाक, बोरिस लिओनिदोविच : रूसी लेखक बोरिस लिओनिदोविच पास्तेरनाक का जन्म मास्को में १८९० में हुआ। १९६० में आपकी कैंसर रोग से मृत्यु हो गई। आप संगीत में बहुत रुचि लेते थे। आपने मास्को विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। प्रथम विश्वयुद्ध के समय आप प्रमुख कलाकारों तथा भविष्यवादी कवियों में थे। द्वितीय विश्वयुद्ध में आपने यूराल के एक कारखाने में काम किया। आपकी कविताएं अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। आपके शेक्सपियर के अनुवादों को सर्वसम्मति से ख्याति मिली है।
'डा० ज़िवागो' आपका एक बहुचर्चित उपन्यास है। इस पर आपको नोबल पुरस्कार मिला। इस उपन्यास में राजनीति के विषय में आपके विचार बहुत विवादास्पद रहे। रूसियों में आपका उपन्यास कलात्मक रूप से घटिया था और पश्चिमवालों ने इस उपन्यास को महाकृति कहा। यह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है।

यूरा का पिता ज़िवागो प्रसिद्ध लक्ष्मीपति था। वह साइबेरिया में वेश्यागमन और मदिरापान में व्यस्त रहता था। यूरा की मां मारया निकोलायेवना को उसने छोड़ रखा था, परन्तु यह बात उसे मां की मृत्यु के पश्चात् ही मालूम हुई। जिस समय मारया निकोलायेवना की मृत्यु हुई, यूरा की आयु केवल दस वर्ष थी। उसकी मां वैसे तो प्रारम्भ से ही दुर्बल थी किन्तु बाद में तो उसे क्षयरोग हो गया था। प्रायः अपना इलाज कराने वह दक्षिणी फ्रांस अथवा उत्तरी इटली में जाया करती थी। जब भी वह यात्रा पर जाती यूरा को किसी परिचित के पास छोड़ जाती। वह भी अपरिचित वातावरण में रहने का आदी हो गया था। यूरा के पिता ज़िवागो ने रेल से कूदकर आत्महत्या कर ली थी। ज़िवागो के साथ उसका वकील भी यात्रा कर रहा था, किन्तु वह उसे आत्महत्या करने से रोक नहीं सका। यूरा के मामा निकोलाय निकोलायविच उसे बहुत प्रेम कर करते थे। वे स्वतन्त्र विचारों के व्यक्ति थे। बाद में तो उन्हें अपनी पुस्तकों के लिए काफी ख्याति मिली थी। मारया निकोलायेवना की मृत्यु के दो वर्ष पश्चात् सन् १९०३ की गर्मियों में यूरा अपने मामा के साथ कोलोग्रीवोव की जागीर डुप्ल्यांका में चला गया। कोल्या मामा प्रचलित स्कूली पुस्तकों के लेखक इवान इवानोविच वोस्कोवोयनिकोव से मिलने गए। वहां पहुंचकर कोल्या मामा और इवान तो अपने काम में लग गए और यूरा इधर-उधर घूमता रहता। निकी डुडरोव के साथ खेला करता। उसके मामा भी उसे काम के समय

---

१. Dr. Zivago (Boris Pasternak)—हिन्दी में इस उपन्यास का अनुवाद प्रकाशित हो चुका है : 'डॉ० ज़िवागो'।

खेलने भेज देते। एक दिन उसने मधुमक्खियों की ध्वनि तथा चिड़ियों की चहचहाहट सुनकर अनुभव किया कि मां पुकार रही है। भावुक यूरा इस भ्रम से भयभीत हो उठा। निराश होकर उसने घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना की। वह अचेत होकर गिर पड़ा।

यूरा मामा कोल्या से बहुत प्रभावित था। उनके विचारों ने आगे चलकर उसे प्रेरणा भी दी। बाद में यूरा रसायन शास्त्र के प्रोफेसर एलेक्जेंडर एलेक्जेंडरोविच के पास रहने लगा था, क्योंकि उसके मामा तो एक स्थान से दूसरे स्थान पर चक्कर लगाते रहते थे। एलेक्जेंडर एलेक्जेंडरोविच की लड़की टोन्या और यूरा का कमरा मकान के ऊपरी भाग में था। दोनों साथ-साथ बड़े हुए। आगे चलकर टोन्या से यूरा का विवाह भी हो गया।

बेल्जियम के एक इंजीनियर की रूसी नागरिकता-प्राप्त पत्नी, जो स्वयं फ्रांसिसी थी, अपने दो बच्चों (रोडिओन और लारिसा) के साथ मास्को में आकर बस गई थी। उसका नाम अमालिया कार्लोवना गुइशार था। उसकी आयु ३५ वर्ष थी और वह सुन्दर भी थी। श्रीमती गुइशार के उस समय मुख्य सहायक वकील कोमारोवस्की ही थे। उसीके साथ पत्र-व्यवहार करके श्रीमती गुइशार मास्को चली आई थी। उसने माटोग्रेवो होटल में उसके रहने की व्यवस्था कर दी थी। बाद में ट्रायम्फल आर्क के निकट स्थित कपड़े सिलाई करने के कारखाने को उसने खरीद लिया था और कारखाने के समीप ही तीन कमरोंवाले एकपार्टमेंट में आकर रहने लगी थी। होटल में वह केवल एक महीने तक ही रही।

कोमारोवस्की श्रीमती गुइशार से प्रायः मिलने आया करता था। उसका स्वभाव अच्छा न था। वह श्रीमती गुइशार के घर आते समय मनचली औरतों के साथ अश्लील मज़ाक करता हुआ आता था। लारा की आयु उन दिनों सोलह वर्ष की थी, किन्तु अच्छे स्वास्थ्य के कारण वह नवयुवती लगती थी। कोमारोवस्की ने कुछ दिन में ही लारा को अपने प्रेम में फंसा लिया था। उसने उसपर काफी धन भी खर्च किया। लारा उसके साथ थियेटरों में जाती और वह उसके लिए कुछ भी करने को उत्सुक रहता था। कोमारोवस्की की आयु लारा के पिता के समान थी। वह धीरे-धीरे उससे घृणा करने लगी थी। वह सोचा करती थी कि उसने कोमारोवस्की को आत्मसमर्पण कैसे कर दिया। कोमारोवस्की जब कहता कि वह उससे विवाह कर लेगा तो वह रोने लगती। अन्त में लारा ने सोचा कि कोमारोवस्की की सहायता पर उसकी मां का अवलम्बित होना ही उसकी दुर्बलता का कारण है। वह किसी भी प्रकार उससे छुटकारा पाने की बात सोचने लगी। जिन दिनों हड़ताल के कारण कोमारोवस्की उसके घर नहीं आ सका वह बहुत प्रसन्न रही।

लारा का घर विद्रोह-क्षेत्र में तो था ही। रेडयास-पोस्ट के निकट का स्थान ऐसा था जहां कि विद्रोही एकत्र होते थे। विद्रोही लोगों में लारा दो लड़कों को जानती थी, एक तो निकी डुडरोव को और दूसरे पाशा आन्तिपोव को। निकी डुडरोव लारा की सहेली नाद्या का मित्र था और पाशा को उसने श्रीमती तिविरजिना के यहां देखा था। लारा पाशा की सरलता को बहुत पसन्द करती थी। इस समय उन्हें विद्रोहियों के साथ देखकर भी लारा उन्हें भले लड़के मानती थी। हड़ताल-संचालन के अपराध में जब से पाशा का पिता गिरफ्तार हुआ, तभी से वह श्रीमती तिविरजिना के यहां रहने लगा था। पहले कुछ

दिन तक वह अपनी बहरी चाची के पास अवश्य रहा था। पाशा अब हाई स्कूल में पढ़ता था।

जब सुरक्षा के लिए बनाई गई बाढ़ तोप से उड़ा दी गई और मकान संकट में पड़ गया तो गुइशार-परिवार ने मांटोग्रेवो के होटल में जाकर रहने की सोची। मकान की चाबी फियेट को दे दी गई; और वे आवश्यक सामान लेकर होटल की ओर चल पड़े, रास्ते में चौराहे पर उनकी तलाशी ली गई, और वे होटल में जाकर रहने लगे।

लारा यही सोचकर प्रसन्न हो रही थी कि जब तक शहर का सम्बन्ध ज़िले से टूटा हुआ है, कोमारोवस्की उन्हें परेशान नहीं कर सकता। मां की पैदा की हुई परिस्थितियों के कारण वह उससे न तो सम्बन्ध ही तोड़ सकती थी और न ही उसका वहां आना रोक सकती थी।

मामा निकोलाय पीटर्सबर्ग जाते समय यूरा को अपने सम्बन्धी ग्रोमेकोज़-परिवार में छोड़ गए थे। ग्रोमेकोज़-परिवार की अनुकूल परिस्थितियों का यूरा पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। जनवरी १९०६ की शाम को एक संगीत-गोष्ठी में एलेक्ज़ेंडर, यूरा और मिशा गोर्डन भी सम्मिलित हुए। यह संगीत-गोष्ठी संगीत-प्रेमी एलेक्ज़ेंडर ने स्वयं आयोजित की थी। गोष्ठी चल रही थी तभी उन्हें नौकरानी द्वारा समाचार मिला कि संगीतज्ञ की कोई सम्बन्धी महिला मरणासन्न अवस्था में पड़ी है। एलेक्ज़ेंडर मिशा और यूरा के साथ स्वयं होटल में उक्त महिला को देखने गए। संगीतज्ञ तिश्केविच महोदय की सम्बन्धी श्रीमती गुइशार ने आयोडिन ली थी और डाक्टर ने उन्हें वमनकारक औषध देकर ठीक करने की चेष्टा की थी। वहीं आरामकुर्सी पर लारा सो रही थी। जब कोमारोवस्की ने लैम्प टेबल पर रखा तब उसकी नींद उचट गई और वह आंखों ही आंखों में बातें करने लगी। यूरा लारा का सौन्दर्य देखकर बहुत ही प्रभावित हुआ। तभी मिशा ने यूरा को बताया कि कोमारोवस्की ही उसके (यूरा के) पिता के साथ रेल-यात्रा कर रहा था और उन्हें शराब पीने के लिए एक प्रकार से उसीने बाध्य किया था। मिशा ने कहा कि नशे में ही यूरा के पिता ने रेल से कूदकर आत्महत्या कर ली जिसका दायित्व कोमारोवस्की पर था। कुछ देर वहां रुकने के बाद ही एलेक्ज़ेंड्रोविच यूरा और मिशा के साथ लौट आए।

यूरा डाक्टरी पढ़ रहा था, टोन्या कानून, और मिशा दर्शनशास्त्र। सन् १९११ तक यूरा का व्यक्तित्व असाधारण रूप से प्रभावशाली हो गया था। जीवन के बारे में उसका दृष्टिकोण बहुत सुलझा हुआ था। वह वास्तविक कला के लिए मौलिकता को आवश्यक मानता था। इन दिनों तक उसके मामा निकोलाय की कई पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी थीं जिनका उसकी विचारधारा पर गहरा प्रभाव पड़ा। निकोलाय ने इतिहास को नवीन दृष्टि से देखा था। मृत्यु की चुनौती के रूप में समय और स्मृति के आधार पर उन्होंने मानव-द्वारा बनाई हुई नूतन सृष्टि की कल्पना की थी। यूरा ने डाक्टरी पढ़ते समय अपना समय आपरेशन के कमरे में तथा मुर्दाघर में भी बिताया था। उसने मृत्यु को निकट से देखा था। जीवन और मृत्यु के अनन्त रहस्य के सम्बन्ध में वह प्रायः सोचा करता। इन्हीं दिनों अन्ना के अस्वस्थ होने पर उसने उसे गसमसाते हुए कहा था—तुम्हारी

इस चेतना का क्या होगा ? दूसरे की चेतना की बात नहीं कह रहा हूं, कह रहा हूं, तुम्हारी अपनी चेतना की बात। तुम क्या हो ? यही तो समस्या का कठिन पक्ष है। सर्वप्रथम इसीका पता लगाना होगा। अपने सम्बन्ध में जानने की उत्सुकता क्या है ? शरीर के अवयव ? गुर्दे, हृदय, रक्तवाहिनी शिराएं ? नहीं। ये सब बाहरी वस्तु हैं। दूसरों के लिए, परिवार के लिए तुम्हारे जो काम हैं, वे ही तुम्हारे अस्तित्व के क्रियाशील प्रमाण हैं। इस प्रकार तुम्हारे प्राण दूसरों में प्रतिष्ठित हैं। इसी प्रकार दूसरों में तुम्हारी आत्मा सदैव अवस्थित रहती है। दूसरों में प्रतिष्ठित तुम्हारे ये प्राण ही चिरन्तन हैं।

लारा ने कोमारोवस्की से पीछा छुड़ाने के लिए कोलोग्रिवोव के यहां उसकी लड़की लीया की संरक्षिका के रूप में नौकरी कर ली थी। उसने तीन वर्ष तक वहां शांति से कार्य किया। तीन वर्ष पश्चात् उसका भाई रोड्या उससे मिलने आया।

रोड्या ने लारा से कहा कि उसने केडिट्स दल का सात सौ रूबल जुए में गंवा दिया है और यदि उसने समय पर धन जमा नहीं किया तो उसका सम्मान मिट्टी में मिल जाएगा। लारा के लिए इतने रूबल का प्रबन्ध करना कठिन था। रोड्या ने कहा कि यदि वह कोमारोवस्की से कहे तो वह प्रबन्ध कर सकता है। लारा कोमारोवस्की का नाम सुनकर बेचैन हो उठी। किसी भी दशा में वह उससे मिलना नहीं चाहती थी। कोलोग्रिवोव से रूबल लेकर उसने रोड्या को दे दिए। वह कोलोग्रिवोव के परिवार में एक सदस्य की भांति रहती थी।

लारा अपने पैसों में से कुछ राशि अपने पिता के पास साइबेरिया भेजा करती, किन्तु चुपके-चुपके मा की सहायता भी करती और इसके अलावा पाशा अन्तिपोव के खर्च का कुछ भाग भी दिया करती। पाशा वैसे लारा से आयु में कुछ छोटा ही था फिर भी लारा से बहुत प्रेम करता था। लारा चाहती थी कि दोनों ग्रेजुएट होकर विवाह कर लेंगे। विवाह के पश्चात् वह यूराल्स के किसी नगर में अध्यापन का कार्य करने और रहने की आकांक्षा रखती थी।

१६११ के क्रिसमस दिवस को लारा ने निश्चय कर लिया कि वह कोलोग्रिवोव को छोड़ देगी और कोमारोवस्की से बदला ले लेगी। अपने पैरों पर खड़े होने का उसका विचार इसलिए और पक्का हो गया था कि लीया, जिसकी वह संरक्षिका थी, अब बड़ी हो गई थी। अब लारा के संरक्षण की उसे आवश्यकता भी नहीं थी। दस्तानों में रोड्या का रिवाल्वर छिपाकर वह एक दिन कोमारोवस्की से मिलने चल दी। उसने सोच लिया था कि यदि कोमारोवस्की ने उसे ज़लील किया तो वह उसे गोली मार देगी। लारा को वह अपने घर नहीं मिला, क्योंकि वह क्रिसमस पार्टी में गया हुआ था। लारा वहां का पता लेकर चल पड़ी। मार्ग में पाशा का घर पड़ता था। वह पाशा के पास जा पहुंची। पाशा से उसने कहा—पाशा, मैं संकट में हूं। तुम्हें मेरी सहायता करनी होगी। डरो मत और मुझसे प्रश्न भी मत पूछो। मैं सचमुच भयंकर संकट में हूं। यदि तुम मुझे प्रेम करते हो और चाहते हो कि मेरा सर्वनाश न हो तो विवाह की बात को टालो मत। पाशा किसी भी समय विवाह करने को तैयार था। उसने स्वीकृति दे दी। तत्पश्चात् स्विटटस्की की क्रिसमस-पार्टी में लारा ने कोमारोवस्की पर गोली चलाई, किन्तु उसके लगी नहीं।

दिन तक वह अपनी बड़ी भाभी के पास अवश्य रहा था। पाशा अब हाई स्कूल में पढ़ता था।

जब सुरक्षा के लिए बनाई गई बाड़ तोप से उड़ा दी गई और मकान संकट में पड़ गया तो गुइशार-परिवार ने मांटेनेग्रो के होटल में जाकर रहने की सोची। मकान की चाबी फिलेट को दे दी गई, और वे आवश्यक सामान लेकर होटल की ओर चल पड़े, रास्ते में चौराहे पर उनकी तलाशी ली गई, और वे होटल में जाकर रहने लगे।

लारा यही सोचकर प्रसन्न हो रही थी कि जब तक शहर का सम्बन्ध किले से टूटा हुआ है, कोमारोवस्की उन्हें परेशान नहीं कर सकता। मां की पैदा की हुई परिस्थितियों के कारण वह उससे न तो सम्बन्ध ही तोड़ सकती थी और न ही उसका वहां आना रोक सकती थी।

मामा निकोलाय पीटर्सबर्ग जाते समय यूरा को अपने सम्बन्धी ग्रोमेको-परिवार में छोड़ गए थे। ग्रोमेको-परिवार की अनुकूल परिस्थितियों का यूरा पर बहुत अ प्रभाव पड़ा। जनवरी १९०६ की शाम को एक संगीत-गोष्ठी में एलेक्जेंडर, यूरा ३ मिशा गोर्डन भी सम्मिलित हुए। यह संगीत-गोष्ठी संगीत-प्रेमी एलेक्जेंडर ने स्वयं आ जित की थी। गोष्ठी चल रही थी तभी उन्हें नौकरानी द्वारा समाचार मिला कि मकी की कोई सम्बन्धी महिला मरणासन्न अवस्था में पड़ी है। एलेक्जेंडर मिशा और यूरा साथ स्वयं होटल में उक्त महिला को देखने गए। संगीतज्ञ त्रिशकेविच महोदय की सम्ब श्रीमती गुइशार ने आयोडिन ली थी और डाक्टर ने उन्हें वमनकारक औषध देकर ठी करने की चेष्टा की थी। वहीं आरामकुर्सी पर लारा सो रही थी। जब कोमारोवस्की लैम्प टेबल पर रखा तब उसकी नींद उचट गई और वह आंखों ही आंखों में बातें कर लगी। यूरा लारा का सौन्दर्य देखकर बहुत ही प्रभावित हुआ। तभी मिशा ने यूरा क बताया कि कोमारोवस्की ही उसके (यूरा के) पिता के साथ रेल-यात्रा कर रहा था औ उन्हें शराब पीने के लिए एक प्रकार से उसीने बाध्य किया था। मिशा ने कहा कि नशे ं ही यूरा के पिता ने रेल से कूदकर आत्महत्या कर ली जिसका दायित्व कोमारोवस्क पर था। कुछ देर वहां रुकने के बाद ही एलेक्जेंड्रोविच यूरा और मिशा के साथ लौट आए।

यूरा डाक्टरी पढ़ रहा था, टोन्या कानून, और मिशा दर्शनशास्त्र। सन् १९११ तक यूरा का व्यक्तित्व असाधारण रूप से प्रभावशाली हो गया था। जीवन के बारे में उसका दृष्टिकोण बहुत सुलझा हुआ था। वह वास्तविक कला के लिए मौलिकता को आवश्यक मानता था। इन दिनों तक उसके मामा निकोलाय की कई पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी थीं जिनका उसकी विचारधारा पर गहरा प्रभाव पड़ा। निकोलाय ने विश्व-इतिहास को नवीन दृष्टि से देखा था। मृत्यु को चुनौती के रूप में समय और स्मृति के आधार पर उन्होंने मानव-द्वारा बनाई हुई नूतन सृष्टि की कल्पना की थी। यूरा ने डाक्टरी पढ़ते समय अपना समय आपरेशन के कमरे में तथा मुर्दाघर में भी बिताया था। उसने मृत्यु को निकट से देखा था। जीवन और मृत्यु के अनन्त रहस्य के सम्बन्ध में वह प्रायः सोचा करता। इन्हीं दिनों अन्ना के अस्वस्थ होने पर उसने उसे समझाते हुए कहा था—तुम्हारी

इस चेतना का क्या होगा ? दूसरे की चेतना की बात नहीं कह रहा हूं, कह रहा हूं, तुम्हारी अपनी चेतना की बात। तुम क्या हो ? यही तो समस्या का कठिन पक्ष है। सर्वप्रथम इसीका पता लगाना होगा। अपने सम्बन्ध में जानने की उत्सुकता क्या है ? शरीर के अवयव ? गुर्दे, हृदय, रक्तवाहिनी शिराएं ? नहीं। ये सब बाहरी वस्तु हैं। दूसरों के लिए, परिवार के लिए तुम्हारे जो काम हैं, वे ही तुम्हारे अस्तित्व के क्रियाशील प्रमाण हैं। इस प्रकार तुम्हारे प्राण दूसरों मे प्रतिष्ठित हैं। इसी प्रकार दूसरों में तुम्हारी आत्मा सदैव अवस्थित रहती है। दूसरों में प्रतिष्ठित तुम्हारे ये प्राण ही चिरन्तन हैं।

लारा ने कोमारोवस्की से पीछा छुड़ाने के लिए कोलोग्रिवोव के यहां उसकी लड़की लीया की संरक्षिका के रूप में नौकरी कर ली थी। उसने तीन वर्ष तक वहां शांति से कार्य किया। तीन वर्ष पश्चात् उसका भाई रोड्या उससे मिलने आया।

रोड्या ने लारा से कहा कि उसने केडिट्स दल का सात सौ रूबल जुए में गवा दिया है और यदि उसने समय पर धन जमा नहीं किया तो उसका सम्मान मिट्टी मे मिल जाएगा। लारा के लिए इतने रूबल का प्रबन्ध करना कठिन था। रोड्या ने कहा कि यदि वह कोमारोवस्की से कहे तो वह प्रबन्ध कर सकता है। लारा कोमारोवस्की का नाम सुनकर बेचैन हो उठी। किसी भी दशा में वह उससे मिलना नहीं चाहती थी। कोलोग्रिवोव से रूबल लेकर उसने रोड्या को दे दिए। वह कोलोग्रिवोव के परिवार में एक सदस्य की भांति रहती थी।

लारा अपने पैसों मे से कुछ राशि अपने पिता के पास साइबेरिया भेजा करती, किन्तु चुपके-चुपके मां की सहायता भी करती और इसके अलावा पाशा अन्तिपोव के खर्च का कुछ भाग भी दिया करती। पाशा वैसे लारा से आयु मे कुछ छोटा ही था फिर भी लारा से बहुत प्रेम करता था। लारा चाहती थी कि दोनों ग्रेजुएट होकर विवाह कर लेंगे। विवाह के पश्चात् वह यूराल्स के किसी नगर में अध्यापन का कार्य करने और रहने की आकांक्षा रखती थी।

१६११ के क्रिसमस दिवस को लारा ने निश्चय कर लिया कि वह कोलोग्रिवोव को छोड़ देगी और कोमारोवस्की से बदला ले लेगी। अपने पैरों पर खड़े होने का उसका विचार इसलिए और पक्का हो गया था कि लीया, जिसकी वह संरक्षिका थी, अब बड़ी हो गई थी। अब लारा के संरक्षण की उसे आवश्यकता भी नहीं थी। दस्तानों मे रोड्या का रिवाल्वर छिपाकर वह एक दिन कोमारोवस्की से मिलने चल दी। उसने सोच लिया था कि यदि कोमारोवस्की ने उसे जलील किया तो वह उसे गोली मार देगी। लारा को वह अपने घर नहीं मिला, क्योंकि वह क्रिसमस पार्टी में गया हुआ था। लारा वहां का पता लेकर चल पड़ी। मार्ग में पाशा का घर पड़ता था। वह पाशा के पास जा पहुंची। पाशा से उसने कहा—पाशा, मैं सकट मे हूं। तुम्हें मेरी सहायता करनी होगी। डरो मत और मुझसे प्रश्न भी मत पूछो। मैं सचमुच भयकर सकट में हूं। यदि तुम मुझे प्रेम करते हो और चाहते हो कि मेरा सर्वनाश न हो तो विवाह की बात को टालो मत। पाशा किसी भी समय विवाह करने को तैयार था। उसने स्वीकृति दे दी। तत्पश्चात् स्विटटस्की की क्रिसमस-पार्टी में लारा ने कोमारोवस्की पर गोली चलाई, किन्तु उसके लगी नहीं।

कोर्नाकोव नामक व्यक्ति के हाथ में उससे थोड़ी-सी खरोंच आ गई। यूरा भी वहां उपस्थित था। इस अवसर पर लारा को उसने दूसरी बार देखा था। लारा कुछ देर बाद ही मूर्च्छित हो गई थी और लोगों ने उसे आरामकुर्सी पर लिटा दिया था। इस घटना को लेकर पुलिस भी चक्कर लगाने लगी थी। कोमारोवस्की ने सार्जेण्ट से मिलकर मामले को समाप्त करने का प्रयास किया। लारा ज्वर के कारण बेहोश थी। इस घटना से कोमारोवस्की और लारा को लेकर कई अफवाहें फैल रही थीं। कोमारोवस्की उन्हें बढ़ने देना नहीं चाहता था। कोलोग्रिवोव अस्वस्थ लारा से मिलने आए थे और उसके रहने के लिए उन्होंने स्थान की व्यवस्था भी कर दी थी। लारा को वह हज़ार रूबल का चैक भी दे गए थे। पाशा बहुत दुःखी था। लारा से वह अत्यधिक प्रेम करता था, फिर भी उसे ऐसा लगता कि लारा ने पाप किया है।

ग्रेजुएट होने के पश्चात् लारा और पाशा का विवाह हो गया। दोनों ही अपनी-अपनी परीक्षाओं में सफल रहे थे। यूराल्स के एक नगर में उन्हें नौकरी भी मिल गई और वे दोनों वहां चले गए। युर्यातिन में पाशा और लारा चार साल तक व्यवस्थित रूप से रहे। इस बीच उनकी कन्या कात्या तीन साल की हो गई थी। लारा कात्या का ध्यान रखने के अतिरिक्त कन्या-विद्यालय में पढ़ाती भी थी। लारा युर्यातिन में ही उत्पन्न हुई थी, इसलिए उसे वहां के सीधे-सादे लोग अच्छे लगते थे। पाशा उन्हें आचारहीन और पिछड़ा हुआ मानता था। वह उनके सम्पर्क से ऊब उठा था। इन दिनों उसने बहुत पढ़ा था। लैटिन और प्राचीन इतिहास पढ़ाने पर भी वह शरीरशास्त्र और गणित का अध्ययन कर चुका था। अब वह विज्ञान में डिग्री लेकर उसी विभाग में स्थानान्तरण करवाना चाहता था। वह तो चाहता था कि वहीं से परिवार के साथ पीटर्सबर्ग चला जाए परन्तु लारा उन्हीं लोगों में लुब्ध थी। अन्त में पाशा लारा के प्रेम से ऊब-सा गया। वह उसके प्यार में मातृत्व अधिक पाता था। पाशा हाई स्कूल की नौकरी छोड़कर ओमस्क के मिलिट्री ट्रेनिंग स्कूल का नियुक्ति-पत्र प्राप्त करते ही साइबेरिया चला गया। वहां से लारा को प्रेम-भरे पत्र लिखा करता, किन्तु जब वह गया था तो लारा के रोकने पर वह रुका नहीं था, क्योंकि वह उकता चुका था। पाशा अब किसी तरह घर जाने की छुट्टी लेना चाहता था, उसे लारा और कात्या की याद आती थी। संकटकाल में उसे सेना के आगे झण्डा लेकर चलने का काम मिला था। कुछ दिन तक तो वहां से भी लारा के पास उसके पत्र आते रहे परन्तु फिर बन्द हो गए। लारा पत्र न मिलने से चिन्तित हो उठी। उसने नर्स की ट्रेनिंग ली और कात्या को मास्को में लीपा के पास छोड़कर रक्तदान की एक रेल से युद्धक्षेत्र के निकट के एक गांव में जा पहुंची।

यूरा, जिसे अब डाक्टर जिवागो के नाम से जानते थे, उसी क्षेत्र में घायलों का उपचार करता था। उसे इसीलिए मास्को से बुलाया गया था। मिशा गोर्डन उससे मिलने गया और एक सप्ताह तक वहीं रहा। जब मिशा को विदा करके जिवागो लौट रहा था तभी उसके पैर में बम का टुकड़ा लगा और वह बेहोश हो गया। वास्तव में वह गांव युद्ध-क्षेत्र के अत्यधिक निकट था। जिवागो को एक छोटे-से अस्पताल में ले जाया गया और अधिकारियों के वार्ड में रखा गया। यहीं से हैड क्वार्टर पास ही था। लारा

इसी अस्पताल में नर्स का काम करने लगी थी। वह मरीज़ों से बहुत अच्छा व्यवहार करती थी। वहीं गल्युलिन ने उसे बताया : पाशा की मृत्यु बम फट जाने से हो गई है और उसका सामान मेरे पास तुम्हें देने के लिए सुरक्षित रखा है।...पाशा की मृत्यु का समाचार सुनकर लारा बेहोश होने को हुई किन्तु उसने अपने-आपको संभाल लिया। इन्हीं दिनों ज़िवागो को मास्को से सूचना मिली कि डुडरोव और गोर्डन ने उसकी पुस्तक प्रकाशित कर दी है और एक महान साहित्यिक कृति के रूप में उसका सम्मान हुआ है। उसे यह समाचार भी मिला कि मास्को की जनता में असन्तोष बढ़ता जा रहा है। कुछ दिनों में मेल्यूज़ेवो में अस्पताल आ गया और ज़िवागो तथा लारा वहां साथ-साथ काम करने लगे। ज़िवागो सेना की टुकड़ियों को देखने भी जाया करता था। उसने अपनी पत्नी टोन्या को लिखा कि वह कुछ ही दिन में आनेवाला है। ज़ेबुश़िनो में गणतन्त्र समाप्त हो गया तब भी मेल्यूज़ेवो की क्रान्तिकारी समिति का ज़िले-भर में प्रभाव था। डा० ज़िवागो मास्को लौटने के लिए आज्ञा-पत्र लेने का प्रयास कर रहा था। आखिर मेडमेज़िल ने डा० ज़िवागो को मास्को जानेवाली रेल में व्यवस्था करा दी और वह वहां से विदा हुआ।

गाड़ी सशस्त्र पहरे में जा रही थी। ज़िवागो सोच रहा था कि रूस में अशान्ति बढ़ती जा रही है, उत्तेजना के स्वर ऊंचे उठ रहे हैं, क्रान्ति का सन्देश चारों ओर व्याप्त हो रहा है। जब ज़िवागो रेल में यात्रा कर रहा था तभी उसके सहयात्री पागोरेवाकिल ने उसे एक बत्तख भेंट की। उन दिनों मास्को में बत्तख मिलना कठिन था। ज़िवागो निरन्तर रूस की स्थिति के सम्बन्ध में सोच रहा था। उसे प्रतीत होता था कि असाधारण परिवर्तन होनेवाला है। जब उसकी टैक्सी स्मालेस्काय के चौराहे से गुज़री तो उसने लोगों को कागज़ी फूल, कॉफी छानने की चलनी, सीटियां, रोटियों के नुकीले टुकड़े और मोटा तम्बाकू बेचते देखा। चारों ओर लगे हुए पोस्टरों को देखकर उसे बहुत आश्चर्य हुआ मकान आने पर ज़िवागो ने टैक्सी रुकवाई और बन्द दरवाज़े की घंटी बजाई। टोन्या ने आकर दरवाज़ा खोला। वह उसे देखकर स्तब्ध रह गई। ज़िवागो बिना सूचना दिए ही आ गया था। कुछ देर में ही दोनों एक-दूसरे से प्रश्न पूछने लगे। ज़िवागो ने अपने लड़के साशा के बारे में पूछा, मित्रों के सम्बन्ध में और नौकरों के सम्बन्ध में। साशा अच्छा था, और टोन्या ने बताया कि उसके पिताजी संसद् में सदस्य भेजनेवाली काउन्सिल के अध्यक्ष हो गए हैं। टोन्या ने बताया कि लोगों के कथनानुसार आगामी सर्दियों में वहां अकाल पड़ेगा। इसपर ज़िवागो ने कहा कि वह टोन्या को तो सुरक्षित रूप से फिनलैंड भेज देना चाहता है और स्वयं मास्को में ही रहेगा। तभी टोन्या ने ज़िवागो को बताया कि उसके मामा निकोलाय निकोलायविच बोल्शेविक हो गए हैं। ज़िवागो अपने लड़के साशा को बहुत प्रेम करता था। जब साशा पैदा हुआ था तभी ज़िवागो को युद्ध-क्षेत्र में बुलाया गया था। टोन्या द्वारा भेजे गए चित्रों में ही उसने साशा को अच्छी तरह देखा था। अब उसे देखकर ज़िवागो बहुत प्रसन्न हुआ। ज़िवागो ने अपने मित्रों को बहुत बदला हुआ पाया। ऐसा लगता जैसे किसीका अपना व्यक्तिगत दृष्टिकोण हो ही नहीं। कुछ दिनों पश्चात् ही वोदका और बत्तख की दावत का आयोजन किया गया। गोर्डन एक दवा की बोतल में

थोरबाजार से पोदका से आया था। दावत में लोगों को बेचैनी अनुभव हो रही थी। शायद ही मास्को के किसी घर में इस तरह ही दावत हो रही हो। संध्या समय दावत में कोल्या मामा के आ जाने से रौनक आ गई। रात को यूरा स्त्रिलनिगर आ गई। डा० जिवागो ने भी और लोगों की तरह शराब पी, जिससे उसका सिर चकराने लगा। इसी अवस्था में वह एक टेबल के किनारे खड़ा होकर भाषण देने लगा। सभी लोगों ने तालियां बजाई।

मास्को में जिवागो हालीग्राम के अस्पताल में काम करने लगा था। उसने देखा कि यहां के कर्मचारी विभिन्न दलों में बंट गए थे। जिवागो को न तो मध्यवर्गवाले लोग अपना मानते थे और न राजनीति में आगे बढ़े हुए लोग ही। फिर भी वह अपने काम में जुटा रहता। आंकड़ा-संकलन-विभाग का कार्य भी डायरेक्टर ने जिवागो को सौंप दिया था। इस सब काम के अतिरिक्त वह साहित्य-सृजन का कार्य भी करता रहता। अक्तूबर-युद्ध के कुछ ही दिनों पश्चात् एक रात सिल्वर स्ट्रीट को पार करनेवाली गली में जिवागो को एक आदमी मूर्च्छित अवस्था में पड़ा हुआ मिला। जिवागो उसे संकटकालीन वार्ड में ले गया और उपचार किया। कई वर्ष बाद इसी व्यक्ति ने, जो कि प्रसिद्ध नेता था, जिवागो की रक्षा की।

शीतकाल में जिवागो का परिवार मकान की ऊपरी मंजिल के तीन कमरों में आ गया था। मास्को में ईंधन और भोजन-सामग्री मिलना असम्भव-सा हो गया था। रविवार के दिन जिवागो छुट्टी पर था। स्टोव जल रहा था तभी निकोलाय निकोलायविच उनके यहां आ गए। आते ही उन्होंने कहा—"अस्थायी सरकार के लिए नौसिखिये सैनिक बोल्शेविकों की सहायता में दुर्ग-रक्षक सैनिकों के साथ लड़ रहे हैं। विप्लव के इन सूत्रों की गणना नहीं की जा सकती। आते समय फंस गया था। पहली बार ड्रिमिट्रोवका के कोने में और बाद में निकित्सी गेट पर। सीधे आना-जाना कठिन हो गया है। घूमकर आना पड़ता है। कोट पहनो और बाहर आओ यूरा, देखो यह इतिहास है। जीवन में एक बार ही इसे देखने का अवसर मिलता है।" इसी समय गोर्डन आया और उसने भी इसी प्रकार के समाचार सुनाए। उसने बताया कि बन्दूकों की गोलियां चारों ओर चल रही थीं और यातायात बन्द हो गया था। निकोलाय को पहले तो गोर्डन की बातों पर विश्वास नहीं हुआ परन्तु बाहर देखकर लौटे तो बोले कि गोर्डन ठीक कह रहा था। इसी सप्ताह साशा को सर्दी लग गई थी और टान्सिल सूज गए थे इसलिए वह पीड़ा से व्याकुल था। उसे दूध की आवश्यकता थी किन्तु घर से बाहर जाना सम्भव नहीं था। ऐसी स्थिति में दूध मिलना भी कठिन था। तीन दिन तक निकोलाय निकोलायविच और गोर्डन को जिवागो के घर में ही रहना पड़ा। बाद में भी लोग आसपास से रोटी खरीद लाते थे परन्तु शहर में शान्ति स्थापित नहीं हुई थी। एक सन्ध्या को जिवागो ने सड़क पर भागते हुए अखबारवाले लड़के से एक अखबार खरीदा, जिसमें राजकीय घोषणा थी कि सोवियत पीपल्स कमीसार संघटित हो चुका है और सोवियत शक्ति तथा प्रोलेतेरियन समाज की तानाशाही रूस में स्थापित हो गई है। अस्पताल में पर्याप्त वेतन नहीं मिलता था इसलिए जिवागो के बहुत-से साथियों ने काम छोड़ दिया था, किन्तु वह काम करता रहा। ईंधन

और भोजन-सामग्री की कमी के कारण उनका काम और भी कठिनता से चलता था। एक बार तो टोन्या ने अपनी कांच की अलमारी के बदले में लकड़ियां गिरवाई थी। जब जिवागो को टायफस हुआ तब तो उनका काम चलना कठिन ही नहीं असम्भव हो गया था। इन दिनों जिवागो-परिवार भूखों मरने लगा था। काफी दिन तक जिवागो बीमार पड़ा रहा। इस बीच उसके सौतेले भाई युवग्राफ ने परिवार की सहायता की थी। वह टोन्या से यह भी कह गया था कि एक-दो वर्ष के लिए उन्हें शहर से बाहर की ओर चला जाना चाहिए।

उस वर्ष अप्रैल के महीने में जिवागो-परिवार युर्यातिन शहर के पास वैरिकिनी इस्टेट को चल पड़ा। उन्हें अपने पुराने मैनेजर मिकुलिस्सिन का बहुत भरोसा था। जिवागो तो इस स्थिति मे जाने को तैयार भी नहीं था किन्तु टोन्या के कहने पर वह मान गया। एक गाड़ी मे बैठकर वे स्टेशन पहुचे। जैसे-तैसे उन्हें २३ डिब्बोंवाली गाड़ी मे स्थान मिल गया। उस समय गाड़ी मे ५०० यात्री थे। एक स्टेशन पर गांव की एक औरत से तौलिये के बदले में टोन्या ने पकाए हुए खरगोश का आधा भाग लिया। उसी स्टेशन पर एक सशस्त्र व्यक्ति ने एक बुढ़िया से दूध और कचौड़ियां लीं और खा गया। उस व्यक्ति ने बुढ़िया को बदले में कुछ भी नहीं दिया जिससे वह चीखने लगी। जब गाडी मध्य रूस से आगे बढ़ी तो और भी विचित्र घटनाएं देखने में आईं। वहां सशस्त्र सैनिकों की टुकड़ियां पडी हुई थी और गावों की क्रान्तियों को कुचल दिया गया था। वहां का वातावरण अशान्त था। गाडी बीच मे कहीं भी खड़ी हो सकती थी और सुरक्षा के लिए नियुक्त सैनिक यात्रियों के कागजात का निरीक्षण कर लिया करते थे। एक दिन इसी प्रकार गाड़ी के रुकने पर जब कोई व्यक्ति नहीं आया तो जिवागो बाहर निकल आया। उसे दूसरे यात्रियों से मालूम हुआ कि ड्राइवर ने इस अशान्त क्षेत्र मे और आगे गाड़ी ले जाने से मना कर दिया है। ड्राइवर ने भागने की कोशिश की, किन्तु नौ-सैनिकों ने उसे गाड़ी चलाने को विवश कर दिया। धीमी गति से फिर गाड़ी आगे बढ चली। रास्ते में लोवर केल्मिश स्टेशन मिला जिसके अब खण्डहर ही बचे थे। स्टेशन के पास का गाव भी खण्डहर जैसा था और उस पर बर्फ की चादर बिछी हुई थी। स्टेशन-मास्टर ने गार्ड को बताया कि गांववालो के अपराध के कारण ही गांव और स्टेशन की यह दशा हुई। उन्होंने निर्धन किसानों की कमेटी को भंग कर दिया था और लाल सेना को घोड़े नहीं दिए थे, इसीलिए स्ट्रेलनिकोव ने इसे नष्ट कर दिया। स्टेशन-मास्टर ने बताया कि सशस्त्र रेल-गाड़ी से उनपर गोली चलाई गई। उसने उसे यह भी कहा कि लाइन पर बर्फ जमी हुई है इसलिए आगे बढना कठिन है। तीन दिन तक यात्री लाइन पर से बर्फ हटाते रहे तब जाकर गाडी आगे बढ़ी। युर्यातिन शहर के औद्योगिक उपनगर रेजविल्या स्टेशन पर खड़े हुए गाडी के कुछ डिब्बो का उपयोग फौजी कार्यालय के रूप में किया जा रहा था। वहीं फौजी प्रधान स्ट्रेलनिकोव रहता था। डा० जिवागो वाली गाड़ी जब उस स्टेशन पर रुकी और घुटन के कारण सोना कठिन हो गया तो वह स्टेशन की ओर चल दिया। बीच में ही उसे संतरी ने पकड़ लिया और स्ट्रेलनिकोव के पास ले आया। स्ट्रेलनिकोव ने उसके कागजात देखकर कहा कि उसे गलती से पकड़ लिया गया था। स्ट्रेलनिकोव ने जिवागो से पूछा कि ऐसी

अशान्ति के समय में वह मास्को छोड़कर वेरिकिनो क्यों जा रहा था; तो उसने उत्तर दिया, "अनिश्चित भविष्य की शान्ति और आराम की खोज में।" इसके पश्चात् स्ट्रेलिनिकोव ने संतरी के संरक्षण में उसे उसके डिब्बे में भेज दिया। संतरी ताम्बोव के निकट मारजास्क का निवासी था। उसने ज़िवागो से कहा, "आह, कामरेड डाक्टर, यदि यह गृहयुद्ध न होता, *क्रान्ति के विपरीत आक्रमण न होता तो मैं यहां थोड़े ही होता? इस अपरिचित* प्रदेश में अपना समय थोड़े नष्ट करता। देखें, क्या परिणाम होता है!"

जैसे ही ज़िवागो डिब्बे में पहुंचा, टोन्या ने नये यात्रियों से उसका परिचय कराया। उनमें सामदेवयातोव भी था। गाड़ी चली तो वह ज़िवागो से अपने और उस प्रदेश के सम्बन्ध में बातें करता रहा। उसने ज़िवागो को मिकुलित्सिन की कहानी सुनाई। साथ ही उसने मिकुलित्सिन के लड़के लिवेरियस के सम्बन्ध में भी बताया। अब वह कामरेड फोरेस्टर के नाम से प्रसिद्ध था और क्रान्तिकारियों की सहायक सेना का नायक था। यह सेना 'वन्य बन्धुत्व' के नाम से प्रसिद्ध थी। अपना स्टेशन आने पर सामदेवयातोव तो उतर *गया और जाते-जाते उन्हें बता गया कि अगले स्टेशन पर उन्हें उतरना है। तोर्फयानाया स्टेशन पर ज़िवागो-परिवार उतर गया। सामदेवयातोव ने सकमा से* टेलीफोन करके वहां के स्टेशन-मास्टर को कह दिया था कि वह ज़िवागो-परिवार की सहायता करे। स्टेशन-मास्टर ने उनके लिए घोड़ा-गाड़ी का प्रबन्ध कर दिया था। उसने टोन्या को परामर्श दिया कि वह किसीसे, क्रोइगर से, अपने सम्बन्ध के बारे में बातें करे तो सावधानी *बरते। किसी नये मित्र पर विश्वास कर लेना इस समय उचित नहीं।* रास्ते में गाड़ी-चालक मेखोनोसिन ने उन्हें मिकुलित्सिन के बारे में बहुत कुछ बताया। उसने लिवेरियस की बातें भी कीं। एक पहाड़ी के दूसरी ओर मिकुलित्सिन रहता था। नीचे की ओर एक जलमार्ग था जिसे शुत्मा कहते थे। मिकुलित्सिन उन्हें मैनेजर के मकान के सामने *मिला। बन्द कारखानों और भागे हुए कामगारोंवाले इस गांव में वह अकेला ही* रहता था। पहले तो ज़िवागो-परिवार के सामने अपनी कठिनाइयां बताईं किन्तु बाद में उसने उनके रहने का प्रबन्ध कर दिया। उसने यह भी बताया कि स्ट्रेलिनिकोव वास्तव में पाशा आन्तिपाव ही है। वह मरा नहीं था।

कुछ दिनों पश्चात् ही लोग डाक्टर ज़िवागो के पास आने लगे। उसे फीस के रूप में मुर्गी, अंडे और मक्खन दे जाते थे जिन्हें वह अस्वीकार नहीं करता था। एक प्रकार से यूरा की प्रैक्टिस चलने लगी थी। इन दिनों उसे जब भी अवकाश मिलता वह डायरी भी लिखता।

उन दिनों अपने जीवन के सम्बन्ध में यूरा ने डायरी में स्पष्ट लिखा था—"हम जीर्ण-शीर्ण मकान के पिछले भाग में स्थित लकड़ी के बने दो कमरोंवाले घर में रह रहे हैं। अन्ना की बाल्यावस्था में क्रूइगर इन घरों का उपयोग विशिष्ट घरेलू *काम के लिए करता था। हमने इसकी भली प्रकार मरम्मत कर दी है। योग्य परामर्शदाताओं के परा-*मर्श पर दो चूल्हों का पुनर्निर्माण हुआ। धुआं निकलने के मार्ग का भी पुनरुद्धार किया गया है। अब वह अधिक गर्मी देते हैं। शरदऋतु ने तो सभी कुछ नष्ट कर दिया है। जो ... हैं······"

बसन्त ऋतु के प्रारम्भ में एक दिन यूरा ने लिखा—मुझे भली प्रकार ज्ञात हो गया है कि टोन्या गर्भवती है। जब मैंने उसे कहा तो उसे विश्वास नहीं हुआ। प्रारम्भिक लक्षण स्पष्ट हैं। इसे प्रभावित करनेवाले बाद के लक्षणों की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं। ऐसे अवसर पर स्त्री का चेहरा बदलने लगता है। मेरा तात्पर्य यह नहीं कि उसका चेहरा रूखा दिखाई पड़ने लगता है.......।

फिर एक दिन लिखा—दम फूल जाता है। कण्ठ-नली में खिचाव-सा अनुभव होता है जैसे गले मे कोई चीज अटक गई हो। ये बुरे लक्षण हैं। यही हृदय-रोग का प्रारम्भ है। वंशानुगत, मातृपक्ष की परम्परा की यह प्रारम्भिक चुनौती है। जीवन-भर मां का हृदय दुर्बल ही रहा। क्या यही है वह ? और इतने शीघ्र यदि ऐसी बात है तो अधिक दिन जीने की आशा नहीं की जा सकती...। ठीक होने पर यहां के पुस्तकालय में जाकर इस क्षेत्र के मानवजाति-शास्त्र का अध्ययन करूंगा। यहां के लोगों का कहना है कि यह बहुत ही बढ़िया पुस्तकालय है, और इसे अनेक महत्त्वपूर्ण दान मिल चुके हैं।...एक डाक्टर अथवा किसान के रूप में मैं एक उपयोगी व्यक्ति बनना चाहता हू। साथ ही किसी मौलिक कृति का निर्माण भी करना चाहता हूं। कर सकू तो कला अथवा विज्ञान को कोई अभिनव देन देना चाहता हू। इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति फास्ट की भांति, प्रत्येक प्रकार के अनुभवों के सम्पर्क में आता है और उन्हे प्रकट करने की क्षमता रखता है।...आदि।

इन दिनो ज़िवागो-परिवार की सामदेवयातोव ने बहुत सहायता की। वह उन्हें आवश्यक वस्तुएं दे जाता था। एक दिन अचानक ज़िवागो का सौतेला भाई युवग्राफ यहां आया। उसे देखकर सभी ने आश्चर्य प्रकट किया। वह उनके साथ पन्द्रह दिन तक वहीं रहा। कभी-कभी वह युर्यातिन जाता था। ज़िवागो को लगता था कि युवग्राफ सामदेवयातोव से भी अधिक प्रभावशाली व्यक्ति है।

एक दिन ज़िवागो युर्यातिन के पुस्तकालय में पुस्तकें देख रहा था, तभी उसे लारा दिखाई पड़ी। उसे देखते ही उसे मल्यूजेवो की घटनाएं स्मरण हो आईं। लारा पढ़ रही थी इसलिए वह भी अध्ययन में लग गया। जब उसने अध्ययन समाप्त किया, लारा जा चुकी थी। लारा द्वारा लौटाई गई पुस्तकों पर लगे हुए आदेशपत्र पर लिखे पते को ज़िवागो ने लिख लिया। मई के प्रारम्भ में एक दिन वह पुस्तकालय में अध्ययन करके और शहर में अपना काम समाप्त करके लौट रहा था तभी उसने सोचा कि लारा से मिल लें। वह लारा के घर के पास पहुचा तो उसने देखा लारा कुएं से पानी भरकर आ रही थी। वह उसे अपने घर लिवा ले गई। वह एक पुराने मकान में रहती थी जिसकी दीवार में दरारें पड़ गई थीं। गोलाबारी का उस मकान पर भी प्रभाव पड़ा था। लारा ने उसे एक दरार दिखाकर कहा कि यदि वह कभी उसकी अनुपस्थिति मे आए तो वहां से ताली निकालकर कमरे में बैठ जाए। लारा की सरलता पर यूरा मुग्ध था। लारा ने उसे बताया कि स्ट्रेलिनिकोव उसका पति पाशा आन्तिपोव ही है और उसीकी खोज में वह युद्ध-क्षेत्र में गई थी। उसने यह बता दिया स्ट्रेलिनिकोव पाशा का बनावटी नाम है। वह क्रियाशील क्रान्तिकारी था इसीलिए ही अपना वास्तविक नाम प्रकट करना नहीं चाहता था। लारा ने ज़िवागो को बताया कि स्ट्रेलिनिकोव इस समय साइबेरिया में है और युद्ध कर रहा है।

उसपर लगाए जानेवाले आरोपों की बात भी उसने बताई।

ज़िवागो लारा से प्रेम करता था, किन्तु टोन्या के प्रति विश्वासघात भी नहीं करना चाहता था। वह टोन्या के प्रति श्रद्धावान था। अब भी वह लारा के यहां आता था। एक रात उसने लारा के यहां ही बिताई और घर यह कहा कि आवश्यक काम से सामदेव-यातोव की सराय में रहना पड़ा। कभी-कभी तो वह सब बातें टोन्या से कहकर क्षमा मांगने की सोचता।

एक दिन ज़िवागो शहर से लौट रहा था, तभी रास्ते में उसे तीन सवारों ने घेर लिया। मिकुलित्सिन के पुत्र लिबेरियस के मुख्य सम्पर्क-अधिकारी ने उससे कहा—"कामरेड डाक्टर, बिलकुल मत हिलो। आदेश मानने पर तुम बिलकुल सुरक्षित रहोगे। नहीं तो बिना अपराध ही तुम्हें गोली मार दी जाएगी। हमारी टुकड़ी का डाक्टर मारा है। तुम्हें हम डाक्टर के रूप में भर्ती करते हैं। नीचे उतर जाओ, घोड़े की लगाम इस युवक के हाथ में दे दो।···" विवश होकर ज़िवागो को उनके साथ जाना पड़ा। सपक्षियों के दल का नेता लिबेरियस मिकुलित्सिन था। उसे ज़िवागो का साथ बहुत पसन्द था, किन्तु ज़िवागो अपने परिवार की चिन्ता करता रहता। उनके बीच रहते हुए ज़िवागो को दो वर्ष के लगभग बीत चुके थे। श्वेतदल के विरोध के बावजूद सपक्षियों की शक्ति बढ़ती जा रही थी। यूरी के दो सहायक थे—करेंजी लैंजोस और क्रोट एन्जेलर। बहुत-से अनुभवी चपरासी भी उसकी सहायता के लिए नियुक्त किए गए थे। श्वेतदल और सपक्षियों की मुठभेड के समय घायलों का उपचार करना ज़िवागो का प्रमुख कार्य था। वह चपरासियों से घायलों को स्ट्रेचरों पर रखवाता और उनका उपचार करता था। बीमारों का इलाज भी वही करता था। जब रूस अक्तूबर-क्रांति से गुज़र रहा था, ज़िवागो सपक्षियों का बन्दी था। कई बार उसने वहां से निकल भागने की चेष्टा की किन्तु सफल नहीं हुआ। पतझड़ के मौसम में सपक्षियों ने फोक्सेस थिकेट में घेरा डाला था। यह ढालवाली जंगली पहाड़ी थी। यूरी भी लिबेरियस के साथ वहां खोदी हुई एक खाई में रहता था। लिबेरियस की निरन्तर बात करने की आदत से वह परेशान हो उठा था। यूरी ने देखा कि परिवार के लोगों की चिन्ता ने बहुत-से लोगों को चिन्तित कर रखा था। पालरेव नामक व्यक्ति ने तो पागलपन में अपनी स्त्री तथा तीन बच्चों की हत्या ही कर दी थी। वैसे वह पुराना क्रांतिकारी था। लिबेरियस यूरी को बताया करता था कि अमुक-अमुक स्थान से स्वेतदलवाले खदेड़ दिए गए हैं और कुछ ही दिनों में वह अपने परिवार से मिल सकेगा। इस तरह के आश्वासनों से यूरा ऊब गया था। अन्त में एक रात वहां से निकल भागने में वह सफल हो ही गया।

ज़िवागो सीधा युर्यातिन आकर लारा के घर जा पहुंचा। द्वार पर ताला लगा था, इससे उसे बहुत निराशा हुई किन्तु दरार में ईंट के नीचे चाबी के साथ एक पत्र रखा हुआ था। पत्र लारा ने ज़िवागो के नाम लिखा था—"प्रिय, मैंने सुना है कि आप जीवित हैं और सकुशल लौट आए हैं। किसीने आपको शहर के पास देखा था और मुझे सूचना दी है। मेरा विचार है कि आप वेरिकिनो जाएंगे। इसलिए मैं वहां जा रही हूं। शायद आप यहां आएं। वापस मत लौट जाइएगा। मेरी प्रतीक्षा करें। घर खाली है। थोड़ा बहुत खाने का

सामान, उबले हुए आलू रखकर जा रही हूं। बर्तन पर ढक्कन अवश्य रखें ताकि चूहे वहां तक न पहुंच सकें। मैं खुशी के मारे पागल हो रही हूं।" लारा के आने पर यूरा को मालूम हुआ कि उसकी नई बच्ची का नाम माशा रखा गया था और उसका परिवार यहां से सुरक्षित चला गया। जिवागो को ग्लाफिरा से टोन्या का एक पत्र भी मिला जिसमें उसने लिखा था—"हमारे एक लड़की हुई है। आपकी मां की स्मृति में उसका नाम माशा रखा है। अनेक प्रमुख व्यक्ति तथा प्रोफेसर—जो दक्षिणपंथी सोशलिस्ट पार्टी के लोग हैं, और जिनमें मिल्यूकोव, किजेवेटर, कुसकोव तथा अनेक व्यक्तियों के साथ आपके कोल्या मामा भी हैं—रूस से निष्कासित कर दिए गए हैं। यह दुर्भाग्य की बात है, विशेषता उस दशा में जबकि आप हमारे साथ नहीं हैं। फिर ईश्वर को लाख-लाख धन्यवाद है कि ऐसे भीषण समय में हमें केवल निष्कासन का दण्ड मिला। आप कहां हैं ? मैं यह पत्र आन्तिपोव के पते पर भेज रही हूं। यदि किसी दिन 'वह' आपको पा सकी, तो यह पत्र आपको दे देगी...अभी तक कुछ भी निश्चित नहीं है, लेकिन सम्भवतः हम पेरिस जा रहे हैं। पिताजी आपको आशीर्वाद भेज रहे हैं।..."

कई महीनों पोस्ट-आफिस में पड़ा रहने के पश्चात् जिवागो को यह पत्र मिला था। पत्र पढ़कर वह बेहोश हो गया। शिशिर ऋतु में जब बर्फ गिरने लगी तो लारा ने एक दिन उसे बताया कि कोमारोवस्की वहां आया था और कह रहा था कि पाशा, लारा और यूरा संकट में हैं। यूरा ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया, किन्तु लारा ने कहा कि उनके परामर्श पर चलकर बच सकते हैं। रात को कोमारोवस्की उनके घर आया और उसने उन्हींके साथ भोजन किया। उसने पूरी स्थिति उन्हें समझाते हुए कहा कि वहां महत्वपूर्ण परिवर्तन होनेवाले हैं। और उनका नाम उसने सूची में देखा है। उसने कहा कि लारा को वह अपने साथ ले जा सकता है और यूरा को उसके परिवार के पास भेजने की व्यवस्था कर सकता है। पाशा को बचाने की योजना भी उसने बताई। यूरा कोमारोवस्की की योजना पर सहमत नहीं हुआ। लारा, यूरा और कात्या कुछ दिन रहने के लिए वेरिकिनो चले गए। यूरा और लारा मिलकर वहां काम करते और यूरा अपना लेखनकार्य भी करता। लारा उसकी प्रेरणा थी, वह कविताएं लिखता। लारा यूरा के साथ-साथ अपने-आपको भूल जाती। इन दिनों वह गर्भवती भी हो गई थी। कुछ दिन तो वेरिकिनो के एकान्त में लारा रही, परन्तु दूसरे सप्ताह में ही वह भयभीत हो उठी। उसने वहां से चलने की तैयारी कर ली। कोमारोवस्की अपनी स्लेज गाड़ी में उनसे वहां भी मिलने गया और उसने लारा को चलने को कहा। लारा यूरा के बिना कहीं भी जाने को तैयार न थी। कोमारोवस्की ने जिवागो को अलग ले जाकर समझाया कि स्ट्रेलिनिकोव मारा गया है और कात्या तथा लारा का जीवन संकट में है, इसलिए वह उन्हें उसके साथ भेज दे। यूरा ने लारा को कोमारोवस्की के साथ भेज दिया और स्वयं वहीं रहा। कुछ दिन वहीं रहकर वह लिखता रहा। एक दिन स्ट्रेलिनिकोव वहां आया और यूरा से बातें करता रहा। वह लारा के प्रति अपना प्रेम प्रकट करता रहा और अपनी विवशता भी उसने बताई। वास्तव में कोमारोवस्की को ठीक मालूम नहीं था इसलिए उसने स्ट्रेलिनिकोव के मरने की बात कही थी। स्ट्रेलिनिकोव ने वेरिकिनो में ही गोली मारकर

आत्महत्या कर ली क्योंकि उसे अपने गिरफ्तार होने का विश्वास हो गया था।

जिवागो मास्को आया तो उसने यात्रा का अधिकांश भाग पैदल ही तय किया था। जिस समय सपक्षियों के यहां से आया था तब यूरा ने साइबेरिया और यूराल्स के उज हुए गांवों को देखा था और अब रास्ते के खाली पड़े गांवों को देखा। खेत बिना का पड़े थे और गृहयुद्ध के कारण गांव में रहनेवाले ही नाममात्र को थे। रास्ते में उस साथ गांव का एक किशोर वास्या ब्रेकिन हो लिया था, जिसने आगे चलकर उसकी पुस्तकें छापीं। मास्को जाकर पहले तो वास्या और जिवागो साथ-साथ ही रहे, परन् बाद में जिवागो मार्केल के कमरे में रहने लगा। यह कमरा स्विटटस्की के पिछले घर में था। मार्केल की लड़की मरीना यहां जिवागो का बहुत ध्यान रखती। वह धीरे-धीरे यूरा से प्रेम करने लगी। उससे मरीना के दो लड़कियां भी हुईं—कपिटोलिना और क्लोड़िया।

एक दिन जिवागो चुपचाप अपने सौतेले भाई युवग्राफ के साथ उसके यहां चला गया। मरीना को उसने मनीआर्डर से रुपये भेज दिए थे और अपने मित्रों को पत्र। मरीना भी यूरा की विचित्र आदतों से परिचित हो गई थी इसलिए उसने इस घटना को उसकी सनक ही समझा। जिवागो ने यह तो लिख ही दिया था कि नये सिरे से जीवन प्रारम्भ करने और आत्मशुद्धि करने के लिए ही वह एकान्त में रहना चाहता है। जिवागो की रचनाएं अब लोकप्रिय हो गई थीं। वह अब फिर से अपनी अधूरी रचनाओं को पूरा करने और नई लिखने में लग गया।

युवग्राफ यूरा की पारिवारिक समस्याओं को हल करने का भी प्रयास कर रहा था कि किसी प्रकार उसका परिवार पेरिस से आ जाए, या यूरा वहां चला जाए। अपने काम पर जाने के लिए जिवागो ट्राम से जा रहा था। उसको बेचैनी अनुभव हुई, उतरकर प्लेटफार्म पर आ गया और सड़क पर दो-तीन कदम चलने के पश्चात् ही गिर पड़ा। गिरने के पश्चात् जिवागो उठ नहीं सका। उसकी वहीं मृत्यु हो गई। उसके हृदय की गति बन्द हो गई थी। जब उसका शव लाया गया तब मरीना पछाड़ खाकर गिर पड़ी। यूरी के मित्र, अस्पताल में काम करनेवाले लोग, पुस्तक-विक्रेता और मुद्रक तथा अन्य परिचित लोग यूरी को देखने आए। लारा भी वहां आ गई थी। वह मास्को स्टेशन पर सामान छोड़कर बाहर घूमने आई थी। यहां भीड़ देखकर आ गई और जिवागो का शव देखकर रुक गई। युवग्राफ ने उसे यह कहकर रोक लिया कि वह अपने भाई के कागजात उसकी सहायता से छांटना चाहता है। लारा यूरा के शव को देखकर काफी देर तक तो चुप रही। फिर फूट-फूटकर रोने लगी। रोते-रोते उसकी हिचकियां बंध गईं।

इस घटना के पांच या दस वर्ष पश्चात् डुडरोव और गार्डन जिवागो की प्रकाशित पुस्तक पढ़ रहे थे और स्वतन्त्रता का उत्साह अनुभव कर रहे थे।

प्रस्तुत उपन्यास में रूस की जनक्रान्ति के अंधेरे पहलू को प्रकट किया गया है। व्यक्ति की घुटन का इसमें प्रभावोत्पादक चित्र उपस्थित किया गया है। यह उपन्यास अपने साथ घोर विवाद लाया है, क्योंकि इसमें दो विचारधाराओं की टक्कर दिखाई देती है।

अजनबी
[द स्ट्रेंजर[1]]

कामू, आल्बेयर : फ्रेंच उपन्यासकार आल्बेयर कामू का जन्म १९१३ में ७ नवम्बर को हुआ और मृत्यु मोटर-दुर्घटना से १९६१ में हुई। आप मंडोवी, अल्जीरिया में पले। परिवार बहुत गरीब हो गया। आपने दर्शन का अध्ययन किया। फिर आपकी थियेटर में दिलचस्पी हो गई। आपने काफी भ्रमण किया था। १९४० में आप फ्रांस से अल्जीरिया लौट आए और अध्यापन-कार्य करने लगे। १९४० में आपका विवाह हुआ। आप सिगरेट बहुत पीते थे। १९४७ से आप राजनीति में भाग लेने लगे।

'द स्ट्रेंजर' (अजनबी) आपका एक सुप्रसिद्ध उपन्यास है।

मोर्सिये म्योरसोल अल्जीयर्स नगर में एक दफ्तर में काम करता था। उसकी स्थिति ऐसी नहीं थी कि अपनी मां का भरण-पोषण समुचित रूप से कर सके। उसने मां को मारंगो के वृद्धाश्रम में रहने भेज दिया था। वृद्धाश्रम अल्जीयर्स नगर से लगभग पचास मील दूर था। आश्रम में तीन साल तक रहने के पश्चात् म्योरसोल की मां की वहीं मृत्यु हो गई। आश्रम से तार द्वारा मां के निधन का समाचार पाकर म्योरसोल ने दफ्तर से दो दिन की छुट्टी ली और दोपहर की बस से आश्रम को चल दिया। वहां पहुंचने पर आश्रम के वार्डन ने उसे मादाम म्योरसोल के ताबूत के पास मुर्दाघर में पहुंचा दिया। उसने उसे यह भी बताया कि उसकी मां की इच्छा थी कि उन्हें चर्च के नियमानुसार दफनाया जाए। वार्डन के जाते ही आश्रम के चौकीदार ने आकर म्योरसोल से पूछा कि वह मां के दर्शन करना चाहे तो वह पेंच खोल दे। किन्तु म्योरसोल मना कर दिया। चौकीदार को म्योरसोल की इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ कि वह अपनी मृत मां के दर्शन करना नहीं चाहता। फिर भी वह चुप रहा और म्योरसोल से बातें करता रहा। कुछ देर बात करने के पश्चात् चौकीदार म्योरसोल के लिए कॉफी बना लाया। उसने पी ली। अपनी मां के संगी-साथियों के साथ म्योरसोल ने ताबूत के पास प्रथानुसार रतजगा किया और दूसरे दिन संस्कार-व्यवस्थापक के व्यक्तियों के आने पर अन्त्येष्टि का काम समाप्त करके अल्जीयर्स नगर लौट आया। म्योरसोल परिस्थितियों से तटस्थ रहने-वाला व्यक्ति था, इसलिए मां की मृत्यु ने उसे विचलित नहीं किया। वैसे वह अपनी मां से प्रेम करता था।

---

१. The Stranger (Albert Camus)—इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद हो चुका है : 'अजनबी'; अनुवादक—राजेन्द्र यादव; प्रकाशक—राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

आत्महत्या कर ली क्योंकि उसे अपने गिरफ्तार होने का विश्वास हो गया था।

ज़िवागो मास्को आया तो उसने यात्रा का अधिकांश भाग पैदल ही तय किया था। जिस समय छापामारों के यहां से आया था तब यूरा ने साइबेरिया और यूराल्स के उजड़े हुए गांवों को देखा था और अब रास्ते के खाली पड़े गांवों को देखा। खेत बिना काटे पड़े थे और गृहयुद्ध के कारण गांव में रहनेवाले ही नाममात्र को थे। रास्ते में उसके साथ गांव का एक किशोर वास्या ब्रेकिन हो लिया था, जिसने आगे चलकर उसकी पुस्तकें छापीं। मास्को जाकर पहले तो वास्या और ज़िवागो साथ-साथ ही रहे, परन्तु बाद में ज़िवागो मार्केल के कमरे में रहने लगा। यह कमरा स्विंटटस्की के पिछले घर में था। मार्केल की लड़की मरीना यहां ज़िवागो का बहुत ध्यान रखती। वह धीरे-धीरे यूरा से प्रेम करने लगी। उसने मरीना से दो लड़कियां भी हुईं—कपिटोलिना और क्लोड़िया।

एक दिन ज़िवागो चुपचाप अपने सौतेले भाई युवग्राफ़ के साथ उसके यहां चला गया। मरीना को उसने मनीआर्डर से रुपये भेज दिए थे और अपने मित्रों को पत्र। मरीना भी यूरा की विचित्र आदतों से परिचित हो गई थी इसलिए उसने इस घटना को उसकी सनक ही समझा। ज़िवागो ने यह तो लिख ही दिया था कि नये सिरे से जीवन प्रारम्भ करने और आत्मशुद्धि करने के लिए ही वह एकान्त में रहना चाहता है। ज़िवागो की रचनाएं अब लोकप्रिय हो गई थीं। वह अब फिर से अपनी अधूरी रचनाओं को पूरा करने और नई लिखने में लग गया।

युवग्राफ़ यूरा की पारिवारिक समस्याओं को हल करने का भी प्रयास कर रहा था कि किसी प्रकार उसका परिवार पेरिस से आ जाए, या यूरा वहां चला जाए। अपने काम पर जाने के लिए ज़िवागो ट्राम से जा रहा था। उसको बेचैनी अनुभव हुई, उतरकर प्लेटफार्म पर आ गया और सड़क पर दो-तीन कदम चलने के पश्चात् ही गिर पड़ा। गिरने के पश्चात् ज़िवागो उठ नहीं सका। उसकी वहीं मृत्यु हो गई। उसके हृदय की गति बन्द हो गई थी। जब उसका शव लाया गया तब मरीना पछाड़ खाकर गिर पड़ी। यूरी के मित्र, अस्पताल में काम करनेवाले लोग, पुस्तक-विक्रेता और मुद्रक तथा अन्य परिचित लोग यूरी को देखने आए। लारा भी वहां आ गई थी। वह मास्को स्टेशन पर सामान छोड़कर शहर घूमने आई थी। यहां भीड़ देखकर आ गई और ज़िवागो का शव देखकर रुक गई। युवग्राफ़ ने उसे यह कहकर रोक लिया कि वह अपने भाई के कागज़ात उसकी सहायता से छांटना चाहता है। लारा यूरा के शव को देखकर काफी देर तक तो चुप रही। फिर फूट-फूटकर रोने लगी। रोते-रोते उसकी हिचकियां बंध गईं।

इस घटना के पांच या दस वर्ष पश्चात् डुडरोव और गार्डन ज़िवागो की सम्पादित पुस्तक पढ़ रहे थे और स्वतन्त्रता का उत्साह अनुभव कर रहे थे।

प्रस्तुत उपन्यास में रूस की जनक्रान्ति के अंधेरे पहलू को प्रकट किया गया है। व्यक्ति की घुटन का इसमें प्रभावोत्पादक चित्र गया है। यह उपन्यास अपने साथ घोर विवाद टक्कर दिखाई देती है।

अजनबी
[द स्ट्रेंजर[1]]

कामू, आल्बेयर : फ्रेंच उपन्यासकार आल्बेयर कामू का जन्म १९१३ में ७ नवम्बर को हुआ और मृत्यु मोटर-दुर्घटना से १९६१ में हुई। आप मंडोवी, अल्जीरिया में पले। परिवार बहुत गरीब हो गया। आपने दर्शन का अध्ययन किया। फिर आपकी थियेटर में दिलचस्पी हो गई। आपने काफी भ्रमण किया था। १९४० में आप फ्रांस से अल्जीरिया लौट आए और अध्यापन-कार्य करने लगे। १९४० में आपका विवाह हुआ। आप सिगरेट बहुत पीते थे। १९४७ से आप राजनीति में भाग लेने लगे।

'द स्ट्रेंजर' (अजनबी) आपका एक सुप्रसिद्ध उपन्यास है।

मोशिये म्योरसोल अल्जीयर्स नगर मे एक दफ्तर में काम करता था। उसकी स्थिति ऐसी नहीं थी कि अपनी मां का भरण-पोषण समुचित रूप से कर सके। उसने मां को मारगो के वृद्धाश्रम में रहने भेज दिया था। वृद्धाश्रम अल्जीयर्स नगर से लगभग पचास मील दूर था। आश्रम मे तीन साल तक रहने के पश्चात् म्योरसोल की मां की वहीं मृत्यु हो गई। आश्रम से तार द्वारा मां के निधन का समाचार पाकर म्योरसोल ने दफ्तर से दो दिन की छुट्टी ली और दोपहर की बस से आश्रम को चल दिया। वहां पहुंचने पर आश्रम के वार्डन ने उसे मादाम म्योरसोल के ताबूत के पास मुर्दाघर में पहुंचा दिया। उसने उसे यह भी बताया कि उसकी मां की इच्छा थी कि उन्हें चर्च के नियमानुसार दफनाया जाए। वार्डन के जाते ही आश्रम के चौकीदार ने आकर म्योरसोल से पूछा कि वह मां के दर्शन करना चाहे तो वह पेच खोल दे। किन्तु म्योरसोल मना कर दिया। चौकीदार को म्योरसोल की इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ कि वह अपनी मृत मा के दर्शन करना नहीं चाहता। फिर भी वह चुप रहा और म्योरसोल से बातें करता रहा। कुछ देर बात करने के पश्चात् चौकीदार म्योरसोल के लिए कॉफी बना लाया। उसने पी ली। अपनी मां के सगी-साथियों के साथ म्योरसोल ने ताबूत के पास प्रथानुसार रत-जगा किया और दूसरे दिन संस्कार-व्यवस्थापक के व्यक्तियों के आने पर अंत्येष्टि का काम समाप्त करके अल्जीयर्स नगर लौट आया। म्योरसोल परिस्थितियों से तटस्थ रहनेवाला व्यक्ति था, इसलिए मां की मृत्यु ने उसे विचलित नहीं किया। वैसे वह अपनी मां से प्रेम करता था।

---

१. The Stranger (Albert Camus)—इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद हो चुका है : 'अजनबी'; अनुवादक—राजेन्द्र यादव; प्रकाशक—राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

नगर लौटने पर म्योरसोल अपने-आपको बहुत थका अनुभव करने लगा और घर पहुंचकर सो गया। दूसरे दिन शनिवार था और शनि तथा रविवार की उसकी छुट्टी रहती थी। जब वह सोकर उठा तब भी उसकी थकान पूरी तरह दूर नहीं हुई थी। फिर भी छुट्टी का दिन कटना भारी हो जाता, इसलिए वह बन्दरगाह जानेवाली ट्राम से तैरने के कुण्ड (स्वीमिंग-पूल) चला गया। कुण्ड पर उसे अपने दफ्तर की भूतपूर्व टाइपिस्ट मेरी कार्डोना मिली। दोनों एक-दूसरे की ओर आकर्षित तो थे ही, कुण्ड से काफी देर तक जल-क्रीड़ा करते रहे। शाम को मेरी और म्योरसोल ने एक मजाकिया फिल्म देखी और रात को मेरी म्योरसोल के घर ही रही। म्योरसोल ने मां की मृत्यु का शोक भूलकर आनन्द के क्षणों का उपभोग किया। रविवार का दिन भी उसने जैसे-तैसे निकाल दिया और दूसरे दिन दफ्तर जा पहुंचा।

जब म्योरसोल दफ्तर से लौटा तो पड़ोसी रेमंड सिन्ते उसे भोजन का निमन्त्रण देकर अपने यहां लिवा ले गया। रेमंड के बारे में लोगों की अच्छी राय न थी। उसे औरतों का दलाल कहते थे, किन्तु वह स्वयं अपने-आपको माल-गोदाम में नौकर बताता था। भोजन के समय रेमंड ने म्योरसोल को अपनी कहानी सुनाई और कहा कि वह एक लड़की से प्रेम करता था जिसने उसे धोखा दे दिया। अब वह उस लड़की से बदला लेना चाहता था जिसमें म्योरसोल से उसने सहायता चाही थी। रेमंड ने पूरी बात विस्तार से बताते हुए कहा कि वह उसे एक ऐसा चुभता हुआ पत्र लिखना चाहता है कि लड़की तिलमिला उठे और उसे अपने किए पर पछतावा हो। फिर जब लड़की वापस रेमंड के पास आए तब वह उसे अपमानित करके कमरे से बाहर निकाल दे। लेकिन पत्र लिखना रेमंड की शक्ति के बाहर था। उसने म्योरसोल से इस तरह का पत्र लिख देने को कहा। शराब के नशे में होने पर भी म्योरसोल ने पत्र लिख दिया जो रेमंड को पसन्द भी आ गया।

इस घटना के पश्चात् सप्ताह-भर म्योरसोल दफ्तर के काम में व्यस्त रहा और शनिवार को पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार मेरी के साथ समुद्र-तट पर स्नान करने गया। उसी दिन जब मेरी म्योरसोल के कमरे में थी, रेमंड की ज़ोर-ज़ोर की आवाज़ सुनाई दी। उसने अपनी तथाकथित प्रेमिका को पीटा था, जिससे लोगों की भीड़ सीढ़ियों पर एकत्र हो गई थी और पुलिस का एक सिपाही भी वहां आ गया था। सिपाही ने उस लड़की को तो वहां से भगा दिया तथा रेमंड को थाने से बुलावा आने तक अपने ही कमरे में रहने का आदेश दिया। मेरी के चले जाने के बाद रेमंड म्योरसोल के कमरे में आया और उसे अपनी गवाही देने को कहा। म्योरसोल इस बात की गवाही देने को तैयार हो गया कि उस लड़की ने रेमंड को धोखा दिया था। इसके पश्चात् दोनों साथ-साथ ही टहलने गए। रेमंड ने म्योरसोल को ब्राण्डी पिलाई। जब वे लौटकर आए तो उनका बूढ़ा पड़ोसी सलामानो घबराया हुआ अपने कुत्ते को खोज रहा था।

एक दिन रेमंड ने म्योरसोल को दफ्तर में फोन किया कि अगले रविवार की छुट्टी अल्जीयर्स नगर के बाहर समुद्र-तट पर उसके एक मित्र के बंगले पर बिताई जाए। म्योरसोल को उसने यह भी बताया कि कुछ अरब उस दिन सुबह से उसका पीछा कर रहे हैं, जिनमें एक तो उस लड़की का भाई था जिसे उसने अपमानित किया था। यदि घर

लौटते समय वह उन्हें चक्कर काटते देखे तो उसे इशारे से बता दे। म्योरसोल ने रेमंड से हां कर ली। इसी दिन म्योरसोल के साहब ने पेरिस मे कम्पनी की शाखा खोलने के सिलसिले में म्योरसोल से पूछा कि वह पेरिस जाना चाहता है, या नहीं ? तो उसने कहा कि कहीं भी रहे, उसके लिए एक ही बात है। म्योरसोल के निरपेक्ष भाव से साहब को दुःख ही हुआ जब उसने कहा, "साहब, अपने वास्तविक जीवन को क्या कभी कोई बदल पाया है ? जैसा एक ढर्रा, वैसा ही दूसरा। जीवन का अब जो ढर्रा है, मुझे तो उससे भी कोई शिकायत नहीं।" इसपर साहब ने कहा कि उसमें महत्त्वाकांक्षा की कमी है। उसी शाम को मेरी ने म्योरसोल से पूछा, "मुझसे विवाह करोगे ?" तो उसने कहा कि यदि वह चाहती है तो कर लेगा। मेरी ने पूछा, "मुझे प्रेम करते हो ?" तो बोला, "पूछना ही बेकार है। कम से कम इस तरह के प्रश्न का कोई अर्थ नहीं है। फिर भी लगता है, मेरे मन में तुम्हारे लिए प्रेम जैसा कुछ नहीं है।"

"यदि ऐसा है तो विवाह किसलिए करोगे ?"

"वास्तव मे इससे क्या आता-जाता है ? हां यदि विवाह से तुम्हे सुख मिलता हो तो चलो, अभी इसी क्षण किए लेते है।"

ये बातें म्योरसोल की परिस्थितियों से तटस्थ रहने की प्रवृत्ति को स्पष्ट करती हैं। इसके बाद म्योरसोल और मेरी घूमने गए। मेरी तो फिर घर चली गई और म्योरसोल सेलेस्ते के रेस्तरां में भोजन करके घर लौटा। कमरे के दरवाज़े की ओर मुड़ते ही उसे बूढ़ा सलामानो मिल गया जो अपने कुत्ते का रोना रोता रहा। उसे अपने कुत्ते के खो जाने का बहुत दुःख था। कुत्ते के पालने से लेकर अब तक की कहानी उसने म्योरसोल को सुनाई। जाते-जाते भी वह अपने कुत्ते के सम्बन्ध मे बातें करता रहा था।

आखिर रविवार भी आ गया और मेरी तथा म्योरसोल स्नान के कपड़े लेकर प्रातःकाल समुद्रतट की ओर चल दिए। रेमंड भी उनके साथ था। जब वे समुद्रतट की ओर जा रहे थे तब रेमंड ने बताया कि अरब उसका पीछा कर रहे हैं। इस बात से रेमंड परेशान भी दिखाई देता था। जैसे-तैसे उन्होंने बस पकड़ी और रेमंड के दोस्त मैसन के बंगले पर जा पहुंचे। मैसन का बंगला समुद्रतट के पास तो था ही। बगले पर पहुंचकर रेमंड ने मैसन से म्योरसोल का परिचय कराया। मैसन की पत्नी भी उसके साथ थी। मैसन ने म्योरसोल को बताया कि वह अपनी छुट्टियां उस बंगले पर ही बिताता था। बातचीत करते हुए मैसन, मेरी और म्योरसोल समुद्र में तैरने चले गए। रेमंड और मैसन की पत्नी वहीं बातें करते रहे। उधर तीनों काफी देर तक तैरते रहे। फिर थोड़ी देर तक मैसन म्योरसोल तथा मेरी रेत पर धूप में लेटे रहे। बाद में मैसन तो बंगले पर चला गया किन्तु मेरी और म्योरसोल फिर जल-क्रीड़ा में व्यस्त हो गए। जब वे लौटे तो मैसन बंगले की सीढ़ियों पर खड़ा भोजन के लिए पुकार रहा था।

भोजन के पश्चात् मेरी और मैसन की पत्नी वहीं रहीं; और मैसन, रेमंड तथा म्योरसोल घूमने चल दिए। जब तीनों समुद्र के किनारे-किनारे चले जा रहे थे और भटकी हुई लहरें उनके पांवों को भिगो रही थीं तभी म्योरसोल ने देखा कि दो अरब उनका पीछा कर रहे हैं। उसने रेमंड को संकेत से बताया। कुछ देर मे ही वे पास आ गए। मैसन,

और रेमंड ने दोनों अरबों को घूंसों से पीटा। जिस अरब को रेमंड ने घूंसों से पीटा उसने अचानक चाकू निकालकर उसपर हमला कर दिया और रेमंड की बांह व मुंह चाकू से गोद डाले। मैसन इधर आया तो दूसरा अरब पहलेवाले के पास आ गया और दोनों चाकू ताने हुए धीरे-धीरे पीछे हटते गए और भाग गए। मैसन और म्योरसोल कन्धे का सहारा देकर रेमंड को बंगले तक लाए। मेरी और मैसन की पत्नी रेमंड को घायल देखकर घबरा गईं, किन्तु मैसन उसे डाक्टर के यहां ले गया। म्योरसोल बंगले पर ही रहा। डेढ़ बजे के लगभग रेमंड डाक्टर के यहां से लौट आया और आते ही समुद्र की ओर चक्कर लगाने चल दिया। रेमंड ने मैसन और म्योरसोल में से किसीको अपने साथ नहीं लिया, लेकिन म्योरसोल उसके पीछे-पीछे हो लिया। जहां तट समाप्त होता था वहां पानी की पतली-सी धारा थी। वह धारा भारी चट्टान के पीछे से निकलकर रेत में नाली-सी काटती हुई समुद्र में जा मिली थी। उसी ओर रेमंड गया। वहां वे ही दोनों अरब रेत पर लेटे हुए थे। रेमंड ने पिस्तौल से उस अरब को भून देना चाहा जिसने उसे घायल किया था, किन्तु म्योरसोल ने उससे कहा कि जब तक वह अपना चाकू निकाले उसे पिस्तौल नहीं चलानी चाहिए रेमंड ने उसकी बात मानकर पिस्तौल उसे दे दी। रेमंड पिस्तौल म्योरसोल को देकर अरबों की तरफ बढ़ा ही था कि वे वहां से भाग गए। उसके बाद रेमंड और म्योरसोल बंगले पर लौट आए। रेमंड तो सीढ़ियां चढ़कर ऊपर चला गया, परन्तु म्योरसोल धूप में खड़ा रहा और कुछ देर पश्चात् अकेला तट के पास की चट्टानों की ओर चल दिया। धूप के मारे बुरा हाल हो रहा था लेकिन वह चला जा रहा था। धूप ने उसके भीतर एक उन्माद-सा भर दिया था। वह चट्टान के पारवाली उस सुन्दर जगह पर जाना चाहता था जहां वे अरब मिले थे। उस स्थान पर सुखकर छांह थी। जब म्योरसोल पहुंचा तो रेमंडवाला अरब अकेला वहां लेटा हुआ था। म्योरसोल ने वहां से चला जाना चाहा किन्तु जा नहीं पाया। जैसे ही वह अरब की तरफ बढ़ा कि उसने चाकू तान लिया। म्योरसोल ने इसी समय उत्तेजना में रेमंड का पिस्तौल चला दिया। अरब पर उसने पांच गोलियां चलाईं जिससे वह वहीं मर गया।

अरब की हत्या के अपराध में म्योरसोल गिरफ्तार कर लिया गया। उसे जांच-मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया जिसने उससे अनेक प्रकार के प्रश्न पूछे। उसने वकील नहीं किया था इसलिए न्यायालय की ओर से एक वकील उसके लिए कर दिया गया। दूसरे दिन वकील ने म्योरसोल को बताया कि उसके चरित्र के सम्बन्ध में न्यायालय की ओर से जांच हो रही है और मारेंगो में हुई जांच में पुलिस ने इस बात पर जोर दिया था कि उसने अपनी मां की अन्त्येष्टि में बड़ी हृदयहीनता दिखाई थी। वकील ने उससे कहा कि वह मुकदमे में यही बताए कि वह अपनी मां से बहुत प्यार करता था और उसके मरने का उसे बहुत दुःख है। इसके पश्चात् उसी दिन जांच-मजिस्ट्रेट ने म्योरसोल से हत्या के सम्बन्ध में पूरा हाल पूछा। उसने रेमंड के मिलने से लेकर समुद्र पर जाने और अरबों से झगड़ा होने तथा दुबारा समुद्र तट पर जाकर अरब पर गोलियां चलाने तक का हाल उसे बता दिया। यही कहानी म्योरसोल को कई बार सुनानी पड़ी थी इसलिए वह ऊब गया था। मजिस्ट्रेट ने उससे पूछा कि क्या वह अपनी मां से प्यार करता था, तो उसने बताया

कि जैसे और लोग मां से प्यार करते हैं वैसे वह भी करता था। मजिस्ट्रेट ने पूछा कि उसने अरब पर गोली क्यों चलाई। जब इस बात का म्योरसोल कोई उत्तर नहीं दे सका तो वे सूली चढ़े ईसा की मूर्ति दिखाकर कहने लगे कि उसे अपने पाप के लिए पश्चात्ताप करना चाहिए और ईश्वर के न्याय पर विश्वास करना चाहिए। जांच-मजिस्ट्रेट की बातें सुनकर म्योरसोल ऊब गया था लेकिन वे उसे उपदेश देते ही रहे। अन्त में वे इस बात पर ज़ोर देते रहे कि वह अरब पर एक गोली चलाकर रुक गया था तो दुबारा चार गोलियां उसने क्यों चलाईं। जब म्योरसोल ने पूछने पर कहा कि वह ईश्वर को नहीं मानता तो मजिस्ट्रेट आश्चर्य करने लगा। उसने कहा, "अपने जीवन में मैंने तुम जैसा जड़ और हृदयहीन प्राणी नहीं देखा। आज तक न जाने कितने मुजरिम यहां आए हैं और सबके सब भगवान की इस यंत्रणा-मूर्ति को देखकर फूट-फूटकर रोए हैं।" फिर भी म्योरसोल का मन इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं था कि वह अपराधी है। इसके बाद भी कई बार मजिस्ट्रेट के सामने म्योरसोल की पेशी हुई, परन्तु प्रत्येक बार वकील उसके साथ रहा। म्योरसोल के बयानों पर ही विवाद होता रहा।

इन दिनों म्योरसोल जेल में बन्द रखा जाता था। प्रारम्भ के दिनों में तो यह उसे अनुभव ही नहीं हुआ कि वह जेल में रहता था। उसे अब भी यह आशा बनी रहती थी कि अचानक कोई ऐसी बात होगी जिससे वह इस झंझट से छुटकारा पा जाएगा। सोने का गद्दा, टीन का तसला और बाल्टी म्योरसोल को भी दे दिए गए थे। कालकोठरी में उसे रखा गया था। मेरी उससे मिलने आई तो कहने लगी, "तुम देखना, सब ठीक हो जाएगा। फिर हम लोग शादी कर लेंगे।" म्योरसोल ने पूछा, "सचमुच तुम यही सोचती हो न?" तब वह कहने लगी, "हां, हां, तुम छूट जाओगे। फिर हम लोग उसी तरह हर रविवार को स्नान करने जाया करेंगे।" इन बातों से म्योरसोल की तटस्थता और बनी रही। फिर भी उसकी यह दशा कुछ ही महीनों तक चली। बाद में वह भी औरों की तरह सोचने लगा। वह खुले चौक में टहलने के वक्त को और वकील के आने की राह देखा करता। अकेलेपन को इसी तरह काटना उसका स्वभाव बन चला। एक दिन उसने पानी पीने के तामलोट को खूब घिस-घिसकर साफ किया और अपना चेहरा उसमें देखा तो उसे अपने मुख का भयानक-गम्भीर भाव ज्ञात हो गया। मुस्कराने पर भी इस गम्भीरता में कोई अन्तर नहीं आया। इस मनहूसी ने उसे निराश-सा कर दिया। जेल की उदासी और मनहूसियत ने उसे भी प्रभावित कर दिया था। धीरे-धीरे इसी तरह दिन बीतते गए। मां की अन्त्येष्टि आदि की बातें उसे रह-रहकर याद आती।

ग्रीष्म के महीने में उसका मुकदमा न्यायालय में चलने लगा। कैदियों की गाड़ी में बिठाकर उसे न्यायालय ले जाया गया। उसे कठघरे में खड़ा कर दिया गया और मुकदमे की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। जज, जूरी, पत्रकारों आदि के साथ दर्शकों की भीड़ भी वहां थी। रेमंड, मैसन, सलामानो तथा मेरी आदि ने म्योरसोल के पक्ष में गवाहियां दीं। म्योरसोल से भी प्रश्न पूछे गए। सरकारी वकील ने म्योरसोल को हत्यारा सिद्ध करने का प्रयास किया। उसने तर्क दिया कि म्योरसोल हृदयहीन है और मां की अंत्येष्टि के समय उसने उदासीनता दिखाई और उसके दूसरे दिन ही उसने मेरी के साथ मज़ाकिया फिल्म

देखी, मेरी के साथ सहवास किया; उसे मां के मरने का दुःख ही नहीं हुआ। रेमंड के साथ षड्यंत्र करके उसने पत्र लिखा जिससे रेमंड की प्रेमिका उसके कमरे में आ गई और रेमंड ने उसे अपमानित किया। रेमंड से उसने पिस्तौल लिया और जान-बूझकर अरब की हत्या करने घटनास्थल पर जा पहुंचा। एक बार गोली चलाने पर जब उसने देखा कि अरब मरा नहीं तो दुबारा गोली चलाई'''आदि।

एक हत्यारे की सी हृदयहीनता म्योरसोल में आरम्भ से थी—इस बात पर सरकारी वकील ने बहुत ज़ोर दिया। म्योरसोल ने अपने अपराध पर पश्चात्ताप नहीं किया, यह भी हृदयहीनता का चिह्न माना गया। न्याय के नाम पर सरकारी वकील ने म्योरसोल को फांसी की सज़ा देने की सिफारिश की। दूसरे दिन म्योरसोल के वकील ने सफाई के तर्क दिए और उस हत्या को 'उत्तेजना में की गई हत्या' कहकर अपराध की गुरुता को कम सिद्ध किया। उसने म्योरसोल को सच्चरित्र और परिश्रमी नवयुवक सिद्ध करने का प्रयास किया। जूरी ने इसके पश्चात् उत्तर पढ़कर सुनाया और प्रधान जज ने फैसला दिया कि फ्रांसीसी जनता के नाम पर चौराहे पर खड़ा करके म्योरसोल की गरदन उड़ा दी जाए। फैसला सुनाने के बाद जेल में पादरी ने म्योरसोल से मिलना चाहा जिससे वह अपने पापों को स्वीकार कर ले, किन्तु तीन बार उसने मिलने से मना कर दिया। अन्त में पादरी उसकी कोठरी में आ ही गया और उसे पश्चात्ताप करने को कहने लगा। इन बातों से म्योरसोल खीझ उठा। वह ईश्वर की कृपा पर विश्वास करने को तैयार नहीं था। वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर पादरी की बातों का प्रतिवाद करने लगा और झपटकर उसने पादरी के लबादे का गरेबान पकड़ लिया। जब पादरी वहां सेचला गया तब भी उत्तेजना से म्योरसोल की सांस उखड़ी हुई थी। थकान के कारण म्योरसोल इसके पश्चात् काफी देर तक पड़ा सोता रहा। उसे अपनी मां की याद हो आई। मरने से कुछ पहले के दिनों में उसकी मां के जो महाशय पीरे से घनिष्ठ सम्बन्ध हो गए थे, और जिनके बारे में म्योरसोल को बहुत आश्चर्य होता था, अब उनका औचित्य भी उसकी समझ में आने लगा।

अब म्योरसोल आत्मशक्ति बटोरने में लगा था, ताकि फांसी के समय भी पहले की तरह वह प्रसन्न रह सके। वह सोचता था कि यह स्थिति भी तो एक तरह की यात्रा ही है।

> प्रस्तुत उपन्यास फ्रांस के सांस्कृतिक जीवन पर प्रकाश डालता है। उपन्यास के आधुनिकवादी मानदण्डों में 'चरित्र-चित्रण' और 'पात्र' पर विशेष ज़ोर नहीं दिया जाता, व्यक्ति के भीतरी पक्ष का वर्णन अधिक उल्लेखनीय माना जाता है। इस उपन्यास में यही बात अधिक परिलक्षित होती है।

रंजक उपन्यास

तीसमारखां

[डॉन क्विक्ज़ोट[1]]

सरवांते, मिग्युएल डि सावेद्रा : इस स्पेनिश उपन्यासकार का जन्म स्पेन में १५४७ में हुआ। कहते हैं आपका जन्मस्थान अलकला डि हिनारेज था। आपके पिता वैद्य थे जो जगह-जगह जाकर लोगों का इलाज करते थे। यौवन में सरवांते ने इटली की सेना में नौकरी की। एक बार जलयुद्ध में आप घायल हो गए। समुद्री डाकू आपको पकड़ ले गए। पांच बरस तक वे एल्जीयर्स में कैदी बनाकर रखे गए। जब डाकुओं को आपका मूल्य चुका दिया गया तो आप छूटकर स्पेन आ गए। घर आते ही कविताएं और नाटक लिखने शुरू कर दिए। इधर वे बहुत कर्जदार हो गए थे। १६०४ में आपकी 'डॉन-क्विक्ज़ोट' नामक यह महान पुस्तक निकली और प्रसिद्ध हुई। इन दिनों आप सख्त बीमार थे; गरीबी ने आपकी हालत खराब कर रखी थी। इसी बीमारी और गरीबी के कारण मैड्रिड में २३ अप्रैल १६१६ को आपका देहान्त हो गया।

आपने 'डॉन क्विक्ज़ोट' (तीसमारखां) में हास्य के माध्यम से ह्रासोन्मुख सामन्त वर्ग पर गहरा व्यंग्य किया है। आज भी आपका यह उपन्यास बिलकुल नया-सा लगता है।

ला मांचा प्रदेश के एक गांव में एक पुराने ढंग के सज्जन रहा करते थे। उनके तीन साथी थे—एक लम्बा भाला, एक मरियल घोड़ा और एक शिकारी कुत्ता। गाय के सूखे और कटे हुए मांस को वे भेड़ के मांस से ज्यादा पसन्द करते थे। गोमांस वे रात को खाते थे। शुक्रवार के दिन केवल कुछ हरी सब्ज़ी लेते थे। शनिवार के दिन वे उपवास करते और आहें भरा करते। इतवार के दिन एक विशेष ढंग से पका हुआ कबूतर खाते थे। पीने का मामला यह था कि खूब शराब पीते थे। और जो आमदनी बाकी बच रहती उससे एक फर का कोट, मखमली बिरजिस और मखमली कुर्ता चाव से खरीदकर पहनते। छुट्टी के दिन उनकी छटा देखने लायक होती थी। काम के दिन वे घर के बुने कपड़े पहना करते थे।

वैसे उनके सारे परिवार में था ही क्या—घर की देखभाल करने के लिए चालीस साल का एक नौकर और एक भतीजी, जो बीस साल की भी नहीं थी। उनका वफादार नौकर उनके घर की देखभाल तो करता ही था, साथ ही घोड़े की जीन भी कसता था और खेती के सब काम भी उसीके जिम्मे थे। मालिक करीब पचास के थे—तन्दुरुस्त, लम्बे, पतले-दुबले, चेहरा-मोहरा सूखा-सा। अलस्सुबह उठ जाते। शिकार खेलने के शौकीन थे। कुछ

[1] Don Quixote (Miguel De Saavedra Cervantes)

लोग कहते हैं उनका नाम क्विकराडा था, और कुछ लोग क्विकसाडा कहते हैं। इस बारे में अलग-अलग लेखकों की अलग-अलग राय हैं। जो हो, हम यह मान लेते हैं कि उनका नाम क्विकजाना था—जिसका अर्थ है 'चौड़े जबड़ोंवाला', हालांकि हमारा इससे कोई खास मतलब हल नहीं होता। बहरहाल, इतिहास लिखते वक्त तो सच्चाई की तरफ हमको देखना ही पड़ेगा।

हमारे इन बुढ़ऊ सज्जन को कोई काम करने को नहीं होता था—करीब-करीब पूरा साल ऐसे ही गुज़र जाता था। आखिर उन्हें किताब पढ़ने का शौक चर्राया—और किताबें भी कैसी, कि वीरता की कहानियां, पुराने वीर नायकों की साहसिक कथाएं। रस-विभोर होकर, वे ऐसी पुस्तकों मे इस कदर डूब जाते कि कुछ दिन बाद उन्हें अपना शिकार-विकार भी भूल गया, अपने घर और अपनी जायदाद की चिन्ता भी भूल गई। वे तो उन कहानियों के आनन्द में इतने डूब गए कि अपनी बहुत-सी अच्छी जोतने-बोने लायक जमीन बेच दी। किसलिए? कि किताबें खरीद सकें। और किताबें भी कैसी? कि जिनमें ऐसी साहसिक कहानियां हों। इस तरह से उन्होंने किताबों का ढेर लगा लिया। वे अकसर गांव के पादरी से तर्क-वितर्क करते हुए झगड़ बैठते थे। पादरी उनका मित्र था और पढ़ा-लिखा आदमी था। उनकी बहस अपने मित्र निकोलस से भी हुआ करती, जो उस कस्बे का नाई था। यों पढ़ते-पढ़ते, पढ़ते-पढ़ते, रात को बैठते तो सुबह हो जाती, और सुबह को बैठते तो रात हो जाती। सोते कम, और पढ़ते ज्यादा। धीरे-धीरे उनके दिमाग का रस सूख गया, और इस कदर सूख गया कि अक्ल उसमें से गुम हो गई। उनका दिमाग छाया-मात्र-सा रह गया, कुछ ऐसा कि कुछ इस किताब में से लिए गए विचार और कुछ उस किताब मे से लिए हुए विचार। और उनके दिमाग में कुछ नहीं था—बस कल्पना की एक भीड़ थी—जादू, झगड़े, लड़ाइयां, जोखिम, शिकायतें, प्रेम, पथराई आंखें, तड़पन और ऐसी असम्भव बातें उनके भीतर भर गईं जिनका कोई अन्त दिखाई नहीं देता था।

इस तरह अपनी विवेक-शक्ति को खोकर एक दिन उनके मस्तिष्क में एक विचित्र विचार आया—ऐसा, जो शायद कोई पागल ही सोच सकता था। अब उन्हें यह उचित और अनिवार्य लगा कि अपना गौरव बढ़ाने के लिए और जनता में अपना प्रभाव स्थापित करने के लिए वे प्राचीन वीर नायकों के समान निकल पड़ें और सारे संसार में भ्रमण करें। उन्होंने सोचा कि उन्हें भी कवच धारण कर, घोड़े पर सवार होकर नई-नई दुस्साहसपूर्ण यात्राओं पर निकलना चाहिए। क्योंकि वीर नायकों के बारे में उन्होंने पढ़ा था, जो संसार के दुःख दूर करने को घूमा करते थे और ऐसा करते वक्त भारी खतरे उठाया करते थे। उन्हें भी आशा हुई कि ऐसे साहसों से अन्त में वे भी एक शाश्वत गौरव प्राप्त कर सकेंगे और उनका यश दिगन्त में फैल जाएगा।

पहला काम जो उन्होंने किया, वह यह कि अपने परदादा के भारी कवच को भीतर से निकाला। वह बहुत पुराना हो गया था। अरसे से किसीने उसे छुआ तक नहीं था। उसपर जंग लग गया था। कौन जानता था कि एक दिन उसका फिर से प्रयोग किया जाएगा। इसके बाद वे अपने परिचित घोड़े के पास गए। उसकी हड्डियां निकल आई

थीं। चार दिन उनको यह सोचने में ही लग गए कि आखिर इस घोड़े को नाम क्या दिया जाए। एक नाम तय किया, फिर उसको रद्द कर दिया। फिर दूसरा तय किया, वह भी कुछ पसन्द नहीं आया। पसन्द किया गया, नापसन्द किया गया—बस, इसी प्रकार चलता रहा। आखिर में उन्होंने उसका नाम रोजेनान्ते रखा। जब घोड़े को नाम दे दिया गया तो उनका मन संतुष्ट हो गया। अब समस्या यह आई कि अपने लिए कौन-सा बढ़िया-सा नाम चुनें, जो वीरता एवं शौर्य का सूचक हो। बड़ी गम्भीरता से इसपर विचार करने के बाद—आठ दिन तक परिश्रम करने के बाद—उन्होंने यह निश्चय किया कि वे अपना नाम रखें : डॉन क्विक्ज़ोट। दो बातें पूरी हो गईं। आखिरी रह गई। प्राचीनकाल के वीर नायक अपने लिए एक प्रिया चुन लिया करते थे, जिसके लिए वे अपने हृदय को समर्पित कर दिया करते थे। ऐसी कौन-सी स्त्री हो सकती थी, जिसके लिए वे इस संसार में काम करें ? घर के निकट ही एक गंवई लड़की रहा करती थी। उसके प्रति इनका हृदय कुछ आकर्षित भी था, हालांकि वह बेचारी कुछ नहीं जानती थी कि उसपर कौन मर रहा है, और न इसके बारे में उसकी कोई रुचि ही थी। उसका नाम था अलडोलेन्ज़ा लोरेन्ज़ा। हमारे वीर क्विक्ज़ोट ने यह निश्चय किया कि उसका नाम भी बदला जाना चाहिए; और उसका नाम उन्होंने रखा डलसीनिया। और जिस जगह वह पैदा हुई थी, उस स्थान के नाम पर उन्होंने उसके नाम के आगे डेलटेबोसो और जोड़ दिया। सब तैयारियां पूरी हो गईं। अब काम करने की जरूरत थी। इस समय अपने-आपको रोक लेना एक जुर्म के बराबर था, क्योंकि दुनिया एक ऐसे मसीहा का इन्तज़ार कर रही थी जो उसके दुःखों को दूर कर सके।

एक दिन भोर में मुंह-अंधेरे, अपनी कल्पना में मग्न, अपने इरादों को पूरा करने के लिए, उन्होंने अपना कवच पहना, अपना भाला थामा, रोजेनान्ते पर चढ़े और अपने घर के पिछवाड़े के दरवाज़े से चुपचाप बाहर निकल गए।

सारा दिन निकल गया यात्रा करते-करते। कोई भी साहस दिखाने योग्य वस्तु मार्ग में दिखाई नहीं दी। उनके हृदय में निराशा भरने लगी, क्योंकि वे चाहते थे कि निकट भविष्य में ही, पास में ही कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाए जिसपर अपना ज़ोर आज़मा सकें, जिसको अपनी भुजाओं का पराक्रम दिखा सकें। धीरे-धीरे सांझ हो गई और उन्हें दूर से एक सराय दिखाई दी। हमारे वीर नायक ने कल्पना की कि वह एक सराय नहीं थी, बल्कि एक किला था। किले की कल्पना ने ही उनकी रगों में खून दौड़ा दिया। उसी समय ऐसा हुआ कि सूअर पालनेवाला एक व्यक्ति अपना सिंहा बजाने लगा। डॉन क्विक्ज़ोट को लगा कि कोई तुरही बज रही है, मानो एक बौने ने किलेवालों को उनके आगमन की सूचना दे दी थी। उनके हृदय में अत्यन्त हर्ष प्रवाहित होने लगा और वे सराय के दरवाज़े तक घोड़े पर सिर उठाए जमे बैठे रहे। सरायवाले ने उनकी विचित्र वेश-भूषा देखी तो उसको हंसी आ गई, क्योंकि उसने ऐसे विचित्र व्यक्ति को कभी देखा नहीं था। वह बोला, "हे वीर नायक, श्रीमंत, अगर आपकी इच्छा हो तो उतर जाइए। यहां आपको प्रत्येक वस्तु मिल जाएगी। केवल शय्या का अभाव है, बाकी जितनी भी आवश्यकताएं हैं, वे आपको मिल जाएंगी। आप केवल उनकी कल्पना-भर कर लें।"

डान क्विक्ज़ोट ने जब किले के मालिक की ऐसी विनम्रता देखी, तो उनकी, दुर्ग की एक कल्पना पूरी हो गई। अब दूसरी कल्पना का तोष भी आवश्यक हो गया। वे सराय के मालिक यानी दुर्गपति से बोले, "दुर्गपति, मुझे तो संसार में कम से कम वस्तुओं से भी संतोष हो जाता है। मैं तो केवल इन शस्त्रों और कवच-मात्र की अत्यधिक चिन्ता करता हूं। युद्ध-भूमि ही मेरे लिए शय्या है।"

जब वे भोजन कर चुके तो उन्होंने सराय के मालिक—दुर्गपति—को बुलाया। अस्तबल तक उसके साथ गए। वहां उसके चरणों पर गिर पड़े और बोले, "मैं कभी इस स्थान से नहीं उठूंगा। ओ मेरे करुणामय दुर्गपति! तुम मुझे एक वरदान दो; उस वरदान से तुम्हारा गौरव और सम्मान मानवता के कल्याण के लिए द्विगुणित हो जाएगा!"

दुर्गपति उर्फ सराय का मालिक यह देखकर घबरा गया और उसने बड़ी कठिनाई से उनको उठाया, लेकिन फिर भी वह सफल नहीं हो सका, क्योंकि वे दुर्गपति के चरणों पर गिर-गिर पड़ते थे और निरन्तर वरदान मांगते रहे। डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "हे मेरे करुणामय, दुर्गपति, मुझे आपसे ऐसी ही आशा थी, इसलिए मैं आपसे यह वरदान मांगता हूं। हे दयालु, कल ही मुझे वीर नायक का पद आप दे दें। यह हो जाने से मेरी कल्पना सतुष्ट हो जाएगी और आप जैसे वीर के लिए यह करना कोई कठिन भी नहीं है। आज रात आप देखिए कि मैं आपके दुर्ग में क्रूस-तले अपने कवच की रक्षा कैसे करता हूं, और प्रातःकाल आप, मेरे शौर्य को देखकर, मुझे सन्तुष्ट कर दीजिएगा।"

जब सराय के मालिक ने उन्हें इस तरह ऊटपटांग बकते हुए देखा तो वह समझ गया कि उसके इस अतिथि के दिमाग मे कुछ खलल है। उसने सोचा कि आज की रात कुछ दिल्लगी की जाए। वह बोला, "हे वीर! इस समय बात ऐसी है कि क्रूस तो दुर्ग में नहीं है। पहलेवाला क्रूस बहुत पुराना पड़ गया था, अतः नया बनवाने के लिए मैंने उसे उतरवा दिया; लेकिन जहां तक आपके शस्त्रों की देखभाल का सवाल है, आप दुर्ग के आंगन में अपना काम कर सकते हैं। सुबह बाकायदा एक उत्सव मना लिया जाएगा और आपको वीर नायक की पदवी दे दी जाएगी।"

यह बात तय हो गई। डॉन क्विक्ज़ोट दुर्ग के आंगन में आ गए। विशाल प्रांगण था। सराय के बगल की ज़मीन तमाम खाली पड़ी थी। अब वीर नायक डॉन क्विक्ज़ोट ने अपने कवच को उतारा। अपने भाले को ठीक से थामा। अपने सारे वस्त्रों को समेट लिया। वहां पास ही एक कुआं था; और कुएं के बगल में घोड़ों को पानी पिलाने के लिए एक हौज़-सा बना हुआ था। अंधेरा गहरा होने पर, अपने कवच और भाले को हाथों में थाम, वे कुछ देर इधर-उधर चहलकदमी करते रहे और फिर बड़े गौरव के साथ चलते हुए उस हौज़ के निकट गए। दूर से सरायवाले ने देखा और बाकी लोगों ने भी, जो इस कौतुक को देख रहे थे, कि डॉन क्विक्ज़ोट ने अपने कवच और वस्त्रों को उस हौज़ के अन्दर रख दिया। इसके बाद उनकी टकटकी उस हौज़ की ओर ही लगी रही। वे अपने वस्त्रों-शस्त्रों की चौकसी कर ही रहे थे, कि एक सईस को पानी की ज़रूरत पड़ी। वह चाहता था कि अपने खच्चरों को कुछ पानी पिला दे, लेकिन मुसीबत यह थी जब तक कवच हौज़ में से हटाया

नहीं जाए, वह उसमें से पानी नहीं ले सकता था। डॉन क्विक्ज़ोट ने सईस को देखा तो चिल्लाकर बोले, "खबरदार ? जो कोई भी हो, कायर या वीर, यह सोच ले, मेरे अस्त्रों पर अगर तूने हाथ डाला तो आज तक तुझे ऐसा वीर नायक नहीं मिला होगा ! मेरे प्रत्येक शब्द को तू खड्ग-समान समझ ! सावधान हो, ऐसी दुष्टता न कर ! यदि तूने अपने अपवित्र हाथों से मेरे अस्त्रों का स्पर्श भी किया तो समझ ले कि मृत्यु तेरे सिर पर मंडरा रही है और वह तेरे सिर पर टूट पड़ेगी ! तेरी हिमाकत का नतीजा सिवाय इसके और कुछ नहीं होगा !"

पानी ले जानेवाले ने देखा कि एक आदमी उसके सामने बुरी तरह चिल्ला रहा है। उसने सोचा कि आखिर यह मेरा क्या कर लेगा ! उसने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। और तस्मे पकड़कर कवच को बाहर खींच लिया, बिना किसी तरफ ध्यान दिए उसने उसे दूर फेंक दिया और अपने काम में लग गया। डॉन क्विक्ज़ोट ने इस अपमान को देखा। पहले आंख आकाश की ओर उठाई और मन में श्रीमती डलसीनिया से बात करते हुए बोले, 'हे देवी, मेरी सहायता करो !' और पुकार उठे, 'यह मेरे जीवन का, यह तुम्हारे दास का पहला संघर्ष है, इसमें मुझको बल दो !' इस प्रकार प्रेमिका का ध्यान करते हुए उन्होंने अपना भाला दोनों हाथों से उठा लिया और पानी ले जानेवाले के सिर पर इतने जोर से मारा कि उसका सिर फट गया। वह घायल होकर, पीड़ा से व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर गया। जब यह हो गया तो डॉन क्विक्ज़ोट ने कवच उठा लिया और फिर हौज़ के अन्दर जा रखा। तदुपरांत उसके चारों ओर इस प्रकार चहलकदमी करने लगे, जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो।

सरायवाले ने जब इस घटना को देखा तो यह पागलपन उसे पसन्द नहीं आया क्योंकि इसमें उसको खतरा था। लिहाजा, उसने यह ठीक समझा कि उनको वहां से टरकाया जाए और वह 'अभागा' वीर नायक का पद शीघ्र दे दिया जाए, ताकि कोई ज्यादा गड़बड़ी न हो। इसलिए वह आगे आया और बोला, "श्रीमंत, वीर नायक, इस मूर्ख ने आपका अपमान करने की चेष्टा की, इसलिए आप उसको क्षमा कर दें। आपने इस योग्यता से अपने शस्त्रों की देखभाल की है, कि आपकी मुक्त-कंठ से प्रशंसा करनी होगी। अब आप तैयार हो जाइए। मैं इसी समय आपको वीर नायक का पद प्रदान करता हूं, जिससे आप आगे बढ़ सकें !"

यह कहकर, जिस बही में वह कहार का हिसाब लिखा करता था और फूस और अनाज लानेवाले का हिसाब चढ़ाया करता था, उसी बही को लेकर वह खड़ा हो गया। डॉन क्विक्ज़ोट उसके सामने घुटनों के बल बैठ गए। तब सरायवाले ने अपने रोज़नामचे को कुछ ऐसे पढ़ने हुए, जैसे पवित्र मंत्रों का उच्चारण कर रहा हो, अपने हाथ ऊपर उठाए, मानो वह किसी गम्भीर विचार में डूब गया हो। तब उसने एक तलवार ली। तलवार की चपटी ओर से उसने डॉन क्विक्ज़ोट की गर्दन पर हलका-सा आघात किया और पीठ थपथपाई। जब वह यह असाधारण कृत्य कर चुका तो उसने, जैसे वह बहुत जल्दी में हो, डॉन क्विक्ज़ोट को वीर नायक की पदवी दे दी। और डॉन क्विक्ज़ोट तुरन्त वहां से चल दिए, क्योंकि अब जीवन में नये-नये 'एडवेंचर' की आवश्यकता थी। अभी वे दो मील भी नहीं

डान क्विक्ज़ोट ने जब किले के मालिक की ऐसी विनम्रता देखी, तो उनकी दुर्ग की एक कल्पना पूरी हो गई। अब दूसरी कल्पना का तोष भी आवश्यक हो गया। वे सराय के मालिक यानी दुर्गपति से बोले, "दुर्गपति, मुझे तो संसार में कम से कम वस्तुओं से भी संतोष हो जाता है। मैं तो केवल इन शस्त्रों और कवच-मात्र की अत्यधिक चिन्ता करता हूं। युद्ध-भूमि ही मेरे लिए शय्या है।"

जब वे भोजन कर चुके तो उन्होंने सराय के मालिक—दुर्गपति—को बुलाया। अस्तबल तक उसके साथ गए। वहां उसके चरणों पर गिर पड़े और बोले, "मैं कभी इस स्थान से नहीं उठूंगा। ओ मेरे करुणामय दुर्गपति ! तुम मुझे एक वरदान दो; उस वरदान से तुम्हारा गौरव और सम्मान मानवता के कल्याण के लिए द्विगुणित हो जाएगा !"

दुर्गपति उर्फ सराय का मालिक यह देखकर घबरा गया और उसने बड़ी कठिनाई से उनको उठाया, लेकिन फिर भी वह सफल नहीं हो सका, क्योंकि वे दुर्गपति के चरणों पर गिर-गिर पड़ते थे और निरन्तर वरदान मांगते रहे। डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "हे मेरे करुणामय, दुर्गपति, मुझे आपसे ऐसी ही आशा थी, इसलिए मैं आपसे यह वरदान मांगता हूं। हे दयालु, कल ही मुझे वीर नायक का पद आप दे दें। यह हो जाने से मेरी कल्पना संतुष्ट हो जाएगी और आप जैसे वीर के लिए यह करना कोई कठिन भी नहीं है। आज रात आप देखिए कि मैं आपके दुर्ग में क्रूस-तले अपने कवच की रक्षा कैसे करता हूं, और प्रातःकाल आप, मेरे शौर्य को देखकर, मुझे सन्तुष्ट कर दीजिएगा।"

जब सराय के मालिक ने उन्हें इस तरह ऊटपटांग बकते हुए देखा तो वह समझ गया कि उसके इस अतिथि के दिमाग में कुछ खलल है। उसने सोचा कि आज ही इससे कुछ दिल्लगी की जाए। वह बोला, "हे वीर ! इस समय बात ऐसी है कि क्रूस तो दुर्ग में नहीं है। पहलेवाला क्रूस बहुत पुराना पड़ गया था, अतः नया बनवाने के लिए मैंने उसे उतरवा दिया; लेकिन जहां तक आपके शस्त्रों की देखभाल का सवाल है, आप दुर्ग के आंगन में अपना काम कर सकते हैं। सुबह बाकायदा एक उत्सव मना लिया जाएगा और आपको वीर नायक की पदवी दे दी जाएगी।"

यह बात तय हो गई। डॉन क्विक्ज़ोट दुर्ग के आंगन में आ गए। विशाल [illegible] था। सराय के बगल की ज़मीन तमाम खाली पड़ी थी। अब वीर नायक डॉन क्विक्ज़ोट ने अपने कवच को उतारा। अपने भाले को ठीक से थामा। अपने सारे वस्त्रों को समेट लिया। वहां पास ही एक कुआं था; और कुएं के बगल में घोड़ों को पानी पिलाने के लिए एक हौज़-सा बना हुआ था। अंधेरा गहरा होने पर, अपने कवच और भाले को हाथों में ले, वे कुछ देर इधर-उधर चहलकदमी करते रहे और फिर बड़े गौरव के साथ चलते हुए उस हौज़ के निकट गए। दूर से सरायवाले ने देखा और बाकी लोगों ने भी, जो इस कौतुक को देख रहे थे, कि डॉन क्विक्ज़ोट ने अपने कवच और वस्त्रों को उस हौज़ के अन्दर रख दिया। इसके बाद उनकी टकटकी उस हौज़ की ओर ही लगी रही। वे अपने वस्त्रों की चौकसी कर ही रहे थे, कि एक सईस को पानी की ज़रूरत पड़ी। वह चाहता था कि अपने खच्चरों को कुछ पानी पिला दे, लेकिन मुसीबत यह थी जब तक कवच हौज़ में है [illegible]

नहीं जाए, वह उसमें से पानी नहीं ले सकता था। डॉन क्विक्ज़ोट ने सईस को देखा तो चिल्लाकर बोले, "खबरदार ? जो कोई भी हो, कायर या वीर, यह सोच ले, मेरे अस्त्रों पर अगर तूने हाथ डाला तो आज तक तुझे ऐसा वीर नायक नहीं मिला होगा ! मेरे प्रत्येक शब्द को तू खड्ग-समान समझ ! सावधान हो, ऐसी दुष्टता न कर ! यदि तूने अपने अपवित्र हाथों से मेरे अस्त्रों का स्पर्श भी किया तो समझ ले कि मृत्यु तेरे सिर पर मंडरा रही है और वह तेरे सिर पर टूट पड़ेगी ! तेरी हिमाकत का नतीजा सिवाय इसके और कुछ नहीं होगा !"

पानी ले जानेवाले ने देखा कि एक आदमी उसके सामने बुरी तरह चिल्ला रहा है। उसने सोचा कि आखिर यह मेरा क्या कर लेगा ! उसने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। और तस्मे पकड़कर कवच को बाहर खींच लिया, बिना किसी तरफ ध्यान दिए उसने उसे दूर फेंक दिया और अपने काम में लग गया। डॉन क्विक्ज़ोट ने इस अपमान को देखा। पहले आंख आकाश की ओर उठाई और मन में श्रीमती डलसीनिया से बात करते हुए बोले, 'हे देवी, मेरी सहायता करो !' और पुकार उठे, 'यह मेरे जीवन का, यह तुम्हारे दास का पहला संघर्ष है, इसमें मुझको बल दो !' इस प्रकार प्रेमिका का ध्यान करते हुए उन्होंने अपना भाला दोनों हाथों से उठा लिया और पानी ले जानेवाले के सिर पर इतने जोर से मारा कि उसका सिर फट गया। वह घायल होकर, पीड़ा से व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर गया। जब यह हो गया तो डॉन क्विक्ज़ोट ने कवच उठा लिया और फिर हौज के अन्दर जा रखा। तदुपरांत उसके चारों ओर इस प्रकार चहलकदमी करने लगे, जैसे कुछ हुआ हो नहीं हो।

सरायवाले ने जब इस घटना को देखा तो यह पागलपन उसे पसन्द नहीं आया क्योंकि इसमें उसको खतरा था। लिहाज़ा, उसने यह ठीक समझा कि उनको वहां से टरकाया जाए और वह 'अभागा' वीर नायक का पद शीघ्र दे दिया जाए, ताकि कोई ज्यादा गड़बड़ी न हो। इसलिए वह आगे आया और बोला, "श्रीमंत, वीर नायक, इस मूर्ख ने आपका अपमान करने की चेष्टा की, इसलिए आप उसको क्षमा कर दें। आपने इस योग्यता से अपने शस्त्रों की देखभाल की है, कि आपकी मुक्त-कंठ से प्रशंसा करनी होगी। अब आप तैयार हो जाइए। मैं इसी समय आपको वीर नायक का पद प्रदान करता हूं, जिससे आप आगे बढ़ सकें !"

यह कहकर, जिस बही में वह कहार का हिसाब लिखा करता था और फूस और अनाज लानेवाले का हिसाब चढ़ाया करता था, उसी बही को लेकर वह खड़ा हो गया। डॉन क्विक्ज़ोट उसके सामने घुटनों के बल बैठ गए। तब सरायवाले ने अपने रोजनामचे को कुछ ऐसे पढ़ने हुए, जैसे पवित्र मन्त्रों का उच्चारण कर रहा हो, अपने हाथ ऊपर उठाए, मानो वह किसी गम्भीर विचार में डूब गया हो। तब उसने एक तलवार ली। तलवार की चपटी ओर से उसने डॉन क्विक्ज़ोट की गर्दन पर हलका-सा आघात किया और पीठ थपथपाई। जब वह यह असाधारण कृत्य कर चुका तो उसने, जैसे वह बहुत जल्दी में हो, डॉन क्विक्ज़ोट को वीर नायक की पदवी दे दी। और डॉन क्विक्ज़ोट तुरन्त वहां से चल दिए, क्योंकि अब जीवन में नये-नये 'एडवेंचर' की आवश्यकता थी। अभी वे दो मील भी नहीं

गए थे कि उनको सामने से कुछ लोग आते दिखाई दिए। वे टोलेडो के सौदागर थे। ज्योंही नायक महोदय ने उन्हें देखा, उनकी कल्पना जग उठी। उन्हें ऐसा लगा कि सामने से कोई शत्रु आ रहे हैं। तुरन्त रकाब पर खड़े हो गए और घोड़े को सन्नद्ध कर लिया, भाला उठा लिया और सीने के आगे अपनी ढाल लगा ली और बीच सड़क पर खड़े होकर पुकारने लगे, "रुक जाओ ! सब रुक जाओ ! अब यह आशा छोड़ दो कि तुम इस पथ से बचकर निकल सकोगे। पहले इस बात को स्वीकार कर लो कि इस समस्त ब्रह्माण्ड पर लामांचा की सम्राज्ञी अतुलनीय रूपवती डलसीनिया डेल्टेबोसो के अतिरिक्त और कोई भी ऐसी स्त्री नहीं है जिसका कि वर्णन किया जा सकता है ; सौन्दर्य में वह सिरमौर है।" सामने से आनेवाले लोगों ने जब यह देखा तो उनको यह लगा कि बूढ़े का दिमाग चल गया है। एक सौदागर उनमें दिल्लगीबाज था। उसने कहा, "श्रीमंत, मैं आपकी बात समझा नहीं। वीर नायक, आप जिस सुन्दरी की बात कर रहे हैं, हम उसे नहीं जानते। पहले इसे प्रमाणित करने के लिए, कि वह अप्रमेय सुन्दरी है, आप उनके दर्शन हमें कराएं, अन्यथा हम आपकी बात को कैसे स्वीकार कर सकते हैं !"

डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "यदि मैंने एक बार वह सौन्दर्य तुमको दिखा ही दिया, तो इतनी बड़ी सच्चाई को स्वीकार करने में कमाल ही क्या रहा ! उसके रूप का महत्व तो इसीमें है कि तुम उसको अभी स्वीकार करो ; तुम उसको मान लो, तुम उसके बारे में सौगन्ध खाओ और उसके गुण बार-बार बखानो लेकिन उसको देखो नहीं।"

सौदागर ने उत्तर दिया, "श्रीमंत, वीर नायक, आप रुष्ट न हों, हमपर कृपा करें। न हो तो हमें उनका चित्र ही दिखा दिया जाए, अन्यथा हम कैसे इस बात पर विश्वास कर लें ? हां, चित्र के दर्शन के उपरांत सम्भवतः यह निश्चित रूप से मान लिया जाएगा कि आपकी अप्रमेय सुन्दरी की एक आंख खराब है अथवा वह कानी है और दूसरी आंख से कीच निकलता रहता है। फिर भी जैसा आप चाहेंगे, वह कहने को हम तत्पर हो जाएंगे।"

डॉन क्विक्ज़ोट ने रोष से कहा, "ओ नीच, ओ अधम, क्या कहा तूने ? आंख से कीच निकलता है ! अरे तू नहीं जानता कि अगर उसके अन्दर से कुछ निकलता भी है तो कस्तूरी के अतिरिक्त कुछ नहीं निकलता। लेकिन तूने इतना भयानक अपमान किया है मेरा, कि इसके लिए तुझे दंड स्वीकार ही करना पड़ेगा।"

यह कहकर उन्होंने अपना भाला उठा लिया और इतनी ज़ोर से सौदागर पर हमला किया कि सब लोग देखते रह गए। किन्तु सौदागर का भाग्य अच्छा था, कि इतने में रोज़ेनान्ते के पैर लड़खड़ाए और वह रास्ते के बीच में ही गिर पड़ा। आक्रमणकारी वीर नायक नीचे लुढ़क गया। काफी चोट आ गई। एक सईस डॉन क्विक्ज़ोट के पास आ गया जो नीचे पड़े चिल्ला रहे थे। उनका भाला उसने ले लिया और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। एक डंडा लेकर उसने वीर नायक की अच्छी तरह पिटाई की। डॉन क्विक्ज़ोट की मरम्मत करके सौदागर अपने रास्ते चले गए।

वीर नायक का भाग्य अच्छा था। एक किसान उधर से गुज़रा। दूर से उसने पृथ्वी पर किसीको पड़े हुए देखा। वह चक्की से लौट रहा था। उसके कंधे पर आटे का

बोरा था। भला आदमी था। उसने घायल वीर नायक को उठाया। अत्यन्त कठिनाई से उन्हें अपने गधे पर चढ़ाया। बेचारे वीर नायक के हथियार और कवच रोजेनान्ते की पीठ पर लादे, और उन दोनों को नायक के गांव की ओर हांक ले चला।

उधर पादरी और नाई, डॉन क्विक्ज़ोट की भतीजी और उसका नौकर सब लोग घर के बाहर ही प्रतीक्षा कर रहे थे। वे लोग चिन्ता कर रहे थे कि बूढ़े महाशय न जाने कहां चले गए हैं। उनको दूर से आता हुआ देखा, तो सब दौड़ पड़े और उनसे लिपट पड़े। डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "दूर हो जाओ, किसी प्रकार धीरज धरो, अपने हृदय को संतोष दो, क्योंकि यह समय संकट का है। मैं बहुत बुरी तरह घायल हो गया हूं, क्योंकि *मेरा घोड़ा मुझे ठीक समय पर धोखा दे गया।* मुझे मेरी शय्या पर ले चलो; और हो सके तो अरगंडा नाम की जादूगरनी को बुलाओ, ताकि वह मेरे घावों को ठीक कर सके।"

पन्द्रह दिन बीत गए, पूरे पन्द्रह दिन। वीर नायक चुपचाप अपने घर पर पड़े रहे। उन्होंने उन दिनों कोई उत्साह नहीं दिखाया। उन दिनों उनकी बातचीत केवल अपने दो मित्रों से होती रही। वे उनसे कहते थे कि संसार को उनके जैसे वीर नायक की आवश्यकता है, और वही एक ऐसे व्यक्ति हो सकते हैं जो संसार की बुराइयों को दूर कर सकें, फिर से शांति और सुख स्थापित कर सकें।

इस बीच में डॉन क्विक्ज़ोट ने अपने एक पड़ोसी को बुलाया। वह बेचारा गरीब आदमी था, मजबूर था, पर था भला, ईमानदार। और यों भी गरीब आदमी को ईमानदार ही कहा जा सकता है। और वह तो पैसे और दिमाग दोनों मे विपन्न था। उसको वीर नायक ने इतनी पट्टी पढ़ाई, इतनी बातें समझाईं, इतने तर्क-वितर्क उससे किए, उससे इतने तरह-तरह के वायदे किए कि वह बेचारा सिड़ी आखिर में उनके साथ साहसिक अभियान पर चलने को तैयार हो गया। मतलब यह कि वह उनका सहायक हो गया। कई बातें जो उन्होंने उसको बताईं, उनमें एक यह भी थी कि ऐसा साहस करके बहुत मुमकिन है कि वे किसी द्वीप की विजय प्राप्त कर लें, और तब वे अपने सहायक को निश्चय ही उसका स्वामी बना देंगे। इतना बड़ा लालच सेंको पांजो कैसे नजरअंदाज कर सकता था। उसने अपनी पत्नी को छोड़ दिया, बच्चों को परित्याग कर दिया और अपने पड़ोसी वीर नायक का सहायक बनने के लिए तैयार हो गया।

रात का समय था। दोनों चुपचाप घर से निकले। किसीको भी इसकी आशा नहीं थी। जब वे चले तो सेन्कोपांजा ने कहा, "हे स्वामी, हे मेरे वीर नायक, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं, कृपया एक बात का फिर मुझे वचन दे दें। जब आप द्वीप पर विजय कर लेंगे तो मुझे उसका स्वामी बनाना तो नहीं भूलेंगे न? और विश्वास कीजिए कि मैं बड़ा अच्छा शासन करूंगा। लेकिन एक बात अवश्य है। द्वीप बहुत बड़ा नहीं होना चाहिए, अन्यथा मुझे शासन में कष्ट होगा।"

डॉन क्विक्ज़ोट ने उत्तर दिया, "मेरे दोस्त, मेरे सहायक! तुम इस बात को जान लो कि वीर नायकों में प्राचीन काल से यह परम्परा थी कि वे अपने सहायकों को किसी द्वीप का या किसी साम्राज्य का स्वामी बना दिया करते थे, क्योंकि विजित प्रदेश पर अपने आदमी रखने की आवश्यकता पड़ा करती थी। अब मैं न केवल उस पुरानी गौरवमयी

परम्परा की रक्षा करूंगा, मैं उसमें सुधार करूंगा। यदि मैं और तुम जीवित रहे और मैंने किसी साम्राज्य को जीत लिया और मैंने कई साम्राज्य अपने अधीन कर लिए तो निश्चय ही मैं तुम्हें अपने कुल विजित साम्राज्य के आधे का सम्राट ही बना दूंगा।"

सेन्कोपांजा ने उत्तर दिया,"श्रीमन्, यदि ऐसा हुआ और आपके चमत्कार से, जैसा आप कहते हैं, मैं सम्राट बन गया तो मेरी पत्नी—मेरी म्यूटीरेज—रानी हो जाएगी और मेरे बच्चे राजकुमार का दर्जा पा जाएंगे।"

डॉन क्विक्ज़ोट ने ज़ोर देकर कहा, "अरे, इसमें भी क्या कोई सन्देह की बात है ?"

सेन्कोपांजा ने कहा, "मुझे इसमें सन्देह है। मैं इस बात का विश्वास नहीं करता। आखिर इस बात का कोई सिर-पैर भी तो हो ! आप साम्राज्य की वर्षा कर दें, पृथ्वी पर मेरे सामने एक के बाद एक साम्राज्य आ जाए, लेकिन मेरी पत्नी के योग्य उनमें से एक भी होगा क्या ? मैं आपको एक बात बता दूं, वह तो दो कौड़ी की भी नहीं है ! नहीं, नहीं, उसको रानी बनाना ठीक नहीं। मैं तो यह चाहता हूं कि आप उसको काउण्टेस का दर्जा दे दें, रानी का स्थान उसके लिए बहुत ऊंचा है।"

इस प्रकार जब वे बातें कर रहे थे, दूर तीस या चालीस पवनचक्कियां दिखाई दीं जिनके कि पंखे सामने से घूमते दिखाई दे रहे थे। ज्योंही वीर नायक ने उनको देखा, वे चिल्ला पड़े, "वो, सौभाग्य जाग रहा है, देखो, भाग्य हमें किधर ले आया है ! जिधर हम चाहते थे, वहीं हमारा पथ खुल गया है। देखते हो, मित्र सेन्को, देखते हो, तीस या चालीस *भयानक* दैत्य सामने खड़े दिखते हैं। अब मेरी लालसा पूर्ण होने का समय आ गया है। मैं इनसे युद्ध करूंगा। आज मेरा पराक्रम तुम देखना। इन सबको मैं जीवन से विहीन कर दूंगा और फिर हम इनकी सम्पत्ति को लूटेंगे। और वह सब न्यायपूर्वक हमारा होगा।' इसमें सन्देह *नहीं कि कितनी भयानक है यह जाति, जो सामने खड़ी है;* क्या इसका नाश होने से स्वर्ग के अधिकारी हमसे प्रसन्न नहीं होंगे ? इन लोगों का आतंक तो सब लोगों पर जमा हुआ होगा। पृथ्वी इनके भार से कांप रही है।"

सेन्कोपांजा ने कहा, "कहां हैं वे, दिखाइए स्वामी ! वे जो आपके सामने दिखाई दे रहे हैं ?"

डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "हां, वे जो सामने खड़े हुए हैं। जिनकी विशाल भुजाएं घूम रही हैं। कितनी घृणित है यह जाति ! इनके हाथ हैं या विशाल पंजों की तरह वायु को फाड़े दे रहे हैं। कितनी दूर-दूर तक उनका प्रसार है !"

सेन्कोपांजा ने कहा, "श्रीमंत, गौर से देखिए। सामने जो आपको दैत्य दिखाई दे रहे हैं, वे कोई दैत्य या दानव नहीं हैं, वे तो पवनचक्कियां हैं और *जिन भुजाओं* की आप कल्पना कर रहे हैं, वे उनके सामने के पंखे हैं। हवा उनको चला रही है और वे घूम *रहे हैं। उनके घूमने से भीतर पनचक्की चलती है।"*

क्विक्ज़ोट ने चिल्लाकर कहा, "मूर्ख, तू क्या जाने ! मैं जो तुमसे कहता हूं, वे दानव हैं। और यदि तू भयभीत हो रहा है तो उधर सामने खड़ा हो जा और प्रार्थना कर, कि मैं [illegible] चुका हूं कि आज के इस कठिन संघर्ष में, आज के इस भीषण युद्ध

मैं पूरी तरह से जूझूंगा और इनको पराजित करूंगा। तू मेरे शौर्य को देखना। देखना कि मैं किस प्रकार आक्रमण करता हूं और किस प्रकार देखते-देखते वे विशालकाय दैत्य अपनी भुजाएं समेटे पृथ्वी पर गिर जाएंगे!"

यह कहकर उन्होंने रोजेनान्ते को एड़ मारी और उनका सहायक पीछे चिल्लाता रह गया, किन्तु उन्होंने ध्यान नहीं दिया। सैन्को पुकारने लगा, "श्रीमंत, ये दानव या दैत्य नहीं, ये तो पवनचक्कियां हैं।" लेकिन डॉन क्विक्ज़ोट अपने विचारों में इतने मग्न थे, उनकी कल्पना इतनी जाग्रत् हो गई थी कि उन्होंने उसकी एक बात भी नहीं सुनी और कोलाहल में उसके शब्द डूब गए।

दैत्यों की घूमती हुई भुजाएं डॉन क्विक्ज़ोट को आकर्षित करने लगीं और वे उत्तेजित होने लगे। वे गरजकर बोले, "ठहर जाओ, कायरो, ठहर जाओ। ओ नीच और जघन्यो, खड़े रहो! अब तुम्हारे लिए भागने का मार्ग नहीं है। तुम नहीं जानते कि किस पराक्रमी का सामना तुम्हें करना पड़ेगा। अपने-आपको सभालो, और देखो कि तुम्हारा काल आ गया है!" उसी समय हवा उठी और एक चक्की का पंखा ऊपर उठने लगा। तब डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "नीच, दुष्ट, तू यह चाहता है कि अपनी ये भीम भुजाएं मेरी ओर बढ़ाए, जैसे कि दैत्य बरायारियस अपनी भुजाएं फैलाया करता था; लेकिन तुझे इस कुचेष्टा के लिए पछताना पड़ेगा। मेरे सामने तेरा यह अहंकार नहीं चलेगा!" फिर डॉन क्विक्ज़ोट ने अपनी कल्पना में पलनेवाली प्रिया कुमारी डलसीनिया का स्मरण किया, मानो फिर भयानक आक्रमण करने के पहले उसकी सहायता की उन्हें आवश्यकता पड़ गई थी और अपनी ढाल को आगे करके, अपने भाले को झुकाकर, उन्होंने रोजेनान्ते को और भी तेज़ी से दौड़ाया और पनचक्की के पास जब वे पहुंचे तो अपना भाला मारा। हवा बड़ी तेज़ी से चल रही थी और पंखा भी तेज़ी से घूम रहा था। भाला टकराते ही टुकड़े-टुकड़े हो गया और पंखे की मार से वीर नायक और घोड़ा दोनों ही उलट-पुलट हो गए और पृथ्वी पर लुढ़ककर गिर गए।

सैन्कोपांजा अपने गधे पर जितनी तेज़ी से भाग सकता था, अपने स्वामी की सहायता के लिए दौड़कर गया और उन्हें पृथ्वी पर गिरा हुआ देखा। हिलने-डुलने की शक्ति भी उनमें बाकी नहीं थी। इतने ज़ोर की चपेट लगी थी पंखे की। घोड़ा भी बेहोश पड़ा हुआ था। सैन्को चिल्लाया, "दया करो भगवान! हे स्वामी! क्या मैंने आपसे पहले ही प्रार्थना नहीं की थी? क्या मैंने आपको सावधान नहीं कर दिया था? क्या मैंने पहले ही नहीं कहा था, ये पवनचक्कियां हैं। ऐसा तो कोई नहीं सोच सकता था जैसा आपने सोचा था। क्या आपके दिमाग में पवनचक्कियां दैत्य बन गई थीं?"

डॉन क्विक्ज़ोट ने उत्तर दिया, "शांत रहो, मित्र, शांत रहो। भाग्य बड़ा चंचल होता है और युद्ध मे उसका कोई भरोसा नहीं किया जा सकता। मैं जानता हूं कि भविष्य-वक्ता फरस्टन ने ही इन दैत्यों को पवनचक्की के रूप मे बदल दिया है ताकि जो गौरव मुझे मिलना चाहिए था वह मुझसे छीन लिया जाए। क्या बताऊं, जब भाग्य विरुद्ध हो जाए, जब ईश्वर में ही ईर्ष्या उत्पन्न हो जाए तो मैं क्या कर सकता हूं। लेकिन फिर जो कुछ जितने षड्यंत्र हैं, वे एक न एक दिन मेरी तलवार की धार के नीचे असफल हो

जाएंगे और मैं विजयी होकर इस संसार में प्रसिद्ध होऊंगा।"

सेन्को ने उत्तर दिया, "तथास्तु, तथास्तु। किन्तु इस समय तो चलिए।"

यह कहकर उसने उन्हें किसी तरह खड़ा किया। एक बार फिर वीर नायक अपने मरियल घोड़े पर चढ़े, क्योंकि उसकी भी हालत इस समय पूरी तरह से पस्त हो रही थी।

कुछ दूर तक वे चुपचाप चलते रहे। जब डॉन क्विक्ज़ोट ने सामने से बादलों की एक घुमड़न-सी देखी। वे बादल नहीं थे, वह तो उड़ती हुई धूल थी। वे ठिठक गए और बोले, "समय आ गया है। वह दिन आ गया है! सेन्को, अब सदैव के लिए प्रसन्नता हमारे जीवन में आ जाएगी। दुर्भाग्य हट गया है। मेरे जीवन में एक नया आलोक फैलने-वाला है। आज के दिन तुम मेरी भुजाओं की शक्ति देखो। तुम देखोगे कि मैं कितनी वीरता दिखा सकता हूं और बाद में अनन्त काल तक लोग उसके विषय में बातें किया करेंगे। उन्हें आश्चर्य होगा कि किसी समय डॉन क्विक्ज़ोट नाम का ऐसा पराक्रमी रहा करता था जिसने ऐसे अद्भुत कृत्य किए थे। देखते हो, यह धूल का बादल दिखाई दे रहा है, कोई भयानक सेना चली जा रही है और उसके पांवों से उठी हुई है यह धूल, और न जाने कितने-कितने राष्ट्र के लोग इस सेना में हैं!"

सेन्को ने आश्चर्य से देखा और उसको एक कौतूहल हुआ। उसने कहा, "श्रीमान्, यदि यह सेना है तब तो ये दो सेनाएं होनी चाहिए क्योंकि दूसरी ओर देखिए, सामने भी धूल के बादल घुमड़ते चले आ रहे हैं।"

डॉन क्विक्ज़ोट ने देखा तो हर्ष से विह्वल हो गए। उन्होंने कहा, "निश्चय ही दो सेनाएं हैं। कितनी विशाल सेना है! मालूम होता है, मैदान में एक-दूसरे से भिड़नेवाली हैं।"

उनकी कल्पना में सदैव ही युद्ध रहा करते थे। जादू, आश्चर्यजनक साहस-कथाएं, प्रेमी को विभोर कर देनेवाली कल्पनाएं और इसी प्रकार कई बातें उनके दिमाग में भरी हुई थी। जब भी किसी वस्तु को देखते, तुरन्त ही उनकी कल्पना उसी रूप में परिवर्तित कर देती और जो वे देखना चाहते थे वही उन्हें दिखाई देता, इसलिए वे नहीं देख पाए कि वे धूल के उठते हुए बादल हैं या वह वास्तव में भेड़ों के रेवड़ से उठी धूल है। वे एक ही सड़क पर दो अलग-अलग रास्तों से जा रही थीं। यह उन्हें दिखाई नहीं दिया। वे अपने निश्चय में इतने दृढ़ हो गए कि वे दो सेनाएं थीं और अन्त में सेनाओं ने भी इसका विश्वास कर लिया कि सचमुच वे दो सेनाएं हैं, जिनके पांवों की ध्वनि सुनाई दे रही थी।

सेन्को बोला, "श्रीमान्, अब हम क्या करें, आप कुछ आज्ञा दीजिए।"

डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "हम क्या करें। अरे, हम निर्बल की ओर से लड़ेंगे, जो कि दुःख में है। तुम जानते हो कि निर्बल की सहायता करना कितना परोपकार है। देखो, सेन्को, यह जो विशाल सेना आगे बढ़ रही है, यह ऐलीफिन फोरोस की सेना है, जो ताप्रो-बन्द के विशाल द्वीप का सम्राट है, वही उसको बढ़ा रहा है; और यह दूसरी जो सेना है वह उसके शत्रुओं की सेना है, गारामानटियन लोगों का सम्राट उसका नेता है। पेन्टापोलिन उसका साथी है। उसका नाम इसलिए पड़ा है कि वह अपनी सीधी भुजा को नंगी रखकर युद्धभूमि में उतरा करता है।"

सेन्को चिल्लाया, "श्रीमान्, आप तो ऐसे कह रहे हैं, जैसे सब कुछ जानते हैं, किन्तु ...

दे कोई दिखाई नहीं दे रहा है। पर कौन जानता है कि यह सब किसी जादूगर या चुड़ैल की करतूत न हो।"

डॉन क्विक्ज़ोट ने उत्तर दिया, "क्या तुम हिनहिनाहट नहीं सुनते ? क्या तुम तुरही निनाद नहीं सुनते ? क्या तुम नगाड़ों की बजती हुई आवाज़ को नहीं सुनते ?"

सैंको ने उत्तर दिया, "हे स्वामी, मैं सूअर की तरह अपने कानों को खड़ा किए हुए हूं लेकिन फिर भी मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा है। मुझे तो भेड़ों की मिनमिनाहट ही सुनाई दे रही है। हाय, मैं क्या बुरे दिन देखने के लिए चल पड़ा हूं।"

लेकिन डॉन क्विक्ज़ोट को सलाह पसन्द नहीं आई। वे चिल्लाकर बोले, "मूर्ख तू चुप रह।" और फिर आगे बढ़कर कहा, "जय हो, वीर नायक की जय हो। आगे बढ़ो ? वीर पेन्टोपोलिन की सेना में अपना पराक्रम दिखानेवाला वीर आत्मा, मैं आज तुम लोगों को अपना भीम शौर्य दिखाऊंगा !" और यह कहकर वे भेड़ों के रेवड़ पर टूट पड़े। ऐसा प्रचण्ड उत्साह उन्होंने दिखाया कि उन्होंने भेड़ों को चकरा दिया, उनमें खलबली मच गई, कुछ इधर भागने लगीं और कुछ उधर भागने लगीं। इन्होंने अपने शत्रुओं का इतना संहार किया कि पृथ्वी के ऊपर कई भेड़ों की लाशें गिरा दीं और रक्त बहने लगा।

जब गड़रियों ने यह देखा कि उनकी भेड़ें ख्वाहमख्वाह मारी जा रही हैं तो उन्होंने उन्हें रोकने की चेष्टा की, किन्तु वहां सुनता कौन था। अन्त में जब उनकी बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा तो उन्होंने अपनी गोफन निकाल ली और उनमें पत्थर लगा-लगा कर वीर नायक की ओर फेंकने लगे। वे पत्थर एक-एक मुट्ठी के बराबर थे। चारों ओर से पत्थरों की वर्षा होने लगी। दुर्भाग्य से एक पत्थर वीर नायक की पसली पर टकराया, वे पीड़ा से चिल्ला उठे। उनको ऐसा लगा कि वे मर गए हैं या कम से कम बहुत बुरी तरह घायल हो गए हैं। उनके पास एक मिट्टी का पात्र रहता था जिसमें वे पानी रखा करते थे। उन्होंने तुरन्त उसे निकाला और मुंह में लगाकर पानी पीने को हुए किन्तु वे एक घूंट भी नहीं ले सके थे कि ओर से एक और पत्थर आया। उसने उनका पात्र तोड़ दिया। वह पत्थर उनके हाथ पर लगा और दांतों से जा टकराया। दो-तीन दांत नीचे गिर पड़े। यह प्रहार इतना भयानक था कि कोलाहल में हमारे वीर नायक घोड़े पर से लुढ़क गए और पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे वे मर गए हों। जब गड़रियों ने यह देखा तो उनको डर हो आया कि कहीं उनसे हत्या न हो गई हो। उन्होंने अपनी भेड़ों को तेजी से हांका और लाश बनी हुई भेड़ों को उठाकर वे भाग गए। उन्हें डर था कि कहीं वे हत्या में गिरफ्तार न हो जाएं।

जब गड़रिये चले गए, सैंको भागकर आया और बोला, "मेरे स्वामी, मैंने पहले ही आपको परामर्श दिया था किन्तु आपने उस पर ध्यान नहीं दिया। क्या मैंने नहीं कहा था कि यह भेड़ों का रेवड़ है, कोई सेना नहीं ? मैं सच कहता हूं, भगवान मेरे अंजर-पंजर ढीले कर दे। मैं इतना भयानक दिन को देखने के लिए पैदा नहीं हुआ था। यदि आप इनसे ओर से उनके बार चल गए हैं और श्रीमन्त के दांत टूट गए हैं, तो मैं यही कहूंगा कि श्रीमन्त वीर नायक का नाम एक ही रखा जा सकता है—दुर्भाग्य का सामना करने-

वाला वीर नायक।"

उसी समय डॉन क्विक्ज़ोट चिल्लाया, "तुमने ठीक कहा, तुमने ठीक कहा सैंकोपांज़ा! मुझे तुमसे इसीकी आशा थी। प्राचीन काल के वीर नायकों के ऐसे ही वीर नाम हुआ करते थे। किसीको धधकते हुए खड्गवाला वीर नायक कहा जाता था, किसीको एकशृंगी वीर नायक कहा जाता था, किसीको अर्धनग्न, अर्धसिंहा वीर नायक कहा जाता था। समस्त भूमि पर वे ऐसे पराक्रमी नाम के साथ घूमा करते थे। निश्चय ही भविष्य में होनेवाला वह बुद्धिमान मेरा इतिहासकार तुममें यह शक्ति भर रहा है। तुममें कल्पना को जगा रहा है, इसलिए तूने नाम दिया है—दुर्भाग्य का सामना करनेवाला वीर नायक।"

जब वे लोग कुछ देर विश्राम कर चुके और डॉन क्विक्ज़ोट ने निकट ही बहते हुए एक झरने से अपने मुख को धोया और रक्त को पोंछा, तब वे फिर अपनी-अपनी सवारियों पर चढ़े और सीधे हाथ को चलकर राज-पथ पर आ गए। अभी वे अधिक दूर नहीं गए कि उन्हें एक घुड़सवार दिखाई दिया जिसके सिर पर कोई विचित्र-सी सोने जैसी चमकती हुई चीज़ रखी हुई थी। ज्यों ही वीर नायक ने उसे देखा, वे अपने सहायक से बोले, 'सैंको, देखते हो, सामने से कौन आ रहा है घोड़े पर? देखो सैंको, उसके सिर पर क्या चमक रहा है—मेम्ब्रीनो का शिरस्त्राण है वह!"

सैंको ने कहा, "मैं नहीं जानता श्रीमान, लेकिन यदि मुझे बोलने की आज्ञा दी जाए, यदि मेरे अपराध को क्षमा कर दिया जाए तो मैं यही कहूंगा कि आप वस्तु-स्थिति से बहुत दूर हैं।"

"मैं कहीं गलती कर सकता हूं?" डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "तू अनन्त अविश्वासी है, तू कभी विश्वास नहीं कर सकता। क्या तू नहीं देखता कि जो वीर नायक घोड़े पर चढ़ा हुआ चला आ रहा है उसके सिर पर सोने का शिरस्त्राण है।"

सैंको ने उत्तर दिया, "श्रीमत, शैतान ने शायद मुझे अन्धा कर दिया है लेकिन मैं तो केवल इतना ही देख रहा हूं कि जैसे मैं गधे पर चल रहा हूं, वैसे ही एक भूरे गधे पर बैठकर एक और आदमी चला आ रहा है। उसके सिर पर कोई ऐसी वस्तु अवश्य है जोकि चमचमा रही है, पर उसे सोने की तो नहीं कह सकता।"

वास्तविकता यह थी कि वहां दो गांव थे—एक इतना अधिक छोटा था कि उसमें एक दुकान भी नहीं थी, यहां तक कि नाई भी नहीं था। इसलिए बड़े गांव का नाई ही छोटेवाले गांव में भी जाया करता था और लोगों की हजामत बनाया करता था। कभी वह किसीके शरीर में जोंक लगाकर रक्त निकालता था, कभी किसीकी हजामत बनाता और मालिश आदि किया करता था। नाई अपनी कांसे की एक बड़ी पतीली अपने सिर पर ढंके चला जा रहा था। उसको डर था कि बूंदाबांदी में कहीं उसका टोप न बिगड़ जाए।

डॉन क्विक्ज़ोट ने जब उस कल्पनालोक के वीर को इस प्रकार आते हुए देखा तो तुरन्त अपना भाला उठा लिया और उसको सूचना दिए बिना ही वेग से उसपर आक्रमण कर दिया और चिल्लाने लगे, "नीच, दुष्ट, अपने-आपकी रक्षा कर, अन्यथा जो कुछ मेरा है उसे मेरे चरणों पर समर्पित कर दे!"

नाई बेचारा शान्ति से चला जा रहा था। उसे क्या मालूम था कि धडधडाता हुआ एक घोड़ा उसपर चढता चला आएगा और ऐसे गर्जन-तर्जन के साथ उसको घेर लिया जाएगा। उसके लिए इसके अलावा और कोई चारा नहीं था कि वह उस भाले की चोट झेल जाए। इसलिए वह तुरन्त गधे पर से ज़मीन पर कूद पड़ा; और जितनी जल्दी हो सका, अपने गधे और पतीली को छोड़कर वह वहां से भाग निकला। डॉन क्विक्ज़ोट ने सैंको को आज्ञा दी कि वह शिरस्त्राण को उठाकर उन्हें दे। सैंको ने बरतन उठाकर कहा, "सौगन्ध खाता हू मालिक, यह तो एक खास किस्म की पतीली है और बहुत मामूली-सी चीज है। इसे तो कोई चोर भी उठाकर ले जाने से इन्कार कर देगा।"

और यह कहकर उसने पतीली अपने मालिक को पकडा दी जिसने तुरन्त उसे अपने सिर के ऊपर पहन लिया। और हर तरफ घुमाकर कहा, "कम्बख्त, जिस किसी भी विधर्मी का यह प्रसिद्ध शिरस्त्राण है, उसका सिर निश्चय ही बहुत बड़ा रहा होगा क्योंकि देखो मेरे सिर से दुगुनी जगह चारों तरफ खाली है।"

सैंको को हसी आ गई। उसका मालिक नाई के बरतन को शिरस्त्राण कह रहा था।

अब वे लोग अपनी साहसिक यात्रा पर फिर से चल पड़े। रास्ते मे एक कुलीन ड्यूक और डचेज जगल मे शिकार खेलते हुए मिले। जब उन्होंने इन दो विचित्र प्राणियो को देखा, जो उनके सामने अत्यन्त विनम्र होकर आए थे, तो उन्हे कुछ याद आ गया। वे पहले ही ऐसे वीर नायक और उसके नौकर के बारे मे सुन चुके थे। अतः उन्होंने डॉन क्विक्ज़ोट को अपने दुर्ग पर निमन्त्रित कर दिया और सोचा कि इससे कोई अजीब दिल्लगी करके अपना मन बहलाया जाएगा। डॉन क्विक्ज़ोट ने गम्भीरता से निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और इसके बाद सब दुर्ग की ओर चल दिए। ड्यूक और डचेज़ ने मनोरंजन के साधन जुटाना प्रारम्भ कर दिए।

दुर्ग के उपवन मे जब वे भोज के उपरान्त पहुचे तो अचानक ही एक दूत दिखाई दिया जो बहुत ही विशालकाय था और उसकी सफेद दाढ़ी कमर तक लटक रही थी। उसने प्रार्थना की कि क्या उसकी दुःखी स्वामिनी त्रिफालदी यहां आ सकती है। जब उसे आज्ञा मिल गई तो बारह सेविकाएं उपवन मे आईं, जो सब शोक के वस्त्र पहने हुई थीं और उनके माथे पर हलके मलमल के नकाब पड़े हुए थे। उनके पीछे आई काउण्टेस त्रिफालदी। उसके पीछे और सेविकाएं थी।

वह कर्कश स्वर में बोली, "ओ परम वीर योद्धा, मैं तुम्हारे चरणों पर विनत हूं। तुम पराक्रम और शौर्य के स्तम्भ के समान हो। मेरी डूबती हुई आत्मा का उद्धार करने-वाले हो। केवल तुम ही मेरी इस व्याकुल आत्मा को सहायता दे सकते हो। तुम्हारे ही चरणों मे वह शक्ति है जो मुझे इस अपार यातना के सागर में से बाहर निकाल सकती है।"

और इसके बाद वह दुःखी स्वामिनी अपनी कथा सुनाने लगी। उसने बताया कि केण्डया की सुदूर भूमि से समुद्र का लांघती हुई वह आई थी। वह अन्तोनोमासिया की पुत्री थी। दुर्भाग्य से रानी की मृत्यु के बाद जब उसे पता चला कि उसकी माता ने दूसरा विवाह कर लिया है तब श्रीमती त्रिफालदी ही उस स्थान पर गलती से चली गई थी।

उसके भाई ने, जोकि एक भयानक दैत्य और जादूगर था और जिसका नाम था मलामब्रूनो, पति और पत्नी को क्रमशः मुर्गा और बन्दरिया बना दिया था और वे दोनों अब धातु के बने रखे थे। और उसी के जादू के कारण उसके तथा उसकी साथ की स्त्रियों के मुख पर सारे रन्ध्र खुल गए थे, उनमें पीड़ा हुई थी और ऐसा लगा था जैसे उनमें से कांटे और सुइयां निकल आई हों। और जब उन्होंने अपने हाथ चेहरों पर रगड़े तब उन्हें पता लगा कि उनकी घनी दाढ़ियां उग आई हैं। काउण्टेस की कथा समाप्त हो गई और इसके बाद उन स्त्रियों ने अपने नकाब उलट दिए और उनकी भयानक घनी दाढ़ियां दिखाई देने लगीं। उसने कहा, "यह है उस भयानक मलामब्रूनो का अत्याचार! उसने हमारे चेहरों के ऊपर ये कंटीली झाड़ियां उगा दी हैं अन्यथा पहले यहां की त्वचा अत्यन्त स्निग्ध थी।"

ड्यूक और डचेज़ को ऐसी अप्राकृतिक घटना के विषय में सुनकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ। और असन्तुष्ट स्वामिनी फिर कहने लगी, "जानते हैं, श्रीमंत, इस जगह से कैण्डया की राजधानी बहुत दूर है, कम से कम पांच हजार लीग होगी। मलामब्रूनो ने मुझसे कहा था कि जब तेरा भाग्य सुखी होगा तो तुझे एक वीर नायक योद्धा मिलेगा और वह हमारे जादू को नष्ट कर सकेगा और वह वीर नायक विश्व-विख्यात डॉन क्विक्ज़ोट के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता। और मैं उसके लिए एक प्रसिद्ध घोड़ा भेजूंगा जो माथे पर जड़ी लकड़ी की एक कील के ज़रिए उड़ेगा और उसपर लगाम नहीं होगी और फिर भी वह आकाश के बीच में वायु वेग से उड़ता हुआ चला जाएगा, मानो नर्क के दूत उसको प्रेरित कर रहे हों।"

सैंको ने कहा, "नहीं नहीं, यह तो बहुत कठिन काम है। मेरे मालिक को ऐसी कठिनाई में मत भेजो, वह तुम्हारा कोई प्रेमी नहीं है। और वह कौन-सा घोड़ा है जो हवा में उड़ेगा?"

उसी समय अचानक चार जंगली लोग उपवन में घुस आए। उनके सिर पर अंगूर की ढेर सारी लताएं थीं और कन्धे के ऊपर लकड़ी का एक विशाल घोड़ा था जिसे उन्होंने सबके सामने धरती पर रख दिया। उनमें से एक चिल्लाया, "जिसमें साहस हो वह इस भीमयन्त्र के ऊपर आरोहण करे!"

सैंको ने कहा, "मैं तो निश्चय ही इसपर नहीं चढ़ूंगा क्योंकि न तो मैं वीर हूं और न नायक ही।"

डॉन क्विक्ज़ोट ने पुकारकर कहा, "श्रीमती, मैं इस कार्य को अपने सम्पूर्ण हृदय के साथ करूंगा। मैं किसी गद्दे पर सोने के लिए आतुर नहीं हूं और न मुझे अब एक क्षण की भी ज़रूरत है। मैं इसी समय इस घोड़े के ऊपर चढ़ूंगा!"

सैंको ने कहा, "इतनी आतुरता मुझे बिलकुल नहीं है। नहीं, नहीं मुझे इतनी आतुरता की क्या आवश्यकता है! अगर इसके ऊपर चढ़ने के लिए साहस की आवश्यकता है तो पहले स्वामी ही चढ़ें। और मेरी राय तो यह है कि ये देवियां अपनी दाढ़ी उस्तरे से व्यथित हो गई हैं, किसी नाई का इन्तज़ाम कर लें तो इस घोड़े पर चढ़ने की इसे आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी।"

ड्यूक ने सैंकोपांजा का साहस बढ़ाया और कहा, "अगर तुम इस घोड़े पर अपने वीर स्वामी के साथ चढ़ोगे और लौट आओगे, तो तुम एक विशाल द्वीप के स्वामी बना दिए जाओगे।"

सैंको चिल्ला उठा, "बस बस, श्रीमंत अब कुछ न कहें। मैं तो केवल एक अदना सेवक हूं। लेकिन नीचता का नाश हो। चढ़िए-चढ़िए, मालिक चढ़िए! मेरी आंखों पर पट्टी बांध दीजिए ताकि मुझमें साहस भर सके और लम्बी यात्रा सफल हो। भगवान से प्रार्थना करें, स्वामी। लकड़ी के घोड़े की ओर बढ़िए, लकड़ी के घोड़े की ओर बढ़िए! इन दाढ़ीवाली स्त्रियों की दशा देख-देखकर मेरा हृदय पिघल रहा है और आंखों में आंसू भरे आ रहे हैं। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरी आंखों में इनकी दाढ़ी के बाल चुभ रहे हों।"

जब दोनों इस प्रकार मूर्ख बन गए और डॉन क्विक्ज़ोट ने देखा कि प्रत्येक वस्तु तैयार है तो वे घोड़े पर बैठ गए और सामने की कील को मरोड़ने लगे। ज्योंही उन्होंने उस पर हाथ रखा तो उपस्थित समुदाय बड़े ज़ोर से चिल्लाने लगा, "उठा उठा, और ऊपर उठा! देखो, ओह, देखो-देखो! किस तेज़ी से यह घोड़ा उड़ा चला जा रहा है, जैसे वायु में कोई बाण जा रहा हो। चढ़ गए, घोड़े पर चढ़ गए और ऊपर मीनार को पार कर गए। उफ, सारा संसार देख-देखकर आश्चर्य कर रहा है!"

सैंको ने अपने मालिक की कमर के दोनों तरफ हाथ लपेटते हुए कहा, "श्रीमत ये लोग हमको इतनी ऊंचाई पर पहुंच गया कैसे बताते हैं। अभी तो हमें इनकी आवाज़ सुनाई दे रही है।"

डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "इसकी चिन्ता मत करो क्योंकि इस असाधारण प्रकार के वाहन पर हमारी सुनने और देखने की शक्ति भी असाधारण बन गई है। साहस ग्रहण करो। देखो, हम लोग झूले के ऊपर बैठे हुए हैं और कितनी अच्छी हवा चल रही है!"

सैंको ने कहा, "मुझे यह लगता है, श्रीमत! कि हवा चारों ओर से तेज़ी से बह रही है। पता नहीं कितनी धौंकनियां हैं जो सचमुच इस हवा को हमारी ओर फेंक रही हैं।"

सैंको की बात अंश में सत्य भी थी क्योंकि तीन जोड़ी धौंकनियां उनकी ओर हवा फेंक रही थीं। यह भी उस खेल का एक भाग था जो उनमें यह भ्रम पैदा कर सके कि वे लोग वायु में उड़े चले जा रहे हैं।

डॉन क्विक्ज़ोट को जब हवा लगी तो उन्होंने कहा, "सचमुच ऐसा लगता है कि हम लोग हवा में बहुत ऊंचे उठ आए हैं जहां तूफान, बर्फ, बिजली और वज्र गर्जन हुआ करता है, जहां तरह-तरह के छोटे-छोटे नक्षत्र घूमा करते हैं। अगर इस गति से हम लोग ऊपर चढ़ते रहे तो कुछ ही देर में हम लोग अग्नि प्रदेश में चढ़ जाएंगे। पता नहीं उस वक्त मैं इसकी कील को कैसे मरोड़ूंगा। मैं तो इसका प्रयोग भी नहीं जानता। क्या वहां हम लोग जल-भुनकर कबाब नहीं बन जाएंगे!"

उसी समय ड्यूक की आज्ञा से कुछ ऊन मंगवाया गया और अन्य जलनेवाले पदार्थ तैयार कर लिए गए। उनको एक लम्बी लकड़ी के छोर पर लगा दिया गया और

उन लोगों की नाक से कुछ दूर आग जला दी गई। उसमें से निकलती आग और धुएं ने डॉन क्विक्ज़ोट और उसके सेवक को कुछ प्रपीड़ित करना प्रारम्भ किया।

सेंको चिल्लाया, "श्रीमत अभी आप जिस अग्नि प्रदेश की बात कर रहे थे, सचमुच हम उसके बहुत निकट आ गए हैं क्योंकि मेरी आधी दाढ़ी तो जल भी चुकी है। मेरी तो इच्छा हो रही है कि मैं कूद पड़ूं।"

डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "नहीं, नहीं, शांत बैठे रहो।"

सेंको ने कहा, "श्रीमत, मैं ज़रा झुककर देख लूं कि हम लोगों के आसपास क्या है?"

अन्त में इस असाधारण साहस का अंत हुआ क्योंकि ड्यूक और उसके साथी अपना काफी मनोरंजन कर चुके थे। घोड़े की पूंछ में आग लगा दी गई और घोड़ा चूंकि पटाखों से भरा हुआ था इसलिए एकदम फट गया। एक भयानक आवाज़ हुई और आंखों पर पट्टी बांधे हुए वीर नायक डॉन क्विक्ज़ोट और उनका नौकर दोनों काफी झुलस गए और घोड़े पर से नीचे जा गिरे। वह दुःखी स्वामिनी और उसकी दाढ़ीवाली सेविकाएं उपवन में से गायब हो चुकी थीं। और बाकी सब लोग मूर्च्छित होने का ढोंग करके पृथ्वी पर गिर पड़े थे।

जब डॉन क्विक्ज़ोट और सेंको उठे तो उन्हें लगा कि वे चारों ओर लाशों से घिरे हुए हैं। सामने एक लट्ठे के ऊपर लिखा हुआ था—'पराक्रमी वीर योद्धा डॉन क्विक्ज़ोट डिलामांचा ने काउण्टेस त्रिफालदी, जिसको व्यथित स्वामिनी भी कहा जाता था, की रक्षा की और उसकी साथिनों को भी बचा लिया। मलामब्रूनो पूर्णतया संतुष्ट हो गया है। सेविकाओं की दाढ़ियां गायब हो गई हैं। अलक्लाविनो और मरियम अन्तोनोमासिया ने अपने मूल स्वरूपों को प्राप्त कर लिया है।'

इस प्रकार लकड़ी के घोड़े की साहस कथा समाप्त हुई और अब सेंकों ने ड्यूक से अपने लिए उपहार मांगा। ऐसा हुआ कि यद्यपि ड्यूक के पास उसे देने के लिए कोई द्वीप नहीं था, पर उसके राज्य में एक नगर में कोई गवर्नर नहीं रहा था। उस जगह को भरने के लिए ड्यूक ने मनोरंजन का नया प्रबन्ध किया। और सेंको तुरन्त उसके लिए तैयार हो गया। उसके हर्ष का ठिकाना नहीं रहा। अपने गधे पर चढ़कर दुर्ग में अपने स्वामी को छोड़कर बड़े ताम-झाम के साथ सेंको निकल पड़ा। ज्योंही वह नगर में पहुंचा, लोगों ने उसको यह भाव दिखाया कि इस नगर का नाम बारानारिया द्वीप है। फिर वे उसे न्यायालय में ले गए ताकि कुछ झगड़ों का फैसला करके गवर्नर साहब प्रजा में अपनी उच्च स्थिति की योग्यता प्रमाणित कर सकें।

उसकी ग्रामीण बुद्धि ने, जो भी मामला उसके सामने आया, सबको चतुराई से हल कर दिया। एक आदमी एक बूढ़े से इसलिए झगड़ा कर रहा था कि बूढ़े ने उससे दस रुपये लिए थे और अब तक वापस नहीं किए थे। बूढ़ा कसम खाने के लिए तैयार था कि उसने रुपये लौटा दिए हैं। उसने अदालत में शपथ लेकर यही बात कही। लेकिन इससे पहले उसने अपना डंडा उस आदमी को थोड़ी देर के लिए दे दिया। शपथ लेने के बाद उसने अपना डंडा वापस ले लिया और न्यायाधीश के सामने प्रणाम करके वह वहां से

चल दिया। सेंको ने देखा और क्षण-भर उस छड़ी की ओर टकटकी बांधे रहा। उसने कर्ज़ देनेवाले के धैर्य की प्रशंसा की और सहसा उसने बूढ़े आदमी को आज्ञा दी कि वह उस डंडे को लेकर लौट आए। जब वह सामने आ गया तो सेंको ने कहा, "ओ भलेमानुस, तनिक मुझे वह अपनी छड़ी तो दो।" यह कहकर सेंको ने उस छड़ी को अपने हाथ में ले लिया। और दूसरे को देते हुए कहा,"जाओ, तुम्हें रुपये मिल गए।" वह आदमी शोक से व्यथित हो गया। तब सेंको ने कहा, "इस छड़ी को तोड़ दो।" ज्योंही छड़ी तोड़ी गई तो उसमें से दस सिक्के नीचे गिर पड़े। उपस्थित दर्शक चकित रह गए। उनको ऐसा लगा मानो उनका गवर्नर हज़रत सुलेमान जैसा विचक्षण और बुद्धिमान है।

लेकिन सेंको ने देखा कि द्वीप का गवर्नर होना एक बहुत कष्टप्रद कार्य है। लोग उसे गवर्नर के महल में ले गए और उसके लिए शानदार भोजन तैयार किया गया। किन्तु जब वह खाने बैठा तो उसका कुर्सी की बगल में ही उसका एक वैद्य खड़ा हो गया। तरह-तरह के गोश्त पकाए गए, तरह-तरह के स्वादिष्ट फल लाए गए। सेवक आते और खाद्य-सामग्री प्रस्तुत करते लेकिन ज्योंही सेंको खाने का प्रयत्न करता वैद्य अपनी छड़ी हिला देता। और गवर्नर के स्पर्श करने के पहले ही खाने की तश्तरी को हटा लिया जाता और कहा जाता कि यह गवर्नर के उच्च पद के अनुकूल नहीं है कि वह ऐसा कुप्रभाव डालनेवाला भोजन करे।

सेंको ने कहा, "श्रीमान वैद्यराज, यदि ऐसा ही है तो मेज़ पर इतने अच्छे-अच्छे पदार्थ क्यों लाए गए हैं? आप इनमें से कोई एक चुन लीजिए और उसे अपने हाथ के इशारे से मत हटाइए ताकि मैं उसे कम-से-कम पेट-भर खा तो लूं। मैं जीवित हूं और भूख से मरने के लिए तैयार नहीं हूं। इस प्रकार कुछ भी नहीं खाऊंगा तो अपने-आप मेरी उम्र कम हो जाएगी।"

वैद्य ने कहा, "सच कहते हैं, श्रीमंत, किन्तु आपको यह खरगोश तो नहीं खाना चाहिए, क्योंकि इसके ऊपर बाल बहुत होते हैं और यह अच्छा भोजन नहीं है। और न मैं आपको वह मछली खाने दूंगा क्योंकि उसमें कांटे हैं और उसमें मसाला भी नहीं पड़ा है। लिहाज़ा आपको वह भी नहीं खाना चाहिए।"

इस तरह ड्यूक की आज्ञा से नये गवर्नर को तरह-तरह के कष्ट दिए गए। एक सप्ताह में ही अपने द्वीप के इस शासन से सेंको ऊब गया। तभी ग्रामीणों को इकट्ठा करके एक नकली हमला कर दिया गया। उसमें सेंको की इतनी पिटाई हुई, इतनी पिटाई हुई कि जब सब शान हो गया तो वह चुपचाप अपने बिस्तर से उठा, जहां उसे बेहोशी में पटक दिया था, और धीरे-धीरे रेंगता हुआ अस्तबल में जा पहुंचा। उसने अपने गधे के पास पहुंचकर बड़े प्यार से उसका माथा चूमा और कहा, "ओ मेरे दोस्त, ओ मेरे वफादार दोस्त, तूने मेरी यात्रा में और दुःखों में मेरा कष्ट बटाया है!" यह कहते हुए सेंको की आंखों में आंसू आ गए। उसने आगे कहा, "जब मैं और तुम साथ चलते हैं तो मुझे केवल तेरी चिन्ता करनी पड़ती है, इस तेरे छोटे-से पेट को भरने की चिन्ता करनी पड़ती है। वे मेरे दिन, वे मेरे महीने, वे मेरे साल कितने खुशनुमा थे! लेकिन जब से मैंने तुझे छोड़ दिया और मैं महत्त्वाकांक्षा, अहंकार और गर्व की मीनारों पर चढ़ गया तो मुझपर हज़ार-हज़ार दुःख और

यातनाएं और अत्याचार टूट पड़े। मेरी यह आत्मा भीतर से गिर गई है और मुझे परम कष्ट हो रहा है। मैं गवर्नर बनने के लिए पैदा नहीं हुआ था, न मेरा काम था कि मैं द्वीप और नगर की शत्रुओं से रक्षा करूं और उनसे बुरी तरह पिटूं। न मैं जीता हूं, न मैं हारा हूं। कहने का मतलब यह है कि बिना एक कौड़ी लिए मैं इस राज्य में आया था और बिना एक कौड़ी लिए मैं इसका परित्याग करता हूं। हाय, द्वीप के गवर्नर तो ऐसा नहीं किया करते!"

यह कहकर एक रोटी का आधा टुकड़ा और कुछ पनीर लेकर वह अपने गधे पर बैठ गया और फिर अपने मूर्ख स्वामी की सेवा करने के लिए चल पड़ा।

ड्यूक के दरबार को छोड़ देने के बाद डॉन क्विक्ज़ोट और सैंकोपांजा कई दिनों तक अपने घोड़े और गधे पर क्रमशः चलते रहे। अंत में वे सिअरामोरेना नामक ए विशाल काले पहाड़ के पास पहुंच गए और उसके पथरीले पथ के ऊपर आगे बढ़ते गए डॉन क्विक्ज़ोट को यह देखकर परम हर्ष हुआ कि वे ऐसी विचित्र जगह पर पहुंच गए थे उनकी फिर एक बार इच्छा हुई कि वे कोई नया साहस दिखाएं जिससे उनका प्रता दूर-दूर तक फैल सके। अब उन्हें फिर अनेक वीर नायकों की याद आने लगी क्योंकि ऐ एकान्त में ही वे परम वीर नायक भी घूमा करते थे। फिर उन काल्पनिक विचारों उनका मस्तिष्क भर गया और अब वे कुछ और सोचने से मजबूर हो गए। किन्तु सैंक भूखा था, वह कुछ ठोस चीज खाना चाहता था। नाई के गधे पर से चुराया हुआ सामा करीब-करीब खत्म हो चुका था। बस एक गोश्त का टुकड़ा रह गया था और वह उ अपने दांतों के बीच चबाता हुआ चुप रहा।

अब धीरे-धीरे वे लोग एक बड़ी अच्छी चट्टान के नीचे आ गए जो अकेली खड़ी थी। उसके निकट ही मोतियों जैसा उज्ज्वल एक झरना बह रहा था जो अलबट्टे खाता हुआ, नीचे की हरियाली में कलकल निनाद करता हुआ चला जा रहा था। वहां की घास ठण्डी, मुलायम और ताज़गी भरनेवाली थी। चारों ओर जंगली वृक्ष खड़े थे। सुकुमार पौधे और फूलों को देखकर आंखें ललचा जाती थीं। उस एकांत में ऐसा सुन्दर दृश्य देखकर दुर्भाग्यवाले इन वीर नायक डॉन क्विक्ज़ोट ने यह निर्णय किया कि ऐसे स्थान पर ही वे रहकर प्रेम के लिए तप करेंगे। जब उन्होंने सको से अपना यह इरादा कहा तो सैंको चकराया। आदेश के रूप में डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "तीन दिन के बाद तुम यहां से चले जाना। तीन दिन तक मैं अपनी प्रिया के लिए जो कुछ यहां करूं, उस सबको तुम देखते रहना ताकि इस सबका वर्णन उससे कर सको। जो पत्र मैं तुम्हें दूं, उसे ले जाकर मेरी प्रिया को देना।

सैंको ने कहा, "तो क्या तीन दिन तक मुझे आपके सारे पागलपन को देखना पड़ेगा? आप ऐसा क्यों नहीं करते कि जो कुछ आप करनेवाले हैं, उसके बारे में यह समझ लें कि कर चुके हैं। भले ही मैंने उन्हें न देखा हो, लेकिन मैं यह मान लेता हूं कि मैंने वह सब देखा-भाला है और मैं सुन भी चुका हू और उस सबका वर्णन मैं बढ़ा-चढ़ाकर आपकी प्रिया से कर दूगा। लिहाज़ा आप शीघ्र वह पत्र ही लिख दीजिए और मुझे जल्दी ही यहां से भेज दीजिए।"

"बिलकुल ठीक है," वीर नायक ने कहा, "यह बात बिलकुल ठीक है। लेकिन मेरे पास कागज नहीं है। तो मैं कैसे लिखूं? हां, प्राचीन काल में जिस प्रकार वीर नायक करते थे, इस समय मुझे वही पद्धति अपनानी पड़ेगी। पत्तों पर या पेड़ की छाल पर मैं लिखूंगा और तुम उस पत्र को ले जाकर पहले जो गांव पड़े वहां किसी स्कूल मास्टर को ढूंढ लेना और पत्ते से उस पत्र को कागज पर उतरवा लेना। इसमें कोई मतलब नहीं है कि वह किसके हाथ से लिखा हुआ पत्र है क्योंकि जहां तक मैं समझता हूं डलसीनिया न तो पढ़ सकती है और न लिख सकती है। न उसने आज तक मेरा कोई पत्र पाया है और न उसने मेरी लिखावट पहचानी है। मेरे और उसके प्रेम के लिए केवल एक ही बात मैं कहूंगा कि आज तक वह निरन्तर बौद्धिक रहा है। लजीली दृष्टि के अतिरिक्त उस प्रेम की सीमाएं आगे नहीं बढ़ी हैं और वह भी कभी-कभी, क्योंकि लारेन्जो कुरचुएलो जो उनके पिता हैं और अलदाओ नागेलिस जो उनकी माता हैं, उन्होंने उसे हमेशा सुरक्षित रखा है और वैसी ही शिक्षा दी है।"

सैंको बोला, "हे भगवान, ऐसी बात क्या कभी किसी और ने भी सुनी है! तो क्या मेरी होनेवाली मालकिन, जो डलसीनिया डेल्टेबोसो कहलाती है, आखिर लारेन्जो कुरचुएलो की पुत्री निकली, वह जिन्हें अलदोनजो लारेन्जो भी कहा जाता है?"

डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "वही-वही। बिलकुल ठीक वही है, जो इस ब्रह्माण्ड की स्वामिनी होने के योग्य है!"

सैंको चिल्लाया, "धूल में धूल गिर रही है। मैं उसे खूब अच्छी तरह जानता हूं। वह बिलकुल एक बेवकूफ-सी औरत है और हमारे गिरजे के पास काम किया करती है। बड़ी मजबूत, लम्बी-चौड़ी औरत है, मर्दानी आवाजवाली, हर बात में झगड़ा करने को तैयार रहती है। हे भगवान, क्या उसकी प्रशंसा करना उत्तम है? एक बार मैंने उसे छत पर खड़े होकर आवाज देते हुए सुना था। वह कुछ किसानों को बुला रही थी खेत से और वे बेचारे बहुत दूर थे। फिर भी उसकी आवाज सुनाई दी, जैसे कोई पास में बोल रहा हो।"

डॉन क्विक्ज़ोट ने डांटकर कहा, "सैंको, मैं तुम्हें अकसर कह चुका हूं और मैं तुमसे फिर कहता हूं कि तुम्हारी जबान बहुत चकचक करती है। इसपर लगाम लगाने की जरूरत है, क्योंकि तुम एक कूढ़मग्ज़ बेवकूफ हो और तुम्हारा यह नामाकूल मज़ाक बेवक्त के लिए पैदा हुआ जा रहा है जो मुझे कतई नापसन्द है।"

सैंको ने कहा, "श्रीमत, मेरी बुद्धि भले ही मंद है, पर अब मेरी समझ में आता है कि जिन वीर योद्धाओं का वर्णन आप कर रहे हैं कि उन्होंने किसी समय में तप किया था, अवश्य ही वे सब भी मूर्ख ही रहे होंगे। क्या किसी स्त्री ने आपको आज तक कोई भेंट भेजी है?"

डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "बस यही तो बात है। यही तो एक खास बात है जिसकी वजह से मैं तप कर रहा हूं। देखो, सैंको, कोई वीर नायक अगर किसी मौके पर पागल हो जाए तो यह न तो कोई विचित्र बात है और न इसमें कोई तारीफ मिलती है। कमाल तो यह है कि वह बिना कारण के पागल हो जाए, तब उसमें तारीफ है। उसके ऊपर कोई रुकावट नहीं होनी चाहिए और उसको आवश्यकता की भी आवश्यकता नहीं है। फिर

भी वह पागल हो जाए तब समझा जाता है, सेंको, कि उसके प्रेम में भावावेग है और वह उसे अभिव्यक्ति देना चाहता है। मैं तो पागल हूं और पागल ही रहूंगा। जब तक कि तुम मेरी प्रिया डेलसीनिया के पास से मेरे पत्र का उत्तर लेकर नहीं लौट आओगे। और देखो यह पत्र है, इसपर मैं अपना नाम लिखने की आवश्यकता नहीं समझता, क्योंकि प्राचीन काल में गोलवा आमादिस भी अपने पत्र पर कोई हस्ताक्षर नहीं करता था।

सेंको ने कहा, "स्वामी मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। अब मेरा इरादा है कि मैं चल पड़ूं। मैं आपकी किसी पागल हरकत को नहीं देखना चाहता। मैं तो अपनी तरफ से कह दूंगा कि मैं आपका इतना सब देख चुका हूं कि और देखने की इच्छा भी नहीं करता।"

"नहीं नहीं!" डॉन क्विक्जोट ने कहा, "थोड़ी देर तो तुम्हें रुकना ही पड़ेगा। सेंको, और एक बार मुझे पूर्णतया वस्त्रहीन देख जाओ और कम से कम मेरे दस की बीस, तीस हरकतें भी देख जाओ।"

यह कहकर उन्होंने अपने वस्त्र उतार दिए और वे कमर तक पूर्णतया नग्न हो गए। और दो-तीन बार हवा में उछले और अपने हाथों के बल जोर देकर सिर नीचे कर लिया और पैर ऊपर उठा लिए। और जब वे फिर नीचे मुड़कर आए तो सेंको उन्हें नग्न देखकर लज्जित हो गया, और उसने अपने गधे के सिर को भी दूसरी ओर मोड़ दिया ताकि गधा लज्जित न हो जाए और अब उसे यह पूर्ण सन्तोष हो गया था कि उसका मालिक सचमुच पागल हो गया है।

टोबोसो को जानेवाली सीधी सड़क पर चलता हुआ सेंको दूसरे दिन एक सराय में पहुंच गया। जब वह द्वार पर पहुंचा तो दो आदमी बाहर निकले। उनमें से एक बोला, "देखिए, देखिए, क्या यह सेंकोपांजा ही नहीं है। हमारे घर की देखभाल करने-वाले ने यह भी तो बताया था कि हमारे स्वामी के साथ यह भी चला गया था।"

दूसरे ने कहा, "बिलकुल वही है। यह निश्चय ही वही है।"

ये दोनों व्यक्ति डॉन क्विक्जोट के मित्र थे—एक पादरी और एक नाई।

सेंको उन्हें पहचानता था। उन लोगों ने पूछा, "अरे, तुम्हारे मालिक कहां हैं?"

सेंको ने उत्तर दिया, "मैं उन्हें दूर उस पर्वत पर अपनी प्रिया के लिए तपस्या करते हुए छोड़ आया हूं।"

और उसने विस्तार से उनकी सारी हरकतें बताईं और कहा कि वह अब अपने स्वामी की प्रिया डलसीनिया डेल्टेबोसो, लोरेन्जो करचुएलो की पुत्री, के पास उनका प्रेम-पत्र ले जा रहा है, क्योंकि वे उसके बिना बहुत व्याकुल हो रहे हैं।

पादरी और नाई को डॉन क्विक्जोट के बढ़ते हुए पागलपन को देखकर और भी आश्चर्य हुआ और बेचारे वीर नायक की रक्षा करने के लिए वे चल पड़े। रास्ते में वे कोई तरकीब सोचने लगे कि किस प्रकार उस वीर नायक की बुद्धि को ठिकाने लगाया जाए और उस तपस्या को छुड़वाकर लामांचा में उन्हें लौटा लाया जाए।

उसी सराय में दो व्यक्ति ठहरे हुए थे—डॉन फर्डीनेण्ड एक उच्च कुल का व्यक्ति था और डोरोथिया अत्यन्त सुन्दरी और श्रेष्ठ कुल में जन्मी एक युवती थी। वे दोनों परस्पर प्रेम करते थे। भाग्य ने उनमें वियोग कर दिया था और समय के फेर ने उन्हें

इस सराय मे लाकर फिर मिला दिया था। पादरी और नाई उनके पास गए और डॉन क्विक्जोट की सारी कथा सुनाई। इन लोगों ने बैठकर वीर नायक के उद्धार की योजना बनाई।

उन्होंने सैंको को आज्ञा दी कि वह अपने गद्दे की काठी सजा ले और उस कुलीन युवती और एक नाई को लेकर वह काले पहाड की ओर फिर लौट चले। सैंको उस समय सराय के मालिक के पास बैठा हुआ मस्ती से अपनी मनचाही गाय की एडी को चूस रहा था। उसने ज्यों ही उस सुन्दरी डोरोथिया को देखा तो उसके मुह से निकल गया, "यह सजीव सुन्दरी कौन है ?"

पादरी ने कहा, "मिकोमिकोन एक विशाल राज्य है, उसमें यह सुन्दरी युवती अब साम्राज्ञी होनेवाली है क्योंकि यह सम्राट की पुत्री है। तुम्हारे मालिक की महान कथाएं सुनकर, जिनका यश सारे ससार मे फैल गया है, यह व्याकुल हो गई है और उनसे मिलने के लिए आई है। इसके प्रति एक भयानक दानव ने घोर अत्याचार किया है। यह अपना उद्धार कराने के लिए उनसे वरदान मागने आई है।"

सैंको ने कहा, "ठीक, यह अच्छा रहा, इन्होंने अच्छे आदमी को ढूंढा और अवश्य ही ये अपने वर को प्राप्त करेंगी। यदि मेरे स्वामी इतने भाग्यशाली हैं तो वे अवश्य इनके प्रति हुए अत्याचार को दूर करेंगे और उस हरामजादे दानव को अवश्य ही विनष्ट कर देंगे और फिर मैं भी बना-बनाया आदमी हू, इसमें कोई सन्देह नहीं रह जाता।"

एक बार फिर पादरी ने डोरोथिया को सब बातें समझा दीं। सुन्दरी युवती सैंको और नाई के साथ चल पड़ी। नाई ने अपने-आपको छिपाने के लिए चेहरे पर नकली दाढ़ी लगा ली।

जब वे लोग काले पहाड पर पहुचे तो उन्होंने चट्टानों के बीच डॉन क्विक्जोट को देखा। सौभाग्य से इस समय वीर नायक अपने कपड़े पहन चुके थे किन्तु उनका कवच अब भी पास रखा हुआ था। सुन्दरी डोरोथिया तुरन्त समझ गई कि जिस व्यक्ति से मिलना था वह यही वीर नायक था। वह गधे पर से उतरी और वीर नायक की ओर बढ चली। वह तुरन्त उनके घुटनों के पास झुक गई और यद्यपि वे रोकते ही रह गए फिर भी वह कहने लगी, "ओ महावीर, पराक्रमी, दुर्दम्य वीर नायक! मैं इस स्थान से तब तक नहीं उठूगी जब तक कि आप मुझे एक वर नहीं दे देते। उससे आपका गौरव दिगन्तों में फैल जाएगा और मुझ दुखियारी स्त्री को आपकी अपार करुणा का एक अश प्राप्त हो जाएगा। इस सारे इलाके में मुझ जैसा व्याकुल और प्रपीड़ित कोई भी व्यक्ति नहीं है। हे श्रीमन्त, जो मैं आपके महान हृदय से याचना कर रही हू उसका मुख्य कारण यह है कि मैंने आपका यश बहुत दूर से सुना है और उसी के सहारे मैं आपका दर्शन करने के लिए यहां तक आ गई हू। मेरी प्रार्थना है कि जहां मैं आपको ले चलू आप तुरन्त वहा चलने को तत्पर हो जाए और किसी दूसरे साहसिक कार्य में तब तक न लगें जब तक मेरे राज्य को छीन लेनेवाले उस दुष्ट दानव का अन्त न कर दें, जिसने समस्त मानवीय और ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन करके मुझे इस प्रकार असहाय बना दिया है।"

डॉन क्विक्जोट ने कहा, "तथास्तु! इसी क्षण से मैं अपने सारे चचल विचारों को

फिर लिए देता हूं। तुम्हारी पराजित आशाओं को फिर से जीवित करने के लिए मैं अपनी भुजाओं को पुनः उठाने को तत्पर हूं। ईश्वर मेरी ओर है, मेरा पराक्रम मुझे सहायता देगा। और तुम देखना कि मैं तुम्हारे साम्राज्य को फिर से जीत लूंगा और तुमको तुम्हारे ही पूर्वजों के पवित्र राज्य सिंहासन पर बिठा दूंगा।"

यह कहकर डॉन क्विक्ज़ोट ने उसे धीरे से उठाया और बड़े ही गौरव के साथ विनम्रता से उससे आलिंगन किया और फिर सैंको को आज्ञा दी कि वह उनके वस्त्र और शस्त्र ले आए।

जब उन्होंने कवच को धारण कर लिया तो सैंको को आज्ञा दी, "चलो, अब हम इस दुखियारी राजकुमारी के दुखों को दूर करें।"

इस समय तक नाई अपने घुटनों के बल घुड़सवार बैठा हुआ था। उसे अपनी हंसी रोकने में बड़ी मुश्किल हो रही थी। उसे यह भी डर था कि कहीं उसकी दाढ़ी न गिर जाए क्योंकि उस समय उसके मुख का खुल जाना ही सारे रहस्य का उद्घाटन कर देता।

सैंको अपने मालिक को एकदम सम्राट होते हुए देख रहा था। अपने स्वप्नों की पूर्ति इतने निकट जानकर उसका रोम-रोम पुलकित हो रहा था। वह अभी तक यह प्रश्न नहीं पूछ रहा था कि मालिक उस राजकुमारी से विवाह भी कर लेंगे, या नहीं? और क्या वे मेक्रोमिकोन साम्राज्य के सम्राट होना स्वीकार करेंगे, या नहीं?

ये लोग सराय की ओर लौट पड़े। डॉन क्विक्ज़ोट एक लम्बा भाषण देते रहे जिसमें उन्होंने यह प्रमाणित किया कि वीरता का स्थान साहित्य से ऊपर है और उन्होंने आधुनिक कालीन युद्ध के कायर ढंग की निन्दा करते हुए उच्च स्वर से कहा, "कितने अच्छे थे वे अतीत के दिन जब यह गोली बारूद नहीं था। निश्चय ही इनका आविष्कार करनेवाला व्यक्ति अब नरक में होगा। उसे अपने इस भयानक आविष्कार के लिए दंड मिल रहा होगा। इसके कारण मनुष्य कायर हो गया है। वीरतम व्यक्ति का जीवन धोखे से नष्ट कर दिया जाता है और इसीलिए इस घृणित युग में जो मैंने यह वीरता का कार्य अपने ऊपर ले लिया है, इसके लिए निस्सन्देह दुःख होता है क्योंकि आजकल वीरता की पूछ ही कहां है?"

इस प्रकार बातें करते हुए जब वे बढ़े चले आ रहे थे तो घनी हरी घास के बीच में उन्हें लगभग छः आदमी बैठे हुए दिखाई दिए। उनके पास ही वायल की चादरें बिछी हुई थीं। ऐसा मालूम होता था जैसे कुछ ढंका हुआ है। डॉन क्विक्ज़ोट उनके निकट चले गए और उन्होंने विनम्रता से उससे पूछा, "इस कपड़े के नीचे तुम लोगों ने क्या ढंक रखा है।"

उनमें से एक ने कहा, "श्रीमान्, ये कुछ मूर्तियां हैं। हम अपने नगर में एक वेदी बना रहे हैं, उसपर हमें इन्हें स्थापित करना है।"

डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "अच्छा, यह बात है। तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी यदि मैं उनके दर्शन कर सकूंगा।"

एक व्यक्ति ने एक पुतले को खोल दिया, वह सेण्ट जॉर्ज का था। डॉन क्विक्ज़ोट ने उसे देखकर कहा, "दैवी युद्ध में युद्धरत यह चर्च की ओर से लड़नेवाला एक वीर नायक

था। इनका नाम डॉन सेण्ट जॉर्ज था और यह सुन्दरियों का एक असाधारण रक्षक था।"

इस प्रकार चर्च के वीर योद्धाओं के अन्य पुतले दिखाए गए जिनकी डॉन क्विक्ज़ोट प्रशंसा करते रहे। अन्त में उन्होंने सेण्ट पॉल को घोड़े पर से गिरती हुई मुद्रा में चित्रित करनेवाला एक पुतला दिखाया। डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "एक समय यह युद्ध-रत चर्च का सबसे बड़ा शत्रु था किन्तु बाद में यह उसका सबसे बड़ा रक्षक हो गया।"

जब और पुतले नहीं रहे तो डॉन क्विक्ज़ोट ने फिर उनको चादर से ढकवा दिया और उनसे कहा, "इन पुतलों को दिखाकर तुमने मेरे लिए शुभ शकुन का काम किया है, क्योंकि ये सन्त और वीर नायक वही काम करते थे जो मैं करता हूं अर्थात् मैं भी आयुध-जीवी हूं। भेद केवल इतना है कि वे लोग सन्त थे और पवित्र नियमों के अनुसार युद्ध करते थे और मैं एक पापी हूं और मनुष्य की रीति से युद्ध करता हूं। उन्होंने स्वर्ग को बलपूर्वक जीत लिया था क्योंकि स्वर्ग सदैव शक्ति के द्वारा ही पराजित किया जाता है किन्तु दुर्भाग्य, मैं नहीं जानता कि मेरे इस सब परिश्रम का फल क्या है। लेकिन जो कुछ भी हो, मेरा भाग्य परिवर्तित हो रहा है। मेरी बुद्धि जागे और मैं भी कोई अच्छा रास्ता पकड़ सकूं जिससे कि मेरा कल्याण होगा!"

सैंको ने उसी समय कहा, "तथास्तु!"

कुछ समय बाद वे लोग सराय में पहुंच गए। सब लोगों ने वहां दो दिन व्यतीत किए। अब पादरी और नाई ने यह योजना बनाई कि किस प्रकार डॉन क्विक्ज़ोट को घर ले जाया जाए और डॉन फर्डिनेण्ड और डोरोथिया को अधिक कष्ट न दिया जाए। उन्होंने एक गाड़ीवाले को तय किया और उसके बैल लाकर जोते और उनके ऊपर एक लकड़ी का पिंजड़ा बनाया। वह पिंजड़ा इतना बड़ा था कि उसमें वीर नायक बड़े आराम से बैठ और लेट सकते थे।

सराय के सब लोगों ने अपने वेश परिवर्तित कर लिए। उन्होंने अपने मुखों पर नकली चेहरे चढ़ा लिए। कुछ ने वस्त्र बदल लिए, कुछ ने रंग इत्यादि लगाकर अपने मुखों को विकृत कर लिया। ताकि डॉन क्विक्ज़ोट पहचान न सकें कि वास्तव में वे लोग कौन थे। इतना काम हो जाने पर वे सब शान्ति से उनके कमरे में घुसे जहां वे गहरी नींद में सोए हुए थे। वे लोग तुरन्त उन पर झपटकर टूट पड़े और उनके हाथों और पैरों को इतनी ज़ोर से पकड़ लिया कि वीर नायक डॉन क्विक्ज़ोट डिलामाचा बेचारे जहां के तहां दब गए। उनमें हिलने की भी शक्ति नहीं रही। अपने चारों ओर खड़ी विचित्र आकृतियों को वे फटी-फटी आंखों से देखते रह गए। उन्हें लगा कि वे सारी विकृत आकृतियां केवल किसी प्रेत-लोक की आत्माएं थीं, और उन सबने उनपर कोई जादू कर दिया है।

उन व्यक्तियों ने उन्हें शय्या पर से बलपूर्वक उठा लिया और पिंजड़े में रखकर बन्द करके बाहर से सांकल चढ़ा दी। और फिर उसपर कील ठोक दी।

गाड़ी चल पड़ी। छः दिन में वे अपने गांव आ पहुंचे। मध्याह्न का समय था। गाड़ी नगर में घूमने लगी। उस रोज़ इतवार भी था। सब लोग बाज़ार में ही इकट्ठे थे। और गाड़ी का भी रास्ता वही था। सब लोगों को यह जानने की उत्सुकता हो गई कि गाड़ी के पिंजड़े में क्या रखा है, और जब उन्होंने अपने ही आदमियों को देखा तो और भी

आश्चर्य हुआ। भीतर डॉन क्विक्ज़ोट को देखकर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। अभी वे लोग आश्चर्य ही कर रहे थे कि एक छोटा लड़का दौड़कर वीर नायक के घर चला गया और उसने वीर नायक की भतीजी को सूचना दे दी कि आपके चाचा पुआल पर लेटे हुए गाड़ी में चले आ रहे हैं और कई बैल उस गाड़ी को खींचे ला रहे हैं।

घर के लोग आए। उन्होंने डॉन क्विक्ज़ोट को गाड़ी पर से उतारकर कपड़े पह-नाए और शय्या पर लिटाया। वे फिर भी उजबक की तरह इधर-उधर देखते रहे और कल्पना नहीं कर पाए कि वे इस समय कहां थे। क्या वे उसी पर्वत पर थे या उस जादू के नगर में जहां दैत्य निवास करता था? उनपर भय छा गया और उनका मस्तिष्क चल गया। बहुत लम्बी-सी बेहोशी उनपर छा गई। जब वे जागे तो उन्होंने कहा, "परमात्मा को धन्यवाद है। उन्होंने मुझपर कितनी असीम करुणा की है। उनकी दया का कोई अन्त नहीं। मनुष्य की जितनी परिस्थिति है उस सबसे भी अधिक उस परमेश्वर की दया है, असंख्य, अगणित। मेरी बुद्धि अब ठीक हो गई है। चारों ओर शान्ति-सी प्रतीत होती है। अज्ञान का मेघ मेरे मस्तिष्क पर छा गया था। उन वीर नायकों की पुस्तकों को पढ़-पढ़-कर, जो मूर्च्छा मेरी बुद्धि पर छा गई थी वह सब नष्ट हो गई है। मेरी भतीजी मेरे सामने है। मेरी देखरेख करनेवाले भी यहां हैं और मेरा प्यारा सेंको भी यहां है। सुनो, अब मेरा अन्त आ गया है किन्तु यद्यपि मेरा जीवन एक पागल व्यक्ति के समान व्यतीत हुआ है, मैं चाहता हूं कि मेरी मृत्यु ऐसी हो कि मुझपर से यह लांछन सदा के लिए मिट जाए।"

सेंको की आंखों में पानी आ गया। उसने रोते हुए कहा, "मुझपर दया करिए जाए, मेरे स्वामी, इस प्रकार मत मरिए! मेरी सलाह मानिए और कुछ और वर्ष तक जीवित रहिए। अपने जीवन में सबसे अधिक मूर्खता आप यह करेंगे कि इस असमय में मर जाएंगे। इस श्वास को अपने शरीर में से निकल मत जाने दीजिए। और यह क्या हुआ कि बिना हाथ-पैर चलाए ही आप सहज मर जाएं। आप मोमबत्ती तो नहीं कि सहज बुझ जाएं। और यह भी कोई बात नहीं कि केवल वेदनाओं के कारण आपका अन्त हो जाए।"

डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "शान्त रहो, सेंको, मैं पहले पागल था किन्तु अब मैं ठीक हो गया हूं। एक समय में डॉन क्विक्ज़ोट डिलामांचा था लेकिन अब मैं केवल एलोन्सो क्विक्जानो हूं और मैं चाहता हूं मेरा प्रायश्चित्त मुझे फिर से उबार सके और तुम जो सम्मान मेरे लिए अपने हृदय में रखते हो, वही मुझे फिर से प्राप्त हो सके।"

डॉन क्विक्ज़ोट का अन्तिम दिन आ गया और अपने मित्रों के आंसुओं और दुःख के बीच उन्होंने अपने नश्वर शरीर को छोड़ दिया। इस प्रकार डॉन क्विक्ज़ोट डिलामांचा परमवीर मृत्यु को प्राप्त हो गए। वे कहां रहते थे, इस विषय में उनके इतिहासकार ने कुछ भी नहीं लिखा है। इसलिए लामांचा के सारे कस्बों और गांवों को हमें वैसे ही अम-रता प्रदान कर देनी चाहिए जैसे होमर के लिए ग्रीस के सातों नगर प्रसिद्ध हो गए थे।

प्रस्तुत उपन्यास में मध्यकालीन सामंतवाद का अन्त दिखाया गया है। पुरानी मान्यताएं नये समाज में किस प्रकार हास्यास्पद हो जाती हैं, यह प्रकट होता है। व्यंग्य के क्षेत्र में यह एक महान कृति मानी जाती है।

डेनियल डिफो :

रॉबिन्सन क्रूसो[1]

डिफो, डेनियल : अंग्रेज़ी उपन्यासकार डेनियल डिफो का जन्म क्रिपिलगेट में १६६० में हुआ और आपकी मृत्यु मूरगेट में १७३१ में हुई। आपके माता-पिता ने आपको अच्छी शिक्षा नहीं दी। आप पत्रकार बन गए और राजनीति में भी भाग लेते रहे। १७१९ में आपका 'रॉबिन्सन क्रूसो' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। इसमें काल्पनिक वर्णन का बहुत सशक्त उदाहरण मिलता है। आपकी भाषा जैसे दृश्य को सजीव कर देती है। आपका दूसरा प्रसिद्ध उपन्यास 'मोल फ्लैण्डर्स' है।

'रॉबिन्सन क्रूसो' विश्वविख्यात रचना है। इसकी विशेषता यह है कि इसे बच्चे भी समझ लेते हैं। इसलिए प्रायः इसे बच्चों की पुस्तक ही समझा जाता है। वस्तुतः चरित्र-चित्रण इसमें बहुत श्रेष्ठ हुआ है।

सन् १६५१ की पहली सितम्बर की बात है। हम लन्दन की ओर से जानेवाले जहाज़ पर बैठे। मेरी आयु केवल उन्नीस वर्ष की थी। मेरे पिता ने मुझे बहुत अच्छी सलाह दी, लेकिन मैंने उनमें से एक बात पर भी ध्यान नहीं दिया। बार-बार उन्होंने मुझसे कहा कि विदेश मत चले जाना। अपना घर यूरोप है वहीं रहने मे क्या बुराई है। जीवन में सन्तोष का भी बहुत बड़ा मूल्य है। हमारे परिवार का नाम क्रुत्सनायर था क्योंकि मेरे पिता ब्रेमेन के रहनेवाले थे। लेकिन इंग्लैंड के लोग-बाग जैसे हैं वह कौन नहीं जानता। असल शब्दों को बोलना और उसके लिए उच्चारण की कठिनाई से अपनी जीभ को तोड़ना उन्हें नहीं भाता। इसलिए हम लोग अभी क्रूसो कहलाते है और मेरा नाम रॉबिन्सन क्रूसो हो गया है। पिता की बात मे भी न्याय था, क्योंकि जब हम्बर से आगे हम चले तो जहाज़ टूट गया। हालांकि मैं और लोगो के साथ डूबने से बच गया था, लेकिन वह बड़े दुख की बात थी। अगर मैं पिता की बात मान लेता और शांतिपूर्वक अपने घर लौट जाता तो मैं भी कितनी समृद्धि और सुख से निवास कर पाता।

लेकिन मेरे दुर्भाग्य ने मुझको धकेल दिया। मेरे अन्दर एक हठ था। मुझे कुछ भी नहीं रोक सकता था। उन्हीं दिनों लन्दन में एक जहाज़ के मालिक से मेरी दोस्ती हो गई। जहाज़ आया था गिनी से और फिर वहीं लौट जाना चाहता था। मुझे जहाज़ का वह धड़ाका बहुत पसन्द आया। कप्तान ने कहा मैं अपने साथ ले चलूंगा। मैंने अपने थोड़े-से खिलौने और कुछ ऐसी चीज़ें ले ली जिनसे कि जंगली लोग बड़े प्रसन्न हो जाते हैं। मैंने सोचा कि इनको मैं उन्हें दे दूंगा तो मुझे थोड़ा धन प्राप्त हो जाएगा। मेरे पास तो

१. Robinson Crusoe (Daniel Defoe)

यह सब खरीदने को कुछ भी नहीं था। मैंने रिश्तेदारों के यहां चक्कर लगाए और उनसे थोड़ा-बहुत धन इकट्ठा कर लिया। पहली बार ही हम लोगों को बड़ा फायदा हुआ और मैंने देखा कि करीब तीन सौ पौंड मेरे नाम से जमा हो गए थे। अब तो गिनी की ओर यात्रा करने की मेरी और भी तीव्र इच्छा हो गई। हम लोग दूसरी यात्रा पर निकले थे, धीनी के आगे निकलकर हमारा जहाज पकड़ लिया गया और हम लोग बन्दी बना लिए गए, क्योंकि हमारे मालिक हमें गुलामों की तरह बेच देना चाहते थे।

दो साल इस बन्दी जीवन में बीत गए लेकिन मैं कभी भयभीत नहीं हुआ। मैंने बार-बार कोशिश की कि मैं वहां से किसी तरह भाग निकलूं। मेरे मालिक का यह कायदा था कि वह अक्सर मछलियां मारने जाया करता था और इसलिए एक नाव भी रखा करता था। उसमें वह मुझे बिठा लेता और अपनी मदद करने के लिए दो मूर लोगों को और बिठा लेता था। एक दिन ऐसा हुआ कि उसने खूब सारा खाना और पानी नाव में रखा ताकि अपने दोस्तों के साथ उसमें जाकर उन्हें सैर करा सके, लेकिन वह उस दिन नहीं जा सका। फिर उसने हम तीनों को कुछ मछलियां पकड़ने के लिए भेज दिया। उस दिन मैंने चालाकी की। मैंने अपने साथियों से कहा कि भाई मछलियां तो कहीं मिलती नहीं आओ तुम मेरे साथी हो, थोड़ी दूर खाड़ी में आगे वहां निकल चलें। उन लोगों को कोई शक तो था नहीं, झट तैयार हो गए। नाव चल पड़ी। लहरों को बिखेरती हुई वह आगे खाड़ी की गहराई की ओर बढ़ चली।

जब हम लोग किनारे से दूर पहुंच गए तो मैंने एक मूर को अचानक पकड़ लिया और उसे समुद्र में फेंक दिया। दूसरा मूर युवक था, मैंने उससे कहा कि अगर वह मेरी मदद करेगा और जैसा मैं कहूंगा वैसा ही करता चला जाएगा तो मैं उसको छोड़ दूंगा। उस बेचारे ने मेरे कहने से पाल किनारे की तरफ कर दिए। उसमें हवा भर गई और पहले मूर को हमने तैरते हुए छोड़ दिया कि वह किनारे पर पहुंच जाए, नाव दूसरी ओर चल पड़ी। कैसा बियाबान था किनारा, भयानक हिंस्र जन्तु उसमें घूमते थे। रात हो गई। हमने लंगर डाल दिया। भयानक पशुओं का गर्जन सुनाई देने लगा। और इसमें उस मूर का भी बड़ा डर था। वह जाकर वहां सूचना देगा, कहीं वे लोग पीछा न कर बैठें और हम पकड़ न लिए जाएं। और कौन जानता था कि उन द्वीप में कौन-से जंगली लोग रहते हैं। उनसे बचना भी तो कठिन था।

फिर भी कभी-कभी हमें किनारे पर तो नाव रखनी ही पड़ती थी, क्योंकि आखिर ताजा पानी तो पीने के लिए चाहिए ही, और ऐसा करने जाते समय एक बार हमको एक सिंह मिल गया जिसे हम लोगों ने मार डाला। अगली बार हमको दोस्ताना बर्ताव करनेवाला एक हब्शी मिला जिसने हमको अनाज दिया और मीठा पानी भी पिलाया। ये हब्शी लोग भी विचित्र हैं। इनमें स्त्रियां भी पुरुषों की भांति वस्त्रहीन रहती हैं। हब्शी को छोड़कर हम लोग बराबर ग्यारह दिन तक समुद्र पर चलते चले गए, क्योंकि लहरें साथ थीं और हवा भी भयानक नहीं थी। लेकिन एक समस्या हमारे सामने आ गई, जिसे हमें हल करना था, और मैंने यह नतीजा निकाला कि हो न हो हम लोग वार्ड द्वीप के अंतरीप के पास हैं। मैं नाव के आगे के हिस्से में बैठा रहा और बराबर सोचता रहा कि

किनारे पर उतरूं या नहीं, लेकिन तभी वह मूर लड़का, जिसका नाम जूरी था, दौड़ता हुआ आया और पुकार उठा, "मालिक पाल खोल दो !"

दूर देखा मैंने—एक पुर्तगाली जहाज ब्राजील जाने के लिए आ रहा था। कप्तान ने भी हम लोगों को देखा। उसने हमें ऊपर चढ़ा लिया। मुझसे उसने अत्यन्त स्नेह का व्यवहार किया। मैंने उसे कुछ देना चाहा तो उसने कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया। उसने मुझसे कहा, "मैं तुम्हें वहां मुफ्त में ही ले जाऊंगा और यह जो तुम्हारे पास नाव इत्यादि है इनसे तुम्हें अपनी रोजी चलाने लायक सामान मिल जाएगा। हो सकता है कि तुम इनकी मदद से इंग्लैंड भी लौट सको।" और यही तय हुआ। भाग्य ने फिर एक नया मोड़ लिया। जब हम ब्राजील पहुंचे तो मैंने देखा कि मेरी नाव में सामान बहुत कम रह गया है। फिर जो कुछ भी था उसको लेकर मैं किनारे पर उतर गया।

वहां मैंने फसलें बोना शुरू किया, जिन्होंने पहले-पहल मेरे पेट को भरने का साधन बना दिया। उसके बाद मैंने तम्बाकू की खेती बोई। तम्बाकू बेचकर मैंने काफी मुनाफा कमा लिया। जब इतना हो गया तो मैंने एक जमीन का टुकड़ा खरीद लिया। उसमें मैंने गन्ना भी बो दिया। इस तरह चार साल बीत गए। मेरे साथ काम करनेवाले एक व्यक्ति से मेरी मित्रता हो गई। उससे बात ही बात में मैंने अपनी पुरानी दो यात्राओं की ऐसी वर्णना की—उसको बताया कि किस तरह मैं गिनी के किनारे गया, किस तरह वहां मैंने स्वर्ण-धूल का व्यापार किया था; वहां कैसे बड़े-बड़े हाथियों के दांत मिलते हैं, जिन्हें हब्शी लोग लाकर दे जाते हैं—कि उनके नयन विस्मय से फैल गए।

एक बार फिर मैं कुछ सौदागरों को लेकर आगे निकलने को तैयार हो गया। हमने अपना जहाज बनाने और फिर गिनी की ओर चलने का इरादा कर लिया कि हम वहां जाकर गुलाम खरीदेंगे और उन्हें बेचेंगे। गुलामों का मिलना कितना कठिन था! इसलिए इतनी बड़ी यात्रा की चिन्ता भी लोगों ने नहीं की। लोगों को इसमें लाभ दिखाई देता था। जिसके पास भी अपनी खेती थी उसे काम करनेवाले मजदूरों की जरूरत थी। लेकिन कौन जानता था कि मैं अपना विनाश स्वयं कर रहा था। मैं तब पहली बार भी अपने को नहीं रोक सका था जब मेरे पिता ने अच्छी सलाह दी थी। मेरी कल्पना ने मुझे रास्ता दिखाया। मेरे हठ ने मुझे प्रेरित किया, मेरी तर्कबुद्धि लुप्त-सी हो गई। जहाज तैयार हो गया। माल लद गया। जाने अपशुकन की कौन-सी घड़ी आई कि पहली सितम्बर, सन् १६५९ को हम फिर लहरें चीरते हुए जहाज पर निकल पड़े।

हमारे जहाज का वजन करीब १२० टन था। हमारे पास छः बन्दूकें थीं और चौदह आदमी थे। जहाज का चलानेवाला अलग से था। उसका एक नौकर भी था। और एक मैं था। और ऐसी रंगीली चीजें हमने फिर इकट्ठी कर ली थी जो जंगलियों से व्यापार करने में फायदा देती थीं; जैसे कांच के टुकड़े, सीप, शंख और ऐसी ही अनेक छोटी-मोटी चीजें। मैंने दर्पण, चाकू, कैंचियां, हंसिया आदि इस तरह की चीजों को खास तौर पर इकट्ठा कर लिया। मैं जानता था कि उनकी मांग बहुत थी। करीब १२ दिन गुजर गए। हम लोगों ने विषुवत रेखा पार कर ली और उत्तर की ओर हम लोग करीब २२ मिनट बिताने पर ६० डिग्री आगे पहुंच गए। तभी आकाश काला हो उठा। प्रचंड पवन के झोंके उठने लगे।

लहरें तुमुल निनाद करने लगीं। नन्हे जुगनू-सा छोटा होता हुआ हमारा जहाज ऐसे थर्राकर कांपने लगा मानो भीषण तूफान की भयानक सांसों को सुनकर उसका दिल दहल-दहल उठता था। ग्यारह दिनों तक हम कुछ भी नहीं कर सके। समुद्र हिलता रहा, आकाश कांपता रहा, महानाश की तरह पवन फुंकारता रहा और हम बहते रहे। भाग्य और तूफान की दया पर हमने अपने-आपको छोड़ दिया था।

बारहवें दिन ऐसा लगा जैसे कि वह क्रोध थम गया था। जहाज के कप्तान ने देखा कि हम लोग गिनी के किनारे पर पहुंच गए थे। एमेज़न नदी के भी पार ओरिनिको नदी, जिसे कि महानदी कहते हैं, हम लोगों के पास आ गई थी। कप्तान चाहता था कि हम लोग फिर ब्राज़ील की तरफ लौट चलें क्योंकि जहाज अब चुचाने लगा था और आशंका थी कि वह अब अधिक कार्य नहीं कर सकेगा। लेकिन मैं इसके लिए तैयार नहीं था। मैं चाहता था कि हम बारबदोज की तरफ बढ़ चलें जोकि कैरीबी द्वीपों के समीप है। और हमने यही किया। उत्तर-पश्चिम की ओर पश्चिमी मार्ग पकड़ा। अब भी पवन बड़ी तेज़ी से चल रहा था। एक दिन भोर में हमारा आदमी चिल्ला उठा, "पृथ्वी! पृथ्वी दिखाई पड़ रही है!" हमारा जहाज उसी समय बालू से टकराया और उसकी गति एकदम रुक गई। समुद्र की लहरें हमारे ऊपर से निकलने लगीं और हम लोग अपनी केबिनों के अन्दर घुस गए। हालांकि हमने सोचा था कि वायु तनिक शांत हो गई है लेकिन बालू में फंसा हुआ जहाज बहुत गहरा धंस गया था। हमारी दशा बहुत ही खराब हो गई। हमारे सामने कोई चारा ही नहीं था। किसी प्रकार हमारा जीवन बच जाए, सबसे बड़ी समस्या तो यही थी। जहाज पर एक नाव थी लेकिन प्रश्न यह था कि उसको समुद्र में उतारा कैसे जाए। आखिर हमने उसे एक किनारे लटकाया और सब उसमें बैठ गए। आकाश की ओर देखा। उस परमात्मा की असीम कृपा पर हमने अपने-आपको छोड़ दिया, क्योंकि किनारे पर समुद्र भयानकता से ऊंचा होता चला जा रहा था। हमारे पास कोई पाल नहीं था। बस अब हम किनारे पर पहुंचने के लिए डांड़ चलाने लगे। हृदय भारी हो गया था। ऐसा लगता था कि हम सब मृत्युदण्ड पाने के लिए चले जा रहे हैं। हम जानते थे कि किसी भी समय लहरों के थपेड़े हमको बड़ी तेज़ी से बहा ले जाकर और तट से टकराकर सैकड़ों टुकड़ों में हमें छितरा सकते हैं, और इससे बचने का हमारे पास कोई उपाय नहीं था। एक भयानक लहर उठी, मानो एक पहाड़ उठ आया। वह तूफानी हुई इतनी भयानकता से हमको बहा ले चली कि नाव उलट गई। एक दूसरे से सदा के लिए हम बिछुड़ गए। सबको वह पानी निगल गया जैसे वह बहुत प्यासा था और मैं अकेला रह गया।

उस समय की अवस्था का मैं कोई वर्णन नहीं कर सकता। मैं पानी में डूब गया, भले ही मैं अच्छा तैराक था। लेकिन लहरें तो मुझे सांस भी नहीं लेने देती थीं। अन्त में बड़ी ऊंची लहर मुझे पकड़ ले चली। मुझे उसने उठा दिया और किनारे पर फेंक दिया। मैं बहुत भीगा नहीं था, लेकिन जो पानी मैं पी चुका था उससे मेरी हालत खराब हो चुकी थी, जैसे मैं आधा मर चुका था। अब भी मेरा दिमाग जाग रहा था। मैंने कोशिश की कि मैं अपने पैरों पर खड़ा हो जाऊं और ऊंचे पहाड़ की ओर भाग चलूं, लेकिन समुद्र मेरी

और बढ़ा चला आ रहा था। वही पर्वत की भांति उत्तुंग, और शत्रु के समान क्रुद्ध और हिंस्र। मैंने अपनी सांस रोक ली और पानी पर अपने-आपको डाल दिया। मेरी सबसे बड़ी चिन्ता यह थी कि कहीं पानी की लहरें मुझे लौटाकर फिर समुद्र में न फेंक दें। लगभग बीस-तीस फुट मेरा शरीर पानी की गहराई में उतरता चला गया। प्रवाह के वेग ने फिर से मुझे किनारे की ओर ठेलना शुरू किया। तभी मुझे ऐसा लगा कि मैं अपनी सांस नहीं रोक पाऊंगा और अचानक उसी समय मुझे ऐसा लगा कि मेरा सिर और मेरे हाथ पानी की सतह के ऊपर आ गए हैं। लहरों का वेग समाप्त हो चुका था और लौटने ही वाला था कि मैं आगे कूदा और धरती मेरे पांव के नीचे आ गई थी। मैं अभी खड़ा भी नहीं हुआ था कि समुद्र मेरे पीछे बरसता हुआ आ गया। दो बार उसने मुझे फिर उठा लिया। अंत में उसने मुझे एक चट्टान के ऊपर फेंक दिया। मेरे दुखों का अंत हो गया, क्योंकि मैं निरीह और मूच्छित होकर बाहर लुढ़क गया। पानी के लौटने के कुछ देर पहले ही मेरी चेतना लौट आई और मैंने चट्टान के एक टुकड़े को जकड़कर पकड़ लिया। धीरे-लहर लौट गई और वह मुझे अपने साथ नहीं ले जा सकी, क्योंकि चट्टान ने मुझे अटका लिया था। इस तरह एक के बाद एक अनेक चट्टानों का सहारा लेता हुआ मैं काफी दूर पहुंच गया और फिर मैंने ऊंची पहाड़ियों पर बैठकर देखा कि मेरे चारों तरफ घास उगी हुई है। मैं खतरे से दूर हो गया, पानी अब मुझे नहीं छू सकता था।

वह जीवन का मेरा खास क्षण था। मैं उसे कैसे अभिव्यक्ति दे सकता हूं! ओह, मेरी आत्मा कहां से कहां पहुंच गई थी! कितना हर्षातिरेक हुआ! मृत्यु से बच जाना भी जीवन का कितना बड़ा आनन्द था! उसकी विकराल छाया मुझे डरा रही थी और मैं उसमें से अजेय बाहर निकल आया था। मैं किनारे पर चला आया था। मैंने अपने हाथों को ऊपर उठाया और परमात्मा को धन्यवाद देने के लिए गहन गम्भीरता से अत्यन्त कृतज्ञता प्रकट की। जो मेरे साथी डूब गए थे उनके लिए मुझे बहुत दुख हुआ। काश, उनमें से एक भी बच जाता तो वह मेरा कितना अच्छा साथी होता! लेकिन मैंने उनमें से एक को भी नहीं देखा और न उनसे कोई इशारा ही मिला। केवल तीन के टोप व एक की टोपी और दो जूते मुझे बहते हुए दिखाई दिए, लेकिन वे तो मनुष्य नहीं थे जिनसे मैं बातचीत कर सकता।

लेकिन मेरा आराम जल्दी खत्म हो गया, क्योंकि मैंने यह अनुभव किया कि मैं बिलकुल भीग गया हूं। मेरे पास खाना और पीने के लिए पानी कुछ भी नहीं था और अब मेरे सामने भयानक भूख खड़ी थी या यह भय था कि हिंस्र जन्तु मुझे चबा-चबाकर खा जाएंगे। मेरे पास कुछ था भी तो नहीं। केवल एक चाकू था और एक तम्बाकू का पाइप था। एक छोटे-से डिब्बे में तम्बाकू रखी हुई थी। यह जो कुछ भी था, मेरे पास यह भी तो नहीं के बराबर ही था। रात बिताने के लिए मैंने एक बहुत घनी झाड़ी खोज ली। मैं किनारे के आसपास करीब एक फर्लांग घूमा। पहले मैंने यह देखा कि कहीं पीने के लिए ताजा पानी मिलता भी है या नहीं। परमात्मा जिसको बचाने के लिए भेजता है उसको कोई नहीं मार सकता। मेरे हर्ष की सीमा नहीं रही कि जब मैंने देखा कि वहां पानी का एक स्रोत बह रहा था।

सुबह मैंने पास ही के पेड़ से काटकर अपनी रक्षा के लिए एक डंडा बनाया, और उसी पेड़ के ऊपर चढ़कर शीघ्र ही गहरी नींद में डूब गया। जब मेरी नींद खुली तब धूप आ गई थी। आकाश स्वच्छ था और तूफान शांत हो गया था। लेकिन मुझे तो जिस बात का सबसे अधिक आश्चर्य हुआ वह यह थी कि जहाज को लहरों ने बालू पर से उठा लिया था और उस चट्टान से टकरा दिया था जिसपर उन्होंने मुझे फेंका था। मुझे यह देखकर असीम दुःख हुआ कि यदि हम लोग जहाज के ऊपर रहते तो शायद सबके सब बच जाते। यह सोचते ही मेरी आंखों में आंसू आ गए। मैंने निश्चय किया कि किसी भी प्रकार उस जहाज के ऊपर जाऊं और अपनी आवश्यकता के लिए जो कुछ भी बच सके उसकी रक्षा कर लूं। यह सोचकर मैंने अपने कपड़े उतारे, क्योंकि मौसम बहुत गरम था। मैं पानी में उतर गया। जहाज के पास पहुंचकर मैंने चारों ओर खोज की। एक छोटी-सी रस्सी लटक रही थी। उसको पकड़कर मैं चढ़ गया और जहाज के ऊपर पहुंचा। पहला काम मैंने यह किया कि चारों ओर यह देखा कि क्या-क्या नष्ट होने से बच गया है। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब मैंने यह देखा कि खाने का सारा सामान सूखा था। मैं वहीं बैठ गया। मैंने शराब की बोतल निकाली और बिस्कुट बाहर उठा लिए; और उसके बाद जितनों को मैं बाहर ले जा सका, किनारे पर पहुंचाने लगा।

जहाज में कोई नाव नहीं थी लेकिन कुछ कपड़े बचे थे। मस्तूल के टुकड़े बचे थे। पालों के कपड़े बचे थे, लकड़ियों के कुछ शहतीर बाकी थे। मैंने उन सबको जोड़कर एक छोटी नाव-सी बनाई और अपने तीन मल्लाहों के वस्त्र उसपर उतार दिए। उसमें रोटी, चावल, पनीर, सुखाए हुए बकरे के गोश्त के टुकड़े, अनाज आदि चीजें इकट्ठी कर लीं। बढ़ई का सामान ले लिया। बन्दूक और बारूद लिया। और मैं उसके साथ पानी में चलता हुआ उसे किनारे पर खींच लाया। तब मेरी जान में जान आई।

मैंने अगला काम सोचा। पहले मैंने चारों ओर की भूमि को जांचा। मैं नहीं जानता था कि मैं कहां था। वह कोई महाद्वीप था या केवल एक छोटा-सा द्वीप। वहां कोई रहता था या वह निर्जन था, यह सब मेरे लिए अज्ञात था। तब मैंने अपनी पिस्तौल उतारी और बारूद से भरकर शीघ्र अपने पास लटका ली। मैं नजदीक की पहाड़ी की चोटी पर धीरे-धीरे चढ़ गया और वहां से मैंने उस जगह को देखा। मैंने यह भी देखा कि मैं एक छोटे-से द्वीप के ऊपर था। चारों ओर समुद्र जैसे कुंडली मारकर बैठ गया था और उसके बाद कहीं भी पृथ्वी दिखाई नहीं देती थी। हताश मैं अपनी नई बनाई हुई नाव के पास आ गया और फिर जहाज से माल उतार-उतारकर उसपर रखने लगा। फिर धीरे-धीरे उसे मैं किनारे पर खींच लाया।

वन-जन्तुओं से बचने के लिए रात में मैंने अपने चारों ओर एक घेरा-सा बनाया हालांकि कुछ ही दिनों में मुझे यह ज्ञात हो गया कि वहां ऐसी डरने योग्य कोई वस्तु नहीं थी। अगले दिन मैं फिर जहाज पर गया और जितने आदमियों के कपड़े मुझे वहां पर मिल सके और जितनी भी चीजें मेरे लिए लाभदायक हो सकती थीं वे सब मैंने इकट्ठी कर लीं और फिर उन्हें नाव में रखकर अपने साथ ले आया। मैं बार-बार जहाज पर गया। हर चीज को मैं वहां से लाद लाया। और जब वहां कुछ भी नहीं रहा तब मैंने उन

सबका ओड़ लगाया। अब मेरे पास करीब छत्तीस पौंड थे कुछ खाना भी था। कुछ चांदी के टुकड़े भी थे। किनारे पर आए मुझे तेरह दिन हो गए थे। बड़ी ज़ोर की हवा चलने लगी और सारी रात गरजती हुई चारों तरफ घूमती रही। रात उसी तूफान में गुज़री। भोर की पहली किरण ने मुझे जगाया और मैंने आंखें खोलकर देखा कि द्वीप पर कोई जहाज़ बाकी नहीं था। लहरें जिस तरह उसे लाई थीं उसी तरह से बहाकर वापस ले गई थीं। उसे शायद परमात्मा ने इसीलिए भेजा था कि मेरे भूखे पेट के लिए यह सामान इकट्ठा करके चला जाए।

अब मेरे सामने एक ही समस्या थी। यहां कोई जंगली आदमी या कोई वन जन्तु आ जाए तो कहीं वह किसी प्रकार मुझे नष्ट न कर दे। इसीलिए मैंने पहले अपने रहने के लिए उचित स्थान की खोज की। वहां एक पहाड़ था। जिधर से उसकी उठान प्रारम्भ होती थी वहां एक छोटा-सा मैदान था और पहाड़ के तले में एक गुफा-सी थी मानो किसी समय हवा और पानी ने चट्टान को काट दिया था। वहां मैंने अपना तम्बू गाड़ने का निश्चय किया। गोला खींचकर मैंने दो लट्ठे वहां गाड़ दिए और जहाज़ के तार इधर-उधर फैला दिए और लकड़ियों के टुकड़े इकट्ठे करने लगा। कुछ ही देर में मैंने एक मज़बूत दीवार खड़ी कर दी। इसके अन्दर घुसने के लिए मैंने कोई दरवाज़ा नहीं बनाया। छत पर से एक रस्सी-सी उतार दी। यदि मैं उसे ऊपर चढ़कर खींच लेता तो चारों तरफ से एक घेरे में बन्द हो जाता था और मेरा सब सामान मेरे पास सुरक्षित रहता था। मुझे किसीका भी भय नहीं था। लेकिन, साथ ही साथ यह काम करते हुए मैं हर रोज़ अपनी बन्दूक को लेकर कम से कम एक बार टोह लेने ज़रूर निकलता था। मैंने देखा कि द्वीप पर बकरे और बकरियां थीं, लेकिन वे मुझे देखकर दूर भाग जाती थीं और उनकी चाल भी बहुत तेज़ थी। लेकिन शीघ्र ही मैंने यह जान लिया कि उनको चौंकाने से पहले ही किस प्रकार मैं उनको मार सकता था। मेरी बन्दूक अपना निशाना नहीं चूकती थी।

बारह दिन और बीत गए। तब मुझे यह ध्यान आया कि कुछ ही दिनों बाद मैं दिन और रात की गणना नहीं कर सकूंगा। तब तो मैं पवित्र रविवार का भी ध्यान नहीं रख पाऊंगा और काम करने और विश्राम के दिनों में कोई अन्तर नहीं रह जाएगा। अन्त में मैंने एक लम्बे लट्ठे पर चाकू से कुछ अक्षर खोदे। उसके ऊपर एक विशाल सलीब बनाया और उसे किनारे पर गाड़ दिया। मैंने उसपर लिख दिया ३० सितम्बर को मैं इस किनारे पर पहुंचा था और उसके दोनों ओर मैं अपने चाकू से रोज़ एक निशान बनाता, और यह मेरा कलैंडर बन गया। जब मैंने देख लिया कि वन-जन्तुओं का यहां भय नहीं है तो मैं चट्टान के आसपास घूमने लगा और वहां की रेतीली भूमि को सरकाने लगा। मैंने अपने घेरे में से बाहर निकलने के लिए एक दरवाज़ा भी बनाया। फिर मैंने आवश्यक वस्तुओं का निर्माण प्रारम्भ किया। एक कुर्सी बनाई, एक मेज़ बनाई। हालांकि बढ़ई के औज़ारों का मैंने पहले इस्तेमाल नहीं किया था और मुझे बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ा, लेकिन सामान भी बहुत कुछ था ही। लकड़ियों के टुकड़े थे। फिर मैंने एक अलमारी बनाई और गुफा की दीवार पर एक ओर उसको लगा दिया और कायदे से मैंने उसमें सामान को सजा दिया। मेरा मस्तिष्क सदैव काम में लगा रहता। पहले मैं पहाड़

तुरन्त मैंने पास ही के पेड से काटकर अपनी रक्षा के लिए एक डंडा बनाया, और उसी पेड़ के ऊपर चढकर शीघ्र ही गहरी नींद में डूब गया। जब मेरी नींद खुली तब धूप आ गई थी। आकाश स्वच्छ था और तूफान शांत हो गया था। लेकिन मुझे तो जिस बात का सबसे अधिक आश्चर्य हुआ वह यह थी कि जहाज को लहरों ने बालू पर से उठा लिया था और उस चट्टान से टकरा दिया था जिसपर उन्होंने मुझे फेंका था। मुझे यह देखकर असीम दुःख हुआ कि यदि हम लोग जहाज के ऊपर रहते तो शायद सबके सब बच जाते। यह सोचते ही मेरी आंखों में आंसू आ गए। मैंने निश्चय किया कि किसी भी प्रकार उस जहाज के ऊपर जाऊं और अपनी आवश्यकता के लिए जो कुछ भी बच सके उसकी रक्षा कर लूं। यह सोचकर मैंने अपने कपड़े उतारे, क्योंकि मौसम बहुत गरम था। मैं पानी मे उतर गया। जहाज के पास पहुचकर मैंने चारों ओर खोज की। एक छोटी-सी रस्सी लटक रही थी। उसको पकड़कर मैं चढ़ गया और जहाज के ऊपर पहुंचा। पहला काम मैंने यह किया कि चारों ओर यह देखा कि क्या-क्या नष्ट होने मे बच गया है। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नही रहा जब मैंने यह देखा कि खाने का सारा सामान सूखा था। मैं वहीं बैठ गया। मैंने शराब की बोतल निकाली और बिस्कुट बाहर उठा लिए; और उसके बाद जितनों को मैं बाहर ले जा सका, किनारे पर पहुंचाने लगा।

जहाज में कोई नाव नहीं थी लेकिन कुछ कपड़े बचे थे। मस्तूल के टुकड़े बचे थे। पालों के कपड़े बचे थे, लकड़ियों के कुछ शहतीर बाकी थे। मैंने उन सबको जोड़कर एक छोटी नाव-सी बनाई और अपने तीन मल्लाहों के वस्त्र उसपर उतार दिए। उनमें रोटी, चावल, पनीर, सुखाए हुए बकरे के गोश्त के टुकड़े, अनाज आदि चीजें इकट्ठी कर लीं। बढ़ई का सामान ले लिया। बन्दूक और बारूद लिया। और मैं उसके साथ पानी मे चलता हुआ उसे किनारे पर खीच लाया। तब मेरी जान में जान आई।

मैंने अगला काम सोचा। पहले मैंने चारों ओर की भूमि को जांचा। मैं नहीं जानता था कि मैं कहां था। वह कोई महाद्वीप था या केवल एक छोटा-सा द्वीप। वहां कोई रहता था या वह निर्जन था, यह सब मेरे लिए अज्ञात था। तब मैंने अपनी पिस्तौल उतारी और बारूद से भरकर शीघ्र अपने पास लटका ली। मैं नजदीक की पहाड़ी की चोटी पर धीरे-धीरे चढ़ गया और वहां से मैंने उस जगह को देखा। मैंने यह भी देखा कि मैं एक छोटे-से द्वीप के ऊपर था। चारों ओर समुद्र जैसे कुंडली मारकर बैठ गया था और उसके बाद कहीं भी पृथ्वी दिखाई नहीं देती थी। हतारा मैं अपनी नई बनाई हुई नाव के पास आ गया और फिर जहाज से माल उतार-उतारकर उसपर रखने लगा। फिर धीरे-धीरे उसे मैं किनारे पर खींच लाया।

वन-जन्तुओं से बचने के लिए रात में मैंने अपने चारों ओर एक घेरा-सा बनाया हालांकि कुछ ही दिनों में मुझे यह ज्ञात हो गया कि वहां ऐसी डरने योग्य कोई वस्तु नहीं थी। अगले दिन मैं फिर जहाज पर गया और जितने आदमियों के कपड़े मुझे वहां पर मिल सके और जितनी भी चीजें मेरे लिए लाभदायक हो सकती थीं वे सब मैंने इकट्ठी कर लीं और फिर उन्हें नाव में रखकर अपने साथ ले आया। मैं बार-बार वहां पर गया। हर चीज को मैं वहां से लाद लाया। और जब वहां कुछ भी नहीं रहा तब मैं उस

सबका ओड़ लगाया। अब मेरे पास करीब छत्तीस पौंड थे कुछ साला भी था। कुछ चांदी के टुकड़े भी थे। किनारे पर आए मुझे तेरह दिन हो गए थे। बड़ी जोर की हवा चलने लगी और सारी रात गरजती हुई चारों तरफ घूमती रही। रात उसी तूफान मे गुजरी। भोर की पहली किरण ने मुझे जगाया और मैंने आंखें खोलकर देखा कि द्वीप पर कोई जहाज बाकी नहीं था। लहरें जिस तरह उसे लाई थी उसी तरह से बहाकर वापस ले गई थी। उसे शायद परमात्मा ने इसीलिए भेजा था कि मेरे भूखे पेट के लिए *यह सामान इकट्ठा* करके चला जाए।

अब मेरे सामने एक ही समस्या थी। यहां कोई जंगली आदमी या कोई वन जन्तु आ जाए तो कहीं वह किसी प्रकार मुझे नष्ट न कर दे। इसीलिए मैंने पहले अपने रहने के लिए उचित स्थान की खोज की। वहां एक पहाड़ था। जिधर से उसकी उठान प्रारम्भ होती थी वहां एक छोटा-सा मैदान था और पहाड़ के तले मे एक गुफा-सी थी मानो किसी समय हवा और पानी ने चट्टान को काट दिया था। वहां मैंने अपना तम्बू गाड़ने का निश्चय किया। गोला खींचकर मैंने दो लट्ठे वहां गाड़ दिए और जहाज के तार इधर-उधर फैला दिए और लकड़ियो के टुकड़े इकट्ठे करने लगा। कुछ ही देर मे मैंने एक मज़बूत दीवार खड़ी कर दी। इसके अन्दर घुसने के लिए मैंने कोई दरवाजा नहीं बनाया। छत पर से एक रस्सी-सी उतार दी। यदि मैं उसे ऊपर चढ़कर खींच लेता तो चारों तरफ से एक घेरे में बन्द हो जाता था और मेरा सब सामान मेरे पास सुरक्षित रहता था। मुझे किसीका भी भय नहीं था। लेकिन, साथ ही साथ यह काम करते हुए मैं हर रोज अपनी बन्दूक को लेकर कम से कम एक बार टोह लेने ज़रूर निकलता था। मैंने देखा कि द्वीप पर बकरे और बकरियां थीं, लेकिन वे मुझे देखकर दूर भाग जाती थी और उनकी चाल भी बहुत तेज़ थी। लेकिन शीघ्र ही मैंने यह जान लिया कि उनको चौंकाने से पहले ही किस प्रकार मैं उनको मार सकता था। मेरी बन्दूक अपना निशाना नहीं चूकती थी।

बारह दिन और बीत गए। तब मुझे यह ध्यान आया कि कुछ ही दिनों बाद मैं दिन और रात की गणना नहीं कर सकूंगा। तब तो मैं पवित्र रविवार का भी ध्यान नहीं रख पाऊंगा और काम करने और विश्राम के दिनो मे कोई अन्तर नहीं रह जाएगा। अन्त में मैंने एक लम्बे लट्ठे पर चाकू से कुछ अक्षर खोदे। उसके ऊपर एक विशाल सलीब बनाया और उसे किनारे पर गाड़ दिया। मैंने उसपर लिख दिया ३० सितम्बर को मैं इस किनारे पर पहुंचा था और उसके दोनों ओर मैं अपने चाकू से रोज एक निशान बनाता, और यह मेरा कलैंडर बन गया। जब मैंने देख लिया कि वन-जन्तुओं का यहां भय नहीं है तो मैं चट्टान के आसपास घूमने लगा और वहा की रेतीली भूमि को सरकाने लगा। मैंने अपने घेरे में से बाहर निकलने के [illegible] भी [illegible]। फिर मैंने आवश्यक वस्तुओं का निर्माण प्रारम्भ किया। एक कुर्सी [illegible] । हालांकि बढ़ई के औजारों का मैंने पहले इस्तेमाल नहीं किया [illegible] परिश्रम करना पड़ा, लेकिन सामान भी बहुत [illegible] एक अलमारी बनाई और गुफा [illegible] कायदे से मैंने [illegible] । पहले मैं पहाड़

के ऊपर चढ़कर समुद्र की ओर देखता, और जब मुझे ऐसा लगता कि कोई पाल दिखाई दे रहा है तो मैं हर्ष से विह्वल हो जाता। लेकिन शीघ्र ही मुझे लगता कि यह मेरी कल्पना-मात्र है, तब मैं बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोने लगता और अपनी मूर्खता से अपनी पीड़ा को दस गुना बढ़ा लेता। इतना सब हो जाने के बाद मेरी गृहस्थी जैसे बन गई थी। मैं अपने दैनिक कार्यक्रम को लिखने में लग गया; और जब तक मेरे पास स्याही बाकी रही, मैंने इस काम को नहीं रोका।

एक दिन मैं समुद्र के किनारे गया, तो मुझे एक बहुत बड़ा कछुआ मिला। मैंने उसको मार डाला और पकाया। उसके अन्दर मुझे कई अण्डे मिले। मुझे उसका गोश्त बड़ा स्वादिष्ट दिखाई दिया और इतना अच्छा लगा कि जैसे मैंने बहुत दिनों से इतना अच्छा खाया ही नहीं था। इन दिनों बरसात आ गई। चारों ओर ठंड पड़ने लगी, जिसने मुझे कुछ बुखार-सा आ गया। पांच या छः दिन तक मैं अपनी गुफा में चुपचाप लेटा रहा। कठिनाई से ही इधर-उधर चल पाता था और भयानक सपने मुझे डराया करते थे। बरसात के बाद एक बड़ी अजीब बात हुई।

मैंने यह देखा कि जो अनाज मैं अपने साथ लाया था और वहां शेष धरती पर फैल गया था, अपने-आप उसके अंकुर फूटने लगे और अब पौधे मजबूती से खड़े हुए थे। मेरे सामने जो समस्या थी वह हल हो गई। मैं अन्न उगा सकता था। मृत्यु मुझे अब डरा नहीं सकती थी। पन्द्रह महीने बीत चुके थे मैं इस निर्जन द्वीप में अकेला था और तभी मैंने चारों ओर देखा था कि मेरा भंडार धीरे-धीरे समाप्त हो रहा था। इसके बाद मैंने दूसरी बार द्वीप की खोज-बीन करना प्रारम्भ किया। एक पानी की धारा बहती चली आ रही थी। मैं उसके किनारे-किनारे चलता चला गया और एक बहुत ही हरियाले प्रदेश में पहुंच गया। कितने सुन्दर-सुन्दर वृक्ष उगे हुए थे! वहां जंगली तम्बाकू उग रही थी। गन्ने उग रहे थे। नीबू के पेड़ थे और बहुत ही पके हुए मोटे-मोटे अंगूर के गुच्छे के गुच्छे लटक रहे थे। मैंने उन अंगूरों को तोड़कर पेड़ पर सूखने के लिए लटका दिया ताकि वे मेरे लिए दाख बन जाए।

इस ऋतु में मुझे सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह हुआ कि मेरा परिवार बढ़ने लगा था। बिल्लियां मैं जहाज पर से ले आया था उनके बच्चे हो गए थे और अब इतनी अधिक बिल्लियां हो गई कि मुझे कुछ को तो कीड़ों की तरह मारना पड़ा क्योंकि वे मुझे बहुत परेशान करती थीं। एक तोता पालतू था, जो मेरे पास पिंजरे में रहता था। इस तरह मक्खन, दूध और गोश्त मेरे लिए प्राप्त करना दुष्कर हो रहा था क्योंकि मेरी बन्दूक का बारूद अब खत्म होने लगा था। अब मुझे मालूम पड़ा कि जो जीवन मैं व्यतीत कर रहा था वह कितना सुखी था। उसके सारे दु:ख-अभिशाप मेरे लिए धीरे-धीरे दूर होते चले आ रहे थे। मेरे मस्तिष्क में नए-नए विचार आने लगे, परमात्मा का वचन मैं नित्य दोहराया करता था। उससे एक अखंड सांत्वना मुझे प्राप्त होती थी। एक दिन सवेरे बहुत ही उदास था मैं, और अचानक बाइबिल के इन शब्दों पर मेरी दृष्टि पड़ी:

"मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूंगा,
मैं कभी तेरा परित्याग नहीं करूंगा।..."

और इस तरह से मुझे ऐसा लगा कि निर्जन अनजान में भी कोई मेरे साथ था जो मुझे सुखी बनाने के लिए आतुर था। संसार के अन्य किसी प्रदेश मे सम्भवतः मुझे इतनी सांत्वना प्राप्त नही हुई थी।

अपनी परिस्थिति के लिए जितना भी भय सम्भव था उस सबको मैं भूला नही था। एक यह भी था कि कहीं से कोई जंगली न आ जाए जो मुझे ग्रस जाए, या अपने दल को न ले आए जिसके सामने मैं बेकाबू हो जाऊं। अभी मैंने अपने लिए एक नाव बनाना प्रारम्भ किया। वह नाव नहीं थी, एक विशाल वृक्ष का तना मैंने काट लिया था। सिडार वृक्ष को गिराना कोई आसान काम नही था और फिर मैंने उसे आग नहीं छुलाई, हथौड़ी और छेनी से धीरे-धीरे साफ किया। कितनी ही बार मैंने उसपर प्रहार किया, कितनी ही बार मैंने घननाद किया होगा, यह मुझे अब याद नही है। लेकिन जब यह काम पूरा हो गया तो बस एक ही समस्या थी। उस भारी वस्तु को मैं किस प्रकार पानी मे उतार ले जाऊ। वह इतनी भारी चीज़ थी कि मैं उसको पानी में तो क्या एक इंच भी सरकाने मे असमर्थ था। इसलिए मैं वहा रुक गया और देर तक देखता रहा। कितनी बडी मूर्खता की थी! इतना परिश्रम करने के पहले मैंने यह नही सोचा कि यदि मैं इसे पानी तक नही पहुंचा पाऊंगा तो इसका लाभ क्या होगा। तभी मैंने एक छोटी नाव बनाई जिसमें कम से कम मैं अपने द्वीप के सब तरफ घूम-फिर सकता था। फिर मैं अधिक दूर नही जा सकता था क्योंकि जबरदस्त धाराओं का मुझे खतरा था और प्रचण्ड पवन को भी वह झेल ही नही सकती थी।

जब से मैं इस द्वीप में आया तब से चार वर्ष व्यतीत हो गए। संसार मुझे अब एक दूर की वस्तु दिखाई देने लगा, जिसमे मैं कभी रहता था लेकिन अब उससे बाहर आ गया था। मानो मेरे और उसके बीच मे एक बहुत बडी खाडी आ गई थी, लेकिन मैं वहा रहता रहा और अपनी फसलें काटता रहा जो खूब पनपती थी। बकरो का मुझे गोश्त मिलता था। कछुए और समुद्री पक्षी ये सब मेरे भोजन बन गए थे। मेरे पुराने कपड़े जर्जर हो गए थे। तब मैंने एक वासकट और एक ब्रीचेज़ बनाई। नई ताज़े बकरे की खाल थी और उसने मेरा काम चला दिया। उसी खाल मे से मैंने अपने सिर के लिए एक टोपी बनाई उसके बाल मैंने बाहर की तरफ रखे ताकि अगर पानी बरसे तो वह भीतर न चला जाए। जलते हुए सूरज की प्रखर धूप से बचने के लिए मैंने बकरे की खाल का एक छाता भी बनाया और मैं पूर्ण शान्ति के साथ वहां दिन बिताने लगा। मैंने अपने-आपको ईश्वर की इच्छा पर समर्पित कर दिया। मेरे अन्दर अब कोई महत्वाकांक्षा नही थी। मैं केवल उसीके चरणों पर आश्रित हो गया था। उस समय यदि मुझे कोई देखता तो अवश्य ही अत्यन्त व्यग्य से मुझे देखकर मुस्करा देता। मैं और मेरा यह परिवार जब इकट्ठा होते, जब वे बिल्लियां, कुत्ता, तोता इत्यादि मुझे घेरकर बैठते तो वह सब कितना विचित्र लगता। मैं उन सबके बीच मे एक सम्राट की तरह बैठकर खाना खाता था। एक तोता ही तो था मेरा मुहलगा नौकर, जो मुझसे बात करने का अधिकारी था। मेरा कुत्ता, जो अब सनकी भी हो गया था क्योंकि अब वह बूढ़ा हो गया था, अकेला ही रहता था और मेरे सीधे हाथ की तरफ बैठा रहता। दोनों बिल्लियां मुझको घेर, इर्द-गिर्द बैठती और यह

आशा किया करतीं कि मैं खाते-खाते कुछ टुकड़े नीचे डाल दूं। मेरा रंग बहुत अधिक काला नहीं पड़ा था। मैंने अपनी दाढ़ी बहुत छोटी काट दी थी लेकिन मूछें लम्बी थीं और मैंने उन्हें मुसलमानों के गलमुच्छों की तरह बना लिया था। अगर इंग्लैंड में मेरी वैसी मूछें होतीं तो लोग निश्चय ही डरकर भाग जाते।

एक दिन ऐसा हुआ कि जब मुझे उस द्वीप में रहते हुए कई वर्ष व्यतीत हो गए और मैं अपनी नाव की तरफ जा रहा था तो मुझे यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि भूमि पर बालू में किसी मनुष्य के पांव के चिह्न दिखाई दे रहे थे। उंगलियां थीं, एड़ी थी, पांव का अगला हिस्सा था। निश्चय ही वह नंगे पैर था। मुझपर जैसे वज्र गिर गया। मैं चौकन्ना होकर खड़ा रहा, लेकिन मुझको कुछ भी सुनाई नहीं दिया। मैंने अपने चारों ओर देखा, दीखने को वहां कुछ भी नहीं था। तब मैं किनारे पर आगे बढ़कर गया, लौट-कर आया फिर भी मुझे किसीके निशान नहीं दिखाई दिए, तो ये पांव के निशान कहां से आए! मुझे कुछ पता क्यों नहीं चलता। अनेक विचार मेरे मस्तिष्क में आने लगे। मैं अपनी गुफा में लौट आया। मुझे ऐसा लगा कि जैसे धरती मेरे पांव के नीचे नहीं थी। न जाने कितना आतंक मेरे अन्दर समा गया था! कभी मैं आगे देखता, कभी पीछे और प्रत्येक पग पर मुझे ऐसा लगता कि जैसे कोई मनुष्य खड़ा है। रात बड़ी बेचैनी से बीती। नींद जाने कहां चली गई थी।

सवेरे उठते ही मैंने द्वीप को खोजना शुरू कर दिया। पहले मैंने अपने पशुओं को खतरे से बाहर कर दिया। और पश्चिम की ओर बढ़ते हुए मैंने यह निश्चय किया कि आज मैं उस भूभाग में भी जाऊंगा जिसमें आज तक नहीं गया था। मैंने समुद्र की ओर देखा तो मुझे बहुत दूर एक नाव दिखाई दी। जब मैं किनारे पर पहुंचा तो मैं स्तब्ध रह गया। एक क्षण-भर के लिए मेरा हृदय चमत्कृत हो गया। उस समय की भयभीत अवस्था का वर्णन भी मैं नहीं कर सकता। बालू पर नर-कंकाल पड़े हुए थे। हाथ-पांवों की हड्डियां थीं। सारा किनारा मनुष्य की हड्डियों से भरा हुआ था। एक जगह मैंने देखा कि एक गोल गड्ढा खोदकर उसमें आग जला रखी गई थी। अवश्य ही नरभक्षी जंगली यहां आ पहुंचे थे। उन्होंने अपना भोजन पकाया था। उनका भोजन उनके द्वारा पकड़े हुए कैदी थे। उस आतंक का वर्णन करने के लिए न जाने कितने ग्रन्थों का प्रणयन करना पड़ेगा। अब पहली बात मेरे दिमाग में यह आई कि किसी तरह इन दुष्टों को नष्ट करना होगा। ताकि वे इस ओर आना बन्द कर दें। फिर आखिर मैंने यही तय किया कि मैं स्वयं छिप जाऊं। मैंने अपनी तीनों बन्दूकों को डबल-लोड करके रख लिया। और यह निश्चय किया कि उस भीड़ पर गोली चलाऊं और उन सबको भगा दूं। इस उद्देश्य से मैं एक कोने में पेड़ के अन्दर बैठ गया। उसके अन्दर मैं छिपा रहा। उनकी दावत की जगह मुझे दिखाई देती रही।

प्रतिदिन मैं पहाड़ की चोटी पर बैठकर उनके जहाज के आने की आशा किया करता। लेकिन तीन वर्ष बीत गए और उनमें से कभी कोई नहीं आया। मुझे द्वीप पर आए इक्कीस वर्ष हो गए थे। एक सुबह मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि किनारे पर पास ही पांच नावें आकर लग गई थीं। मेरे पास दूरबीन जैसा कांच था। उसकी सहायता से अपने घर की छत पर से मैंने देखा कि लगभग तीसेक नरभक्षी वहां एकत्रित थे।

उन्होंने आग जला रखी थी और गोश्त तैयार कर लिया था। वे उसके चारों ओर नाच रहे थे। उनके भयानक जंगली इशारे दिखाई दे रहे थे और काटने के लिए वे दो-तीन व्यक्तियों को खींचे ला रहे थे। एक के सिर पर उन्होंने बड़ी जोर से डंडा मारा और उसे नीचे गिरा दिया और उसके बाद उसको काट डाला। किन्तु दूसरा उनके पंजे से अपने को छुड़ाकर भागा और इतनी तेज़ी से मेरी ओर आया कि पीछा करनेवाले दो व्यक्ति उसको पकड़ नहीं सके। मैं तुरन्त सीढ़ी पर से नीचे उतरा। जितना जल्दी हो सकता था, मैंने अपनी दोनों बन्दूकों को उठा लिया और उनकी ओर भागा। एक छोटे रास्ते से मैंने इन दोनों के बीच में पहुंचकर भागनेवाले को अपने हाथ से इशारा किया और फिर मैं धीरे-धीरे उन पीछा करनेवाले नरभक्षियों की ओर बढ़ा। एक को मैंने बड़े जोर से बन्दूक के कुन्दे की मार से गिरा दिया। दूसरा मुझे अपनी कमान के तीर से निश्चय ही मार डालता, पर मैंने तुरन्त ही अपनी बन्दूक उठाई और उसपर दाग दी और वह चिल्लाकर गिर पड़ा। जो जंगली भागकर आया था वह मेरी बन्दूक की आवाज़ और आग से इतना डर गया था कि बचाहत-सा मुझे देखता खड़ा रहा। उसमें कोई भी जुम्बिश नहीं हुई। मैंने साहस बढ़ाया और उसकी ओर इशारा किया। अन्त में वह मेरे पास आ गया। हर दस-बारह कदम पर वह झुकता, पृथ्वी को चूमता और अन्त में उसने झुककर मेरे पैर पकड़ लिए और मेरे पांव को उठाकर अपने सिर पर रख लिया।

वह बड़ा कोमल-सा एक सुन्दर व्यक्ति था। सम्भवत. उसकी आयु छब्बीस वर्ष थी। उसका चेहरा देखने में बड़ा प्यारा था। न तो उसपर चालाकी थी, न कोई डरावनापन। उसकी त्वचा ऐसी थी जैसे चमकदार जैतून का रंग होता है। उसकी नाक छोटी थी लेकिन हब्शियों की तरह चपटी नहीं थी। कुछ ही देर में मैं उससे बात करने लगा और फिर मैंने यह निश्चय किया कि इसको मैं अपनी भाषा सिखाऊंगा ताकि यह मुझसे बात कर सके। मैंने उसका नाम फ्राइडे रखा क्योंकि शुक्रवार के दिन ही मैंने उसकी जान बचाई थी। फिर मैंने उसको अपने लिए मालिक शब्द सिखाया। मैंने उसे बताया कि जब वह मुझे पुकारे तब मालिक कहकर पुकारे। फिर मैं उसे पहाड़ी के ऊपर ले गया। शत्रु गए थे या नहीं, यह देखना आवश्यक था। मैंने अपना कांच निकाला और देखा कि उनकी नावें चली गई थीं। वे अपने दोनों साथियों को वहीं पड़ा छोड़ गए थे। शायद उन्हें ढूंढने भी नहीं आए थे। हम लोग उतरकर वहां गए जहां उनकी दावत हुई थी। मेरा रक्त मानो मेरी नसों में जम गया और मेरा हृदय मेरे भीतर ही डूबने लगा। सारी जगह मनुष्य की हड्डियों से भरी पड़ी थी। रक्त से मिट्टी भीग गई थी। गोश्त के बड़े-बड़े टुकड़े पड़े थे कुछ इधर, कुछ उधर; अध-खाए, अध-जले और चबाकर थूके हुए। मैंने फ्राइडे से बहुत सारी हड्डियां, गोश्त और जो कुछ भी वहां बचा था सब इकट्ठा करवाया और उसे जलवा दिया। जब हम यह काम कर चुके तो हम अपने घर को लौट आए। आखिर बहुत दिनों बाद मुझे अपने सन्नाटे को तोड़ने के लिए अपनी निर्जनता में एक साथी मिल गया था। और मैं अपने प्यारे जंगली फ्राइडे के साथ उस एकान्त द्वीप में अपने बाकी दिन बिताने लगा। मैं समझता हूं कि इस द्वीप के निवास में मेरे लिए इससे बढ़कर आनन्द का और कोई अवसर नहीं था।

कुछ ही दिनों में वह अंग्रेजी भी इतनी सीख गया कि करीब-करीब मेरे हर सवाल का जवाब देने लायक हो गया। तब मुझे पता चला कि हमारा द्वीप ओरीनोको नदी की खाड़ी में स्थित था। और वह त्रिनीदाद के विशाल द्वीप से बहुत दूर नहीं था, जहां कि कैरेब लोग रहा करते थे। मैं फ्राइडे को इंग्लैंड और यूरोप की कहानियां सुनाया करता। मैंने उसको तैरने का तरीका बताया। मैंने उसको यह बताया कि हम लोग ईश्वर की प्रार्थना किस तरह करते हैं और यह भी बताया कि किस तरह हमारा जहाज खंडित हो गया था। तब उसने कहा कि कुछ ही दिन हुए सत्रह गोरे लोग जहाज के टूट जाने से उसके कबीले में आ मिले थे और अब वहीं रहते थे। मुझे इसमें सन्देह नहीं रहा कि वे सब स्पेन निवासी या पुर्तगाली होंगे और मेरे अन्दर यह इच्छा जाग उठी कि मैं किसी तरह उनसे मिल सकूं। यह विचार आते ही हम लोग फिर अब एक नई नाव बनाने लगे जो बहुत बड़ी थी जिसमें कम से कम दस आदमी एकसाथ बैठ सकते थे और उसमें मैंने तमाम सामान भर लिया और चलने ही वाला था कि फ्राइडे भागता हुआ आया और चिल्ला उठा, "ओ मालिक, कितना बुरा हुआ, बहुत ही दुःख की बात है!"

मैंने कहा, "क्या बात है, फ्राइडे ?"

"वह बहुत, दूर वहां···एक···दो···तीन नावें आ रही हैं!"

मैंने अपना दूरबीननुमा कांच फिर अपनी आंख के सामने लगाया और देखा कि तीन नावें किनारे पर रुकी थीं। उनपर से इक्कीस जंगली उतरे और उनके साथ बन्दी भी थे। उनमें से एक बन्दी निश्चय ही यूरोप का निवासी था।

मैंने और फ्राइडे ने बन्दूकें संभाल लीं और हम लोग नरभक्षियों की ओर चल पड़े। जब हम पास पहुंच गए तो हमने गोलियां चला दीं और एकसाथ कई जंगलियों को गिरा दिया। केवल तीन निकलकर भाग सके और बाकी सब मर गए। फिर मैंने गोरे बंदी के बंधन काट दिए। मुझे पता चला कि वह स्पेन का निवासी था और जिन लोगों के बारे में फ्राइडे ने मुझे कहा था उन्हीं में से था। लेकिन अभी एक और आश्चर्य आनेवाला था। एक बन्दी फ्राइडे का पिता था। उसे भी युद्ध में बन्दी बना लिया गया था। उस समय पिता और पुत्र के मिलन को देखकर, उनका हर्ष, उनका हास्य, उनका आनन्दातिरेक से संगीत में झूम उठना और नृत्य में विभोर हो उठना देखकर ऐसा कौन था जिसके नयनों में अश्रु आप्लावित न हो उठते।

अब मेरे छोटे परिवार में दो आदमी और बढ़ गए। मैंने उन लोगों से बातचीत की और आखिर हम लोगों ने यह निश्चय किया कि वे दोनों मेरी नाव में चले जाएं और मुख्य भूमि पर जो बाकी स्पेन निवासी थे उनको भी ले आएं। उन्होंने मुझको बताया कि वे लोग वहां अत्यन्त कष्ट पा रहे थे। लेकिन उनके आने के पहले मैंने कहा कि वे सम्पूर्णतया मेरी आज्ञा का पालन करेंगे और जो कुछ मैं करूंगा उसमें पूरी तरह से वे मेरी सहायता करेंगे, तब तो मैं उन्हें यहां आने दूंगा और यह प्रतिज्ञा-सौगन्ध खाकर लिखी जाएगी और उसपर उन लोगों को हस्ताक्षर करने होंगे। उन लोगों ने दाख और रोटियां खाकर अपनी यात्रा प्रारम्भ कर दी। आठ दिन बीत गए। मैं आशा कर रहा था कि वे लोग लौटेंगे तभी एक अघटित घटना घटी। मैं अपनी कुटिया में गहरी नींद में सो

रहा था। मेरा नौकर फ्राइडे एकदम सवेरे भागता हुआ आया और चिल्ला उठा, "मालिक, मालिक ! एक जहाज आ रहा है !"

खतरे की परवाह न करते हुए मैं तुरन्त कूदकर खड़ा हो गया और बिना हथियार लिए बाहर निकल पड़ा। देखा, डेढ़ लीग की दूरी पर किनारे पर लंगर डाले एक जहाज खड़ा था। मैं अपनी घबराहट की अभिव्यक्ति नहीं कर सकता। ऐसे जहाज को देखकर मैं हर्ष से जैसे विह्वल हो उठा, किन्तु फिर भी मैं अपनी जगह से तनिक भी टस से मस नहीं हुआ। मैं नहीं जानता कि वे लोग कौन थे, उनके हृदय में दया थी या विनाश था। तभी मैंने किनारे पर आती हुई एक नाव देखी जिसमें ग्यारह आदमी बैठे थे। उनमें से तीन कैदी थे और बाकी लोग उनसे दुर्व्यवहार कर रहे थे। जब कैदियों को लेकर उनके बन्दी करनेवाले लोग भूमि प्रदेश के भीतर घुस आए और आगे बढ़ गए, तो मैं चुपचाप छिपकर कैदियों के पास पहुंचा और मैंने उनसे धीरे से पूछा, "तुम कौन हो ?"

उन्होंने कहा, "हम अंग्रेज हैं। एक कमांडर है; मैं उसका साथी हूं और यह एक यात्री है। हमारे मल्लाहों ने बगावत कर दी है और हम लोगों को नष्ट कर देने के लिए यहां ले आए हैं।"

मैंने उस कप्तान से कहा, "देखिए श्रीमान, यदि मैं आपको मुक्ति दिला दूं तो क्या आप मेरी दो शर्तें मानने को तैयार होंगे ?"

उसने कहा, "क्या हैं वे शर्तें ?"

मैंने कहा, "यदि मैं अपने हथियार आपके हाथ में दे दूं तो आप मेरे विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं करेंगे। दूसरी बात अगर जहाज आपको वापस मिल जाता है तो आप मुझे और मेरे साथी को इंग्लैंड तक मुफ्त पहुंचा देंगे।"

मनुष्य के आश्वासन में जितना बल है उसका कप्तान ने पूरा प्रयोग किया। तब मैंने उसको और उसके दोनों साथियों को मुक्त कर दिया। उनको कुछ हथियार दे दिए और उनको वहां ले गया जहां उनके साथी बैठे थे। उनपर हमने एकदम गोलियां चलानी शुरू कर दीं। जो मरे नहीं थे, उन्होंने तुरन्त समर्पण कर दिया।

अब इंग्लैंड लौटने में मेरे सामने कोई बाधा नहीं थी। मैं और फ्राइडे आनन्द से जहाज पर चढ़ गए और स्मृति के रूप में मैंने बकरे की खाल की अपनी बड़ी टोपी ले ली। अपना छाता लिया, अपने तोतों में से एक को सभाला और अपना धन भी मैंने साथ ले लिया। बगावत करनेवाले कप्तान को हमने लटका दिया और तीन को उसी द्वीप पर एकान्त में तड़पने के लिए छोड़ दिया और उसके बाद अपना जहाज चला दिया। बिना किसी कष्ट के हम लोग इंग्लैंड पहुंच गए। ३५ वर्ष बाद ११ जून, १६८७ को मैं फिर अपने देश में आ गया था। मैंने देखा कि तब मैं पांच हजार पौंड से भी अधिक का मालिक हो गया था क्योंकि इस दौरान में मेरे पुराने धन ने ब्राजील की जायदाद में इतनी आमदनी कर ली थी और मेरी खेती में से भी मुझे हजार पौंड सालाना मिलने लगे थे। अन्त में आज मैं उस ईश्वर को धन्यवाद देता हूं जिसने इतने विचित्र रूप से मुझे सुख पहुंचाया। तब से मैं अपने सेवक फ्राइडे के साथ अपने जीवन के शेष दिन व्यतीत कर रहा हूं।

प्रस्तुत उपन्यास में साहसिक जीवन का अद्भुत चित्रण किया गया है। यह उपन्यास अत्यन्त विख्यात हुआ। इसमें बिना किसी नारी पात्र के भी बड़ा आकर्षण है। जीवन की महान शक्ति और मनुष्य की अपराजित भावना ही इसका मूल्य बढ़ाती है। इसमें तत्कालीन यूरोप की दुर्दम्य साहस-भरी कहानी भी झलकती है।

भयंकर कृति
[फ्रैंकेंस्टीन[1]]

शेली, मेरी डब्लू० : अंग्रेजी लेखिका मेरी शेली का जन्म ३० अगस्त, १७९७ को लंदन में हुआ। प्रसिद्ध संपादक और 'स्वतन्त्र विवाह सिद्धांत' के प्रचारक विलियम गोड्विन मेरी के पिता थे। माता मेरी वोलस्टोनक्रैफ्ट ने 'स्त्रियों के अधिकार' (द राइट्स ऑफ विमैन) नामक पुस्तक लिखी थी। पर्सी बीशी शेली ने अपनी पहली स्त्री हैरियट को छोड़ दिया था। गोड्विन के यहां शेली को मेरी दिखाई दी और शेली ने उसे रिझा लिया। परिणामस्वरूप कुमारी मेरी शेली के साथ जुलाई, १८१४ में यूरोप भाग गई। जब हैरियट (शेली की पहली पत्नी) का देहान्त हो गया, तो शेली ने मेरी से ३० दिसम्बर, १८१६ को विवाह कर लिया। १८२२ में कवि शेली की मृत्यु हो गई। मेरी शेली विधवा हो गई। तब उसे शेली परिवार से खर्चा मिलने लगा और वह उसीसे काम चलाती हुई कवि शेली की कृतियों का सम्पादन करती अपना जीवन व्यतीत करती रही। २१ फरवरी, १८५१ ई० को मेरी वोलस्टोन क्रैफ्ट शेली इस संसार से विदा हो गई।

प्रस्तुत उपन्यास 'फ्रैंकेंस्टीन' मेरी वोलस्टोनक्रैफ्ट शेली ने साहित्य में एक विचित्र और भयानक कथा लिखने के दृष्टिकोण से सन् १८१७ में प्रकाशित किया था, जो अत्यन्त प्रसिद्ध हुआ क्योंकि इसमें विज्ञान के विकास और मानव की प्रकृति को जीत लेने की दुर्दम्य लालसा पर व्यंग्य किया गया है। मध्यकालीन कीमियागरी (रसायन विद्या) पर भी इसमें प्रकाश पड़ता है।

उत्तर के समुद्र बर्फ जैसे जमे रहते हैं। आर्कन्जिल के उत्तर में विक्टर फ्रैंकेंस्टीन एक भयानक दानव का पीछा कर रहा था। वहां एक ब्रिटिश यात्री गया हुआ था, जो नई धरतियों, समुद्रों की खोज कर रहा था। बर्फ पर फ्रैंकेंस्टीन उस दानव को ढूढ़ता फिर रहा था। एक ब्रिटिश अन्वेषक ने फ्रैंकेंस्टीन की जान बचाई, क्योंकि वह भयानक संकट में पड़ गया था। यह कथा उस अन्वेषक को फ्रैंकेंस्टीन ने ही इस प्रकार सुनाई थी :

जिनेवा में एक राज्यकर्मचारी था। उसका जीवन सम्मानित था। उसने अधेड़ उम्र में जाकर विवाह किया। उसीका पहला बेटा फ्रैंकेंस्टीन था।

फ्रैंकेंस्टीन का जीवन बचपन में आनन्द से व्यतीत हुआ। उसने कोर्नेलियस एग्रिप्पा और अन्य कीमियागरों की कृतियों का गहरा अध्ययन किया। सत्रह वर्ष की आयु प्राप्त

---

१. Frankenstein (Mary W. Shelley)

होने पर फ्रैंकेंस्टीन ने इंगोल्स्टैट नामक विश्वविद्यालय में प्रवेश किया। उसकी माता इस समय से पूर्व ही दिवगत हो चुकी थी। मृत्युशय्या पर पड़े हुए उसने उससे यह प्रतिज्ञा कराई थी कि वह एलिजाबेथ लैवैन्ज़ा से ही विवाह करेगा। मिलान के एक कुलीन व्यक्ति की उस कन्या को फ्रैंकेंस्टीन परिवार ने ही उसके पिता की मृत्यु के बाद उसके अनाथ हो जाने पर पाला-पोसा था। उस बालिका के केश बहुत सुन्दर थे।

बचपन में कीमियागरी की तरह-तरह की किताबें पढ़कर विक्टर फ्रैंकेंस्टीन में 'अमृत' खोज लेने की एक ज़बरदस्त चाह पैदा हो गई थी। लेकिन इंगोल्स्टैट विश्वविद्यालय में पहुंचने पर उसके दिमाग से वे पुराने कीमियागर दूर हो गए थे और वह आधुनिक विज्ञान का अध्ययन करने लगा। रसायनशास्त्र तथा प्राकृतिक विज्ञानों के अध्ययन ने उसे नई प्रेरणा दी। रुक्ष स्वभाव के प्रोफेसर क्रैम्प और विनम्र प्रोफेसर वाल्डमैन की संरक्षकता में उसे नई-नई बातें ज्ञात हुईं। दो वर्ष में ही फ्रैंकेंस्टीन ने इतनी लगन से अध्ययन किया कि उसको सिखाने योग्य उसके अध्यापकों के पास और कुछ नहीं रहा।

उसने जिनेवा लौटने का विचार किया, किन्तु तभी उसने एक अद्भुत खोज कर डाली। वह जितनी आश्चर्यजनक थी, उतनी ही सरल भी थी। यहां तक कि उसे स्वयं इस बात पर घोर आश्चर्य हुआ।

जब वह मुर्दाघरों में हड्डियां जमा करने के स्थानों में रात और दिन घूमा, तो अचानक उसे यह बात सूझी कि जीवन किस प्रकार प्रारम्भ होता है। और यही उसकी खोज थी, जिसे पागल का प्रलाप नहीं समझा जा सकता। उसने जीवन के प्रारम्भ को समझ लिया। किस प्रकार किसीको जीवित किया जा सकता है, इस सिद्धान्त का उसने पता लगा लिया। और फिर उसने यह भी पता लगा लिया कि निर्जीव में किस प्रकार जीवन डाला जा सकता था।

अब वह एक आदमी बनाने लगा। उसकी कल्पना जागरूक हो उठी। उसमें एक आवेश भर गया। आदमी से कम वह आखिर बनाता भी क्या?

आठ फुट लम्बा मनुष्य! यही उसने योजना बनाई। और फिर वह सब कुछ भूलकर उसीमें जुट गया। इतना लम्बा मनुष्य बनाने के लिए उसे सामग्री की आवश्यकता थी। महीनों बीत गए। वह अपने स्वास्थ्य को भी ठीक नहीं रख सका। चांदनी रातों में वह गीली कब्रों में उतर जाता और कभी कट्टीखानों में जाता और कभी डाक्टरों के चीरा-फाड़ी के कमरों में। कभी ज़िन्दा जानवरों को पकड़कर तरह-तरह की तकलीफें देता। उसे मृत में से अमृत पैदा करना था, निर्जीव में से जीवित पैदा करना था। आवेश में उसे लगने लगा, जैसे वह स्वयं ही विधाता था क्योंकि वह एक नई योनि का निर्माण कर रहा था। कितना विचित्र था यह विचार! और इसने उसमें एक अद्भुत लगन भर दी।

एक ग्रीष्म ऋतु व्यतीत हो गई। और धीरे-धीरे दूसरी आ गई। फ्रैंकेंस्टीन की प्रयोगशाला तरह-तरह की गन्दी चीज़ों से भरी थी। हड्डी, मांस, मज्जा और इसी प्रकार की अनेक वस्तुएं थीं। और वह अपने घर की ऊपरी मंज़िल के कमरे में सब-कुछ छोड़कर व्यस्त था। घर से पत्र-व्यवहार भी बन्द हो गया था। उसका प्रयोग सफल हो रहा था। उन्मुक्तता ने उसे जैसे परवश कर दिया था। किसीसे मिलना-जुलना भी उसे ऐसा लगता,

मानो वह कोई घोर अपराध कर रहा हो।

नवम्बर की ठंडी रात थी। बाहर पानी बरस रहा था। चारों ओर अन्धकार सांय-सांय कर रहा था।

फ्रैंकेंस्टीन को मानो आत्मयंत्रणा हो रही थी। उसी समय उसने उस निर्जीव ढांचे में प्राण डाल देने का निश्चय किया। जिस समय उसने उसमें प्राण संचारित किए और उस शरीर—उस काया—ने अपनी पीली-सी आंखें खोलीं, पानी बरसने की आवाज आ रही थी। फ्रैंकेंस्टीन के मन में भयानक भय भर गया। उसका श्वास आतंक से अवरुद्ध-सा हो गया। उस विशाल काया—उस दैत्य के विशाल अंग उसके दीर्घाकार के अनुरूप ही थे। उसके केश काले और चमकीले थे। उसके सुघर दांत सुन्दर-सुन्दर चुनकर लगाए गए थे। लेकिन उसकी पीली खाल सिकुड़नों से भरी हुई थी। उसकी आंखें जैसे पनीली थीं और उसके होंठ काले और खिंचे हुए थे। इस पृष्ठभूमि पर उसके दांत और भी अधिक भयानक लगते थे। अपने हाथों से बनाए हुए इस दानवाकार मनुष्य को देखकर स्वयं फ्रैंकेंस्टीन के ही रोंगटे खड़े हो गए।

वह अपने शयनागार की ओर भागा और थकान, घबराहट और बेचैनी से आक्रान्त-सा शय्या पर गिर गया। पता नहीं, कब उसे नींद आ गई! किन्तु अचानक ही उसकी आंख खुल गई, क्योंकि दानव उसके शयनागार में घुस आया था। वह कुछ बड़बड़ाया। शायद मुस्कराया भी, पर वह भयानक दिखाई दिया। भयभीत होकर फ्रैंकेंस्टीन बाहर भाग चला। उस दानव के भयानक मुख को देखना किसी भी मानव के बस की बात नहीं थी। वह विकराल था और उसे देखकर यही लगता था जैसे कोई डरावना मुर्दा उठकर खड़ा हो गया हो।

हैनरी क्लेरवल उसी समय विश्वविद्यालय में आया था। वह फ्रैंकेंस्टीन का बचपन का मित्र था। इस समय फ्रैंकेंस्टीन उसी के पास भागा गया। जब क्लेरवल के साथ वह घर लौटा तो वह दानव वहां जा चुका था। आवेश और भय से ग्रस्त फ्रैंकेंस्टीन पहले तो इस विचार से खुशी से पागल हो गया कि उसने इतनी जबर्दस्त खोज करके सफलता प्राप्त कर ली थी, किन्तु उत्तेजना ने उसके स्वास्थ्य पर विचित्र प्रभाव डाला और कई महीनों के लिए वह ज्वराक्रांत पड़ा रहा। अपने ताप में वह दानव के बारे में जाने क्या-क्या बर्राता रहा। और यह आवेश उसमें अर्थात भाव से बना रहा।

एक ग्रीष्म ऋतु और एक शीत ऋतु फिर व्यतीत हो गई, तब कहीं जाकर फ्रैंकेंस्टीन का मन स्थिर हो पाया। पर अब उसमें पदार्थ विज्ञान के प्रति घोर अरुचि हो गई थी। जीवशास्त्र पर बात भी करना उसे दूभर लगता था। वह उसका नाम भी सुनना पसन्द नहीं करता था।

मई का महीना था फ्रैंकेंस्टीन जिनेवा लौटने की योजना बना रहा था। उसी समय खबर आई कि एक दिन उसका भाई विलियम खेलते-खेलते जरा इधर-उधर निकल गया और वहां किसीने उसको गला घोटकर मार डाला। इस संवाद ने फ्रैंकेंस्टीन को बहुत दु:ख पहुंचाया, परन्तु घर तो उसे जाना ही था। और अब बाकी लोगों से इस संवेदना की वेला में मिलने के लिए उसका हृदय पहले से भी अधिक आतुर हो उठा। यात्रा

में उसने विश्राम नहीं लिया। जब वह जिनेवा के समीप के पर्वत-प्रदेश में पहुंचा, वह चौंक उठा। उसको अपने हाथों से बनाया हुआ वही विशालकाय, भयंकर और कुरूप दैत्य दिखाई दिया। उसे देखकर फ्रैंकेंस्टीन के मन में यह धारणा पक्की बन गई कि उसीने उसके भाई की हत्या की थी। उधर एक विचित्र काण्ड हो गया। फ्रैंकेंस्टीन परिवार ने जस्टिन मौरिज नामक एक लड़की को देखकर उसका पालन-पोषण किया था। अब उसी को उस हत्या के अपराध में पकड़ लिया गया था। फ्रैंकेंस्टीन उससे जाकर मिला। किन्तु किसी भी अनुनय ने उस लड़की की रक्षा नहीं की। जस्टिन की जेब से विलियम का एक छोटा चित्र बरामद हुआ था और जब वकील ने उससे कड़ी जिरह की, जस्टिन ने हारकर स्वीकार कर लिया लिया कि उसीने हत्या की थी। उसको फांसी दे दी गई। फ्रैंकेंस्टीन में इतना साहस नहीं जाग सका कि वह उस दैत्य के बारे में सबको बता डाले। यदि वह बता भी देता, तो सब लोग उसको पागल समझते। इस भय ने ही उसका मुंह बन्द कर दिया था।

किन्तु अब उसके मन में एक कटुता आ गई। यह उसीकी कुटाल क्रियाओं का परिणाम ही तो था कि विलियम और जस्टिन व्यर्थ ही मार डाले गए थे। उसकी मंगेतर एलिजाबेथ ने उसे बहुत समझाया, उसके मन को डूबने से वह रोकती रही, किन्तु उसे किसी भी चीज से सान्त्वना नहीं मिल सकी। कितना भयानक कार्य कर दिया था उसने! जब उसे अपने हाथों से निर्मित दैत्य की याद आती तो वह घृणा से भर जाता। अपने मन का भार दूर करने के लिए वह आल्प्स पर्वतों में चला गया। एक दिन जब मौंट ब्लैंक के हिमखंड के पास घूम रहा था, उसे वह दैत्य दिखाई दिया। फ्रैंकेंस्टीन आतंक से अभिभूत हो गया। दैत्य बर्फ पर अतिमानवीय शक्ति के साथ प्रचंड गति से चल रहा था। अब फ्रैंकेंस्टीन भाग नहीं सका। दैत्य ने उसे घेर ही लिया। विवश होकर फ्रैंकेंस्टीन को दैत्य की कथा सुननी ही पड़ी। दैत्य ने कहा, "मेरा जीवन बहुत ही दुःखी है। जीवित प्राणियों में मुझसे अधिक दुःख किसीको नहीं है। यहां तक कि तुम जो मेरे स्रष्टा हो, तुम भी मुझसे घृणा करते हो। मैं तो दयालु और अच्छा था। किन्तु मेरे सूनेपन ने, सबसे निरन्तर मिलने-वाली घृणा और भय ने मुझे अब एक शैतान बना दिया है। यदि मानवजाति को यह ज्ञात हो जाए कि मैं भी एक अस्तित्व रखता हूं, तो निश्चय ही वह मेरे विनाश की योजना में रत होगी और मेरे विरुद्ध अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग किया जाएगा। मैं अपने शत्रुओं से किसी प्रकार की भी शर्तें नहीं रखूंगा। मेरा भविष्य तुम पर निर्भर है। यदि तुम चाहते हो कि मैं शांतिपूर्वक बिना किसी की हानि किए अपना जीवन बिता दूं, तो यह केवल तुम्हारे ही हाथ में है।"

बातें करते हुए वे दोनों पर्वत-प्रांत की एक कुटिया में चले गए। दैत्य सुनाने लगा। वह भटक निकला था और जब वह बाहर पहुंचा तो उसने देखा कि मनुष्य उसे देखकर भय से भाग जाते हैं। उसे देखना भी पसन्द नहीं करते हैं। अन्त में वह दैत्य एक बार शीत ऋतु में एक कुटिया के बगल में एक दीनतर झोंपड़ी में जा बसा। उस कुटीर में एक अंधा आदमी रहता था। उसकी दो संतान थीं, फेलिक्स और एगाथा। वे लोग फ्रांस से निर्वासित थे, इसलिए ऐसा जीवन व्यतीत कर रहे थे।

दैत्य दीवार के एक छेद से उन्हें देखा करता। इन दुःखी व्यक्तियों में स्नेह था,

और दरिद्रता ने उनके मानवीय गुणों को विकसित कर दिया था। दैत्य के मन में उनके प्रति ममता भरने लगी। उसमें उनके प्रति दया-भाव ही भर आया। दैत्य ने उनसे बोलना सीखा। दैत्य को मांस खाना पसन्द नहीं था। वह फल खाता था। फेलिक्स का काम उसने हलका कर दिया। वह जंगल से चुपचाप लकड़ियां बटोर लाता। उन लोगों से ही दैत्य ने पढ़ना भी सीखा। उसने मिल्टन का 'पैरेडाइज़ लॉस्ट' तथा प्लूटार्क की 'जीवनियां' इत्यादि पढ़ डालीं, जो उसे वहां मिल गईं। किन्तु इसके बाद उसने सोचा कि जिन लोगों से उसने चुपचाप, उनके अनजाने ही, इतना सब कुछ प्राप्त किया था, उनसे अवश्य मिलना चाहिए। किन्तु यही एक भूल हो गई। जब वह उनके सामने गया, तो वही घृणा और भय उन लोगों के हाथों आगे आ गए और दैत्य फिर से अकेला रह गया, उसका हृदय पीड़ा से कराह उठा। अब वह भाषा और साहित्य से परिचित हो जाने के बाद कहीं अधिक संवेदनशील हो गया था।

जिस समय दैत्य फ्रैंकेंस्टीन के घर से भागा था, तब वह कुछ कागज़ात उठा ले गया था। अब उसने उन्हें पढ़ा। तब उसे ज्ञात हुआ कि फ्रैंकेंस्टीन ही उसका निर्माता था। अपनी सृष्टि का कारण मालूम होने पर वह जिनेवा की ओर चल दिया। जंगल में उसे विलियम मिला। उसने उसकी हत्या कर दी और खलिहान के पास जस्टिन को सोते देख, उसकी जेब में उसने वह चित्र रख दिया।

दैत्य की कथा समाप्त हुई। तब उसने कहा, "तुम्हें मेरी एक इच्छा पूरी करनी होगी।"

"क्या है वह ?" फ्रैंकेंस्टीन ने पूछा।

"मुझे अपनी जैसी एक स्त्री चाहिए।"

फ्रैंकेंस्टीन का मन विद्रोह कर उठा। परन्तु दैत्य ने कहा, "नहीं, तुम डरो मत। अपनी साथिन को लेकर मैं दक्षिण अमरीका के जंगलों में चला जाऊंगा।"

फ्रैंकेंस्टीन को मजबूर होकर उसकी मांग स्वीकार कर लेनी पड़ी।

ओर्कनीज़ द्वीप के एकांत निर्जन में फ्रैंकेंस्टीन ने फिर से अपनी प्रयोगशाला खड़ी की। और वह दैत्य के लिए साथिन बनाने में जुट गया। किन्तु उसका मन प्रतिक्षण भीतर ही भीतर विद्रोह कर रहा था। उसे लग रहा था कि वह कोई भयानक और घृणित रूप से पैशाचिक कार्य कर रहा था। फिर भी वह कठोर परिश्रम करता रहा। धीरे-धीरे कार्य पूर्ण होने का समय निकट आने लगा। तभी वह दैत्य वहां था उपस्थित हुआ।

फ्रैंकेंस्टीन ने उसका विकराल मुख देखा। उसे लगा जैसे वह स्वयं पागल हो गया था कि उसके लिए एक वैसी दैत्या बना रहा था। ऐसा करना एक भयानक पाप के बराबर था। और उत्तेजना में उसने उसे नष्ट कर दिया। दैत्य ने जब अपनी साथिन के ढांचे को नष्ट होते देखा, तो वह विक्षोभ और क्रोध से पागल हो उठा। उसने प्रतिहिंसा से भरकर प्रतिज्ञा की, "फ्रैंकेंस्टीन ! अब से तुम्हारा समय भयानक दुःखों और आतंक में व्यतीत होगा। जिस दिन तुम्हारी शादी होगी, मैं तुम्हारे पास रहूंगा। भूलना नहीं।"

यह भयानक अध्याय समाप्त हुआ। दैत्य ने प्रतिशोध लेना प्रारम्भ किया। उसने एक बार अवसर पाकर हैनरी क्लेरवल का गला घोट डाला और संदेह में फ्रैंकेंस्टीन को

पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। तीन महीने तक फ्रैंकेंस्टीन अपने को निरपराध प्रमाणित नहीं कर सका। बमुश्किल जब वह किसी तरह छूट सका तो वह जिनेवा लौट गया।

पिता अत्यन्त दुःखी थे। एलिजाबेथ भी प्रतीक्षा करते-करते थक गई थी। फ्रैंकेंस्टीन ने शीघ्र ही विवाह कर लेने का निश्चय किया। क्लेरवल की मृत्यु ने फ्रैंकेंस्टीन को दैत्य की प्रतिहिंसा की झलक तो दे दी थी, किन्तु वह इस समय विवाह के लिए विवश हो गया था। विवाह में वह निरंतर आशंकित रहा। सुहागरात मनाने के लिए दंपती ने इवियन नामक स्थान को प्रस्थान किया।

वे लोग एक सराय में जाकर ठहरे और एलिजाबेथ पहले सोने चली गई।

सोने के पहले फ्रैंकेंस्टीन घर की तलाशी लेने लगा। वह दैत्य के आने के सब मार्ग बंद कर देना चाहता था। इसी समय उसके कानों में एक भयानक चीत्कार गूंज उठी। फ्रैंकेंस्टीन के रोंगटे खड़े हो गए। वह ऐलिजाबेथ के कमरे की ओर भागा। जो कुछ उसने देखा, उससे उसकी आंखें फटी की फटी रह गईं। ऐलिजाबेथ शय्या पर आड़ी पड़ी थी और उसके अंग तोड़-मरोड़ दिए गए थे। मुख विकृत हो गया था। वह मर चुकी थी और खिड़की के पास खड़ा था वही दैत्य, भयानक हास्य उसके विकराल मुख पर दीखता था। दैत्य ने अपनी भयंकर उंगली उठाकर शव की ओर इंगित किया और जब फ्रैंकेंस्टीन ने उसे मारने को पिस्तौल उठाई, तो दैत्य झपटा और उसने पीछे की गहरी झील में गोता लगा दिया। वह उसके हाथों से बचकर निकल गया।

फ्रैंकेंस्टीन के वृद्ध पिता को जब यह समाचार प्राप्त हुआ, दुःख ने उन्हें घेर लिया और वे भी इस संसार से शीघ्र ही उठ गए। फ्रैंकेंस्टीन का मानसिक संतुलन इन प्रहारों से हिल गया और तब विवश होकर लोगों ने उसे एकांत कोठरी में बन्द कर दिया क्योंकि उसके आचरण पागलों जैसे हो गए थे। जब उसे छोड़ा गया, फ्रैंकेंस्टीन ने अपनी कथा लोगों को सुनाने की चेष्टा की, किन्तु उसने देखा कि किसीको भी उस कथा पर विश्वास नहीं होता था। अधिकारीगण उसे मानसिक व्याधिग्रस्त समझते थे। अब उसने निर्णय किया कि यदि अपने द्वारा निर्मित उस दैत्य का नाश करना आवश्यक था, तो वह उसे स्वयं अपने हाथों करना होगा, इसके अतिरिक्त और कोई चारा नहीं था।

अब फ्रैंकेंस्टीन उसका पीछा करने लगा। दैत्य भाग चला। फ्रैंकेंस्टीन ने उसके पीछे-पीछे फ्रांस पार किया। भूमध्यसागरीय प्रदेशों में उसका पीछा करता रहा। दैत्य कालेसागर की ओर चला गया। फ्रैंकेंस्टीन ने शान्ति स्वीकार नहीं की। वह भी उसके पीछे चलता रहा। उन्होंने तातार देश पार किया, रूस पार कर डाला। कभी-कभी दैत्य अपने निशान छोड़ जाता। वह पेड़ों और पत्थरों पर खोद जाता, "मेरा पीछा करो। मैं उत्तर की अविनाशी बर्फ की ओर जा रहा हूं।"

अंत में दैत्य और उसका पीछा करते-करते फ्रैंकेंस्टीन उत्तरी सागर के क्षेत्र में पहुंच गए। चारों ओर बर्फ जम रही थी। फ्रैंकेंस्टीन कुत्तों की फिसलनेवाली गाड़ी पर चढ़कर दैत्य के पीछे चल पड़ा। बर्फ के कारण फ्रैंकेंस्टीन का स्वास्थ्य बिगड़ चला। वहां उसे एक ब्रिटिश यात्री ने बचाया। तब फ्रैंकेंस्टीन ने उसे सारी कथा सुनाई।

किन्तु फ्रैंकेंस्टीन पूर्णतः जर्जर हो चुका था। वह जीवित नहीं रह सका। अंग्रेज

यात्री ने देखा कि एक विकराल दैत्य उसके जहाज पर चढ़ आया। उसने अपने स्रष्टा फ्रैंकेंस्टीन की ओर अंतिम बार देखा और फिर वह बर्फ पर कूद गया और लहरें थपेड़े मारते हुए उसे बहा ले गईं।

प्रस्तुत उपन्यास में वैज्ञानिकों की महत्वाकांक्षा पर व्यंग्य किया गया है। मनुष्य अपनी ही रचना से डरने लगता है और अंत में अपने को उससे बचा नहीं पाता।

चन्द्रकान्त मणि
[द मूनस्टोन[1]]

कॉलिन्स, विल्की : अंग्रेजी उपन्यासकार विल्की कॉलिन्स का जन्म विलियम कॉलिन्स के परिवार में हुआ। पिता चित्रकार थे। आपका जन्म ८ जनवरी, १८२४ को लंदन में हुआ। आपने वकालत पढ़ी और परिणामस्वरूप आप पत्रकार बने। और इसमें आपको शीघ्र ही सफलता मिल गई। आपका वास्तविक यश आपके उपन्यासों पर आश्रित है। आपको आधुनिक जासूसी उपन्यास लिखने की परम्परा में, स्रोत-स्वरूप माना जा सकता है। चार्ल्स डिकिन्स से आपकी अच्छी मित्रता थी और 'नोथरो फेयर' नामक उपन्यास को दोनों ने सहयोग से लिखा था। १८६८ के आसपास 'द मूनस्टोन' (चन्द्रकान्त मणि) नामक उनका यह सुप्रसिद्ध उपन्यास प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात् १८७० के लगभग आपने अमेरिका की यात्रा की और वहां भाषण दिए और अपनी रचनाओं के अंश भी पढ़-पढ़कर सुनाए। २३ सितम्बर, १८८९ को आपका देहावसान हो गया।

चन्द्रकान्त मणि पीले रंग का चमकदार पत्थर था। उसका मूल्य कूता गया बीस हजार पौंड! कहा जाता था कि किसी समय यह मणि भारतवर्ष के प्रसिद्ध नगर सोमनाथ में सोमदेवता के मस्तक पर सुशोभित थी। समय बदल गया था। वह एक अद्भुत उपहार के रूप में अट्ठारह साल की एक अंग्रेज तरुणी को उसके जन्म दिन पर प्राप्त हुई। किन्तु मिस रेचेल विरिनडर इस बात को समझ नहीं सकी कि उसने कितनी बहुमूल्य वस्तु प्राप्त कर ली थी। और इससे भी, अधिक इस बात को नहीं जान सकी कि देनेवाले ने उसे किसी विशालहृदयता के कारण यह भेंट नहीं दी थी बल्कि उसके पीछे एक प्रतिहिंसा की भावना थी। उसके चाचा जॉन हर्नकासिल दुश्चरित्र थे। उन्हें यह चन्द्रकान्त मणि भारतवर्ष में हत्या और चोरी के द्वारा प्राप्त हुई थी। वे यह जानते थे कि जिसके पास भी यह मणि रहेगी दुर्भाग्य उस पर अवश्य टूटेगा और इसीलिए उन्होंने अपनी भतीजी को ऐसा उपहार दिया था। कारण यह था कि रेचेल की माता श्रीमती जूलिया ने उनका स्वागत नहीं किया था। अपमान की इस भावना ने उनमें ऐसी प्रतिहिंसा भर दी थी।

यद्यपि रेचेल इस खतरे को नहीं जानती थी लेकिन श्रीमती जूलिया, रेचेल के चचेरे भाई और प्रेमी तरुण फ्रैंकलिन ब्लैक इस बात को जानते थे। घर का पुराना नौकर गैबरियल बेटरेज बूढ़ा था। वह भी जानता था कि प्राचीन परम्परा से देवता के पुजारी

1. The Moonstone (Wilkie Collins)

उस चन्द्रकान्त मणि को लेने के लिए भारतवर्ष से इंग्लैंड आ गए थे और उन्हीं में से कुछ यहां भी बाकी थे जो अच्छे या बुरे किसी भी तरीके से उस चन्द्रकान्त मणि को फिर से भारत ले जाने की ताक में थे। वृद्ध गेबरियल और फ्रैंकलिन ब्लैक ने एक दिन देखा कि मकान के आस-पास ही तीन भारतीय जादूगर घूम रहे हैं। इस बात से वे लोग आतंकित हो उठे।

जन्म-दिन की पार्टी समाप्त होने को आ गई। सन्ध्या हो गई थी। घर में सब लोग आशंका से घिरे हुए थे। और भी ऐसी बातें हो गई थीं जिनसे लगता था कि वातावरण में कुछ अपशकुन अवश्य विद्यमान था। रोज़ाना स्पियरमैन घर की नौकरानी थी। किसी समय उसने कोई अपराध किया था; अब उसका सुधार हो गया था; लेकिन फिर भी वह अभागिन थी। फ्रैंकलिन ब्लैक से वह अत्यन्त प्रेम करने लगी। रेचेल ने एक बार विवाह की एक भेंट वापस कर दी थी, जो उसे गॉडफ्रे एबिल व्हाइट नामक सुन्दर तरुण ने दी थी। वह रिश्ते में उसका भाई लगता था और उससे विवाह करना चाहता था। वह गम्भीर व्यक्ति बहुत दान देता था और धार्मिक क्षेत्र में बहुत प्रसिद्ध था। जन्म-दिन की पार्टी शान्ति से व्यतीत हो गई। वैसे कोई दुर्घटना नहीं हुई। केवल एक बार वे भारतीय जादूगर जरूर दिखाई दिए। धीरे-धीरे सब लोग शान्ति से सो गए।

भोर हो गया। मिस रेचेल के कमरे में चन्द्रकान्त मणि नहीं थी। कहां चली गई थी वह ? यही सवाल सबके सामने था। श्रीमती जूलिया और फ्रैंकलिन ब्लैक ने पुलिस को तुरन्त बुलाया, लेकिन यह देखकर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि रेचेल किसी प्रकार भी उनको कोई सहयोग नहीं दे रही थी। उसका व्यवहार कुछ विचित्र-सा दिखाई दे रहा था, जैसे वह कुछ छिपाना चाह रही थी। फ्रैंकलिन ब्लैक के प्रति उसके व्यवहार में भी अन्तर आ गया था। आज तक वह उससे आकर्षित थी, किन्तु इस समय जैसे उसकी उपेक्षा कर रही थी। पुलिस ने भारतीय जादूगरों को पकड़ लिया। रात वे लोग नौकरों के कमरों में घूमे थे लेकिन फिर भी पुलिस उनके विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं पा सकी।

लन्दन का प्रसिद्ध जासूस सार्जेण्ट कफ बुलाया गया। उसने चोरी का समय पता लगा लिया। मिस रेचेल के कमरे में जो नया रंग हुआ था उसके दरवाज़े के ऊपर एक निशान था, इसलिए उसने ऐसे कपड़े की खोज की जिसके ऊपर वह रंग लगा हुआ हो। चोर इस तरह पकड़ा जा सकता था लेकिन मिस रेचेल ने इस विषय में आपत्ति की और यह काम भी नहीं किया जा सका। सार्जेण्ट कफ को यह संदेह हुआ कि रेचेल इस विषय में रोज़ाना से मिली हुई है। कफ को यह निश्चय हो गया कि रोज़ाना ने ही वह रंग लगा हुआ कपड़ा गायब कर दिया था और दूसरा कपड़ा उसकी जगह रख दिया था। उसीने अपने कर्ज़ चुकाने के लिए चन्द्रकान्त मणि को चुरा लिया था। उसने श्रीमती जूलिया से अपने विचारों को प्रकट कर दिया लेकिन जूलिया ने भी आगे उसे खोज करने से रोक दिया। रेचेल लन्दन भाग गई, फ्रैंकलिन ब्लैक का हृदय खण्डित हो गया। अपनी प्रिया से उसे ऐसी आशा न थी। वह भी अपना घर छोड़कर विदेश यात्रा को निकल पड़ा। रोज़ाना ने कफ से पीछा छुड़ाने के लिए फ्रैंकलिन ब्लैक को एक पत्र डाल दिया और चली गई। कोई भी नहीं जानता था कि फ्रैंकलिन उस समय कहां था। कफ ने यह स्वीकार कर लिया

कि उसकी जाँच का कोई नतीजा नहीं निकल पा रहा था। उसने यह कहा कि चन्द्रका मणि अवश्य ही सेप्टीमस लूकर नामक जौहरी के पास होगी क्योंकि वहां ऐसे बहुमूल्य रत को लिया करता था।

कुछ दिन बीत गए, चन्द्रकान्त मणि और रेचेल का कोई पता नहीं चला। कु दिन बाद रेचेल अपनी माता के साथ लन्दन में चुपचाप निवास करने लगी, लेकिन अ भी वह यह नहीं बताती थी कि चोरी का कारण क्या था। लूकर जिसके बारे में कफ सोचा था कि चन्द्रकान्त मणि उसीके पास होगी। वह कोई चीज कहीं गिरवी रख आय था। वह कोई बहुमूल्य वस्तु थी किन्तु क्या थी इसे कोई नहीं जानता था। उन्हीं दिनों लूक के ऊपर किसीने हमला किया और उसकी खोज की गई। रेचेल के इज्जतदार भाई गॉडफ़ पर भी, जो कि बड़ा दानी आदमी था, ऐसा ही आक्रमण किया गया।

गॉडफ़े के बारे में सन्देहास्पद बातें उठने लगीं, लेकिन रेचेल ने कसम खाक कहा कि गॉडफ़े निर्दोष है। सबको आश्चर्य हुआ कि आखिर वह कौन-सी रहस्यमय बा थी, जिसे वह जानकर भी बताने से इन्कार करती थी। लेकिन फिर भी वह यह कह सकती थी कि इस विषय में अमुक व्यक्ति निरपराध था।

श्रीमती जूलिया का देहान्त हो गया और यह मृत्यु आकस्मिक हुई थी। रेचेल का जीवन और भी दुःखी हो गया। वह फ्रैंकलिन को भूलना चाहती थी। वह उसके पास नहीं था, इसलिए उसने गॉडफ़े से विवाह करना स्वीकार कर लिया, पर तभी उसे पता चला कि गॉडफ़े ने उसकी आर्थिक परिस्थिति की जाँच की थी। रेचेल को यह बहुत बुरा लगा और उसने उससे विवाह करने से इन्कार कर दिया और अपने एक उम्रदार रिश्तेदार के साथ रहने के लिए चली गई।

चन्द्रकान्त मणि का अभी तक कोई पता नहीं चला था। वृद्ध गेबरियल और मिस्टर ब्रफ, जोकि वेरिन्दर-परिवार के वकील थे, अभी तक इस विषय की वास्तविकता जानने के प्रयत्न में थे। तीनों भारतीय जादूगर अभी तक लन्दन के आसपास ही चक्कर लगा रहे थे, जैसे वे उस दिन की प्रतीक्षा में थे जब लूकर अपनी प्रतिहिंसा पूर्ण कर लेगा और वे फिर उस मणि को पा लेंगे। लूकर की यही इच्छा थी, इसके बारे में कोई जानकारी नहीं थी। कुछ दिन और बीत गए। फ्रैंकलिन के पिता की मृत्यु हो गई। वह इंग्लैंड लौट आया। उसने रेचेल से मिलने की कोशिश की, किन्तु रेचेल ने उससे मिलने से इन्कार कर दिया। फ्रैंकलिन ने अपने मन में यह निश्चय कर लिया कि वह न केवल मणि का पता लगाएगा, वरन अपनी खोई हुई रेचेल का प्रेम भी पुनः प्राप्त करेगा और इसीलिए वह फिर से वेरिन्दर-परिवार में खोज-बीन करने की ओर लग गया। वहां उसे रोजाना का पत्र मिल गया जिसमें उसने अपना प्रेम उसके प्रति प्रकट किया था और लिखा था कि उसने एक जगह एक छोटा-सा बक्स छिपा दिया है। फ्रैंकलिन ने उत्सुकता से उस बक्स को खोज निकाला। उसका विचार था कि उसे बक्स में ही चन्द्रकान्त मणि रखी हुई होगी और इसीलिए उसने उसे खोला, लेकिन उसमें केवल उसे रंगलगा कपड़ा मिला, जिसे एक दिन सार्जेण्ट कफ ने ढूंढ़ा था। और उसे आश्चर्य यह हुआ कि उस कपड़े पर स्वयं उसका अपना ही नाम लिखा हुआ था। और जब वह रेचेल से मिला तो उसने कहा

कि उसने अपनी आंखों से फ्रैंकलिन को वह मणि चुराते हुए देखा था।

अविश्वसनीय थी यह घटना, वहीं एक एजरा जिनिग्स नाम का डॉक्टर रहा करता था, उसको बड़ी पीड़ा हुआ करती थी, किसी रोग ने उसे ग्रस लिया था और इसीलिए उसे अफीम खाने की आदत पड़ गई थी। एजरा ने प्रयोग करके यह सिद्ध कर दिया कि फ्रैंकलिन ने अपने पहले डाक्टर के द्वारा दी हुई अफीम खाकर नशे में यह काम कर दिया था। उसके पहले डाक्टर ने शायद उसे मज़ाक में अफीम खिला दी थी और फ्रैंकलिन ने ऐसा कार्य केवल इसलिए किया था कि वह उस मणि को किसी सुरक्षित स्थान में रख दे। किन्तु अब वह मणि कहां थी ? वह लूकर के पास किस प्रकार पहुंच गई थी ? रेचेल और फ्रैंकलिन में धीरे-धीरे फिर से मित्रता हो गई और वे इसकी प्रतीक्षा करने लगे कि जब लूकर किसी समय अपना खज़ाना खाली करे तो वे लोग उसे दूसरी जगह ले जाकर रख दें।

आखिर वह दिन आया। लूकर ने उसे एक काले और दाढ़ीवाले मल्लाह को दिया, जो अपने साथ मणि लेकर चला गया। उस रात वह मल्लाह जाकर मल्लाहों के निवासस्थान पर रहा, लेकिन दूसरे दिन जब फ्रैंकलिन और मिस्टर क्रफ उसको पकड़ने के लिए आए, तो मल्लाह पड़ा हुआ मिला और मणि उसके पास से जा चुकी थी। जब उससे पूछा गया तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह मर चुका था और जब उसके कपड़े उतारे गए तो पता चला कि वह छद्मवेश में गॉडफ्रे ही था उसपर इतने कर्ज़े लद गए थे कि वह दो तरह की ज़िन्दगी बिताने लगा था। उसीने नशे में डूबे हुए फ्रैंकलिन के हाथ से जन्मदिन के भोजवाली रात को वह मणि चुरा ली थी। इस प्रकार रहस्य तो खुल गया लेकिन चन्द्रकान्त मणि किसी प्रकार हाथ नहीं आई। तीनों भारतीय अपना वचन पूरा कर चुके थे। वे चन्द्रकान्त मणि को लेकर सोमनाथ के मन्दिर लौट गए थे।

यह उपन्यास बहुत ही कौतूहलपूर्ण है। जिसमें रहस्य की भावना है और, जासूसी-सा वातावरण है। इसमें पूर्व के प्रति पश्चिम का वह आतंक-भरा दृष्टिकोण भी है, जिसमें यहां की भूमि को लोग विचित्र समझते थे। उपन्यास, घटना-प्रधान है।

रहस्यमयी

[शी[1]]

हैगार्ड, हेनरी राइडर : अंग्रेजी लेखक राइडर हैगार्ड का जन्म नारफोक में २२ जून, १८५६ को हुआ था। आपने रोमांटिक उपन्यास लिखे हैं। आपकी शिक्षा इप्सविच ग्रामर स्कूल में हुई थी। आप अफ्रीका चले गए और वहां उपनिवेश-विभाग में नौकरी की। आपने राजनीति में भी भाग लिया, और वैसे आप साम्राज्यवादी थे। आपकी मृत्यु १४ मई, १९२५ को हुई।
आपके अनेक उपन्यास विख्यात हैं, जिनमें 'शी' की कल्पना बड़ी रोचक है। इसमें एक २००० वर्ष की स्त्री है। वह अनिंद्य सुन्दरी है; कथानक बहुत ही कुतूहलपूर्ण है।

विचित्र घटनाएं जीवन में आती हैं और चली जाती हैं, लेकिन कुछ बातें ऐसी भी हैं जिनकी याद सदा के लिए बनी रह जाती है। मैं केम्ब्रिज में रहता था। उसी समय मुझे यह अनुभव हुआ कि मैं अत्यन्त कुरूप हूं। दर्पण देखने से मैं इसीलिए घृणा करता था। मैंने अपने से कहा, तू इतना सशक्त है फिर भी तेरी कुरूपता के कारण कोई स्त्री तुमसे प्रेम नहीं कर सकती। इस विचार ने ही मुझे उदास बना दिया। धीरे-धीरे रात हो गई। मेरे दरवाजे को किसीने खटखटाया। मैंने दरवाजा खोला। रोग से व्याकुल मेरा एक मित्र कठिनाई से अपने दाहिने हाथ में एक लोहे का बक्स लटकाए खड़ा था। वह मृतप्राय था। मैंने उसे अन्दर बुलाया। उसने कहा, "मेरा नाम विन्सी है, यह तो तुम जानते ही हो। मेरा विवाह हो चुका है और अब पत्नी भी मर चुकी है और फिर तुम यह नहीं जानते कि मेरा एक बेटा भी है। इस समय वह पांच वर्ष का है और अब मैं अपनी मृत्यु के समीप आ गया हूं। मैं चाहता हूं कि यदि तुम मेरी वसीयत की शर्तों को मान जाओ तो आज मैं तुम्हें अपने पुत्र का संरक्षक बना दूं।"

उसका मुझपर विश्वास था इसलिए मुझे स्वीकार करना पड़ा। विन्सी कहने लगा, "आज से छियासठ या सड़सठ पीढ़ी पहले तक मैं तुम्हें अपने पूर्वजों के नाम गिना सकता हूं। मेरा छियासठवां पूर्वज प्राचीन मिस्री सभ्यता में देवी ऐसिस का पुजारी था। वह ग्रीक रक्त से उत्पन्न हुआ था परन्तु मिस्र में ही रहता था। उसका सम्मान राजाओं की भांति होता था। वह अत्यन्त सुन्दर था। उसका नाम था केलीक्रिटीज। उसके पिता को मिस्र

---

1. She (Henry Rider Haggard)—इस उपन्यास का अनुवाद हो चुका है: 'रहस्यमयी'; अनुवादक : श्री रामनाथ 'सुमन'; प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।

की उन्तीसवीं पीढ़ी के फराऊन हाकहोर ने एक बहुत बड़ी जागीर दी थी। उसका नाम भी केलीक्रिटीज ही था। ईसा से लगभग तीन सौ उन्तालीस वर्ष पूर्व देवी एसिस के प्रति अपने कर्तव्य को भूलकर राजवंश की एक सुन्दरी कन्या को लेकर पुजारी केलीक्रिटीज भाग निकला। मिस्र में उस समय अव्यवस्था थी। जब केलीक्रिटीज अपनी प्रिया को लेकर जहाज में समुद्री राह से भागा तो कई रातों बाद उसका जहाज तूफान में फंस गया और बड़ी मुश्किल से वह अपनी पत्नी के साथ अफ्रीका के तट पर डेलगोआ की खाड़ी के पास भयानक दलदल के पास उतरा। अन्त में उस देश की रानी ने उन्हें सहारा दिया। रानी अत्यन्त सुन्दर थी लेकिन बाकी लोग जंगली थे। उस रानी के बारे में प्रसिद्ध था कि वह अमर थी। मेरा पूर्वज रानी की तृष्णा का शिकार बन गया, परन्तु वह अपनी प्रिया को छोड़ना नहीं चाहता था। जब उसने रानी के प्रेम को ठुकरा दिया तो रानी ने उसे मार डाला। उसकी पत्नी किसी तरह भागकर एथेंस पहुंची और उसने अपने पुत्र का नाम टाइसिसथीनिस रखा। पांच सौ वर्ष बाद टाइसिसथीनिस के वंशज रोम में आकर बस गए। पांच सौ वर्ष और बीत गए। जब आठ पीढ़ियां बीत गईं तो उसके वंशज इंग्लैंड आकर बस गए, और अब मैं उनका वंशज हूं। अब हम लोगों का परिवार विन्सी कहलाता है। मेरे बाबा ने काफी धन कमाया और १८२१ में मर गए। मेरा पुत्र अभी छोटा है। उसके बारे में मैंने यह सोचा है कि उसे अरबी भाषा सिखाई जाए।"

यह कहकर उसने एक सीलबन्द लिफाफा निकाला और उसपर मेरा नाम व पता लिखा और कहा, "तुम लियो के संरक्षक बन जाओ। मैंने सब लिखा-पढ़ी कर दी है। मेरी वार्षिक आय दो हजार पौंड है और यह ध्यान रखना कि वह अरबी अवश्य पढ़े।"

मैंने कहा, "अरे भाई तुम अरबी के प्रति इतने व्याकुल क्यों हो?"

उसने कहा, "हम लोग विन्सी हैं—विन्सी शब्द 'विन्डेक्स' से बना है जिसका अर्थ है 'बदला लेनेवाला'—हमारे पूर्वजों को टाइसिसथीनिस, जिसका भी अर्थ है बदला लेनेवाला, नाम से एक प्रकार का पद प्राप्त हुआ है, क्योंकि हम लोग अभी बदला नहीं ले सके हैं।" इसके बाद कुछ ही देर में विन्सी की मृत्यु हो गई।

मैंने अब उसके पुत्र को अपने पास बुला लिया। बच्चा पांच साल का था। उसकी देखभाल करने के लिए मैंने जौब नाम के एक व्यक्ति को अपने यहां नौकरी पर रख लिया। जौब उस बच्चे को अच्छी तरह खिलाया करता था। धीरे-धीरे बच्चा जवान हो गया। जब वह पन्द्रह वर्ष का था तब उसका सौन्दर्य देखकर लोग चकित रह जाते थे और अब मेरी कुरूपता और भी अधिक दिखाई देने लगी। उसकी तुलना में लोग मुझे जानवर कहते। लियो को लोग ग्रीक देवता बताया करते थे। जब वह अट्ठारह का हुआ तो कालेज के होस्टल में आ गया। मैंने उसके वंश की सारी बातें उसे बताईं और उसमें कौतूहल जाग उठा। धीरे-धीरे लियो पच्चीस वर्ष का हो गया तब मैंने उस विचित्र बक्स को बैंक से निकलवाया जिसको विन्सी की मृत्यु के बाद मैंने सुरक्षित रखवा दिया था। जब हमने उसे खोला तो ढक्कन के खोलने ही लियो के मुंह से एक हलकी चीख निकल पड़ी। बक्स के अन्दर बक्स था। तीसरा बक्स चांदी का था—एक फुट चौड़ा, एक फुट लम्बा और करीब आठ इंच ऊंचा। प्राचीन मिस्र का बना हुआ यह छोटा-सा बक्स देखकर मैं भी

चकित रह गया। पास ही एक पत्र था जिसपर लिखा था—'मेरे पुत्र लियो को, यदि वह कभी इसे खोले।'

पत्र खोला गया उसमें लिखा था—'मेरे बेटे लियो, मैं तुम्हें सदा के लिए छोड़कर जा रहा हूं। अब तुम सुनो, हमारे वंश के बारे में तुम्हें होली ने जरूर कुछ न कुछ बता दिया होगा। लगभग दो हजार वर्षों से हमारे पास यह बक्स चला आ रहा है। इस बक्स के कारण ही मैंने अफ्रीका की यात्रा की। जाम्बेसी नदी जहां समुद्र में गिरती है वहां से दक्षिण की ओर लगभग एक सौ पचास मील की दूरी पर एक ऊंचे से द्वीप में एक विशाल पर्वत है जिसकी चोटी एक हब्शी के सिर की तरह दिखाई देती है। वहां एक खास जंगली जाति निवास करती है जिसके लोग अरबी बोलते हैं। उस देश में भयानक दलदल है और वह पहाड़ अन्दर से पोला है। कहते हैं वह पोला पहाड़ कब्रों का देश है जहां एक अनिंद्य सुन्दरी और अपार शक्तिवाली रानी रहती है। इतना ही मुझे वहां मालूम हो सका और मैं अरबी न जानने के कारण आगे कुछ पता नहीं चला सका। मैं चाहता हूं कि तुम अरबी सीखकर वहां पहुंचो।"

इस पत्र को पढ़कर लियो ने कहा, "इसीलिए शायद तुमने अरबी सिखाई है, चाचा। पर यह केलीक्रिटीज़ कौन है जिसके बारे में आगे लिखा हुआ है!"

मैंने कहा, "दूसरा पत्र पढ़ो।"

यह पत्र एमीनारटस नामक एक स्त्री ने लिखा था। वह पुजारी केलीक्रिटीज़ की पत्नी थी। वह चाहती थी कि हब्शी के सिर की चोटी की तरह के पहाड़ के अन्दर जहां कोअर लोगों की ममियां रखी हैं वहां रहनेवाली रानी से बदला लिया जाए और जब तक बदला नहीं लिया जाएगा तब तक उसकी आत्मा इसी प्रकार भटकती रहेगी।

जौब को विश्वास नहीं हुआ, लेकिन लियो में एक विचित्र प्रकार का आवेश भर गया और उसने मुझसे कहा, "चाचा हम सब चलेंगे।"

तीन महीने बाद हम लोगों का पालदार जहाज़ अफ्रीका के समुद्र तीर से लग गया। जब रात बीत गई तब हमने देखा कि दूर हब्शी के सिर जैसा पहाड़ दिखाई देने लगा था। वहां के विचित्र जलवायु के कारण भयानक तूफान हम लोगों को झेलने पड़े और बड़ी कठिनाई से हम लोग अपनी रक्षा कर सके। चारों ओर बियाबान और दलदल ही दलदल था। एक स्थान पर विशालकाय और बेहद बदसूरत दरियाई घोड़े अब भयानक रूप से दहाड़ रहे थे। हम लोगों ने डरकर अपनी बन्दूकें संभाल लीं। पर वे इधर नहीं आए। मच्छरों के मारे हम बड़े परेशान हो रहे थे और आगे जाने का मार्ग स्पष्ट नहीं दिखाई दे रहा था। इसी समय कुछ आदमी सम्मुख आए और उनमें से एक ने भाला उठाकर कहा, "तुम कौन हो? यहां क्यों आए हो?"

मैंने अरबी में उत्तर दिया, "हम यात्री हैं। जहाज डूब जाने के कारण इधर आ ।"

वे हमारी बोली समझ गए। एक व्यक्ति ने पूछा, "पिता, क्या हम इनको मार ?"

एक वृद्ध ने पूछा, "इन आदमियों का रंग कैसा है?"

उसने उत्तर दिया, "गोरे हैं।"

वृद्ध ने कहा, "इनको मारना मत। चार दिन हुए मेरे पास सूचना आई थी कि गोरे लोग आएगे उन्हें न मारा जाए। यह 'उसकी' आज्ञा है जिसकी आज्ञा माननी ही होती है। ये लोग वहीं जाकर ठहरेंगे। इन्हें ले चलो और साथ में इनका तमाम सामान भी ले चलो।"

अब हम लोग उनके साथ चलने लगे। इन लोगों की वेशभूषा विचित्र थी। हमें साथ ले जानेवाले का नाम बिलाली था। मार्ग में उसने कुछ सूचना नहीं दी। धीरे-धीरे हम लोग पहाड़ी पर चढ़ गए और अन्दर की ओर हमने प्रवेश किया। वह एक ज्वालामुखी पर्वत का ठंडा हो चुका मुख था जिसके अन्दर काफी हरियाली नजर आ रही थी। वहां की स्त्रियों ने जब लियो को देखा तो बेहाल हो गईं। इसी समय एक अत्यन्त सुन्दरी युवती बाहर आ गई। उसने लियो को देखा तो अपने आलिंगन में बांध लिया। उस युवती ने उसे निर्लज्जता से चूम लिया और हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि लियो भी उसको अपना स्नेह प्रतिदान में दे रहा था। उस स्त्री का नाम यूस्टेन था। किन्तु बिलाली हम लोगों को मनुष्य के हाथों से तराशी हुई एक बहुत ऊंची अस्सी फुट चौड़ी और डेढ़ सौ फुट लम्बी गुफा के भीतर ले चला। विचित्र देश को देखकर हम लोग चकित रह गए। पांच लड़कियां हमारे आराम और देखभाल के लिए तय कर दी गईं। अब हम लोग यह जानना चाहते थे कि 'वह' जिसकी आज्ञा मानना अनिवार्य था—वह कौन थी? क्योंकि हर बात में उसीका उल्लेख होता था। लियो ने कहा, "मुझको यह वही रानी लगती है जिसने केलीक्रिटीज को मारा था और जिसका उल्लेख उस पत्र और ढक्कन में किया था। हम ठीक स्थान पर आ लगे हैं।"

सांझ हो गई। वहां के निवासी एमहेगर लोग खाना खाने लगे। वहां रोशनी करने के लिए मसालों में सूखी हुई पुरानी ममियां अर्थात् लाशें जलाई जाती थीं, यह देखकर मुझे पसीना आ गया रात भयानकता से कटी। प्रकृति का सौन्दर्य देखकर प्रातःकाल मुझे आश्चर्य हुआ। तीन दिन बीत गए। हमने उस कठोर जैसी भूमि को खूब अच्छी तरह देखा। तब यूस्टेन ने बताया, "वह जिसकी आज्ञा मानना अनिवार्य है, जहां रहती है उस स्थान के पास मीलों के घेरे में खण्डहर पड़े हैं। वहां आत्माएं आती-जाती हैं, इसलिए सब उसे डरावनी जगह कहते हैं। हजारों साल पहले वहां कोकर लोग रहते थे। शायद हम उन्हींकी बची हुई संतान हैं। इस द्वीप पर लगभग दस कबीले हैं जिनके अलग-अलग पिता हैं। सबके ऊपर वह है जिसकी आज्ञा मानना अनिवार्य है। रानी की आज्ञा के बिना पत्ता भी नहीं खड़क सकता।"

इस समाचार को सुनकर रानी के बारे में हमारा कौतूहल फिर जग उठा। यूस्टेन का प्रेम बढ़ता जा रहा था। लियो भी उसकी ओर आकर्षित था। धीरे-धीरे हम वहां के निवासियों से बातचीत करने लगे। एक दिन कुछ लोगों ने हम लोगों की हत्या करने की चेष्टा की। उन्होंने बर्तन गर्म करके हमारे सिर पर रखने की कोशिश की। भयानक युद्ध होने लगा। उसी समय बिलाली ने आकर हम लोगों की रक्षा की। अब बिलाली हमको लेकर आगे बढ़ा।

कटोरेनुमा मैदान को पार करके हम ऊपर चढ़ चले। दलदल पार करके हम लोग फिर चढ़ाई पर पहुंच गए। ज़मीन उठती जा रही थी और तब हम उसके घर पहुंचे जिसकी आज्ञा टाली नहीं जा सकती। पहाड़ की दीवाल के सहारे अन्दर मार्ग के पास से निकलकर एक सूखा पक्का मार्ग था। तब हमारी आंखों पर पट्टी बांधी गई और हम लोग आगे ले जाए गए। अब हम एक विशाल गुफा में पहुंच गए थे। जो लगभग एक सौ पच्चीस फुट ऊंची थी। लियो अपने घाव के कारण कुछ मूर्च्छित-सा था और यूस्टेन उसकी देखभाल कर रही थी। नई जगह आकर हम लोगों ने अच्छी तरह स्नान किया। सहस्रों वर्ष पूर्व के उस स्थान में हमने दीवारों पर रंगीन चित्र देखे। यहां विशाल कमरे भी थे। सामने का पर्दा हिला और फिर एक ऐसी सुन्दर स्त्री दिखाई दी कि हम लोग आश्चर्य से चकित रह गए। उस स्त्री ने मुझसे पूछा, "तुम यहां कैसे आए हो ?"

मैंने अरबी में उत्तर दिया, कहा, "हम लोग यात्रा पर हैं।"

मेरी अरबी सुनकर वह बोली, "अच्छा तुम अरबी बोलते हो। यह भाषा अब भी बोली जाती है ? आजकल कौन-सा फराऊन गद्दी पर है ? क्या अब भी फारस के ओसस का वंश चल रहा है ? क्या अब एकमीनियन लोग नहीं रहे ?"

सुनकर मेरी हड्डियां कांप उठीं। मैंने कहा, "ये तो दो हज़ार पांच सौ साल पुरानी घटनाएं हैं। फारस के लोग तो करीब दो हज़ार साल पहले ही मिस्र से चले गए थे। उसके बाद वहां रोमन आए और जाने कितने परिवर्तन हुए।"

वह हंस दी। उसने कहा, "क्या यूनान के लोग अब भी हैं ? क्या यहूदी अब भी जेरुसलम में ही हैं और उस मसीहा का क्या हुआ जिसके बारे में शोर था कि वह संसार पर राज्य करेगा ? क्या उसका राज्य फैल गया ?"

मैंने कहा, "वे लोग संसार मे फैल गए हैं। वह मंदिर जिसे हेरोद ने बनवाया था…"

उसने टोककर कहा, "कौन हेरोद ? खैर, कहे जाओ।"

उस समय मेरे मुंह से हठात् लैटिन भाषा निकल गई। उसने कहा, "तुम लैटिन भी जानते हो ! हीब्रू भी बोल लेते हो। हो तो तुम बहुत कुरूप किन्तु लगते बहुत बुद्धिमान हो।"

उसकी बातें सुनकर जैसे मैं भय से जम गया। उसकी कोई भी बात ऐसी नहीं थी जो ढाई हज़ार वर्ष के पूर्व के इतिहास की बात नहीं दोहराती हो। अब उसने कहा, "अजनबी, तुम्हें मेरे लम्बे जीवन पर आश्चर्य होता है पर दो हज़ार साल की ज़िन्दगी होती ही कितनी है ! पचास हज़ार साल में आंधी और तूफान पहाड़ को एक हाथ भी कम नहीं करते। करोड़ों साल से तारे आसमान में चमकते हैं उनका कुछ भी नहीं बिगड़ता। इन ढाई हज़ार वर्षों में ये गुफाएं वैसी ही हैं जैसी मैंने पहले देखी थीं।" और फिर उसने मुझसे कहा, "देखो, उधर पानी में झांककर देखो।"

मैंने देखा—उस पानी में हम लोगों के दलदल में फंस जाने का दृश्य साफ दिखाई दे रहा था। रानी ने कहा, "यह पानी मेरा दर्पण है। इसमें मैं जब चाहूं तब भूत और वर्तमान देख लिया करती हूं। मेरे पास यह बहुत प्राचीन काल से है। इसे पचास हज़ार

वर्ष पहले मिस्र और अरब के सिद्धों ने बनाया था। पर मैं भविष्य इसके द्वारा नहीं जान पाती। मुझे न जाने क्यों उस लहर का ध्यान हो आया जहां से दो हजार वर्ष पूर्व मैं आई थी, और जब मैंने इस दर्पण में वह लहर देखी, तो तुम लोग भी मुझे दिखाई दिए। यह गोरा युवक मुझे सोता हुआ दिखाई दिया। इसीलिए मैंने तुम लोगों को यहां बुलवा लिया।"

मैंने कहा, "आपके आदमी हमारे साथ थे। विलासी की गुफा में हमें यूस्टन नाम की एक युवती भी मिली है। आपके आदमियों के नियमानुसार वह उसकी स्त्री है।"

रानी ने कहा, "ये मेरे आदमी नहीं हैं। ये मेरे कुत्ते हैं। जब मेरा प्रियतम लौट आएगा तब मैं इन जंगलियों को छोड़कर चली जाऊंगी। तुम मुझे आयशा कहकर पुकारो।"

"और यह यूस्टेन कौन है ?"

"ठहरो, मैं देखती हूं।" यह कहकर उसने उस पानी पर हाथ फेरकर झांका और कहा, "अच्छा यह लड़की है।" फिर उसने सिर हिलाकर पानी में दिखता हुआ दृश्य बन्द कर दिया।

उसके अनिन्द्य सौन्दर्य ने जैसे मुझपर जादू कर दिया था। रात हो गई थी। मैं सोचने लगा—क्या यही वह स्त्री है जिसने केलीक्रिटीज की हत्या की थी ? क्या यह उसी प्रेमी के लौट आने की प्रतीक्षा कर रही है ? क्या यह पुनर्जन्म में विश्वास करती है ? यूस्टेन ऊंघ रही थी। लियो को ज्वर आ गया था। कब्रिस्तान की भांति सन्नाटा छा रहा था। मैं एक ओर चल पड़ा।

मैंने देखा, एक बड़े कमरे के द्वार पर पर्दा गिरा हुआ था। मैंने उस पर्दे से देखा कि अन्दर कोई लम्बी स्त्री खड़ी है। उसी समय उस स्त्री ने अपना काला चोगा उतार दिया और मैंने देखा कि वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य था अपने अनिन्द्य सौन्दर्य को लिए खड़ी थी। न जाने वह अरबी भाषा में क्या कहने लगी। वह नागिन की तरह फुंकार रही थी। "उसका नाश हो, उस स्त्री का नाश हो।" उसके हाथ उठाते ही उसके सामने जलती हुई अग्नि की शिखाएं ऊपर उठने लगीं। उसने फिर कहा, "उसकी याद, उसकी स्मृति का भी नाश हो। उस मिस्री स्त्री का नाम भी मिट जाए।" उसके हाथ नीचे आ गए और आग गायब हो गई। उसने फिर कहा, "उसका जादू मेरे विरुद्ध भी चल गया। उसका नाश हो, क्योंकि उसने मेरा प्यारा मुझसे छीन लिया!" उसकी यह प्रतिहिंसा देखकर मेरा रोम-रोम कांप उठा। फिर वह रोने लगी। "मेरे प्रियतम, दो हजार वर्षों से मैं तुम्हारी राह देख रही हूं। मेरी वासना मेरे हृदय को मरोड़े डालती है। अभी न जाने कब तक मुझे जीना पड़ेगा। जाने बीस या पच्चीस या अस्सी हजार साल मुझे और तुम्हारी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी!" फिर वह एक ममी की ओर बढ़ी और बोली, "मेरे प्यारे केलीक्रिटीज आज मैं तुम्हें दो हजार साल बाद देखने के लिए बेचैन हो उठी हूं।" उसने ममी पर लिपटा हुआ कपड़ा खोला और न जाने क्या बड़बड़ाने लगी। और फिर उसने कहा, "उठ, उठ!" मैंने देखा मुर्दा उठने लगा, लेकिन तभी उसने कहा, "नहीं, इससे लाभ क्या। तुम जीवित हो जाओगे लेकिन तुम्हारे अन्दर आत्मा मैं कैसे डालूंगी ?" लाश फिर

गिर पड़ी। मैं न जाने कैसे अपनी गुफा में लौटकर आया। आतंक से मेरा हृदय अब भी धर्रा उठता था। लियो का स्वास्थ्य अब तक खराब था। समझ में नहीं आता था कि वह कब ठीक होगा ? तभी रानी ने मुझे बुलवाया और कहा, "जिन लोगों ने तुम्हारे ऊपर आक्रमण किया था मैं उन लोगों को सजा दूंगी।"

उसने न्याय किया और कइयों की हत्या करने की आज्ञा दे दी और मुझसे कहा, "मैं उन्हें सदा नहीं मारती। एक पीढ़ी या दो पीढ़ी के बाद उन्हें इकट्ठे मरना पड़ता है, इसीलिए उनपर भय चढ़ा रहता है।" फिर उसने मुझसे कहा, "इस जगह संसार की सबसे आश्चर्यजनक कब्रें हैं। आठ हजार वर्ष पूर्व कोअर लोगों ने ये कब्रें बनानी प्रारम्भ की थीं। कोअर मिस्र से भी पूर्व था, शायद बहुत पुराना था। वह सभ्यता किसी बीमारी के कारण विनष्ट हो गई। क्योंकि ऐसा नहीं लगता कि उसपर किसीने आक्रमण किया था। दो हजार साल पहले जब मैं यहां आई तब मेरा जीवन दूसरे ही प्रकार का था।"

इसी समय संवाद आया कि लियो की हालत ज्यादा खराब है। आयशा ने लियो को यहीं बुलवा लिया और उसने यूस्टेन से कहा, "तू जा!" किन्तु जब वह नहीं गई तो उसने कठोर स्वर में आज्ञा दी, "जाओ।" वह डरती हुई चली गई।

अब आयशा ने एक शीशी निकाली, उस दवा की एक बूंद गिरते ही लियो की मरण-यंत्रणा एकदम रुक गई और उसने देखा कि वह ठीक हो गया था। तब आयशा रो उठी और बोली, 'मेरा कैलीक्रिटीज बच गया है।" और उसने कहा, "हौली, अगर एक पल की भी देर हो जाती तो न जाने कितने हजार वर्ष और मुझे उसी यातना में तड़पना पड़ता। हौली, मैं इतने वर्ष जीकर प्रकृति के कुछ रहस्यों को जानकर भी भविष्य के एक पल के बारे में भी नहीं जानती, वरना क्या मेरा प्रियतम इस बीमारी की यातना झेलता। अब यह बारह घण्टे तक सोता रहेगा और इसकी बीमारी उसे छोड़ जाएगी। तुम नहीं जानते कि मेरे पास ऐसी शक्ति है कि तुम्हें मैं दस हजार वर्ष का जीवन दे सकती हूं। और फिर उसने कहा, "वह यूस्टेन लियो की कौन है।"

मैंने कहा, "एमहेगर लोगों की रीति से उसने लियो से विवाह किया है।"

आयशा ने कहा, "तब वह मेरे और लियो के बीच में दीवार बनकर खड़ी होना चाहती है इसलिए उसे मरना पड़ेगा।"

यूस्टेन लौट आई। आयशा ने उससे कहा, "चली जा यहां से। जब वह नहीं गई तो उसने अपनी तीन उंगलियां यूस्टेन के सिर पर रख दीं, जहां उंगलियां स्पर्श हुई वहां उसके बाल बर्फ की भांति सफेद हो गए थे। यूस्टेन के नेत्र बन्द हो गए थे। तब वह भयभीत-सी वहां से चली गई। आयशा ने कहा, "यह जादू नहीं है यह मेरी शक्ति है।"

मैं डर गया। उस समय लियो ठीक हो गया था। उसने अपने ऊपर झुकी हुई आयशा को यूस्टेन समझकर भुजाओं में बन्द कर लिया, आयशा विभोर हो गई। अगले दिन लियो बिलकुल स्वस्थ हो गया था। आयशा ने उससे कहा, "मेरे मालिक, मेरे अतिथि, तुम्हें समय पर औषध नहीं खिलाती तो तुम कभी नहीं बच पाते।" आयशा को जैसे जीवन का नया आनन्द फैल गया था। इसी प्रकार कुछ समय व्यतीत हो

एक रात वहां एक उत्सव-सा मनाया जाने लगा। यूस्टेन के प्रति आयशा का क्रोध बढ़ गया था। उसने कहा, "सुनो मैं मरने को उद्यत हूं, मनुष्य का सबसे बड़ा भय मृत्यु ही है।"

यूस्टेन ने कहा, "तुम मेरे प्रिय से प्रेम करती हो। लेकिन याद रखो कि तुम यदि मेरे प्रिय की हत्या करोगी तो वह तुम्हें नहीं मिल पाएगा और यदि तुम मेरी हत्या करोगी तो वह तब भी तुम्हारा नहीं बन सकेगा।"

आयशा चिल्लाकर, तनकर खड़ी हो गई। उसने अपना दायां हाथ यूस्टेन की ओर फैला दिया। एक तीव्र प्रकाश आयशा के हाथ से निकलकर यूस्टेन पर गिरने लगा। यूस्टेन पत्ते की तरह कांपने लगी। हमने देखा क्षण-भर में ही वह मर चुकी थी। आयशा के हाथ से निकली हुई उस अज्ञात बिजली ने यूस्टेन को सदा के लिए नष्ट कर दिया था। लियो को जब रोष आया तो वह भयानक पशु की तरह आयशा पर टूट पड़ा। आयशा जैसे तैयार थी। उसने अपना हाथ उठा लिया और लियो लड़खड़ाता हुआ पीछे जा खड़ा हुआ। उसकी यह शक्ति देखकर हम सब लोग भयभीत हो गए। लियो चिल्लाया, "हत्यारी।"

आयशा ने कहा, "तुम नहीं जानते कि तुम मेरे केलीक्रिटीज़ हो।"

लियो ने कहा, "मैं केलीक्रिटीज़ नहीं हूं। वह मेरा पूर्वज अवश्य था।"

आयशा ने कहा, "अच्छा तो तुम्हें यह बात मालूम है। सुनो, तुमने ही वह पुनर्जन्म लिया है।"

उसकी बात सुनकर जैसे लियो का हृदय परिवर्तित नहीं हुआ। और तब उसने अपना वस्त्र सामने से हटा दिया। उस सौन्दर्य को देखकर लियो अपने ऊपर काबू नहीं रख सका और मैंने देखा कि नीचे यूस्टेन की लाश पड़ी रही लेकिन आयशा लियो की भुजाओं में आ गई थी। तब आयशा उसके आलिंगन से हटती हुई बोली, "मैंने कहा था न कि मुझे देखकर तुम सब कुछ भूल जाओगे। केलीक्रिटीज़, आखिर तुमने अपनी प्रिया को पहचान ही लिया।" और इसके बाद यूस्टेन की लाश हटा दी गई। आयशा मनोहर गीत गाने लगी। कुछ देर बाद उसने कहा—केलीक्रिटीज़! अब तुम्हें मेरे साथ चलना होगा और मैं तुम्हें जीवन की नई ज्योति में नहलाकर अमर कर दूंगी, तब तुम मेरे साथ अनन्त काल तक भोग करना।"

हम तीनों चल दिए। लम्बी सीढ़ियां पार करने के बाद हमें एक गुफा मिली। फिर एक सीढ़ी और पार कर एक गुफा थी। सीढ़ियां बहुत चिकनी थीं। तब आयशा ने कहा, "मेरे ही छोटे और कोमल पैरों ने इतने पत्थरों को चिकना कर दिया है। दो हज़ार साल तक हर रोज़ और कभी-कभी दिन में दो-तीन बार तक मैं इनपर से चढ़ती-उतरती रही हूं। इसलिए पत्थर घिस-घिसकर चिकना हो गया है।" अब हम लोग एक कक्ष में घुस गए थे। आयशा ने कहा, "यहां मैं दो हज़ार साल से भी अधिक नित्य सोई हूं। यहां देखो, और यह है मेरा प्यारा। ओह मैंने उसे क्रोध में मार डाला था क्योंकि इसकी मिस्री स्त्री एमीनारटस ने इसे मुझे नहीं लेने दिया था और मैंने उस पाप का फल दो हज़ार साल तक तड़पकर पाया है। केलीक्रिटीज़! दो हज़ार साल से मैं तुम्हारे ही लिए कौमार्य

धारण किए रही हू, मैं तुम्हारे प्रति सच्ची रही हूं !" यह कहकर उसने कहा,
हमने देखा-सामने पत्थर पर बिलकुल लियो जैसा ही एक और व्यक्ति
मैंने देखा, लियो में और उस व्यक्ति में बाल बराबर भी अन्तर नहीं था। आयशा
"इस पृथ्वी पर मनुष्य अपना ही पहला रूप लेकर बार-बार जन्मता है। लेकिन
पहचान नहीं पाते। दो हजार वर्ष बाद अब तुम ठीक वैसे ही पैदा हुए हो। मैंने
मुर्दे रखने की विधि अपने ज्ञान और अनुसधान से खोज निकाली थी, ताकि मेर
हमेशा मेरी आंखों के सामने बना रहे।" और फिर आंसू पोंछकर उसने कहा, "
इस मुर्दे को रखने की आवश्यकता नहीं है।" और फिर उसने एक मिट्टी की
निकाली और उस लाश को उस बोतल के तरल पदार्थ से भिगो दिया और हट ग
ही देर में लाश भाप बनकर उड़ गई। हम लोग हैरत से भरे लौट आए। अब लियो
की याद करके रोने लगा, पर आयशा का जैसे उसपर जादू चल गया था। अग
जब हम आयशा के सामने गए तो उसने लियो को अपनी भुजाओं में बांध लि
कहा, "प्रियतम, आज मैं तुम्हें उस स्थान पर ले चलूंगी जहां से मैंने अक्षय जीवन
किया था। वहां जीवन की एक अक्षुण्ण ज्वाला जलती है। यदि मैं मार्ग नहीं भूलूं
शाम तक हम लोग वहां पहुंच जाएंगे और फिर यौवन का अखड प्रवाह बहेगा
तुम्हारी स्त्री बन जाऊंगी।" वह फिर कहने लगी, "अजर और अमर व्यक्ति जी
शक्तियों और रहस्यों को जानकर आनन्द भोगता है वह सर्वशक्तिमान बनकर
पर राज्य करता है।"

मैंने कहा, "रानी ! चाह का कभी अन्त नहीं होता। अधिक जीने से भी
की तृष्णा नहीं मिटती। अधिक जीने से क्या लाभ, जब जवानी से मन बूढ़ा हो जाए

आयशा ने कहा, "होली, प्रेम ही एक वस्तु है जो उसे शताब्दियों तक भी
रखती है।"

मैंने कहा, "प्रेम !"

वह हंस पड़ी और उसने कहा, "कैलीक्रिटीज, मुझे एक बात बताओ ! तुम्हें
पता कैसे चला ?"

तब लियो ने अपने पिता के उस बक्स के बारे में सब बातें बताईं। यह सु
कि मैंने उसको पाला था आयशा ने कहा, "होली, तुम वास्तव में बहुत ऊंची श्रेणी
मनुष्य हो। मीन की पुत्री एमीनारटस ने मुझसे शत्रुता के नाते अपने वंशजों से
मारने और बदला लेने के लिए लिखा था और इसका फल यह हुआ कि दो हजार व
के बिछुड़े फिर मिल गए ! कैलीक्रिटीज, तुमने दो हजार साल पहले मुझे ठुकरा दिया
लेकिन आज तुमने मुझे स्वीकार कर लिया है !" यह कहकर उसने एक छुरा निक
लिया और कहा, "यह वही छुरा है जिससे मैंने तुम्हें मारा है। तुम्हारी माता ने पु
मारने के लिए लिखा था सो इस छुरे को पकड़ो और मुझे मार डालो !"

किन्तु लियो उसे नहीं मार सका। फिर उसने कहा, "अच्छा मुझे अपने देश
बारे में बताओ, क्या वहां बहुत सभ्य लोग रहते हैं ?" जब हमने इंग्लैंड के बारे में बता
तो वह बोली, "दो हजार वर्ष बाद समय आ गया है कि मैं अपने प्रियतम के साथ
सं

जंगलियों को छोड़कर जा सकती हूं। तुम इग्लैंड मे रहते हो। चलो हम लोग इग्लैंड में ही रहेंगे। मैं वहां की रानी बनूंगी और तुम मेरे स्वामी बनोगे।"

उसका आत्मविश्वास देखकर हम लोग कांप उठे। मैंने सोचा—जब यह दो हज़ार साल की स्त्री इग्लैंड पहुंचेगी तब न जाने कितनी सनसनी मच जाएगी।

मैं, लियो और जौब थोडे वस्त्र, पिस्तौल और हलकी राइफलें लेकर निश्चित समय से पहले ही आयशा के कक्ष मे जा पहुचे। वह काला लबादा ओढ़े तैयार बैठी थी। वह बोली, "चलो।" बीच की बड़ी गुफा में होकर शाम के उजाले में हम बाहर आ गए। बिलाली एक पालकी को उठानेवाले छ: गूंगे लिए खड़ा था। मैदान पार करके एक घंटा चलने के बाद हम कोअर के खडहरों में पहुच गए। बड़ा सुन्दर था वह देश। कोअर की राजधानी पार करने के बाद जब हम बाहर निकले तो रात हो चुकी थी। खडहरों को पार करते-करते हम बीहड़ वन मे पहुच गए। धीरे-धीरे भोर हो गया। करीब दो बजे दोपहर को हम एक विशाल पर्वत की एक भाड़ी मे पहुचे जहां से गहरा पर्वत ज्वालामुखी के फैले होंठों के समान चट्टान उठाए खड़ा था। आयशा यहा पालकी से उतर पड़ी और बोली, "अब हम लोगों को पैदल ही पर्वत पर चढना पडेगा। ये लोग हमारे साथ नहीं चलेंगे।" और उसने बिलाली से कहा, "तुम इन आदमियों को लेकर यहीं ठहरो। हम कल मध्याह्न तक लौट आएंगे। यदि किसी कारण नहीं भी आए, तो भी हमारी राह देखना।"

अब हम लोग पहाड़ के ऊपर चढ़ने लगे। वह कूदकर एक विशाल चट्टान पर चढ़ गई। हम पीछे चले। हम लोग उसके पीछे एक के बाद एक चट्टान को पार करते हुए आगे बढ़ चले। जौब पीछे-पीछे आ रहा था क्योंकि उसे एक तख्ता लेकर चढ़ना पड़ रहा था। उसे यह तख्ता उठाने की आज्ञा आयशा ने ही दी थी। पहाड़ का भाग अन्दर धस गया था, हम उसमे घुस गए। मार्ग पहले संकरा था फिर चौड़ा होता गया। यहा के पत्थर कोअर की गुफाओं के जैसे नहीं थे। पचास गज जाने के बाद मार्ग सामने से बन्द हो गया और दाहिनी ओर एक अधूरी गुफा दिखाई देने लगी। यहां आयशा के कहने से दो लालटेनें जला ली गईं। यह बड़ा ऊबड़-खाबड़ और पथरीला मार्ग था। घूम-घूमकर गुफा मे जाना पड़ता था। घंटे-भर बाद हम गुफा के दूसरे छोर पर निकले। तेज़ हवा के झोंके से दोनों लालटेनें बुझ गईं। सूर्य उतर चुका था। चारों ओर तीन-तीन हज़ार फुट ऊंचे पहाड़ खड़े थे। गुफा के द्वार से हम करीब दस कदम जाकर रुक गए। प्रकाश क्षीण हो गया था। सामने एक अथाह गड्ढा था जिसका तल नहीं दिखाई देता था। हम सब उस गड्ढे को देखकर कांप उठे। पता नहीं कितनी बिजलियां गिरकर उस गड्ढे को बना पाई होंगी! तभी आयशा ने कहा, "होली! आगे बढ़ो। इस तख्ते को सामने के पत्थर के ऊपर खड़ा दो।"

वह पत्थर देखकर उस भयानक तूफान में हम लोगों का दिल दहल उठा। तख्ता रख दिया गया। और आयशा निर्भीक होकर अपने शरीर को साधे हुए हवा में फरफराते हुए वस्त्रों को पकड़े उस तख्ते पर होकर उस अथाह गड्ढे के ऊपर से सभलकर निकलने लगी। आयशा उस अंधेरे मे चिल्लाई, "नीचे इसका तल नहीं है। विश्वास जानो, यही

अन्तिम परीक्षा है। यह सच है कि मेरा कुछ बिगड़ नहीं सकता फिर भी मैं सचेत हूं। सावधान ! इसी तरह इधर सब लोग सरकते चले आओ।" इसी समय हवा से उसका काला लबादा उड़ गया। वह अपने सफेद वस्त्रों में बड़ी भव्य दिखाई दे रही थी। वह कहती रही, "केलीक्रिटीज, पत्थर पर आंखें गड़ा दो। यहां से गिरने पर फिर बचाव नहीं है।"

अब हम उस चट्टान के लम्बे दांतों से चिपटकर सरकने लगे। सहस्रों वर्षों से चलता तूफान भयानकता से गर्जन कर रहा था। सामने भयानक अन्धकार था। मैं आयशा के बिलकुल पीछे था, मेरे पीछे केलीक्रिटीज और फिर जौब। हमने देखा सामने कोई दस या बारह गज की दूरी पर एक विशाल गोल चट्टान पड़ी थी। हम लोग पुल पार करके एक गुफा में घुस चुके थे। तभी तूफान से तख्ता उड़ गया। लियों ने घबराकर पूछा, "अब वापस कैसे जाएंगे ?"

चट्टान का गोला काफी बड़ा था, उसके पिछले छोर पर पहुंचकर आयशा ने कहा, "नीचे कूदो।"

नीचे छोर दिखाई नहीं दे रहा था लेकिन तीन ही हाथ नीचे भूमि थी। हम लोग कूद पड़े। आयशा कहने लगी, "यहां किसी समय एक आदमी रहता था। यह उसका घर था और वह यहां वर्षों रहा था। हर बारहवें दिन वह पर्वत के उस मुहाने पर जाता जहां से हम अन्दर घुसे थे। लोग वहां उसके लिए भोजन, पानी और तेल श्रद्धा से पहुंचा देते थे। संसार से उदासीन उस व्यक्ति का नाम नूत था। वह दार्शनिक था। उसीने जीवन की अमर ज्योति को पृथ्वी के गर्भ में घुसकर खोज निकाला था, जिसकी लपटों में नहाने से मनुष्य प्रकृति के समान ही बहुत समय तक स्थायी हो जाता है। परन्तु वह नूत इतना बड़ा रहस्य जानकर भी उसका उपभोग नहीं करता था। वह कहा करता था, मनुष्य मरने ही के लिए होता है। प्रकृति के साथ निरन्तर जीने के लिए नहीं। मैंने जब ऋषि नूत के बारे में सुना तो मैं यहां इस गुफा में आकर उसके बाहर आने की प्रतीक्षा करने लगी। जब वह बाहर आया तब मैं उसके साथ यहां अन्दर चली आई और तूफानों के बीच उसके साथ रहने लगी। वह सर्वशक्तिमान व्यक्ति वृद्ध और कुरूप था। फिर मैंने खुशामद करके धीरे-धीरे सब बातें जान लीं, परन्तु उसने मुझे ज्योति की सतरंगी लपटों में नहाने नहीं दिया। तभी मुझे केलीक्रिटीज उस यूनानी एमीनारटस के साथ मिली, तब तक मैं एमहेगर के जंगलियों की रानी हो गई थी। वह घटना मैं तुम्हें फिर कभी सुनाऊंगी। मैं तुमपर मर मिटी। एमीनारटस के साथ मैं तुम्हें यहां ले आई। मुझे नूत का भय हुआ और भाग्य से वह मुझे मरा हुआ मिला। मैंने चाहा कि तुम्हें अपने साथ लेकर इन लपटों में स्नान कर लूं पर तुम एमीनारटस की बांहों में चले गए। मैंने इन लपटों में स्नान किया। मेरा रोम-रोम सौन्दर्य का केन्द्र हो गया पर तुमने मेरी बात न मानी और उस जादूगरनी एमीनारटस के वक्ष में सिर छुपा लिया। तब मैंने तुम्हें मार डाला। उसके बाद मैं कितनी रोई, कितनी रोई और तब मैं मर भी नहीं सकती थी। अब मुझे तुम फिर मिल गए हो। अब हम कभी अलग नहीं होंगे।" यह कहकर उसने फिर कहा, "केली-क्रिटीज ! अब यह अग्नि का घूमता हुआ खम्भा इधर से आएगा, तब तुम मेरे साथ निर्भय

होकर उस अग्नि में खड़े हो जाना।"

यह कहकर वह लालटेन जलवाकर और उसे हाथ में लेकर एक ओर चल दी। हम लोग फिर सीढ़ियां चढ़ने लगे और एक कमरे में पहुंचे जो काफी बड़ा था। फिर चट्टान के अन्दर दीवार के सहारे हमने सीढ़ियों पर उतरना शुरू किया और घटे-भर तक तीन सौ से साढ़े तीन सौ तक सीढ़ियां उतर गए। अब हम पृथ्वी के गर्भ में घुस गए जहा घोर अन्धकार था। अब हम एक ऐसे कक्ष में पहुचे जिसकी दीवार में एक झरोखा-सा था। उस चार फुट के दरवाजे में हम लोगों ने प्रवेश किया। अन्दर एक ढलवा गुफा थी जो जैसे-जैसे आगे जाती थी सकरी होती जाती थी। ऐसी सात गुफाए पार करने के बाद हम एक गोल ऊंची गुफा में पहुचे। यहा पृथ्वी पर सफेद रेत बिछी थी। गुलाबी प्रकाश फूटकर दीवार को चमका रहा था। आयशा चिल्लाई, "वह रहा जीवन-ज्योति का अमर स्तम्भ ! इसकी धड़कन से पृथ्वी में प्राण धड़कते हैं। यह भी एक दिन करोड़ों वर्षों बाद शात हो जाएगा, तब पृथ्वी भी चन्द्रमा की भाति मर जाएगी।" हम लोगो में स्फूर्ति छा रही थी। आयशा ने कहा, "वह देखो जीवन का अमर स्तम्भ घूम रहा है। पृथ्वी के गर्भ में स्नान करने को उद्यत हो जाओ। जीवन के इस स्रोत से ससार के मनुष्य, जन्तु और वृक्ष प्राण खींचते हैं।"

अर्राटा बढ़ने लगा। दूर सामने सटा हुआ एक चट्टान का एक छेद था जिसमें प्रकाश फूट रहा था। आवाज बढ़ने लगी। एक धुंध भरा विशाल स्तम्भ इन्द्रधनुषी जैसे नाना रग की लपटों से दहकता हुआ गर्जन करता हुआ आया। हमें उसीका ऊपरी भाग दिख रहा था। उसमें से दस-बारह गज तक लपटें निकलकर फैलने लगीं। उसकी रगीन भाप से उजाला फैल रहा था। वज्र गर्जन-सा गूजने लगा। चालीस सैकंड बाद वह फिर आगे निकल गया। आयशा ने कहा, "अगली बार जब वह आए तो उसकी लपटो में खड़े होकर स्नान करना केलीक्रिटीज ! तुम अमर हो जाओगे। डरना मत, मैं भी तुम्हारे साथ नहाऊंगी। जौब और होली तुम भी नहाना। पहले मैं स्नान करूंगी फिर मुझे देखकर तुम लपटों में आ जाना।" यह कहकर उसने अपने कपड़े उतार दिए और अपने लम्बे केश सामने कर लिए, इसी समय स्तम्भ लुढ़कता हुआ फिर आ गया। दोनों हाथ उठाए आयशा उसकी लपटों में खड़ी हो गई। हठात उसका सौंदर्य लुप्त हो गया। स्तम्भ आगे निकल गया था। हमने देखा—आयशा के मुह से झाग निकल रहा था। वह छोटी होती जा रही थी, अब वह चिल्लाने लगी। उसके बाल झड़ गए और वह मर गई। मैंने देखा कि वह बन्दर जितनी छोटी हो गई थी। आखिर दो हजार साल का बुढ़ापा प्रकट हो गया था। लियो बेहोश हो गया। दो मिनट पहले जो ससार की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी थी जिसके एक कटाक्ष में त्रिभुवन की वासना समुद्र के समान थपेड़े ले उठती थी और जिसके वक्षों की चमक में मनुष्य अपनी शक्ति, ज्ञान और विवेक को खो बैठता था, वही अब इतनी कुरूप होकर पड़ी थी।

वह मर चुकी थी। मैं भी बेहोश हो गया। जब होश में आया तो जीवन स्तम्भ फिर लुढ़कता हुआ इधर आ गया, लेकिन हममें से किसीने भी उसमें स्नान नहीं किया। हम लोग वहां से भाग चले। हफ्तों बाद जब हम लोग बाहर पहुचे तब लियो यद्यपि धीरे-धीरे फिर से ठीक होने लगा था किन्तु आयशा की स्मृति उसके हृदय में जैसे बस गई थी।

प्रस्तुत उपन्यास का लेखक साम्राज्यवादी विचारों का समर्थक था, किन्तु उसने ऐसी मानववादी अद्भुत कल्पना की है कि देखकर आश्चर्य होता है। स्पष्ट ही हिंदू चिंतन का यहां गहरा प्रभाव मिलता है। इस उपन्यास में बड़ी सार्वभौमिकता है।

एच० जी० वेल्स :

लोकों का युद्ध
[द वार ऑफ द वर्ल्ड्स[1]]

अंग्रेज़ी उपन्यासकार एच० जी० वेल्स का जन्म २१ सितम्बर, १८६६ को ब्रोमले केण्ट में हुआ। आपके पिता क्रिकेट के एक पेशेवर खिलाड़ी थे। आपका परिवार निम्न मध्यमवर्गीय था। जीवन के आरम्भ में आपने अनेक उतार-चढ़ाव देखे और बाद में एक स्कालरशिप मिलने पर आपने रॉयल कालेज ऑफ साइन्स में अध्ययन किया। १८८७ में लन्दन विश्वविद्यालय से ग्रेजुएट हुए। उसके बाद आप विज्ञान पढ़ाने लगे और साथ ही साथ कुछ पत्रकारिता में भी दिलचस्पी लेने लगे। १८९५ में आपकी पहली रचना प्रकाशित हुई। उसके उपरान्त आपने कई उपन्यास लिखे और इतिहास, दार्शनिक ग्रन्थ तथा विज्ञान-सम्बन्धी पुस्तकों का प्रणयन भी किया। आप इंग्लैंड में रहते थे। १३ अगस्त, १९४६ में आपकी मृत्यु से संसार में एक विचारक का अभाव हो गया, क्योंकि अन्तिम दिनों में आपने विश्व-राज्य की एक कल्पना की थी। यों तो वेल्स ने अनेक उपन्यास लिखे हैं लेकिन महत्त्व उन उपन्यासों का अधिक रहा है जिनमें कल्पना ने अधिक प्रभाव दिखलाया है। आपने विचित्र वर्णन किए और विज्ञान की सहायता से अनेक प्रकार के चरित्र प्रस्तुत किए। उनके 'द इन्विज़िबल मैन' तथा इसी प्रकार के अन्य उपन्यास लोगों में बहुत अधिक ज़्यादा पढ़े जाते हैं। आपका 'द वार ऑफ द वर्ल्ड्स' नामक उपन्यास बहुत प्रसिद्ध हुआ है। यह १८९८ में प्रकाशित हुआ था। इसमें आपने यह कल्पना की है कि पृथ्वी पर मंगलग्रह के निवासियों ने आक्रमण कर दिया है।

ओगिलवी ज्योतिष का प्रकाण्ड विद्वान था और अंतरिक्ष को अपनी दूरबीन से निरन्तर देखा करता था। कोई नहीं जानता था, न किसीने कल्पना की थी कि ओगिलवी ने मुझे कितनी बड़ी चीज़ दिखाई ! मुझे उसने दूरबीन में दिखाया कि मंगलग्रह पर कुछ रहस्यात्मक लपटें दिखाई दीं और उसके बाद उस रात तो हम लोग यह कल्पना भी नहीं कर पाए कि मंगलग्रह के निवासी हम लोगों की ओर कुछ मिसाइल फेंक रहे हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में इंग्लैंड में लोग अपने छोटे-छोटे धन्धों में लगे रहते थे। कौन जानता था कि यह लाल-सा दिखाई देनेवाला मंगलग्रह क्या था और उसमें कैसे लोग रहते थे, जो मनुष्य की तुलना में कहीं अधिक बुद्धिमान थे, कहीं अधिक समर्थ थे ?

---

१. The War of The Worlds (H. G. Wells)—इस उपन्यास का अनुवाद हो चुका है : 'लोकों का युद्ध'; अनुवादक : रमेश बिसारिया; प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।

वहां से आनेवाले मिसाइलों में से एक आधी रात के समय वोकिंग के समीप होर्सेल कामन में मेबेरी पर्वत के समीप, जहां मेरा घर था, टूटते हुए तारे की तरह आकर गिरा और धरती में गड़ गया। ओगिलवी प्रात:काल के समय उसे देखने लगा। उसने देखा कि वह धातु का एक लम्बा सिलण्डर था। उसका व्यास लगभग पन्द्रह गज़ था और उसका एक छोर धीरे-धीरे पेंच की तरह खुलता जा रहा था। तुरन्त ही ओगिलवी ने यह मान लिया कि मंगलग्रह के ऊपर जो चकाचौंध-सी दिखाई दी थी वह इसीके कारण हुई थी और उसने यह भी निश्चय कर लिया कि अवश्य ही उसके अन्दर कुछ मनुष्य भी होंगे जिन्हें कि सहायता की आवश्यकता होगी ही। लेकिन सारा दिन बीत गया, सूर्यास्त होने को आया तब ही वह ढक्कन-सा धीरे से खुला। उसी समय भीड़ में भयानक चीत्कार सुनाई दिया। लोग बड़े कौतूहल से इस नई वस्तु को देख रहे थे। उन्होंने देखा कि उस सिलण्डर के अन्दर से जो वस्तु निकली वह मनुष्य नहीं था। मैंने भी उसको देखा। उसका कुछ भूरा-सा रंग था। गोल-गोल-सा शरीर जैसे कोई भालू हो। उसके पंजे बाहर निकले हुए थे, जिनके सहारे से वह बड़ी कठिनाई से ऊपर आने का प्रयत्न कर रहा था। और एक कुरूप अनगढ़-सी उसकी मुखाकृति थी जिसके नीचे उसके पंजे निकले हुए थे। दो काली बड़ी-बड़ी आंखें थीं और कांपता हुआ बिना होंठों का, अंग्रेज़ी के वी अक्षर जैसा बिना ठोड़ी का मुख था। उसकी नेलिया खाल ऐसी चमक रही थी जैसेकि गीला चमड़ा हो। और यहां के विचित्र वातावरण में यह व्यक्ति बड़ी तेज़ी से आवाज़ करता हुआ सा सांस ले रहा था। गोधूलि बेला हो गई थी।

ओगिलवी और उसके कुछ अन्य साथी एक सफेद झण्डा लेकर आगे बढ़ आए और मंगलग्रह के निवासियों की ओर बढ़ चले। वे मंगलग्रह के निवासियों को यह दिखाना चाहते थे कि वे लोग बड़े बुद्धिमान हैं और उनमें मैत्री की भावना है। अचानक प्रकाश की झिलमिलाहट-सी उठी और फिर कुछ हरा-सा धुआं उठ गया और गड्ढे में से धातु की कोई वस्तु ऊपर की ओर उठी। ज़ोर की आवाज़ सुनाई दी और एक चक्कर लगाती हुई तेज़ रोशनी भयंकरता से सामने की ओर घूम गई। जो लोग आगे बढ़े थे उनको लपटों ने घेर लिया। मंगलग्रह के निवासियों ने भयंकर ऊष्मा की किरण छोड़ी थी और सामने की ओर के जिन मकानों और पेड़ों पर वह किरण फैल गई थी, वहां सब जगह आग लग गई थी, मैं घबराया हुआ सा घर की ओर भाग चला।

आधी रात के समय उत्तर-पश्चिम की ओर कुछ मील की दूरी पर एक दूसरा सिलण्डर गिरा। क्योंकि हमारा घर उस भयंकर किरण के बहुत निकट था इसलिए मैं अपनी पत्नी को उसके रिश्तेदारों के यहां बारह मील दूर लेदरहेड नामक स्थान पर छोड़ने के लिए ले गया। जब मैं लौटकर आया तो उस रात मैंने एक घोड़ा और कुत्ते की एक गाड़ी पड़ोसियों से मांगी और वहां जाकर देखा। चारों ओर उजाड़ पड़ा था। तभी मैंने मङ्गलग्रह के निवासियों की चलनेवाली मशीनों को देखा। वे विशालकाय तिपाइयों जैसी दिखती थीं, मकानों से भी ऊंची। वे भयंकरता से घूमती थीं और उनमें तम्बुओं के जाल भरे हुए थे। उनके स्वर सुनाई देते थे, जो कठोर थे। मैंने उनके बारे में बहुत गलत समझा था। एक बार हमारे अधिकारियों को भी किंचित अनुभूति हुई थी। अब यह ही सबक

रहे थे कि आनेवाले लोग खुद नहीं चल-फिर सकते थे और आसानी से उनको विनष्ट किया जा सकता था। दो पलटनें आ गई थीं और भागते हुए सिपाहियों ने मुझे बताया कि पूरी पलटनें खत्म कर दी गई हैं और उसके बाद उन मशीनों ने वोकिंग को बरबाद कर दिया था और अब मंगलग्रह के निवासी आराम से अपना संगठन कर रहे थे।

उसी रात को तीसरा सिलण्डर आ चुका था और अभी सात और आनेवाले थे। सवेरे मैं लेदरहैड की ओर भाग चला। मेरा इरादा यह था कि उस एकान्त में पड़ा रहूं लेकिन वहां से भी लोग भाग रहे थे। जगह-जगह हथियारबन्दी की जा रही थी। जहां 'वे मो टेम्स' मिलती है वहां पांच मंगल-निवासी आ पहुंचे। चारों ओर मनुष्यों की भीड़ लग रही थी। सिपाहियों ने जब गोलाबारी शुरू की तो मैं पानी में कूद पड़ा। एक मशीन टेम्स नदी में आकर गिरी, क्योंकि बाहर की गोली ने उसमें बैठे किसी मंगल-निवासी को मार डाला था। उसके क्रुद्ध साथियों ने सिपाहियों की भीड़, वे ब्रिज और शिपर टन सबको विनष्ट कर दिया। मैं न जाने किस चमत्कार से बच सका, यह मैं स्वयं नहीं जानता। दोपहर के समय मैंने देखा कि मंगल-निवासी कुछ कनस्तर-से बरसा रहे थे जो टूट जाते थे और उनमें से घने बादल जैसे धुएं के गोले घुमड़ते थे और पृथ्वी पर छा जाते थे। मेरे पास ही एक बौराया-सा पादरी खड़ा था। हमने देखा कि जो कोई भी उस धुएं को सूंघता था वह तुरन्त मर जाता था। उसमें से स्याही जैसी भाप निकलती थी। बस, वे लोग ही बच सके जो पेड़ों पर चढ़ गए या गिरजे की ऊंची सीढ़ियों तक पहुंच गए। जैसे-जैसे मंगल-निवासियों को रोकनेवाले विनष्ट होते गए वे लोग बड़े कायदे से लन्दन की ओर बढ़ते चले गए।

इस बीच मेरा भाई लन्दन में था। उसने खतरे को भांप लिया और शरणार्थियों के साथ वह भी उत्तर की ओर भाग निकला। सरकार का पतन हो गया और चारों ओर भगदड़ मच गई। ऐसेक्स के किनारे पर वह एक जहाज पर चढ़ा। यह आखिरी जहाज था जो फ्रांस को बचकर निकल जा सका। उस जहाज से उसने देखा कि मंगल-निवासियों की दो भयानक मशीनें समुद्र में बढ़ आईं। युद्ध का एक जहाज उन दोनों से टक्कर लेते समय विनष्ट हो गया। जो लोग लन्दन से भागकर नहीं गए वे उस काले धुएं से विनष्ट हो गए।

पादरी और मैं, दोनों, हेलीफोर्ड के पास एक घर में छिप गए। हमने देखा कि धुआं हमारे पास इकट्ठा होता जा रहा था और हमने देखा कि एक मंगल-निवासी ने कुछ अत्यन्त गर्म भाप छोड़ी और वह धुआं उसके पीछे-पीछे चला गया। शीन नगर के बाहर हम लोग एक मकान में घुस गए। हमें बड़ी जोर से भूख लग रही थी, लेकिन उस समय एक जोर का धड़ाका हुआ और हम गिर के बल गिर पड़े। पांचवां सिलण्डर मंगल से आकर वहीं निकट ही पृथ्वी पर गिरा था। उसके धरती में गड़ जाने से जो धूल और मिट्टी वहां से छिटक कर गिरी थी उसमें हम लोग बिलकुल दब गए थे। मेरी तो यह हालत हो गई कि जो दो कमरे टूटने से बच गए थे अब मुझे पन्द्रह दिन उन्हीं में पड़ा रहना पड़ा। दीवार में एक छोटा-सा छेद था जो मंगल-निवासियों के सिलण्डर द्वारा बनाए गए गड्ढे की ओर खुलता था। शायद ऐसे बहुत ही कम लोग होंगे जिन्होंने इन आक्रमणकारियों

को इतने पास से देखा होगा जितना वहां से मैं उन्हें देख पाया हूं। अब मैंने महसूस किया कि उनके पास ऐसी-ऐसी विचित्र मशीनें थीं कि हम उनको देखकर जीवित समझने के भ्रम में पड़ जाते थे। एक मशीन ऐसी थी जो मिट्टी में से अलमोनियम की छड़ें पैदा करती थी।

लेकिन जब मैंने उनके खाने-पीने के ढंग को देखा तो मेरी रूह कांप उठी। बाद में मुझे मालूम पड़ा कि उनकी शरीर-रचना बड़ी साधारण थी। उनका एक विशाल मस्तिष्क था, फेफड़े थे और एक ही दिल था। लेकिन उनके आंतें-वांतें नहीं थीं और न पाचन-क्रिया की झंझट थी। वे लोग खाते नहीं थे, लेकिन अन्य जीवित प्राणियों का रक्त लेकर अपनी नसों में उसका इंजेक्शन लगा लिया करते थे। इसलिए जब उन्होंने मनुष्य की शक्ति को पृथ्वी पर तोड़ दिया तो उसके बाद हत्या करने में उनकी विशेष रुचि नहीं रही। हम लोग उनके लिए भोजन थे। उस छेद में से मैंने देखा कि वे लोग अच्छे कपड़े पहने हुए एक मजबूत आदमी को पकड़ लाए। उन्होंने उसे देखते-देखते समाप्त कर दिया। उसके बाद घंटों तक मेरी हिम्मत नहीं हुई कि उस छेद में से फिर झांककर देखूं। भावुकता का जैसे मंगल-निवासियों में कोई मूल्य ही नहीं था और न वे उससे प्रभावित होते थे। उनमें सेक्स का कोई स्थान नहीं था। वे लोग वृक्षों में से कलियों की भांति पैदा होते थे और मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि वे एक-दूसरे से अपने विचारों की प्रेषणीयता की सहजगम्यता के द्वारा ही बातचीत किया करते थे। अर्थात् एक ने सोचा, दूसरे ने अपने-आप उसके दिमाग को पढ़कर समझ लिया।

यह बात बिलकुल प्रकट हो गई कि पादरी की अक्ल गुम होती जा रही थी। खाने का सामान हमारे पास बहुत कम था और इतने दिनों तक उस मकान में हम दोनों का बन्द रहना पादरी के लिए बहुत कष्टकर था। मुझे अकसर उसे रोकना पड़ता ताकि वह कोलाहल न कर उठे। मुझे डर था कि कहीं मंगल-निवासियों का ध्यान हमारी ओर आकर्षित न हो जाए। लेकिन जब पादरी नहीं माना तब मैंने पकड़े जाने के डर से गोश्त काटने का औज़ार लेकर पादरी पर ज़ोर से आघात कर दिया और वह बेहोश होकर नीचे गिर पड़ा। उसी समय एक मंगल-निवासी को हमारे छेद का पता चल गया। एक पंजा-सा उस छेद में भीतर घुस आया और पादरी को पकड़कर उठा ले गया। मैं बाल-बाल बच सका। अब खाना नहीं बचा था। मेरे पास थोड़ा-सा पीने का पानी बाकी था। घर में बन्द हुए मुझे दस दिन बीत चुके थे। तब मैंने हिम्मत करके बाहर झांका। अब गड्ढा खाली था। मैं ऊपर निकल आया। जमीन पर एक तरह की लाल सिवार उग आई थी; और यह मंगल की ही पैदावार थी, पृथ्वी की नहीं। मैं लन्दन की ओर भाग निकला। मुझे बाहर न कोई मंगल-निवासी दिखाई दिया, न पृथ्वी-निवासी। कहीं-कहीं कुत्ते और कौए ज़रूर दिखाई दे जाते थे। खाना मिलना भी बहुत मुश्किल हो रहा था। बड़ी मुश्किल में आखिर मुझे एक सिपाही मिला जो एक ज़मींदोज़ नाली के अन्दर छिपा हुआ था और जिसने खरगोश की भांति अपना जीवन व्यतीत करने का निश्चय कर लिया था।

लेकिन यह मुसीबत जिस तरह आई थी उसी तरह अचानक नष्ट भी हो गई। आक्रमणकारियों ने पृथ्वी पर रहनेवाले लघुतम कीटाणुओं से अपना कोई बचाव नहीं

किया था। वे लोग ऐसे ग्रह से आए थे जहां किसी प्रकार के भी कीटाणु अवशिष्ट नहीं थे। लेकिन पृथ्वी पर आते ही यहां के विभिन्न कीटाणु सांस से उनके फेफड़ों में पहुंचने लगे। सबसे पहले उनकी लाशों का कुत्तों ने पता लगाया। एक ही मंगल-निवासी था जिसे कुत्ते नहीं खा पाए थे। विज्ञान का अध्ययन करनेवालों के लिए उस व्यक्ति की लाश को बचाकर रख लिया गया। मैं अपने मकान की ओर आ गया और वहीं मुझे अपनी पत्नी भी मिली जो मुझे ही ढूंढ़ रही थी। हम दोनों यह समझ रहे थे, अब शायद कभी भी मिलना नहीं होगा, लेकिन भगवान ने हम दोनों को जीवन में फिर एक-दूसरे के समीप कर दिया।

प्रस्तुत उपन्यास में एक विचित्र सनसनी है। यद्यपि यह नितान्त कल्पना है लेकिन वेल्स ने वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर इन कल्पनाओं का सृजन किया है, इसलिए उपन्यास अत्यन्त रोचक बन पड़ा है। वैसे देखने को ऐसा लगता है कि अब शायद मंगल-निवासी इस पृथ्वी के सम्पूर्ण विजेता हो जाएं, लेकिन बाद में वेल्स ने ऐसी साधारण घटना को लेकर पूरा तख्ता उलट दिया है कि उपन्यास की रोचकता कहीं अधिक बढ़ जाती है।

क्लार्क स्मिथ :

क्षितिज के पार के कीड़े

[द अमेज़िंग प्लैनेट[1]]

अंग्रेजी लेखक क्लार्क स्मिथ का जन्म अमेरिका में हुआ। आपके उपन्यास 'द अमेज़िंग प्लैनेट' में वैज्ञानिक कल्पना का वैचित्र्य प्रमुख है। इस उपन्यास में कौतूहल का विशेष स्थान है और यह बीसवीं सदी में यथार्थ के विरुद्ध ऐसा एक आंदोलन बन गया है कि लोग कल्पना का आसरा लें, यद्यपि इस क्षेत्र का विकास मानव कल्पना का विकास भी माना जा सकता है। बहुतेरे उपन्यासकार वैज्ञानिक कथाओं के द्वारा वर्तमान समाज पर व्यंग्य भी करते हैं।

अंतरिक्ष के पार शून्य गगन में कैप्टेन वोल्मर अपने साथियों के साथ तीव्र गति से अपने शून्य-यान 'एल्माईवन्' में चला जा रहा था। उसके सामने मेज़ पर कागज़ फैले पड़े थे और मेज़ के इर्द-गिर्द विज्ञान-मंडली के दश सदस्य उत्कंठा से बैठे थे। वोल्मर ने कहा, "यह सामने का लोक विचित्र है जहां इस समय हम उतरनेवाले हैं। यह ऐसा लोक है जो शायद अपनी धुरी पर नहीं घूमता, क्योंकि इसका एक भाग सदा इसके सूर्य की ओर रहता है। इसी प्रकार इसके दूसरे अर्द्धाकार में कभी न समाप्त होनेवाली रात्रि बनी रहती है। जिधर उजाला है, वह देखो भयंकर मरुभूमि है; और दूसरी ओर भयानक अंधकार है जहां निश्चय ही बर्फ की पर्तें पड़ी होंगी···" और फिर उसने उंगली उठाकर सामने की बड़ी व चौड़ी दूरबीन की ओर दिखाते हुए कहा, "वह देखो कितना सुन्दर स्थान है, जहां हम उतरनेवाले हैं···यह ध्रुव से ध्रुव तक की मध्य रेखा है जहां सदा उषाकाल की भांति मद्धिम तथा सुनहला प्रकाश फैला रहता है···"

शून्य में निरन्तर आठ मास यात्रा करते-करते वे सभी लोग थक चुके थे और चाहते थे कि वहीं उतरकर तनिक नवीनता का अनुभव करें। बाहरी आकाश की निरंतर उड़ान, 'एल्माईवन्' की मशीनों का गंभीर घोष तथा निविड़ांधकार—इन सभी चीज़ों से वे लोग उकता गए थे और कुछ नयापन अनुभव करना चाहते थे। यहां तक कि दृढ़ विचारोंवाला कैप्टेन वोल्मर भी परिवर्तन चाहने लगा था। अब कुछ समय के लिए वहीं उतरना उन लोगों के लिए जैसे ज़रूरी हो गया था। इस प्रकार के पड़ाव वे लोग निरन्तर हो रही अपनी कई वर्षों की आकाश-यात्रा में विभिन्न लोकों में कर चुके थे। आखिरी पड़ाव को अब आठ मास हो चुके थे। इस समय जिस लोक की ओर वे आ रहे थे वह किसी अनाम सूर्य के चार ग्रहों में से सबसे पास का कोई ग्रह था जिसके आकर्षण के दायरे

---

1. The Amazing Planet (Clark Smith)

में आकर इन लोगों ने वहीं उतरने के उद्देश्य से उस आकर्षण की काट करना बन्द कर दिया था। और पास से उन लोगों ने देखा कि उस ग्रह के दो चन्द्र थे—एक प्रकाश की ओर, तो दूसरा अंधेरे की ओर। दूसरा, उस अंधकार में अपना बहुत ही क्षीण प्रकाश फैला रहा था। वोल्मर ने अपनी बात दोहराई, "वह देखो भयानक बर्फ की मोटी पर्तें—मैंने पहले ही कहा था।"

ध्रुव से ध्रुव तक का भाग अब स्पष्ट दिख रहा था। उत्सुकता से वोल्मर ने कहा, "वह देखो, कितना स्वप्निल-सा लोक दिखाई दे रहा है···कितना सुन्दर···कैसा सुनहला ···प्रकाश है वहां। वहां हरियाली भी है। वहां बादल है, भाप है—तब तो निश्चय ही वायुमंडल भी होगा ही !"

'एल्माईवन्' अब नीचे उतर रहा था और सभी की उत्सुकता उस नवीन लोक को पददलित करने की हो उठी।

जब 'एल्माईवन्' नीचे उतर गया, वोल्मर ने पहले भीतर ही बैठकर यन्त्रों द्वारा बाहरी वातावरण की जांच की। बाहरी तापमान तो करीब ६०° था जो सर्वथा उपयुक्त था, परन्तु वायुमंडल में कुछ गैसें ऐसी मालूम हुईं जिनके बारे में इन लोगों को कुछ पता नहीं था। अतएव यही तय रहा कि कोई अपना गैस-मास्क नहीं उतारेगा। सबों ने नये सिरे से उनमें ऑक्सीजनयुक्त हवा भर ली और फिर वह एक-एक कर ऊपरी छिद्र को खोलकर अत्यन्त सावधानी के साथ बाहर निकले।

'एल्माईवन्' जहां उतारा गया था वह स्थान पथरीला था, तथा जहां से सामने की ओर एक लम्बा ढाल था वहां की भूमि कड़ी तथा नीली थी। भूमि पर एक विचित्र प्रकार की हरियाली फैली हुई थी जो पृथ्वी पर उगनेवाली घास से बिलकुल भिन्न थी। यह तीन-चार इंच से ऊंची नहीं थी और इसकी जड़ें पृथ्वी के अन्दर नहीं जाती थीं। यह काई की भांति फैली हुई थी तथा चलते में पैरों के बीच इकट्ठी हो जाती थी। उस क्षीण प्रकाश में भी वहां के आकाश में दो चन्द्र दिखाई दे रहे थे—एक अर्धचन्द्राकार तो दूसरा पूर्ण-चन्द्राकार। दूर तक पर्वत श्रृंखलाएं चली जा रही थीं, जिनपर उठी हुई हरियाली वहां से काली दिखाई दे रही थी। उनके बीच कहीं-कहीं डोलोमाईट के सफेद पहाड़ चमक रहे थे। उस काली पृष्ठभूमि में वह श्वेत-पर्वत गहनाधकार में हंस के समान उड़ते हुए प्रतीत हो रहे थे—उषाकाल के आलोक में वहां की भूमि, वहां के वृक्ष, वहां के पर्वत मानो सब सुप्तावस्था में पड़े थे। सर्वत्र शान्ति थी। वहां के वृक्ष पृथ्वी के वृक्षों से भिन्न थे क्योंकि नीचे से वे बहुत अधिक मोटे थे, किसी हद तक बेडौल कहे जा सकते थे। उनकी जड़ें पृथ्वी की ओर लटक रही थीं जिनके अग्रभाग ताँतोन के पंजों की भांति थे जो किसी भी वस्तु का स्पर्श पाते ही उसे पकड़ लेते थे। वोल्मर के साथियों को उनसे अत्यन्त सावधान होकर चलना पड़ रहा था।

वोल्मर ने चारों ओर देखकर कहा, "विचित्र है यह लोक ! इस सारे सौन्दर्य को जैसे मैं आज पी जाना चाहता हूं।" फिर रोवर्टन की ओर वह हठात् मुड़ा और बोला, "चलोगे मेरे साथ मित्र ?" यह प्रश्न नहीं था शायद आज्ञा थी क्योंकि रोवर्टन सबसे छट-कर उसके साथ हो लिया।

"तुम लोग भी अपनी टोली बना लो।" वोल्मर ने बाकी लोगों से कहा, "और खूब घूमो परन्तु ध्यान रहे, यह स्थान निरापद नहीं दीखता, क्योंकि सर्वप्रथम तो यहां के वृक्ष ही भयानक हैं। इसलिए मैं यही कहूंगा कि तुम सब लोग 'एल्माईवन्' को दृष्टि से ओझल मत होने देना।" फिर वह रोबर्टन का हाथ पकड़े एक ओर चल पड़ा। फिर हठात् मुड़ा और अन्य साथियों को सबोधित करते हुए ज़ोर से चिल्ला बोला, "हां एक बात और कहे देता हूं अपनी पिस्तौलें भरकर तैयार रख लो। हो सकता है आगे चलकर हम लोगों का यहां के रहनेवालों अथवा यहां के हिंस्र पशुओं से मुकाबला हो जाए।"

और जब वह पहाड़ की ढलान पर रोबर्टन को साथ लेकर चला तो उनके पैरों के बीच वह बिना जड़वाली घास इकट्ठी होने लगी। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था मानो वही प्रथम प्राणी थे जिन्होंने उस भूमि को रौंदा था। परन्तु वोल्मर उतावले स्वभाव का व्यक्ति नहीं था अतएव उसने अपने विचार एकदम से व्यक्त नहीं किए।

पहाड़ की ढलाई अब समाप्त हो चुकी थी। अब आगे के मार्ग पर हरियाली नहीं थी। थोड़ी दूर जाने पर जो उसकी निगाह भूमि पर गई तो वह ठिठककर रुक गया। रोबर्टन ने देखा कि उसका साथी भूमि पर बने किसी चिह्न की ओर ध्यानपूर्वक देख रहा है। उसने भी देखा—वह पैर के चिह्न थे परन्तु मनुष्य के पैर के नहीं, वरन किसी जन्तु के पंजों के चिह्न जिनमें केवल तीन उंगलियां थीं जो एक स्थान से तीन ओर चली गई थीं। वे उंगलियां काफी बड़ी-बड़ी थीं। एक विचित्र प्रकार की सिहरन उनके अन्दर दौड़ गई। और साथ ही साथ यह जिज्ञासा भी कि देखा जाए ये किसके पग-चिह्न थे। चिह्न वैसे काफी दूर-दूर थे, जिससे प्रतीत होता था जिसके भी रहे हों, यह निश्चित था कि वह कोई बड़ा जन्तु या जिसके डग बड़े-बड़े थे।

"वीभत्स! भयानक!" रोबर्टन बोला, "यह तो किसी जन्तु के भी नहीं मालूम होते···मेरे विचार से तो यह कोई बहुत बड़ा कीड़ा है।"

"कीड़ा?" वोल्मर हंसा। रोबर्टन जैसे खिसिया गया। पर बोला कुछ नहीं।

दोनों बढ़ चले। वे लोग उन पग-चिह्नों के पीछे-पीछे चलने लगे। परन्तु थोड़ी दूर जाने के उपरांत हरियाली फिर शुरू हो गई थी जिनमें वे चिह्न भी खो गए थे। एक अजीब बेबसी अब सामने आ गई। अब क्या करें? अब उन विचित्र प्राणियों की खोज कैसे हो? एक ओर कुछ अधिक हरियाली दिखाई दी। वोल्मर उस ओर चला। रोबर्टन ने अनुसरण किया। एकाएक मार्ग में वोल्मर लड़खड़ाया और पीछे से रोबर्टन ने देखा कि वह भूमि के अन्दर कहीं धसक गया था। वह भागा-भागा वहां पहुंचा, परन्तु इससे पहले कि सभले वह स्वय लुढ़कता हुआ उसी गड्ढे में जा गिरा जिसमें वोल्मर गिर गया था। वे लोग कब और किस तरह गिरे और कैसे उनके पैरों के नीचे से भूमि निकल गई यह उन्हें पता ही नहीं चला। अब उन लोगों ने अपने-आपको एक गड्ढे में पड़ा पाया। गड्ढा करीब आठ फुट नीचा था और अन्दर से गन्दा और सीलन से भरा था जिसमें से एक विचित्र प्रकार की दुर्गन्ध आ रही थी। रोबर्टन ने फुसफुसाकर कहा, "शायद यह किसी गुफा का बीच का हिस्सा है जिसके ऊपर की भूमि धसक गई है···मेरे विचार से इस गुफा मे रहनेवाला जन्तु कहीं सो रहा है···अच्छा हो, यदि हम लोग उसके जागने के पहले ही

यहां से भाग चलें !"

"ठीक कहते हो।" बोल्मर ने उसकी बात का समर्थन किया। "चलो।"

परन्तु जब वह उस गुहा के मुहाने पर पहुंचे तो उन्होंने देखा कि द्वार पर एक मजबूत जाल तना हुआ था और तभी तीखी तुरहियां कहीं बज उठीं जिनसे वे लोग चौंक उठे। इस लोक में पदार्पण करने के उपरांत यह पहली ध्वनि थी जो उन्होंने वहां सुनी थी। और तब उन्होंने गौर से देखा कि द्वार के बाहर विचित्र जीव खड़े थे। उनके दो पैर थे जो बहुत ही मोटे तथा भद्दे थे। उनके हाथ भूमि तक लटक रहे थे। उनके सिर कैसे थे यह उन्हें गुहा के उस भाग में खड़े होकर दिखाई नहीं दिया। उनके हाथों में एक छोटा परन्तु दृढ़ बनावटवाला जाल था जिसे वह गुफा के मुख पर ताने हुए थे। उस जाल के छोरों पर धातु की सी किसी वस्तु की बनी हुई दो चमकदार गेंदें थीं जिन्हें वे कसकर पकड़े हुए थे। बाहर से तथा उस स्थान से जहां ये लोग गिरे थे वही तीखी ध्वनि आ रही थी जो बीच-बीच में हुंकार की भांति भी सुनाई देती थी। ध्वनि निरन्तर आ रही थी···जैसे कोई जान-बूझकर ऐसा कर रहा हो।

रोबर्टन ने बोल्मर के कानों में धीरे से कहा, "हम लोग बुरे फंस गए हैं। ये लोग इस गुफा में रहनेवाले किसी भयानक जन्तु को पकड़ने के लिए ये तरह-तरह की ध्वनियां कर रहे हैं कि वह इन्हें सुनकर बाहर निकल आए और तब ये लोग उसे जाल में···"

"या शायद इन्होंने हमें गिरते देख लिया हो।" बात काटकर बोल्मर बोला, "और यह हमें भी उस जानवर के साथ पकड़ लेना चाहते हों।"

"हे भगवान !" रोबर्टन फुसफुसाया। तुरहियां बजती रहीं और पृथ्वी के मानव भय से सांस बांधे खड़े रहे। उन्हें एक-एक पल पहाड़ लग रहा था और रह-रहकर उन्हें अपने ऊपर ग्लानि हो रही थी कि इतने सभ्य समाज के रहनेवाले वे लोग तनिक असावधानी के कारण यहां जंगलियों के बीच फंसे हुए अपनी जान दे रहे हैं। अज्ञात के भय ने उन्हें एक तरह से जड़वत् भी बना दिया था। और तभी गुफा के भीतर से···कहीं दूर अन्धकार में से किसी भयानक जन्तु की गम्भीर दहाड़ सुनाई देने लगी। बोल्मर और रोबर्टन मुड़कर खड़े हो गए। अब शिथिलता का अर्थ मृत्यु था। उनके हाथ स्वतः पिस्तौलों पर चले गए। दहाड़ पास आ रही थी और बाहर तुरहियां बज रही थीं। मानव सन्नद्ध थे। और अन्दर दो गहरी हरी आंखें दिखाई दीं।

"शिकारी बाहर से ध्वनि कर रहे हैं—ऐसी ध्वनि जिससे शायद यह मोहित होता हो···" बोल्मर ने धीरे से कहा, "और हां देखो तो इन विचित्र प्राणियों को—इनके चेहरे···" परन्तु वह अपना वाक्य पूरा नहीं कर सका। जन्तु बिलकुल पास आ चुका था। रोबर्टन ने गोली दाग दी। बोल्मर की पिस्तौल भी चल गई। उसी समय उन्होंने देखा कि ऊपर के गड्ढे में से चमकदार भाले नीचे आए और उस बेडौल जानवर के शरीर में घुस गए। उनके घुसते ही उसके शरीर से नीला रस-सा, जो शायद उसका रक्त था, बाहर टपकने लगा। परन्तु वह जन्तु विकट था। भाले भी झेल गया और गोलियां भी खा गया पर गिरा नहीं। उसने एक भयंकर दहाड़ लगाई और अब इनकी ओर झपटा। मानवों ने फिर गोलियां दागीं, परन्तु वह जैसे उनसे रुकता नहीं नज़र आता था। अब भय ने इनके

पैर उखाड़ दिए और वे गुफा से बाहर की ओर भागे। इन्होंने बाहर खड़े प्रहरियों के पैरों पर वार किया। गोलियां लगते ही वे लुढ़क गए और ये दोनों मानव बाहर निकल गए। दूसरे ही क्षण वह भीमकाय जन्तु भी उस जाल में लिपटा हुआ बाहर आ गिरा। बोल्मर ने देखा कि बाहर विचित्र प्रकार के कोई एक दर्जन जीव खड़े थे जिनके पैर मोटे, भद्दे तथा हाथ जमीन तक लटक रहे थे। उनके हाथों में किसी मजबूत धातु की भांति के किसी वस्तु के बने हुए जाल थे। उनके भाले चमचमा रहे थे। वे अत्यन्त ही कुरूप थे। उनकी तीन आंखें थी, दो चेहरे के दोनों ओर तो एक माथे के बीच एक उठे हुए भाग में। वे तीनों ही गोल थीं। बीच मे एक कटा हुआ सा भाग था जो शायद उनका मुख था और उसके चारों ओर मोटे-मोटे तन्तु लटक रहे थे। वे देखने में ही बीभत्स लगते थे। उस भीमकाय जन्तु को उन्होंने पलक मारते उसी जाल में दबा लिया और भूमि पर लुटे ठोककर गड़ा दिया। मानवों को देखकर वे तनिक भी विस्मित नहीं हुए और जब इन लोगों ने भागना चाहा तो उन्होंने इन्हें चारों ओर से घेर लिया। हालांकि वे मोटे पैरों के थे परन्तु उनकी गति विद्युत की भांति तीव्र थी। वे दानवाकार बलिष्ठ प्राणी थे। उन्होंने पलक मारते मनुष्यों को भी जालों में बांधकर पटक दिया। बोल्मर व रोबर्टन की पिस्तौलें हाथ से छूट गईं। उनकी बोली भी विचित्र थी। वे केवल ध्वनियों में ही बोलते थे, शब्दों में नहीं। थोड़ी देर विचार-विमर्श के उपरांत उन्होंने मानवों के पैर खोल दिए और तब एक दानव ने अपना भाला रोबर्टन की छाती से लगाया और आगे चलने का इशारा किया।

अब वे लोग इन्हें पकड़े पर्वत के दूसरी ओर चल दिए—ठीक वहां से दूसरी दि[illegible] की ओर जहां 'एल्मार्दवन्' खड़ा था। कुछ शिकारियों ने किसी धातु की किस्म की कि[illegible] चीज़ के बने जालों में उस जन्तु को बांध रखा था और वे उसे घसीटे लिए चले आ र[illegible] थे। और वे दोनों व्यक्ति, जो गुहा के मुहाने पर जाल लिए खड़े थे और जिनके पैरों [illegible] पृथ्वी के मनुष्यों ने अपनी पिस्तौल की गोलियों से बींध डाला था, पीछे की ओर घि[illegible] टते चले आ रहे थे। अद्भुत था उनका साहस तथा निस्सन्देह अपार था उनका बल, [illegible] गोली खाकर भी चल रहे थे वे। एक बात विचित्र थी और वह यह कि उनके पैर छो[illegible] होने पर भी वे लोग काफी तेज चल रहे थे। यहां तक कि बोल्मर और रोबर्टन को भ[illegible] उनके साथ तेजी से कदम मिलाने पड़ गए।

"अब किधर ?" रोबर्टन ने मानो प्रश्न किया। फिर कहा, "अब हम दोनों स[illegible] इस जन्तु के साथ इकट्ठे किसी पात्र में पकाए जाएंगे और खा लिए जाएंगे।"

बोल्मर ने कोई उत्तर नहीं दिया। थोड़ी देर बाद वह बोला, "मैं इतनी देर [illegible] इस जाल को ही देख रहा था। यह देखो यह कितनी अच्छी बुनावट का है और कितनी सफाई से बनाया गया है। यह हमारी पृथ्वी पर पाए जानेवाले तांबे की भांति किसी धा[illegible] का बना हुआ है और बहुत मजबूत है...और यह देखो उन भालों को, जो ये लोग लि[illegible] हुए हैं—कितने चमकदार तथा मजबूत मालूम देते हैं...मुझे तो यह शक है कि क्या य[illegible] जंगली लोग इतनी अच्छी कारीगरी जानते हैं ?"

"हो सकता है।" रोबर्टन ने उत्तर दिया, "कि इन्हीं लोगों ने यह सब बनाई हों" क्योंकि इनके बारे में ही तो हम इनके बारे में कुछ निश्चय नहीं कर सकते। हालांकि मैं

बिलकुल जगली मालूम देते हैं, फिर भी हो सकता है कि इनकी कोई बड़ी-चढ़ी सभ्यता हो और ये विज्ञान के क्षेत्र मे काफी आगे बढ़े हुए हों ''आखिर आकाश में स्थित नाना लोकों में, जहा-जहां हम अभी तक गए है, हमारे दृष्टिकोण के अनुसार सभी लोग तो कुरूप ही मिले हैं, हमारे अपने हिसाब से तो हमारी पृथ्वी के लोग ही अत्यन्त सुन्दर हैं'''"

"हो सकता है।" वोलमर ने कन्धे उचकाए फिर कहा, "पर मेरा मन न जाने क्यों कहता है कि इस लोक पर केवल यही लोग—मेरा मतलब है कि ऐसे ही लोग नही रहते, बल्कि यहां और भी किस्म के लोग रहते है।"

शिकारियों ने जैसे इन लोगों की वार्ताओं पर तनिक भी ध्यान नही दिया। वे स्वय चुपचाप चल रहे थे। बीच-बीच मे उनमें से एक-आध ही एक विचित्र प्रकार की ध्वनि निकालता था। इसी प्रकार वे लोग जाने कितने मील चलते रहे—बड़े-बड़े मैदान, जिनमे वही बिना जडवाली हरियाली फैली हुई थी—पहाड तथा डोलोमाईट की खानें—सब रास्ते में आई और निकल गईं पर जैसे उनका मार्ग अभी समाप्त नहीं हुआ था। अब वे लोग 'एल्साईवन्' से बहुत दूर चले आए थे।

अब मार्ग उतरने लगा। ढलाव आ गया। रास्ता दोनो तरफ से घिरा हुआ था। ये लोग चलते रहे और वह जन्तु जो शायद अपनी भारी देह ढोते-ढोते थक गया था कभी-कभी डकराने लगा था। शिकारी खामोश थे। बुरी शक्ल, मोटे भद्दे पैर—वोलमर ने उनपर से निगाहें हटा लीं।

और मार्ग अब एक विशाल मैदान में आकर समाप्त हो गया। मनुष्यो ने देखा कि वह स्थान दूर-दूर तक फैला हुआ था जिसके छोरों पर अनगढ ढेरो पत्थर खड़े थे और यहां-वहां पहाड़ की गुफाओं के आगे तथा चोटियों तक ऊपर की तरफ चढते हुए अनगढ़ पत्थरों से ही बने हुए छोटे-छोटे मकान बने थे। और उस मैदान के बीचोबीच एक अंडाकार चमचमाता हुआ एक विशाल घर का सा कुछ खडा था।

"वह !" उसे देखते ही रोबर्टन चिल्लाया, "वह मैं शर्त लगा सकता हू किसी प्रकार का आकाश-यान है'''या शायद बाहरी आकाश में चलनेवाला कोई विचित्र यान।"

"ओह !" वोल्मर मानो हताश-सा बोल उठा, "पर मैं शर्त क्यो बदू ? हो सकता है वह ऐसा ही हो, पर आश्चर्य होता है कि भला कहा यह जगली और कहा आकाश-यान ?"

उस चमकदार वस्तु के चारों ओर कई लोग घूम-फिर रहे थे और जब ये लोग उनके बिलकुल पास पहुच गए तो इन्होंने देखा कि वे लोग उन लोगो स बिलकुल भिन्न थे जो इन्हें पकडकर लाए थे। वैसे इन लोगो के समान वहा इर्द-गिर्द और बहुत-से थे परन्तु उस चमकदार वस्तु के पास के लोग इनसे भिन्न थे। वे लोग इनसे उतने ही भिन्न थे जितने उस लोक के प्राणी अर्थात् वे शिकारी पृथ्वी के मनुष्यो से भिन्न थे। वे लोग करीब चार फीट ऊचे थे जिनके हाथ-पाव बल खाए हुए और शरीर कोमल थे। बीच में उनकी कटि इतनी पतली थी जैसे चींटों की होती है। उनके सिर जरूरत से ज्यादा बड़े थे। ऐसा लगता था मानो वे कोई शिरस्त्राण पहने हुए हो। ये लोग विचित्र-से और

अत्यन्त रंग-बिरंगे थे और उन भद्दे शिकारियों के मुकाबले में अत्यन्त चटकदार दिखाई देते थे।

और वह अंडाकार बड़ी वस्तु पास से देखने पर पता लगा कि कोई उड़नेवाली वस्तु थी अर्थात् कोई आकाश-यान, जैसाकि रोबर्टन ने उसे देखते ही कहा था। उसके अन्दर कई कक्ष दिखाई दे रहे थे और वह अन्दर कुछ चमकदार नीले सामानों से भरा था। उसके अंडाकार मुख के अन्दर से एक हलकी सीढ़ी-सी लटकी हुई दिखाई दे रही थी। प्रत्यक्ष था कि अन्दर जाने का रास्ता वहीं होकर था—और यह भी कि वह उड़ते समय ऊपर उठा ली जाती हो। वोलमर तथा उसके साथी ने देखा कि वह कुरूप दानव अपने कर्कश स्वर में उन चटकीले बौनों से बातें कर रहे थे घुल-मिलकर। बौनों की आवाज़ उनसे कितनी भिन्न थी क्योंकि वे काफी पैनी आवाज़ में बोल रहे थे। फिर दानवों ने अपने तमाम बांधकर लाए हुए जंतुओं को, जो जालों में बंधे पड़े थे, एक तरफ ला-लाकर पटक दिया, जिन्हें देखकर बौनों ने उस आकाश-यान में से नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्र निकाले और उन्हें लाकर दूसरी तरफ ढेर लगा दिया। पृथ्वी के मनुष्यों को समझते देर नहीं लगी कि सौदा हो रहा था।

"मैंने क्या कहा था पहले ही?" वोलमर चिल्लाया, "मैं जानता था कि इन जाल तथा अस्त्रों के बनानेवाले कोई और ही हैं···मुझे तो अब एक और शक हो रहा है और शायद मेरा भ्रम पक्का ही हो क्योंकि ये बौने इस लोक के निवासी नहीं मालूम देते—सम्भव है कि यह यहां के सूर्य के किसी अन्य ग्रह के निवासी हों और यह भी कि यह जो बौने दिख रहे हैं जन्तु विशेषज्ञ हों जो इस लोक से विभिन्न प्रकार के जन्तुओं को क्रय करके ले जाते हों और अपने यहां उन्हें चिड़ियाघरों में प्रदर्शित करते हों···और यह जो इनके सिर इतने बड़े दिखाई देते हैं यह वास्तविकता में शिरस्त्राण हों क्योंकि यह भी हो सकता है कि हमारी भांति यह लोग भी यहां के वायुमंडल में जीवित न रह सकते हों।

अब बौने अन्य जन्तुओं को देखते-देखते मनुष्यों के सम्मुख आ गए थे। मनुष्यों को देखकर वे लोग अति विस्मित दिख रहे थे। वे लोग कुछ देर तक इन्हें देखते रहे। तत्पश्चात् आपस में काफी उतावलेपन के साथ बहस करने लगे—उसी अपनी विचित्र ध्वनि में जिसमें कि वे लोग बोलते थे। उनकी मुद्राओं, अंगचालन तथा हाथों के हिलाने से पता चलता था कि वे लोग गर्मागर्मी साथ के मनुष्यों के बारे में ही कोई बहस कर रहे थे। और मनुष्यों ने तब देखा कि उनके चार-चार आंखें थीं—दो एक तरफ ऊपर-नीचे तो इसी प्रकार दो दूसरी तरफ। और वे आंखें हरी चमकदार थीं। उनके पलक नहीं चलते थे और उनका स्थिर दृष्टि भयानक लगती थी। प्रत्येक नेत्र अन्दर से मानो सैकड़ों टुकड़ों में विभाजित था जैसे पृथ्वी पर कीटाणुओं की आंखें विभाजित होती हैं। आंखों के तनिक नीचे की ओर एक पोली-सी उठी हुई नली थी जो शायद उनका मुख हो, और ऊपर भी और दो सींग-से उगे हुए थे जो शायद उनके कान हों। बाकी उनका शरीर एकदम नंगा था—धड़ और हाथ-पैर···और उनका रंग ऐसा था जैसे किसी दीपक के रंग-बिरंगे चटकदार कीड़े का।

कुछ क्षण बौनों ने फिर मनुष्यों को खामोश निगाहों से घूरा, फिर आपस में उसी

प्रकार बहस करने लगे। शायद वे उनके बारे में कुछ निश्चय करना चाहते थे।

"यह हमे भी इस लोक का कोई जन्तु समझ रहे हैं। मैं निश्चयात्मक रूप से कह सकता हूं।" वोल्मर ने अनुमान लगाया।

"और वह देखो कप्तान···वे हमें भी मोल लेने की बात कर रहे हैं। वह देखो वे शिकारी भी शायद पूरा मूल्य चाह रहे हैं···" और वह तनिक हसा। उस कठिन परिस्थिति मे भी रोबर्टन ने अपना विनोदपूर्ण व्यवहार नहीं छोड़ा था। वोल्मर अवश्य गम्भीर हो गया था।

और रोबर्टन का अनुमान सत्य निकला। थोड़ी ही देर बाद बौने अपने यान के अंदर से कुछ सामान और लाए, कुछ विचित्र अस्त्र तथा औज़ार। उनमें कुछ घण्टेनुमा और घड़े-नुमा पात्र भी थे जो शायद मिट्टी के बने हुए थे। उन सबका मूल्य आंकना पृथ्वी के मनुष्यों की समझ के बाहर था, परन्तु उन भद्दे दानवों ने उस ढेरी के पास जाकर उन वस्तुओं का मूल्य आंकना प्रारम्भ कर दिया। थोड़ी देर बाद दानव ने कुछ ध्वनि निकाली और इशारे किए। बौनों ने एक बार सिर हिलाया, जिसपर दानव उस ढेरी के पास से हटने लगे। साफ दिखाई देता था कि दानव उन लोगों का अधिक मूल्य मांग रहे थे और बौने अधिक वस्तुएं दे नहीं रहे थे। इसी भांति मोल-तोल थोड़ी देर और होता रहा परन्तु अंत में बौनों ने और उसी प्रकार का सामान बाहर निकालकर एक और ढेर लगा दिया और वे दानवों के उत्तर की बाट जोहने लगे। दानवों ने वह सामान उठा लिया। सौदा पक्का हो गया।

वोल्मर ने भी उस विचित्र परिस्थिति में मुस्कराकर कहा, "बिक गए हम लोग।"

"अब देखो नया मालिक।" रोबर्टन मुस्कराया।

तत्पश्चात् उस बड़े घायल जन्तु की जांच की गई जिसे वोल्मर और रोबर्टन के साथ लाया गया था। बौनों ने उसके घावों को देखकर उसे लेने से इन्कार कर दिया। इसी भांति कई जानवर उन्होंने नहीं लिए। अब सौदा समाप्त हो गया था। दानव अन-बिके जानवरों को तथा प्राप्त मूल्य को लेकर अपने घरों की ओर बढ़ने लगे।

रोबर्टन ने अब देखा कि उनके साथ-साथ तरह-तरह के अन्य जानवर भी बौनों ने मोल लिए थे—विचित्र सर्प, मानवों की भांति खड़े होनेवाले और उतने ही बड़े कीड़े, दीर्घकाय छिपकलियां और कुछ ऐसे जन्तु जिनका रूप तथा जिनकी सूरत मनुष्यों के लिए एकदम नई थी। न जाने क्या-क्या थे वे सब! किसीके भयानक जबड़े बाहर लटके हुए थे जिनपर पैने-पैने दांत मानो बाहर से ही जड़े हुए हो, तो किसीके मुख के चारों ओर मोटे-मोटे तन्तु लटक रहे थे।

"समझ मे नहीं आता कि इन भारी तथा भयानक जन्तुओं को ये बौने ले किस तरह जाएंगे।" वोल्मर ने प्रश्नवाचक वाक्य मानो स्वयं से कहा और मानो उसीके उत्तर में उसी समय आकाश-यान मे से धातु की सी वस्तु की बनी हुई कुछ रस्सियां नीचे लट-काई गईं जो काफी मोटी और मज़बूत थीं। जब वह नीचे गिरा दी गईं तो उनके पीछे से दो बौने और उतरे जिनके हाथों में धातु जैसी वस्तु के ही बने हुए लम्बे-लम्बे डंडे थे जो कुछ नीलापन लिए हुए थे तथा जिनके किनारों पर दो तश्तरियां-सी लगी थी जो धारदार

तथा चमकदार थीं। उनसे उन बौनों ने प्रत्येक जानवर की रीढ़ की हड्डी छूनी शुरू कर दी। वे उसे पीठ से छुलाते तथा एकदम हटा लेते। जिसके वे उसे छुलाते वह बेहोश होकर फौरन गिर पड़ता। क्रिया बहुत ही आसान तथा तुरन्त असर दिखानेवाली थी। इधर जानवर बेहोश होकर गिरता, उधर दूसरे बौने उसे उन रस्सों से बांध देते और एक झटका देते जिसके साथ ही आकाश-यान में वह स्वतः ऊपर खिंच जाते—इतनी आसानी से जैसे उनमें कुछ वजन ही न हो। वे निश्चय ही किसी क्रेननुमा वस्तु के द्वारा ऊपर खींच लिए जाते थे। जब सब जानवर चढ़ा दिए तब वही दो बौने वोल्मर तथा रोवर्टन की ओर बढ़े।

"माइडाला।" वोल्मर चिल्लाया, "अब तो सचमुच ही हमारा नम्बर आ गया। रोवर्टन भागो। करो इन लोगों पर हमला, अन्यथा···"

वह कह ही रहा था कि रोवर्टन ने उन दोनों पर हमला किया। धक्के से वे लोग पीछे हट गए परन्तु तुरन्त बाकी बौनों ने उन्हें घेर लिया और इससे पहले कि ये उनपर एक बार मिलकर फिर टूटें, दो बौनों ने विद्युत् गति से बढ़कर इनके शरीरों से अपने वही डंडे स्पर्श करा दिए। वोल्मर की छाती पर तथा रोवर्टन के पेट पर उनका स्पर्श हुआ और जैसाकि ये सोचे हुए थे कि बिजली का सा झटका लगेगा ऐसा कुछ नहीं हुआ, बल्कि इनपर एक प्रकार की बेहोशी चढ़ने लगी उसी प्रकार जैसे क्लोरोफार्म या किसी बेहोश करनेवाली ओषधि का असर होता है। आंखों के सामने अन्धकार आने लगा। प्रज्ञा लुप्त होने लगी और वे लोग बेहोश होकर गिर पड़े।

जब रोवर्टन की आंखें खुली तो उसने देखा कि वह हलके नीले प्रकाश में नीचे पड़ा हुआ है। उसका मस्तिष्क अभी काम नहीं करने लगा था। उसने आश्चर्य से सुना मानो बहुत दूर कहीं ऊपर गम्भीर घोष हो रहा है—ऐसा घोष जो निरन्तर चालू है। उसने सोचा क्या यह घोष सदा से ऐसा ही होता आया है और क्या वह उसे अनन्तकाल से सुन रहा है। उसकी प्रज्ञा तब लौटने लगी और उसने सोचा, 'मैं, तो, वोल्मर···हां वोल्मर ···पर वोल्मर कहां है ?' और उसने मुड़कर देखा, बगल में ही वोल्मर अभी बेहोश पड़ा था। उसकी विचारधारा फिर चल पड़ी, "हां तो हम दोनो वहां उस लोक में बेहोश कर दिए गए थे···अच्छा ठीक है···फिर शायद हम दोनों को उस आकाश-यान में उन बौनों ने खींच लिया था। ठीक है, ठीक है।···और यह जो गम्भीर घोष हो रहा है यह शायद इस आकाश-यान की मशीनें हैं। तो हम उड़ रहे हैं ?···' उसने स्वयं से प्रश्न किया। उसने देखा कि वह जिस स्थान पर बंधा था वह एक पिंजड़ानुमा कमरा था जो किसी पारदर्शी वस्तु का बना हुआ था जिसके बाहर मोटी तथा मजबूत धातु की सी सलाखें कसी थीं। उसने गौर से देखा उसी प्रकार के कई कक्ष पास-पास बने हुए थे जिनमें कहीं तो कोई जानवर अभी बेहोश पड़ा था, तो कहीं कोई चहल-पहल कर रहा था और अब रोवर्टन को सारी बातें याद आ गईं। उसने निगाहें दौड़ाईं। उसने देखा बाहर गहन अंधकार था। दूर कहीं-कहीं नक्षत्र-लोक भयानकता से चमक रहे थे। किन्हीं-किन्हीं से तो मीलों लम्बी अग्नि की लपटें निकल रही थीं। वह बड़बड़ाने लगा, 'तो हम इस

समय शून्य में यात्रा कर रहे हैं। बाहरी आकाश से भी परे···'

तभी वोल्मर ने आंखें खोल दी और वह बोल उठा, "रोबर्टन हम कहा हैं ?"

"कहां हैं, यह सही-सही तो नहीं बता सकता परन्तु लगता ऐसा है कि इस समय हम कहीं बाहरी आकाश मे यात्रा कर रहे हैं। उन्हीं बौनों के साथ, उन्हींके उस विचित्र यान मे और यह भी कि अब हमें यह लोग अपने लोक में ले जाकर किसी अजायबघर में अथवा जिंदा रहे आए तो चिड़ियाघर या जतुघर में रख देंगे जिससे हम जैसे विचित्र प्राणियों को वहां के लोग देख-देखकर खुश हुआ करें···मेरे ख्याल से जहा हम जा रहे हैं वह भी उसी सूर्य का कोई ग्रह है जिसका ग्रह वह था जहा हम 'एल्साईवन्' पर से उतरे थे···आह 'एल्साईवन्' !···हाय रे दुर्भाग्य हम कहां फस गए···!" उसके स्वर में दु ख की छाप थी।

"निश्चय ही समय बहुत भयानक है !" वोल्मर ने उत्तर दिया और दीर्घ श्वास छोड़ा, "मुझे तो अब चिन्ता इस बात की है कि अब हमारे खाने-पीने तथा सांस लेने का प्रश्न जटिल हो जाएगा। खैर, यहां से भाग निकलने या बचने का तो प्रश्न ही नहीं उठता ···हमारे सांस लेने के शिरस्त्राणों में जिनमे केवल बारह घंटों के लिए पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन भरी हुई थी, अब जाने कितनी कम मात्रा मे वही गैस रही हो। हमे यह भी तो पता नहीं है कि हमे 'एल्साईवन्' छोड़े कितनी देर हो गई है।···"

रोबर्टन ने चारो तरफ घूमकर देखा। उसे एक मुडी हुई धातु की नली दिखाई दी जो एक ओर जडी हुई थी। उसने उसके मुह पर हाथ रखा तो उसे पता लगा कि उसमें से कोई गैस निरन्तर उस कमरे में आ रही थी। उसने कुछ सोचकर कहा, "हमारे पिंजड़े की भांति निश्चय ही दूसरे पिंजरों में भी यही गैस भेजी जा रही होगी और यह गैस वह है जो उस लोक के प्राणियों के लिए आवश्यक है जहा से हम अब आ रहे है क्योंकि बौनों ने हमें तथा उन जानवरों को आखिर उसी स्थान से तो खरीदा था···फिर वे लोग हमे भी वहीं के जानवर समझें तो उनका क्या दोष।"

और फिर उन दोनों ने देखा कि पारदर्शी दीवार के बाहर पांच बौने आकर खडे हो गए थे और इन लोगो को गौर से देख रहे थे। उन लोगों के हाथो मे कुछ पात्र थे जिनमे किन्हीं मे तो पानी की भांति कुछ भरा था तथा कुछ मे कुछ विचित्र प्रकार का सामान भरा था जो शायद कुछ खाने के लिए था। बौनों ने जाने किस विधि से उस एकदम जुड़ी हुई दीवार मे मार्ग बनाया और सावधानी से वह खाने तथा पीने का सामान अन्दर रख दिया। जिस हाथ ने वह सब अन्दर रखा था वह भी सचमुच का हाथ नहीं था बल्कि कोई यन्त्र था। रोबर्टन तथा वोल्मर ने देखा कि इसी भांति प्रत्येक जानवर के पिंजड़े मे भोजन-सामग्री रख दी गई। फिर तुरन्त वे द्वार उसी भांति बन्द कर दिए गए। बौने बाहर चुपचाप खड़े होकर देखने लगे।

रोबर्टन ने वोल्मर को दिखाते हुए कहा, "वह देखो हमें यह लोग देख रहे हैं कि हम इनका दिया हुआ भोजन खाते हैं या नहीं। खाना भी तो यह उसी लोक के रहनेवालों लायक होगा जहां से हम इस समय लाए गए हैं···और वह देखो कप्तान, अब इन लोगों के सिर कितने छोटे दिखाई दे रहे हैं···तो गोया वह इनके शिरस्त्राण थे। ठीक !···"

और वोल्मर ने भी देखा कि रोवर्टन सत्य कह रहा था। अब उन लोगों के सिरों पर वह बड़े-बड़े शिरस्त्राण नहीं थे। उनकी आंखें बड़ी-बड़ी थीं तथा चेहरे के बीच में कुछ तन्तु से लगे हुए थे। यह सब उनके शरीर के अनुसार ही कोमल तथा छोटे-छोटे ही थे। जब उन्होंने देखा कि वोल्मर और रोवर्टन ने उनका दिया हुआ भोजन छुआ भी नहीं तो वे लोग आपस में फिर बहस-सी करने लग गए।

"मैं तो भूख व प्यास से मरा।" रोवर्टन चिल्लाया। "लेकिन गैस का शिरस्त्राण चढ़ाए भला मैं खाऊं कैसे?···यह भी मान लिया कि जो कुछ दिया गया है वह मनुष्यों के खाने योग्य वस्तु नहीं है, फिर भी शिरस्त्राण तो उसे भी खाने के लिए उतारना ही पड़ेगा। जो भी हो यह बौने तो इन गैस-शिरस्त्राणों को भी हमारे शरीर का भाग ही समझ रहे हों ठीक उसी प्रकार जैसे इनके बारे में हमारी धारणा थी।" फिर स्वयं सोचकर उसने कहा, "पर ये लोग हैं मूर्ख जो यह भी नहीं समझ पा रहे हैं कि हम भी सभ्य समाज में रहनेवाले लोग हैं···"

वोल्मर हंसा फिर बोला, "शब्दार्थ लगाना केवल मनुष्य ही नहीं जानते बल्कि और लोग भी लगाते हैं। इन लोगों ने जब हमें इसी अवस्था में पाया था तो भला वे क्यों न इन्हें हमारा अंग ही समझते? और खासकर जबकि वह हमें उन असभ्य लोगों के पास से लाए थे। फिर दीर्घ श्वास फेंककर कहा, "काश! इन्हें यह पता चल जाता कि इनकी तरह हम भी आकाश-यान 'एल्साईवन्' में आए थे।"

तत्पश्चात् जब बौने चले गए तो मनुष्य अपने पिंजड़े में बहुत देर तक खामोश बैठे रहे। आकाश-यान शून्य में उड़ता रहा, मशीनों का गम्भीर घोष होता रहा और समय का मानो अन्त ही नहीं था। वोल्मर ने देखा कि अन्य पिंजड़ों में भोजन-सामग्री पर वे सभी जानवर टूटकर पड़े थे, अब खा-पीकर निश्चित बैठे थे।

मनुष्यों की भूख-प्यास बढ़ती गई। आखिर और सब्र करना असम्भव हो गया। रोवर्टन बोल उठा, "क्या कहते हैं कप्तान? देखूं कैसा है?"

"चालू करो।" अनुमति देते हुए वोल्मर ने उत्तर दिया, "यदि तुम इसे खाकर बच गए तो फिर मैं भी आजमाऊंगा···" और वह मुस्करा दिया। उस समय उसकी मुस्कान बिलकुल फीकी थी।

रोवर्टन ने धीमे से अपना शिरस्त्राण खोल दिया और फिर एक दीर्घ श्वास खींचा। हवा बहुत भारी थी। उसने अनुभव किया—उसके फेफड़े दब रहे थे। उसे खांसी उठ आई। परन्तु वह सांसें लेता रहा। अब और चारा भी क्या था? फिर उसने वह पानी से भरा बड़ा पात्र उठाकर मुंह से लगा लिया। वह जो पानी की तरह तरल पदार्थ था पास से देखने पर गहरा तथा स्वादरहित था। एक-दो घूंट लेने के बाद उसने झिझकते हुए वह नीला-नीला कुछ सामान उठाकर मुंह में रख लिया। वह देखने में एक बड़े आलू के समान था। रोवर्टन ने उसमें से थोड़ा दांतों से काट लिया। बड़े बुरे स्वाद का था वह। ऊपर से कड़ा तथा अन्दर से स्पंज की भांति पोला।

"इससे तो यह तरल पदार्थ ही भला।" कहकर फिर उसने उसी पात्र को उठाकर मुंह से लगाया। अब वोल्मर ने भी अपना गैस-मास्क उतारना शुरू कर दिया। उसने

उस तरल पदार्थ को सावधानी से थोड़ा लिया और फिर वह साथ उठाकर थोड़ा-सा मुह मे रखा परन्तु एकदम उसे नीचे थूक दिया। फिर कहा, "हम मानवों के लिए यह भोजन ठीक नहीं है। इसे खाकर हम जीवित नहीं रह सकेंगे। तुम तो जानते ही हो रोबर्टन कि प्रत्येक लोक पर मनुष्यों का भोजन नहीं मिलता···हां तुमने अधिक तो नहीं खाया न इसमें से ?" उसने प्रश्न किया।

"केवल थोड़ा-सा निगल गया हू।" रोबर्टन ने मानो सफाई दी।

"ठीक किया।" वोल्मर ने खांसते हुए कहा, "सम्भव है कि यह हम लोगों के लिए विष सिद्ध हो।"

ठीक उसी समय रोबर्टन ने बड़े ज़ोर से कराह भरी। वह बोला, "आह ! मेरे पेट में भयानक दर्द उठ रहा है···आह मैं···आह मैं···" और वह नीचे लेटकर तड़पने लगा।

तबियत तो वोल्मर की भी खराब होने लगी थी, परन्तु क्योंकि उसने उस पात्र में से कुछ खाया नहीं था इसलिए उसने सोचा कि शायद उस तरल पदार्थ तथा उस नई हवा के कारण उसकी वैसी हालत हो गई हो।

परन्तु रोबर्टन की हालत बिगड़ती गई। वह भूमि पर तड़पने लगा। उसके मुह से झाग निकलने लगी। उसके पेट में ऐसी मरोड़ें उठ रही थीं कि वह स्वयं बल सा जाता था और रह-रहकर पीड़ा से चिल्लाता था। वोल्मर यह सब देख रहा था। उसके हृदय में दुःख उमड़ रहा था परन्तु बिना ओषधियों तथा अन्य साधनों के वह कितना असहाय बना बैठा था।

और इसी प्रकार दो घंटे निकल गए। रोबर्टन की तड़पन पराकाष्ठा को पार कर गई थी। वोल्मर खोया-खोया बैठा था और अपने साथी को मरता देख रहा था—असहाय, निरीह। मानो वह स्वयं जड़वत् हो गया था। वह इतना तल्लीन तथा खोया हुआ बैठा था कि उसे पता ही न चला कि कब से दो बौने आकर उन्हें देख रहे थे। वोल्मर ने देखा कि वह आश्चर्य-मुद्रा में इनकी ओर देख रहे थे। वोल्मर को एकदम ध्यान आया कि वे इस समय उन्हें गैस-मास्क रहित चेहरे में देख रहे थे जिससे उनका आश्चर्यचकित होना अवश्यम्भावी ही था। दोनों बौने हटे और चले गए, परन्तु शीघ्र लौटे तो उनके साथ अन्य कई भी थे। उन लोगों ने आकर पिंजड़े को चारों ओर से घेर लिया और अब इन्हें देखकर ज़ोरदार बहस कर रहे थे। परन्तु वोल्मर का ध्यान उस समय उनकी ओर अधिक नहीं जा पाया, क्योंकि रोबर्टन की हालत बिगड़ती जा रही थी और वह स्वयं भी शायद उस हवा के कारण बहुत ही अस्वस्थ हो रहा था। उसका सिर एकदम भारी हो रहा था और अंग-प्रत्यंग शिथिलता का अनुभव कर रहे थे। तभी एक स्थान से उस पारदर्शक दीवार में एक मार्ग बना और एक के बाद एक करके तीन बौने अन्दर कूदे। उनके हाथों में वही लम्बे डंडे थे। उन्होंने तीव्र गति से बढ़कर उन्हें दोनों के शरीरों से छुला दिया। वोल्मर बेहोश हो गया और रोबर्टन के लिए मानो उस असह्य पीड़ा से छुटकारा मिल गया।

और अब की बार जब वे दोनों मनुष्य बारी-बारी से होश में आए तो उन्होंने

अपने-आपको पहले से कहीं अधिक विचित्र परिस्थिति में पाया। यह तो स्पष्ट था कि अब वे उस शून्य-यान में नहीं थे क्योंकि जिस कक्ष में वे उस समय लेटे हुए थे वह काफी बड़ा था जिसकी दीवारें, छत व फर्श, किन्हीं एलाबास्टर नुमा किसी वस्तु के बने हुए थे जो कि चमकदार तथा बहुत ही सुभावने लग रहे थे। उस कक्ष में कई अंडाकार वातायन भी थे जिनमें से बाहर का चटकीला नीलाकाश दिखाई दे रहा था। उनमें से ऊंची-ऊंची दीर्घाकार इमारतों के ऊपरी भाग भी दिखाई दे रहे थे जिससे यह लगता था कि जहां वे उस समय थे वह शायद किसी बड़ी इमारत का ऊपरी हिस्सा था। वातावरण भला लग रहा था। वे उस समय बड़े-बड़े पलंगों पर लेट रहे थे जिनपर बहुमूल्य लाल तथा बैंगनिया रंग के गुदगुदे वस्त्र बिछे थे तथा वे पलंग भी सिर की ओर तनिक ऊंचे थे। कक्ष नाना प्रकार की छोटी-बड़ी मेजों से सजा हुआ था जिनके पैर पतले तथा मकड़ी के पैरों जैसे थे। कमरे में अनेकानेक रूप की शीशियां रखी थीं जो शायद किसी अज्ञातलोक में वहां के वैज्ञानिक काम में लाते हों। वोल्मर तथा रोबर्टन के अतिरिक्त उस समय कमरे में कोई नहीं था।

इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि उन्होंने अपने-आपको आशा के बिलकुल विपरीत भली-चंगी हालत में पाया था। कहां तो वे यह सोच रहे थे कि बिना हवा, पानी तथा भोजन के उन्हें मरना होगा और कहां अब यह हालत थी कि उन्हें भूख-प्यास कुछ भी यहां नहीं लग रही थी और हवा भी बिलकुल ठीक ऑक्सीजन मिली हुई श्वास के साथ खींच रहे थे। वोल्मर ने सिर में हाथ लगाकर कहा, "आश्चर्य ! यह हमारे गैस-मास्क फिर हमारे किसने चढा दिए ?"

ऐसा लगता था मानो उनकी बेहोशी के समय उन बौनों ने उनके गैस-मास्क फिर उसी प्रकार की हवा से भर दिए थे। रोबर्टन, जो अब बिलकुल ठीक था, अंगड़ाई लेकर बोला, "क्या तुम ठीक हो कप्तान ?" और फिर स्वय ही उत्तर में बोल उठा, "मेरा अपना तो यह हाल है कि शायद जीवन-भर में आज का सा आनन्द अनुभव नहीं किया है। पर समझ में नहीं आ रहा है कि इतना आनन्द कैसे आ रहा है ! जहां तक याद आता है हम तो उस आकाश-यान में थे न ? जहां मेरे पेट में भयानक पीड़ा उठी थी।"

यह प्रश्न भी नहीं था, न विवरण, पर मानो स्वतः एक प्रकार का भाव था जो उसने व्यक्त किया। वोल्मर बोला, "अब हम लोग उस यान मे नहीं हैं; बल्कि जिन्होंने हमें पकड़ रखा है, शायद उन्हीके लोक में हम आ पहुंचे हैं। बाकी बातें सब साफ हैं। जब उन्होंने हमें गैस-मास्क उतारते देख लिया तो वे समझ गए कि हम भी कोई सभ्य लोग थे अतएव उन्होंने हमारे मास्कों में बची गैस का विश्लेषण करके उन्हें पुनः उसी प्रकार की गैसों से भर दिया और अब शायद वे लोग हमसे अच्छा बर्ताव करें।"

"रही मेरी बात।" रोबर्टन हंसा, "मैं तो एकदम ठीक हूं। मालूम होता है कम्बख्तों ने इंजेक्शन द्वारा हमारे शरीरों में खाने-पीने की मात्रा पहुंचा दी है—उस समय जबकि हम लोग बेहोश थे।"

उन्हें बातों में पता भी न चला कि उनके पास कब तीन बौने आकर खड़े हुए थे। यह पहलों से अधिक ऊंचे तथा अधिकार में भी कुछ अधिक मालूम देते थे। इनकी मूछें

तथा तनु भी पहनेवालों से नर्म मालूम होती थी और इनका रंग गहरा लाल, नारंगी तथा हलका नीला मिश्रित था। अजीब से भटके के साथ वे इनसे कुछ कहने लगे। उन्होंने जो भी कहा हो वह मानव-कर्णों द्वारा सुना व समभा नहीं जा सका। परन्तु उनके द्वारा उन्होंने अपनी ओर से अभिवादन प्रदर्शित किया जिसका उत्तर मनुष्यों ने भी भरसक नम्रता के साथ खड़े होकर दिया। तत्पश्चात् उन लोगों ने मनुष्यों की बांहों को अपनी पतली उंगलियों से पकड़कर उन्हें एक ओर, जहां बड़ा-सा द्वार था, चलने का इशारा किया। इशारा वे दोनों स्वयं उठकर उनके साथ चल दिए। जैसे द्वार पार किया कि पृथ्वी के मनुष्य ठिठककर खड़े हो गए। उन्होंने जो कुछ देखा उससे वे घबरा उठे और उन्हें चक्कर सा आ गया। वे लोग एक गोल में खड़े थे जिसके किनारों पर कोई डौली या सहारा नहीं था और जहां से खड़े थे वह स्थान नीचे के तल से कम से कम आधा मील ऊंचा था। नीचे देखने भय लगता था—सारे शरीर में चींटियां-सी काटने लग जाती थीं। नीचे उस भयानक मृत्यु के गह्वर में एक महानगर बसा हुआ था जिसमें इसी प्रकार की दीर्घाकार विशाल इमारतें खड़ी थीं। उन्हें ऐसा लगा जैसे वे एल्प्स पर्वत की किसी भयंकर सीधी चट्टान से नीचे गहनांधकार में देख रहे हों, जहां का तल दिखाई नहीं दे रहा था। चारों तरफ की इमारतें—सब सफेद थीं और सभी में स्थान-स्थान पर गौखें बनी हुई थीं और वह ऊपर नीचे एक इमारत से दूसरी, दूसरी से तीसरी और फिर तीसरी से चौथी—इसी प्रकार पतले-पतले पुलों द्वारा मिली हुई थीं। कोई-कोई इमारत तो वहां से भी इतनी ऊंची थी कि उनका ऊपरी भाग स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा था। उन पुलों से ऐसा लगता था मानो किसी जाल द्वारा सब कुछ मिला हुआ था। वे पुल न जाने किस वस्तु के बने हुए थे जो अत्यन्त हलके तथा एलाबास्टर की भांति चमकदार थे। उनके नीचे न पुल था न कोई दूसरा सहारा और कोई-कोई तो पचास-पचास गज मील लम्बा था।

मनुष्यों ने आश्चर्य से देखा कि वहां से बहुत नीचे तक उसी प्रकार के अन्य पुलों पर वहां के लोग कीड़ों की भांति आ-जा रहे थे जो नाना रंगों से विचित्र लग रहे थे।

और तब तो आश्चर्य तथा भय से उनकी बोली भी बन्द हो गई जब उनका एक साथी बौना बड़े इत्मीनान के साथ एक पुल पर, जो वहीं उनके पैरों के पास से शुरू होता था, उतरने लगा और उसने उन्हें भी इशारा किया कि वे भी उसके पीछे चले आएं।

"पवित्र आत्मा! हे भगवन्!" रोबर्टन चीखा, "क्या हमें इस गज-भर चौड़े ढालू पुल पर चलना होगा जिसके दोनों ओर सहारे के लिए भी कुछ नहीं है?"

आगेवाला बौना पक्षी की भांति सधा हुआ दक्ष गति से उतर रहा था। उसके दो साथी बोलमर और रोबर्टन के पीछे खड़े थे और उनके हाथों में वे ही बेहोश कर देने-वाले डंडे थे। जैसे ही बोलमर और रोबर्टन ने उतरने में हिचकिचाहट दिखाई उन्होंने अपने वे डंडे मानो डराने को उठाए और तब मजबूर होकर बोलमर आगे बढ़ा। बोला, "अब तो चला ही जाए कैसा भी बुरा हो पर कम-से-कम रस्सी पर चलने से तो अच्छा ही है।"

अब वे लोग सावधानी से अपने मार्ग-दर्शक के पीछे-पीछे उतरने लगे। शून्य में अनेक बार यात्रा करने के कारण उस भयानक ढलान से जब वे उतरे तो उन्होंने नीचे की तरफ नहीं झांका बल्कि अपनी दृष्टि उन्होंने सामनेवाली गौख में अड़ा दी और साधकर

छोटे-छोटे कदम रखते हुए आगे बढ़ने लगे। मुड़कर एक बार उन्होंने देखा तो उन्हें पता लगा कि जिस इमारत से वे आए थे उससे भी अधिक ऊंची तो कई और इमारतें थीं जो सभी सफेद थीं। उनमें से कुछ के ऊपर बुर्जियां बनी हुई थीं और कुछ की मीनारें ही टेढ़ी बनी हुई थीं। एक स्थान पर उन्हें छत पर बहुत-से चमकदार आकाश-यान इकट्ठे दिखे। यह शायद उनके रखने का अथवा उतारने का स्थान था। अब वे लोग उन इमारतों के इंद्रजाल में बीचों-बीच एक स्थित गगनचुम्बी अट्टालिका में पहुंच चुके थे। बड़े-बड़े घुमावदार कक्षों में होकर इन्हें अब आगे ले जाया गया। जब यह सब वे पार कर चुके तो एक ऐसे स्थान में पहुंचे जो निश्चय ही कोई बड़ी विज्ञानशाला थी। यह स्थान पारदर्शी वस्तु का बना हुआ था जिसमें अलग-अलग पिंजड़ों में नाना प्रकार के जानवर बन्द थे जिनमें से कई तो वे थे जो इनके साथ उस दानवों के लोक से यहां लाए गए थे। वोलमर और रोबर्टन ने देखा कि बौने उनके शरीरों से किसी विचित्र औज़ार के द्वारा उनका कुछ रक्त तथा उनके शरीर का थोड़ा रस बाहर निकाल रहे थे। कोई जानवर बेहोश कर दिया गया था, तो कोई वैसे ही खड़ा हुआ था। मनुष्यों ने देखा कि तरह-तरह के रंगोंवाले रस चपटी बोतलों में भरे जा रहे थे। वोलमर की तबियत मिचलाने लगी।

"तो यह बात है।" रोबर्टन चिल्लाया, "पर यह लोग भला इस जीवन-दायक रस का करते क्या हैं ?"

"कौन जाने !" वोलमर ने सोचते हुए उत्तर दिया, "कि ये रस किस काम आते हैं या शायद इनकी दवाइयां बनती हों।"

असंख्य पिंजड़ों के बीच में होते हुए ये लोग आगे बढ़ रहे थे। अन्त में ये एक छोटे-से कमरे में पहुंचा दिए गए। अन्दर पहुंचते ही घंटा-ध्वनि करता हुआ वहां का द्वार बन्द हो गया। इस कमरे में चार बौने मौजूद थे जो वहां के महान वैज्ञानिक मालूम पड़ रहे थे। चारों ही गैस-मास्क चढ़ाए हुए थे। मनुष्यों से इशारे में कहा गया कि वे अपने मास्क उतार दें। वोल्मर और रोबर्टन ने आज्ञा का पालन किया। उन्होंने अब देखा कि इस कमरे में पृथ्वी का सा वायुमण्डल बनाया गया था। तत्पश्चात् इतनी ज्यादा जांच उनके शरीरों की की गई कि मनुष्य यह भी भूल गए कि उन्हें कितनी बार नाना प्रकार के औज़ारों द्वारा जांचा गया। विभिन्न प्रकार की रोशनियों में उन्हें खड़ा किया गया। तरह-तरह के औज़ारों की ध्वनियां होती रहीं और वे वैज्ञानिक आपस में बहस तथा सलाह इत्यादि भी करते रहे।

और अन्त में जाने क्या हुआ कि एकदम उनके सीनों में जब और जिस तरह दो हाथी की सूंड़ की शक्लवाली दो सुइयां घुसेड़ दी गईं। उन्हें तो तब पता चला जब एकदम दर्द हुआ और उन्होंने देखा कि उनके जीवन का रस उसी प्रकार बाहर खींचा जा रहा था। जिस प्रकार उन जन्तुओं का रक्त बाहर खींचा गया था। दोनों को चक्कर आने लगे, और जब वे गिरने ही वाले थे कि सम्भाल लिए गए। नलियां सीने में से जाने कब बाहर निकाल भी गईं, उन्हें पता भी नहीं चला।

अब मानवों ने देखा कि इनका रक्त जांच के हेतु चपटी गोल शीशियों में भरा हुआ मेज़ पर रखा हुआ था। दूसरी बार वे चौंक पड़े क्योंकि अब की बार इनके कमरों में

न जाने कब दो-दो सुइयां घुसा दी गईं और सर्प के दशों की भांति उन सुइयों के द्वारा न जाने कैसा और कितना रस इनके शरीरों में भर दिया गया कि उसके लगते-लगते इनकी तबियत बिलकुल साफ हो गई और ये एक बार फिर अपने-आपको पूर्ण स्वस्थ समझने लग गए। न भूख, न प्यास, न कमज़ोरी बल्कि सब ओर से पूर्ण—यह वैसी ही हालत थी जिसमें उन्होंने दूसरी बार बेहोशी से उठकर अपने-आपको पाया था।

"क्या कहने इस ओषधि के!" बोल्मर बोल उठा, "यह तो कोई अमृत मालूम देता है।"

"अगर यहीं तक इनकी हमारे बारे मे खोज समाप्त हो जाए तब भी भला ही समझना। कहीं वह नौबत न आ जाए कि ये लोग हमारे शरीरों को काटकर अन्दर से देखना चाहें। मुझे तो यह सब भयानक लग रहा है—न जाने क्यों, पर मुझे इस सबका नतीजा अच्छा नहीं दिख रहा है।" रोबर्टन ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया।

बौनों ने जैसे इनकी बातों पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया था और जब इनकी जांच समाप्त हुई तो इन्हें इशारा किया गया कि ये अपने कपड़े और गैस-मास्क पहन लें, जब वे बाहर निकले तो इनके साथ वे जाच करनेवाले भी आए जिन्होंने बाहर आते ही अपने शिर-स्त्राण उतार लिए। अब वे लोग इन्हें लेकर नीचे की मंजिल में एक बड़े गोल कक्ष मे पहुचे। उनके हाथों में इनके शरीर से निकाला हुआ रक्त उन चपटी गोल बोतलों में था। उस बड़े कक्ष में आधे दर्जन लोग (बौने) इनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वे सब अधिकतर मकड़ी के पैरों जैसे पतले तथा उसी शक्ल के बने हुए पैरों के स्टूलों पर बैठे थे। वे लोग अर्ध-चन्द्राकार श्रेणी में बैठे थे और उनमें से किसी-किसीके हाथों में काले चमकदार दड थे जिनके छोरों से अग्नि की हरी लपटें निकल रही थीं। बोल्मर ने गौर से देखा तो उनमें दो व्यक्ति ऐसे भी थे जो उन सबके मुकाबले मे उजड्ड तथा मामूली रंगोंवाले थे। वे लोग खड़े हुए थे। सामने मेज पर नाना प्रकार की ओषधियां तथा औज़ारों का मानो ढेर लगा हुआ था। रोबर्टन को वह परिस्थिति आपत्तिजनक लगी। वह बोला, "तो क्या अब हमारी चीरा-फाड़ी होगी?"

"देखो। सब्र करो।" बोल्मर ने अदम्य साहस से उत्तर दिया। फिर वे अब बौने, आपस में सलाह इत्यादि करते रहे। केवल वे दो बौने, जो अन्य सबो से भिन्न थे और जो गंवार मालूम देते थे, एक ओर खड़े रहे। जब आपस में बातें समाप्त हुई तो दो वैज्ञानिको ने लम्बी-लम्बी दो सुइयां मनुष्य के रक्त से भरीं और उन दोनों गवारों के पेट में लगा दीं। वे ऐसे खड़े रहे जैसे उन्हें इससे कोई आपत्ति नहीं थी।

तत्पश्चात् वे सब वैज्ञानिक उत्सुकतापूर्वक परन्तु शांत और गम्भीर भाव से बैठे उन दोनों को देखने लगे।

"कुत्तों पर असर!" रोबर्टन फुसफुसाया।

बोल्मर चुप रहा और एकदम वह दोनों गवार पछाड़ खाकर नीचे गिर पड़े और बुरी तरह चीखने-चिल्लाने लगे। उनके मुह से सर्प के समान फुफकारियां तथा विचित्र चीखें निकल रही थीं। उनके शरीर नीचे गिर गए थे। उनका मुह सूज गया था, तन्तु भी सूजकर खड़े हो गए थे। शायद सौ विषधरों का विष भी उनपर उतना भयंकर सिद्धन

छोटे-छोटे कदम रखते हुए आगे बढ़ने लगे। मुड़कर एक बार उन्होंने देखा तो उन्हें पता लगा कि जिस इमारत से वे आए थे उससे भी अधिक ऊंची तो कई और इमारतें थीं जो सभी सफेद थीं। उनमें से कुछ के ऊपर गुंबियां बनी हुई थीं और कुछ की मीनारें ही टेढ़ी बनी हुई थीं। एक स्थान पर उन्हें छत पर बहुत-से चमकदार आकाश-यान इकट्ठे दिखे। यह शायद उनके रखने का अथवा उतारने का स्थान था। अब वे लोग उन इमारतों के इंद्रजाल में बीचों-बीच एक स्थित गगनचुम्बी अट्टालिका में पहुंच चुके थे। बड़े-बड़े घुमावदार कक्षों में होकर इन्हें अब आगे ले जाया गया। जब यह सब वे पार कर चुके तो एक ऐसे स्थान में पहुंचे जो निश्चय ही कोई बड़ी विज्ञानशाला थी। यह स्थान पारदर्शी वस्तु का बना हुआ था जिसमें अलग-अलग पिंजड़ों में नाना प्रकार के जानवर बन्द थे जिनमें से कई तो वे थे जो इनके साथ उस दानवों के लोक में यहां लाए गए थे। वोल्मर और रोबर्टन ने देखा कि बौने उनके शरीरों से किसी विचित्र औज़ार के द्वारा उनका कुछ रक्त तथा उनके शरीर का थोड़ा रस बाहर निकाल रहे थे। कोई जानवर बेहोश कर दिया गया था, तो कोई वैसे ही खड़ा हुआ था। मनुष्यों ने देखा कि तरह-तरह के रंगोंवाले रस चपटी बोतलों में भरे जा रहे थे। वोल्मर की तबियत मिचलाने लगी।

"तो यह बात है।" रोबर्टन चिल्लाया, "पर यह लोग भला इस जीवन-दायक रस का करते क्या हैं ?"

"कौन जाने !" वोल्मर ने सोचते हुए उत्तर दिया, "कि ये रस किस काम आते हैं या शायद इनकी दवाइयां बनती हों।"

असंख्य पिंजड़ों के बीच में होते हुए ये लोग आगे बढ़ रहे थे। अन्त में ये एक छोटे-से कमरे में पहुंचा दिए गए। अन्दर पहुंचते ही घंटा-ध्वनि करता हुआ वहां का द्वार बन्द हो गया। इस कमरे में चार बौने मौजूद थे जो वहां के महान वैज्ञानिक मालूम पड़ रहे थे। चारों ही गैस-मास्क चढ़ाए हुए थे। मनुष्यों से इशारे में कहा गया कि वे अपने मास्क उतार दें। वोल्मर और रोबर्टन ने आज्ञा का पालन किया। उन्होंने अब देखा कि इस कमरे में पृथ्वी का सा वायुमण्डल बनाया गया था। तत्पश्चात् इतनी ज्यादा जांच उनके शरीरों की की गई कि मनुष्य यह भी भूल गए कि उन्हें कितनी बार नाना प्रकार के औज़ारों द्वारा जांचा गया। विभिन्न प्रकार की रोशनियों में उन्हें खड़ा किया गया। तरह-तरह के औज़ारों की ध्वनियां होती रहीं और वे वैज्ञानिक आपस में बहस तथा सलाह इत्यादि भी करते रहे।

और अन्त में जाने क्या हुआ कि एकदम उनके सीनों में कब और किस तरह दो हाथी की सूंड की शक्लवाली दो सुइयां घुसेड़ दी गई। उन्हें तो तब पता चला जब एकदम दर्द हुआ और उन्होंने देखा कि उनके जीवन का रस उसी प्रकार बाहर खींचा जा रहा था। जिस प्रकार उन जन्तुओं का रक्त बाहर खींचा गया था। दोनों को चक्कर आने लगे, और जब वे गिरने ही वाले थे कि संभाल लिए गए। नलियां सीने में से जाने कब बाहर निकाल ली गईं, उन्हें पता भी नहीं चला।

अब मानवों ने देखा कि इनका रक्त जांच के हेतु चपटी गोल शीशियों में भरा हुआ मेज पर रखा हुआ था। दूसरी बार ये चौंक पड़े क्योंकि अब की बार इनके कन्धों में

न जाने कब दो-दो सुइयां घुसा दी गईं और सर्प के दांतों की भांति उन सुइयों के द्वारा न जाने कैसा और कितना रस इनके शरीरों में भर दिया गया कि उसके लगते-लगते इनकी तबियत बिलकुल साफ हो गई और ये एक बार फिर अपने-आपको पूर्ण स्वस्थ समझने लग गए। न भूख, न प्यास, न कमजोरी बल्कि सब ओर से पूर्ण—यह वैसी ही हालत थी जिसमें उन्होंने दूसरी बार बेहोशी से उठकर अपने-आपको पाया था।

"क्या कहने इस ओषधि के !" वोल्मर बोल उठा, "यह तो कोई अमृत मालूम देता है।"

"अगर यहीं तक इनकी हमारे बारे में खोज समाप्त हो जाए तब भी भला ही समझना। कहीं वह नौबत न आ जाए कि ये लोग हमारे शरीरों को काटकर अन्दर से देखना चाहें। मुझे तो यह सब भयानक लग रहा है—न जाने क्यों, पर मुझे इस सबका नतीजा अच्छा नहीं दिख रहा है।" रोवर्टन ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया।

बौनों ने जैसे इनकी बातों पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया था और जब इनकी जांच समाप्त हुई तो इन्हें इशारा किया गया कि ये अपने कपड़े और गैस-मास्क पहन लें, जब वे बाहर निकले तो इनके साथ वे जांच करनेवाले भी आए जिन्होंने बाहर आते ही अपने शिर-स्त्राण उतार लिए। अब वे लोग इन्हें लेकर नीचे की मंजिल में एक बड़े गोल कक्ष में पहुंचे। उनके हाथों में इनके शरीर से निकाला हुआ रक्त उन चपटी गोल बोतलों में था। उस बड़े कक्ष में आधे दर्जन लोग (बौने) इनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वे सब अधिकतर मकड़ी के पैरों जैसे पतले तथा उसी शक्ल के बने हुए पैरों के स्टूलों पर बैठे थे। वे लोग अर्ध-चन्द्राकार श्रेणी में बैठे थे और उनमें से किसी-किसीके हाथों में काले चमकदार दंड थे जिनके छोरों से अग्नि की हरी लपटें निकल रही थीं। वोल्मर ने गौर से देखा तो उनमें दो व्यक्ति ऐसे भी थे जो उन सबके मुकाबले में उजड्ड तथा मामूली रंगोंवाले थे। वे लोग खड़े हुए थे। सामने मेज़ पर नाना प्रकार की ओषधियां तथा औज़ारों का मानो ढेर लगा हुआ था। रोवर्टन को वह परिस्थिति आपत्तिजनक लगी। वह बोला, "तो क्या अब हमारी चीरा-फाड़ी होगी ?"

"देखो। सब्र करो।" वोल्मर ने अदम्य साहस से उत्तर दिया। फिर वे अब बौने, आपस में सलाह इत्यादि करते रहे। केवल वे दो बौने, जो अन्य सबों से भिन्न थे और जो गंवार मालूम देते थे, एक ओर खड़े रहे। जब आपस में बातें समाप्त हुईं तो दो वैज्ञानिकों ने लम्बी-लम्बी दो सुइयां मनुष्य के रक्त से भरी और उन दोनों गंवारों के पेट में लगा दीं। वे ऐसे खड़े रहे जैसे उन्हें इससे कोई आपत्ति नहीं थी।

तत्पश्चात् वे सब वैज्ञानिक उत्सुकतापूर्वक परन्तु शांत और गम्भीर भाव से बैठे उन दोनों को देखने लगे।

"कुत्तों पर असर !" रोवर्टन फुसफुसाया।

वोल्मर चुप रहा और एकदम वह दोनों गंवार पछाड़ खाकर नीचे गिर पड़े और बुरी तरह चीखने-चिल्लाने लगे। उनके मुंह से सर्प के समान फुफकारियां तथा विचित्र चीखें निकल रही थीं। उनके शरीर नीचे गिर गए थे। उनका मुंह सूज गया था, तन्तु भी सूजकर खड़े हो गए थे। शायद सौ विषधरों का विष भी उनपर उतना भयंकर सिद्धन

होना जितना मनुष्य का रक्त।

"मनुष्य का रक्त क्या इतना भयंकर निकला?" वोल्मर ने घबराकर कहा।

"खून!" रोबर्टन ने वाक्य पूरा किया। वह इतना भयभीत हो गया था कि आगे और बोल ही न सका।

अब उन दोनों गवार बौनों का अंग-चालन शिथिल हो रहा था। कराहें भी लम्बी हो गई थी। उन्होंने दो-चार हाथ और फेंके और फिर शांत हो गए। वे मर गए थे।

"भयानक!" रोबर्टन चिल्ला उठा।

तभी बैठे हुए बौनों में से एक उठा और उसने अपने हाथ का काला डंडा, जिसके छोरों से हरी अग्नि की लपट निकल रही थी, इनकी तरफ ताना और इनकी ओर बढ़ा। रोबर्टन आगे था। वह उसका आना देखकर घबरा उठा। यह सम्भव था कि वह बौना किसी बुरे उद्देश्य से न उठा हो, केवल जिज्ञासा के कारण ही वह उठा हो, जैसाकि बहुत बाद मे पृथ्वी के उन मनुष्यों ने अनुमान लगाया, परन्तु उस समय एक के बाद एक हुई विचित्र घटनाओं के कारण वे ऐसे डर गए थे कि उस समय उस बौने का उठना उन्हें एक आक्रमण-सा लगा और रोबर्टन ने चिल्लाकर वोल्मर को सावधान किया और वह द्वार की ओर भागा। आनेवाला बौना एक बार तो ठिठककर खड़ा हो गया और जब रोबर्टन ने एक मेज उठाकर उसपर फेंकी तो वह अपना सतुलन खो बैठा और उसके हाथ का वह आगवाला डंडा उसके हाथ से छिटककर रोबर्टन के पैरों के पास आ गिरा जिसे उसने लपक कर उठा लिया। अब तक वोल्मर भी अपने साथी के पास आ चुका था। बाकी बौनों ने तब उन्हें रोकने के लिए घेरा बनाया और डंडेवाले बौने आगे बढ़ने लगे। इस समय सभी बौने उद्विग्न हो उठे थे जैसाकि उनके फुफकारने तथा पैनी आवाज़ों से पता चल रहा था। वे सब विद्युत्-गति से मानवों को पकड़कर गिरा लेने के लिए आगे बढ़े। रोबर्टन के पास अब स्वय को तथा वोल्मर को बचाने का केवल एक ही साधन था—वह था उस विचित्र आगवाले डंडे से उन बौनों पर प्रहार। पर भय यह था कि वह उस डंडे की विचित्रता के बारे में स्वय भी कुछ नही जानता था। उसने देखा कि दो बौने वैसे ही डंडे लेकर आगे आ रहे थे। भयानकता से चिल्लाते हुए भीमवेग से उसने सामनेवाले बौने पर उस डंडे से प्रहार किया। और उसके आश्चर्य का ठिकाना तब नहीं रहा जब उसने देखा कि वह डंडा उस बौने के शरीर में ऐसे घुस गया जैसे मक्खन की ढेरी में लाल लोहा घुस जाता है। बौना वहीं लुढ़क गया। वह मर गया था और रोबर्टन अपने ही ज़ोर के कारण सतुलन खो बैठने के कारण गिरते-गिरते बचा, परन्तु उसने उस हालत मे भी उस दूसरे बौने के फेंके हुए अग्नि-डंड से अपने-आपको बचा लिया। उस डंड को वोल्मर ने लपककर उठा लिया। अब दोनों मानवों ने क्रुद्ध होकर उन सभी बौनों का पीछा किया और अपने अपूर्व बल तथा लम्बे हाथों के कारण उन सबको उन्हींके अग्नि-डंडों से मार डाला। परन्तु उन लोगों ने मरते-मरते इतना शोर मचाया कि ढेर सारे बौने न जाने कहां से वहां एकत्र हो गए। वोल्मर को साथ लेकर रोबर्टन द्वार से बाहर भागा। कई गोल तथा लम्बे कक्षों मे होकर वह दोनों भागे चले जा रहे थे और उनके पीछे आ रहे थे कम

से कम एक दर्जन बौने। मानवों के पैर बड़े होने के कारण उनकी दौड़ तेज थी। जब वे उस विज्ञानशाला के सामने से दौड़े जहां उनकी परीक्षा हुई थी तो उन्होंने देखा कि उस छोटे-से कक्ष के बाहर कुछ वैज्ञानिक खाली हाथों खड़े थे। और जब इन लोगों ने उनके सामने अपने डडे घुमाए तो वे चीख मारकर भागे। आगे मोड़ था। डडो की आग जल रही थी। वोल्मर और रोबर्टन उस समय जान पर खेल रहे थे। अब सामने ही द्वार के पास उसी प्रकार का बिना सहारेवाला पुल था और उस महानगर की वह गगनचुम्बी अट्टालिकाए थीं जिनके नीचे मृत्यु का गह्वर था, वही खून को जमा देनेवाला दृश्य। परन्तु इन्हें उसी पुल पर होकर भागना था। कोई दूसरा मार्ग बचने का नहीं था। रोबर्टन आगे और वोल्मर पीछे अपने-अपने डडे सभाले उस पुल पर भागे। वे सीधे आगे देखते गए, पीछे बौने चले आ रहे थे।—"एक कदम गलत और बस···" रोबर्टन चिल्लाया। "पर्वाह मत करो···सावधान !" वोल्मर ने साहस फूका।

चारो ओर शोर हो रहा था। शायद और पुलो पर के अन्य बौने चिल्ला रहे थे परन्तु मानवो ने अपना लक्ष्य नही छोडा। मृत्यु के भय ने उन्हे अत्यन्त एकाग्रचित्त कर दिया था। तभी सामने से कुछ बौने आए। उनके हाथो मे भी उसी प्रकार के डडे थे। एक बार रोबर्टन घबराया कि अब कैसे पार पड़ेगी। परन्तु फिर साहस करके वह आगे झपटा और उसने सबसे आगेवाले पर वार किया। और उसे पलक मारते नीचे उस पैदा न दिखनेवाले गड्ढे मे जाने कहां गिरा दिया, ···दूसरा बौना घबराया। उसने नीचे अपने साथी को देखना चाहा और तभी रोबर्टन ने उसे भी वही भेज दिया। दो और थे। वे भय से उल्टे भागे, पर रोबर्टन और वोल्मर ने उनका पीछा किया और एक-एक कर दोनो को मार डाला। अब आगे का मैदान साफ था। बहुत ऊचाई पर अब यह एक इमारत मे पहुच चुके थे। वोल्मर ने मुड करके देखा—दूर बौने चले आ रहे थे।

धड़कते हुए दिलो से रोबर्टन और वोल्मर ने उस विशाल इमारत में प्रवेश किया। पहला कक्ष सूना था। ये अन्दर भागे। वहा सब सूना था। और देखा। सब सूना था। जान मे जान वापस आई। "तिनके का सहारा।" रोबर्टन फुसफुसाया, "देखो वोलमर, क्या सूना घर मिला है !"

"ज्यादा मत बोलो," वोल्मर ने मुड़कर कहा, "ऊपर चलो···ऊपर···जल्दी।" सामने ही सीढ़ी थी। यह लोग लपककर ऊपर चढ़ गए···सीढी बढ़ती गई और ये उन-पर चढते गए। चढ़ते-चढ़ते जब थक गए तो रुक गए और उन्होने आहट ली···सर्वत्र शाति थी···अब कोई पीछा नही कर रहा था। परन्तु अभी इनका स्थान दूर था। ये चलने लगे। घटो बीत गए पर सीढिया समाप्त नही हुई।

"कम्बख्तों के पास लिफ्टनुमा कोई साधन नही है···इस तरह तो इन्हें नीचे से ऊपर चढ़ते-चढ़ते युगो बीत जाते होंगे।" रोबर्टन ने हाफते हुए कहा।

"होगी जरूर कोई न कोई विधि···लिफ्ट की तरह नही होगी तो किसी और भांति की होगी···पर यह मकान वीरान खूब मिला और फिर इतना बड़ा कि इसमे छिपे हुए मनुष्य को कोई सारे जीवन भी ढूढे तो भी शायद नहीं मिले।" वोल्मर ने इतमीनान की सास ली।

कई घंटे चलने के उपरान्त ये लोग ऊपर प्रकाश में पहुंच गए। यहां दिन का उजाला फैल रहा था। ऊपर कई छतरियां बनी हुई थीं जिनमें जाने के लिए सीढ़ियां दिखाई पड़ रही थीं। परन्तु अब रोबर्टन और वोल्मर के पैर ऐसे भारी हो गए थे जैसे सीसे के बने हुए हों। ये दोनों थोड़ी देर के लिए पैर फैलाकर छत पर बैठ गए। वह स्थान जनशून्य था, ऊपर गहरा नीलाकाश था। थोड़ी देर बाद वोल्मर ने कहा, "चलो इस छतरी में ही छिप जाएं"'इस तरह खुले में बैठना भी खतरे से खाली नहीं है।"

सीढ़ियां चढ़कर ये ऊपर छतरी के अन्दर जब पहुंचे तो इन्होंने देखा कि वह स्थान नाना प्रकार के यन्त्रों तथा शीशियों से भरा पड़ा था तथा उसके ऊपर के गुंबज में हजारों छेद थे। इन्हें समझते देर नहीं लगी कि वह कोई वेधशाला थी। वहां त्रिभुजी दर्पण, श्वेत धातु के अर्धचन्द्राकार, गोल तथा गहराई लिए हुए नीले पारदर्शी पात्र रखे थे। भूमि चमकदार एलाबास्टर की तरह की किसी वस्तु की बनी हुई थी। बीचोंबीच एक गोल गड्ढा था जो करीब छः इंच नीचा था और श्वेत चमकदार धातु का बना हुआ था जिसके दो छोरों पर छत तक दो काले पतले खम्बे खड़े थे। जब यह उसके अन्दर घुसे उन्हें लगा कि स्थान सुनसान तथा निरापद था परन्तु जब निगाहें जमीं तो इन्होंने देखा कि वहां एक वृद्ध बौना एक बड़े से पात्र के बगल में बैठा कुछ कर रहा था। उसने भी शायद उन लोगों को आते नहीं देखा था परन्तु जब उसे इनके आने का पता लगा तो वह भागा और तब इन लोगों ने उसका पीछा किया'''परन्तु वह आगे था और इनके लिए वह स्थान भी नया था। रोबर्टन खम्बे से टकरा गया। बौना हाथ नहीं आया और नीचे भाग गया।

"गज़ब हो गया।" वोल्मर बोल उठा, "अब यह भीड़ इकट्ठी कर देगा'''इसका बचना बुरा हुआ।"

"फिर ?" रोबर्टन बोल उठा, "नीचे जाऊं ?"

उत्तर में नीचे से ऐसी आवाजें आने लगीं। मानव समझ गए कि पीछा फिर से चालू हो गया था। वोल्मर द्वार पर खड़ा हो गया और रोबर्टन ने उस गुम्बज में रखी चीज़ों को एक तरफ समेटकर फेंकने के लिए इकट्ठा कर लिया। अब जब बौने ऊपर आने लगे तो यह दोनों उन लोगों पर उन वस्तुओं को फेंकने लगे तथा उन्हें उन्हीं डण्डों से मारने लगे। भयानक युद्ध हो रहा था। सीढ़ी बौनों की लाशों से ढंक गई थी। कइयों के शरीर अग्निदंडों से जलाए जा चुके थे और कई उन वस्तुओं की चोटों से बिखरे पड़े थे।

अचानक एक भयानक शब्द हुआ और एक ओर से गुम्बज खुल गई और एकदम उसके बगल में एक बड़ा-सा कमरा और खुल गया जिसमें से करीब एक दर्जन बौने नीचे इनकी गुम्बज में कूदे। इनके सभी के हाथों में विचित्र चमकदार गोले थे।

रोबर्टन चिल्लाया, "वेधशाला खुल गई है कप्तान। शून्ययान आ गया है, सावधान !"

परन्तु इससे अधिक कहने का अवकाश उसे नहीं मिला। एक बौने का फेंका हुआ एक गोला भयानक शोर करता हुआ भूमि पर फटा और उसका धुआं चारों ओर फैल ।। मानवों को दिखना बन्द हो गया। जी घुटने लगा। उस धुंधलके में रोबर्टन ने देखा

कि वोल्मर नीचे गिर गया था और उसको बौनों ने घेर लिया था। वह भयानकता से चिल्लाया, "वोल्मर ! वोल्मर ! मेरे कप्तान !!"

कोई उत्तर नहीं आया।

'आह ! तो कप्तान मर गया'''मार डाला इन कम्बख्तों ने उसे '''' वह अधिक नहीं सोच सका। उसने झूमकर बीच में गड़े हुए डंडे को पकड़कर अपने-आपको गिरने से संभाला। धुआं अपना असर कर चुका था। उसे चक्कर आ रहा था और तभी न जाने क्या हुआ कि वह नीचे धसकने लगा। उसकी समझ में नहीं आया, परन्तु वह तीव्र गति से नीचे जा रहा था। उसके पैरों के नीचे से भूमि नीचे दरक रही थी'''

उसने सोचा—तो क्या यह उस खम्बे को पकड़ने का नतीजा है। तब तो फिर इस बगल के काले खम्बे को पकड़कर देखूं'''क्यों नहीं ? जब एक नीचे ले जाता है तो दूसरा अवश्य ऊपर ले जाएगा। परन्तु क्यों जाऊं ? और वोल्मर की याद उसे हो आई। '''परन्तु वह तो मर चुका ! और उसने अपने-आपको भाग्य पर छोड़ दिया। वह नीचे धसकता गया, धसकता गया।'''

जब वह नीचे उतरा उस समय तक वह होश में आ चुका था। नीचे जहां वह सफेद पत्थर, जिसपर वह खड़ा था, रुका, वहां भयानक शोर उठ रहा था। ऐसा लगता था, जैसे महासमुद्र मथा जा रहा हो। परन्तु थोड़ी ही देर में उसे पता चल गया कि वह भीमकाय-मशीनें थीं, नाना प्रकार के यन्त्र थे जो अथक चल रहे थे। शायद यह उस महानगर के नीचे पृथ्वी के गर्भ के अन्दर स्थित थे। जहां सम्पूर्ण महानगर के लिए विद्युत्-शक्ति पैदा होती थी और यही नहीं बल्कि यहीं वहां के विज्ञान का ऊष्मी-केन्द्र था। रोवर्टन ने देखा—वहां रोशनी बहुत कम थी। कहीं-कहीं प्रकाश था, अन्य स्थानों में अन्धकार था। वह मशीनों के पीछे लुकता-छिपता आगे बढ़ा। उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया था। जब थोड़ी ही देर पहले उसने वोल्मर से कहा था, 'इन कम्बख्तों के यहां लिफ्टनुमा कोई यन्त्र नहीं है'''' तब वह मन ही मन विज्ञान की उस उन्नति की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सका। थोड़ी दूर जाने के बाद जो कुछ उसने देखा उससे उसकी रीढ़ की हड्डी कांप गई। उसने देखा उन भीम-यन्त्रों के चालक बौने नहीं थे बल्कि भीमकाय राक्षस थे। यहां-वहां दो-चार बौने दिखाई पड़ रहे थे जो कुछ आज्ञा-सी दे रहे थे, काम केवल वह भीमकाय दानव ही कर रहे थे। रोवर्टन को समझते देर नहीं लगी कि अपने विज्ञान बल से इन बौनों ने उन दानवों को दासता में बांध लिया होगा और अब उन्हीं लोगों से मेहनत का काम कराते हैं। वह बढ़ने लगा, परन्तु वह अधिक छिप नहीं सका। एक बौने ने उसे देख लिया। उसने दानव की ओर इंगित किया। दानव भागा। देखकर रोवर्टन प्राणों को लेकर भागा। आगे एक पहाड़-सा यन्त्र था। रोवर्टन ने उसके दो चक्कर लगाए। देखा कि दानव मूर्ख था। सोचा, उस विकट परिस्थिति में भी, मूर्ख है तभी तो दासता स्वीकार कर रखी है। दानव यन्त्र के चक्कर लगाता रहा। रोवर्टन आगे चकमा देकर निकल गया। आगे एक द्वार था। बेधड़क वह उसके पार चला गया। आगे सहस्रों मोटे-पतले नल लगे थे जिनके एक ओर कुप्पी-सी लगी हुई थी। वह शायद उस महानगर

का जल-यन्त्र केन्द्र था। वह बढ़ता गया। यहां हलका प्रकाश फैल रहा था। पीछे भयानक कोलाहल हो रहा था। वह भागा। सामने दूर कुछ चमक रहा था। वह उसी तरफ चला। जब पचास कदम रह गए तो देखा, यह दूसरा इंजन-घर था। एक बहुत ही बड़ी भट्टी के सामने बैठा हुआ एक दानव कुछ कर रहा था। वह उस तरफ नहीं गया। बगल की तरफ चला। आगे छत से सहस्रों रस्सियां लटक रही थीं। वह उनके बीच बढ़ता गया। जब बीच में पहुंचा तो रस्सियां उससे लिपटने लग गईं। उसने उन्हें झटका दिया। वे भूल गईं परन्तु फिर लिपट गईं। अब की पकड़ पहले से अधिक थी। वह उन्हें हटाता रहा। वे उसके लिपटती रहीं।...न जाने वह किससे लड़ रहा था। अर्ध-प्रज्ञावस्था में वह लड़ रहा था। अब उसके हाथ ढीले-ढीले चलने लगे। रस्सियों ने उसे साध लिया। नीचे गिरने नहीं दिया। वह बेहोश हो चुका था।

जब रोबर्टन को होश आया, उसने देखा कि उसके हाथ-पैर बंधे हुए थे और उसका अंग-प्रत्यंग टूट रहा था। वह जैसे गहरी नींद से उठा था। उसने देखा कि वह एक चबूतरे पर बांध दिया गया था। कितना बड़ा था वह चबूतरा, यह तो वह नहीं जान सका पर इतना जरूर वह जान गया कि वह भूमि से एक फुट ऊंचा अवश्य था। उसने देखा कि वह चमकदार था। शायद किसी धातु का बना था। सामने सिर झुकाए बहुत-से रंग-बिरंगे शरीरोंवाले बौने चुपचाप खड़े थे। रोबर्टन को याद आया किस तरह वह रस्सों द्वारा पकड़ा गया था और किस प्रकार उसने तथा उसके साथी ने बौनों का वध किया था। वोन्मर की याद आते ही उसका दिल बैठने लगा। क्या करेगा अब वह अकेला जीकर और वह भी उस विचित्र लोक में जो शून्य में जाने कहां स्थित था। उसकी पृथ्वी...प्यारी पृथ्वी से जाने कितनी दूर...फिर उसे याद आए वे सब साथी जो पीछे उन दानवों के लोक में छूट गए...'एल्साईवन्' उसके मुंह से निकल पड़ा और उसने गहरी सांस ली। फिर वह स्वतः बड़बड़ाया—'सब कुछ समाप्त हो गया...सब खत्म हो गया।' ...और उसकी गर्दन एक तरफ को झुक गई परन्तु ऐसा करने में उसकी दृष्टि बगल की ओर चली गई। देखा कि ठीक जैसे वह बंधा हुआ था वैसे ही बंधा हुआ बगल में वोन्मर था...रोबर्टन ने दो-चार पलक झपकाईं, फिर कहा, "कौन कप्तान? तो क्या तुम जीवित हो? तुम्हें तो उन बौनों ने मार डाला था न?"

परन्तु वोन्मर नहीं बोला।

"ठीक है।" रोबर्टन बोला, "मत बोलो...है तो मेरे ही पास मेरा मित्र...मेरा प्यारा मित्र।" और उसने आंखें बन्द कर लीं। उसने सोचा, 'तो अब क्या होना बाकी है...क्यों नहीं यह बौने अब मुझे भी मारकर किस्सा खत्म करते? अब भला बाकी भी क्या है?'

कि तभी किसी ओर से एक बटन दबाया गया। स्पष्ट क्लिक का शब्द हुआ। रोबर्टन ने आंखें खोलीं—देखा कि बौने चारों ओर से [illegible] देख रहे थे।

तभी कहीं घुर-घोर-सी घूमी। सीढ़ी बनी और जिस धातु के चबूतरे पर वह बन्धनों में बंधा पड़ा था उसके नीचे एक घर्र्र्र्...का भी शोर हुआ। रोबर्टन की समझ में नहीं आया कि क्या हुआ, परन्तु पलक मारते अब वह उन बौनों के

इमारतों से ऊपर उठने लगा तो वह समझ गया कि उस चबूतरे-समेत उसे तथा उसके प्रिय मित्र को उन लोगों ने ऊपर उड़ा दिया था। विद्युत्-गति से वह चबूतरा पलक झपकते तमाम इमारतों से ऊपर उठ गया। ऊपर भयानक आंधी चल रही थी। रोबर्टन ने देखा—वोल्मर हिल रहा था। रोबर्टन हंसा, फिर कराहा···फिर चुप हो गया। थोड़ी देर बाद वोल्मर क्षीण स्वर मे बोला, "हम लोग कहां हैं ?"

"क्या तुम सचमुच ही जीवित हो ?" रोबर्टन ने फीकी हंसी हंसते हुए पूछा।

"जीवित तो हम दोनों ही दिख रहे हैं।" वोल्मर ने उत्तर दिया, "परन्तु यह मेरे प्रश्न का उत्तर तो नही है न ?"

"तो सुनो कप्तान।" रोबर्टन अब इतमीनान के साथ बोला, "जहां तक मैं समझता हूं इस समय हम किसी प्रकार के यान पर बंधे हुए हैं जिस पर यहां के लोक का आकर्षण असर नही करता है और हमे उन लोगो ने आकाश मे यानी शून्य मे उड़ा दिया है···उन लोगों ने शायद यह निश्चय कर लिया था कि हमे उनके लोक में और अधिक नही रहने दिया जा सकता। परन्तु···तुम जब उस मीनार मे गिर गए थे, तत्पश्चात् तुम पर क्या गुज़री ? यह तो बताओ।"

"मेरा विचार है कि हम मानवों ने उन लोगो के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। हमारे इतने बुरे व्यवहार के बावजूद उन्होने हमें मारा नही बल्कि मजबूर होकर हमें अपने यहां से निकाल दिया। उन्हें समझने में निश्चय ही हम लोगों से गलती हो गई। मैंने जब उन लोगों का बहुत ध्वस कर दिया··· मैं वहां की कह रहा हूं जब हम उस गुम्बज मे उन लोगो से लड़ रहे थे—हां तो उस समय एक गोला मेरे घुटने मे आकर न जाने कहां से लगा। उसके स्पर्श से झुरझुर वही असर हुआ जो उस लोक से लाने समय इन लोगों के बेहोश करनेवाले डंडो के स्पर्श मे हुआ था, अर्थात् बेहोशी छाने लगी। फिर जब मेरी आंखें खुलीं तो मैंने देखा कि मैं एक कोच पर पड़ा था तथा मेरे हाथ-पैर बंधे हुए थे। थोड़ी देर बाद एक बौना आया और मुझे तो पता भी नहीं चला कि कब मेरे शरीर में भूख-प्यास मिटानेवाली सूई लगा गया। फिर उन्होंने मेरे गैसमास्क में भी नई हवा भर दी। पूरी रात गुज़र जाने के बाद फिर आज वह मुझे यहां लाए। मैंने फिर जब हाथ-पैर चलाए तो मुझे फिर बेहोश कर दिया गया।"

"मानव बुरा होता है।" रोबर्टन ने खिन्न हृदय से कहा, "परन्तु हमने भी तो शक हो जाने के कारण वैसा व्यवहार किया था···खैर···"

वह धातु का डिस्क उन्हें लेकर उसी तीव्र गति से ऊपर उठ रहा था। अब आकाश अन्धकारमय हो गया था। दूर बहुत दूर नक्षत्र बहुत ही तेज़ी से चमक रहे थे परन्तु उनका प्रकाश फैलाने के लिए वहां वायुमंडल नही था। उन्हें लगा, अब वह शीघ्र शून्य मे प्रवेश कर जाएगे।

वोल्मर ने कहा, "मानव के कुकृत्यों का दंड उन्हें अच्छा मिल रहा है, रोबर्टन··· अब देखो ठंड बढ रही है···देखो भयानक सर्दी हो गई है···और शीघ्र ही हम लोग मर जाएंगे···और हमारी यह डिस्क एक छोटे धूमकेतु की भांति न जाने किस लोक का चक्कर सदा-सदा के लिए लगाया करेगी···विदा ! मेरे मित्र रोबर्टन विदा ! !"

"धन्य भाग्य !" रोबर्टन ने वोल्मर को देखा और जैस्पर को चिपटा लिया।

"ऐसे उज्ज्वल भाग्य को लेकर तो शायद हम दो-चार दूसरे नये लोक इसी यात्रा मे और देख सकें।" वोल्मर हंसा।

सभी प्रसन्न हो उठे थे।

आज पृथ्वी के बाहर के लोकों को कल्पना विज्ञान के सहारे से साहित्य में बहुत प्रभाव डाल सकी है। कथा-साहित्य को तो जैसे एक नया क्षेत्र मिल गया है। इसमें हमारे समाज पर व्यंग्य भी होता है और कल्पना भी नये क्षितिज का स्पर्श करती है। यहां अद्भुत के दर्शन होते हैं।

ऐतिहासिक उपन्यास

ऐतिहासिक उपन्यास

वीर सिपाही

[आइवनहो[१]]

स्कॉट, सर वाल्टर : अंग्रेजी उपन्यासकार वाल्टर स्कॉट का जन्म एडिनबरा में १५ अगस्त, १७७१ को हुआ था। आपको कानून की शिक्षा दी गई थी। आपने सफलतापूर्वक प्रैक्टिस का और अवकाश में साहित्य का सृजन किया करते थे। १७९६ में आपकी पहली पुस्तक छपी और १८१४ तक आप खूब लिखते रहे। आगे चलकर १८१९ में आपका 'आइवनहो' प्रकाशित हुआ। १८२० में आपको बैरोनेट मिला। छः वर्ष बाद आप स्वयं प्रकाशक बने और फिर दिवालिया हो गए। अपने कर्ज चुकाने के लिए आप फिर लिखने लगे और दो वर्ष में आपने चालीस हजार पाउंड कमाकर कर्ज चुका दिए। परन्तु इतने परिश्रम ने आपको तोड़ दिया और आपको लकवा मार गया। २१ सितम्बर, १८१२ को आपका एबट्सफोर्ड में देहान्त हो गया। आप कवि भी थे। किन्तु आपके ऐतिहासिक उपन्यास अधिक प्रसिद्ध हैं।
'आइवनहो' आपकी एक महान रचना है।

रूजरवुड का थेन सेक्सन सेड्रिक विशाल मेज के सामने बैठा हुआ था। उसकी खूबसूरत कुर्सी पर हाथीदांत जड़ा हुआ था। कई बातें उसको बेचैन कर रही थीं। नारमन दुस्साहसिक लोगों ने इंग्लैंड को जीत लिया था। यह विचार उसे परेशान कर रहा था लेकिन वह महान हेरेन्वर्ड का वंशज था और इन गर्वीले नारमनों को सेक्सन-जाति की शांति नष्ट करने के अपराध का भयानक दण्ड देना चाहता था।

सुन्दरी रोवेना सम्राट एलफ्रेड की वंशज थी। आजकल वह थेन की देखभाल में थी। इसलिए थेन यह विचार कर रहा था कि *कुलीन ऐथलस्टेन से उसका विवाह कर* दिया जाए और दोनों अंग्रेज राजघराने इस प्रकार मिल जाएं। तब सारे दुखी देशवासी उसके चारों ओर इकट्ठे हो जाएंगे। उसने बड़बड़ाकर कहा—ये नारमन मूर्ख हैं! ये समझते हैं कि मैं बूढ़ा हो गया हूं। लेकिन भले ही मैं अकेला और सन्तानहीन हूं, फिर भी मेरे शरीर में अब भी हेरेन्वर्ड का पवित्र लहू बहता है।

और फिर उसने शोक-भरे विचारों से अभिभूत होकर धीमी आवाज में कहा, "मेरा पुत्र विलफ्रिड यदि अकारण ही रोवेना के लिए इतना पागल न हो जाता तो मैं उसे किसलिए निर्वासित करता!" आज सेड्रिक अपने बुढ़ापे में अकेला रह गया है, मानो वह एक विशाल वृक्ष है जो नारमनों के तूफान के सामने आज बिना सहारे के रह गया है।

---

१. Ivanhoe (Walter Scott)

उसकी विचारधारा टूट गई। बाहर बिगुल बज रहा था। आवाज़ आई, "नीचो, फाटक की ओर बढ़ो!" प्रहरी भीतर समाचार लाया कि प्रायर एमर और सर ब्रायन दिबोय गिल्बर्ट नाइट्स टेम्पलर के सेनापति रात के लिए आश्रय चाहते हैं।

सेड्रिक बड़बड़ाया, "दोनों नारमन हैं। लेकिन हमने सदैव अतिथियों का स्वागत किया है। रजरवुड के येन के यहां आकर बिना स्वागत के कोई वापस नहीं जाएगा।..."

उन दोनों को आश्रय दे दिया गया। भोज प्रारम्भ होनेवाला था। मेजर डोमो ने अपने हाथ का डंडा घुमाते हुए कहा, "जगह छोड़ दो, कुमारी रोवेना के लिए स्थान छोड़ दो।"

सेड्रिक उठा और अपनी पालिता की ओर बढ़ा। अपनी दायीं ओर की ऊंची कुर्सी पर उसने उसको ससम्मान बिठाया। उस सेक्सन-सुन्दरी को देखकर गिल्बर्ट का अन्तर-तम विचलित हो उठा। पूर्वदेश की मलिकाओं को उसने देखा था। पर यह उन जैसी नहीं थी। रोवेना लम्बी और बहुत सुन्दर थी। लेकिन उसके मस्तक पर ऐसा कुलीन गौरव दिखाई देता था जो सौन्दर्य की चंचलता को उससे बहुत दूर किए देता था। जब उसने गिल्बर्ट को अपनी ओर वासनामयी दृष्टि से देखते देखा तो मानो उसकी आंखों में अंगारे दहकने लगे। और यह प्रकट करने के लिए कि वह उसकी ऐसी हरकत से घृणा करती है, उसने अपने हलके नकाब को बड़े गौरव के साथ गिरा लिया। ताकि वह उसके लावण्य को फिर न देख सके।

उसी समय चषकवाहक ओस्वाल्ड अपने मालिक के कान में फुसफुसाया, "एक और व्यक्ति आश्रय लेने के लिए बाहर खड़ा है और वह अपने को यॉर्क का इसाक नामक यहूदी बताता है।"

यहूदी का कोई विशेष सम्मान नहीं किया गया। वह एक लम्बा, पतला-दुबला बूढ़ा था जो डरता, हिचकिचाता, अत्यन्त विनम्र-सा मेज़ के निचले हिस्से की तरफ आकर बैठने को हुआ। लेकिन वह बैठ नहीं पाया क्योंकि किसीने उसके लिए स्थान नहीं रिक्त किया। वहीं चिमनी के कोने में एक तीर्थयात्री बैठा हुआ था। उसने उस कांपते हुए बूढ़े यहूदी को अपना स्थान दे दिया।

उन दिनों जेरूसलम की पवित्र भूमि के लिए मुसलमानों और ईसाइयों में क्रूसेड (धर्मयुद्ध) चल रहा था। खाना खाते वक्त मेज़ पर क्रूसेड के बारे में बात चल पड़ी। गिल्बर्ट ने कहा, "सबसे अधिक वीर टेम्पलर लोग थे। अंग्रेज़ वीर-नायकों का दर्जा पराक्रम में उनसे नीचा था।"

हठात् तीर्थयात्री ने उसे बीच में ही टोक दिया और कहा, "अंग्रेज़ किसीसे भी पीछे नहीं हैं। पराक्रम में वे सर्वश्रेष्ठ हैं।" और तीर्थयात्री कहने लगा कि एक बार उसने सम्राट रिचार्ड और उनके पीछे अंग्रेज़ वीर-नायकों को रंगशाला में चुनौती दी थी कि जो कोई भी वीरनायक वहां उपस्थित हो, उससे आकर लड़ ले। और उस समय प्रत्येक वीरनायक ने अपने तीन-तीन शत्रुओं को पराजित कर दिया था।

जब सेड्रिक ने उन वीरनायकों के नाम सुनाए जिन्होंने इंग्लैंड के गौरव को ऊंचा उठाया था तो गिल्बर्ट उपहास के स्वर से हंस उठा। तीर्थयात्री ने उसी समय फिर बाधा

उपस्थित की ओर कहा, "उन नामों को जाने दीजिए और सुनिए, श्रीमान गिल्वर्ट सत्य को स्वयं भी जानते हैं।"

गिल्वर्ट को तीर्थयात्री की बात चुभ गई और वह स्वयं ही कह उठा, "मुझसे छिपाने की आवश्यकता नहीं है। जिस वीरनायक के सामने मेरा घोड़ा गलती से गिर गया था वह आइवनहो का वीरनायक था। उसका नाम छिपाने की आवश्यकता ही क्या है! यदि वह इंग्लैंड में होता और अब की बार के क्रीड़ांगण में मेरे साथ उतरता तो मैं उसे शस्त्रों का पूरा लाभ देकर भी पराजित कर देता।"

उसी समय सुन्दरी रोवेना का स्वर सुनाई दिया, "मैं निश्चय से कहती हूं कि आइवनहो चुनौती को स्वीकार करेगा और अपने प्रतिद्वन्द्वी को पराजित कर देगा।"

अपने निर्वासित पुत्र का वर्णन सुनकर वृद्ध सेक्सन सेड्रिक के भाव उमड़ आए थे, परन्तु जब उसने रोवेना के मुख से अपने पुत्र की प्रशंसा सुनी तो वह कुछ घबरा भी गया और बेचैन-सा हो उठा। लेकिन उसने कहा, "अगर इसके बाद भी किसी प्रतिज्ञा की आवश्यकता है तो आइवनहो के सम्मान के लिए मैं अपना सम्मान भी दांव पर लगाने के लिए तैयार हूं।"

ऐसबी में वीरों की क्रीड़ा होनेवाली थी। अगले दिन राजकुमार जॉन सम्राट रिचार्ड के स्थान पर आए और उन्होंने टूर्नामेंट का उद्घाटन किया। सम्राट रिचार्ड उस समय भी आस्ट्रिया में बन्दी थे। वीरता के इतिहास में उनका नाम अमर समझा जाता था। यह घटना सेड्रिक के लिए भी बहुत महत्त्वपूर्ण थी। आज की क्रीड़ा में उसने देखा कि गिल्वर्ट नारमन वीरों का नेतृत्व कर रहा था।

नारमन वीर चुनौती देते थे और एक के बाद एक सेक्सन वीरों को पराजित करते चले जा रहे थे। एक तरुण वीरनायक काले घोड़े पर बैठकर आगे बढ़ा। उसने अपना नाम 'अधिकारवंचित' बताया। वह अचानक ही मैदान में आ गया। उसने बड़े गौरव के साथ अपना भाला झुकाकर उपस्थित महिलाओं और राजकुमार का अभिवादन किया। लोगों को यह विश्वास नहीं था कि इस आगन्तुक को अंत में कोई सफलता प्राप्त होगी, किन्तु उसके यौवन का सौन्दर्य देखकर उसके उन्नत भवों और घोड़ा बढ़ाने की पराक्रमी गति देखकर लोगों के अन्दर एक स्फूर्ति-सी भर गई। देखकर ही लगता था कि यह युवक साहस का प्रतिरूप है। युद्ध का कौशल मानो उसकी भुजा में प्रस्फुटित हो रहा था। उसके भीम भुजदंड और प्रशस्त वक्षस्थल देखकर चचल गति से चलनेवाले सिंह का स्मरण हो आता था। उसका गाम्भीर्य देखकर भीड़ में तुमुल नाद उठने लगा। आश्चर्य की एक लहर-सी दौड़ गई। लोगों ने देखा कि वह अश्वारोही चारों ओर भव्य दृष्टि से देख रहा था। गिल्वर्ट ने, समस्त महिलाओं और राजकुमार जॉन ने भी उसे देखा। उसने गिल्वर्ट की ढाल पर अपने पैने भाले से आघात किया। चुनौती देनेवालों के नेता की ढाल पर भाले के तीक्ष्ण फलक ने प्रतिध्वनि की, जो क्रीड़ांगण में लोगों ने दूर-दूर तक सुनी।

गर्वीला टेम्पलर गिलबर्ट आश्चर्य से भर गया। उसने कहा, "मृत्यु के सामने निर्भय होकर आ रहे हो। क्या प्रातःकाल तुम ईश्वर से प्रार्थना कर चुके हो?"

अधिकारवंचित ने उत्तर दिया, "युद्ध में [illegible] करने के लिए, मैं सुन्दरी [illegible] अधिक मानता हूँ।"

"नहीं। [illegible] ने कहा, "तो आज रात को युद्ध भूमि में ही तय करेंगे।"

दोनों की आँखें मिलीं, [illegible] अपने [illegible]। दोनों ने अपने घोड़े बढ़ाए। दोनों के [illegible] हो रहे थे। मैदान के बीच में लोगों ने देखा, दोनों ओर से दोनों घोड़े बढ़ते गये। उनके खुरों की आवाज़ से लगा कि मानों जैसे धरती धँस गई और पृथ्वी विक्षुब्ध हो उठी। लोगों की साँसें अटक गईं। उनके मन डरे हुए थे। जब वे दोनों मैदान के बीच में पहुँचे, एक भयानक नाद उठा जैसे गगन में वज्र टकरा गया हो, जैसे बिजली से बिजली टूट गई हो। दोनों के भाले टकराए और उन्होंने नये हथियार अपने हाथों में ले लिए। एक बार घोड़े फिर प्रचण्ड वेग से एक-दूसरे की ओर दौड़े और फिर वेग से दोनों की टक्कर हो गई। 'अधिकारवंचित' वीरनायक घोड़े पर से झुक गया लेकिन उसके [illegible] घोड़े की पीठ पर [illegible]। उसका [illegible] घायल हुआ। वह [illegible] के वेग को [illegible] देने में असमर्थ हो गया था। [illegible] घोड़े पर से नीचे लुढ़क गया। आसन से [illegible] कर दिया। उसने तुरन्त अपना खड्ग खींच लिया और अधिकारवंचित पर आक्रमण किया। यह देखकर वीरनायक अपने घोड़े पर से कूद पड़ा और उसने अपनी चमकती तलवार खींच ली। किन्तु इसी समय युद्ध रोक दिया गया क्योंकि [illegible] था। [illegible] देखता रह गया। वह अपने शिविर में चला गया और [illegible] दिन उसने इस मैदान में [illegible] किया।

राजमंच से राजकुमार जॉन ने पुकारकर कहा, "हे अधिकारवंचित वीरनायक, अब यह तुम्हारा कर्त्तव्य है कि कल के उत्सव के लिए तुम किसी सुन्दरी का नाम बताओ। जो सम्मान और प्रेम की साम्राज्ञी बनकर इस रंगशाला में सम्मानित कर सके। उठाओ अपना भाला।" वीरनायक ने आज्ञापालन किया। राजकुमार जॉन ने उसके भाले की नोक पर हरे साटन का एक मुकुट टांग दिया।

विजेता घोड़े पर बैठकर सुन्दरी महिलाओं की ओर बढ़ चला। कुलीन और रूपवती महिलाएं प्रतिद्वन्द्विता-सी लिए बैठी थीं। वह पंक्तियों में जैसे किसीको खोजता चला जा रहा था। अन्त में उसने सुन्दरी सम्मानिता रोवेना के चरणों पर उसको समर्पित कर दिया।

पौ फटी। उजाला हुआ। तुरहियां बजने लगीं। कभी-कभी नगाड़ों का घोष गूंजता। भीड़ के तुमुल निनाद से एक बार फिर मैदान भर गया। लोग आज वीरों के युद्ध-कौशल को देखने के लिए पुनः एकत्रित हो गए थे। सौ वीरनायक आज अपना पराक्रम दिखाने के लिए उपस्थित थे। वे पचास-पचास के दो दलों में बंट गए। एक ओर का नेतृत्व गिल्बर्ट कर रहा था और दूसरी ओर अधिकारवंचित नेता बना खड़ा था। दोनों ओर के वीर अपने भाले और ढाल उठाए घोड़ों को दोनों ओर से भगाते हुए चलते, योद्धाओं के शस्त्र टकराते और उत्तेजित घोड़ों की भीम गति से और शस्त्रों की प्रचण्ड वेगमयी शक्ति से दो में से एक गिर जाता। भीड़ कोलाहल करती और महिलाएं उत्तेजित

हो उठती। धीरे-धीरे दोनों के वीरनायक छंटने लगे। आज बहुत ही कठिन संघर्ष हुआ। अधिकारवंचित वीरनायक ने देखा कि उसके सामने तीन बहुत सशक्त योद्धा थे। एक था एथलस्टेन, जो यद्यपि सेक्सन था पर बूफ और गिल्बर्ट जैसे नारमन लोगों से मिल गया था। ऐसे संकट के क्षण में एक काला वीर, जोकि उसके अपने ही पद का था, अधिकार-वंचित की सहायता करने के लिए आ गया। उसने घोड़ा दौड़ाकर इतने वेग से प्रहार किया कि बूफ घोड़े पर से नीचे लुढ़क गया। और जब एथलस्टेन की बारी आई तो उसने बाढ़ की तरह हमला करके उसको नीचे फेंक दिया। एथलस्टेन अपना वेग नहीं संभाल सका और मूच्छित होकर गिर गया। इसके बाद गिल्बर्ट और अधिकारवंचित वीरनायक में तुमुल संघर्ष हुआ। एक बार फिर अधिकारवंचित वीरनायक ने गर्वीले नारमन को नीचे गिरा दिया और उसी समय राजकुमार जॉन ने चुनौती का अन्त कर दिया। उन्होंने खेल रोक दिया। नारमन एक बार फिर बच गया। उसकी छाती पर रखा हुआ अधिकार-वंचित का खड्ग उसके लहू को नहीं पी सका।

अधिकारवंचित फिर उस दिन का विजेता कहलाया और उसे सुन्दरी रोवेना के पास उस दिन का पुरस्कार प्राप्त करने के लिए ले जाया गया। यद्यपि वह घायल हो गया था और लोग उससे कह रहे थे कि वह अपने शिरस्त्राण को उतार दे फिर भी उसने उनकी एक बात नहीं मानी। किन्तु उन लोगों ने इसको स्वीकार नहीं किया। शिरस्त्राण उतार दिया गया, भीतर से धूप में तपा हुआ एक अत्यन्त सुन्दर पच्चीस वर्षीय युवक दिखाई दिया, जिसके सिर पर अत्यन्त सुन्दर केशराशि थी। उसका मुख अत्यन्त पीला पड़ रहा था और लहू की धाराएं बह रही थीं। शिरस्त्राण के उतरते ही रोवेना के मुख से एक चीत्कार-सा निकल गया और सेड्रिक अपने पुत्र आइवनहो को रोवेना से दूर करने के लिए आगे बढ़ आया। उसीने तो इन दोनों के विवाह को रोक दिया था।

टूर्नामेंट में राजकुमार जॉन की दृष्टि एक सुन्दरी यहूदिन पर पड़ी जो भीड़ में खड़ी खेल देख रही थी। राजकुमार ने उस युवती को अपने यहां निमन्त्रित किया। युवती के साथ उसका पिता यॉर्क का इसाक भी आया। उसको उन्होंने स्थलस्टेन के आसन के पास स्थान दिया। स्थलस्टेन इस बात से मन ही मन बहुत विक्षुब्ध हुआ। खेल के बाद इसाक और उसकी पुत्री रेबेका ने ही आइवनहो के घावों को धोया और उसकी सुश्रूषा की, वे लोग उसको ऐसबी में अपने निवासस्थान पर ले गए। आइवनहो ने भी जब सुन्दरी रेबेका को देखा तो उसके मुह से भी प्रशंसा के शब्द निकल पड़े। राजकुमार जॉन ने जब उस अनिन्द्य सुन्दरी को देखा तो वह हठात् ही कह उठा, "पूर्ण सौन्दर्य की प्रतिमा यही है, सम्भवत ऐसी ही किसी स्त्री को देखकर संसार के समस्त सम्राटों में बुद्धिमान सुलेमान भी विचलित हो गया था।"

किन्तु सेवा-सुश्रूषा करते समय जब रेबेका ने आइवनहो से कहा कि वह यहूदिन है तो उसने न जाने क्यों यह अनुभव किया कि उसपर उपकार करनेवाली उस स्त्री की दृष्टि में बसनेवाली कोमलता जैसे उड़ी हो गई है—मानो वह हीनत्व की भावना से ग्रस्त हो गई है। किन्तु आइवनहो उसे उन्हीं प्रशंसा-भरे नेत्रों से देखता रहा। उनमें एक प्रकार की दया-भावना झलक आई।

आइवनहो को पालकी में लिए हुए तीनों ऐसबी में से निकल पड़े, लेकिन सेक्सन सैनिक भी उनको छोड़कर चला गया। डाकुओं के आतंक के कारण इसाक ने रजरवुड की ओर लौटते हुए सेड्रिक की दिल से प्रार्थना की कि वे लोग अपने साथ इन्हें भी चलने आज्ञा दे दें। किन्तु एथलस्टेन ने इस बात को तुरन्त अस्वीकार कर दिया। राजकुमार जॉन ने टूर्नामेंट में इस यहूदी को उसके समीप बिठाकर जो उसका अपमान किया था वह अभी तक उसके हृदय में चुभ रहा था।

सेक्सन महिला रोवेना भी उसी दल में थी। नौकरों के बीच में से रेबेका सीधी रोवेना के समीप चली गई। वह उसके सम्मुख अपने घुटनों के बल बैठ गई और पूर्वीय लोगों की परम्परानुसार सम्मान प्रदर्शित करती हुई विनम्रता से झुक गई। उसने रोवेना के वस्त्र के छोर को पकड़कर चूम लिया और कहा, "देवी, मैं अपने लिए करुणा की भीख नहीं मांगती, न मैं वृद्ध पिता के लिए आपसे कोई याचना करती हूं किन्तु उसके नाम पर आपसे भीख मांगती हूं जो अनेकों का प्रिय है और जिसे आप भी अपना प्रिय समझती हैं। यह व्यक्ति रुग्ण है। घावों ने इसे असमर्थ कर दिया है। यदि आप आज्ञा दें तो आपकी संरक्षा में यह घायल भी आपके दल के साथ चला चले। यदि दुर्भाग्य इसपर टूट पड़ा और इसके जीवन का अन्तिम समय ही आ गया तो आज जो मैंने आपसे याचना की है, कहीं ऐसा न हो कि वह भीख न देकर कल आपको शोक होने लगे।"

रेबेका ने जिस मर्यादा और पवित्रता से अपने शब्दों का उच्चारण किया उससे रोवेना प्रभावित हुई किन्तु उसने वृद्ध सेड्रिक के सामने यह नहीं बताया कि वह घायल व्यक्ति कौन था, क्योंकि इस वृद्ध ने ही तो अपने पुत्र को अधिकारवंचित कर दिया था। देवी रोवेना रेबेका की इस दृढ़ता को देखकर और भी अधिक प्रभावित हुई। वह नहीं जान सकी कि आज उससे किसकी सुरक्षा की प्रार्थना की जा रही है। रेबेका की प्रार्थना स्वीकार कर ली गई। जिस आदमी से रेबेका प्यार करती थी वह आदमी, अब उसकी जानकारी के बिना ही, उसीकी सुरक्षा में उसीके दल के साथ चलने लगा।

बैरन से लौटते हुए कुछ नारमन कुलीनों ने डिब्रेसी के नेतृत्व में मार्ग पर स्वेच्छाचार प्रारम्भ कर दिया था। सम्राट रिचार्ड के विरुद्ध राजकुमार जॉन से मिलकर वह षड्यंत्र रच रहा था। एक संकरे स्थान पर आकर उसने अपने आदमी पहाड़ियों में छिपा दिए, जिन्होंने सेड्रिक के दल पर आक्रमण कर दिया। सेक्सन लोगों को बन्दी बना लिया गया। बैरन बूफ के अभेद्य दुर्ग टोर्कवील स्टोन में उन लोगों को ले जाकर बन्द कर दिया गया ताकि उनको छुड़ानेवाले नियत धनराशि दे जाएं अन्यथा उनके भयानक प्रतिहिंसा के कोप तथा कठोरतम दण्ड के भागी होने की आशा थी।

नारमन लोगों ने अपने बन्दियों को एक-एक करके बुलाया। सबसे पहले यॉर्क का यहूदी इसाक इसके लिए चुना गया। बूफ अपने साथ यातना देनेवाले को लेकर उसकी काल-कोठरी में उतर गया और चिल्लाया, "ओ अभिशप्त जाति के अभिशप्त कुत्ते, मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि तू मेरे किसी आदमी को भेज, जो यॉर्क आकर तुझे छुड़ाने के लिए एक हजार चांदी के पौंड ले आए अन्यथा मैं तेरी बोटी-बोटी काट दूंगा।"

यहूदी ने कांपते हुए स्वर मे कहा, "पवित्र अब्राहम मेरी रक्षा करेंगे।" और सहसा उसका स्वर बदल गया। उसने कठोरता से कहा, "तू सारे यॉर्क नगर को विध्वस्त कर दे, तुरन्त आज्ञा दे दे कि मेरे घर को लूट लिया जाए। और मेरी जाति के प्रत्येक व्यक्ति को नष्ट कर दिया जाए। किन्तु इतना अधिक धन फिर भी एकत्र नहीं हो सकेगा।"

बूफ ने कहा, "मैं अनुचित बात नहीं कर रहा हू। यदि तेरे पास चादी नही है तो मैं स्वर्ण भी अस्वीकार नहीं करता।"

इसाक ने पुकारकर कहा, "मुझ पर दयाकर वीरनायक। मैं वृद्ध हो गया हू। मैं असमर्थ हूं, दरिद्र हू।"

वीरनायक ने उत्तर दिया, "वृद्ध तो तू है। किन्तु उन लोगो को धिक्कार है जिन्होंने कि तेरी दुष्टता देखकर भी तुझे इतना बड़ा हो जाने दिया। भले ही तू असमर्थ और निर्बल है किन्तु इसमे कोई सन्देह नही है कि तू निश्चय ही एक धनी व्यक्ति है।"

यहूदी ने कहा, "नहीं वीरनायक। मैं सौगन्ध खाता हूं।"

नारमन बूफ ने उत्तर दिया, "अपने ऊपर एक नया अपराध मत ले। यह बन्दी-गृह कोई साधारण स्थान नहीं है। तुझसे दस हजार गुने अधिक सम्मानित व्यक्ति इन दीवारों के बीच बन्दी होकर अपने प्राण त्याग चुके हैं। उनके अन्त का किसीको पता भी नही चला। किन्तु इस बात का स्मरण रख कि तेरे लिए मैं घुल-घुलकर मरने का कोई न कोई माध्यम निकाल लूगा, जिसकी असह्य यंत्रणाओ मे तू तड़पा करेगा।" यह कह-कर बूफ ने अपने सेरेसेन दासों को लोहे की सलाखों के एक पलग के नीचे आग जलाने की आज्ञा दी। और कहा, "इस तप्त शय्या पर सोना तुझे पसन्द है, या एक हजार चांदी के सिक्के देना ? मैं इस चुनाव को तुझपर ही छोड़ता हू।"

विह्वल और दीन यहूदी ने पुकारकर कहा, "यह असम्भव है।"

बूफ ने आज्ञा दी, "इसको पकड़कर नगा कर दो।"

दुखियारा यहूदी करुणा की एक किरण की आशा में उन लोगों की आखो की ओर देखने लगा, किन्तु उसे कही भी दया की छाया नही दिखाई दी। तब उसने कांपते हुए स्वर से कहा, "मैं तुम्हें धन दूगा किन्तु इसके लिए मेरी पुत्री रेबेका को जाना पड़ेगा और उसको पहुंचाने का जिम्मा तुमको लेना पडेगा कि वह निरापद जाए और वैसे ही सुरक्षित लौट आए।"

बूफ ने उत्तर दिया, "तेरी बेटी ! वह काली भौंहवाली लड़की ? मैंने उसे गिल्बर्ट की सेवा में उपस्थित कर दिया है। वह मैंने उसीको दे दी है।"

यहूदी के मुख से दारुण चीत्कार फूट पड़ा। इस निर्मम सवाद को सुनकर मानो उसका हृदय विदीर्ण हो गया था। वह पृथ्वी पर गिर गया और करुणा की भीख मागते हुए उसने बूफ के घुटनों को पकड लिया और कहा, "तुमने जो मुझसे मागा है वह ले लो, तुमने जो मुझसे मागा है उससे दस गुना मुझसे मांग लो, तुम मुझे बरबाद कर दो, मुझे भिखारी बना दो। और यदि फिर भी तुम्हारी प्रतिहिंसा शांत नहीं होती तो मुझे अग्नि की भयानक लपटों के ऊपर जला दो, किन्तु मेरी पुत्री का सम्मान नष्ट मत करो। तुम

एक पिता का हृदय नहीं जानते कि वह अपनी जिस बेटी को पालता है उसके सम्मान और गुण के लिए उसे संसार में सब-कुछ तुच्छ दिखाई देता है।"

बूक जैसे उसकी दारुण पुकार को सुनकर हिल गया। उस आर्द्र वेदना ने जैसे उसे क्षण-भर के लिए लज्जित कर दिया। और उसने कहा, "मैं यह समझता था कि तुम्हारी जाति में धन के अतिरिक्त किसी भी अन्य वस्तु का मूल्य नहीं होता।"

यहूदी ने फुत्कार किया, "ओ नीच, दुष्ट, जब तक मेरी पुत्री मेरे पास सुरक्षित नहीं लौट आएगी तब तक तू चाहे मेरी बोटी-बोटी ही क्यों न कटवा दे, मैं तुझे कुछ भी नहीं दूंगा।"

बूक चिल्लाया, "गुलामो, इसको नंगा कर दो और इस दहकते हुए पलंग के ऊपर धरा दो।"

उसी समय एक तुरही का तीखा स्वर द्विगुणित होता हुआ दो बार दुर्ग में गूंज उठा। यातना देनेवाले ठिठककर रुक गए। यह स्वर उनका ध्यान दूसरी ओर केन्द्रित कर रहा था।

जिस समय अभागे यहूदी को बन्दीगृह में बूक इस प्रकार यंत्रणाएं दे रहा था उस समय एक अन्य स्थान पर डिब्रेसी रोवेना को आतंकित करने की चेष्टा कर रहा था। रोवेना ने ठंडे स्वर से कहा, 'श्रीमत वीरनायक, मैं आपको नहीं जानती। किसी भी योद्धा और सम्मानित व्यक्ति को एक अरक्षित महिला के सम्मुख इस प्रकार आ जाना कहां तक उचित है ? यह मैं नहीं जानती।"

उसने उत्तर दिया, "डिब्रेसी का नाम ऐसा अनजाना नहीं है। चारण और दूत उसके पराक्रम के गीतों को गाते हुए दिगन्तों में घूमा करते हैं।"

रोवेना ने व्यंग्य से कहा, "कौन-सा चारण है जो इस गौरव-गाथा को गाएगा कि एक रात एक वृद्ध अपने कुछ नौकरों के साथ अपनी एक अभागी लड़की को लिए चला जा रहा था और कुछ कुत्तों ने उसपर अचानक धोखे से हमला कर दिया और उसकी पुत्री को उसकी इच्छा के विरुद्ध एक डाकू के दुर्ग में लाकर बन्द कर दिया।"

डिब्रेसी घबरा गया ; उसने कहा, "तुम्हारी यह बात उचित नहीं है। माना कि तुममें कोई आवेश और वासना नहीं, लेकिन फिर भी दोष तुम्हारे ही सौन्दर्य का है जिसने किसीको ऐसा करने के लिए उत्तेजित कर दिया है।"

रोवेना ने कहा, "कोई भी कुलीन व्यक्ति इस प्रकार की छिछली बात नहीं कर सकता।"

डिब्रेसी अपना ऐसा अपमान होते देखकर विक्षुब्ध हो गया। उसने कहा, "अभिमानिनी, गर्वीली रोवेना, तू ही मेरी पत्नी होने के योग्य है। इतना उच्च पद, इतना अधिक सम्मान तुझे और किसी माध्यम से प्राप्त नहीं हो सकता।"

रोवेना ने उत्तर दिया, "श्रीमंत वीरनायक, जहां मैं पली हूं उस स्थान को मैं तभी छोड़ूंगी जब मुझे ऐसा व्यक्ति मिलेगा जो मेरे उस निवास और वहां के आचार-व्यवहार से भी प्रेम करेगा।"

डिब्रेसी समझ गया कि वह आइवनहो के बारे में कह रही थी। उसने कहा, "वह प्रतिद्वन्द्वी मेरे वश में है।"

रोवेना को विश्वास नहीं हुआ। उसने कहा, "क्या आइवनहो का विलफ्रिड यहीं है ?"

डिब्रेसी के मुख से हास्य की ध्वनि फूट निकली। उसने कहा, "दुर्ग में विलफ्रिड ही नहीं, उसका शत्रु ब्रूफ भी है। वह स्वयं आइवनहो का बैरन बन चुका है। ज्योंही उसे पता चल जाएगा कि विलफ्रिड ने ही उसको उस अधिकार से वंचित कर रखा है, वह उसका सर्वनाश कर देगा।"

रोवेना भयभीत हो गई और एकदम चिल्ला उठी, "ईश्वर के लिए उसकी रक्षा करो।"

योद्धा के होंठ कांप उठे ; उसने कहा, "मैं उसकी रक्षा कर सकता हूं। मैं उसकी रक्षा करूंगा, अगर सुन्दरी रोवेना डिब्रेसी की पत्नी होना स्वीकार कर ले।"

जब इधर यह हो रहा था दुर्ग के एक एकांत मीनार में सुन्दरी रेबेका अपने आनेवाले दुर्भाग्य के लिए मन ही मन चिन्तित हो रही थी। वृद्ध सेड्रिक का एक मित्र था। वह मर चुका था। उसकी एक बेटी थी जो उलरिका कहलाती थी। यह सेक्सन स्त्री अपने नारमन विजेताओं द्वारा अपमानित हो चुकी थी। इस समय वह रेबेका की देखभाल कर रही थी। वह सुन्दरी यहूदिन को देखकर ईर्ष्या से व्याकुल हो रही थी। उसमें दुष्टता के कारण वृद्धावस्था और क्रूरता अधिक कुटिल दिखाई दे रही थी। सुन्दरी युवती को देखकर उसमें ऐसा भाव हो जाना नितान्त सहज था। वृद्धा ने कहा, "निकल भागने का एक ही रास्ता है और वह है मृत्यु का द्वार !" और यह कहती हुई वह कमरे के बाहर निकल गई। उसके मुख पर व्यंग्य से भरी हंसी ऐसे कांप उठी जैसे कोई नागिन फड़फड़ा रही हो।

रेबेका भय से कांप उठी। उसका मुख विवर्ण हो गया। सीढ़ियों पर किसीके भारी पांव की चाप सुनाई दे रही थी। डाकुओं का सा वेश धारण किए हुए एक लम्बा पुरुष भीतर घुस आया मानो वह कोई ऐसा काम करने आया था जिसकी लज्जा स्वयं उसे व्याकुल कर रही थी।

उसके बोलने के पहले ही रेबेका ने अपने दो बहुमूल्य कंगन और गलहार उतारकर उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा, "मेरे उपकारी, इन्हें ले लो और मुझपर तथा मेरे वृद्ध पिता पर दया करो।"

दीर्घाकार पुरुष ने कहा, "ओ पेलेस्टाइन के मनोहर सुमन, इन आभूषणों के ये मोती तुम्हारे दांतों की निर्मलता के सम्मुख लज्जित हो रहे हैं। निस्सन्देह ये हीरे देदीप्यमान हैं किन्तु तुम्हारे शोभन नेत्रों की समता ये नहीं कर सकते। और मैं धन का भूखा नहीं हूं। मुझे रूप की प्यास सता रही है।"

रेबेका ने कहा, "तब तो तुम कोई डाकू नहीं हो क्योंकि ऐसी बहुमूल्य भेंट कोई डाकू अस्वीकार नहीं कर सकता।"

अपने मुख को खोलते हुए उस समय गिलबर्ट ने कहा, "शेरान के प्यारे गुलाब, मैं डाकू नहीं हूं, मुझे पहचानो।"

रेबेका का रोम-रोम भय से कांप उठा। उसने विह्वल स्वर से कहा, "तुम क्या चाहते हो मुझसे ? मैं एक यहूदिन हूं, मेरा और तुम्हारा मिलन गिरजे और हमारे पवित्र मन्दिर के नियमों का उल्लंघन होगा।"

गर्वीले टेम्पलर गिल्बर्ट ने हसते हुए कहा, "सच कहती हो। मैं तुमसे विवाह नहीं कर सकता। मैं टेम्पलर हूं और अपनी शपथ के अनुसार मैं तुम्हारे अतिरिक्त किसी और स्त्री से प्रेम नहीं कर सकता। मैंने तुम्हें अपने धनुष और खड्ग के बल पर बन्दिनी बनाया है। समस्त राष्ट्र में एक ही नियम है, और वह है. शक्ति की विजय! मैंने उसीसे तुम्हें अपने अधीन कर लिया है।"

रेबेका चिल्ला उठी, "दूर हट जाओ, टेम्पलर गिलबर्ट, मैं यूरोप के एक कोने से दूसरे कोने तक तुम्हारी इस नीचता की घोषणा करती फिरूंगी। तुम जिस पवित्र सलीब को धारण करते हो उसका अपमान करने पर तुले हुए हो, इसलिए तुम संसार में अभिशप्त और पापग्रस्त नाम से प्रसिद्ध हो जाओगे!"

टेम्पलर ने कहा, "तुम बड़ी चतुर मालूम होती हो। इस दुर्ग की लौह प्राचीरों के बाहर यदि कहीं यह स्वर पहुंच पाए तो अवश्य लोगों में प्रतिकार की भावना जाग सकती है। किन्तु बन्दी, मार्ग अवरुद्ध है। तुम्हें अपनी पराजय स्वीकार करनी ही होगी।"

रेबेका क्रोध से चिल्ला उठी, "तुम्हारे सम्मुख समर्पण नहीं करूंगी। तुम टेम्पलरों में भले ही सर्वश्रेष्ठ पराक्रमी योद्धा हो, लोग भले ही तुम्हारे शौर्य को देखकर पराजित हो जाते हों, किन्तु मैं तुम्हारे मुंह पर थूकती हूं। अब्राहम का ईश्वर अपनी निरीह पुत्री को इस प्रकार अपमानित होते हुए नहीं देख सकता। इस भयानक बेला में भी वह उसके लिए कोई मार्ग अवश्य प्रशस्त करेगा।" यह कहकर उसने खिड़की खोल दी और विद्युत् गति से उसपर चढ़कर खड़ी हो गई। चौखट के पास खड़े होकर उसने देखा कि बहुत नीचे पृथ्वी-तल दिखाई दे रहा था। वायु के झोंके आ रहे थे। उस क्षण वह निस्सहाय बाला असीम साहस से भर गई। उसने अपने हाथों को एक-दूसरे से बांध लिया, फिर उसने अपने हाथों को खोल दिया और आकाश की ओर उठा दिया। और मानो कूदने के पहले अन्तिम बार हाथ जोड़कर ईश्वर से प्रार्थना की और कहा, "ओ अनन्त करुणामय!"

टेम्पलर कठोरहृदय व्यक्ति था, उसमें करुणा नहीं थी, न वह किसी के कष्टों को देखकर पिघलता था। किन्तु इस समय उसका साहस देखकर उसका हृदय दहल गया। उसने कहा, "नीचे उतर आ पागल लड़की, मैं पृथ्वी, आकाश और समुद्र की शपथ खाकर कहता हूं कि मैं तेरा कोई अपमान नहीं करूंगा।"

रेबेका ने उत्तर दिया, "टेम्पलर, मैं तेरा विश्वास नहीं करती।"

उसी समय बाहर बजती हुई तुरही ने टेम्पलर की मोह निद्रा को जैसे भंग कर दिया और वह बाहर चल पड़ा।

सेड्रिक के विदूषक वम्बा ने नारमन षड्यन्त्रकारियों के पास एक पत्र भेजा था। उसने मांग की थी कि सेक्सन बन्दी छोड़ दिए जाएं अन्यथा वह अपने साथियों के साथ दुर्ग पर आक्रमण करेगा। उसके साथ वनराज रोबिनहुड और उसके दुर्धर्ष योद्धा तथा अपराजित काला वीरनायक भी होंगे जो इस दुर्ग की ईंट से ईंट बजाकर, विनष्ट करके

ही दम लेंगे ।

जब यह समाचार आया कि दुर्ग के बाहर लगभग दो सौ आदमी तैयार खड़े हैं तो बूफ भयभीत हो गया ।

टेम्पलर ने कहा, "घबराओ मत बूफ, यह समय विचार करने का है । तुरन्त किसीको यॉर्क भेजो या कहीं भी भेजो, ताकि सहायता के लिए लोग आ सकें ।"

किन्तु उनके पास कोई चर उपस्थित नहीं था जो इतनी कष्टसाध्य यात्रा कर सकने में समर्थ हो । तब नारमन लोगों ने एक और चाल सोची । उन्होंने बहाना बनाया । घेरा डालनेवालों से उन्होंने कहा कि वे एक पादरी को भीतर भेज दें । अगली सुबह बन्दियों का वध किया जाने को था, इसलिए पादरी की आवश्यकता थी कि वह आकर उनके लिए अन्तिम समय प्रार्थना कर सके ।

घेरा डालनेवाले भी बहुत चतुर थे । दुर्ग में छद्म वेश धारण करके सेड्रिक का विदूषक वम्बा पादरी बनकर घुस गया । जब वह अपने स्वामी के सम्मुख पहुंचा, उसने अपने वस्त्र उतार दिए और सेड्रिक को विवश कर दिया कि वे पादरी के वस्त्र पहन लें और दुर्ग में से निकल जाएं ।

बूफ को इस प्रकार का कोई सन्देह नहीं था । पादरी का भेष धारण किए हुए सेड्रिक को वह स्वयं ले चला और उसने उसे समझाया कि किसी प्रकार वह घिरे हुए नारमनों की सहायता के लिए बाहर से कोई मदद ले आए । उसने कहा, "पादरी, यदि तुम मेरा यह कार्य कर दोगे और लौट आओगे तो तुम देखना कि मैं बाजार मे बिकनेवाले सूअर से भी सस्ता कर दूगा इन सेक्सनों का मांस ।"

यह कहकर उसने सेड्रिक के हाथों में सोने का एक सिक्का रखते हुए कहा, "पादरी, यदि तुम अपने कार्य में सफल नहीं हुए, तो याद रखना तुम्हारा यह चोगा और तुम्हारी खाल इन दोनों को इकट्ठा जलवा दूगा ।"

सेड्रिक ने कहा, "मैं तुम्हें ये दोनों काम करने की स्वतः आज्ञा दे दूगा । अगर हम फिर मिले तो इससे अधिक मेरे लिए क्या योग्य हो सकता है ।" दुर्ग के बाहर निकलकर उस कट्टर वृद्ध ने सोने का सिक्का बूफ की ओर फेंकते हुए कहा, "अरे झूठे नारमन, तेरे धन का तेरे साथ ही विनाश हो ।"

बूफ उसके वचनों को स्पष्ट नहीं सुन पाया लेकिन फिर भी उसका यह कार्य सन्देह जगा गया । भीत पर खड़े हुए धनुषधारियों से पुकारकर उसने कहा, "उस पादरी को अपने बाणों से बींध दो; लेकिन ठहरो, हमारे पास और कोई चारा नहीं है । हमें उस-पर विश्वास करना ही होगा । मुझे आशा नहीं है कि वह हमे धोखा देगा ।"

इसके बाद उसने देर तक मदिरा-पान किया और फिर अपने बन्दियों को देखने चला । उसे लगा जैसे कोई चला गया है । इस विदूषक के सिर से जब उसने टोपी उतारी तो गुलामी का तोक उसके गले में दिखाई दे गया । बूफ क्रोध से चिल्ला उठा, "नरक के कुत्तो, तुमने भयानक षड्यन्त्र किया है ।" और उसने विदूषक से कहा, "मैं तुझे पवित्र आज्ञा दूगा ! इसके सिर पर से इसकी खोपड़ी को काट डालो और दुर्ग की दीवार पर इसे उलटा लटका दो । इसका काम लोगों को हंसाना ही तो है । इसलिए इसे ऐसे ही

हसाने दो।"

बम्बा हंसा और उसने कहा, "इस तरह तो तुम मेरे सिर पर लाल टोपी लगा दोगे। फिर मैं साधारण पादरी नहीं रहूंगा, कार्डिनल बन जाऊंगा।"

डिब्रेसी ने कहा, "तब तो यह दुष्ट निश्चय ही मरना चाहता है। बूफ, तुम इसकी हत्या मत करो। यह मेरे साथियों के लिए मनोरंजन का एक साधन बन जाएगा।"

किन्तु दुर्ग के बाहर शत्रुओं के कार्यकलाप बढ़ गए थे, अतः इन लोगों को अपनी बातचीत बन्द कर देनी पड़ी।

टॉर्किलस्टोन का ऐतिहासिक युद्ध प्रारम्भ हो गया। आइवनहो के कमरे से रेबेका देखने लगी—वह इस समय एक रोगी पादरी के रूप में चुपचाप पड़ा हुआ था। बाहर संघर्ष छिड़ रहा था जिसपर उसकी स्वतन्त्रता और मृत्यु निर्भर थी। इस खेल को दूसरे लोग खेल रहे थे और वह स्वयं खेलने में असमर्थ था।

उसने पूछा, "क्या देख रही हो, रेबेका ?"

रेबेका ने उत्तर दिया, "कुछ नहीं दिखता। बाणों की घनी बौछार हो रही है। मेरी आंखें उनको देखकर चौंधिया जाती हैं और मैं बाण फेंकनेवालों को भी नहीं देख पाती।"

"बाण-वर्षा इन पत्थरों की दीवालों के विरुद्ध क्या कर सकेगी। सुन्दरी रेबेका! काला योद्धा कहां है ? उसको देखो। क्या वह अपने अनुयायियों को लेकर आगे बढ़ रहा है।"

"वह मुझे दिखाई नही देता," रेबेका ने डूबती हुई दृष्टि से देखकर कहा।

आइवनहो ने कहा, "वह भयानक गिद्ध है, गिद्ध! जब प्रचण्ड पवन चलता है तब भी क्या वह भाग सकता है ?"

"वह नही भाग सकता, नहीं भाग सकता।" रेबेका ने कहा, "मैं अब उसे देख रही हूं. वह अपने योद्धाओं के आगे खड़ा है। उन्होंने मार्ग तोड़ दिया है। वह झपटकर आगे बढ़ते हैं और फिर उन्हें पीछे हटना पड़ता है। बूफ रक्षकों के आगे है, जिसका भीम शरीर भीड़ में ऊपर दिखाई दे रहा है। यह लो, आक्रमणकारी फिर इकट्ठे हो गए। ओ, जेक्व तुम परमेश्वर हो! समुद्र की भयानक उत्ताल तरगें मानो आपस में टकरा रही हैं।"

वह भय से चीत्कार कर उठी, "वह गिर गया! वह गिर गया!"

आइवनहो चिल्लाया, "कौन गिर गया ? कौन गिर गया ?"

रेबेका ने उत्तर दिया, "काला योद्धा। पर नहीं, वह फिर खड़ा हो गया है। उसकी तलवार टूट गई है और उसने पास ही किसीसे एक कुल्हाड़ी ले ली है। बूफ पर वह प्रहार पर प्रहार किए चला जा रहा है। इस दैत्य के सामने कांप रहा है बूफ, जैसे लकड़हारे की कुल्हाड़ी के सामने कोई विशालकाय वृक्ष लड़खड़ा रहा हो। वह गिर गया। वह गिर गया।"

बूफ को ये लोग उठा ले चले और उसके कमरे में उसे पहुंचा दिया। युद्ध के इस

वीरान में गिल्बर्ट और डिब्रेसी ने आपस में बातचीत की।

"घबराओ नहीं," गिल्बर्ट ने कहा, "देर नहीं है, कुछ ही देर में बूफ अपने पूर्वजों के साथ जा बैठेगा।"

डिब्रेसी ने उत्तर दिया, "शैतान के राज्य में एक दुष्ट और पहुंच जाएगा।"

उधर एक पतली और टूटी-सी आवाज़ ने मरते हुए बूफ के पास से पुकारा, "क्या अभी बूफ जीवित है?"

उसने कांपकर पूछा, "कौन?"

"मैं तुम्हारा यमदूत हूं।"

"तुम यह तो मत समझो कि मैं तुमसे भयभीत हो जाऊंगा।"

"बूफ! अपने पापों का स्मरण कर, विद्रोह, हत्या और बलात्कार ही तेरे जीवन का इतिहास है।"

"मुझे शान्ति से मरने दो।"

उस स्वर ने उत्तर दिया, "शान्ति से तू नहीं मरेगा। मरते समय भी तुझे अपनी हत्याओं का स्मरण आता रहेगा।"

"ओ हत्यारी बुढ़िया, ओ घृणित कुटिल स्त्री।" मरता हुआ बूफ चिल्ला उठा। उसने इतनी देर में अपनी पुरानी प्रिया उलरिका की आवाज़ को पहचान लिया था।

वह बोली, "बूफ, तूने जो कुछ मुझसे ले लिया है, आज उस सबको वापस मांगने आई हूं। आज तक तू मेरे लिए यमदूत था किन्तु आज मैं तेरे लिए यमदूत बनकर आई हूं।"

बूफ ने कराहकर कहा, "आह, यदि मुझमें थोड़ी-सी भी शक्ति बाकी होती!"

उलरिका ने हंसकर कहा, "वीर योद्धा, अब इसकी आशा मत कर। तू किसी वीरनायक की भांति नहीं मरेगा। तुझे याद है, इन्हीं कमरों के नीचे ईंधन इकट्ठा है और लपटें तेज़ी से उठती चली जा रही हैं।"

बाहर गर्वीले टेम्पलर गिल्बर्ट का गर्जन रणनाद से ऊपर सुनाई दे रहा था। वह चिल्ला रहा था, "डिब्रेसी! सर्वनाश हो गया। दुर्ग में आग लग गई है!"

डिब्रेसी अपने आदमियों को लेकर बाहरी द्वार की ओर भाग चला, किन्तु बाहर से प्रचण्ड आक्रमण हुआ और पत्थरों के वे विशाल गलियारे शस्त्रों की ध्वनि से गूंजने लगे। काले योद्धा की तलवार डिब्रेसी के खड्ग से जा टकराई। डिब्रेसी भाग चला किन्तु काले सवार ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। उसने एक कुल्हाड़ी लेकर डिब्रेसी का पीछा किया।

काले सवार ने कहा, "डिब्रेसी, समर्पण करना है?"

डिब्रेसी ने उत्तर दिया, "मैं किसी अज्ञात विजेता के सामने समर्पण नहीं करूंगा।"

सहसा काले योद्धा ने अपना नाम धीरे से बुदबुदाया और डिब्रेसी ने चीत्कार कर उसके सम्मुख समर्पण कर दिया।

दुर्ग धधकने लगा। भीम लपटें हवा को महानागों की तरह डसने लगी थीं।

उमड़ते हुए धुएं ने काले विशाल दीवारों और छतों के नीचे अग्निराग-सा छाने लगा था। चारों ओर हाहाकार और चीत्कार से प्राचीन प्रतिध्वनित हो रहे थे। बाहर योद्धाओं का तुमुल निनाद बढ़ता जा रहा था। छतें धड़-धड़ाकर गिरने लगी थीं।

उस धधकती हुई आग में काला सवार वेग से भीतर घुस गया और उसने घायल आइवनहो को अपनी भुजाओं पर उठा लिया। रोवेना को उसके पिता के नौकरों ने बचा लिया। लेकिन गिल्बर्ट रेबेका को उठाकर भाग गया। अग्निदाह उसी के मीनार में पवन हंसता हो उठा।

आग की जीभ सन्ध्या के आकाश तक लपलपा रही थी। मीनार पर मीनार नीचे गिरती चली जा रही थी। विजेता आश्चर्य से उन धधकती लपटों को देख रहे थे, जिनके कारण उनके शस्त्र और उनकी पंक्तियां लोहित वर्ण प्रतीत हो रही थीं। और आकाश के सम्मुख पागल सेक्सन उलरिका विभोर होकर चिल्लाती हुई हाथ उठाए हुए दिखाई दी, मानो आज वह सर्वनाश की स्वामिनी हो गई थी। उसी समय मीनार जलकर गिर पड़ी और वह उस आग में जलने लगी, जिसमें कि थोड़ी देर पहले उस पर अत्याचार करने-वाले नष्ट हो चुके थे।

टॉर्किलस्टोन के युद्ध में सेक्सन लोगों की आशाओं का प्रतीक एथलस्टेन, तलवार की चोट से गिर गया था।

काले सवार को विदा देने के पहले सेड्रिक ने कोनिंग्सबरो नामक दुर्ग में शव-सत्कार पूरा करने के लिए निमन्त्रित किया। काला योद्धा आया, उसके साथ छद्म वेश में आइवनहो था और उसने सेड्रिक से कहा, "दुर्ग के युद्ध में आपने मुझे वचन दिया था कि आप मुझे एक वरदान देंगे। आज मैं वही वरदान मांगने आया हूं।"

सेड्रिक ने कहा, "तुम एक अपरिचित व्यक्ति हो। तुम इन झगड़ों में अपने-आपको क्यों सम्मिलित करते हो ?"

काले सवार ने विनम्रता से कहा, "मैं सम्मिलित नहीं होना चाहता था, लेकिन मैं आपकी आज्ञा चाहता हूं कि कुछ भाग ले सकूं। आज तक आपने मुझे फेटरलो का काला सवार ही समझा है, पर आज से आप मुझे रिचार्ड प्लेण्टाजनेट समझें।"

सेड्रिक ने पीछे हटते हुए कहा, "मजु का रिचार्ड !"

"नहीं, वीर सेड्रिक, इंग्लैंड का रिचार्ड, जिसकी इच्छा है कि वह अपने पुत्रों को एकता के सूत्र में बंधा हुआ देखे। तुम अपने वचन के पक्के व्यक्ति हो, इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम आइवनहो के वीर विलफ्रिड को क्षमा प्रदान करो और पिता की भांति उसे अपना वात्सल्य देने को तत्पर हो जाओ।"

सेड्रिक ने कहा, "तो क्या छद्म वेश धारण करनेवाला यह व्यक्ति, जो तुम्हारी सेवा में उपस्थित है, विलफ्रिड है ?"

विलफ्रिड सेड्रिक के चरणों पर लोट गया और कहा, "मुझे क्षमा कर दो मेरे पिता, मुझे क्षमा कर दो।"

सेड्रिक ने उसे उठाते हुए कहा, "मैं तुझे क्षमा करता हूं, पुत्र ! तू जो कहना चाहता है, मैं जानता हू ! तू मुझसे क्या कहना चाहता है ! लेकिन श्रीमती रोवेना को अपने

वाग्दत्त पति के लिए दो साल तक शोक मनाना पड़ेगा। एथलस्टेन मर चुका है। उसके उपरांत ही हम किसी नये वर की कल्पना कर सकेंगे।"

सेड्रिक के शब्द समाप्त भी नहीं हुए थे कि एक विकराल छाया बाहर आ गई। एथलस्टेन मरा नहीं था। वह केवल खड्ग की चोट से बेहोश होकर नीचे गिर गया था।

सेड्रिक ने भयभीत होकर कहा, "तू मेरी पालिता रोवेना को नहीं छोड़ेगा। उसे अब भी आशा थी कि इंग्लैंड सेक्सन लोगों का ही बना रहेगा।"

एथलस्टेन ने विरोध किया और कहा, "पिता सेड्रिक, न्याय कीजिए। श्रीमती रोवेना को मेरी चिन्ता नहीं। मैं भाई विलफ्रिड के लिए अपने इस अधिकार को वापस लेता हूं। अरे! विलफ्रिड कहां चले गए?"

सब लोगों ने देखा कि आइवनहो वहां नहीं था। उसी समय उसे सूचना मिली थी कि रेबेका को गिल्बर्ट उठा ले गया है। और धर्म के नियमों को छोड़ने के कारण जो सजा गिल्बर्ट को मिलनी चाहिए थी, उसीसे बचने के लिए उसने उसे एक डायन घोषित कर दिया था।

उन दिनों तांत्रिक डायनों के लिए केवल एक ही सजा थी—मौत। और तभी उसकी रक्षा हो सकती थी जब कोई उनके लिए युद्ध करके उसके संकट को झेल जाने को तैयार हो जाए।

न्यायाधीश बैठे हुए थे। जब आइवनहो पहुंचा तब दो घंटे का विलम्ब हो गया था। गिल्बर्ट टेम्पलरों की तरफ से नेता बना खड़ा था। अपने पुराने शत्रु को इस समय आते देखकर भीतर ही भीतर उसका क्रोध भयानक हो उठा। वह चिल्लाया, "सेक्सन कुत्ते, उठा ले अपना भाला और मरने के लिए तैयार हो जा। क्योंकि आज तूने काल को स्वयं निमंत्रण दिया है।"

आइवनहो ने पुकार कर कहा, "ओ दम्भी टेम्पलर, क्या तू यह भूल चुका है कि दो बार इस भाले के सामने तू पृथ्वी पर गिरकर धूल-धूसरित हो चुका है!"

तुरहियां बजने लगीं। अश्वारोही योद्धा एक-दूसरे के सामने दौड़ चले। घोड़े प्रचण्ड वेग से भाग रहे थे।

गिल्बर्ट गिर गया था। मृत्यु उसको चाट गई थी किन्तु वह आइवनहो के हाथों से नहीं मरा था। उसकी अपनी घृणा और वासना ने उसे पराजित कर दिया था।

भोर हो गई थी। विलफ्रिड और रोवेना का विवाह हो चुका था। रेबेका रोवेना के समीप आई। उसने पृथ्वी पर झुककर प्रणाम किया और उसके सुन्दर वस्त्र का छोर पकड़कर चूम लिया।

रेबेका का स्वर कांप रहा था। उसने अत्यन्त स्नेह से रोवेना से विदा मांगी और रोवेना को आश्चर्यचकित छोड़कर वह उस कक्ष से चली गई, जैसे कोई स्वर आया था और चला गया।

रोवेना ने यह घटना अपने पति को बतलाई, जिसने उसपर एक गम्भीर लकीर-सी छोड़ दी। वह अपनी पत्नी के साथ बहुत दिनों तक आनन्द से जीवन व्यतीत करता रहा, क्योंकि वे दोनों एक-दूसरे से सच्चा प्रेम करते थे और बीच की बाधाओं ने उनके

सम्बन्ध को और भी अटूट कर दिया था। कोई नहीं जानता कि आइवनहो को रेबेका की याद फिर कभी आई या नहीं!

प्रस्तुत उपन्यास रूमानी वातावरण का चित्रण करता है। यूरोप के वे शौर्य-भरे दिन स्कॉट की लेखनी ने उभार कर रख दिए थे। उसने मानव-जीवन की ईर्ष्या, द्वेष आदि वासनाओं का अद्भुत सुन्दर वर्णन किया है।

तीन तिलंगे
[द थ्री मस्कैटियर्स[1]]

ड्यूमा, अलेक्जैंडर : फ्रेंच उपन्यासकार अलेक्जैंडर ड्यूमा का जन्म फ्रांस में आइने नामक स्थान पर २४ जुलाई, १८०२ को हुआ। आपका प्रारम्भिक जीवन साधारण परिस्थितियों में व्यतीत हुआ। उसके उपरान्त आप लेखक के रूप में प्रसिद्ध हुए और आपने अनेक पुस्तकें लिखीं। आपने बहुत धन कमाया, पर आप इतना अधिक खर्चा करते थे अतः शीघ्र ही दिवालिया हो गए। आपने 'थियटर हिस्टोरिक' की स्थापना की। आपकी रिपब्लिकन प्रवृत्तियां थीं। मेरी कैथरीन लेवे से आपका एक पुत्र अवैध रूप से हुआ था, किन्तु आपने उनसे विवाह कर लिया और पुत्र को वैध बना दिया। आपकी मृत्यु ५ सितम्बर, १८७० को हुई। अपने समय में ड्यूमा अत्यन्त प्रसिद्ध लेखक थे। आपके उपन्यासों में बड़ी रोचकता है। यद्यपि उनके अधिकांश उपन्यास आज अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं माने जाते, परन्तु प्रस्तुत उपन्यास 'द थ्री मस्कैटियर्स', जो १८४४ में प्रकाशित हुआ था, में मनोरंजन और रोचकता का एक समन्वय मिलता है।

डार्टानन गेस्कन था, युवक था। वह पेरिस की ओर चल पड़ा। उसके पास अधिक सामान नहीं था। उसके पिता ने मोसियो द त्रिवेले के नाम उसे एक पत्र दे दिया था। सम्राट के तिलंगों के कप्तान त्रिवेले के पास पहुंचने के पहले ही डार्टानन एक झगड़े में पड़ गया और उसका घोड़ा और पत्र दोनों ही उससे बिछुड़ गए। लेकिन त्रिवेले को उसके पिता की याद आ गई और इसलिए उन्होंने पुत्र से भी अधिक स्नेह-भरा व्यवहार किया।

डार्टानन को इसका खेद रहा कि उसे तुरन्त ही सम्राट के तिलगों के रेजीमेंट में स्थान मिलना असम्भव था। उसकी कल्पना थी कि वह उस विख्यात और गौरवमयी रेजीमेंट में अपना स्थान पा लेगा। किन्तु वह विवश था। त्रिवेल की आज्ञा की प्रतीक्षा करते हुए वह उनके समीप ही रहने लगा। वहां उसने बुद्धिहीनता से तीन तिलगों का अपमान कर दिया। तीनों क्रुद्ध हो उठे और उन्होंने क्रमशः उसे बारह, एक और दो बजे द्वन्द्वयुद्ध के लिए चुनौती दे दी। डार्टानन को लगा, अगर वह अपने पहले दो प्रतिद्वन्द्वियों के हाथों से बच भी गया तो तीसरे से बचना अवश्य कठिन होगा। जब वह नियत स्थान पर आया तो उसको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जिस सबसे पहले व्यक्ति ने चुनौती दी थी वह आगे था और बाकी दो उसके पीछे खड़े थे। जब उन तीनों तिलगों ने युवक गेस्कन का ऐसा साहस देखा तो वे बहुत प्रभावित हुए। वे लोग द्वन्द्व-युद्ध आरम्भ करने की तैयारी में ही

---

१. The Three Musketeers (Alexander Dumas)

थे कि उसी समय कार्डिनल की रक्षक-सेना का एक दल आ गया। उन्होंने आकर उनको चेतावनी दी कि द्वन्द्वयुद्ध की परम्परा अब वर्जित है। तीनों तिलंगे रक्षक-दल के विरुद्ध हो गए और उन्होंने अपनी तलवारें खींच लीं। इस कार्य में डार्टानन ने उनका साथ दिया और लड़ाई होने लगी। कुछ ही देर में इन लोगों ने कार्डिनल के दल को हरा दिया और इसके बाद इनमें मैत्री स्थापित हो गई। तीनों तिलंगों का नाम क्रमशः ऐथोस, पार्थोस और ऐरेमिस था। डार्टानन अब उनका साथी बन गया।

निश्चय ही, इन तीनों व्यक्तियों के ये असली नाम नहीं थे। डार्टानन पहले इस विषय को नहीं जानता था। ऐथोस किसी समय बहुत धनी था और उसने दानशीलता में सब कुछ व्यय कर दिया था। अब वह धनहीन और दुखी था। पार्थोस गर्वीला था और बड़े बोल बोलने का शौकीन था। ऐरेमिस धार्मिक मनोवृत्ति का व्यक्ति था और एक बहुत ऊंचे कुल की स्त्री से प्रेम करता था। डार्टानन को एक दूसरे रेजिमेंट में जगह मिल गई और उसने बोनावयो के भवन में अपना निवासस्थान बनाया। बोनावयो धनी और उम्र-दार व्यक्ति था, जिसकी स्त्री कान्स्टेन्स सुन्दरी और तरुणी थी। वह सम्राज्ञी की सेवा में जाती थी और उसकी वहां पहुच भी थी। ऐथोस के पास ग्रमोद नामक सेवक था जो उसी के समान चुप रहता था। पार्थोस के सेवक का नाम मोस्केटोन था जो उसीके समान सुन्दर था। ऐरेमिस का सेवक बेजिन धार्मिक मनोवृत्ति का व्यक्ति था। डार्टानन ने भी एक नौकर रख लिया जो चालाक और साहसी था। इसका नाम था प्लेंनचेट।

कुछ ही दिन में डार्टानन को मालूम हुआ कि सम्राट के तिलंगों और कार्डिनल के सैन्य-दल का संघर्ष वहीं तक सीमित नहीं था बल्कि सम्राट और कार्डिनल में भी आपस में चल रही थी। सारे राज्य में कार्डिनल रिशलू सबसे सशक्त व्यक्ति था। सम्राट लुई तेरहवें को उससे घोर घृणा थी, जो उससे डरते भी थे और पूर्णतया उसके प्रभुत्व को स्वीकार करते थे। रिशलू आस्ट्रिया की सुन्दरी ऐना नामक महारानी का शत्रु था और इस शत्रुता का कारण यह था कि महारानी के सौन्दर्य ने उसके हृदय में आग लगा दी थी और महारानी उसकी उस आग को बुझाने में असमर्थ थी। दरबारी हलकों में यह विख्यात था कि अंग्रेजों के सम्राट चार्ल्स प्रथम का एक प्रिय पात्र अंग्रेज बकिंघम का ड्यूक भी महारानी से प्रेम करता है। महारानी यद्यपि अपने पति सम्राट से घृणा करती थी फिर भी उनके प्रति अपने कर्तव्यों से च्युत नहीं होती थी, किन्तु इस सुन्दर ड्यूक को देखकर उसके हृदय में कुछ ममत्व अवश्य छलक आता था।

एक दिन डार्टानन जब घर में अकेला था, ऊपर की मंजिल से पुकार आने लगी, "बचाओ, बचाओ।" वह तलवार लेकर उस ओर भागा और उसने अपने मकान-मालिक की युवती स्त्री को कुछ लोगों के चंगुल से छुड़ा लिया। वह तुरन्त ही उस सुन्दरी के प्रेम-जाल में फंस गया। जब उसे यह मालूम पड़ा कि वह किसी भयानक जाल में फंसी हुई है तो उसने अपने को उसका रक्षक घोषित कर दिया और बकिंघम के ड्यूक और महारानी की गुप्त मुलाकात के समय उनकी रक्षा करने का भी जिम्मा लिया। आस्ट्रिया की ऐना ने, जो कि महारानी थी, ड्यूक को बारह जवाहरातों की एक पेटी दी। ड्यूक उस पेटी को अपने दुर्ग में ले गया लेकिन इस सारी घटना का पता रिशलू को चल गया और उसने

सम्राट पर यह जोर दिया कि महारानी उनके सम्मुख अपने बारह जवाहरात पहनकर उपस्थित हों।

यह उत्सव एक हफ्ते के अन्दर ही किया जाने को था। महारानी को यह लगा कि उनकी बात अब छिप नहीं सकती थी। लेकिन कान्स्टेन्स ने डार्टानन को ड्यूक के समीप सन्देश लेकर भेजा। तीनों तिलगे अपने इस मित्र के साथ गए। यद्यपि उनपर कई हमले किए गए और एक-एक कर ऐथोस, पार्थोस और ऐरेमिस पराजित हो गए, फिर भी डार्टानन अन्त में इंग्लैंड पहुंच गया और ठीक समय पर महारानी के सम्मान को रक्षा करने के लिए बारह जवाहरात लेकर वापस आ गया। महारानी ने उसको हीरे की एक अंगूठी इनाम दी और उसकी प्रिया कान्स्टेन्स ने उससे एकान्त में मिलने का वायदा किया।

लेकिन जब वह एकान्त में अपनी प्रिया से मिलने पहुंचा तो उसे यह देखकर बड़ा खेद हुआ कि कोई उसकी प्रिया को पहले ही उड़ा ले गया था। कार्डिनल के गुप्तचर सब जगह लगे रहते थे। ब्रिटिश कुलीन विधवा लेडी द विण्टर की बहन मिलेडी नामक एक सुन्दरी युवती कार्डिनल की एक चालाक और भयंकर गुप्तचर थी। डार्टानन को यह विश्वास हो गया कि उसकी प्रिया कान्स्टेन्स के बारे में मिलेडी को ज्ञान है और वह उससे मिलने चला। लेकिन मिलेडी इतनी सुन्दर थी कि उसको देखकर वह अपने-आपको भूल गया। उसने डार्टानन को एक अंगूठी दी। उस अंगूठी को देखकर ऐथोस ने पहचान लिया कि मिलेडी ही उसका जीवन नष्ट करनेवाली स्त्री है। वही उसकी पहली पत्नी थी। बाद में ऐथोस को ज्ञात हुआ कि वह एक वेश्या थी जिसने कई जुर्म भी किए थे। अब मिलेडी कार्डिनल की सेवा में थी और बकिंघम के ड्यूक की हत्या करने के षड्यन्त्र में लगी हुई थी।

यद्यपि बकिंघम का ड्यूक अंग्रेज था और शत्रु भी था लेकिन तीनों तिलगे और डार्टानन उसकी रक्षा करने पर तुल गए। उन्होंने लेडी द विण्टर को सूचना दी और उसने अपनी दुष्टा बहन को बन्दी बना लिया। लेकिन उस चालाक स्त्री ने अपने ऊपर नज़र रखनेवाले तरुण लेफ्टीनेण्ट फिल्टन पर जादू कर दिया और उसे फुसलाकर इसके लिए तैयार कर लिया कि वह ड्यूक पर छिपकर हमला कर दे। बकिंघम का ड्यूक फिल्टन के घावों से अपनी रक्षा नहीं कर सका और इसी बीच मिलेडी भागकर फ्रांस पहुंच गई। तीनों तिलगे उसके पीछे निकल पड़े और उन्होंने उसे अन्त में गिरफ्तार कर लिया, पर तब तक वह वहां पहुंच चुकी थी जहां कि कान्स्टेन्स ने शरण प्राप्त की थी। उसने उस युवती के गिलास में जहर मिला दिया और जब डार्टानन वहां पहुंचा तो उसकी प्रिया कान्स्टेन्स जहर पी चुकी थी और मर रही थी। तिलगों ने द विण्टर के साथ मिलकर न्याय किया और मिलेडी को हत्या करने के अपराध में प्राण-दण्ड दिया। इसके बाद तीनों तिलगे पेरिस लौट आए। डार्टानन को सर का पद मिल गया और सम्राट और कार्डिनल का युद्ध पहले से भी अधिक तीव्रतर हो गया।

प्रस्तुत उपन्यास में इतिवृत्तात्मकता अधिक है और घटना-क्रम की रोचकता ही इसका मुख्य प्राणवन्त भाग है। इसमें लेखक ने प्रेम, षड्यन्त्र, हत्या इत्यादि मध्यकालीन विषयों को लेकर रोमांचक चित्रण करने का प्रयत्न किया है। इस उपन्यास में वातावरण का चित्रण भी बहुत सुन्दर हुआ है और विस्तार से लेखक ने अनेक छोटी-छोटी बातें भी गिनाई हैं। कथा अपने-आप में इतनी रोचक नहीं, जितनी कि अपने चित्रण में सफल हुई है।

विक्टर ह्यूगो :

पेरिस का कुबड़ा
[द हंचबैक ग्राफ द नोत्र दाम[1]]

ह्यूगो, विक्टर : फ्रेंच उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो का जन्म फ्रांस में २६ फरवरी, १८०२ को हुआ। आपके पिता नेपोलियन की सेना में जनरल थे। आपको अच्छी शिक्षा-दीक्षा मिली। आपने बहुत जल्दी ही नाटक और कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया। किन्तु कलम पर जीवित रहना दुश्वार प्रतीत हुआ। फिर शीघ्र ही आप प्रसिद्ध हो गए तथा आपके सब आर्थिक संकट दूर हो गए। १८५१ में राजनीतिक कारणों से आपको फ्रांस से निकाल दिया गया। परन्तु १८७० में जब आप देश लौटे, तो आपका भव्य स्वागत किया गया। २२ मई, १८८५ को आपका देहान्त हुआ। उस समय पेरिस में आपकी शवयात्रा के सम्मान में दस लाख व्यक्तियों की भीड़ उपस्थित थी। आपने अनेक महान उपन्यास लिखे हैं। प्रस्तुत उपन्यास 'द हंचबैक ऑफ नोत्र दाम' इतिहास की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। इसका मूल फ्रेंच नाम 'नोत्र दाम द पारी' है।

छः जनवरी, चौदह सौ बयासी ! भोर होते ही पेरिस में खलबली मच उठी। आज दो कारणों से छुट्टी थी—आज ही सम्राट का दिवस था और आज ही मूर्खों का भोज। न्याय-प्रासाद में लोग नाटक देखने के लिए इकट्ठे हो रहे थे। उस नाटक के बाद मूर्खों के पोप का चुनाव होनेवाला था और जो फ्लेमिश राजदूत आया था वह भी पेरिस में रहने के कारण इस नाटक को देखने के लिए आनेवाला था।

सवेरे से एक ऊंचे मंच पर यह खेल होनेवाला था। प्रासाद के एक विशाल हाल के कोने में यह मंच एक बहुत बड़े संगमरमर के चबूतरे पर बना हुआ था। मंच के निचले हिस्से में अभिनेता लोग अपने वस्त्र बदलते थे। उसको सुन्दर वस्त्र लटकाकर चारों ओर से ढंक-सा दिया गया था और सामने की ओर एक सीढ़ी लगा दी गई थी। हाल में जमा होने के बाद लोगों में आपस में मजाक होते रहे। कभी कोई जोर से आवाज लगाता, कभी कोई जोर से गाता। वे लोग एक-दूसरे से भद्दे मजाक भी कर रहे थे। लेकिन जब फ्लेमिश राजदूत के आने का समय हो गया, और जबकि ठीक बारह बजे नाटक प्रारम्भ होने को था, भीड़ में कुछ असन्तोष के चिह्न दिखाई देने लगे। इस बीच विश्वविद्यालय के प्रमुख लोग आ गए और भीड़ के लोग उनपर ताने कसकर अपनी दिल की आग बुझाने लगे।

---

१ The Hunch Back of Notre Dame (Victor Hugo)—इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुका है : 'पेरिस का कुबड़ा' अनुवादक : शिवदानसिंह चौहान एवं श्रीमती विजया चौहान। प्रकाशक : [illegible], दिल्ली।

अभी ये आगन्तुक बैठे भी नहीं थे कि घड़ी ने बारह बजाए।

भीड़ एकदम चुप हो गई और सबकी निगाह फ्लेमिश राजदूत की गैलरी की ओर मुड़ गई। समय निकल गया, कोई राजदूत दिखाई नहीं दिया। भीड़ बेचैन हो गई और एक बार फिर गुस्से से भरी आवाजें सुनाई देने लगीं। अब यह लगने लगा कि भीड़ अब खतरनाक हो चली है तो ग्रीनरूम में से पर्दा हटाकर एक व्यक्ति ऊपर आ गया। वह देवताओं के राजा जुपिटर का पार्ट करनेवाला था। वह संगमरमर के चबूतरे के किनारे पर पहुंचकर रुक गया और उसने घोषणा की कि ज्योंही सम्माननीय कार्डिनल आ जाएंगे, नाटक प्रारम्भ हो जाएगा। भीड़ उसकी बात चुपचाप सुनती रही और ज्योंही उसने बोलना खत्म किया, लोग तरह-तरह से चिल्लाने लगे और धमकियां देने लगे कि अगर नाटक तुरन्त ही प्रारम्भ नहीं किया गया तो भीड़ कुछ न कुछ मजा देगी। उसी समय एक अत्यन्त सुन्दर व्यक्ति बहुत थोड़े-से कपड़े पहने हुआ एक खम्भे की छाया में से निकलकर जुपिटर की ओर बढ़ चला। उसने कहा, "जुपिटर, तुरन्त प्रारम्भ कर दो। बेलिफ और कार्डिनल जब आएंगे तो मैं उनसे सब ठीक-ठाक कर दूंगा।"

अभिनेता को अब कोई हिचकिचाहट नहीं रही और उसने जोर से एलान किया, "नागरिको, हम इसी क्षण प्रारम्भ करते हैं !"

उसकी घोषणा को सुनकर बड़ी जोर से जय-जयकार हुआ और उसके समाप्त होने के पहले ही रंगमंच पर चार अभिनेता चढ़ आए। नाटक बड़ा ऊबा देनेवाला था। केवल अभिनेताओं के वस्त्र ही दर्शकों को आकर्षित कर सके। अभिनेताओं के वार्तालाप को हॉल में केवल एक ही व्यक्ति गौर से सुन रहा था। उसका नाम था पियरे ग्रीनगायर। इसी व्यक्ति ने जुपिटर से नाटक प्रारम्भ करने को थोड़ी देर पहले कहा था। उसकी दिलचस्पी इसलिए थी कि वह नाटक स्वयं उसीका लिखा हुआ था। अभी अभिनेता अधिक बोल भी नहीं पाए थे कि कार्डिनल, फ्लेमिस राजदूत और उनके असभ्य नौकर हॉल में घुस आए। अभिनेता रुक गए और सबकी आंखें गैलरियों की ओर उठ गईं। पहले लोगों के ऊपर सम्मानित लोगों का आतंक-सा छा गया और तुरन्त ही उन्हें याद आ गया कि आज मूर्खों का भोज था और उन्हें चाहे जैसा व्यवहार करने की स्वतन्त्रता थी। तब वे कार्डिनल और उसके साथियों पर ही भद्दे मजाक करने लगे।

इन विशिष्ट दर्शकों के आने के पन्द्रह मिनट बाद फ्लेमिस राजदूत, जो लम्बा और प्रसन्नमुख व्यक्ति था, उठ खड़ा हुआ और उसने दर्शकों से कहना प्रारम्भ किया कि नाटक को देखना चाहिए और पहले लोगों को मूर्खों का पोप चुन लेना चाहिए और उसने कहा, "घेण्ट में हमारा अपना मूर्खों का पोप है। हम तो उसे इस तरह चुनते हैं कि भीड़ इकट्ठी हो जाती है जैसे यहां पर लोग इकट्ठे हैं और तब जिसकी भी इच्छा होती है वह एक सूराख में से सिर निकालकर दूसरों की तरफ दांत निकालकर हंसता है और जो सबसे कुरूप चेहरा बनाने में सफल हो जाता है, उसीको पोप चुन लिया जाता है। मैं ... करता हूं कि आप भी मेरे देश की परिपाटी का आज अनुसरण करें।"

नागरिकों को यह सलाह बहुत पसन्द आई और यह तय किया गया कि संगमर- ... के चबूतरे के सामने जो छोटी चेपल थी, उसमें प्रतियोगी इकट्ठे हो जाएं। एक के

बाद एक व्यक्ति चेपल की खिड़की के सामने आता और अपनी सूरत को भद्दा बनाकर हसने की चेष्टा करता। भीड़ में कोलाहल होता और इतनी भयानक सूरतें उस खिड़की पर दिखाई दी कि यह तय करना मुश्किल हो गया कि उनमें से सबसे ज्यादा बदसूरत कौन था। किन्तु अचानक एक पल भीड़ मे इतना प्रचण्ड कोलाहल हुआ कि मूर्खों का पोप निर्विवाद चुन लिया गया। वहां उपस्थित लोगों में से आज तक किसीने इतना कुरूप मुख नहीं देखा था। मुह ऐसा था जैसे घोड़े की नाल होती है। नाक चौकूटी मालूम देती थी। उसकी एक आख पर काटो की तरह भौंह के बाल झुके हुए थे और दूसरी आंख भयानक सूजन के नीचे दबी हुई थी। दात ऊबड़-खाबड थे और उनमे से एक दात सूअर के दांत की तरह सीग जैसा मोटे होंठो मे से बाहर निकला हुआ था। जब उस मुख के बाद लोगो ने उस मुखवाले व्यक्ति को देखा तो भीड को आश्चर्य हुआ। कंधो पर एक बहुत बड़ा कुब्बड था और उसका सतुलन जैसे बहुत आगे निकला हुआ पेट कर रहा था। हाथ और पैर बहुत बड़े-बड़े थे और पाव तो बिलकुल ही बराबर नही थे।

यह चेपल का घण्टा बजानेवाला क्वासीमोडो था, नोत्रदाम का कुबडा क्वासीमोडो, एक आख का क्वासीमोडो, जो पैर से लगडाकर चलता था। तुरन्त मूर्खों के पोप के वस्त्र लाए गए और कुबडे को पहना दिए गए और उसे एक रंगीन पालकी मे बिठाकर मूर्खों की जमात के बारह अफसरों ने अपने कधों पर उठा लिया। जुलूस बन गया और नगर में फेरी लगाने के लिए निकल पड़ा। थोड़े ही लोग हॉल मे रह गए थे जो अब भी ग्रीनगाय के इस प्रयत्न को देख रहे थे कि किसी प्रकार नाटक समाप्त हो जाए। इसी वक्त किसीने पुकारा, "एस्मराल्डा, एस्मराल्डा ! बाहर चौक मे आओ !" अब सब लोग यह देखने के लिए बाहर निकल पड़े कि एस्मराल्डा कौन है।

ग्रीनगाय की अन्तिम आशा भी समाप्त हो गई। पेरिस निवासियो की मूर्खता को कोसता हुआ वह भी सडक पर निकल आया। इधर-उधर घूमने के काफी देर बाद वह प्लेस दि ग्रीव नामक स्थान पर आ गया। वहा एक अलाव-सा जल रहा था। वह उसकी ओर चला। आग के पास कुछ लोग घेरा डाले बैठे थे और मुग्ध नयनों से एक युवती को नाचते हुए देख रहे थे। उस सुन्दरी को देखकर ग्रीनगाय अपनी परेशानियों को भूल गया। वह पतली-दुबली, अत्यन्त सुन्दर देहवाली अपने पंजो पर घूमती हुई, अपनी सुडौल बाहों को अपने सिर पर उठाए काली आंखो से जिधर देखती थी उधर ही मानो लपट-सी उठने लगती थी। उसको देखकर स्पष्ट था कि वह कोई कजरिया थी। सैकड़ो लोग उसे देख रहे थे किन्तु एक व्यक्ति ऐसा था जिसकी आंखों में कुटिलता थी जैसे उनमे वासना का आनन्द भी लिया जा रहा था और दूसरी ओर घोर घृणा भी जाग रही थी। यह व्यक्ति लगभग पैंतीस वर्ष का था। लेकिन वह गजा हो चुका था और उसकी भौंह पर झुर्रियां पड़ चकी थीं। उसके वस्त्र दिखाई नहीं दे रहे थे। युवती नाचते-नाचते रुक गई और उसने झुककर अपने पाव पर पड़ी हुई सफेद बकरी को बुलाया। बकरी उछल-कर खड़ी हो गई और अपनी मालकिन की आज्ञा का पालन करती हुई ऐसे तमाशे करने लगी कि भीड़ देखकर चकित रह गई।

खल्वाट व्यक्ति ने कठोर स्वर से कहा, "इसमे जादू मालूम देता है !" लेकिन

भीड़ के कोलाहल में उसकी आवाज डूब गई और नर्तकी कंधे फरफराकर फिर तमाशा दिखाने में लग गई। कुछ देर बाद चौक के अंधेरे कोने से एक स्त्री का चीत्कार सुनाई दिया, 'ओ मिस्री कुतिया, क्या तू नहीं जाएगी!" उसकी आवाज़ में ज्वार था और उसके शब्दों में विक्षोभ अब अधिकाधिक प्रकट होने लगा था। उसी समय मूर्खों के भोज की मौज में जुलूस इधर आ गया और सब लोग उसे देखने में लग गए।

चेहरे पर गर्व की भावना लिए सबसे ऊपर बैठा था मूर्खों का पोप क्वासीमोडो। जब क्वासीमोडो को प्लीअर भवन के पास ले आया गया तो सल्वाट व्यक्ति भीड़ में से निकल आया। ग्रीनगाय ने उस आदमी को पहचान लिया। वह आर्चडीकन क्लोडे फ्रोलो था। उसने क्वासीमोडो के हाथ से उसके पोप-पद का राजदंड छीन लिया। लोगों को लगा कि अब अमानुषिक बलशाली कुबड़ा इस पादरी के टुकड़े-टुकड़े कर देगा लेकिन यह देखकर उनके आश्चर्य की सीमा नहीं रही कि क्वासीमोडो पादरी के सामने घुटनों के बल बैठ गया और तब तक बैठा रहा जब तक कि पादरी ने उसके मुकुट और वस्त्रों को उतार कर फेंक नहीं दिया। मूर्खों की बिरादरी इस बात से विक्षुब्ध हो उठी। उन लोगों ने पादरी पर हमला कर दिया होता, लेकिन कुबड़ा खड़ा हो गया और पादरी के सामने भयानक जानवर की तरह दांत पीसता हुआ सा भीड़ पर झपटने को तैयार हो गया। अपने मालिक को आगे ले जाने के लिए वह भीड़ को इधर-उधर धक्का देने लगा।

ग्रीनगाय ने आश्चर्य से इस विचित्र जोड़े को वहां से चले जाते देखा और फिर वह उस नर्तकी के पीछे चल पड़ा। रात काफी बीत चुकी थी और इन पिछवाड़े की सड़क और गलियों में, जिनमें होकर लड़की अपनी बकरी लिए चली जा रही थी, इक्का-दुक्का ही आदमी गुज़रता था। एक कोने पर वह मुड़ी और कुछ देर के लिए ओझल-सी हो गई। उसके बाद ही ग्रीनगाय को ऐसा सुनाई दिया जैसे लड़की ने चीत्कार किया हो। वह दौड़कर उसके समीप पहुंचा और उसने देखा कि दो आदमियों ने उसे पकड़ रखा था। वह उनसे छूटने की चेष्टा कर रही थी। उसने एक आदमी को पहचान लिया। वह क्वासीमोडो था। उसने उसमें इतनी जोर का घूसा दिया कि वह नाली में जा गिरा। क्वासीमोडो ने फिर लड़की को उठा लिया। उसी वक्त एक घुड़सवार आ गया। उसके पीछे बारह तीरन्दाज थे। वे एकदम गली में से निकल आए थे। उन्होंने लड़की को उसके हाथों से छीन लिया। कुबड़ा पकड़कर बांध लिया गया। उसका साथी भाग गया। नर्तकी ने घुड़सवार से उसका नाम पूछा। अफसर ने उत्तर दिया, "कप्तान फी बस द सेत्योपर्स मेरा नाम है।"

लड़की ने कहा, "मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूं।"

कप्तान मूछों पर ताव देने लगा। लड़की मुड़ी और रात के अंधेरे में आगे बढ़ गई। सड़क पर सन्नाटा छा गया था।

ग्रीनगाय को होश आ गया। अब वह बेचैन था क्योंकि वह कहीं सो जाना चाहता था। लेकिन वह भटक गया और चोरों, वेश्याओं और गुंडों के मोहल्ले में पहुंच गया। उसे गुंडों के एक दल ने पकड़ लिया और अपने राजा के पास ले गए। यह सबसे बड़ा गुंडा था जो बाकी सबपर राज्य करता था। पेरिस का यह अपराधी साम्राज्य बाहर के वैभव के साथ-साथ अपना भी अस्तित्व बनाए रखता था। चोरों के राजा ने यह निर्णय

दिया कि चोरों की बस्ती 'कोर द मिरेकिल्स' की कोई स्त्री यदि उसकी पत्नी बन जाए तो उसे छोड़ दिया जाए अन्यथा उसे तुरन्त फांसी पर लटका दिया जाए। अनेक स्त्रियों ने उसे देखा और घृणा से मुह मोड़ लिया। और गुंडों को मौका मिल गया। वे फांसी का फंदा उसके गले में फंसाने ही वाले थे कि लोग चिल्ला उठे, "एस्मराल्डा, एस्मराल्डा।" ग्रीनगाय ने मुड़कर देखा—वही लड़की खड़ी थी। उसने अपने राजा से पूछा, "क्या इस आदमी को फांसी पर लटका देने का इरादा किया है ?"

राजा ने कहा, "बिलकुल, मेरी बहन। हां, अगर तुम इससे शादी कर लो तो यह छूट जाएगा।"

नर्तकी ने अपने नीचे का होंठ काट लिया और फिर कहा, "ठीक है। मैं इससे शादी कर लूंगी।"

उनके विवाह की रात भी वैसी ही असाधारण रही, जैसाकि अब तक का सब कुछ असाधारण था। जब ग्रीनगाय ने उससे प्रेम करने की चेष्टा की तो एस्मराल्डा ने एक लम्बा चाकू निकाला और उसकी हत्या कर देने की धमकी दी। वे लोग अलग-अलग कमरों में सोए। बेचारे ग्रीनगाय को ज़मीन पर सोना पड़ा क्योंकि उसके पास बिस्तर भी नहीं था।

क्वासीमोडो बीस साल का था। सोलह साल पहले वह गिरजे में पाया गया था। वह अब वहीं घण्टा बजाता था। उस समय उस बच्चे को देखकर पालने के चारों ओर वृद्धाएं एकत्रित हो गई थीं लेकिन उसकी कुरूपता देखकर उन लोगों ने एक स्वर से यह घोषणा कर दी थी कि यह शैतान की औलाद है। और इसीलिए उन्होंने यह भी निर्णय किया कि उसको जीवित ही जला देना उचित है। उसे वे लोग सचमुच जला ही देतीं किन्तु एक तरुण पादरी क्लोडे फ्रोलो ने उनके इस कार्य में बाधा डाल दी थी। उसने बकबक करती बुढ़ियों को धक्का देकर हटा दिया था और पालने के पास जाकर अपने हाथ बच्चे की ओर बढ़ाकर उसने कहा था, "मैं इस बच्चे को गोद लेता हूं।" पादरी ने उस बच्चे को अपना चोगा ओढ़ा दिया और वहां से हटा लिया। पादरी के इस काम को देखकर स्त्रियों को बड़ा आश्चर्य हुआ और उनमें से एक ने कहा था, "क्या मैंने तुमसे पहले नहीं कहा था कि क्लोडे फ्रोलो एक जादूगर है !"

पादरी कोई साधारण आदमी नहीं था। गम्भीरता उसके मुख पर सदैव विराजती थी। उसकी आंखें भीतर तक का भेद जानने की शक्ति रखती थीं। अपने धार्मिक कार्य में वह इतना तल्लीन रहता था कि अन्य पादरियों की तुलना में स्पष्ट अलग-सा दिखाई देता था। क्वासीमोडो जैसे कुरूप को अपने साथ ले आने के पहले उसने अपने जीवन की सारी ममता अपने छोटे भाई जोहन पर केन्द्रित कर रखी थी। उसको भी उसने बचपन से पाला था।

जब कुबड़ा बड़ा हो गया तो पादरी भी आर्चडीकन के उच्च पद पर पहुंच गया था। उसीने अपने प्रभाव से उसको गिरजे में घण्टा बजानेवाले की नौकरी दिला दी। नोत्र दाम की ऊंचाई पर वह भीमाकार घंटा टंगा रहता और उसकी रस्सी को नीचे से

भीड़ के कोलाहल में उसकी आवाज़ डूब गई और नर्तकी कंधे फरफराकर फिर तमाशा दिखाने में लग गई। कुछ देर बाद चौक के अंधेरे कोने से एक स्त्री का चीत्कार सुनाई दिया, "ओ मिस्री कुतिया, क्या तू नहीं जाएगी!" उसकी आवाज़ में ज्वार था और उसके शब्दों में विक्षोभ अब अधिकाधिक प्रकट होने लगा था। उसी समय मूर्खों के भोज की मौज में जुलूस इधर आ गया और सब लोग उसे देखने में लग गए।

चेहरे पर गर्व की भावना लिए सबसे ऊपर बैठा था मूर्खों का पोप क्वासीमोडो। जब क्वासीमोडो को प्लीअर भवन के पास ले जाया गया तो खल्वाट व्यक्ति भीड़ में से निकल आया। ग्रीनगाय ने उस आदमी को पहचान लिया। वह आर्चडीकन क्लोडे फ्रोलो था। उसने क्वासीमोडो के हाथ से उसके पोप-पद का राजदंड छीन लिया। लोगों को लगा कि अब अमानुषिक बलशाली कुबड़ा इस पादरी के टुकड़े-टुकड़े कर देगा लेकिन यह देखकर उनके आश्चर्य की सीमा नहीं रही कि क्वासीमोडो पादरी के सामने घुटनों के बल बैठ गया और तब तक बैठा रहा जब तक कि पादरी ने उसके मुकुट और वस्त्रों को उतार कर फेंक नहीं दिया। मूर्खों की बिरादरी इस बात से विक्षुब्ध हो उठी। उन लोगों ने पादरी पर हमला कर दिया होता, लेकिन कुबड़ा खड़ा हो गया और पादरी के सामने भयानक जानवर की तरह दांत पीसता हुआ सा भीड़ पर झपटने को तैयार हो गया। अपने मालिक को आगे ले जाने के लिए वह भीड़ को इधर-उधर धक्का देने लगा।

ग्रीनगाय ने आश्चर्य से इस विचित्र जोड़े को वहां से चले जाते देखा और फिर वह उस नर्तकी के पीछे चल पड़ा। रात काफी बीत चुकी थी और इन पिछवाड़े की सड़क और गलियों में, जिनमें होकर लड़की अपनी बकरी लिए चली जा रही थी, इक्का-दुक्का ही आदमी गुज़रता था। एक कोने पर वह मुड़ी और कुछ देर के लिए ओझल-सी हो गई। उसके बाद ही ग्रीनगाय को ऐसा सुनाई दिया जैसे लड़की ने चीत्कार किया हो। वह दौड़कर उसके समीप पहुंचा और उसने देखा कि दो आदमियों ने उसे पकड़ रखा था। वह उनसे छूटने की चेष्टा कर रही थी। उसने एक आदमी को पहचान लिया। वह क्वासीमोडो था। उसने उसमें इतनी ज़ोर का घूसा दिया कि वह नाली में जा गिरा। क्वासीमोडो ने फिर लड़की को उठा लिया। उसी वक्त एक घुड़सवार आ गया। उसके पीछे बारह तीरन्दाज थे। वे एकदम गली में से निकल आए थे। उन्होंने लड़की को उसके हाथों से छीन लिया। कुबड़ा पकड़कर बांध लिया गया। उसका साथी भाग गया। नर्तकी ने घुड़सवार से उसका नाम पूछा। अफसर ने उत्तर दिया, "कप्तान फी बस द सेत्योपर्स मेरा नाम है।"

लड़की ने कहा, "मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूं।"

कप्तान मूछों पर ताव देने लगा। लड़की मुड़ी और रात के अंधेरे में आगे बढ़ गई। सड़क पर सन्नाटा छा गया था।

ग्रीनगाय को होश आ गया। अब वह बेचैन था क्योंकि वह कहीं सो जाना चाहता था। लेकिन वह भटक गया और चोरों, वेश्याओं और गुंडों के मोहल्ले में पहुंच गया। उसे गुंडों के एक दल ने पकड़ लिया और अपने राजा के पास ले गए। यह सबसे बड़ा गुंडा था जो बाकी सबपर राज्य करता था। पेरिस का यह अपराधी साम्राज्य बाहर के वैभव के साथ-साथ अपना भी अस्तित्व बनाए रखता था। चोरों के राजा ने यह निर्णय

दिया कि चोरों की बस्ती 'कोर द भिरेकिल्स' की कोई स्त्री यदि उसकी पत्नी बन जाए तो उसे छोड़ दिया जाए अन्यथा उसे तुरन्त फांसी पर लटका दिया जाए। अनेक स्त्रियों ने उसे देखा और घृणा से मुह मोड़ लिया। और गुंडों को मौका मिल गया। वे फांसी का फंदा उसके गले में फसाने ही वाले थे कि लोग चिल्ला उठे, "एस्मराल्डा, एसमराल्डा।" ग्रीनगाय ने मुड़कर देखा—वही लड़की खड़ी थी। उसने अपने राजा से पूछा, "क्या इस आदमी को फांसी पर लटका देने का इरादा किया है ?"

राजा ने कहा, "बिलकुल, मेरी बहन। हां, अगर तुम इससे शादी कर लो तो यह छूट जाएगा।"

नर्तकी ने अपने नीचे का होंठ काट लिया और फिर कहा, "ठीक है। मैं इससे शादी कर लूगी।"

उनके विवाह की रात भी वैसी ही असाधारण रही, जैसाकि अब तक का सब कुछ असाधारण था। जब ग्रीनगाय ने उससे प्रेम करने की चेष्टा की तो एसमराल्डा ने एक लम्बा चाकू निकाला और उसकी हत्या कर देने की धमकी दी। वे लोग अलग-अलग कमरों में सोए। बेचारे ग्रीनगाय को जमीन पर सोना पड़ा क्योंकि उसके पास बिस्तर भी नहीं था।

क्वासीमोड़ो बीस साल का था। सोलह साल पहले वह गिरजे में पाया गया था। वह अब वही घण्टा बजाता था। उस समय उस बच्चे को देखकर पालने के चारों ओर वृद्धाएं एकत्रित हो गई थीं लेकिन उसकी कुरूपता देखकर उन लोगों ने एक स्वर से यह घोषणा कर दी थी कि यह शैतान की औलाद है। और इसीलिए उन्होंने यह भी निर्णय किया कि उसको जीवित ही जला देना उचित है। उसे वे लोग सचमुच जला ही देतीं किन्तु एक तरुण पादरी क्लोडे फ्रोलो ने उनके इस कार्य में बाधा डाल दी थी। उसने बकबक करती बुढ़ियों को धक्का देकर हटा दिया था और पालने के पास जाकर अपने हाथ बच्चे की ओर बढ़ाकर उसने कहा था, "मैं इस बच्चे को गोद लेता हू।" पादरी ने उस बच्चे को अपना चोगा ओढ़ा दिया और वहां से हटा लिया। पादरी के इस काम को देखकर स्त्रियों को बड़ा आश्चर्य हुआ और उनमें से एक ने कहा था, "क्या मैंने तुमसे पहले नहीं कहा था कि क्लोडे फ्रोलो एक जादूगर है !"

पादरी कोई साधारण आदमी नहीं था। गम्भीरता उसके मुख पर सदैव विराजती थी। उसकी आंखें भीतर तक का भेद जानने की शक्ति रखती थीं। अपने धार्मिक कार्य में वह इतना तल्लीन रहता था कि अन्य पादरियों की तुलना में स्पष्ट अलग-सा दिखाई देता था। क्वासीमोडो जैसे कुरूप को अपने साथ ले जाने के पहले उसने अपने जीवन की सारी ममता अपने छोटे भाई जॉहन पर केन्द्रित कर रखी थी। उसको भी उसने बचपन से पाला था।

जब कुबड़ा बड़ा हो गया तो पादरी भी आर्चडीकन के उच्च पद पर पहुंच गया था। उसीने अपने प्रभाव से उसको गिरजे में घण्टा बजानेवाले की नौकरी दिला दी। नोत्र दाम की ऊंचाई पर वह भीमाकार घंटा टंगा रहता और उसकी रस्सी को नीचे से

ड़कर क्वासीमोडो हवा में भूलकर झटके दे-देकर बजाता था। उसका गम्भीर निनाद नकर लोग इकट्ठे हुआ करते थे। तब से क्वासीमोडो के जीवन में दो ही काम थे— तो वह घण्टे बजाता या फिर अपने पालन करनेवाले पिता की देख-रेख करता। इन नों के प्रति उसे बड़ी ममता थी। उस विशाल घंटे की गम्भीर गूंज ने क्वासीमोडो को हरा बना दिया था। अब वह मनुष्य के स्वर को सुन नहीं पाता था। इसलिए भी उसका वन इतना एकांतमय हो गया था।

पादरी के हृदय की सारी ममता अपने भाई जॉहन पर केन्द्रित थी किन्तु जॉहन उसके जीवन में एक निराशा भर दी। वह क्लॉडे के चरणों पर चलकर धर्म और ज्ञान प्रति आकर्षित नहीं हुआ बल्कि जुआ खेलना, सरायों में आना-जाना, पानी की तरह न बहाना और व्यभिचारी के रूप में नाम कमाना उसे अधिक भाता था। क्लॉडे ने हर तरह उसे डांट-फटकारकर देख लिया किन्तु उसके सब प्रयत्न विफल हो गए। तब इस दुःख ो भूलने के लिए क्लॉडे अपने पुस्तकालय में अपने-आप बन्द हो गया और तांत्रिक क्रियाओं ो सिद्धि करने लगा। शीघ्र ही वह जादूगर के नाम से प्रसिद्ध हो गया। अशिक्षित जनता लिए गम्भीर ज्ञान और जादू में जैसे कोई अन्तर ही नहीं था।

कप्तान फीबस द्वारा गिरफ्तार हो जाने के बाद क्वासीमोडो को एक मजिस्ट्रेट सामने खड़ा किया गया। उसपर रात को दंगा करने का अभियोग लगाया गया कि वह क युवती पर अत्याचार कर रहा था और सम्राट के सिपाहियों के काम में रुकावट डाल हा था। न्यायाधीश ने उसे कोड़े लगाने की आज्ञा दी और प्लेस द ग्रीव के पास दंड-थान नियत किया, जहां ग्रीनगाय पहले ही दिन एसमराल्डा के सौंदर्य से अभिभूत हो गया ा। एसमराल्डा के नृत्य में व्याघात डालनेवाली बुढ़िया का नाम सिस्टर ग्युडोले था। रे सोलह वर्ष के लिए प्लेस द ग्रीव के पास एक छोटी कुठरिया में वह प्रायश्चित्त और पस्या करने को घुसी थी और आज भी वहां मौजूद थी। उस कुठरिया में उसे कानून के ल पर किसीने बन्द नहीं किया था बल्कि उसने स्वयं अपनी तपस्या के लिए वह स्थान न लिया था।

वह अपने यौवन में बहुत ही अधिक सुन्दरी थी किन्तु उसने अपने को विलास ौर आनन्द में बहा दिया था। बीस साल की आयु में ही उसने यह देखा कि उसका न्तिम प्रेमी भी उसे छोड़ गया था क्योंकि उसका सौन्दर्य विलुप्त होने लगा था। उसकी ाद में एक लड़की थी और उसके पास अब कोई नहीं था। वह लड़की ही उसके जीवन ा एकमात्र सहारा रह गई थी। एक दिन जब कि बच्ची लगभग एक वर्ष की थी वह उसे र में सोता छोड़कर बाहर चली गई। जब वह लौटकर आई तो उसे पालना खाली ला और अपनी प्यारी बच्ची के पांव का एक स्लीपर ही उसके हाथ पड़ सका। बच्ची ो उड़ा ले जानेवालों के हाथों से शायद वह वहां छूट गया था। उसी दिन प्रातःकाल जरों का एक जत्था पड़ोस में ठहरा था। इसलिए यह सोच लिया गया कि बच्ची को जानेवाले वही लोग होंगे।

उसी दिन बाद में जब मां अपनी बच्ची को ढूंढ़-ढांढ़कर लौटी तो निराशा घन-र छा गई। उसे अपने घर में बच्चा पड़ा हुआ मिला जो एक छोटे-से राक्षस जैसा था।

जिसकी एक ओर वी और जो लगड़ा था। तब वह व्याकुल हो गई। शोक और क्रोध ने उसे घेर लिया और वह पेरिस चली गई। अपनी बच्ची का स्लीपर भी उसके साथ ही चला गया। उसने यह सोचकर कि यौवन के पापों के लिए परमात्मा ने उसे यह दण्ड दिया था, उसने प्लेस द ग्रीव में मादाम रोलेन्ड की कुठरिया में अपने-आप को बन्द कर लिया और तब से वह वहीं रहती थी। कोई दयालु जो कुछ भी रोटी के टुकड़े वहां फेंक जाता था, उसी से उसका जीवन-निर्वाह हो रहा था। उसका असली नाम पक्वेरेला चान्ती फ्लुरी था। किन्तु लोग उसे सिस्टर ग्युडोले कहते थे। जो बदसूरत बच्चा उसके मकान में छोड़ दिया गया था उसको आर्चबिशप ने अपने संरक्षण में लेकर उसके अन्दर बैठे शैतान को बाहर निकाल लिया था और उसे नोत्र दाम में पालन के लिए भेज दिया था।

ग्युडोले का स्थान ऐसी जगह था जहां क्वासीमोडो को दंड-स्वरूप बन्द कर दिया गया था। वह बेचारा बहरा अपने दंड के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। उसे अपने दुर्भाग्य के बारे में कुछ भी पता नहीं था। उसने बिना किसी विरोध के पहिये में अपने-आप को बांध लेने दिया, लेकिन जब उसने धातु की गांठोंवाला चमड़े का कोड़ा देखा जो-कि उसपर बजने वाला था तब उसकी समझ में आया। जब वह कोड़ा उसकी नंगी कुरूप पीठ पर बजनेलगा तब उसने छूटने के लिए एक व्यर्थ संघर्ष किया और उसके बाद उसने चेष्टाएं छोड़ दीं और चुपचाप सब कुछ सहता रहा। जब सारी कोड़े लग चुके और खून उसके शरीर पर बहने लगा तब उसको लगभग घण्टे-भर के लिए फिर बन्द कर दिया गया, ताकि अपने शरीर की पीड़ा के साथ-साथ वह बाहर खड़ी भीड़ के व्यंग्य और उपहास को भी सहता रहे।

जहां एक दिन पहले वह मूर्खों का पोप बनकर विजेता के रूप में ले जाया गया था, वहीं अब उसे यातना मिल रही थी। जब वह कोठरी में बन्द था, क्वासीमोडो ने एक खच्चर पर चौक में एक पादरी को जाते हुए देखा। उसे देखकर उस कुबड़े के घृणित मुख पर एक विचित्र प्रकार की विनम्रता आ गई। वह हर्षोन्मत्त हो उठा। उसे ऐसा लगा जैसे वह इस यातना से छूटनेवाला है, लेकिन ज्योंही पादरी को मालूम पड़ा कि क्वासीमोडो को यातना दी जा रही थी, उसने खच्चर मोड़ा और शीघ्रता से उसे हांक ले चला। क्वासीमोडो ने एक ही व्यक्ति को प्यार किया था और वह भी उसे छोड़कर चला गया था। यही व्यक्ति था जिसके कारण क्वासीमोडो को यह यातना सहनी पड़ रही थी। इसी पादरी ने उसे आज्ञा दी थी कि वह एस्मरल्डा को पकड़ लाए और जब क्वासीमोडो ने यह प्रयत्न किया था तब वही उसके साथ भी गया था।

पादरी जब दूसरी ओर चला गया तब क्वासीमोडो देह और आत्मा दोनों से पराजित होकर और तीव्र दाह से व्याकुल हो चिल्ला उठा, "पानी, पानी!" भीड़ ने उसकी करुण पुकार सुनकर उसपर पत्थर फेंके और नालियों से कीचड़ ला-लाकर उसपर उछाला। जब वह तीन बार चिल्ला चुका तो उसने यह देखा कि उसकी कुठरिया की ओर एक युवती चली आ रही है। उसके पीछे एक बकरी थी। क्वासीमोडो तुरन्त पहचान गया कि उसने इसी लड़की को उठा ले जाने की चेष्टा की थी। उसने यह सोचा कि उसे बंधा

हुआ और असहाय देखकर शायद वह उसे मारने के लिए आ रही है। वह भयभीत हो उठा और उससे बचने के लिए भयंकर चेष्टा करने लगा। लेकिन युवती ने उसपर हाथ नहीं उठाया। उसने अपनी कमर में से एक पानी की बोतल निकाली और क्वासीमोडो के जलते हुए होंठों से लगा दी। पानी पीते हुए क्वासीमोडो की लाल सुर्ख आंखों से आंसुओं की धारा बह चली। इस करुण दृश्य को देखकर लोगों के हृदय हिल गए।

किन्तु तभी सिस्टर ग्युडोले का कठोर स्वर सुनाई दिया। वह अपनी कुठरिया में से देख रही थी। नर्तकी को कंजरिया समझकर वह एकदम क्रोध से पागल-सी हो गई और चिल्लाने लगी, "ओ मिस्र की कुतिया, तुझपर परमात्मा का घोर कोप टूटे ! तुझ-पर सैंकड़ों शाप टूटें ! तू अभिशप्त हो ! तेरा सर्वनाश हो !" एसमराल्डा जब सामने की सीढ़ियों से नीचे उतरने लगी तो तपस्विनी ग्युडोले अत्यन्त क्रोध में चिल्लाने लगी, "उतर जा नीचे ! उतर जा ! ओ, बच्चे चुरानेवाली मिस्री औरत, तू भी अब शीघ्र ही यहीं बन्द होती हुई दिखाई देगी !"

क्वासीमोडो नोत्रदाम लौट गया। फिर वही घंटे बजाने का काम था, लेकिन अब पहले जैसा उत्साह उसमें शेष नहीं था। कैद होने के पहले वह या तो गिरजे की बात सोचता था या आर्चडीकन की; लेकिन अब उसके दिमाग में बार-बार उस देवदूत जैसी स्त्री की कल्पना आती, जिसको उसने उड़ा ले जाना चाहा था, लेकिन फिर भी जिसने अपनी असीम करुणा से उसको पराजित कर दिया था।

उसी एसमराल्डा की स्मृति आर्चडीकन के मानस में भी गहरी होती चली जा रही थी। वह भी नोत्रदाम के एक गुप्त कक्ष में घंटों एकाकी उसके विषय में सोचा करता। उसको पता चल गया था कि ग्रीनगार से उस नर्तकी का विवाह हो गया था किन्तु वह अभी भी कुमारी थी और उस नाटककार से पूछकर उसने यह भी पता लगा लिया था कि एसमराल्डा का ध्यान फीबस नाम के एक व्यक्ति पर केन्द्रित था लेकिन वह यह नहीं जान पाया कि यह फीबस कौन था।

एसमराल्डा सड़कों पर नाचती थी। अब उसके साथ बकरी के अलावा ग्रीनगार भी खड़ा रहता। वह और ग्रीनगार दोनों ही एक-दूसरे के प्रति इतने आकर्षित नहीं थे जितने कि दोनों बकरी के प्रति आकर्षित थे। नर्तकी उस नाटककार के साथ केवल इस-लिए रहती कि उसे मरने से बचा सके और नाटककार नर्तकी के साथ इसलिए रहता था क्योंकि उसके साथ रहने के कारण उसे खाने और रहने का ठौर मिल जाता था।

कई हफ्ते बीत गए। कप्तान फीबस ने जब एसमराल्डा को बचाया तो उसके बाद अचानक ही एक दिन फिर वह मिल गया और दोनों में यह निश्चय हुआ कि एक [illegible] सराय में दोनों का मिलन हो। फीबस के शराबी साथियों में एक व्यक्ति का नाम था जेहान, जो आर्चडीकन का भाई था। एसमराल्डा से मिलने के लिए समय के पहले फीबस ने एक सराय में अपने मित्र के साथ कई घंटे बिताए। जब दोनों बातें कर रहे थे [illegible] आर्चडीकन भी छिपकर सुनने लगा। उसने जेहान और फीबस की बातों से जान लिया कि आज फीबस कहां जा रहा है। जब फीबस ने जेहान को [illegible]

धुत नाली मे गिर गया था। कप्तान फीवस अकेला ही चल पड़ा। उसे यह ज्ञात नहीं था कि आर्चडीकन क्लोडे फ्रोलो छिपकर उसका पीछा कर रहा है। आर्चडीकन ने अनेक चालाकियां करके इन दोनों प्रेमियों द्वारा नियत किए गए कमरे की बगल में ही एक कमरा ले लिया। कुछ क्षण तक वह एस्मराल्डा और फीवस को दीवार की एक सन्धि से देखता रहा और अचानक ही एक भयानक-सी ईर्ष्या और क्रोध से भर गया। वह आवेश से उनके कमरे मे घुस आया और उसने मद-विह्वल कप्तान फीवस को छुरी से गोद दिया। एस्मराल्डा मूर्च्छित हो गई। और जब उसे होश आया तब पहरा देनेवाले सिपाही आ गए थे। फीवस रक्त के दलदल में पड़ा हुआ था। लेकिन पादरी का कोई निशान भी वहा नही था। वह उस खिड़की मे से निकल भागा था जो नदी की ओर खुलती थी।

नर्तकी पर हत्या का दोष लगाया गया। कहा गया कि शैतान ने उसकी इसमे सहायता की है। इस बात से न्यायालय को कोई मतलब नही था कि कप्तान अब जल्दी-जल्दी ठीक होता चला जा रहा था। वह मरा नहीं था। एस्मराल्डा ने पहले अपने अपराध को स्वीकार नही किया; लेकिन जब उसे शारीरिक यातनाए दी गईं, तब उसने स्वीकार कर लिया कि वह चुड़ैल है, जादू जानती है और कप्तान की हत्या उसीने की है। नोत्रे दाम की विशाल मेहराब के नीचे उसे प्रायश्चित्त-स्वरूप तप करने की आज्ञा मिली और उसके बाद उसे यह दड दिया गया कि उसे प्लेस ग्रीव में ले जाया जाए और गरदन में फंदा डालकर फांसी पर लटका दिया जाए। जब यह दंड उद्घोषित कर दिया गया तो न्याय-प्रासाद के एक अधेरे तहखाने में उसको डाल दिया गया। पेरिस की सड़कों पर जो स्वच्छन्द आनन्द की प्रतीक थी, जो तितली की तरह हलकी थी, उसे भारी जंजीरो मे जकड़कर अन्धकार मे डाल दिया गया। सब उसे यह कहते थे कि फीवस मर चुका है, इसलिए जीवित रहने की उसकी कामना भी समाप्त हो चुकी थी। वह भी यह चाहती थी कि मृत्यु उसे शीघ्रातिशीघ्र ग्रस ले।

बन्दीगृह में उसके पास एक व्यक्ति आया। वह पादरी आर्चडिकन क्लोडे फ्रोलो था। उसको देखकर वह चौंक उठी। पादरी ने बात को छिपाया नही। उसने अपना प्रेम प्रकट कर दिया। उसने बताया कि उसीने उसको उड़वा ले जाने की चेष्टा की थी और वही फीवस की हत्या का कारण था। उसने फिर कहा, अगर तू मेरे साथ देहात में निकल चलेगी तो मैं तुझे बन्दीगृह और मृत्यु से बचा दूगा।"

किन्तु विक्षोभ से उसने इसे अस्वीकार कर दिया और कहा, "तुम्हारे साथ जाने की बजाय मैं मर जाना अधिक पसन्द करती हूं।" पादरी क्रोध से उसको छोड़कर चला गया।

नियत दिन आ गया। नोत्रे दाम की विशाल मेहराब के नीचे एस्मराल्डा को लाया गया और वहा उसने मृत्यु के लिए अपनी आत्मा को तैयार किया। उस दिन धार्मिक क्रियाए करानेवाला पादरी कोई अन्य नहीं स्वयं क्लोडे फ्रोलो था। उसने अपना कार्य करते वक्त धीरे से लड़की से कहा, "अब भी मैं तुझे बचा सकता हू।" किन्तु युवती ने उसकी बात को फिर ठुकरा दिया।

जब उसे फासी के फन्दे की ओर ले जाया जाने लगा तो उसकी निगाह पड़ोस के

घर की एक खिड़की की ओर उठी और उसे यह देखकर अपार हर्ष हुआ कि वहां फीबस खड़ा था। उसने उसे आवाज दी, लेकिन वह शीघ्र ही वहां से हट गया। उसके साथ एक औरत और थी। यह देखकर एसमराल्डा मूच्छित होकर गिर पड़ी। नोत्रे दाम के चारों ओर जो भीड़ इकट्ठी हुई थी वह नर्तकी को देखने में इतनी व्यस्त थी कि किसीने भी यह नहीं देखा कि क्वासीमोडो गिरजे के ऊपर चढ़कर बैठा हुआ था। किसीने यह भी नहीं देखा कि उसने ऊपर से नीचे तक एक रस्सी बांधकर लटका रखी थी। ज्योंही एसमराल्डा का शरीर मूच्छित होकर पृथ्वी पर गिरा, क्वासीमोडो बिजली की तेज़ी से रस्सी पकड़कर नीचे फिसल आया मानो कोई बूंद खिड़की के शीशे के ऊपर फिसलकर नीचे आ गई हो। पलक झपकते वह लड़की के पास आ गया। फिर अपनी भयानक मुट्ठियां भींचकर उसने इतने ज़ोर से घूंसे लगाए कि युवती को पकड़नेवाले दोनों सैनिक मुंह के बल धरती पर गिर गए। क्वासीमोडो ने नर्तकी को उठा लिया और उसे तेज़ी से लेकर नोत्रे दाम की मेहराब की ओर भाग चला और इस समय वह चिल्ला रहा था, "धर्मस्थान! धर्मस्थान!" एक बार गिरजे में घुस जाने के बाद युवती कानून की पकड़ के बाहर हो गई थी।

क्वासीमोडो उसे ऊपर के हिस्से में ले गया और उसे एक छोटे-से कमरे में छिपा दिया। फिर उसने उसे शय्या पर सुलाया और उसके लिए भोजन का भी प्रबन्ध किया। उसने कहा, "दिन में तुम यहीं रहा करना, लेकिन रात को तुम सारे गिरजे में भले ही घूम सकती हो। लेकिन रात और दिन, कभी गिरजे के बाहर मत निकलना वरना तुम्हें वे लोग मार डालेंगे और वह मेरी मौत के समान होगा।" उसी शाम को एसमराल्डा के कमरे में उसकी बकरी भी आ गई।

जब यह घटना क्लॉड फ्रोलो को पता चली तो वह समझ गया कि अब गिरजे में युवती की देखभाल करनेवाले क्वासीमोडो को ठीक करना होगा। और अब फिर से वह उस युवती को वहां से निकालने की योजना बनाने लगा। उसने ग्रीनगार को बुलाया और उस गीत-गानेवाले कवि से कहा, "एसमराल्डा की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि उसे नोत्रे दाम से बाहर कर लिया जाए। क्या तुम कोई ऐसी तरकीब सोच सकते हो, जिससे ऐसा सम्भव हो सके?"

काफी बहस करने के बाद ग्रीनगार ने स्वीकार कर लिया कि वह अपने साथी चूहों और लुच्चों को 'कोर्ट द मिरेकल्स' में उकसाएगा। वे लोग गिरजे पर हमला करेंगे और नर्तकी को उठा ले जाएंगे। दूसरा दिन बीत गया, रात आ गई। क्वासीमोडो रात को पहरा देते हुए अपनी पंक्तियां [illegible] रहा था कि उसने देखा, गिरजे की ओर एक विशाल भीड़ चली आ रही है। यह चूहों की सेना थी। चूहों ने विशाल द्वार पर कुल्हाड़ियों, हथौड़ों और अन्य औज़ार लेकर आक्रमण प्रारम्भ कर दिया। लेकिन वे लोग अभी कुछ कर भी नहीं पाए थे कि क्वासीमोडो ने मेहराब के ऊपर चढ़कर एक बड़े शहतीर का बोझ फेंक दिया। वह इतने वेग से भीड़ पर गिरा कि लगभग बारह आदमी वहीं के वहीं मर गए। अब चूहों ने आवेश के साथ उस शहतीर को उठा लिया और वे उसे लेकर उस शहतीर का वेग से [illegible] विशाल द्वार में टक्कर देने लगे। इसके [illegible] अधिक आतंक हो गया। [illegible] की [illegible] के लिए [illegible]

अन्तिम दिन

[द लास्ट डेज़ ऑफ पोम्पेई[१]]

लिटन, एडवर्ड बुलवर : अंग्रेजी लेखक लिटन के पिता का नाम था जनरल अर्ल बुलवर। आपका जन्म २५ मई, १८०३ को लंदन में हुआ था। १८४३ में अपनी माता के स्वर्गवासी होने पर, एडवर्ड ने उनका 'लिटन' नाम भी अपने नाम के साथ जोड़ लिया। आप कवि थे। २२ वर्ष की अवस्था में आपने विवाह किया, किन्तु वह असफल रहा। फिर भी आपने अनेक उपन्यास, काव्य और अत्यन्त सफल नाटकों की रचना की। आपके बारे में कोई अपवाद नहीं चला। बाद में आपने पार्लियामेंट में काम किया। आप ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल के सदस्य भी रहे। १८६६ में आपको 'बैरन' का पद प्राप्त हुआ। आपकी मृत्यु १८ जनवरी, १८७३ को हुई।

प्रस्तुत उपन्यास 'द लास्ट डेज ऑफ पोम्पेई' १८३४ में छपा। यह ऐतिहासिक रचना है। जिसमें वातावरण का चित्रण बहुत ही प्रभावोत्पादक बन पड़ा है।

बड़ी सुन्दर दीवारें थी रोमन साम्राज्य के उस नगर की। उन दीवारों के भीतर अनेक लोग अपने वैभव एवं विलास के साथ रहा करते थे। उस दीवारवाले नगर को वे पौम्पिआई कहा करते थे। उसमें छोटी-छोटी दुकानें थी, छोटे-छोटे महल थे। नीडाघर, रंगशाला और नाट्यगृह सभी कुछ वहां थे। मानो किसी साम्राज्य की सारी अच्छाइयां और बुराइयां अपने छोटे रूप में वहां इकट्ठी हो गई थी।

वहां नावें चलती थी, समुद्री जहाज चलते थे और खाड़ी का पानी शीशे की तरह चमकदार था, जो कभी-कभी बहुत धनी लोगों के जहाजी बेड़ों से झूम उठते थे। और प्लीनी की आज्ञा उन सब जहाजी बेड़ों पर चलती थी।

नेपल्स से एथेन्स का निवासी ग्लॉकस लौटकर आया था। इस समय वह क्लॉडियस के साथ बैठा था। दोनों उठती-गिरती लहरों को देख रहे थे। क्लॉडियस जुए में जीतने में सिद्धहस्त था और इस सुदूर के यूनानी को योंही पराजित कर देता था। उसका धन ले लेता था। लेकिन यूनानी को धन से घृणा थी, क्योंकि रोम ने उसके नगर को जीत भी रखा था। वे लोग प्रेम की बात कर रहे थे और ग्लॉकस ने कहा कि वह सुन्दरी जूलिया से विवाह नहीं करना चाहता, हालांकि वह बहुत पैसेवाली थी और उसके प्रति आकर्षित भी थी। एक बार नेपल्स में मिनर्वा देवी के मन्दिर में ग्लॉकस को बहुत दिनों पहले एक ग्रीक सुन्दरी मिली थी, लेकिन उसको देखते ही देखते एक दूसरा युवक उसे

---

१. The Last Days of Pompeii (Edward Bulwer Lytton)

को जानते थे।

उन दिनों खुले मैदान मे, आकाश की छाया मे, एक रंगमंच बनाया जाता था। उसे घेरकर सब लोग बैठा करते थे और वहां अपराधी को आदमियों की भीड़ के बीच मे छोड़ दिया जाता था, जिसकी शेर से लड़ाई कराई जाती थी और लोग तमाशा देखा करते थे। ऐसा उस युग के लोगों का मनोरंजन था। ऐसी ही एक रंगशाला मे भीड़ के सामने तमाशे के लिए ग्लॉकस को शेर से लड़ने के लिए छोड़ दिया गया। ग्लॉकस भयानक हिंस्र-जन्तु के हमले की प्रतीक्षा मे बैठा रहा; लेकिन सबको यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि सिंह ने जैसे ग्लॉकस को देखा ही नहीं, बल्कि वहां से भाग जाने की कोशिश की और बेचैन-सा होकर अपने पिंजरे में लौट गया। शेर का रखवाला शेर को फिर से अंकुश मारकर ग्लॉकस की ओर भेजना चाहता था कि एक ओर से बड़ी जोर की आवाज सुनाई दी, जिसे सुनकर सबकी आंखें उधर ही फिर गईं। सामने खड़ा था एक आदमी। उसका नाम था सेलेस्ट। वह ग्लॉकस का मित्र था। वहां सिनेट के सदस्य बैठे थे। उन सब बैठे लोगों को उसने देखा और कहा कि उस ग्रीक को वहां से हटा दो, वह निरपराधी है। अर्बासीज को गिरफ्तार कर लो, वह हत्यारा है। यह कहकर सेलेस्ट ने केलेनस को आगे कर दिया। भूखा थका-मादा केलेनस मिस्री के सामने खड़ा हो गया और भीड़ से पुकारकर बोला, "मैंने अपनी आंखों से इस मिस्री को एपीसिडीज की हत्या करते देखा है।"

लोग चिल्लाए, "चमत्कार कर दिया! इस अर्बासीज को ही शेर के सामने डाल दिया जाए!"

यह काम था अंधी निदिया का। छूटने की कोशिश जब उसके लिए बेकार हो गई तो उसने एक पहरेदार को रिश्वत दी और सारी घटना की सूचना सेलेस्ट के पास पहुंचा दी। सेलेस्ट अपने नौकरों को लेकर अर्बासीज के घर गया। उसने वहां कैदियों को छुड़ा दिया और ठीक समय पर उनको लेकर रंगमंच पर पहुंच गया।

भीड़ अर्बासीज की ओर टूट रही थी। उसी समय ऊपर एक अजीब और एक भयानक छाया-सी दिखाई दी और उसका साहस लौट आया। उसने अपने हाथ ऊपर फैला दिए और वज्र गर्जन से पुकारा, "देखो निरपराधों की देवता किस प्रकार रक्षा करते हैं! मुझ पर झूठा इलजाम लगाया गया है और देवता भयानक प्रतिहिंसा लेनेवाले हैं। उनकी लपटें प्रकट हो रही हैं।"

भीड़ की आंखें उधर ही चली गईं, जिधर मिस्री ने इशारा किया था। उन्होंने देखा कि विसूवियस पर्वत के शिखर से भयानक भाप-सी निकल रही थी, मानो एक विशाल चीड़ का पेड़ था, उसका तना अंधेरा था, काला; और शाखाएं आग की थीं और वह आग कांप रही थी, फूट रही थी और क्षण-क्षण उसका रूप बदलता जा रहा था। कभी उसकी चमक बढ़ जाती थी और कभी लाल-लाल दिखाई देती थी। पृथ्वी हिल रही थी, रंगमंच की दीवारें कांपने लगी थीं और सुदूर मकानों के गिरने की आवाज भीषणता से गरजने लगी थी। ऐसा मालूम देता था जैसे वह भाप का बादल भीड़ की ओर चला आ रहा था और राख उसमें से गिरती जा रही थी, जिसमें से लाल-लाल अंगारे नीचे गिरते जाते थे। और तब पहाड़ में जैसे आग लग गई। खौलता हुआ पानी खम्भों की तरह

उसमें से उमड़ने लगा।

उस भयानक दृश्य को देखकर लोग अर्बासीज और न्याय की बात भूल गए। उनका हृदय आतंक से थर्रा गया और भीड़ भागने लगी। चारों ओर से कोलाहल उठने लगा। एक-दूसरे को ठेलते हुए, रौंदते हुए वे समुद्र की ओर भाग चले; लेकिन नगर उनके लिए डरावना हो गया था। दिन का उजाला एक भयानक काली छाया के समान रात बन गया। उनमें से निदिया ग्लॉकस और ईयोन को लेकर रास्ता दिखाती अंधेरे में चली। ग्लौकस का नशा कम हो गया था। अन्धी निदिया अंधेरे से डरी नहीं क्योंकि उसकी आंखों में तो सदा ही अंधेरा रहता था। लोग जब डरकर रास्ते में भटक रहे थे निदिया दूसरों को रास्ता बताती हुई निकल चली, क्योंकि अंधेरे से अंधेरे का मेल हो गया था।

अर्बासीज और पौम्पिआई नगर के अन्य अनेक लोग नष्ट हो रहे थे; लेकिन ये तीनों समुद्र के किनारे पहुंच गए, और एक जहाज पर बैठकर चल दिए। थकामांदा ग्लॉकस जहाज में सो गया, ईयोन उसके सीने पर अपना सिर रखकर लेट गई और निदिया उसके चरणों में पड़ी रही। आकाश से सागर की लहरों पर अब राख और धूल की बौछारें हो रही थीं। जहाज के ऊपरी लोगों पर भस्म-सी इकट्ठी हो रही थी। और प्रचण्ड पवन राख को लेकर दूर-दूर तक बहा चला जा रहा था। सुदूर अफ्रीका के लोग उस आंधी को देखकर चौंक उठे और सीरिया देश की धरती से लौटकर वह हवा बजने लगी।

अन्त में भयानक समुद्र शान्त होने लगा। प्रभात की पहली किरण आकाश में फूटने लगी, लेकिन इनके जहाज से कोई हर्ष का स्वर नहीं उठा। तीनों थके-मांदे थे, ऐसे कि जैसे चूर-चूर हो गए हों; लेकिन फिर भी उठी हृदय से एक प्रार्थना की पुकार। सारी रात बीत गई थी। उजाले की प्रतीक्षा में एक बार फिर हृदय को यह अनुभव हुआ कि ऊपर एक परमात्मा है जो सबको जीवन देता है।

निदिया धीरे से उठी। ग्लॉकस के मुख पर झुक गई और उसने उसे धीरे से चूम लिया और उसने उसके हाथ को खोजा तो दुख से उसके मुंह से एक आह निकल गई क्योंकि ग्लॉकस का हाथ उस समय भी ईयोन के हाथ में गुंथा हुआ था। उसने अपने केशों से अपने मुख को, रात की राख और पानी को पोंछ दिया। वह धीरे से बड़बड़ाई, "तुम अपनी प्रिया के साथ रहो। कभी-कभी निदिया को याद कर लेना। क्योंकि उसे अब इस धरती पर रहने की कोई जरूरत नहीं है।" वह हट गई, और एक जहाजी ने अधमुंदी, अधनींदी आंखों से एक छाया-सी देखी, और उसे ऐसा लगा जैसे पानी पर एक छपाका-सा हुआ। उसने देखा कि लहरों पर बड़े झाग से आए और फिर शीघ्र ही मिट गए। वह फिर सो गया। जब दोनों प्रेमी जागे तो निदिया कहीं नहीं थी और तब वे समझ गए कि निदिया समुद्र में समा गई। अपने बच जाने का सुख उनको फीका लगने लगा और वे ऐसे रो उठे कि जैसे उनकी अपनी बहन सदा के लिए चली गई थी।

प्रस्तुत उपन्यास की भूमि व्यापक है। इसमें लेखक ने तत्कालीन समाज की कुरीतियों के साथ मनुष्य की सार्वभौम चेतना का अच्छा चित्रण किया है। पौम्पिआई का पतन बहुत ही चित्रात्मक ढंग से प्रस्तुत हुआ है।

दो नगरों की कहानी

[ए टेल ऑफ टू सिटीज़[1]]

डिकेन्स, चार्ल्स : अंग्रेज़ी उपन्यासकार डिकेन्स का जन्म ७ फरवरी, १८१२ को इंग्लैंड में पोर्टसी नामक स्थान पर हुआ। आपके पिता जहाज़-विभाग में क्लर्क थे। डिकेन्स का बचपन में ऐसा जीवन व्यतीत हुआ कि आपने गरीबी को अच्छी तरह देखा। आपके पिता कर्ज़दार होने के कारण जेल में बन्द कर दिए गए थे और इसलिए बचपन में ही आपको एक कारखाने में काम करना पड़ा, ताकि रोज़ी कमा सकें। वहां आपने शार्टहैंड सीखी और लंदन के एक अखबार के लिए रिपोर्टर बन गए। कुछ दिन बाद कथा-साहित्य के क्षेत्र में उतर आए और शीघ्र ही यश प्राप्त कर लिया। इसके बाद जीवन-पर्यन्त आपको साहित्यिक सफलताएं मिलती रहीं, लेकिन पारिवारिक जीवन में निरन्तर संकट उपस्थित होते रहे। ६ जून, १८७० को कार्याधिक्य के कारण निर्बल हो जाने से गेडसहिल प्लेस केंट में आपका देहान्त हुआ। आपने हास्य पर भी लिखा है। आपने अनेक सामाजिक उपन्यास लिखे हैं, किन्तु 'ए टेल ऑफ टू सिटीज़' आपका अत्यन्त विख्यात ऐतिहासिक उपन्यास है जिसमें आपका कलात्मक कौशल पूर्ण रूप से विकसित हुआ है। यह सन् १८५६ में प्रकाशित हुआ।

ईसामसीह के बाद १७७५ वर्ष बीत चुके थे। उच्च वर्ग के लोग, जोकि लोगों की रोटी के मालिक थे, मन में यह जान गए थे कि सब कुछ वैसा ही बना रहनेवाला नहीं है। व्यवस्था में कुछ संकट उपस्थित होनेवाला था, क्योंकि चारों ओर असन्तोष की ज्वालाएं धीरे-धीरे भड़कने लगी थीं।

मिस्टर जार्विस लौरी टेलसन एण्ड कम्पनी नामक लन्दन के एक बैंक के एक अधिकारी थे। नवम्बर की ठंडी रात में वे एक घोड़ागाड़ी में डोवर की सड़क पर चले जा रहे थे। उनके सामने बार-बार एक पैंतालीस वर्षीय व्यक्ति का मुख आ जाता था। उस मुख पर क्षय और ह्रास के चिह्न थे। मिस्टर लौरी बार-बार सोचते, यह व्यक्ति कब मरा? क्या अट्ठारह वर्ष पहले? या अब भी जीवित होगा? और वे इसका निश्चय नहीं कर पाते थे।

डोवर पहुंचकर उन्हें एक पतली-दुबली, सुनहले बालोंवाली सत्रह वर्ष की एक लड़की मिली। मिस्टर लौरी ने उसे बताया कि उस लड़की के पिता का नाम डाक्टर मैनेट था। वह एक फ्रेंच डाक्टर था। उसके पिता का देहान्त अभी तक नहीं हुआ था। इस लड़की के जन्म के पहले ही उसके पिता को जेल में डाल दिया गया था और यह काम इतने रहस्यमय ढंग से हुआ था कि किसीको पता भी नहीं चल सका था। लड़की का नाम

१. A Tale of Two Cities (Charles Dickens)

लूसी था। लूसी की माता ने यह सोचकर कि लड़की का दिल न टूट जाए, उसको यही बताया था कि उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी। मां की भी मृत्यु हो चुकी थी। अब बैंक में डाक्टर मैनेट की जमा रकम की मालकिन लूसी ही थी। इधर डाक्टर मैनेट भी जेल से छूट आए थे और मिस्टर लौरी उसे पेरिस ले जाना चाहते थे जहां कि डाक्टर मैनेट अपने परिवार के एक पुराने नौकर के घर में इस समय शरण प्राप्त किए हुए थे।

सैंट एँतोयने ज़िले में एक शराब की दुकान थी। उसके मालिक का नाम दिफार्ज था। उसकी पत्नी एक भयकर स्त्री थी। दिफार्ज की दुकान के पास ही डाक्टर मैनेट इस समय अपना निवास कर रहे थे और उनका दिमाग एक तरह से खाली हो गया था। जो भी उनसे बात करता था, उसकी ओर वे शून्य दृष्टि से देखा करते थे। आजकल वे जूते सिला करते थे। लूसी ने मिस्टर लौरी के साथ डाक्टर मैनेट को वहां देखा तो उसे बड़ा खेद हुआ। फिर लूसी और मिस्टर लौरी ने आपस में सलाह की और उन्होंने यह तय किया कि वृद्ध मैनेट के रहने के लिए लन्दन अधिक उपयुक्त स्थान रहेगा। अत: वे उन्हें वहीं ले आए।

इस घटना के पांच वर्ष बाद चार्ल्स डारने नामक एक फ्रेंच युवक ओल्डबेली में गिरफ्तार किया गया। कचहरी में उसपर यह अभियोग लगाया गया कि वह इंग्लैंड के विरुद्ध जासूसी करता था। डाक्टर मैनेट का दिमाग अब कुछ-कुछ ठीक हो गया था क्योंकि लूसी ने बड़े मनोयोग से अपने पिता की सेवा की थी। डाक्टर मैनेट को उनकी इच्छा के विरुद्ध होते हुए भी डारने के केस में गवाही देने को बुलाया गया। डारने के विरुद्ध अभियोग प्रमाणित हो गया था। उसके वकील मिस्टर स्ट्राइवर का एक असिस्टेंट था। उसका नाम था सिडनी कार्टन। जब फैसला होने की बात आई तो सिडनी कार्टन ने कहा कि उसका मुख डारने के मुख से इतना अधिक मिलता है कि पहचानने में आसानी से भूल हो सकती है। कार्टन एक बड़ा चतुर व्यक्ति था, लेकिन उसने अपनी जिन्दगी को एक तरह से बिगाड़ लिया था। मिस्टर स्ट्राइवर बड़े आगे बढ़नेवाले व्यक्ति थे। कार्टन उनका सहयोगी था। छूट जाने के बाद डारने अंग्रेज़ों को फ्रेंच पढाने लगा। उसके पिता एवरेमोंड के रईस थे, लेकिन फ्रांस में उनसे लोग अत्यन्त घृणा करते थे, क्योंकि एवरेमोंड परिवार अपनी क्रूरता के लिए प्रसिद्ध था। डारने ने अपने पिता के यहां जाना पसन्द नहीं किया। उसको यही अच्छा लगा कि वह अपनी रोज़ी खुद कमाए और अपनी जिन्दगी बिताए।

डाक्टर मैनेट का छोटा-सा मकान सोहो नामक स्थान पर था। डाक्टर फिर से अपनी प्रैक्टिस करने लगे थे। हमेशा यह खतरा बना रहता था कि उनके दिल को कोई ऐसा सदमा न लग जाए, जो उन्हें फिर से जूते बनाने के काम में लगा दे। जेल में रहकर जो उनसे जूते बनवाए गए थे, उससे उनका दिमाग खाली-सा हो गया था। एक तरह का पागलपन-सा सवार हो जाता था उनपर, इसलिए लूसी बड़ी सावधानी बरतती थी कि पिता को किसी प्रकार का कोई मानसिक आघात न लग जाए। अब वकील स्ट्राइवर, कार्टन तथा डारने तीनों ही का, डाक्टर मैनेट के यहां आना-जाना शुरू हो गया। डारने और कार्टन दोनों ही लूसी को अपना हृदय दे बैठे किन्तु लूसी ने डारने को पसन्द किया। तब कार्टन ने अपने मन की बात लूसी के सामने प्रकट कर दी और कहा कि जब-तब उसने

भी वहा आने की आज्ञा दे दी जाए। उसने कहा, "जिस व्यक्ति से तुम प्रेम करती हो उसके सुख के लिए समय आने पर मैं अपनी जान भी देने मे नही हिचकूगा।"

फ्रास मे भयकर विप्लव होनेवाला था। मादाम दिफार्ज एक कठोर स्त्री थी, जो अपने पिता की शराब की दुकान मे बैठी-बैठी देखने को तो सिर्फ ऊन बुना करती थी, लेकिन वास्तव में वह एक रजिस्टर रखा करती थी, जिसमें वह जनता पर अत्याचार करनेवालो के नाम लिख लिया करती थी। इन अत्याचारियो से उसे बदला लेना था। फ्रांस की सी हालत इग्लैंड मे नही थी। इधर डारने और लूसी का विवाह हो गया और उनके एक छोटी-सी सुनहले बालोंवाली बच्ची पैदा हुई। वे लोग आनन्द से अपना समय व्यतीत कर रहे थे।

फ्रास में विद्रोह उठ खडा हुआ और सम्राट का दुर्ग भयंकर बेस्टील तोड़ दिया गया। उसपर दिफार्ज और मदाम दिफार्ज ने भीड को उकसाकर आक्रमण किया और सफलता प्राप्त की। तीन वर्ष तक फ्रास मे भयकर रक्तपात होता रहा। टेल्सन बैंक की ब्रांच से उन्ही दिनो मिस्टर लौरी को पेरिस बुलाया गया ताकि वहा के रिकार्डों की देख-भाल की जा सके। चार्ल्स डारने भी पेरिस गया। एवरेमोड जागीर मे काफी आमदनी थी। उसकी आमदनी से किसानों का भला करने के लिए चार्ल्स डारने वहां जाकर गिरफ्तार हो गया। मिस्टर लौरी पर तो कोई आपत्ति नहीं आई, क्योकि वे अग्रेज थे, लेकिन चार्ल्स फ्रांस के अभिजात वर्ग का एक व्यक्ति था, इसलिए उसको गिरफ्तार कर लिया गया और जब लोगों को यह पता चला कि वे एवरेमोंड-परिवार के हैं तो उनको एकात कारावास मे रख दिया गया।

जब उसकी गिरफ्तारी की खबर लन्दन मे पहुची, डाक्टर मैनेट, लूसी और उसकी बच्ची को साथ लेकर तुरन्त पेरिस पहुचे। वे स्वय बेस्टील के दुर्ग मे वर्षों तक बन्दी रह चुके थे, इसलिए उन्हे आशा थी कि उनके पहुचने का अच्छा असर होगा और वे चार्ल्स डारने को शीघ्र ही छुडा सकेंगे। लेकिन जब वे पेरिस पहुंचे उस समय उन्होंने देखा कि पेरिस रक्त के प्यासे क्रातिकारियो के हाथ मे था, जिनपर इतने अधिक अत्याचार अनेक वर्षों से होते रहे थे कि उनमे बडी भयकर प्रतिहिंसा भर गई थी। वे दया-ममता दिखाना एक तरह से भूल ही गए थे। यद्यपि डाक्टर मैनेट को अत्यन्त सम्मान दिया गया और उनको कारागार मे डाक्टर बना दिया गया लेकिन वे अपने दामाद को नही छुडा सके। एक वर्ष तक चार्ल्स डारने को उसकी काल-कोठरी मे रखा गया। उसके बाद हत्याकाडों का समय आ गया। इतिहास में वह समय अत्यन्त क्रूर माना जाता है। लूसी निरन्तर आशा किया करती थी, किन्तु वह अपने पति के दर्शन नही कर सकी थी।

आखिर मे चार्ल्स डारने को क्रातिकारी न्यायाधीशो के सामने उपस्थित किया गया। मादाम दिफार्ज न्यायालय मे आगे की सीटों मे से एक पर बैठी थी और बैठी-बैठी अब भी ऊन बुन रही थी। उसके मुख पर वैसी ही कठोरता विराजमान थी जैसी कि पहले रहती थी। वहां लोगो ने यह माग की कि चार्ल्स डारने को मृत्यु-दड दिया जाए। चार्ल्स ने वहां उपस्थित लोगों को बताया कि उसने स्वयं ही फ्रांस की जागीर का परित्याग कर दिया था। वह स्वय अपने अत्याचारी परिवार मे से नही था क्योंकि उसकी मनोवृत्ति दूसरे

प्रकार की थी। उसकी यह बात सुनकर न्यायालय में उस समय उसके पक्ष में और भी आवाजें उठने लगीं, जब उसने यह बताया कि वह डाक्टर मैनेट का दामाद था, वह स्वयं इसलिए फ्रांस में आया था कि फ्रांस के एक नागरिक का जीवन खतरे में था जिसे वह बचाना चाहता था अन्यथा वह फ्रांस में लौटता भी नहीं।

डाक्टर मैनेट ने लोगों से अपील की कि उसको छोड़ दिया जाय। उपस्थित जूरी ने इस बात पर विचार-विमर्श किया और यह वोट दिया कि चार्ल्स को स्वतंत्र कर दिया जाए। इस बात को सुनकर लोगों ने हर्ष से कोलाहल किया। चार्ल्स को छोड़ दिया गया और डाक्टर मैनेट उसको आनन्द मनाने के लिए अपने निवासस्थान पर ले आए। लेकिन इस समय भी उन लोगों में यह साहस नहीं हुआ कि वे पेरिस छोड़कर तुरन्त इंगलैंड चले जाएं। इसके बाद एक नई विपत्ति आई और चार्ल्स को गिरफ्तार कर लिया गया और उसको बंदीगृह में भेज दिया गया।

मादाम दिफार्ज की प्रतिहिंसा अभी तक उग्र बनी हुई थी। वह एक किसान-परिवार में जन्मी थी और उसके परिवार को एवरेमोंड-परिवार ने अत्यन्त क्रूरता से नष्ट कर दिया था। इसलिए मादाम दिफार्ज के हृदय में आग जल रही थी और वह चाहती थी कि एवरेमोंड-परिवार के प्रत्येक व्यक्ति का सर्वनाश कर दिया जाए। उसकी इस प्रतिहिंसा के कारण ही चार्ल्स डार्ने को फिर से गिरफ्तार कर लिया गया था। डाक्टर मैनेट को इसलिए सज़ा हुई थी कि एवरमोंड परिवार के अत्याचारों के विरुद्ध उन्होंने उस समय आवाज उठाई थी जबकि मादाम दिफार्ज की बहन से एवरेमोंड-परिवार के एक व्यक्ति ने बलात्कार किया था। इसलिए भी डाक्टर मैनेट एक प्रकार से मादाम दिफार्ज के प्रति उपकार कर चुके थे, लेकिन मादाम दिफार्ज की प्रतिहिंसा बड़ी कठोर थी और उसने यह निश्चय कर लिया था कि एवरेमोंड-परिवार का बीज-नाश हो जाए। यहां तक कि वह लूसी की बच्ची की भी हत्या करवा देना चाहती थी। डाक्टर मैनेट यह जानते थे कि चार्ल्स कौन था और किस परिवार में पैदा हुआ था, लेकिन उन्होंने इस बात को उसे क्षमा कर दिया था। वे कभी इस विषय पर कुछ नहीं बोले थे। चार्ल्स डार्ने स्वयं यह बात नहीं जानता था कि उसके परिवार ने स्वयं उसके ससुर पर कितना अत्याचार किया था।

अगले दिन कचहरी में दिफार्ज ने एक पत्र प्रस्तुत किया। डाक्टर ने यह पत्र बैस्टील में लिखकर छिपा दिया था। उसमें उन्होंने अपने जेल जाने की कहानी लिखी थी और सारे एवरेमोंड-परिवार के प्रति अपनी घृणा प्रकट करते हुए उसको अभिशाप दिया था। इस बार न्यायालय में किसी ने भी दया के लिए आवाज नहीं उठाई। जूरी ने शीघ्र वोट दे दिया और यह दण्ड दिया गया कि चौबीस घण्टे के अन्दर चार्ल्स डार्ने का वध कर दिया जाए।

अपने मित्रों से मिलने के लिए सिडनी कार्टन हाल में ही पेरिस आया था। उसको चार्ल्स के फिर गिरफ्तार हो जाने की खबर मिली और वहां उसे एक आदमी मिला, जो अधिकारी लोगों के हाथों में आए हुए बन्दीगृह में जासूसी का काम करता था। सिडनी कार्टन को यह बात पता चल गई। उसने उस आदमी को धमकी दी कि वह उसे चार्ल्स डार्ने

की कोठरी मे पहुंचा दे अन्यथा वह इसका भेद खोल देगा कि वह जासूस है। वह आदमी मजबूर हो गया और उसे यह काम करने को तैयार होना पड़ा। इसके बाद सिडनी कार्टन ने मिस्टर लौरी को कुछ बातें समझाईं और डारने के मुकदमे मे पहुचा। वहां उसने लूसी का विदा का चुम्बन लिया। लूसी उस समय मूर्च्छित पड़ी हुई थी।

एक घण्टे बाद चार्ल्स डारने को गिलोटीन पर चढ़ाया जानेवाला था। ठीक उस समय सिडनी कार्टन काल-कोठरी मे उसके सामने जा खड़ा हुआ। वहा कार्टन के जोर देने पर चार्ल्स डारने ने सिडनी कार्टन के कपड़े पहन लिए और अपने कपडे उसे दे दिए। सिडनी कार्टन ने चार्ल्स डारने को अपना अन्तिम सन्देश दिया और उसे जबरदस्ती बेहोशी की दवाई दे दी। अब चार्ल्स डारने बेहोश हो गया तो उसको बन्दीगृह के प्रहरी बाहर उठा ले गए। लेकिन रास्ते-भर वह इस बात पर हसते रहे कि यह अग्रेज जो अभी चार्ल्स डारने से मिलने आया था, कितने कमज़ोर दिल का था, यह उसे देखकर ही बेहोश हो गया। उनमें से यह कोई भी नही जान पाया कि सिडनी कार्टन चार्ल्स डारने से वस्त्र बदल चुका था और अब जेल के अन्दर चार्ल्स डारने की जगह सिडनी कार्टन था।

अब चार्ल्स डारने को लेकर गाडी बन्दीगृह से चल पडी। मिस्टर लौरी अपने कागजातों को लिए वृद्ध मैनेट, लूसी और उसकी बच्ची के साथ पेरिस से बाहर चले जा रहे थे। मादाम दिफार्ज के दिमाग मे एक बात आई। उसने यह चाहा कि चार्ल्स डारने की पत्नी भी ढढ ली जाए। लूसी की नौकरानी वहां मौजूद थी। उसने इस बात को छिपाने की कोशिश की कि उसकी मालकिन भाग चुकी थी। मादाम दिफार्ज ने मकान के भीतर घुसने की कोशिश की और पिस्तौल निकाल ली। लेकिन लूसी की अग्रेज नौक-रानी ने उसे पकड़ लिया और मादाम दिफार्ज अपनी ही पिस्तौल से घायल हो गई और मर गई। अगले दिन गिलाटीन पर लोगो को चढाया जाने लगा और लोगो के सिर कट-कटकर गिरने लगे। प्रतिहिंसा से भरी हुई कुछ औरतें वहा जमा थीं, लेकिन आज उनके बीच मादाम दिफार्ज नही थी। एक गाडी मे एक युवक मुस्कराता हुआ बैठा था। औरत कटते हुए सिरों को घूर रही थी। आखिर में गाडी मे से वह युवक उतारा गया। कई आवाज़ें आईं—नम्बर तेईस। चार्ल्स डारने की जगह सिडनी कार्टन गिलोटीन पर आ खड़ा हुआ। कोई भी उसे नही पहचान पाया। उसके मुख से निकला, 'आज तक मैंने जो कुछ किया है उस सबसे अच्छा काम मैं अब कर रहा हू। आज तक मैंने जो कुछ जाना-बूझा है उस सबमे अधिक शांति मुझे इसी कार्य मे मिलेगी।" कुछ ही देर में गिलो-टीन का चाकू नीचे उतरा और सिडनी कार्टन की गरदन कट गई। उस समय चार्ल्स डारने अपने परिवार के साथ फ्रास से बाहर निकल चुका था।

प्रस्तुत उपन्यास में डिकेन्स ने क्रांति के बीज दिखाए हैं जिसमें पहले अत्याचारों का वर्णन किया गया है, लेकिन निष्पक्ष दृष्टि से लेखक ने यह भी दिखाया है कि बाद में जो प्रतिहिंसा जागी वह काफी सीमा तक हृदयहीनता से भरी हुई थी। चित्रण के दृष्टिकोण से दो देशों के वातावरण को लिया गया है और लेखक ने इसमें आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की है।

डाकू और सुन्दरी
[लोरना डून[1]]

ब्लैकमोर, रिचर्ड सी०: आपका जन्म ६ जून, १८२५ को हुआ था। आपके पिता रैक्टर थे और लोंगवर्थ बर्कशायर (इंग्लैंड) में रहते थे। रिचर्ड ने छोटी आयु में ही एक पुर्तगाली लड़की से विवाह कर लिया। एक लम्बी बीमारी से आप बहुत परेशान हुए और कई बरस मुसीबतें उठाईं। लेकिन अचानक ही १८६० में आपका भाग्य चेता। आपको बागवानी का शौक था। आप ऐतिहासिक 'रोमांस' (कल्पित कथाएं) भी लिखने लगे। आपने एक नये आन्दोलन को जन्म दिया। टेडिंग्टन में २० जनवरी, १९०० को आपका देहान्त हो गया। आपका प्रसिद्ध उपन्यास 'लोरना डून' बहुत प्रभावोत्पादक है।

जॉन रिड बारह साल का था। स्कूल से एक बार अपने को बुलाने के लिए एक किसान को आया देखकर उसे आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसका पिता ही उसे एक्समूर प्रदेश में लिवा ले जाने के लिए आया करता था। यह किसान, जिसका नाम जॉन फ्राई था, चुप रहने का आदी नही था लेकिन आज जैसे वह बोलता ही नहीं था। रिड को कुछ सन्देह हो गया। उसे लगा जैसे कोई दुर्घटना हो गई थी। दोनों गाड़ी पर चलते रहे और रिड अपने बाल-हृदय में यह सोचता रहा कि आज न जाने क्या हो गया होगा। उसके फार्म का नाम प्लोवर्स बेरोज था। जब वह फ्राई के साथ वहां पहुंचा तब उसने अनुभव किया कि उसकी आशंका निर्मूल नहीं थी। उसकी मां और दोनों बहनें हृदयविदारक रुदन कर रही थीं। शांतिपूर्ण फार्म में डून लोगों का भय गहराने लगा था क्योंकि उन्होंने डकैती के लिए हमला किया था। उस समय जॉन रिड के पिता ने बाधा पहुंचाई थी। आत्म-रक्षा करते हुए वह मृत्यु को प्राप्त हो गया था और आज इस फार्म का मालिक अकेला बारह वर्षीय जॉन रिड ही रह गया था। इस फार्म के निकट ही डून लोग रहते थे। सर रेन्सर डून स्कॉटलैंड का निवासी था। उसपर इतने मुकदमे और कर्ज़ चढ़ गए कि उसने अनेक अपराध किए और इसलिए वह भागकर इस वीराने में आ गया था। पश्चिम के इन पर्वतों में जो दुर्गम घाटी थी वही उसने अपने रहने के लिए अपना ली थी। पथरीले मार्गों के कारण वहां आना-जाना बड़ा कठिन था। हत्यारों की एक बस्ती बस गई और रेन्सर डून इनपर शासन करने लगा। उस दिन से अड़ोस-पड़ोस की नींद निरापद नहीं रही। राजा ने यद्यपि प्रयत्न किए कि उस भूभाग में उसका दंड चलता रहे किन्तु कोई

[1]. Lorna Doon (Richard C. Blackmoore)

सेना वहां अपना प्रभाव नहीं दिखला सकी, क्योंकि सड़कें ही नहीं थी। इस एक्समूर प्रदेश में कोई गाड़ी नहीं चल पाती थी और राजा के सैनिक भयानक कोहरे और दलदल में चलना पसन्द नहीं करते थे। इसीलिए वह प्रदेश उपेक्षित पड़ा हुआ था। डून लोग इसलिए और भी अधिक समर्थ हो रहे थे।

जॉन रिड का पिता सदा के लिए चला गया। इस भय ने फार्म के लोगों को व्याकुल कर दिया। बारह वर्षीय जॉन रिड ने अपनी बन्दूक उठा ली और निशाना साधने का अभ्यास करने लगा। इस प्रकार वह बड़ा हो चला। उसका ५०० एकड़ का फार्म था। सम्राट एलफ्रेड के युग से रिड-परिवार ही वहां शासन करता आया था। अब जॉन रिड के ऊपर ही अपने परिवार की महिलाओं, अपने सेवकों और फार्म की रक्षा का उत्तरदायित्व आ गया था।

फिर आया एक नया दिन। जॉन रिड के जीवन में नया प्रकाश। दो वर्ष व्यतीत हो गए थे। माता बीमार पड़ गई। जॉन रिड ने सोचा कि वह एक्समूर की पथरीली नदी में जाकर मछली मार लाए ताकि मां को एक स्वादिष्ट भोजन मिल सके और उसकी अहेर की तृष्णा भी तृप्त हो सके। उस दिन सेण्ट वेलण्टाइन दिवस था। शीत का भयानक प्रहार हो रहा था। लिन नदी में हिम-खण्ड जम रहे थे। फिर भी जॉन रिड का हृदय हारा नहीं और वह पानी को भागों से भरता हुआ, फेनों के अम्बार उठाता हुआ एक चट्टान के सहारे-सहारे चलता डून लोगों के गढ़ के नीचे आ गया। मछलियों के शिकार ने उसे और भी आगे बढ़ाया और आगे पछवा जल-धारा की ओर वह आकर्षित हो गया। हिम से बहुत ठण्डे हुए पानी से आखिर उसे टकराना पड़ा। जल-वेग ने उसको पीछे फेंक दिया, अधडूबा-सा। वह लड़खड़ाता हुआ किनारे की मुलायम घास पर गिर गया और मूर्च्छित हो गया। जब उसे कुछ चेतना लौटी, उसने देखा कि आठ वर्ष की एक लड़की उसके मुख को पोंछ रही थी। मानो उसकी सुश्रूषा में वह तन्मय हो गई थी। उसके प्यार को देखकर वह सकोच से भर गया। जॉन ने कहा, "मेरा नाम जॉन रिड है। आज तक मैंने तुम जैसी बालिका को यहां नहीं देखा। तुम्हारा नाम क्या है?"

बालिका जैसे भयभीत थी। उसने धीमे स्वर से कहा, "लोरना डून।"

डून नाम सुनकर रिड मन ही मन थर्रा उठा, किन्तु बालिका मानो स्वर्ण की प्रतिमा थी। इसलिए भय रीड के हृदय में अपना उतना प्रवेश न कर सका जितना कि वह करना चाहता था। बालिका रुआंसी हो गई थी।

"घबराओ मत," रिड ने कहा। "जो कुछ भी हो, मुझे यह विश्वास है कि तुमने कभी किसीका कोई नुकसान नहीं किया। सुनो, लोरना, मैं तुम्हें अपनी पकड़ी हुई मछलियां दूंगा और मां के लिए दूसरी मछलियां फिर पकड़ूंगा।"

वह अल्पावस्था थी। वे लोग नहीं जानते थे कि जीवन की गति क्या थी। लेकिन फिर भी जैसे एक-दूसरे के पास आ गए थे।

लोरना को डून लोग अपनी रानी कहा करते थे। इस समय जैसे उसके लिए पुकार उठने लगी और डून लोग उसे खोजते हुए निकलने लगे। लोरना डर गई। उसने रिड को एक गुफा में छिपा दिया क्योंकि वह जानती थी, उसके अपने आदमियों के हाथ

रिड निरापद नहीं था। जब वे लोग चले गए, बर्फीली धारा को पार करते हुए रिड घ लौटने लगा। भयानक अंधेरी गिर आई, रात अपनी भयावनी छाया गिराने लगी। रि भयभीत-सा घर लौट आया।

फार्म में जीवन फिर चलने लगा। भेड़ों की ऊन काटने का समय आया, फि कटाई आई, फिर नये नाज कटने लगे, फिर कद खोदे जाने लगे, फिर सेब तोड़ने का समय आया। जाड़े के लिए लकड़ियां इकट्ठी की जाने लगीं और इस प्रकार एक-एक करके खेत और बाग अपने जीवन के नियमित रूपों को मनुष्यों के द्वारा संवरवाने लगे।

नवम्बर आ गया। उन दिनों जॉन के घर टॉम फेगस नाम का एक व्यक्ति आया। वह यद्यपि रिश्ते में उसका भाई लगता था और कई स्थानों पर लोग उसे अपना प्रिय मानते, परन्तु वास्तव में वह एक लुटेरा था।

फार्म में आकर उसने जॉन की बहन ऐनी को देखा। उसने अपने घोड़े पर अपने विचित्र करतब दिखाए। देखकर आश्चर्य होने लगा। किन्तु जॉन की माता उससे डरती थी। उस जैसे खतरनाक आदमी को अपनी बेटी देना उसे पसन्द नहीं था।

बड़ा दिन आ गया। जॉन की माता के रिश्ते के चाचा रियूबेन हकाबक अपने घोड़े पर डलबर्टन से अपने भतीजे के फार्म पर जाड़ा बिताने के लिए चल पड़े। किन्तु इस समय इन लोगों ने दो बार हमले किए और वृद्ध रियूबेन को लूट लिया। उसको घोड़े पर उलटा बांधकर उन्होंने लौटा दिया। किन्तु रियूबेन कोई साधारण किसान नहीं था जो इन लोगों के इस अत्याचार को भूल जाता। साधारण किसान अपने काम में लगे रहते थे और सब कुछ होनी के सहारे छोड़ दिया करते थे।

उसने जॉन रिड को साथ लिया और वहां के शासक के पास गया। किन्तु शासक ने उसकी प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया, तो वृद्ध ने कहा, "जॉन, मुझे वह जगह दिखाओ, जहां डाकू इन रहा करते हैं। मैं इनकी घाटी को एक बार अच्छी तरह देख लेना चाहता हूं।"

देर तक उसने सारी भौगोलिक परिस्थिति को जाचा और फिर वह डलबर्टन लौट गया। चलते समय उसने कहा, "जॉन, जब आवश्यकता होगी तो मैं तुम्हें बुलाऊंगा, और तुम आने के लिए तैयार रहना।

आज भी सेण्ट वेलण्टाइन का दिवस था। प्रथम बार ही जब जॉन रिड मछलियां पकड़ने लगा था तब से आज सात वर्ष बीत गए थे। एक बार फिर जॉन उस धारा की ओर चल पड़ा और लोरना उसे वहीं मिली उस धारा के किनारे खड़ी हुई; वह अब युवती हो गई थी। उसके नयनों में एक गाम्भीर्य उभर आया था। इन लोग उसमें बहुत अधिक दिलचस्पी लेने लगे थे और उसपर नजर रखते थे।

लौटते समय जॉन ने उससे कहा, "नहीं, लोरना, मैं इसे हम दोनों के बीच आखिरी बात तो नहीं मानता, लेकिन एक बात कहता हूं कि अगर कभी खतरा हो तो सामने के इस विशाल सफेद पत्थर पर कोई काला कपड़ा लटका देना क्योंकि वह मुझे दूर से चमकता हुआ दिखाई दे जाएगा और मैं समझ जाऊंगा कि तुमपर कोई संकट आ गया है।"

मधुर वसन्त की पग-ध्वनि गूंजने लगी। लोरना ने किसी खतरे का संकेत नहीं

किया। फिर एक दिन फार्म में आया राजा का आदमी, जिसने जॉन रिड से कहा कि उसको वृद्ध रियूबेन ने लन्दन बुलाया था। उसके प्रयत्न सफलीभूत हुए थे। इस व्यक्ति का नाम जेरेमी स्टीक्लिस था। उस समय जज जेफरी एक प्रभावशाली व्यक्ति था और वह उसका एजेण्ट था। लन्दन पहुंचकर जॉन की जेफरी से मुलाकात कराई गई। प्रभावशाली जज फार्म और डून में अधिक दिलचस्पी लेने को उद्यत नहीं था। उसके राजनीतिक कारण थे और वह जॉन को अपना गुप्तचर बनाकर रखना चाहता था। अनभिज्ञ था जॉन, सीधा-सादा उत्तर देनेवाला, इसलिए जेफरी के लिए वह अनुपयुक्त था। जब वह घर लौटकर आया तो उसने सफेद पत्थर पर लटकता काला कपड़ा देखा। वह चल पड़ा। एकान्त में उसने देखा, लोरना की आंखों में भय कौंध रहा था। वह जानती थी कि डाक दल में कारवर डून अपनी भीम-भुजाओं के कारण सशक्त हो गया था और चाहता था कि लोरना उसकी हो जाए। किन्तु वहीं चार्ल्स वर्थ डून भी था जो लोरना के प्रति आकर्षित हो गया था। जिस समय लोरना को अपने इन दो प्रेमियों की सूचना मिली वह घबरा गई और उसने वह कपड़ा टांग दिया था। जॉन उस समय लन्दन गया हुआ था। उसके हृदय में जॉन के प्रति अखण्ड प्रेम था, किन्तु डून लोगों की छाया ने उसकी आंखों में पलते सुनहरे संसार को जैसे धुए से ढंक दिया था और उसने कहा, "नहीं, जॉन, यहां तुम्हारे लिए खतरा है। तुम चले जाओ। जब तक मैं कभी इशारा न करूं तब तक तुम यहां न आया करो।"

एक्समूर प्रदेश के लोग प्रायः भयभीत हो जाया करते थे। कुछ अजीब-सी भयानक आवाजें आया करतीं। वृद्ध रियूबेन अपनी रहस्यमयी यात्राएं करता हुआ इस एकांत प्रदेश में बार-बार आया करता, किन्तु उनके हृदय में डून लोगों का आतंक निरन्तर जमा हुआ था। खेती चलती रही। कभी-कभी जॉन लोरना से मिल लेता। फिर कटनी आई और समाप्त हो गई। टॉम फेगस ने डकैती छोड़ दी और ऐनी से प्रेम प्रदर्शित करने आ गया। वह बराबर इधर-उधर के अपराधियों की तलाश करता और जॉन मन ही मन घबराने लगा। उसके हृदय में आशंका जग उठी कि कहीं लोरना किसी खतरे में न पड़ गई हो।

वह फिर डून लोगों के गढ़ की ओर गया और उसने लोरना को संकेत किया, किंतु लोरना उतनी दूर नहीं पहुंच सकती थी कि आकर इशारा भी दे सके। पथरीली चट्टानी भाग ऊंचा उठा हुआ था और उसके ऊपर एक विशाल वृक्ष था जिसपर सात गिद्ध अपने घोंसले बनाए हुए थे। लेकिन लोरना की एक कोर्निश सेविका थी, जो बिल्ली की तरह चचल और चपल थी। यह निर्णय हुआ कि यदि लोरना पर कोई खतरा आएगा तो वह सेविका उस पेड़ पर चढ़कर एक घोंसले को उतार लेगी और यदि दुष्ट डाकू नेता कारवर डून किसी प्रकार लोरना को उठा ले जाएगा तो वह दो घोंसले उतार लाएगी। जॉन का मन हलका हो गया। अब उसका मन खेती में लगने लगा।

कुछ दिन बीत गए। झाड़ियों के पीछे फुसफुसाहट सुनाई दी। तीन लम्बी बन्दूकोंवाले आदमी धीरे-धीरे चौरस चल रहे थे। जॉन छुपकर सुनने लगा। वह समझ गया कि ये लोग जेरेमी स्टीक्लिस की हत्या करने आए थे। ऊपरी प्रदेश के चप्पे-चप्पे को जॉन

रिड जानता था। वह एक दुर्गम छोटे रास्ते से भागा और उसने जेरेमी के जीवन को बचा लिया। इस प्रकार उनमें एक सुदृढ़ मित्रता स्थापित हो गई।

शीत ऋतु का तुषार सघन हो उठा। इस वर्ष सर रेन्सर डून का देहान्त हो गया। जॉन ने जब सुना तो उसका भय बढ़ गया क्योंकि वह जानता था कि कारवर डून जैसे भयानक डाकू की लोरना के प्रति आसक्ति को रोक सकने की सामर्थ्य यदि किसीमें थी तो वह वृद्ध रेन्सर डून में थी। और उस वर्ष तुषार भी ऐसा आया जैसा बड़े-बूढ़ों की स्मृति में नहीं आया था। पत्ते गिर गए, पेड़ ढह गए, धाराएं जम गईं, धरती के गड्ढे, समतल और उठान रुई के बादलों से ढंक-ढंक गए। झिल्ली की सी शीतल हवा और चारों ओर कड़कड़ाती सर्दी। भेड़ें बर्फ में दब गईं। खोद-खोदकर उन्हें निकाला जाने लगा। विशाल वृक्षों को काट-काटकर फार्म में निरन्तर धधकती आग पनपाई जाने लगी, ताकि मनुष्य की शिराओं में रक्त का सचार हो सके। जॉन ने एक चित्र में बर्फानी जूतों को देखकर वैसे जूते अपने लिए बना लिए।

बहुत ही ठण्डी शाम आई थी। धमनियों में जैसे रक्त जमने लगा और उसी शाम को जॉन ने देखा कि एक गिद्ध का घोंसला वृक्ष पर से गायब हो गया था।

हिमानी ऋतु, चारों ओर बर्फ और डून घाटी की ओर चल पड़ा जॉन। हृदय में आशंका, चारों ओर विरोध करती हुई शीतलता, हिमानी झंझा। जीवन जैसे आज दाव पर खेल रहा था। जब वह पहुचा, उसने देखा कि लोरना भूखी-सी पड़ी थी। घाटी में पग-पग पर बर्फ, केवल बर्फ दिखाई देती थी। धीरे-धीरे चलते भी किसी राहगीर के जाने की आवाज सुनाई नहीं देती थी और इसलिए दुष्कर्म-भरे जीवन में पहली बार डून लोगों को खाने को कुछ नहीं मिल रहा था, और लूटने के लिए उनके पास कोई व्यक्ति नही था।

जॉन के पास जो भी रोटी थी, वह लेकर वह फिर पहुंचा और अब उसने निश्चय कर लिया कि जो कुछ भी परिणाम हो, वह उसको अपने साथ लेकर ही लौटेगा। जब वह दूसरी बार डून घाटी में पहुंचा, द्वार खुला हुआ था। चार्ल्स वर्थ डून ने लोरना का पकड़ रखा था और चाहता था कि कारवर के आने के पहले उसे ले भागे। एक और आदमी कोर्निश सेविका को नीचे गिराए हुए था। जॉन रिड ने भीम शक्ति से आक्रमण किया। दोनों खिड़की में से भागे और बुरी तरह घायल हो गए। उनके चीत्कार बर्फ के तूफान में डूब गए। और जॉन अपनी प्रिया लोरना और कोर्निश सेविका को लेकर बियावान भूमि पर भागने लगा। बर्फ-गाड़ी निकट ही खड़ी थी। कुछ ही देर में वे लोग फार्म पर पहुंच गए। जॉन की माता ने जब अपने पुत्र की होनेवाली वधू को देखा, उसके हृदय में वात्सल्य जग उठा।

लोरना के पास अपने वस्त्रों के अतिरिक्त और कुछ भी तो नहीं था। बस था तो गले में एक हार बचपन का, जो गुरियों का या मणियों का था। कौन जानता था उसका मूल्य। किन्तु टॉम फेगस ने जब उसे देखा, उसने कहा, "यह तो बहुत मूल्यवान हार है। निश्चय ही अगर कारवर डून लोरना के लिए न भी आए, तो भी वह इस हार के लिए जरूर आएगा।"

जॉन के लिए एक नई चिन्ता आ गई। कुछ दिन बाद लोरना नदी के किनारे

भूल चुन रही थी। दूसरे किनारे पर वृक्ष की छाया में कारवर डून दिखाई दिया। उसने अपनी बर्बरतापूर्वक विनम्रता को दिखाते हुए बन्दूक से गोली चलाई जो लोरना के पांवों के बीच में से निकल गई और उसने पुकारकर कहा, "इस बार तुम्हें इसलिए छोड़े देता हूं कि मेरी इच्छा यही है। लेकिन मैं किसी भी वस्तु से भयभीत नहीं होता। कल तुम बिलकुल पवित्र ही मेरे पास लौट आना, जो कुछ भी साथ ले गई हो, वह तुम्हारे साथ आ जाए। और उस मूर्ख से कह देना, जिसने तुम्हारे पीछे मुझे अपना शत्रु बना लिया है, उसकी मृत्यु निकट है। उसे वह बहुत दूर न समझे।"

जेरेमी स्टीक्लिस ने डून लोगों के गढ पर आक्रमण करने का विचार कर लिया। अड़ोस-पड़ोस में से राजा के विरुद्ध विद्रोह होने की सम्भावना दिखाई दे रही थी। यद्यपि डाकू लोगों का राजद्रोह से कोई सम्बन्ध नहीं था फिर भी उसने सोचा कि इस गढ को नष्ट कर देने से एक प्रकार की प्रतिष्ठा स्थापित हो जाएगी और विद्रोहियों के भी कान खड़े हो जाएंगे। किन्तु इससे पहले कि हमला सफल होता डून लोगों ने फार्म पर हमला कर दिया। आधी रात, धुंधली चांदनी अधिक प्रकाश फैलाने में असमर्थ थी। डाकुओं का दल आगे बढ चला किन्तु जॉन ने जो चौकीदार पहले से ही लगा रखे थे, उनकी आंखों से वे डाकू छिप नहीं सके। दोनों ओर से गोलियां चलने लगीं। दो डून मारे गए और दो को बन्दी बना लिया गया। बाकी लोग भागने लगे। जॉन रिड ने कारवर का हमला अपने ऊपर झेला और उसे बुरी तरह पराजित कर दिया। किन्तु कारवर किसी तरह भाग गया। जब फार्म पर यह आक्रमण असफल हो गया तब डून लोगों ने दूसरी चाल खेली। एक वृद्ध को वे अपना गुरु कहते थे। वह सबसे अधिक दुष्ट था। सन्धि की बात करने के लिए वह लोरना डून के पास आया। फार्म के लोगों ने उसका स्वागत किया, किंतु जिस समय वह लौटा लोरना का हार भी उसके साथ चला गया। उसने जॉन रिड की बहन ऐनी को अपशकुनों की आशंका से व्याकुल कर दिया और वह हार ले आई। वृद्ध की इस चाल से जॉन रिड हृदय में दुःखी हो गया।

डाकू-दल पर आक्रमण करने की योजना बनाते समय जेरेमी स्टीक्लिस को एक विचित्र सूचना मिली। कई वर्ष पूर्व डून लोगों ने एक बच्ची को उड़ा लिया था और वह बच्ची लोरना थी। अन्तिम समय में उसकी मां ने हीरों का एक हार बच्ची के गले में बांध दिया था। जब उसकी इटेलियन नर्स, जो डेवेन शायर की एक सराय में रहती थी, बुलाई गई तो उसने लोरना के विषय में सारी सूचनाएं दीं। जेरेमी अपने उच्च अधिकारियों को डाकू दल का विनाश करने को प्रेरित करता रहा किन्तु उसे अधिक सफलता नहीं मिल सकी। तब उसने अपने एक सौ बीस आदमियों के साथ पहाड़ियों पर हमला कर दिया। किन्तु जेरेमी और जॉन का यह आक्रमण व्यर्थ हो गया। दूसरी ओर से डेवेन का विद्रोही दल टूट पड़ा और उस समय डून दल की बात जेरेमी और जॉन भूल गए। जेरेमी बुरी तरह घायल हो गया। जॉन बड़ी कठिनाई से उसे अपने साथ ला सका। इस संघर्ष में डून दल की पूर्ण विजय स्थापित हो गई। जेरेमी धीरे-धीरे ठीक होने लगा। इटेलियन नर्स को देखकर लोरना ने पहचान लिया। तब प्रमाणित हो गया कि लोरना ड्यूगल के स्वर्गीय अर्ल की बेटी थी। उसी समय चान्सरी से दूत आ गया। लोरना को

लन्दन बुलाया गया था, ताकि वह अपनी जायदाद को संभाल ले। समय आने पर व चल दी।

जॉन खेती में अकेला रह गया। डून लोगों से उसे अब भी घृणा थी। इन दि टॉम फेगस राजा से क्षमा प्राप्त करके आ गया और ऐनी से विवाह करके बस गया। बू रियूबेन हकाबक चाहता था कि जॉन उसकी भतीजी से शादी कर ले और इसलिए व उसको लेकर एक्समूर के उन दुर्गम प्रदेशों में गया जहां से वे विचित्र आवाजें आया करत थी। वहां जाकर जॉन ने देखा कि वहां एक कोर्निश धातु-विशेषज्ञ अपना इंजिन निरन्त चलाया करता था और खान तोड़ा करता था। वह एक सोने की खान थी। जब उसक इंजिन चलता था तो विचित्र-सी आवाजें उठती थीं।

सम्राट चार्ल्स द्वितीय बीमार पड़ गया। इस संवाद के फैलने से जेरेमी स्टीकिल को दक्षिण की ओर भेज दिया गया कि वह वहां समुद्र तट की देखभाल करे। चारों ओर यह आशंका होने लगी कि सम्राट के मरने पर कहीं मन्मत का चिरप्रतीक्षित विद्रोह फू न पड़े। किन्तु जॉन रिड को इस सबसे कोई मतलब नहीं था। उसे केवल अपने मित्रों का भय था। सम्राट चार्ल्स की मृत्यु हो गई।

जॉन घर लौटा। उसने देखा कि उसकी बहन ऐनी अपने बच्चे को छाती से लगाए फूट-फूटकर रो रही थी क्योंकि टॉम फेगस विद्रोही सेना में मिलकर नये सम्राट के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ था। किन्तु जॉन डून लोगों के आक्रमण के भय से फार्म को छोड़कर टॉम फेगस का पीछा करने में असमर्थ था। ऐनी विचारहीन हो गई। वह डून लोगों की घाटी में चली गई और उस दुष्ट वृद्ध गुरु के चरणों पर लोट गई और उससे प्रार्थना की कि जब तक जॉन रिड लौटकर न आ जाए तब तक डून लोग कोई आक्रमण न करें। वृद्ध गुरु ने उसे ऐसा ही वचन दिया। भारी हृदय लिए जॉन टॉम फेगस को बचाने के लिए चल दिया। यद्यपि उसके हृदय में निरन्तर आशंका बनी हुई थी और डून लोगों के वचन पर उसे विश्वास भी नहीं था। जॉन टॉम फेगस का कोई पता नहीं जानता था। वह एक जगह से दूसरी जगह भटकने लगा। चारों तरफ हत्याकांड हो रहा था। जगह-जगह लाशें बिखरी हुई मिलती थीं। राज्य-सिंहासन के लिए झगड़ा हो रहा था। अन्त में उसने देखा टॉम फेगस एक युद्ध के बाद घायल पड़ा हुआ था। जॉन ने उसकी पट्टियां बांधी, मदिरा पिलाकर उसे सचेत किया और उसे अपने घोड़े पर बैठाकर भगा दिया। किन्तु कर्नल कर्क के सैनिकों ने जॉन को पकड़ लिया। बड़ी कठिनाई से वह वहां से छूट सका, क्योंकि ठीक समय पर जेरेमी स्टीकिल उपस्थित हुआ और उसने जज जेफरी का नाम लेकर जॉन को छुड़ा दिया।

फिर भी जॉन के लिए कोई शान्ति नहीं थी। जेरेमी जानता था कि इन दिनों न्याय किसी गहरी नींव पर खड़ा हुआ नहीं था। जॉन पर कभी भी संकट आ सकता था। यहां जॉन को लोरना के बारे में पता चला। एक बड़ी पार्टी में उसने लोरना को देखा। वास्तव में अर्ल लोरना की माता के चाचा थे और वही इन दिनों उसकी देखभाल कर रहे थे। जब जॉन उसके समीप गया तब भीड़ में भी लोरना ने उसे पहचान लिया। जॉन ने देखा कि लोरना का हृदय अब भी उसकी ओर उसी प्रकार आकर्षित था।

जॉन ने देखा कि रात मे दो व्यक्ति एक भाड़ी के पास छिपे हुए थे। वे अर्ल ब्रान्दिर का धन लूटने के लिए आए थे। जॉन ने उन दोनों को गिरफ्तार कर लिया। दोनों राजनीतिक शत्रु दल के लोग निकले, जिनसे कि स्वय राजा को भय था। जॉन का भाग्य चेत गया। राजा जेम्स ने उस सवाद को सुनकर ब्रान्दिर के अर्ल और जॉन दोनो को निमन्त्रित किया और जॉन से कहा, "हम तुमसे प्रसन्न हैं। मागो, तुम हमसे क्या मांगते हो।"

जॉन ने कहा, "मैं श्रीमन्त की सेवा मे उपस्थित होना चाहता हू।" सम्राट ने प्रसन्न होकर उस समय जॉन को खड्ग देकर कहा, "आज से तुम सर जॉन रिड हुए।" जॉन कृतज्ञता से भर गया। अब वह लोरना के पद के अनुकूल हो गया। जब वह घर लौटकर आया, उसने देखा कि उसके फार्म पर डून लोगों ने अभी तक हमला नही किया था। लेकिन बाकी प्रदेश को डून लोगो ने बुरी तरह त्रस्त कर दिया था। जाड़ा बीतने के पहले ही उनका अत्याचार यहा बहुत अधिक बढ़ गया था। कारवर उनका नेता था। एक दिन वे लोग फार्म पर टूट पड़े। वहा से खाना, सामान और एक बच्चा लूट लिया और वहां के रहनेवाले की पत्नी को उन्होंने बन्दिनी बना लिया। उस समय निकट के सब भोले-भाले आदमी जॉन के पास आए और उन्होंने प्रतिज्ञा की कि वे उसकी सहायता करेंगे और उससे प्रार्थना भी की कि वह इन डाकुओं का विनाश करने मे कोई कसर नहीं छोड़े। किन्तु जॉन ने इसको स्वीकार नहीं किया। डून लोगो ने उसके ऊपर आक्रमण अभी तक नहीं किया था इसलिए उसके लिए आवश्यक था कि आक्रमण करने से पहले वह डून लोगो से कह दे कि वे सचेत हो जाए।

हाथ में सफेद भण्डा तथा हृदय पर बाइबल रखे हुए वह डून घाटी की ओर चल पड़ा। किन्तु कारवर के लोगों ने जॉन पर गोलियां चलाईं। भाग्य से ही जॉन बाल-बाल बचा और किसी प्रकार भाग निकला। वृद्ध रियूबेन ने, जोकि डून लोगो का पुराना शत्रु था, कुछ डाकुओं को स्वर्ण देकर काम लेने का विचार किया। उसने मदिरा पिलाई और डाकू लोगों को मस्त बना दिया। उनकी बन्दूकों मे शराब डालकर उनको खराब कर दिया। दिन का समय था, कारवर के अतिरिक्त एक भी डून को जीवित नही छोड़ा गया, केवल वृद्ध गुरु ज्यादा उम्र के कारण बच गया और कारवर इसलिए बच गया कि वह वहा था नहीं। इस युद्ध मे जॉन का नाम अत्यन्त प्रसिद्ध हो गया।

लोरना फिर लौट आई। वह राज दरबार मे ऊब गई थी। जज जेफरी ने लोरना को जॉन रिड से विवाह करने की आज्ञा दे दी थी। विवाह का शुभ अवसर आ गया। जिस समय पादरी ने अपने शब्द समाप्त किए, लोरना अपने प्रेमी की ओर मुड़ी और उसने प्रसन्नता से विभोर नयनों से उसकी ओर देखा। अचानक वहीं गोली चली। लोरना के हिम जैसे श्वेत वस्त्र पर रक्त की लाल धारा उमड़ आई। जॉन अपनी मृत पत्नी को अपनी माता की गोद में लिटाकर बिना हथियार लिए ही पागल-सा घोड़े पर भागा, किन्तु हत्यारा कारवर भाग चुका था। जॉन और भी आगे बढ़ा, मोड़ पर उसने कारवर को पकड़ लिया और अन्त मे भीम शक्ति से जॉन ने कारवर को पराजित कर दिया। फिर भी जॉन ने उसकी हत्या नहीं की और सिर्फ यह कहा, "अपने अपराध के लिए प्रायश्चित्त करने

को तत्पर हो, तो मैं तुझे छोड़ दूं।" किन्तु मृत्यु आ गई थी, कारवर सदा के लिए मर चुका था। धीरे-धीरे जॉन लौट चला लेकिन अभी लोरना मरी नहीं थी। उसकी सांस बाकी थी। सेवा-सुश्रूषा से धीरे-धीरे वह सचेत हो गई। जॉन भी, जो कारवर की गोली से घायल हो गया था, अब धीरे-धीरे ठीक हो गया। और एक बार फिर उस फार्म पर पराक्रमी जॉन रिड और सुन्दरी लोरना सुनहली धूप से भीगी हुई पहाड़ियों पर विहार करते हुए आनन्द से जीवन व्यतीत करने लगे।

इस उपन्यास में साहस, धीरता तथा उदात्त भावनाओं का सम्यक् सम्मिश्रण हमें प्राप्त होता है। लेखक ने जनजीवन की भी सुन्दर अभिव्यक्ति की है। हमें यहां के समग्र समाज का जीवन प्रतिबिम्बित मिलता है। नगर, ग्राम और भयानक स्थल—तीनों ही अत्यन्त सजीव हुए मिलते हैं। प्रेम का गम्भीर रूप हमें यहां बहुत ही आकर्षक रूप में दिखाई देता है।

जब रोम जल रहा था

[क्वो वादिस ?[1]]

सीनकीविक्ज, हेनरिक का जन्म १८४६ में रूसी पोलैण्ड में लुकलो नामक स्थान के पास हुआ था। आपने वारसा विश्वविद्यालय में दर्शन का अध्ययन किया था। १८७६ में आप अमेरिका गए और पोलैण्ड लौटने पर आपने अपने यात्रा-विवरण प्रकाशित किए। इससे आपको यश प्राप्त हुआ और पत्रकारिता आपके लिए लाभप्रद सिद्ध हुई। आपने अपने जीवन का अधिकांश समय वारसा और क्रैकॉव में बिताया और वारसा के पत्र 'स्लोवो' का संपादन करते रहे। १८९६ में आपका 'क्वो वादिस ?' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ जिसने आपको तुरन्त प्रसिद्ध कर दिया। इसके अनुवाद तीस भाषाओं में प्रकाशित हुए। १९०५ में आपको साहित्य पर नोबल पुरस्कार दिया गया। १४ नवम्बर, १९१६ को आपकी स्विट्ज़रलैंड में मृत्यु हुई। उस समय आप पोलैंड के लिए युद्ध में सेवाकार्य कर रहे थे।

'क्वो वादिस ?' ईसा की मृत्यु के बाद के युग का चित्रण करता है। यह एक बहुत ही सशक्त रचना है, जिसमें तात्कालीन युगांतरकारी मानववाद का अंकन मिलता है। चरित्र-चित्रण आदि की दृष्टि से यह रचना अपने-आप में बहुत ही समर्थ है।

निरंकुश स्वेच्छाचारी सम्राट नीरो किस समय क्या कह उठेगा इसे कोई नहीं जानता था। क्षण-भर में ही उसका विचार कहीं से कहीं चला जाता था। एक क्षण में वह क्रुद्ध हो जाता था और किसी भी व्यक्ति के सिर पर मौत झूलने लगती थी। दया-ममता उसमें प्रायः नहीं के बराबर ही थी।

उसके दरबार में पेट्रोनीयस सौन्दर्य का उपासक था। वह इतना बुद्धिमान और कविता का पारखी था कि स्वयं सम्राट उसको सौन्दर्य का प्रतिरूप कहा करता था। पेट्रोनियस का जीवन रोमन लोगों की भांति केवल व्यभिचार और बर्बरता में ही डूबा हुआ नहीं था। लेकिन नीरो के दरबार में व्यभिचार और हत्या सजीव हो उठे थे। पेट्रोनियस को वह सब पसन्द नहीं था, इसलिए नहीं कि वह कोई नैतिक विचारों के कारण उनको त्याज्य समझता था, बल्कि इसलिए कि वह उसे सुरुचि के अन्तर्गत नहीं मानता था। वह एक प्रकार से सनकी-सा हो गया था।

पेट्रोनियस के भतीजे का नाम था मारकस विनीसियस। विनीसियस एक बलिष्ठ

---

१. Quo Vadis ? (Henryk Sienkiewicz)—इसका हिन्दी अनुवाद हो चुका है : 'जब रोम जल रहा था'; अनुवादक : श्रीकान्त व्यास।

युवक था। एक बार उसने लिजिया नाम की एक युवती को देखा। रोम की विजयी सेना ने एक बर्बर शासक को पराजित कर दिया था। वह उसी की पुत्री थी। इस समय बंदिनी के रूप में वह रोम के एक जनरल ऑलस के पास रहती थी, किन्तु ऑलस उसे बंदिनी के समान नहीं रखता था। उसे अपनी लड़की के समान पालता था। पेट्रोनियस जानता था कि ऑलस नैतिकतावादी था और सत्यप्रिय भी। उसको निश्चय था कि विनीसियस की वासना तृप्त करने के लिए *ऑलस कभी अपनी पुत्री जैसी लिजिया को नहीं भेजेगा* किन्तु विनीसियस दग्ध हो उठा था। अन्त में पेट्रोनियस ने कहा, "विनीसियस तुम योद्धा हो। यद्यपि तुम्हारा कार्य सहज नहीं है, फिर भी सम्राट नीरो के दरबार में मेरी बात सुनी जाती है। मैं प्रयत्न करूंगा कि किसी प्रकार लिजिया को तुम्हारे लिए मांग लूं।"

पेट्रोनियस अपने वचन का पक्का निकला। अगले ही दिन सम्राट नीरो का पत्र ऑलस के पास पहुंच गया। आज्ञा यह थी कि लिजिया को राजमहल में भेज दिया जाए। ऑलस पर दुःख का पहाड़ टूट पड़ा, किन्तु सम्राट की आज्ञा को न मानने का अर्थ था अपना सर्वनाश करना। इसलिए विवश होकर उसने लिजिया को सम्राट के यहां भेज दिया। लिजिया के साथ उसका सेवक उर्सस भी गया। उर्सस ने बचपन से लिजिया को देखा था। वह दीर्घाकार बर्बर एक दैत्य जैसा दिखाई देता था। उसमें अविश्वसनीय शक्ति थी किन्तु उसका हृदय बच्चे की तरह कोमल था। ऑलस ने अपनी बेटी को विदा दी। *यद्यपि वह हृदय में अच्छी तरह जानता था कि आज वह अपनी बेटी को मृत्यु की गोद में* नहीं भेज रहा था बल्कि अपमान उसकी पुत्री को ग्रसने के लिए सामने खड़ा था। किन्तु लिजिया के हृदय में एक विश्वास था। वह किसी प्रकार भी विचलित नहीं दिखाई देती थी। *वह ईसाई धर्म को स्वीकार कर चुकी थी। अनेक देवताओंवाले रोम में* जहां व्यभिचार का बोलबाला था, ईसाई धर्म का प्रारम्भ मनुष्य की प्रीति और सुख-शान्ति का प्रतीक बन गया था। अनेक रोम-निवासी गुप्त रूप से ईसाई हो गए थे और वह भी उन्हीं में थी।

दो दिन लिजिया सम्राट के महल में रही। अधनंगी युवतियां, बहती हुई मदिरा, व्यभिचार, वैभव का अतिचार, निरंकुश अट्टहास इन सबने राजमहल को नरक के समान बना रखा था। पहली ही शाम को उसे सम्राट के भोज के समय उपस्थित होने को विवश किया गया। चारों ओर का नारकीय दृश्य देखकर लिजिया के रोंगटे खड़े हो गए।

उसने विनीसियस को पहले भी ऑलस के घर पर देखा था। उस समय उसे वह एक आकर्षक युवक के रूप में दिखाई दिया था, किन्तु अब अपनी वासनामय चेष्टाओं के कारण वह उसे भयानक दिखाई देने लगा। एक दिन विनीसियस वासना से मत्त होकर उसकी ओर बढ़ने लगा। लिजिया मूर्च्छित-सी हो गई। उसी समय उर्सस आ गया और उसने लिजिया को अपने कन्धे पर उठाकर उसे सुरक्षित स्थान में पहुंचा दिया। अगले दिन जब लिजिया को यह ज्ञात हुआ कि सन्ध्यावेला में उसे विनीसियस के घर राजाज्ञा से जाना पड़ेगा तो उसने सारी आशा ही छोड़ । किन्तु जिस समय दास उसे उठाकर ले जा रहे थे, सड़क पर एक झगड़ा हो गया और उस हलचल में उर्सस अपनी तरुण स्वामिनी को लेकर एकान्त में छिप जाने में समर्थ हो गया।

विनीसियस अभिमानी था, हठीला भी। जब उसे पता चला कि इतने परिश्रम से प्राप्त लिजिया उसके हाथ से निकल गई तो फिर वह क्रोध और विक्षोभ से व्याकुल हो गया। उसने अपने मित्रों से मिलना-जुलना बन्द कर दिया और दासों पर अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिया।

पेट्रोनियस ने उसको शान्त करने के लिए अपनी दासी यूनिस उसको देने के लिए प्रस्तुत की, किन्तु विनीसियस ने स्वीकार नहीं किया और यूनिस ने भी पेट्रोनियस का घर छोड़ने से इन्कार कर दिया। दासी का यह दुस्साहस देखकर पेट्रोनियस को अत्यन्त आश्चर्य हुआ, किन्तु जब उसे यह मालूम पड़ा कि यूनिस का हठ अपने-आप में कुछ भी नहीं था, वह तो स्वयं पेट्रोनियस के प्रेम में विह्वल थी, तब उसका क्रोध शान्त हो गया। उसने उसको ध्यान से देखा तब उसे उसमें एक नया सौन्दर्य दिखाई देने लगा। उसकी आंखों में उसे प्रेम दिखाई दिया जो आज तक के जीवन में उसको कभी नहीं मिला था। प्रेम ने पेट्रोनियस के हृदय में एक नई शक्ति और श्रद्धा का उदय किया।

किन्तु विनीसियस की समस्या अब भी वैसी ही थी। चतुर पेट्रोनियस ने एक ग्रीक जासूस को अपने पास बुलाया, जिसका नाम था चिलो चिलोनिडीज। यह ग्रीक बड़ा वाक्‌चतुर और बड़ा ही चालाक था। धन के लिए उसने लिजिया को ढूंढ निकालना स्वीकार कर लिया। उसने कहा, "पेट्रोनियस ! तुम एक महान व्यक्ति हो। यह सच है आज लोग तुम्हारी मेहनत को स्वीकार नहीं कर रहे, लेकिन एक दिन ऐसा आएगा जब लोग विवश होकर तुम्हारी विचक्षण बुद्धि को देखकर अपना सिर झुका देंगे। इसलिए तुम विश्वास रखो कि मैं लिजिया को ढूंढ निकाल लूगा। मैंने ये बाल अकारण ही सफेद नहीं किए हैं। लेकिन मैं बहुत दरिद्र हूं और दरिद्रता बुद्धि से शत्रुता पैदा कर देती है।" पेट्रोनियस ने उस व्यक्ति की कुशाग्र बुद्धि को देखा और उसको और धन दिया।

पेट्रोनियस ने शीघ्र ही पता चला लिया कि लिजिया ईसाई धर्म में दीक्षित हो चुकी थी। क्रिसपस नाम का एक व्यक्ति ईसाई था। वह अपने घर में अन्य ईसाइयों को छिपाकर रखता था। चिलो ने लिजिया को वहां ढूंढ लिया। इतनी ही देर के लिए प्रतीक्षा करना भी विनीसियस को मुश्किल हो गया। ज्योंही उसे लिजिया का पता चला, वह क्रिसपस के घर पहुंच गया। उसने उर्सुस को वहां देखा। जब विनीसियस ने बल प्रयोग करने का प्रयत्न किया, तब उस भीमकाय बर्बर दैत्य जैसे उर्सुस ने उसे ज़ोर से दे मारा। क्षण-भर को ऐसा लगा जैसे विनीसियस मर गया हो।

लेकिन जब विनीसियस को होश लौटा तो यह देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि ईसाई लोग उसकी बड़े प्रेम से सेवा-शुश्रूषा कर रहे थे, मानो वह उनका शत्रु नहीं मित्र था। विनीसियस धीरे-धीरे ठीक होने लगा। उसकी सेवा में और कोई नहीं स्वयं लिजिया रहा करती थी। विनीसियस की वासनाओं का पर्दा फटने लगा, और उसमें एक पवित्र प्रेम अंकुरित हुआ जिसकी वह पहले कभी कल्पना भी नहीं करता था। लिजिया बैठी उसे ईसामसीह के उपदेश सुनाया करती। विनीसियस ने कहा, "लिजिया ! मैं तुम्हारी बातों को स्वीकार करता हूं। मैं निश्चय ही तुम्हारे इस नये देवता को भी अपने अन्य देवताओं के साथ स्थान दूंगा।" लेकिन लिजिया ने अपना मुंह फेर लिया। उसने कहा,

"मेरे देवता इन सब देवताओं से भिन्न हैं, विनीसियस, मैं जानती हूं कि देवताओं की भीड़ बढ़ाने से मनुष्य की मुक्ति नहीं हो सकती, इसलिए कि उन सब देवताओं को मनुष्य ने अपनी वासना से रंग दिया है, ईसामसीह का वचन शुद्ध परमात्मा से मिलन कराता है क्योंकि वह मनुष्य के जीवन का गौरव सिखाता है, मनुष्य-मनुष्य से प्रेम करना सिखाता है। मैं जिस विचारधारा में विश्वास करती हूं वह केवल उपासना से ही सम्बन्ध नहीं रखती, बल्कि समग्र जीवन के चिन्तन को परिवर्तित करने में अपना सौष्ठव देखती है।"

विनीसियस उसकी बातों को नहीं समझ सका, किन्तु उसके हृदय में ईसाइयों के प्रति एक आदर जाग गया। रोम की उस अहंकार-भरी, व्यभिचार से ग्रस्त सभ्यता में ईसा का संदेश मनुष्य की नई प्रतिष्ठा करता था। उस समय वह प्रेम का संदेश सुना रहा था। जिसमें गये मानदंड जीवन को उजागर करने के लिए प्रस्तुत हो रहे थे। चारों ओर दासों का कोलाहल हो रहा था। उनपर अत्याचार हो रहे थे; अधिकारी लोग दूसरों को यंत्रणा देते थे। उनकी निरंकुशता से चारों ओर यातना का साम्राज्य फैल गया था। ईसा का स्नेह-भरा संदेश उस मारकीन हृदय में स्नेह और समता का संदेश था।

उस घर में एक व्यक्ति आया करता था। उसको सब लोग ईश्वर का दूत पीटर कहा करते थे। उसमें असीम करुणा थी। वह जैसे मनुष्यमात्र से प्रेम करता था। शीघ्र ही पीटर के विनम्र व्यवहार ने विनीसियस को उसका प्रशंसक बना दिया किन्तु लिजिया के हृदय में सन्देह था और वह भी वेदना से व्याकुल-सी हो उठी। उसने अनुभव किया कि वह इस मूर्तिपूजक विनीसियस से प्रेम करती थी और इसलिए अपने को पापिनी समझने लगी थी। क्रिसपस की सलाह से वह घर छोड़कर भाग गई। विनीसियस अच्छा हो गया था, अब वह उसे ढूंढ़ने लगा, किन्तु लीजिया जैसे गायब हो गई थी। अन्त में विनीसियस ने पीटर से प्रार्थना की। पीटर ने उसकी बात सुनी और उसके प्रेम की गहराई का अनुभव किया। उसने उन दोनों के विवाह की आज्ञा दे दी और लिजिया को उसके प्रेमी के पास भेज दिया।

ज्योंही विवाह हुआ विनीसियस को सम्राट की ओर से एनथियम जाने की आज्ञा प्राप्त हुई। आजकल सम्राट वहां आनन्द मनाने चला गया था। प्रतिदिन उसकी पशुता अधिक से अधिक हिंस्र होती चली जा रही थी। छतों पर केसर बिछी रहती, सुवास से चारों ओर वातावरण महकता रहता। जिस प्रकार सम्राट उच्छृंखल था उसी प्रकार उसकी रानी पॉपिया विलास के साधनों में डूबी रहती। वह प्रतिदिन गधियों के दूध से नहाती ताकि उसकी त्वचा स्निग्ध बनी रहे। उसके बाद कुलीन रोमन रमणियां उसकी कृपा के लिए लालायित रहतीं कि उसके नहाए हुए दूध में वे भी एक बार डुबकी लगा सकें ताकि उनका भी गौरव बढ़ सके। वैभव और विलास की पराकाष्ठा हो रही थी।

दूसरी ओर दरिद्रों का हाहाकार रोमन साम्राज्य के आकाश में आहों का धुआं [illegible] था। घोर विभीषिका में सम्राट नीरो का हृदय जैसे अधिक से [illegible] पागल होता चला जा रहा था। मनुष्यता जैसे कहीं नाम- [illegible] थी। उसके हृदय में बर्बरता शिखर पर पहुंच गई, और एक दिन

उसने रोम में आग लगाने की आज्ञा दी। कहा जाता था कि प्राचीन काल में ट्रॉय नगर में आग लग गई थी, उसी समय महाकवि होमर ने धधकती हुई लपटों को देखकर अपने 'इलियड' नामक महाकाव्य का सृजन किया था। सम्राट नीरो अपने को महाकवि समझता था। चारों ओर उसे खुशामद मिलती थी। उसकी बुरी से बुरी कविता की लोग प्रशंसा करते थे। एक दिन उसने अपनी कविता सुनाई। सब लोग चाटुकारिता में उसकी प्रशंसा करने लगे। यहां तक कि सिसरो जैसा विद्वान भी भयभीत होने के कारण कुछ नहीं कह सका। किन्तु पेट्रोनियस ने जब सुना तो उसने कहा, "यह कविता आग में झोंक देने के योग्य है।" यह सुनकर सब लोगों ने दांतों-तले जीभ दबा ली। उनको निश्चय हो गया कि अब नीरो पेट्रोनियस को जान से मरवा डालेगा। लेकिन पेट्रोनियस-सा चतुर व्यक्ति दरबार में अन्य नहीं था। सम्राट् नीरो स्वयं उसका साहस देखकर अवाक् रह गया। उसके मुख से निकला, "क्या कह रहे हो तुम!"

पेट्रोनियस ने कहा, "ओ विद्वान सम्राट! यदि यह रचना महाकवि होमर की कलम से निकली होती या महाकवि वर्जिल ने लिखी होती तो मैं मान सकता था कि यह एक अच्छी कविता थी, लेकिन आपके गौरव के लिए ऐसी कविता बहुत रद्दी है, इसलिए मैं कहता हूं कि इसे आग में झोंक देना चाहिए।"

दरबार में उपस्थित लोग और स्वयं सम्राट उसकी प्रशंसा से चकित रह गए क्योंकि पेट्रोनियस ने यद्यपि स्पष्ट कह दिया था कि यह कविता आग में जला देने योग्य थी, फिर भी सम्राट् को मूर्ख बनाकर उसने अपनी रक्षा भी कर ली थी।

सम्राट की आज्ञा से रोम में आग लगा दी गई और सम्राट ने अपना वाद्य-यंत्र संभाल लिया और तारों को झनझनाने लगा। अब उसे आशा थी कि उसकी कविता जाग उठेगी।

महानगर रोम धू-धू करके जलने लगा। उसके फाटक बन्द कर दिए गए थे। नागरिक जलने लगे। लपटें उठने लगीं। सड़कों पर सैनिक भागनेवालों को कोड़े मार-कर पीछे हटा देते। दीवालें और छतें आग की गर्मी से जर्जर होकर गिरने लगीं और निरीह प्रजा का विध्वंस होने लगा। चारों ओर भयानक हाहाकार मच उठा। प्रचंड वेग से चलने-वाले घोड़ों के रथ पर खड़े होकर विनिसीयस रोम की ओर भागा। राज सेवकों ने उसे मार्ग में रोकने की चेष्टा की। किन्तु विनीसियस ने कोड़े मार-मारकर उन्हें नीचे गिरा दिया और किसी प्रकार रोम में घुस गया। वह लिजिया की रक्षा करने के लिए उसे ढूंढने लगा। स्त्रियां आर्तनाद कर रही थीं। बच्चे झुलस रहे थे। पशुओं को हांक-हांककर लोग बाहर ला रहे थे। चारों ओर प्रलय-सा दृश्य उपस्थित हो गया था। धीरे-धीरे ज्वालामुखी की लपटों की तरह आग आकाश को चूमने लगी। शताब्दियों से इस रोम में कलाकारों और शिल्पियों ने सौन्दर्य की रचना की थी। जहां ज्ञान का अपरिमित भंडार पड़ा था, उसमें एक निरंकुश सम्राट की स्वेच्छा को तृप्त करने के लिए आग लगा दी गई थी और इधर लोग मर रहे थे, उधर हृदयहीन सम्राट नीरो अपना वाद्य-यंत्र बजा-बजा-कर अपनी कविता को जगाने की चेष्टा कर रहा था।

आग के शान्त होने पर प्रजा में विप्लव की भावना जाग उठी। भीड़ टूट पड़ी

और उन्होंने सम्राट से आग लगाने का कारण पूछा। नीरो डर गया। इस समय उसे बचने का कोई उपाय दिखाई नहीं दे रहा था। अन्त में उसकी बुद्धि काम कर गई। वह जानता था कि गुप्त रूप से ईसाई लोग रोम में निवास करते थे। रोम के निवासी देवताओं के उपासक थे और इन ईसाइयों से घृणा करते थे। उसने आग लगाने का दोष ईसाइयों पर लगा दिया।

हजारों ईसाइयों की हत्या की जाने लगी। खुली रंगशाला में ईसाई घेर-घेरकर लाए जाने लगे। उन पर भूखे सिंह छोड़ दिए जाते और उनकी बोटी-बोटी छितर जाती। ईसाइयों को अपने इस बलिदान के प्रति गर्व था।

लिजिया भी बंदिनी हो गई; और यद्यपि उसको छुड़वाने में विनीसियस और पेट्रोनियस राज-क्रोध के पात्र बन गए, फिर भी वह नहीं छूट सकी। अन्त में वह दिन आ गया जब लिजिया को मृत्यु का सामना करना था। खुली रंगशाला में एक जंगली सांड के सींगों से उसे नंगी करके बांध दिया गया। और उस को उर्सुस सांड से लड़ने के लिए मैदान में छोड़ दिया गया। सबको निश्चय था कि सांड उर्सुस को मार डालेगा और सींगों पर बंधी लिजिया भी सदैव के लिए चली जाएगी। सम्राट ने देखा कि उत्तेजना से चारों ओर की भीड़ कोलाहल करने लगी थी। विचित्र दृश्य था। सींगों पर बंधी हुई अनिंद्य सुन्दरी लिजिया नंगी ही दिखाई दे रही थी और स्त्री-पुरुषों की भीड़ निर्लज्जता से उसे देख रही थी। ऐसा था उस समय का पागल रोम और सामने खड़ा था उसका दैत्याकार उर्सुस, जिसके मुख पर एक शिशु सुलभ कोमलता थी। सांड भाग चला। उर्सुस झुक गया और प्रतीक्षा करने लगा। भीड़ से तुमुल कोलाहल उठा, फिर सांड के खुर धरती पर बजने लगे। वह उर्सुस पर टूट पड़ा। भीड़ निस्तब्ध हो गई। सुई गिरने की भी आवाज सुनाई दे सकती थी। विनीसियस ने अपनी आंखें मूंद लीं किन्तु उसी समय चारों ओर इतना कोलाहल मचा कि आकाश जैसे फटने लगा। रोम की प्राचीन दीवारें उस भयंकर निनाद से कांपने लगीं। विनीसियस ने आंखें खोलकर देखा कि बलिष्ठ उर्सुस ने सांड के सींगों को पकड़ लिया था और अब वह जन्तु टस से मस नहीं हो पा रहा था। उस भीम विक्रम को देखकर भीड़ में एक आवेश छा गया और चारों ओर से उर्सुस और लिजिया के प्राणों की रक्षा के लिए पुकार उठने लगी। आज तक उन्होंने ऐसा विचित्र दृश्य नहीं देखा था। एक-एक पेशी उभर आई थी उर्सुस की, और सांड यद्यपि सम्पूर्ण प्रयत्न से उसपर झपटना चाहता था, किन्तु इस समय अपना सिर उठाना भी उसके लिए असम्भव हो गया था। सम्राट को विवश होकर लिजिया और उर्सुस को प्राण-दान देना पड़ा।

विनिसियस ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया और वह लिजिया को लेकर महानगर से बाहर भाग गया। किन्तु सम्राट नीरो पेट्रोनियस से क्रुद्ध हो गया। पेट्रोनियस ने जब सुना तब वह उपेक्षा से हंसने लगा। उसने अपने सब दासों को मुक्त कर दिया और अपनी प्रिय दासी यूनिस से कहा, "आज मुझे अपने हाथ से मदिरा पिला दो और एक पैनी छुरी लाकर मेरे पास रख दो।"

यूनिस की काली आंखें चमक उठीं। वह बोली, "तुम अकेले तो नहीं जाओगे? क्या मैं तुम्हारे साथ नहीं चलूंगी?"

पेट्रोनियस ने कहा, "सम्राट की आज्ञा आई है, पगली तू नहीं जानती मुझे कहां जाना है।"

"मैं जानती हूं, यूनुस ने कहा और उसने अपने हाथ और पैरों की नसों को काट-कर, लहू से भीगी हुई छुरी पेट्रोनियस की ओर बढ़ा दी। पेट्रोनियस ने भी अपनी नसों को काट दिया और दोनों आलिंगन करके मृत्यु की गोद में सो गए।

नीरो भी बहुत अधिक दिन नहीं जिया चारों ओर विद्रोह फैल गया। प्रजा, दर-बारी, मित्र सब उसके विरुद्ध हो गए थे। उसकी जघन्य बर्बरता, जोकि पागलपन के समान थी, लोगों को क्रुद्ध कर उठती थी। लोगों ने घोषणा कर दी कि नीरो उनका सम्राट नहीं है। सिनेट के सदस्य एकत्रित हुए और उन्होंने उनके विरुद्ध न्याय किया और उसको प्राण-दण्ड दे दिया। नीरो कायर था और उसमें आत्महत्या करने की शक्ति नहीं थी, इसलिए उसके एक वफादार नौकर ने उसकी हत्या कर दी।

संत पीटर भी अधिक दिन नहीं जिए। उनके शिष्यों ने उन्हें सलाह दी कि वे रोम से बाहर भाग जाएं किन्तु जिस समय वे बाहर निकलने को हुए तो उन्हें एक प्रकाश-सा दिखाई दिया और एक गम्भीर नाद सुनाई पड़ा। पीटर ने देखा, वह स्वयं ईसामसीह थे। उन्होंने पूछा, "प्रभु ! आप कहां जा रहे हैं ?" ईसामसीह ने उत्तर दिया, "मैं फिर से रोम जा रहा हूं ताकि मुझे सूली पर चढ़ाया जाए, क्योंकि मनुष्य अभी तक सुखी नहीं हो सका है।"

तब संत पीटर की समझ में आया कि अभी भी उनका कर्तव्य पूरा नहीं हुआ था और तब वे अपने साथियों के साथ मरने के लिए महानगर रोम के द्वार के भीतर चले गए।

ईसाई धर्म के आविर्भाव ने एक भयानक विलासिता के जगत में मनुष्य को समा-नता का स्वर उठाया था। उस समय ईसाइयों पर भयानक अत्याचार किए गए थे। लेखक ने मनुष्य की वेदना का अत्यन्त सजीव चित्रण किया है।

पियरे लुई :

यौवन की आंधी
[अफ्रोदिते[1]]

लुई, पियरे का जन्म सन् १८७० में हुआ और मृत्यु १९२५ में। आप फ्रेंच कवि और उपन्यासकार थे। आपने दर्शन का अध्ययन भी किया। 'अफ्रोदिते' आपकी एक महान रचना है, जो १८९६ में प्रकाशित हुई। इसका अनुवाद संसार की अनेक भाषाओं में हुआ है। इसमें आपने मिस्र की प्राचीन सभ्यता और यूनानी संस्कृति का चित्रण प्रस्तुत किया है। आपपर अश्लीलता का दोषारोपण किया गया, किन्तु आपने कथानक के युग-विशेष की नैतिकता का ध्यान रखकर वातावरण की सृष्टि की।

वह यौवन में गदराई हुई बिस्तर पर पड़ी थी। उसने अंगड़ाई ली। उसके केश अत्यन्त सुन्दर थे। एलेक्जेंड्रिया की समस्त गणिकाओं में उसका नाम बहुत विख्यात था। उसको देखकर रूप के दीवाने उसपर कविताएं लिखते, मानो वह रूप की देवी अफ्रोदिते थी। वह यहां की रहनेवाली नहीं थी। उसे इस देश में आना पड़ा था। अपनी बारह वर्ष की अवस्था में वह कुछ घुड़सवारों के साथ चल पड़ी थी। वे हाथी दांत के व्यापारी थे जो उस समय टायर जा रहे थे। उन लोगों ने उसे अच्छा भोजन दिया और वही लोग उसे ऐलेक्जेंड्रिया में लाकर छोड़ गए थे। उसकी एक हिन्दू दासी थी जिसको वह ज्वलन्त कहने की बजाय दृजाला कहती थी। एलेक्जेंड्रिया में गणिका बनने के बाद उसने अनेक देशों की भाषाएं सीख ली थीं। उसने अपना जादू लोगों पर फैलाकर अपार धन एकत्रित कर लिया था।

कुछ वर्ष तक वह इसी प्रकार अपने जीवन से संतुष्ट बनी रही। किन्तु उसके जीवन में एक उदासी छाने लगी तब उसने देखा कि वह बीस वर्ष की हो चुकी थी। उसमें एक नये विकास, एक नये उन्माद ने अपना सिर उठाया था। वह चिल्ला उठी, "दृजाला दृजाला !"

"कल कौन आया था दृजाला ?" उसे देखते ही गणिक क्रैसिस ने पूछा, "वह कब गया था, क्या दे गया वह !"

दासी उसके आभूषण ले आई जो उसका प्रेमी रात को दे गया था। "आह, दृजाला !" उसने आश्चर्य से उन्हें देखकर कहा, "जीवन में कुछ विचित्रता नहीं आ रही

---

१. Aphrodite (Pierre Louys)—इस उपन्यास का हिन्दी में अनुवाद हो चुका है : 'यौवन की आंधी'; अनुवादक : महावीर अधिकारी; प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।

है। कुछ विशेष घटना होनी चाहिए।"

उसने आगे कहा, "कोई मुझे देखकर दीवाना हो उठता है तो मैं उसको सताने मे आनन्द पाती हू। जो मेरे पास आते हैं वे कुत्ते हैं। वे इस योग्य भी नहीं कि मैं उनकी मौत पर आसू बहाऊं, पर दोष उनका ही तो नही है मेरा भी तो है। मैं ही तो उन्हे यहां आने देती हू पर यहा आकर मूर्ख मुझसे प्रेम क्यो करते हैं !"

क्रेसिस उठी और खड़ी हो गई और फिर वह स्नानघर में चली गई। स्नानघर से जब वह बाहर आई तो उसने दृजाला से कहा, "मेरे शरीर को पोंछो !" दृजाला उसका शृंगार करने लगी तब उसने दासी से कहा, "गाओ !" दृजाला गीत गाने लगी। क्रेसिस उसके गीत को सुनकर मुग्ध हो गई और स्वयं भी मधुर कंठ से उसके साथ गाने लगी—'मेरी केशराशि समस्त समतल भूमि पर बह रही नदी के समान है जिसके सम्पर्क में सदियों की उदासी नहीं ठहर पाती''बिना डंठल की कलियों के समान तेरे रतनारे नयन हैं जो भीतरी ताल के तीर पर निश्चल पड़े हैं''घनी छाह के नीचे गहरी झील के सदृश्य मेरी आखें हैं जो पलको के भार से सदा अलसाई रहती हैं।' इसी प्रकार वे लोग गाती रहीं। सहसा वह खड़ी हो गई और उसने कहा, "अरे रात हो गई, तब मैं बाहर कब जाऊंगी।" और उसने दृजाला से कहा, "मैं अब शिकार करने जाती हूं।" और फिर वह खिलखिलाकर हस पड़ी।

जब वह घर से बाहर निकली, पथ सुनसान था। क्रेसिस हलके स्वर से गुनगुनाती चली जा रही थी। ऐलक्जेंड्रिया के समुद्र-तट पर दो स्त्रियां बासुरी बजा रही थी। उस समय वहां बहुत भीड़ थी। भीड़ का कोलाहल इतना अधिक था कि उसने समुद्र की रोर को भी दबा दिया था। गणिकाओं का यहा साम्राज्य था। यहां सभी भाति के लोग आते थे। विलास और आनन्द के लिए जैसे सारा ससार तृष्णा से व्याकुल था। वे लोग दासियों की नई कीमत के बारे मे बातचीत करने लगे। वहा वे लोग कपड़े, गहने, नगी औरतो, विलास और दासियों के अतिरिक्त कोई विशेष बात नही करते थे। धीरे-धीरे भीड़ हट गई। सामने ही विचित्र पोशाक पहने एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति कठघरे पर झुका खड़ा था। टाइफेरा नामक गणिका ने उसे देखा और उससे कहा, "मुझे लगता है तुम परदेशी हो।"

अजनबी ने कहा, "हां मैं यहां का रहनेवाला नही हू। मैं केबेरा का निवासी हू। मैं यहा अनाज बेचने आया था। अब की फसल भी अच्छी हुई थी। भगवान की असीम कृपा है कि मैंने यहा आकर ५२ मीनी बचा ली। देखो, मैं यहा के बारे मे कुछ भी नही जानता, तुम यहा के लोगो के बारे मे बताओ ना।"

टाइफेरा ने कहा, "हा, मैं तुम्हें यहा सब लोगों का परिचय दूगी।" और यह कहकर वह आते-जाते लोगो को दिखाने लगी। कोई दार्शनिक था, कोई मूर्ख था, किसीको उसने धूर्त बताया और किसीको कूट राजनीतिज्ञ। कोई कवि था। तभी सारी भीड़ हिल उठी, मानो समुद्र मे ज्वार हिल उठा हो। सभी फुसफुसाने लगे, "डिमीट्रिअस, डिमीट्रिअस !" टाइफर ने भी उस नाम को दोहराया और कहा, "यह व्यक्ति कभी बाहर नही निकलता। आज मैंने समुद्र तीर पर इसे पहली बार देखा है। यह रानी का प्रेमी है। इसीके सामने रानी ने नगी होकर देवी अफ्रोदिते की मूर्ति बनाई थी। यह महान कलाकार है। यह सारे

मिस्र का स्वामी बन गया है और एपोलो के समान सुन्दर है। किन्तु यह मुझे दुःखी लग रहा है।"

सूर्य अस्त हो चुका था। स्त्रियां उस व्यक्ति को विस्फारित नेत्रों से देख रही थीं। किन्तु डिमीट्रिअस मानो किसीकी भी आवाज नहीं सुन रहा था। रात गहरी हो चली, लोग धीरे-धीरे लौट चले। उस समय एक सुन्दरी दीवार की आड़ से बाहर निकली और डिमीट्रिअस की ओर बढ़ी। वह अब भी निर्विकार खड़ा था। सुन्दरी ने उसपर एक पीला गुलाब फेंका। डिमीट्रिअस ने उधर देखा भी नहीं।

तीन गायिकाएं समुद्र-तट पर बैठी थीं। डिमीट्रिअस उनके निकट आ बैठा। आज उसका हृदय कुछ भारी-सा हो रहा था। महानगर की सारी स्त्रियां उसे देखकर मानो विह्वल हो जाती थीं। स्त्रियों के उपहारों से उसका घर भर चुका था। वह ऐसी स्थिति पर पहुंच गया था कि जैसे उसकी भावनाएं मानो मर गई हों। उसके पैरों से स्पर्श प्राप्त धूलि को भी नागरिक स्त्रियां समेटकर रखने को उद्यत रहती थीं। उसे वह सब भयानक और वीभत्स दिखाई देता था। अपने जीवन को उसने दो भागों में बांटा—एक प्रेम और दूसरा वासनामय क्षेत्र। उसने अफ्रोदिते की जो मूर्ति बनाई थी उसमें रानी का तमाम सौंदर्य उतार दिया था और उसने उसमें अपनी ओर से भी लावण्य की रेखाएं बना दी थीं। असली रानी से उसका आकर्षण हट गया था और वह इसी पाषाण से प्रेम करने लगा था। वह इसे स्त्रीत्व की पराकाष्ठा समझता था और जितना उसे देखता उतना ही उसका उसके प्रति अनुराग बढ़ता जाता था। उसका संसार विचित्र था। उस मूर्ति और रानी के बीच वह झूलता रहता और जैसे उन दोनों से ही उसका जी नहीं भरता।

जब वह महल में नहीं जाता था तो उस मंदिर में चला जाता जो पवित्र गणिकाओं से भरा रहता था। वह पुजारिनों से बड़ी देर तक बातें करता। आज वह उस मंदिर में घुसते ही घबरा गया, क्योंकि पुजारिनें अब पथ-भ्रष्ट होकर घने पेड़ों की छाया के नीचे अर्धनग्न होकर उसे बुला रही थीं। रात गहरी हो चली थी वह धीरे-धीरे मिस्र की मिट्टी को रौंदता, नगर की गुलाब और मेंहदी-मिश्रित सुगन्धित वायु को सूंघता आगे बढ़ने लगा। आज उसे विचित्र-विचित्र विचार आ रहे थे। चलते-चलते वह रेतीले ढूह के नीचे आ गया। उसने उसपर सिर उठाकर देखा। सामने एक स्त्री का पीला वस्त्र दिखाई दिया। वह उस निर्जन स्थान में अकेली भला क्या कर रही थी? धूमिल चांदनी में वह धीरे-धीरे पास आ गई। जब वह उसके पास से निकली तो उसने देखा कि उस स्त्री को जैसे देखा तो नहीं। वह अपने ही ध्यान में मानो मग्न थी। डिमीट्रिअस को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। कौन थी वह स्त्री जो उसकी ओर पलक उठाकर भी नहीं देख रही थी। वह सीधी फरोआ के द्वीप की ओर पहाड़ी के पास बढ़ गई और अन्धकार में विलीन हो गई।

डिमीट्रिअस हतबुद्धि हो गया। उसे लगा जैसे वह उस स्त्री से न जाने कब से प्रेम करता था। वह उसके पीछे भागा किन्तु सहसा उसे अपनी भूल का ध्यान हो आया, वह रुक गया। उसकी मर्यादा खो जाने को थी। इसलिए उसे अपने ऊपर क्रोध भी आया और लज्जा भी। परन्तु यह स्त्री अकेली वहां क्यों आई थी? यह विचार उसे अब सताने

लगा। कैसी विचित्र स्त्री थी ! उसका रूप अनिंद्य था। उसी समय वह स्त्री वापस आने लगी। स्त्री ने अचानक राह में खड़े डिमीट्रिअस को देखा। डिमीट्रिअस उसके आग की लपट जैसे सौंदर्य को देखकर कांप गया। स्त्री को जैसे अपने सौंदर्य का ज्ञान था। मल्लाह कहा करते थे कि सुदूर महासागर के परे गंगा की श्वेत धाराओं में चुम्बक की चट्टानें तैरा करती हैं, जो दूर से ही आते हुए जहाज की कीलें तथा लोहे के बने तमाम जड़ाव को वेग से अपनी ओर खींच लेती और लोहा सदा वहां चिपट जाता था और जहाज खड़-खड़ होकर नदी के जल पर तैरा करता था। तूफान उन्हें उठाकर उनका रहा-सहा अस्तित्व भी मिटा देता था। उस सुन्दरी के नयनों ने उसे कसकर अपनी ओर चिपटा लिया था और वह दुर्बल होकर टूटे जहाज की भांति आनेवाले तूफान की झपेटों की प्रतीक्षा में कांप रहा था। जब वह पास आई तो उसने घबराकर कहा, "मैं तुम्हें अभिवादन करता हूं।"

स्त्री ने सहज उत्तर दिया, "मैं भी तुम्हें अभिवादन करती हूं।" और अपनी सहज गति से ही चलती रही। डिमीट्रिअस को भ्रम हुआ कि शायद वह गणिका नहीं थी और उसने पूछा, "तुम अपने पति के पास जा रही हो ?"

स्त्री हंसी और उसने कहा, "आज तक मेरा कोई पति नहीं हुआ।"

उसको ज्ञात हुआ कि वह गणिका ही थी। डिमीट्रिअस ने कहा, "तुम कौन हो ? यहूदी हो ?"

क्रेसिस ने कहा, "मुझे लोग क्रेसिस कहते हैं।"

डिमीट्रिअस ने उसे छुआ, किन्तु वह बोली, "इस समय बहुत देर हो गई है। अब मैं जाती हूं।"

डिमीट्रिअस ने कहा, "चलो, मुझे मार्ग दिखाकर ले चलो !"

यह सुनकर वह बोली, "क्या कहा ! मैं और मार्ग दिखाकर तुम्हें ले चलूं, जैसे मैं खरीदी हुई दासी हूं ! जानते हो, मेरे पीछे तुम्हारे जैसे कितने ही फिरते हैं ? मेरे पीछे आने का साहस न करना।"

डिमीट्रिअस ने चिढ़कर कहा, "तुम मुझे जानती नहीं हो कि मैं कौन हूं।"

क्रेसिस ने डांटकर कहा, "मैं तुम्हें खूब जानती हूं। तुम्हींने देवी अफ्रोदिते की मूर्ति बनाई थी। तुम मेरी रानी के प्रेमी डिमीट्रिअस हो और आजकल मेरे नगर के स्वामी बने हुए हो। पर मेरे लिए तुम एक सुन्दर दास से अधिक मूल्य नहीं रखते क्योंकि तुम मुझे चाहते हो !"

डिमीट्रिअस हतबुद्धि हो गया। आज तक उसका ऐसा अपमान नहीं हुआ था। वह हंसकर फिर बोली, "मैं जानती हूं कि तुमने किस प्रकार अनेक स्त्रियों को अपने प्रेम में दीवाना कर दिया है। मैं जानती हूं कि तुम्हें अपने ऊपर अहंकार है। तुम मेरे जिस रूप को देखकर बेसुध हो रहे हो उसे लोगों ने मन भरकर भोगा है। इन सात वर्षों में मैं अकेली सिर्फ तीन रात सोई हूं। पिछले साल मैं बीस हजार पुरुषों के बीच नंगी नाची थी, पर मुझे मालूम है तुम उनमें नहीं थे। तुम समझते हो कि मैं निर्लज्ज हूं लेकिन डिमीट्रिअस, तुम मुझे कभी नग्न नहीं देख पाओगे क्योंकि मैं तुम्हें तनिक भी प्रतिष्ठा नहीं देती।

तुम्हारी परवाह नहीं करती। तुम्हें दुत्कारती हूं। तुम निर्दयी दास और कायर हो तुम्हें घृणा करती हूं। मैं तुम्हारे ऊपर थूकती हूं। तुम घृणा के पात्र हो। हट जाओ, तुम्ह छाया मेरी कंचन-सी काया पर न पड़ जाए।"

डिमीट्रिअस ने उसे बलिष्ठ हाथों से पकड़ लिया। अपमान से उसका हृदय धध उठा था। क्रेसिस हंस उठी। उसने कहा, "हटो, मुझे मत दाबो क्योंकि मेरे हाथ दु हैं।"

डिमीट्रिअस झेंपा-सा हट गया। और उसने कहा, "क्रेसिस, डिमीट्रिअस को भिड़ देना साधारण बात नहीं है। मैं तुमसे बलात्कार करना नहीं चाहता हूं, यह नहीं चाहत कि तुम मुझसे प्रेम करो क्योंकि स्त्रियों का प्रेम सिर्फ रुपये से है। मैं तो सिर्फ यही चाहत हूं कि तुम अपना अहंकार छोड़ दो और मुझे अपमानित न करो।"

क्रेसिस ने कहा, "मेरे पास भी सोना बहुत है। मैं वह नहीं चाहती। मेरी तो केव तीन चीजों की चाह है। यदि तुम मुझे दे सको तो मैं तुम्हारी बात को मान लूंगी।" औ वह कहने लगी, "मैं एक चांदी का दर्पण चाहती हूं जिसमें मैं अपनी आंखों को देख सक मैं एक हाथी दांत की कंघी चाहती हूं जो नक्काशी से ढकी हो, और मुझे एक मोतियों क हार चाहिए जिसे मैं पहनकर तुम्हारे सामने नंगी नृत्य कर सकूं।" डिमीट्रिअस को आश्चर्य हुआ कि वह इतनी मामूली चीजें मांग रही थी। क्रेसिस ने कहा, "प्रतिज्ञा करो, अफ्रोदिते की सौगन्ध खाओ और तब मैं बताऊंगी कि मुझे कौन-सी चीज चाहिए।" डिमीट्रिअस ने कहा, "तुम मुझे बताओ, मैं तुम्हारे लिए सब कुछ लाऊंगा।"

क्रेसिस ने कहा, "मेरी मित्र गणिका बेचिस के पास एक चांदी का दर्पण है, वह उसे बहुत छिपाकर रखती है पिछले हफ्ते ही उसने मेरा एक प्रेमी छीन लिया था। मैं बेचिस से बदला लेना चाहती हूं। उसका वह दर्पण अद्भुत है। अपने घर में वेदी के तीसरे पत्थर के नीचे प्रति सन्ध्या छिपाकर तभी वह बाहर निकलती है। उसे ले आओ।"

डिमीट्रिअस ने कहा, "यह पागलपन है। तुम मुझसे चोरी कराना चाहती हो।"

क्रेसिस ने कहा, "तब तो तुम मुझे पा चुके!"

डिमीट्रिअस ने कहा, "अच्छा, मैं उसे ले आऊंगा।"

क्रेसिस फिर कहने लगी, "पर जो कंघी मैं चाहती हूं वह राजगुरु की स्त्री की कंघी है, वह उसे हमेशा अपने केशों में छिपाकर रखती है। यह मिस्र की किसी प्राचीन रानी की कंघी है। उसपर एक युवती का नग्न चित्र खुदा है। मुझे वही कंघी चाहिए।"

डिमीट्रिअस ने पूछा, "मुझे वह मिलेगी कैसे?"

क्रेसिस ने कहा, "वह मुझे कल ही चाहिए। इसलिए कल दिन में तुम्हें किसी समय उसकी हत्या करनी होगी।" डिमीट्रिअस सोचने लगा और तब क्रेसिस ने कहा, "अफ्रोदिते के गले में पड़ा हुआ सतलड़ियों वाला मोतियों का हार मुझे लाकर दो।"

डिमीट्रिअस ने कहा, "नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता।"

क्रेसिस ने कहा, "ऐसा न कहो क्योंकि तुम ऐसा नहीं कह सकते। तुम यह जानते हो कि तुम्हें यह सब मेरे लिए लाना है और तुम इन्हें लाए बिना भी नहीं रह सकते। कल सन्ध्या समय तुम इन चीजों को लेकर मेरे पास आना और उसके बाद जब तुम चाहोगे मैं

तुम्हारी आज्ञा और इच्छा पर तुम्हारे सामने उपस्थित रहूंगी, तुम्हारी सेवा करूंगी। सुनो, मैं सभी देशों के गीत जानती हूं। कलकल नाद करने हुए निर्झरों का सुमद संगीत और रौद्र स्वर से भयानक डमरू-निनाद मिश्रित भीषण स्वर—ये सब मुझे आते हैं और मैं तुम्हारे इशारे पर उन्हें गा-गाकर सुनाऊंगी। तुम यह नहीं जानते कि मेरे चुम्बन से तुम्हें कितना आनन्द होगा। डिमीट्रिअस आगे बढ़ा। क्रेसिस ने कहा "अभी नहीं, अभी नहीं।"

डिमीट्रिअस ने कहा, "मैं तुम्हारी सब मांगें पूरी कर दूंगा।"

वह चली गई। डिमीट्रिअस जब नगर की ओर चला, शर्म से उसका सिर नीचे झुका हुआ था। पौ फटने लगी। डिमीट्रिअस के हृदय में हाहाकार मचने लगा। गणिकाओं ने पथ पर निकलना प्रारम्भ कर दिया था। दो गणिकाएं आपस में बातें करती हुई चली जा रही थी।

महानगर के बाहर देवी अफ्रोदिते का मदिर भव्य प्राचीरों से घिरा मीलों के घेरे के अन्दर बना हुआ था। वह मदिर अब दो सौ वर्ष पुराना हो चुका था। नाना राष्ट्रों से प्रतिवर्ष सुन्दर कन्याएं बाहर से जहाजों मे लाई जाती थीं। मदिर के पुजारी उन्हें अपने साथ उद्यानों में ले जाकर दीक्षा देते। एक बार कोई युवती वहां घुसकर फिर कभी बाहर नहीं आती थी। इन गणिकाओं में पुरुष का प्रेम तो प्रचलित रहता ही था पर उनका आपस का प्रेम भी कम नहीं होता था। यदि कोई गणिका गर्भवती हो जाती और उसके पुत्र उत्पन्न हो जाता तब वह संतान उस मदिर की निधि मानी जाती और यदि उसके पुत्री हो जाती तो वह अफ्रोदिते की खास गणिका बनाई जाती। क्षणिक वासना और प्रेम-तृप्ति के लिए अलग मदिर बने हुए थे। मदिर की भूमि शुद्ध और श्वेत संगमरमर की थी और स्थान-स्थान पर रंगीन पत्थरों से देवी-देवताओं, दैवी पुरुष और मानवी स्त्रियों के सम्भोग के चित्र अंकित हो रहे थे। वह सम्पूर्ण संसार वासना से ओतप्रोत था।

डिमीट्रिअस अफ्रोदिते के उस बीहड़ बन मे घुस गया। उसमे इतनी शक्ति थी कि अपने सेवकों से वह क्रेसिस को पकड़वाकर बुलवा सकता था किन्तु वह उससे बलात्कार करना नहीं चाहता था। अनेकों गणिकाओं ने डिमीट्रिअस को घेर लिया किन्तु डिमीट्रिअस इन सबसे उकता गया। डिमीट्रिअस ने मार्ग चलते सोचा—काश, वह क्रेसिस को लेकर मिस्र से बाहर यूनान, रोम, सीरिया या और कहीं चला जाए, जहां उसको छेड़नेवाली कोई स्त्री न हो और न क्रेसिस की ओर ही आंख उठानेवाला कोई और पुरुष हो। अब वह धर्मगुरु के महल की ओर चल पड़ा। वह एलेक्ज़ेंड्रिया की ओर जा रहा था। वह जानता था कि रात के पहले पहर मे धर्मगुरु की युवती पत्नी टूनी अपने विशाल प्रासाद के पिछवाड़े एकान्त मे संगमरमर की स्वच्छ चौकी पर बैठकर विश्राम करती है। डिमीट्रिअस ने वहां पहुंचकर देखा कि वह लेटी हुई थी। वह धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ा। चौकी पर वह उसके पास जाकर बैठ गया। उसने उसे छुआ किन्तु टूनी ने आंखें नहीं खोली। क्षितिज पर छाई हुई रक्ताभा समुद्र पर प्रतिबिम्बित होकर उसके शरीर को ललाई से रंग रही थी जिसमें उसका सौन्दर्य प्रस्फुटित हो रहा था। धीरे-धीरे चांद ऊपर उठने लगा और उसके घने घुंघराले केशों के बीच डिमीट्रिअस ने वह कंघी देखी जिसके

गिरे पर जड़ा हुआ हीरा चमचमा रहा था।

"डिमीट्रिअस !" वह जाग उठी और कहने लगी, "ओह, तुम हो मेरे प्रियतम
वह गरजकर बैठ गया। डिमीट्रिअस ने कहा, "मैं तुम्हारी हत्या करने आया हूं।" वह
बार सिहर उठी, पर हंसी।

टूनी ने डिमीट्रिअस की कलाई पकड़ ली और उसने कहा, "पहले मेरे ऊपर
की वर्षा कर दो। जब मैं तुम्हारे रंग में डूब जाऊं तब तुम मुझे मार डालना, तब मुझे
दुःख नहीं होगा।" डिमीट्रिअस उसको आलिंगन में बांधकर सब कुछ भूल गया और उ
बाद डिमीट्रिअस ने उसकी हत्या कर दी। उसने केवल क्रेसिस के कहने से ही ऐसा कि
था। उसने अपना वचन निभाया था और फिर वह मन्दिर में गया। वह भय से कांप
था। उसने लपककर सामने के चित्रित स्वर्णद्वार को बन्द कर दिया। जब उसने अ
उठाई तो देखा रंगीन चौकी पर नग्न अफ्रोदिते चन्द्रमा के धवल प्रकाश में जगम
रही है। उसके चरणों पर असंख्य धन-राशि पड़ी है। उसके कण्ठ में वही हार है जि
वह चुराने आया है। सतलड़ीवाला वह मोतियों का हार, जिसके बीच का मो
सबसे बड़ा लम्बा और चांद की भांति चमकीला है, वह जो समुद्र के गर्भ में जल-वि
जोड़कर बना है। हठात् डिमीट्रिअस को ध्यान आया। उसने वह हार उतार लिया। डिमी
ट्रिअस चुपचाप बैठ गया और तभी दोनों भारी स्वर्ण द्वार खुल गए।

आधी रात का घना सन्नाटा छाया हुआ था। किसीने ज़ोर से तीन बार क्रेसि
के घर का द्वार खटखटाया। क्रेसिस शैया से उतरी और उसने कहा, "कौन है ?" उस
मिलने आज नोक्रेटिस आया था। वह दार्शनिक था। उसके दाढ़ी डिमोस्थीनीज़ की भांति
थी और उसके हाथ बिलकुल साफ थे। वह एक लम्बा ऊनी श्वेत चोगा पहने हुए था
उसने कहा, "कल बेचिस के यहां दावत है। मैं तुम्हें उसकी ओर से निमन्त्रण देने आया
हूं। दावत के बाद उत्सव होगा। हम सात अतिथि हैं। आना ज़रूर !"

क्रेसिस ने कहा, "कल उत्सव क्यों है ?"

उसने कहा, "कल बेचिस अपनी सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी दासी अफ्रोडोशियो को स्वतन्त्र
कर देगी। नृत्य और खेल भी होंगे इसलिए तुम वहां ज़रूर रहना।"

श्वेत, गुलाबी, नीले और लाल गुलाब के फूलों से सजी हुई गणिकाएं अफ्रोदिते के
मन्दिर में आने लगीं। एक लम्बी दाढ़ीवाला पुजारी उपहार लेकर देवी के चरणों पर
रखता जाता था। युवतियां आ-आकर अपनी मनचाही भेंट चढ़ाने लगीं। गणिकाओं के
चले जाने के बाद एक अत्यन्त सुन्दरी स्त्री ने प्रवेश किया। वह क्रेसिस थी। उसने कांच
का दर्पण देवी के चरणों में रखकर कहा, "मैंने अपना रूप इसमें देखा है। आज मैं अपने
इस प्रिय दर्पण को तुम्हें देती हूं कि इसमें मेरी देखी हुई सुन्दरता ऐसी ही बनी रहे।"
पुजारी ने दर्पण उठाकर एक ओर रख दिया। फिर क्रेसिस ने अपनी कंघी निकालकर
मूर्ति के चरणों में रख दी और कहा, "हे देवी ! तू उषा को चीरकर रक्तवर्ण समुद्र के जल
से निकली है; मैं तुझे यह कंघी भेंट करती हूं।" फिर उसने अपने कंठ से सच्चे पन्ने के हार
को उतारा और उसको भी देवी पर चढ़ा दिया।

पुजारी ने कहा, "इन मूल्यवान उपहारों के बदले में तुम देवी से क्या चाहती

हो ?"

उसने सिर हिलाकर कहा, "कुछ नहीं।"

पुजारी चकित रह गया। कुछ देर बाद वह भी चला गया।

अब कासे की विचित्र चौकी के अन्दर केवल डिमीट्रिअस रह गया था। वह क्रेसिस की इन सारी भेंटों को देख रहा था। उसने बाहर निकलकर अपने मन में कहा, "तुमने तीन वस्तुओं की आशा में अपनी तीन वस्तुएं पहले ही देवी पर चढ़ा दी हैं।"

जब डिमीट्रिअस राजपथ पर चला तब क्रेसिस से मिलने की इच्छा उसके हृदय में बलवती हो उठी थी। मार्ग में रानी बर्निस अपनी विशाल पालकी में चली आ रही थी। उसने उसे अपनी पालकी में बिठा लिया। किन्तु डिमीट्रिअस अपने विचारों में खोया बैठा था। रानी उसकी उस उपेक्षा से मन ही मन आहत हुई। रानी उसको अधिक नहीं बहला सकी। वह किसी तरह उसके पास से चला आया।

पचीस वर्षीया बेचिस गणिका थी। आज उसके यहां दावत थी। उस दावत में फिलोडीमोस, नोक्रेटिस, फोसटेना, फ्रेमेलास इत्यादि सब लोग इकट्ठे हुए थे। क्रेसिस भी आ गई थी। टिमन ने क्रेसिस को अपनी वासनामय भुजाओं में घेर लिया। वह जब वहां से बाहर निकली तो रास्ते के दो मल्लाहों ने उसको पकड़ लिया। जब बड़ी मुश्किल से छूटकर वह लौटी तब उसने देखा कि बेचिस की महफिल में रंग आ गया था। अबाध रूप से मदिरा बह रही थी। कई और अतिथि आ गए थे। विलास, अखंड विलास वहां लरज रहा था। देर तक वहां आनन्द होता रहा। उसी समय तीन पुरुषों ने एक बड़े पात्र में मदिरा भर दी। बांसुरीवाली स्त्री उस मदिरा में जा गिरी। बेचिस ने उसे देखा तो उसे हंसी आ गई। उसने चिल्लाकर कहा, "दासी जल्दी से दर्पण लाकर इसे दिखा।" दासी एक कांसे का दर्पण ले आई। "यह नहीं मेरा वह बहुमूल्य दर्पण ला।" क्रेसिस झटके के साथ उठ बैठी। दासी नहीं लौटी थी। क्रेसिस पर बोझ-सा गिर रहा था। दासी बड़ी देर में खाली हाथ आई। बेचिस ने कहा, "दर्पण कहां है ?"

दासी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरते हुए कहा, "वह, वह वहां नहीं है, वह चोरी हो गया है।" बेचिस पागलों की भांति खड़ी हो गई। उसने दासी का गला पकड़कर कहा, "तूने चुराया है।" और वह उसे मारने लगी। दासी के लिए दया की कोई जगह नहीं थी। उत्सव समाप्त-सा हो गया। अपनी स्वामिनी बेचिस के इस विकराल रूप को देखकर सब दासियां कांप उठीं। अन्त में यह निश्चय हुआ कि चोरी जिस दासी पर लगाई गई, उसे सलीब पर चढ़ा दिया जाए और देखते ही देखते उन्होंने उसे सलीब पर चढ़ा भी दिया। क्रेसिस देखती रही। बेचिस ने दासी के हाथ में हथौड़े से कील ठोकी और इस प्रकार देखते ही देखते उस दासी के शरीर से मांस के लोथड़े लटक आए और मृत्यु के अंक में आकर फिर वह दासी नहीं रही, मुक्त हो गई। क्रेसिस को पता चल गया कि डिमीट्रिअस अपना काम कर चुका था। घर पहुंचने पर उसने देखा कि सब कुछ वैसा ही था। आज भीतर ही भीतर उसका मन उमस रहा था। वह लेट गई और उसने स्वप्न देखा। वह अपने सुनहले केशों पर वज्रखचित राजमुकुट पहने खड़ी है। सारा महानगर उसके सामने सिर झुकाए खड़ा है और वही प्रौढ़ा गणिका बेचिस पृथ्वी पर सिर टेके नंगी खड़ी है।

उसकी आंख खुल गई तभी एक बड़ा पक्षी अपने काले डैने फैलाए उसकी बा
ओर से फड़फड़ाता हुआ समुद्र की ओर उड़ गया। वह इस अपशकुन से कांप गई।

रानी बर्निस की छोटी बहिन का नाम क्लियोपेट्रा था। रानी ने देखा कि उस
बहिन इसी आयु में वासनामयी हो गई थी। उसे डिमीट्रिअस की याद हो आई कि
डिमीट्रिअस उसके पास कहां था !"

जब डिमीट्रिअस उस दर्पण, कंघी और मोतियों के हार को लेकर अपने घर पहुं
तो रात हो चुकी थी। दिन-भर वह उद्यान में ही घूमता रहा था। वह शीघ्र सो गया
जब उसकी आंख खुली तब वह पसीने में भीग गया था। उसने भयानक स्वप्न देखा था।

जब बेचिस की यह दावत समाप्त हुई, भोर हो चुकी थी। तभी एकाएक व
होने लगी, सुहावनी बूंदें गिरने लगीं। वर्षा रुकने पर आकाश स्वच्छ हो गया। आज देवी
अफ्रोदिते के उत्सव का तीसरा दिन था। इसमें केवल विवाहित सम्भ्रान्त नारियां ही ज
सकती थीं। गणिकाएं मार्ग पर इकट्ठी थीं, उनमें बेचिस की दावत के बारे में बातची
होने लगी और धीरे-धीरे दासी की मृत्यु का संवाद भी फैलने लगा। दर्पण की बात सुनक
स्त्रियां हंसने लगीं। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन किसने उसे चुराया होगा ! कौतूह
अब जोर पकड़ने लगा। सैकड़ों की भीड़ एकत्रित हो गई। सभी कुछ न कुछ कह रहे थे
तभी एक पैना स्वर भीतर की ओर से ऊपर उठा। राजपुरोहित की स्त्री की हत्या हो
गई है। चारों ओर सन्नाटा छा गया। लोगों के श्वास तक बन्द हो गए। किसीको यह
तनिक भी आशा नहीं थी कि राजपुरोहित जैसे महान और उच्चाधिकारी की स्त्री की भी
हत्या हो सकती है और वह भी देवी अफ्रोदिते के वार्षिक महोत्सव के दिनों में। अब सेवक
चारों ओर पुकारकर कहते जाते थे, "राजपुरोहित की पत्नी की हत्या हो गई है। राजाज्ञा
से उत्सव आज से स्थगित कर दिया गया है। हत्यारा उसके केशों की सुन्दरता बढ़ानेवाली
कंघी को भी ले गया है !" चारों ओर भय आतंक बनकर फैल गया। इतने बड़े सिकन्द-
रिया में आज तक कभी इतनी भीड़ नहीं हुई थी। हजारों सिर समुद्र-तट पर दिखाई दे
रहे थे। रानी बर्निस के सरदारों ने जब डॉलमी ओलीटस नामक पहले शासक की हत्या
करके बर्निस को रानी घोषित करते हुए सिकन्दरिया में झंडा फहराया था तब भी आज
के बराबर भीड़ समुद्र-तट पर नहीं हुई थी।

एक व्यक्ति ने पुकारकर कहा, "मेरे विचार से जिसने बेचिस का दर्पण चुराया
है वही टूनी का हत्यारा है।" कई गणिकाएं भय से रोने लगी। तभी धीरे-धीरे एक ओर
बड़ी भीड़ का शोर सुनाई दिया जो इसी ओर चला आ रहा था। स्त्रियां भय से चिल्लाने
लगीं। एक वज्रकंठ पुकार उठा, "गणिकाओ, पवित्र गणिकाओ !" सब श्रोता खड़े हो
गए। वह व्यक्ति फिर चिल्लाया, "देवी अफ्रोदिते का मोतियों का हार, सच्चे एनाडाग्नो-
मीनों के मोतियों का हार चोरी चला गया है।" सबके चेहरे सफेद पड़ गए। कितनी
भयंकर सूचना थी ! भीड़ कांप उठी और तब कोई भागा, उसे देखकर और भागे। गणि-
काएं भय से विह्वल हो रोती हुई भागने लगीं। समुद्र-तीर एकदम नीरव हो गया।
भीड़ चली गई थी। एक स्त्री और एक पुरुष वहां बैठे रह गए थे। वे देख रहे थे कि
जनता में उस चोरी और हत्या की क्या प्रतिक्रिया हुई थी। वे क्रेसिस और डिमीट्रिअस थे।

दोनों मैदानों के दो छोरों पर एक-दूसरे को देख तो नहीं सके लेकिन फिर भी जैसे पहचान गए। वह भागी हुई डिमीट्रिअस के पास आ गई। उसने उसके घुटने पकड़ लिए और कहा, "मैं तुम्हें प्यार करती हूं। अब तक मैंने कभी नहीं जाना था कि प्रेम क्या होता है। मैं तुम्हें अपना प्यारा प्यार, सारी वासना, अपना सम्पूर्ण नारीत्व सब कुछ दे डालूंगी। आज मैं बहुत खुश हूं इसलिए मेरी आंखों से आंसू बह रहे हैं। मुझे प्यार करो। लो मेरा चुम्बन लो!"

डिमीट्रिअस ने कहा, "नहीं, विदा।" और वह हलके कदम रखते हुए बढ़ चला। क्रेसिस हतप्रभ रह गई। आश्चर्य से उसका मुख खुला का खुला रह गया। वह उसके पीछे भागी और उसके घुटने पकड़कर कहा, "तुम मुझसे ऐसा कह रहे हो।"

डिमीट्रिअस ने उत्तर दिया, "तुम्हींसे, क्रेसिस, तुम्हींसे कह रहा हू।"

"तुम इतने बदल कैसे गए?" क्रेसिस ने पूछा।

डिमीट्रिअस ने कहा, "अब मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं रही है। सुनो, मैंने ही वह दर्पण चुराया है। मैंने ही काम से विह्वल होकर, निरपराध टनी की हत्या की है और उसकी कंघी ली है। और मैंने ही देवी अफ्रोदिते की ग्रीवा से वह सच्चे मोतियों का सतलड़ी हार चुराया है। इन सब चीज़ों को तुम्हे देकर मैं तुम्हे प्राप्त करनेवाला था। है ना! और इस तरह जो तुम मुझे देती और जो अब देने को तैयार हो, उस वस्तु का मूल्य ज़रूरत से ज्यादा बढ़ जाता है। है न यही बात! पर अभी मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिए। अब कृपा कर तुम भी वही करो जो मैं कर रहा हूं और मुझे छोड़ दो।"

क्रेसिस ने कहा, "तो फिर अपनी ये तमाम चीजें अपने ही पास रखो। मुझे वह नहीं चाहिए। मुझे तो बस तुम, तुम्हारा प्रेम, तुम्हारा सहवास चाहिए।"

डिमीट्रिअस ने उत्तर दिया, "मैं कतई तुम्हारा नहीं हो सकता क्योंकि मैं अब तुम्हें बिलकुल नहीं चाहता।" क्रेसिस समझ नहीं पाई। डिमीट्रिअस ने उसकी ओर घूरकर देखा और फिर धीरे से कहा, "क्रेसिस, अब बहुत देर हो गई है। मैंने तुम्हें भोग लिया है!"

"ओह, तुम पागल हो गए हो, क्रेसिस ने भर्राए कंठ से कहा, 'भला, कब, कहां!"

"मैं सच कह रहा हूं," डिमीट्रिअस ने उत्तर दिया, "तुम्हें इस बात का पता भी नहीं है और मैंने भोग लिया है। जो मैं तुमसे चाहता था वह मुझे तुम्हारे बिना जाने ही मिल चुका है। आह! क्रेसिस तुम वास्तव में कितनी सुन्दर थी, कितनी कमनीय और वासनापूर्ण! यह सब सुख मैंने तुम्हारी छाया से ही प्राप्त किया है। इसके लिए मैं आभारी हूं। परन्तु अब और आगे इस खेल को बढ़ाने नहीं देना चाहता।"

"ओह! तुम बड़े स्वार्थी हो, कठोर हो!" क्रेसिस ने रोते हुए कहा, "तुमने मुझे दुखी बना दिया है। डिमीट्रिअस, मैं पागल हो जाऊंगी।"

डिमीट्रिअस ने कांपते स्वर से कहा, "क्रेसिस, क्या तुम भी मेरे बारे में उस समय चिंतित हुई थीं जब अपने क्षणिक आवेश में आकर तुमने मेरी कमज़ोरी का फायदा उठाते हुए मुझे वे तीन अपराध करने को विवश कर दिया था। जानती हो वे अपराध ऐसे

भयंकर थे कि उसमें मेरा अस्तित्व ही मिट जाता। ऐसा भी हो सकता था और अब भी वे जीवन-भर मेरे हृदय को कचोटते रहेंगे और लज्जा से मेरा सिर सदैव-सदैव झुका रहेगा। तुमने तो तब मेरे बारे में नहीं सोचा था न। अब यदि मैं तुम्हारे बारे में न सोचूं तो क्या बुरा करता हूं।"

क्रेसिस ने कहा, "अगर मैं वैसा न करती तो तुम मेरी ओर आकर्षित ही क्यों होते ?"

क्रेसिस जितना ही डिमीट्रिअस को अपने पाश में बांधना चाहती डिमीट्रिअस उतना ही पीछे हटता जा रहा था। फिर उसने कहा, "डिमीट्रिअस, तुम क्या चाहते हो ?" डिमीट्रिअस चुप हो गया। क्रेसिस उसके मौन से घबरा गई।

उसने कहा, "सुनो क्रेसिस, वह जो दर्पण, कंघी और मोतियों का हार है, जो मैं तुम्हारे लिए लाया हूं उन्हें निश्चय ही तुमने काम में लाने के लिए तो मांगा नहीं था क्योंकि चोरी के सामान का कोई प्रदर्शन तो नहीं कर सकता। इसका अर्थ है कि तुमने ये अपने लिए नहीं मांगे थे। मांगे थे तो केवल अपनी निर्दयी प्रकृति दिखाने के लिए। देखा तुमने ! जनता कितनी उत्तेजित हो उठी है। कितने बड़े अपराध कराए हैं तुमने मेरे हाथों, और अब मैं चाहता हू कि तुम इन चीज़ों को पहनो।"

और क्रेसिस घबराकर चिल्लाई, "क्या मैं पहनू ?"

डिमीट्रिअस ने कहा, "फिर तुम मंदिर के पीछे स्थित हर्मिस की मूर्ति के पास जाओ। वह स्थान निर्जन है। वहां उस मूर्ति के बायें पैर के नीचे का पत्थर हटाओ। वहां तुम्हें वे तीनों वस्तुएं मिलेंगी उन्हें लेकर चली आओ। फिर तीनों से शृंगार करके जब तुम बाहर निकलोगी तब रानी बर्निस के सेवक तुम्हें बन्दी बना लेंगे और फिर दूसरे दिन सूर्योदय के पहले, जैसाकि तुम चाहती हो, मैं डिमीट्रिअस तुम्हारे पास बन्दीगृह में आ जाऊंगा।"

वह पृथ्वी पर चक्कर खाकर बैठ गई। आज डिमीट्रिअस उसे वैसे ही छोड़ गया, जैसे तीन दिन पहले वह उसे छोड़कर चली गई थी। क्रेसिस को अपने वचन का ध्यान आया। वह चल पड़ी। वह अनेक प्रकार की बातें सोचती हुई अन्त में उसी मूर्ति के पास पहुंच गई। उसने कंघी, दर्पण और मोतियों का हार निकाल लिया। उसने उनको पहन लिया और दर्पण में अपना रूप देखने लगी। उसने अपनी लाल रेशमी ओढ़नी अपने सिर पर अच्छी तरह लपेट ली और इन भयानक वस्तुओं को पहने ही चल पड़ी थी।

विशाल मंदिर में आज फिर भीड़ इकट्ठी हुई थी। तीन चोरियों ने लोगों के हृदय में आतंक फैला दिया था। कुछ समय बीत गया। भीड़ का कोलाहल जारी रहा। मनुष्यों का वह समुद्र वास्तविक समुद्र की रोर के साथ अन्तरिक्ष को अपने भीषण गर्जन से कंपित कर रहा था और तभी भीड़ पुकार उठी, "अफ्रोदिते, अफ्रोदिते !" दूसरे ही क्षण हजारों आंखें ऊंचे पर्वत की ओर घूम गईं। अब अगणित मनुष्य इकट्ठे हो गए थे। ऐसा लगता था कि बलवा हो जाएगा। तभी रानी बर्निस की पालकी आती दिखाई दी। परन्तु सभी की दृष्टि पर्वत की ओर जम गई थी। वहां क्रेसिस अफ्रोदिते की भांति एक पैर उठाकर दूसरे से घुटने के बल बैठी थी। वह नितान्त नग्न थी। उसने अपने दोनों हाथों से अपनी बाल

रेशमी ओढ़नी कधों से पकड़ रखी थी। उसके वक्ष पर हार दीख रहा था। केशों में कवी गुथी हुई थी और सीधे हाथ मे वह दर्पण था। लाल रेशमी ओढ़नी तेज हवा मे उसकी पीठ पर फरफरा रही थी। उसका रूप देखकर जनता कराह उठी और भीड के लोग चिल्लाए, "अफ्रोदिते ! अफ्रोदिते !" सैनिक पर्वत पर उसके पास पहुच गए थे।

त्रेसिस बन्दीगृह मे अकेली थी। उसे पुरानी बातें याद आ रही थी। न जाने कितने-कितने विचार उसे व्याकुल कर रहे थे। तभी धीरे से द्वार खुला और डिमीट्रिअस अन्दर आ गया। उसने द्वार पूर्ववत् बन्द कर लिया। उसने सोचा था कि डिमीट्रिअस उसे आते ही बचा लेगा। वह उसकी ओर लपकी किन्तु डिमीट्रिअस को देखकर हतप्रभ-सी खड़ी रह गई। वह पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा था, जैसे वह उससे बहुत दूर था। वह वातायन के पास जाकर बाहर फूटती हुई भोर का सुहावना दृश्य देखने लगा। वह शैया पर बैठ गई। उसी समय किसीने द्वार पर दस्तक दी। डिमीट्रिअस ने आराम से द्वार खोल दिया।

कारागार का रक्षक बूढ़ा अपने साथ दो सैनिक लेकर भीतर आ गया। उसने कहा, "श्रीमान, मैं इस छोटे प्याले को लेकर आया हू !" त्रेसिस ने प्याला हाथ मे ले लिया। डिमीट्रिअस ने फिर भी उसकी ओर नही देखा। वह उसमें से आधा पी गई। उसने डिमीट्रिअस की ओर बाकी प्याला बढ़ाया, लेकिन उसने हाथ उठाकर मना कर दिया। फिर वह प्याले के बाकी विष को भी पी गई। त्रेसिस बाहर का दृश्य देखने लगी। बूढ़े ने पैर दबाकर कहा, "मेरे स्पर्श का अनुभव होता है ?"

त्रेसिस ने कहा, "नही।"

धीरे-धीरे त्रेसिस मिट्टी मे मिट्टी बनकर मिल गई।

डिमीट्रिअस अपने कला-मन्दिर मे अकेला घूम रहा था। वह पत्थर के बने हुए एक बहुत बड़े घोड़े के पास जाकर खड़ा हो गया। तीन दिन से वह काफी बेचैन था। हठात् उसने अपने सेवक से कहा, "लाल मिट्टी सानकर कारागार के वृद्ध रक्षक के पास तुरन्त जाओ। एक और दास साथ में हथौड़ा इत्यादि लेकर मुझे वहा मिले। उससे कहना कि यदि अभी तक गणिका त्रेसिस की मृत देह खाई मे न फेंकी गई हो, तो अभी और रोक ली जाए और तब तक वहीं रहे जब तक मैं और दूसरी आज्ञा न भेजू, जाओ।"

जब वह बाहर निकला रात हो चुकी थी। कारागार के द्वार पर उसे अपने दोनों दास मिले। त्रेसिस की लाश अभी उसी कक्ष मे मौजूद थी। डिमीट्रिअस ने उसका मुह खोला। अपलक नेत्रों से उसके सौन्दर्य को देखता रहा। फिर उसने उसे कमर तक वस्त्रहीन कर दिया। फिर उसने उसे बिलकुल वस्त्रहीन करके देखा। वह नारी का असली रूप देखना चाहता था। उसने उसे बड़ी कठिनाई से दीवार के सहारे बैठाया। डिमीट्रिअस खिड़की के पास पड़े मेज पर रखे हुए लाल मिट्टी के लोंदे पर अगुलिया चलाने लगा। धीरे-धीरे त्रेसिस की लाश मिट्टी मे सजीव बनने लगी। रात बीत गई। डिमीट्रिअस की क्रेसिस बन गई और उसी शाम से डिमीट्रिअस उस पुतले को सामने रखकर संगमरमर की मूर्ति बनाने लगा। त्रेसिस की मूर्ति बनने लगी।

त्रेसिस की लाश को उसकी दो सखियां ले आईं और देखा कि टिमन चार

युवतियों के साथ हंसना-बोलना मना जा रहा है। एक स्त्री ने कहा, "क्रैसिस की लाश वहां उस मकान की छाया में रखी है। रोबोज और मैं उसे कब्रिस्तान ले जा रही हैं, लेकिन वह बहुत भारी है। वह हमसे नहीं चलती। तुम हमारी सहायता करो।"

डिमन बोला, "खैर, मैं तुम्हारी सहायता करता हूं।"

लाश घुमाकर लाई गई थी। निर्जन उद्यान में उन्होंने गड्ढा खोदा और क्रैसिस उस कब्र में सुला दी गई। डिमन ने लाश को सीधा लिटा दिया। मिट्टी में मिट्टी मिल गई थी।

ईसा के बाद के मिस्री जीवन का यह विलासितामय वर्णन लेखक ने काफी खोज-बीन के बाद लिखा था। उपन्यास में नग्नता काफी है, पर लेखक ने युगपरक सत्य का ही निर्वाह किया है। मनुष्य की तृष्णा पर उसने अच्छा प्रकाश डाला है और उसके चित्रण बड़े ही भावुक बन पड़े हैं।

तालसताय :

युद्ध और शांति

[वॉर एण्ड पीस[1]]

तालसताय काउण्ट लियो : रूसी लेखक तालसताय का जन्म रूस के टयूला प्रदेश में ९ सितम्बर, १८२८ को एक कुलीन सामन्त परिवार में हुआ था। आपने कानून का अध्ययन किया तथा कज़ान विश्वविद्यालय में अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। इसके उपरांत आप सेना में भर्ती हो गए और सेवस्तोपोल के युद्ध में देशरक्षार्थ लड़े। आपने किसानों के लिए एक स्कूल खोला और ऋषियों का सा सादा जीवन व्यतीत करने लगे। सरकारी विरोध के कारण स्कूल बन्द कर दिया गया। अपने सुधारवादी विचारों को फैलाने के लिए आप साहित्य-सृजन करने लगे। १६०१ में आपको रूसी चर्च ने धर्म-बहिष्कृत कर दिया। आपने किसान का सा जीवन अपना लिया और अपने पदों तथा सम्पत्ति से अपने को मुक्त कर लिया। २० नवम्बर, १६१० को आपकी मृत्यु हो गई। आपने अनेक उपन्यास लिखे जिनमें 'वार एण्ड पीस' (वोयना इ मिर) अनुपमेय है। यह १८६२-६६ के मध्य प्रकाशित हुआ। इसका विस्तृत कलेवर देखकर आश्चर्यचकित हो जाना पड़ता है। आज तक इतना बड़ा और सुगठित उपन्यास और कोई नहीं लिख पाया।

"तो तुम भी युद्ध मे जा रहे हो ?" अन्ना पावलोना ने पूछा।

राजकुमार आन्द्रेई बोलकोन्सकी ने कुछ परेशानी से कहा, "हां। जनरल कुटूज़ोव ने मुझे अंगरक्षकों में ले लिया है।"

राजकुमार आन्द्रेई एक अत्यन्त सुन्दर व्यक्ति था और पीटर्सबर्ग के उच्च समाज मे उसका विशेष स्थान था। आज १८०५ की जुलाई की भीगी शाम को अन्ना के घर को अनेक दीपकों के प्रकाश ने आलोकित कर दिया था।

उसने पूछा, "और पत्नी भी जाएगी ?"

"वह गाव जा रही है, मेरे पिता के पास। वही रहेगी।"

उसी समय वाईकोम्प्ट डी मोर्टेमार्ट की बाह पकड़े युवती राजकुमारी लिज़ा बोलकोन्सकी उधर से निकली। वाईकोम्प्ट फ्रांस की राज्य-क्रांति मे पराजित होकर रूस भाग आया था। लिज़ा ने चंचलता से कहा, "प्रिय आन्द्रेई, मुझे वाईकोम्प्ट ने बोनापार्ट और पेरिस की अभिनेत्री का बहुत ही दिलचस्प किस्सा सुनाया है।"

राजकुमार आन्द्रेई भन्ना गया। पत्नी के नखरों से वह नाराज़ रहता था। यदि

---

१. War and Peace (Count Leo Tolstoi)

राजकुमार हृदय की और गहराई से जांच करता, तो उसे पता चलता कि वास्तव में वह अपनी स्त्री से ही नहीं ऊब गया था, ऊबा तो वह अपने समाज के आचार-व्यवहार से था, जिसमें नृत्य, संगीत, भोज और कृत्रिम आडम्बर के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था; तथा कई बार उसे ऐसा लगता था कि यदि वह उस जीवन से दूर नहीं चला जाएगा तो निश्चय ही वह पागल हो जाएगा।

सहसा राजकुमार के मुख पर मुस्कराहट फैल गई। कमरे के बीच एक तरुण व्यक्ति चश्मा लगाए आ रहा था। यह वृद्ध काउण्ट बेजूहोव का अवैध पुत्र था। काउण्ट बेजूहोव के पास अपार धन था और इस समय वह मास्को में मृत्यु-शय्या पर पड़ा था।

इस तरुण व्यक्ति का नाम था, पियरे बेजूहोव। दस वर्ष की अवस्था में शिक्षा पाने के लिए उसे विदेश भेज दिया गया और कुछ ही मास पूर्व वह लौटकर आया था।

आन्द्रेई ने बढ़कर पियरे से कहा, "अरे, तुम हो पियरे, और यह भी उच्च समाज में !"

पास खड़े राजकुमार वैसीली ने अपना चमकदार गंजा सिर अन्ना की ओर झुकाया और कहा, "यह कुलीन भालू है जो कुछ हफ्तों से मेरे साथ ठहरा हुआ है और आज मैं बड़ी मुश्किल से इसे बाहर निकालकर लाया हूं।"

राजकुमार वैसीली और उसकी पुत्री सुन्दरी ऐलेन एक ओर बढ़ गए। पियरे मंत्र-मुग्ध और भयभीत-सी आंखों से जाती हुई ऐलेन की ओर देखता रहा। ऐलेन निस्सन्देह अत्यन्त सुन्दरी थी। और जब वह वहां खड़े हुए पुरुषों के बीच में से निकली तो उन लोगों ने आदर से उसके लिए मार्ग छोड़ दिया।

राजकुमार आन्द्रेई ने कहा, "कितनी सुन्दर है !"

पियरे बड़बड़ाया, "बहुत।"

फिर कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया और फिर उसने धीमे से आन्द्रेई से कहा, "मैं रात को तुम्हारे यहां खाना खाने आऊंगा।

राजकुमार वैसीली अपनी पुत्री के साथ विशाल कक्ष में जा रहा था, कि उसके कन्धे पर किसीने हाथ रखा। मुड़कर देखा तो चिन्ताग्रस्त एक अधेड़ स्त्री उसे याचना-भरी दृष्टि से देख रही थी। वह राजकुमारी अन्ना बूब्रेस्यकोय रूस के एक प्राचीन कुल की थी किन्तु अब वह दरिद्र हो गई थी।

वह कुछ घबराए हुए स्वर से बोली, "राजकुमार, मैंने कभी आपको याद नहीं दिलाया कि आपके लिए मेरे पिता ने क्या-क्या किया था।"

आपके पुत्र बोरिस को गार्ड्स में ले लिया जाए।"

राजकुमार वैसीली की नीति यह थी कि वह दूसरों के लिए कभी भी बड़े लोगों से कुछ नहीं मांगता था क्योंकि ऐसा होने से आवश्यकता पड़ने पर स्वयं अपने लिए मांगना हो जाता था। इस समय वह इतना प्रसन्न था कि वह अपने सिद्धान्त को भूल गया।

..., "अन्ना वेहालोवना ! मैं इस असम्भव काम को भी करके दिखाऊंगा। आपके ...ड्‌स में भेज दिया जाएगा।"

एक घंटा बीत गया। अतिथि लौटने लग गए। पियरे सबके बाद निकला, इसलिए नहीं कि उसे वहां बहुत आनन्द आ रहा था, बल्कि इसलिए कि किसीके ड्राइंगरूम से बाहर निकलना उसे इतना ही अज्ञात था जितना कि भीतर प्रवेश करने का नियम। वह अत्यधिक लम्बा था, मजबूत और तितर-बितर होती हुई भीड में स्वप्निल। वह समय निकालता हुआ इधर-उधर घूमता रहा। बाहर आने पर वह आन्द्रेई के घर की ओर चल पड़ा। उसे राजकुमार आन्द्रेई प्रतीक्षा करता हुआ मिला। लिजा सोने चली गई थी। खाना खाने के बाद वे लोग आन्द्रेई के अध्ययनकक्ष मे धूम्रपान करने लगे।

पार्टी समाप्त होने के बाद पियरे आन्द्रेई के निवासस्थान पर पहुचा। खाने से निवटकर वे युद्ध की बातें करने लगे।

पियरे ने कहा, "नेपोलियन के विरुद्ध होने वाला यह युद्ध यदि स्वतन्त्रता का सग्राम होता, तब तो बात मेरी समझ में आ जाती और मैं सबसे पहले फौज मे भरती हो जाता। लेकिन संसार के महानतम व्यक्ति के विरुद्ध इग्लैंड और आस्ट्रिया की सहायता की जाए, यह तो मुझे उचित नही जान पड़ता।"

"और यह तो बताओ, तुम युद्ध करने क्यो जा रहे हो ?"

राजकुमार ने कहा, बस यह समझो कि मुझे जाना पड रहा है। मैं इसलिए जा रहा हूं क्योंकि मौजूदा जिन्दगी से मैं ऊब चुका हू। फिर कुछ आगे झुककर उसने भर्राए हुए स्वर में कहा, "मेरे दोस्त, कभी भी विवाह मत करना। समझे ? यदि मेरी सलाह मानो तो कभी भी विवाह करने की भूल मत करना। और मुझे यह भी वचन दो कि अब तुम अनातोल कोरागिन की सगत छोड़ दोगे।"

पियरे के साथियों का नेता अनातोले कोरागिन घुड़सवारो के गार्डों के बैरक मे रहता था।

आन्द्रेई ने फिर कहा, "औरत और शराब की बात मैं समझ सकता हू लेकिन कोरागिन की औरत और शराब मेरी समझ मे नही आती।"

पियरे ने वचन दिया कि अब वह कभी अनातोल से नहीं मिलेगा। लेकिन वापसी पर जब उसने किराये की गाड़ी ली तो अनायास ही, गाडीवान को घुडसवारो के गार्डों की बैठक की ओर चलने की आज्ञा दे दी। अचानक ही उसे अपनी प्रतिज्ञा याद आ गई। तब उसने अपने अन्त:करण को समझाते हुए कहा, "कोई बात नही। आज एक रात और सही, बस उसके बाद फिर कभी नही।"

राजकुमारी अन्ना द्रुबेत्स्कोय मास्को मे रोस्ताव नामक अपने एक धनी रिश्तेदार के यहां रहने को चली गई। इनके साथ उसका बोरिस वर्षों तक रहा था और अब राजकुमार वैसीली के प्रभाव से सेना में भर्ती होकर युद्ध के लिए आस्ट्रिया जानेवाला था।

उस दिन सुबह मास्को मे एक ऐसी घटना हुई थी कि आज उसीपर चर्चा चल पड़ी। घटना यह थी कि जिस काउट बेजूहोव की सुन्दरता की मास्को की स्त्रियां एक समय अत्यधिक प्रशंसा किया करती थीं, आज वह वृद्ध होकर बहुत अधिक बीमार पडा हुआ था।

काउण्टेस रोस्तोव ने लम्बी सास ली और बड़बड़ाई, "बेजूहोव किसी समय कितने अधिक सुन्दर थे ! मैंने उतना सुन्दर पुरुष जीवन मे कभी नहीं देखा।"

राजकुमारी अन्ना ने रहस्य-भरे स्वर में कहा, "उनका यश कौन नहीं जानता ? वे यह भी भूल गए थे कि उनके कितने बच्चे हुए थे। पर यह पियरे जो हैं, यह उन्हें हमेशा प्यारा लगा।

उसी समय दरवाजे पर धक्कम-धक्का-सी सुनाई दी और हंसती हुई गुलाबी चेहरे-वाली एक तेरह साल की लड़की अपनी पतली बांहों में एक गुड़िया को चिपकाए भीतर घुस आई और उसके पीछे ही खुले दरवाज़े में एक लम्बा खूबसूरत बालोंवाला युवक अफसर दिखाई दिया। लड़की ने कहा, "बोरिस कहता है कि वह मेरी ममी को अपने साथ युद्ध में ले जाएगा।" और अपनी गुड़िया को अपनी बांहों में छिपाती हुई वह बड़े ज़ोर से हंस पड़ी।

युवक अफसर ने गुड़िया की ओर घूमते हुए कहा, "मैं इस गुड़िया को तब से जानता हू जब यह बहुत छोटी थी। भले ही इस गुड़िया के दांत टूट गए हो और इसके सिर में भी छेद हो गया हो लेकिन इसे मैं अब भी उतना ही प्यार करता हू।"

छोटी लड़की ने कहा, "इन्हे यह गुड़िया मत ले जाने दो।" और उसने काउण्टेस रोस्तोव के कपडो में अपनी हंसी रोकने के लिए मुंह छिपा लिया।

"अच्छा, अच्छा, नटाशा, बहुत हुआ। जाओ, खेलो!" काउण्टेस ने नकली गुस्सा दिखाते हुए कहा।

काली आंखोंवाली छोटी-सी लड़की चचलता से भरी हुई जल्दी-जल्दी कमरे से चली गई। कमरे में उसके भाई निकोलाई और उसकी बहन सोनिया ने प्रवेश किया। निकोलाई अट्ठारह वर्ष का घुंघराले बालोवाला सुन्दर युवक था। सोनिया काउण्टेस की भतीजी थी, जिसे इसी परिवार मे पाला गया था, उसकी बरौनियां लम्बी थीं और घने बालों की दो चोटियां सिर पर लिपटी हुई थी। उसको देखकर बिल्ली के बच्चे की याद हो आती थी। हालांकि वह निकोलाई की तरफ शायद ही देखती थी, लेकिन ध्यान से देखने-वाला स्पष्ट ही समझ सकता था कि वह निकोलाई के प्रति कितनी अधिक आकर्षित थी।

कुछ हफ्ते बीत गए। रोस्तोव परिवार ने नटाशा की चौदहवीं वर्षगांठ मनाने के लिए बॉल-नृत्य का आयोजन किया। दो नृत्यो के बीच के समय में सोनिया गायब हो गई। नटाशा एक कमरे में पहुची तो वह फूट-फूटकर रो रही थी।

"क्यों सोनिया, तुम्हे क्या हुआ ?" उसको देखकर नटाशा भी रोने लगी।

सोनिया ने उत्तर दिया, "कागज़ आ गया है। निकोलाई युद्ध में जा रहे हैं। हम कभी भी शादी नहीं कर सकते। और फिर चाची हमें शादी करने भी नही देंगी। वे यह कहेंगी कि मैं उनका जीवन बरबाद करना चाहती हूं। वे काउण्टेस जूली से उनकी शादी करना चाहती हैं।"

नटाशा ने उसे उठाया। अपने हृदय से लगाकर वह आंसुओं के बीच में मुस्करा दी, "सोनिया, मेरी प्यारी सोनिया, क्या बकवास कर रही हो! क्या तुम्हें याद नहीं कि उस दिन दीवानखाने में हमने इस बारे मे निकोलाई से बात करके इस बात को हमेशा के लिए तय कर लिया था। भैया तो तुम्हारे प्रेम में पागल हो रहे हैं। उन्होंने कई बार ऐसा

कहा है। और वह जूली तो उन्हें तनिक भी नहीं भाती।"

नृत्य का छठा दौर हो रहा था, उस समय नगर के दूसरे छोर पर अपने विशाल-तम भवन में वृद्ध काउण्ट बेजूहोव मृत्यु-शय्या पर पड़ा था। डाक्टर ने कह दिया था कि उसके बचने की उम्मीद नहीं। मरनेवाले आदमी के लिए सारे धार्मिक कर्म कर दिए गए थे। सारे घर में सन्नाटा छाया हुआ था। राजकुमार वैसीली (जोकि अपनी पत्नी के सम्बन्ध से इस समय उत्तराधिकारी था) तथा काउण्ट की तीनों लड़कियां बराबर शय्या के पास बैठी रोगी की सेवा कर रही थीं। पियरे बहुत देर से पहुंचा।

लेकिन जब काउण्ट बेजूहोव के देहान्त के बाद वसीयत पढ़ी गई तो पियरे को मालूम पड़ा कि काउन्ट बेजूहोव के सारे खेत, घर और विशाल सम्पत्ति का स्वामी अब वही हुआ था। रूस की सबसे बड़ी सम्पत्ति का उत्तराधिकार उसे मिल गया था।

वृद्ध राजकुमार निकोलाई बोलकोन्सकी किसी समय कमाण्डर-इन-चीफ थे। दरबारी जीवन से वे ऊब चले थे और अपनी जागीर में लौट आए थे। जहां वे अपनी बेटी राजकुमारी मार्या के साथ रहते थे।

राजकुमारी मार्या उस समय दीवानखाने में बैठी थी जब राजकुमार आन्द्रेई और लिज़ा ने प्रवेश किया। माया हर्ष से पुकार उठी और लिज़ा को उसने अपनी भुजाओं में बांध लिया।

भोजन के बाद वृद्ध पिता अपने पुत्र आन्द्रेई को अपने साथ अपने अध्ययन-कक्ष में ले गए। "अच्छा, मेरे अच्छे योद्धा!" उन्होंने कहा, "तुम बोनापार्ट से लड़ने जा रहे हो। देखो, अगर तुम युद्ध में मर गए तो इस बुढ़ापे में मुझे अफसोस होगा, लेकिन इसके बावजूद अगर मुझे यह मालूम पड़ा कि निकोलोई बोलकान्सकी के पुत्र के योग्य तुमने आचरण नहीं किया तो···"

राजकुमार आन्द्रेई ने मुस्कराकर कहा, "यह कहने की आवश्यकता नहीं है, पिताजी!"

विदा का समय निकट आ गया। राजकुमार आन्द्रेई ने रुकते हुए कहा, "पिताजी, मेरी पत्नी यहां है। मैं लज्जित हूं कि उसे मुझे आपके ऊपर छोड़ना पड़ रहा है। लेकिन वह गर्भवती है।"

वृद्ध ने उत्तर दिया, "बकवास मत करो।"

अक्तूबर, १८०५ का मध्य आ गया था। रूसी सेना के अग्रिम दलों ने पूर्वी आस्ट्रिया के कस्बों और गावों पर कब्ज़ा कर लिया था।

लेकिन अगले कुछ हफ्तों में रूसी सेना की स्थिति बहुत ही खराब हो गई। नेपोलियन की कमाण्ड में एक लाख व्यक्ति बढ़ते चले आ रहे थे। ड्यूलन नदी के निकट कुटुज़ोव के पैंतीस हज़ार मनुष्यों की सेना तेज़ी से पीछे हट रही थी। कहीं-कहीं शत्रु बिलकुल पास आ जाता, तब दोनों ओर से झड़पें होने लगतीं। जहां तक होता संघर्ष का बचाव किया जाता और गोला-बारूद और सामान लेकर रूसी सेना जल्दी से जल्दी पीछे

हटने की कोशिश करती।

काउण्ट वेजूहोव का स्थान प्राप्त करने पर पियरे रूस के सबसे अधिक धनी लोगों में से एक हो गया। इस अवस्था को प्राप्त होने के पहले उसने बहुत ही एकांत, सुस्त और निश्चिन्त जीवन व्यतीत किया था। किन्तु अब उसने देखा कि उसके सामने अनेक काम इकट्ठे हो गए थे और सिवाय सोने के समय के और कोई समय उसे ऐसा नहीं मिलता जिसे वह अपना कह सके। राजकुमार वंसीली तो उसके शुभचिन्तकों में जैसे प्रमुख हो गए थे। पियरे ने यह अनुभव किया कि सुन्दरी ऐलेन भी अपने पिता की भांति उसका सान्निध्य चाहती थी। कई बाल-नृत्यों, सम्मेलनों और संगीत-समाजों में वह निरन्तर उसके साथ रही और लोगों ने यह अनुभव किया कि पियरे इसके सौन्दर्य की निरन्तर प्रशंसा किया करता था।

एक दिन इसी प्रकार पियरे ऐलन के साथ उन्हीं के कक्ष के एक एकान्त कक्ष में बैठा था कि अचानक राजकुमार वैसीली ने वहां प्रवेश करते हुए कहा, "ईश्वर को धन्यवाद दो, पियरे!" उसने एक बांह में पियरे और दूसरी बांह में ऐलेन को लपेट लिया और फिर कहा, "मेरे बेटे, मेरी बेटी, आज मैं कितना सुखी हूं। पियरे! यह तुम्हारी अच्छी पत्नी बनेगी। भगवान तुम दोनों का मंगल करे।"

और छः हफ्ते बाद उन दोनों का विवाह हो गया। हालांकि पियरे कई बार सुन चुका था कि ऐलेने के एक-दो नहीं कई प्रेमी थे।

नेपोलियन छोटे भूरे अरबी घोड़े पर बैठा हुआ अपने सेना-नायकों से कुछ आगे सामने की पहाड़ियों पर छाए हुए अपने शत्रुओं की सेना को अपलक और निस्तब्ध होकर देख रहा था। प्रातः के नौ बजे थे। आज २ दिसम्बर, १८०५ के ही दिन उसने सिंहासन पर पांव रखा था। आज मानो उसकी बरसी थी। उड़ते हुए कोहरे के कारण आकाश कुछ धूमिल-सा हो गया था। उसने रूसी सेनाओं को सुदूर पहाड़ी पर इधर से उधर घूमते हुए देखा और घाटी पर उसे निरन्तर चलती हुई तोपों की गर्जना सुनाई दी। और उस स्थान पर उसकी आंखें एकदम जैसे गड गई थीं। उसकी भविष्यवाणी ठीक निकली थी। कुछ रूसी सेनाएं घाटी में तालाबों और झीलों की ओर जा रही थीं। उनका उतरना दिखाई दे रहा था और कुछ लोग फ्रेटजन की ऊंचाइयों को छोड़कर दूसरी ओर हट रहे थे। नेपोलियन के मतानुसार फ्रेटजन पहाड़ी की ऊंचाई ही उस मैदान की कुंजी थी। वह जानता था कि निकट भविष्य में, बल्कि शीघ्र ही, रूसियों की बायीं ओर की सेना जब फ्रांस की सेना पर दायीं ओर से आक्रमण करेगी तो उसके सामने कोई आड़ नहीं रहेगी। तब वह सोल्त और बर्नादोत की सेना के चुने हुए लोगों को लेकर उनपर इतनी जोर से आक्रमण करेगा कि सीधे फ्रेटजन की ऊंचाइयों पर कब्जा कर लेगा।

और यही हुआ भी। आध घण्टे बाद ही ऐसी विचित्र लड़ाई छिड़ी कि रूसी सेना के पांव उखड़ गए और फिर बन्दूकों, तोपों से भी ऊंची एक आवाज गूंजी, "दोस्तो, सब कुछ खत्म हो गया!"

उस आवाज़ को सुनते ही, जैसेकि वह कोई आज्ञा थी, आन्द्रेई को भागते हुए सैनिकों की भगदड़ ने जैसे बहा दिया। जब भीड़ निकल गई तो उसने देखा जनरल कुटुज़ोव रक्त से भीगा हुआ एक रूमाल अपने गाल पर दबाए हुए था। आन्द्रेई ने घबराकर कहा, "आप घायल हो गए हैं।"

कुटुज़ोव ने कहा, "घाव यहां नहीं है।" और फिर उसने भागते हुए सिपाहियों की ओर इशारा करते हुए कहा, "वहां है।"

उसी समय फ्रेंच सेना ने एक गोला इधर भी फेंका। कुटुज़ोव ने अपना पाव पकड़ लिया। कई सैनिक लुढ़क गए और रेजीमेंट का झंडा लिए जो सेकंड लेफ्टीनेंट खड़ा था, उसके हाथ से झंडा गिर गया। राजकुमार आन्द्रेई ने तुरन्त घोड़े पर से कूदकर झंडा थाम लिया और प्रचंड स्वर में हुंकार उठा, "सैनिको, आगे बढ़ो!" उसके सिर पर भी एक भयकर आघात हुआ और उसके बाद चारों ओर अंधकार छा गया।

"सुन्दरियों के स्वास्थ्य के लिए, उनके प्रेमियों के स्वास्थ्य के लिए!" दोलोहोव ने पियरे की आंखों मे घूरते हुए मस्त होकर मदिरा का गिलास उठाया।

मास्को में एक इंग्लिश क्लब में आज भोज हो रहा था। जिसमे एक लम्बी मेज़ पर आमने-सामने दोलोहोव और पियरे अतिथि बनकर बैठे हुए थे। अपनी आदत के मुताबिक पियरे बहुत अधिक मदिरा पी गया था। सचाई तो यह थी कि अपने विवाह के उपरांत वह दिन पर दिन अधिकाधिक मदिरा पीने लगा था। लोग कहा करते थे कि वह अपनी सुन्दरी पत्नी की उपेक्षा करता था, और यह उसके लिए एक लज्जा की बात थी। सौभाग्य से बॉल-नृत्यों मे ऐलेन को कभी भी अपने प्रशसकों का अभाव नहीं रहता था। अब भी उसका सौन्दर्य अतुलनीय और अनुपमेय माना जाता था। दोलोहोव को युद्ध मे अपनी वीरता दिखाने के कारण फिर ऊंचे अफसर का पद मिल गया था। इस समय वह रणभूमि से छुट्टी पर आया था। इधर उसमें और ऐलेन मे काफी मेल-मुलाकात बढ़ गई थी। वैसे तो पियरे को उनपर सन्देह करने का कोई कारण नहीं था, किन्तु जब दोलोहोव ने शराब का गिलास उठाकर 'सुन्दरियो और उनके प्रेमियो के स्वास्थ्य के लिए' मंगल-कामना की तब पियरे अपने डगमगाते कदमों पर खड़ा होकर चिल्ला उठा, "नीच, विश्वासघाती! मैं तुम्हे चुनौती देता हू।"

अब द्वंद्वयुद्ध प्रारम्भ होनेवाला था। पियरे के पास उसका सहायक नेसविदस्की नामक उसका मित्र था और निकोलाइ रोस्तोव दोलोहोव का सहायक था। और यह केवल सयोग था कि शराब में धुन होने के बावजूद और गोली चलाते समय अपनी आंखें बन्द कर लेने के बावजूद दोलोहोव पियरे के हाथों मारा गया।

इस घटना के बाद पियरे अपने अध्ययन-कक्ष में बैठा था कि ऐलेन बड़े वेग से घुस आई और क्रोध से चिल्लाते हुए बोली, "सारा मास्को मुझपर हस रहा है। तुम! सारे आदमियों को छोड़कर वीरता का काम करने गए। तुम नशे में थे और तुम यह नहीं जानते थे कि तुम क्या कर रहे थे।" उसकी आवाज़ उठ गई मानो वह चीत्कार कर रही

थी। और उसने कहा, "तुमने अपने से हर तरह से अच्छे एक आदमी की हत्या कर दी!"

पियरे बड़बड़ाया, "मुझसे बात मत करो। मैं तुमसे विनती करता हूं।"

"क्यों न करूं! मैं···मैं कहती हूं कि तुम जैसे पति के साथ रहनेवाली स्त्री संसार में है ही नहीं। जो भी होगी वह अवश्य ही अपने लिए एक प्रेमी चुनेगी। किन्तु एक मैं हूं जिसने ऐसा नहीं किया।"

पियरे ने गुर्राकर कहा, "अच्छा हो, हम एक-दूसरे से अलग हो जाएं।"

एलेन ने कहा, "मुझे तुमसे बिछुड़ने में कोई दुःख नहीं है। लेकिन मेरा हिस्सा मुझको मिल जाना चाहिए।"

पियरे क्रोध से उछल पड़ा और लड़खड़ाता हुआ उसकी ओर बढ़ा। उसने चिल्लाकर कहा, "मैं तुम्हारी हत्या कर दूंगा।" और उसने मेज़ पर रखा हुआ संगमरमर उठा लिया। ऐलेन भयभीत-सी चिल्लाकर वहां से भाग निकली और घृणा से पियरे का मुख लाल हो गया। उसने उस संगमरमर को फर्श पर फेंक दिया जो टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गया।

एक हफ्ते बाद पियरे ने अपनी सारी सम्पत्ति की आमदनी का आधा भाग अपनी पत्नी के नाम लिख दिया और पीटर्सबर्ग छोड़कर मास्को चला गया। अपनी बेफिक्री और अपने धन के कारण मास्को में भी वह सबका दुलारा बन गया था।

किन्तु इतनी बेफिक्री दिखाने के बाद भी पियरे मन में यही सोचा करता कि वह एक बेवफा औरत का धनी पति था, जो खाता था, पीता था, बात करता था पर उसके पास करने को कुछ भी नहीं था। जीवन उसके लिए जैसे मिथ्या था, एक बेकार चीज़, जिसमें कोई तथ्य नहीं था। जीवन की वे समस्याएं जो शाश्वत हैं, उनको याद करने पर यह पीड़ा जैसे असह्य हो जाती। इसलिए उसने उन सबको भूलने-मात्र के लिए और भी बेतहाशा शराब पीनी शुरू कर दी।

जिस समय पत्नी के सन्तान होनेवाली थी, [illegible] पहाड़ियों पर आन्द्रेई का कोई भी समाचार प्राप्त नहीं था। इधर एक जर्मन डाक्टर, जिसकी कि प्रत्येक क्षण आने की उम्मीद थी, जिसको लाने के लिए राजमार्ग तक घोड़े भेज दिए गए थे और जिसको रास्ता दिखाने के लिए लालटेन ले-लेकर लोग आगे भेज गए थे ताकि बर्फ के गड्ढे स्पष्ट हो जाएं। वह अभी तक नहीं आया था। राजकुमारी मार्या अपनी किताब में भी नहीं लगा सकी। वह चुपचाप बैठी रही। उसकी चमकदार आंखें अपनी बूढ़ी धाय के झुर्रियोंवाले चेहरे को देखती रहीं। बूढ़ी कह रही थी, "ईश्वर दयालु है। डाक्टर की क्या ज़रूरत है!" और यह कहते हुए उसके हाथ फिर मोज़ा बुनने लगे। उसी समय हवा के झोंके से एक खिड़की खुल गई और ठंडी हवा कमरे में फड़फड़ाती-सी घुस गई। बूढ़ी धाय ने मोज़ा रख दिया और खिड़की की ओर चली गई। उसने कहा, 'मेरी प्यारी राजकुमारी, अच्छा है, कोई अन्दर सड़क पर आ रहा है। लालटेनें भी साथ हैं। जरूर वह डाक्टर ही होगा।"

राजकुमारी मार्या ने कहा, 'हे भगवान, [illegible]। अब मैं उससे मिल लूं। वह जर्मन भी नहीं जानता।" राजकुमारी मार्या [illegible] और [illegible] चली गई। [illegible]

उसी समय एक जानी पहचानी-सी आवाज सुनाई दी। बटलर ने कुछ उत्तर दिया। फिर भारी जूते सीढ़ी के निचले हिस्से पर चढ़ने लगे। चढ़नेवाला दिखाई नहीं दिया। राजकुमारी मार्या ने सोचा, 'यह तो आन्द्रेई लगता है, पर यह कैसे हो सकता है!' किन्तु फिर अचानक ही वह वहां आ पहुंचा। उसका चेहरा पीला और पतला पड़ गया था जैसे उसकी शक्ल ही बदल गई थी और उसपर एक नर्मी छा गई थी।

उसने बड़े स्नेह से अपनी पत्नी को माथे पर चूम लिया और बड़बड़ाया, "कितनी अमूल्य हो तुम! मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूं और हम लोगों का जीवन बहुत ही सुख से व्यतीत होगा।" वह उसकी ओर टकटकी बांधे देखती रही।

दर्द शुरू हो गए थे। बूढ़ी धाय ने राजकुमार आन्द्रेई को कमरे से बाहर चले जाने के लिए कहा। वह बगल के कमरे में जाकर बैठ गया। कुछ क्षणों के बाद एक स्त्री बाहर आई और उसने आन्द्रेई की ओर आतंकित दृष्टि से देखा। और उसने अपना मुंह अपने हाथों में छिपा लिया। राजकुमार आन्द्रेई तुरन्त कमरे में चला गया। उसने देखा कि बूढ़ी धाय के हाथ कांप रहे थे और कुछ पकड़े हुए थे—लाल, बहुत छोटी-सी चीज, जिसके मुंह से बहुत नरम-नरम-आवाज निकल रही थी। बूढ़ी धाय उसको देखकर बुदबुदा उठी, "आपका बेटा।"

वह शय्या के निकट चला गया। उसकी पत्नी मर चुकी थी लेकिन अब भी उसका सम्मोहन पहले ही जैसा था। दो घण्टे बाद आन्द्रेई धीरे से अपने पिता के कमरे में गया। वृद्ध राजकुमार को सम्वाद मिल चुका था। बिना एक शब्द भी बोले वृद्ध के कठोर हाथ आगे बढ़े और उन्होंने पुत्र की गरदन को ऐसे घेर लिया जैसे कोई मुसीबत खुद को पकड़ लेती है। रोते हुए निकोलाइ रोस्तोव ने कहा, "तो क्या बस इसके लिए हमने युद्ध किया? क्या इसी तरह हमने यूरोप की स्वतन्त्रता की रक्षा की है?"

जून १८०७ की एक दोपहर थी। फ्रांस की सेना विजय पर विजय प्राप्त करती जा रही थी। वियेना, आइलोव, फ्राइडलैण्ड, सब जगह उसने शत्रु को पराजित किया था। अंत में जार अलेक्जेण्डर युद्ध से थक गया और उसने सन्धि के लिए चेष्टा प्रारम्भ कर दी। आज तिलसित में नेपोलियन से उसकी भेंट होनेवाली थी जहां सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर होनेवाले थे। चौक में दो बैटेलियन खड़ी थीं। आमने-सामने—एक रूसी, एक फ्रेंच। दोनों सम्राट एक-दूसरे से मिलने के लिए बढ़े। दोनों सम्राट घोड़ों से उतरे और उन्होंने हाथ मिलाए। नेपोलियन के श्वेत मुख पर एक अरुचिकर मुस्कराहट दिखाई दे रही थी।

निकोलाइ भी युद्ध-भूमि के अस्पताल में अपने एक मित्र देनिसोव का घायल पैर देखकर अभी लौटा था। वहां की गन्दगी, बीमारी और क्लेशपूर्ण व्यवहार को देखकर, अभी तक वह अपना मानसिक सन्तुलन ठीक नहीं कर पाया था। मांसों की सड़ांध उसकी नाक में ऐसे घुस गई थी, जिससे उसका भेजा तक सड़ा जा रहा था। दोनों सम्राटों को मिलते देखकर उसने अपने-आप से कहा—लोग मर चुके हैं। उनकी बोटी बोटी बिखर चुकी है। हत्याओं से पृथ्वी रंग गई है। किसलिए? सिर्फ इसलिए कि अलेक्जेण्डर भाई की तरह इस व्यक्ति को अपने गले से लगा ले, जो एक भयंकर शैतान है और यूरोप का

सबसे भयानक अत्याचारी और धूर्त है।

दो वर्ष बाद १८०६ में दोनों सम्राटों की मित्रता इतनी अधिक हो गई कि जब नेपोलियन ने आस्ट्रिया पर युद्ध की घोषणा की तो एक रूसी सैन्य दल अपने पुराने मित्रों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए तथा फ्रेंच सेना को सहायता देने के लिए वहां गया।

राजकुमार आन्द्रेई अपना अधिकांश समय आजकल अपनी रियाजान की जागीर में ही बिताता था। उसके बच्चे का नाम था निकोलुस्का और वह अपने बाबा के पास उन्हीं की देख-रेख में ब्लीक पहाड़ियों पर रहता था।

मई १८०९ में रियाजान की जायदाद के सिलसिले में कुछ ऐसे काम आ पड़े कि ज़िले के मार्शल से मिलने के लिए राजकुमार आन्द्रेई को जाना पड़ा। मार्शल काउण्ट इलिया रोस्तोव ने अपने सम्मानित अतिथि का बड़े स्नेह से स्वागत किया और रात को ठहर जाने की प्रार्थना की।

नई जगह होने के कारण उसे काफी रात तक नींद नहीं आई। उसने उठकर खिड़की खोल दी। रात बड़ी सुहावनी थी—शांत और उज्ज्वल। दायीं ओर एक विशाल सघन वृक्ष था और इस समय उसके ऊपर चांद अपनी सम्पूर्ण कलाओं के साथ नक्षत्रवाहक वासन्ती आकाश में चमक रहा था। तभी उसे ऊपर लड़कियों की बात सुनाई दी। ऊपर की खिड़की से किसी लड़की ने कहा, "सोनिया, सोनिया, देख तो, कैसा अच्छा चांद चमक रहा है!" शायद वह खिड़की में से बाहर झुकी हुई खड़ी थी और उसके कपड़ों की सरसराहट, यहां तक कि उसकी सांस भी राजकुमार को सुनाई दी।

दूसरे स्वर ने विरोध करते हुए कहा, "सोने चलो, नटाशा, एक बज चुका है।"

और खिड़की बंद हो गई।

अगले दिन राजकुमार आन्द्रेई जब ब्लीक पहाड़ियों पर पहुंचा, उसके पिता ने देखा कि वह बहुत ही गम्भीर और बेचैन-सा था। राजकुमार आन्द्रेई ने बताया कि ज़ार के सम्मान में बॉल-नृत्य का एक विशाल आयोजन होनेवाला है। और वह भी पीटर्सबर्ग जाएगा, "आखिर अभी मैं इकत्तीस साल का ही तो हूं।" उसने कहा, "अभी से देहात की ज़िन्दगी में पड़ जाना तो मेरे लिए ठीक नहीं है।"

कर्नल रोस्तोव का परिवार भी उस बॉल-नृत्य में सम्मिलित होने के लिए पीटर्सबर्ग जा रहा था।

नटाशा और सोनिया दोनों श्वेत वस्त्र पहने हुए थी और उनके केशों में लाल गुलाब लगे हुए थे। इस बात को दोनों जानती थीं कि इस नृत्य में रूस के अत्यन्त सम्मानित लोग आमन्त्रित हुए थे। लेकिन दोनों में से कोई लड़की भी प्रसन्न नहीं थी। वाद्ययंत्रों का सम्मिलित स्वर आध घंटे से गूंज रहा था और किसीने भी उन दोनों में से एक को भी अपने साथ नृत्य करने के लिए आमंत्रित नहीं किया था। पियरे बेज़ूहोव ने राजकुमार [illegible] निकट आकर कहा, "तुम हमेशा नाचते हो, आन्द्रेई। रोस्तोव परिवार की लड़की [illegible] के साथ क्यों नहीं नाचते।"

[illegible] आन्द्रेई पियरे के बताए हुए मार्ग पर चला। वह अपनी अश्वारोही

सेना की कर्नलवाली श्वेत वर्दी में इस समय वह बहुत ही आकर्षक और स्फूर्ति से भरा हुआ दिखाई दे रहा था। जब वह चला तो असंख्य आंखें उसकी ओर खिच गईं। नटाशा के खिन्न आनन के सम्मुख उसने अपना सिर झुकाया और अपने आमंत्रण के शब्द वह समाप्त भी नहीं कर पाया था कि उसने अपना हाथ उसकी कमर मे डालने के लिए उठा दिया। तरुणी ने अपनी मुस्कान से ऐसा प्रकट किया कि जैसे वह तो बहुत दिन से उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। अगले दिन आन्द्रेई रोस्तोव परिवार से फिर मिलने गया। इस प्रकार वह उनके यहां अकसर जाने लगा। घर में सब लोग जानते थे कि उसके आने का कारण क्या था। किन्तु किसीमें भी इतना साहस नहीं था कि उससे कोई एक शब्द भी इस विषय में कह देता।

एक दिन, नटाशा की मां ने नटाशा से पूछा, "बेटी, उसने तुमसे क्या कहा है?"

उत्तर देने के बजाय नटाशा ने कहा, "मां! अगर वह विधुर है तो क्या हुआ?"

मा ने कहा, "नहीं, नहीं, नटाशा, भगवान से प्रार्थना करो! विवाह तो परमात्मा के यहां पहले से ही तय हो जाते हैं।"

किन्तु राजकुमार आन्द्रेई को विवाह के पहले अपने पिता की आज्ञा लेनी थी। वह स्वयं ब्लीक पहाड़ियों की ओर चल पड़ा। वृद्ध राजकुमार ने अपने पुत्र की प्रार्थना को चुपचाप सुना। अपने अन्दर उठते हुए क्रोध का तनिक भी आभास उसे नहीं होने दिया। वृद्ध ने शान्त स्वर में उत्तर दिया, "पहली बात तो यह है कि कुल और सम्पत्ति के दृष्टिकोण से यह विवाह अच्छा नहीं है, दूसरी बात यह है कि तुम्हारा स्वास्थ्य अभी बहुत अच्छा नहीं है और लड़की बहुत छोटी है, तीसरी बात यह है कि लड़की इतनी छोटी है कि तुम्हारे बच्चे की देखभाल की जिम्मेदारी उसपर नहीं छोड़ी जा सकती और चौथी बात यह कि मैं तुमसे प्रार्थना करता हू कि तुम अपनी शादी एक साल के लिए टाल दो। विदेश चले जाओ और अपने स्वास्थ्य को ठीक करो और उसके बाद भी अगर तुम्हारा प्रेम, यानी तुम्हारी वासना, यानी तुम्हारा हठ इतना ही सशक्त बना रहे तो विवाह कर लो और यही इस विषय में मेरे अन्तिम शब्द हैं।"

पीटर्सबर्ग लौटकर जब आन्द्रेई ने अपने पिता की बात नटाशा को बताई तो वह वेदना से उसकी ओर देखती रही। फिर हठात ही चिल्ला उठी, "यह सब ठीक नहीं है। कितना विचित्र है, कितना विचित्र है, एक वर्ष तक मुझे तुम्हारी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी! मैं तो मर जाऊंगी। मेरे लिए यह असम्भव है।"

और जब विदा की बेला आई और नटाशा ने राजकुमार को कमरे से बाहर जाते देखा तो असह्य पीड़ा से वह फर्श पर लुढक गई। उसने कराहकर कहा, "उन्हें मत जाने दो। भगवान के लिए उन्हे रोक दो। मुझे डर है कहीं कोई भयानक बात न हो जाए।"

छ. महीने बाद राजकुमारी मार्या ने जर्मनी मे पड़े हुए आन्द्रेई को यह पत्र लिखा कि एलेन बैसीली के भाई अनातोले कोरागिन के साथ नटाशा ने भाग जाने की चेष्टा की थी। बदचलन अनातोले ने अपनी सुन्दरता का लाभ उठाया था और उसने उसे अपने प्रेम में फास लिया था और उससे यह भी प्रतिज्ञा की थी कि उससे वह विवाह कर लेगा। पियरे बेजुहोव ने उसकी इस योजना को सुन लिया और क्योंकि वह जानता था कि

अनातोले की एक पत्नी पोलैंड में भी मौजूद थी, उसने उस दुष्ट को द्वन्द्व युद्ध के लिए चुनौती दे दी। लेकिन अनातोले पीटर्सबर्ग से भाग गया। नटाशा ने मार्या को यह पत्र लिखा था कि यह अपने भाई आन्द्रेई को यह सूचना दे दे कि आन्द्रेई कुछ आशा न करे। अब सगाई टूट चुकी है।

जून १८१२ की एक रंगीन शाम थी। ज़ार ने जनरल बालासोव को नेपोलियन के हाथों में देने के लिए एक पत्र दिया, जो इस प्रकार था—

"श्रीमान,

मुझे पता चला है कि यद्यपि मैंने आपसे अपने प्रत्येक मित्रतापूर्ण वचन का परिपालन किया है, फिर भी आपकी सेना ने मेरी सीमा का अतिक्रमण किया है। यदि महाराजा रूसी सीमा से अपनी सेना को हटा ले जाना स्वीकार कर लेंगे, तो मैं भी इस घटना की उपेक्षा कर दूंगा और हम दोनों के बीच समझौते की गुंजाइश रहेगी, किन्तु यदि ऐसा नहीं होगा तो मैं आक्रमण को खण्डित कर देने के लिए विवश हो जाऊंगा, जिसका प्रारम्भ मेरी ओर से नहीं हुआ है। दूसरे युद्ध से मानवता की रक्षा करने की सामर्थ्य आपके हाथ में है। —अलेक्ज़ेंडर"

फ्रेंच सेनाओं में होकर बालासोव बढ़ चला। नेपोलियन के सम्मुख उसे उपस्थित किया गया। सम्राट ने उसी समय अपने कपड़े पहनकर अपना प्रसाधन समाप्त किया था और उसके पास से यूडीकोलोन की बड़ी तेज गन्ध आ रही थी। काले बालों का एक गुच्छा उसके मुखपर चिपका हुआ था। उसका गदगदा चेहरा और गरदन ज़रूरत से ज्यादा सफेद दिखाई दे रही थी। उसका नाटा और मज़बूत शरीर अपने संकरे कन्धों और कुछ बाहर निकले हुए गोल पेट के कारण मानो उसके गौरव का स्वयं उपहास कर रहा था। जब बालासोव ने ज़ार का पत्र उसे दे दिया, नेपोलियन ने कहा, "सम्राट अलेक्ज़ेण्डर से शान्ति रखने की मेरी कामना उनकी तुलना में कहीं अधिक है। क्या अट्ठारह महीनों से मैं उसीका प्रयत्न नहीं कर रहा हूं।" यह कह, पत्र पढ़कर नेपोलियन कमरे में टहलने लगा। उसकी गरदन फूल गई।

बालासोव को लगा जैसे उसे भयानक क्रोध चढ़ने लगा था। एकाएक नेपोलियन चिल्लाया, "ऐसी मांग ब्रिटेन के राजकुमार से की जा सकती है, मुझसे नहीं। तुम कहते हो, मैंने युद्ध प्रारम्भ किया है लेकिन किसने अपनी सेना में भाग लिया, सम्राट अलेक्ज़ेण्डर ने ? और जब मैं लाखों खर्च कर चुका हूं और जब तुम इंग्लैण्ड से सन्धि कर चुके हो और जब तुम्हारी हालत कमज़ोर है, तब तुम मुझसे शांति की बात करने आए हो!" यह कहकर वह विद्वेष के साथ हंसा। और अपनी सुंघनी से नाक में एक चुटकी चढ़ाकर बोला, "यूरोप अपराधी है क्योंकि वह अन्धा हो गया था और तुम लोगों ने उसकी सीमा का अतिक्रमण कर दिया था। मैं यूरोप की उस सीमा को फिर से प्राप्त करूंगा और मेरा विरोध करके तुम्हें क्या परिणाम मिलेगा यह भी देख लेना।"

युद्ध प्रारम्भ हो गया।

नेपोलियन को यह देखकर घोर आश्चर्य और क्रोध हुआ कि शत्रु की सेनाएं जम-

कर मोर्चा लेने से कतराती थीं। चार लाख सैनिकों की विशाल वाहिनी लेकर वह रूस में घुस आया था और बढ़ता चला जा रहा था, लेकिन रूस की सेना बड़े सधे हुए तरीके से पीछे हट जाती थी और ऐसा लगता था जैसे पीछे हटना उसकी योजना थी। रूसी जनरल राजकुमार बैग्रेशन की सेनाएं वोल्कोविस्क से मोहीलेव चली गई और जनरल बार्कले डिटोली की सेनाएं विलना सेवन्तेयस्क की ओर चली गईं। इससे यह दिखाई देता था कि छोटी लड़ाइयों के लिए रूसी सदैव तत्पर थे, छोटी जीत हासिल करके वे खुश हो जाते थे, लेकिन जब नेपोलियन यह कोशिश करता था कि जमकर मोर्चा लगे और भयानक टक्कर हो, तभी रूसी लोग अपनी जगह छोड़ देते थे और पीछे हट जाते थे।

ज़ार को लगने लगा था कि यह चाल युद्ध गौरव के अनुरूप नहीं थी। उसने वृद्ध मार्शल कुटुज़ोव को कमाण्डर इन-चीफ बनाकर रणभूमि की ओर भेज दिया, ताकि इससे पहले कि फ्रेंच मास्को के निकट आ सकें, उनसे कड़ा मोर्चा लिया जाए और निर्णयात्मक युद्ध कर लिया जाए; यद्यपि वह भी इस समय पीछे हटने की नीति में विश्वास रखता था।

नेपोलियन को जब यह पता चला कि आखिर रूसी लोग लड़ने को तैयार हो गए हैं तो उसे अत्यन्त आनन्द हुआ। रूसी युद्ध की सारी योजना को उसने अपने मस्तिष्क में दुहरा लिया। गत दो महीनों में उसे न कोई विजय प्राप्त हुई थी, न कोई झण्डा, न कोई तोप; यहां तक कि कोई बन्दी भी नहीं बना था।

अब दोनों ओर से सैकड़ों तोपें छूटने लगीं। एक सात हज़ार फुट चौड़े मैदान में मोर्चा जम गया था। शीघ्र ही मैदान धुएं से भर गया और फ्रांस तथा रूस की सेनाएं भयानक युद्ध करने लगीं। नेपोलियन को जुकाम हो रहा था। वह अपने मार्शल लोगों को शीघ्रता में आज्ञा देता हुआ अधीर होकर इधर-उधर घूम रहा था। उसकी सर्वश्रेष्ठ सेनाओं के आक्रमण को रूसी सैनिक बड़ी कट्टरता के साथ झेल रहे थे। दस घण्टों तक नर-संहार होता रहा। किन्तु रूसी अभी वहीं अजेय खड़े थे। नेपोलियन पर एक बेचैनी छाने लगी; उसका दिल जैसे भीतर ही भीतर बैठने लगा। उसके वही सैनिक थे, उसके वही जनरल थे, उसकी तैयारियां भी पहले जैसी थीं और ये दोनों सेनाएं भी वही थीं, खुद भी वही था, बल्कि पहले की तुलना में वह कहीं अधिक कुशल और अनुभवी हो गया था। उसके सामने वही सेना खड़ी थी, वही दुश्मन था, जिसे वह आस्टरलिट्स और फ्राइडलैंड में पराजित कर चुका था। और जिस समय यह सम्वाद उसे मिला कि रूसी उसकी सेना पर बायीं ओर से आक्रमण करना चाहते थे, नेपोलियन का हृदय आतंक से थर्रा उठा। वह अपने घोड़े पर चढ़कर तुरन्त सेम्योनोवस्कोये की ओर चल पड़ा।

मैदान में धुआं धीरे-धीरे उठ रहा था। उसने अपने चारों ओर देखा, मनुष्यों और घोड़ों की लाशें, रक्त की नदियों के बीच पड़ी थीं। आज तक नेपोलियन ने इस तरह लाशों और घायलों की भीड़ नहीं देखी थी। आज तक उसके किसी जनरल ने भी इतना घोर हत्याकाण्ड नहीं देखा था और तोप का वह भीम गर्जन जैसा आज गूंज रहा था, पहले कभी नहीं सुना था।

यह युद्ध नहीं था, यह नर-संहार था मानो रक्त और मांस का कोई मूल्य नहीं

रहा था। नेपोलियन किंकर्तव्य-विमूढ़ सा उसको देखता रहा। जीवन में पहली बार युद्ध अर्थहीन-सा दिखाई दिया और पहली बार यह अनुभव हुआ कि युद्ध भयंकर नरक की वास्तविकता का दूसरा नाम था। भयंकर चीत्कार, कटते हुए नरमुंड, बहता हुआ लहू, धूल, धुआं और सर्वनाशिनी तोपों की प्रतिध्वनि, लड़खड़ाते घोड़े, छटपटाते घायल—यह सब नेपोलियन, यूरोप को पराजित करनेवाला नेपोलियन, दिग्विजयी नेपोलियन अवाक् देखता रहा! एक जनरल उस समय घोड़ा बढ़ाकर नेपोलियन के निकट आया और उसने कहा, "सम्राट, यदि आज्ञा दें तो पुराने गार्ड आगे बढ़कर हमला करें।"

यदि यह आक्रमण हो जाता तो सम्भवतः उस दिन नेपोलियन की जीत फिर हो जाती किन्तु नेपोलियन की ठोड़ी उसके वक्ष पर गिर गई, उसका सिर झुक गया। वह चुपचाप देखता रहा। जनरल ने एक बार फिर अपनी बात दोहराई।

"एं!" नेपोलियन ने थके हुए स्वर से पूछा जैसे वह चौंक उठा था। उसकी आँखें धुंधली हो चुकी थीं। "नहीं।" उसने धीमे स्वर से कहा, "मैं अपने गार्ड का कत्लेआम नहीं कराना चाहता।"

सेम्योनोवस्कोये के पीछे राजकुमार आन्द्रेई की रेजीमेंट पड़ी हुई थी। उसके ऊपर से गोले गुज़र रहे थे लेकिन वह अभी युद्ध में उतरा नहीं था। छः घंटे बीत चुके थे। उन्होंने एक भी गोली नहीं चलाई लेकिन रेजीमेंट के एक तिहाई आदमी शत्रुओं की बमबारी से मर चुके थे। राजकुमार आन्द्रेई पीला-सा पड़ गया था। वह बहुत थका हुआ था। अपनी पीठ पर हाथ बांधे, धरती पर आँखें गड़ाए वह इस समय बेचैनी से टहल रहा था कि एकाएक न जाने क्या हुआ—शायद एक गोला उसके बिलकुल समीप आकर फटा और राजकुमार आन्द्रेई धरती पर लुढ़क गया। उसके साथी उसकी ओर दौड़े वह मूर्च्छित था और उसके पेट की दायीं ओर से रक्त बह रहा था।

जब उसे कुछ होश आया तो उसने देखा कि वह एम्बुलेंस स्टेशन के एक तम्बू में एक मेज़ पर पड़ा है और कोई उसके चेहरे पर पानी छिड़क रहा है, बगल की मेज़ पर एक आदमी बिलकुल नंगा लिटाया गया था, जिसका चेहरा दूसरी तरफ था। राजकुमार आन्द्रेई ने उसे देखा तो उसके बालों का रंग और घुंघरालापन देखकर उसे ऐसा लगा जैसे उसने उस व्यक्ति को कहीं देखा था। उस आदमी का एक पांव आगा-आगा तेज़ी के साथ बार-बार बांह उठाता था और दो व्यक्ति उसके सीने पर ज़ोर लगाकर उसे नीचे दबाए रखने की चेष्टा कर रहे थे और एक डाक्टर बहुत घबराया हुआ कलाना था उसके दूसरे पांव को काट रहा था। वह मज़बूत आदमी असह्य पीड़ा से अपना सिर पटक रहा था और मारे दर्द के रो रहा था। राजकुमार आन्द्रेई ने सोचा—'हे भगवान, यह क्या हो रहा है। यह सुन्दर एनातोल है, मास्को की समस्त सुन्दरियों का विजयी, हेलेन बेजुखोव का भाई है कोरागिन—वही जिसने सुन्दर नताशा को छीन लिया!' उसे एक उन्माद की सी आई और उसकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया। वह फिर से मूर्च्छित हो गया।

कुतुज़ोव का युद्ध [illegible] हुआ था और उसकी [illegible]

के एक ढेर-सी दिखाई दे रही थी। युद्ध के दौरान वह अपने तम्बू के बाहर एक बेंच पर बैठा रहा। उसने कोई आज्ञा नहीं दी। अगर कोई आकर उससे कुछ कहता भी था तो वह धीरे से उसे स्वीकार कर लेता या अस्वीकार कर देता।

उसका एकमात्र ध्यान इसपर केन्द्रित था कि फ्रांस की विशाल वाहिनी को ऐसा झटका दिया जाए कि वह फिर सीधी खड़ी न हो सके।

शाम हो गई। युद्ध का निर्णय नहीं हुआ। दोनों ओर से सैनिक पीछे हट गए। प्रातःकाल जो मैदान मनोहर धूप में उज्ज्वल हो रहा था, जिसको देखकर प्रसन्नता होती थी, जिसमें संगीनें चमक रही थीं और सुन्दर वर्दियाँ अपनी रंगीनी से आंखों को अपनी ओर खींच लेती थीं, वहाँ अब धुएँ का कोहरा-सा छा गया था और उसमें से बारूद और खून की बदबू निकलने लगी थी।

पियरे बेजुहोव ने कांपते हुए फिर शराब का गिलास भरा और एक घूंट में ही पी गया। और फिर लाल-लाल आंखों से उसने सामने खुली हुई बाइबल की ओर देखा। वह पढ़ने लगा, "यही बुद्धिमत्ता है, जिसके पास भी बुद्धि है वह पशुओं की संख्या गिन ले...।" पियरे इस समय गन्दा हो रहा था। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी। पांच दिन पहले फ्रेंच सेनाओं ने मास्को में प्रवेश किया था। तब से पियरे ने अपने कपड़े नहीं बदले थे और वह उन्हीं को पहनकर सो जाया करता था। वह अपने विशाल भवन में अकेला था और उस-पर बहुत अधिक नशा चढ़ा हुआ था। जो कोई भी आक्रमणकारी से बचने के लिए भागना चाहते थे, मास्को से जा चुके थे। कई दिनों तक उस विशाल नगर की सड़कें गाड़ियों की कतारों से मानो ढंक गई थीं।

कुटुज़ोव ने अपनी सेना को मास्को के पूर्व की ओर डेढ़ सौ वर्स्ट की दूरी पर खड़ा कर दिया। और ज़ार क्रोध से पागल हो उठा था। उसने कुटुज़ोव को पत्र भेजे कि पीटर्सबर्ग को जीत लेने पर नेपोलियन के लिए सम्पूर्ण रूस को जीत लेना कोई कठिन काम नहीं होगा। उसको रोकने लायक कोई ताकत नहीं होगी। किन्तु कुटुज़ोव इस विषय में अधिक जानता था। बोरोदिनो में ही फ्रेंच सेना का साहस खण्डित हो चुका था। मास्को में वह सेना थकी-मांदी, घबराई हुई और चकनाचूर-सी घुसी थी। उसके सारे कायदे खत्म हो चुके थे और सैनिक शराब पीते हुए हर जगह शहर में हुड़दंग मचाते थे, लूटने की कोशिश करते थे मानो उनपर कोई अंकुश नहीं रहा था। खाने की कमी थी, कोई चीज़ मिल नहीं रही थी। और भूखे मरते हुए निराश आतंकित सैनिकों की इस दुष्ट भीड़ के सामने एक ही विचार आ सकता था कि इस विशाल बर्फ से ढंककर सफेद हो जानेवाले, खामोशी से हारनेवाले अपराजित रूस की भूमि से भागा जा सके तो भाग लिया जाए अन्यथा यह भूख मार डालेगी।

पियरे ने बाइबल पर फिर दृष्टि गड़ाई और भजन पढ़ा। अब उसका दिमाग भटकने लगा था और उसने दूसरी बोतल खोल ली थी। तीन-चार पैग और पी चुकने पर नशे के झोंक में उसे विचार आया, सारे यूरोप में एक ही व्यक्ति ऐसा है जो यूरोप के इस सबसे भयानक अत्याचारी का नाश कर सकता है। इस विचार ने उसे बहुत उत्तेजित

कर दिया। उसने दराज़ खोलकर एक पिस्तौल निकाली और अपने कोट के अन्दर रख ली और निर्णय किया कि वह बाहर जाकर आज ही नेपोलियन का अन्त कर देगा।

सारे मास्को पर एक ललाई-सी छाई हुई थी। सैकड़ों जगह आग लग चुकी थी। भीड़ें इधर से उधर भाग रही थीं। जब पियरे लड़खड़ाता क्रेमलिन की ओर चला, किसीने भी उसपर ध्यान नहीं दिया। नेपोलियन ने ज़ार से कहा था कि उसके पूर्वीय साम्राज्य के लिए मास्को ही राजधानी बनेगा और वह क्रेमलिन में से शासन करेगा। सहसा पियरे का ध्यान बंटा। उसने देखा सड़क के बीच में अपनी गृहस्थी का सामान रखे हुए आर्मीनियन लोगों का एक दल बैठा था। उनमें भेड़ की खाल और चमड़े के लम्बे जूते पहने हुए एक बहुत ही बूढ़ा आदमी भी था। उसके पीछे एक अत्यन्त सुन्दरी युवती बैठी थी, जिसकी काली भौंहें धनुष की सी तनी हुई थीं और उसके गले को एक हीरे का हार घेरे हुए था। दो फ्रेंच सैनिक उनके सामने खड़े थे। एक सैनिक ने आगे झुककर उस बूढ़े से कुछ कहा। बूढ़े ने तुरन्त अपने जूते उतार दिए। सिपाही ने उन जूतों को अपनी कांख के नीचे दबा लिया। अचानक ही एक पाशविक झटका देकर दूसरे सैनिक ने युवती के गले में पड़े हार को पकड़ लिया।

पियरे गरज उठा, "उस औरत को छोड़ दो!" और वह भयकरता से आगे बढ़ा। देखते-देखते उसकी सैनिकों से लड़ाई प्रारम्भ हो गई उसी समय सड़क के कोने पर पहरा देनेवाले फ्रेंच सैनिकों की एक टुकड़ी घोड़े बढ़ाती आ पहुंची। सैनिक उतरे। अफसर ने तुरन्त आज्ञा दी और पियरे को पकड़कर दबोच लिया गया।

अफसर ने अपनी सावधान उंगलियों से जल्दी-जल्दी उसकी तलाशी ली और कहा, "आग लगानेवाला मालूम होता है। अच्छा, इसके पास तो हथियार भी हैं! इसको जुकोवस्की बैरक में ले चलो।"

बैरक के यार्ड में कैदियों को रखने के लिए एक शेड बना हुआ था। वहां फूस पर पड़े हुए असंख्य आदमी थे। कुछ ऐसे घायल सिपाही भी थे जो नगर खाली होते समय पीछे ही छोड़ दिए गए थे। एक सिपाही ने, एक ठण्डा उबला हुआ आलू पियरे को देते हुए कहा, "यहां पर तुमको यही खाना पड़ेगा।"

पियरे ने उस दिन कुछ भी नहीं खाया था, उसने उसे धन्यवाद दिया और आलू खाने लगा। सिपाही कहता गया, "मेरा नाम प्लेटन है। मेरा घरेलू नाम करातेव है।" वह लगभग पचास वर्ष का झुर्रीदार व्यक्ति था। पियरे की आंखों में आंसू देखकर करातेव ने कहा, "मेरे दोस्त, दुःख क्यों करते हो?" और उसने बड़े प्यार से हम को किसान औरतों का वह गीत दोहराया जिससे वे बच्चों को बहलाया करती हैं, "दुःख पल-भर रहता है लेकिन जीवन सदैव बना रहता है।..."

जब फ्रेंच सेना मास्को की ओर बढ़ी तो आन्द्रेई के पिता वृद्ध राजकुमार निकोलाइ बोलकोन्सकी को भी अपनी स्मोक पहाड़ियों की जायदाद का परित्याग करके अपनी बोबुच्वरावो की जायदाद की ओर भाग जाना पड़ा। वे काफी वृद्ध थे। एक तो इस तरह का पलायन ही उनके लिए काफी बड़ा धक्का था और जब उन्हें यह खबर मिली कि उनका

पुत्र फिर से घायल हो गया था तब उनकी आयु इस प्रहार को सह नहीं सकी। एक दिन बागवानी करते समय वे गिर गए और तीन दिन की बीमारी के बाद इस संसार से चल बसे। राजकुमारी मार्या ने शव-संस्कार के दूसरे दिन कहा, "मैं यही चाहती थी कि वे मर जाएं ताकि मैं आजाद हो सकूं।" श्रीमती बोरियाने से उसे पता चला कि उसका भाई मितिस्चती में है और एक अस्पताल में इतना बीमार है कि वहां से हटाया नहीं जा सकता। मास्को के बाद रास्तोव परिवार भी इस समय मितिस्चती में था। राजकुमारी मार्या ने गाड़ी जुड़वाई और अपने बच्चे निकोलुस्का को लेकर मितिस्चती की ओर चल पड़ी। उसको बताया गया था कि स्टेशन के पास किसी कुटिया में आन्द्रेई पड़ा हुआ था।

उसने धीरे से कुटिया का द्वार खोला। आन्द्रेई अपनी पुरानी देह की मानो छाया-मात्र भी नहीं रहा था। एक खाट पर कोने में पड़ा हुआ था और उसके पास नटाशा रोस्तोव भुकी हुई थी। राजकुमारी मार्या ने भीतर प्रवेश नहीं किया। कुटिया के भीतर घायल राजकुमार आन्द्रेई नटाशा की ओर हाथ बढ़ा रहा था। उसने कहा, "तुम ? आज कैसा अच्छा दिन है !"

अत्यन्त स्नेह से नटाशा ने उसका हाथ पकड़ लिया। फुसफुसाते हुए बोली, "मुझे क्षमा कर दो। मैं तुमसे क्षमा मांगती हूं।"

राजकुमार आन्द्रेई ने कहा, "मैं तुम्हें प्यार करता हू।"

नटाशा का स्वर जैसे टूट गया। उसने बहुत धीरे से कहा, "बस, मुझे क्षमा कर दो।"

राजकुमार ने अपने हाथ से उसका चेहरा उठाया और उसकी आखों में भाकते हुए बोला, "मैं तुम्हें पहले की तुलना में कहीं अधिक प्यार करता हू।"

नटाशा की आखों में आंसू भर आए। तभी दरवाजा खुला एवं डाक्टर ने प्रवेश किया और कहा, "श्रीमतीजी, मेरी प्रार्थना है कि अब आप यहां से प्रस्थान करें।"

नटाशा के चले जाने के बाद एक घंटा बीत गया था। राजकुमार आन्द्रेई ऐसी नींद में सो गया था जिसके बाद कभी कोई नहीं जागता।

रोस्तोव परिवार अब पीटर्सबर्ग में आ गया था। उसकी अधिकांश सम्पत्ति युद्ध में विनष्ट हो चुकी थी और अब वे लोग तंगी से अपने दिन निकाल रहे थे।

राजकुमारी मार्या जो राजधानी में अपनी एक चाची के साथ ठहरी हुई थी, इधर रोस्तोव परिवार में काफी आने-जाने लगी थी। विशेषकर इसलिए कि वह नटाशा को सांत्वना पहुंचाती थी। काउण्टेस रोस्तोव बराबर एक बात भूलना चाहकर भी नहीं भूल पाती थी और वह यह थी कि अपने भाई और बाप के मर जाने से मार्या को बहुत बड़ी जायदाद मिल गई थी। और दूसरी बात यह भी थी कि किसी भी समय छुट्टी पाने पर निकोलाइ घर आ सकता था। सोनिया की तो जैसे नींद ही गायब हो गई थी। अब उसे यह असम्भव लगता था कि कभी निकोलाइ से स्वप्न में भी उसका विवाह हो पाएगा। और फिर एक दिन काउण्टेस ने साफ शब्दों में सोनिया से कह दिया कि वह निकोलाइ के स्वप्न देखना छोड़ दे। इस परिवार ने उसपर इतने उपकार किए हैं कि उनका कुछ मूल्य

देना भी आवश्यक है। अंत में काउण्टेस ने कहा, "मुझे तब तक शान्ति नहीं मिलेगी जब त
तुम मुझे यह वचन नहीं दे देतीं कि निकोलाइ से तुम कोई सम्बन्ध नहीं रखोगी।"

सोनिया फूट-फूटकर रोने लगी और उसने घुटती हुई आवाज में हकलाकर कहा "मैं हर बलिदान देने को तैयार हूं।"

निकोलाइ उस समय वोरोनेज में था। बोरोडिनो में रूसी विजय के लिए परमात्म को धन्यवाद देकर वह अभी लौटा था। तभी उसे दो पत्र मिले जिनमें एक सोनिया का था। वह खोलने के पहले कुछ सोचता हुआ उसे देखता रहा। कुछ हफ्तों से उसे इस बात में लज्जा लगने लगी थी कि उससे उसे विवाह करना पड़ेगा। उसे इसका जैसे शोक था। इन दिनों उसपर जुए से भारी कर्ज हो गए थे। उसका परिवार दरिद्र हो गया था और उसे एक ऐसी लड़की की जरूरत थी जो किसी बड़ी जायदाद की वारिस हो।

पत्र खोला तो ये पंक्तियां लिखी थीं : "मैं यह जानकर अत्यन्त दुःख पाती हूं कि मेरे कारण, तुम्हारे जिस परिवार ने मुझपर इतनी कृपा की है, वह इस प्रकार का दुःख पाए। मेरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य है और वह केवल यह है कि जिन्हें मैं प्यार करती हूं, उनको सुखी देख सकूं। इसलिए, निकोलाइ, मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं कि तुम अपने आपको स्वतन्त्र समझो। और यह भी मन में जान लो कि तुम्हारी इस सोनिया से अधिक, चाहे कुछ भी हो जाए, और कोई तुम्हें प्यार नहीं कर सकता।"

दो हफ्ते बाद जब निकोलाइ छुट्टी पर घर आया, काउण्टेस ने शीघ्र ही अपनी शोचनीय आर्थिक अवस्था का उससे परिचय कराया। उसने राजकुमारी मार्या से उसकी भेंट कराई और निकोलाइ ने अपनी माता की योजना को झट स्वीकार कर लिया तथा इच्छा से या अनिच्छा से वह मार्या के साथ अधिक से अधिक रहने की चेष्टा करने लगा।

सोनिया का खयाल आता, तो कितनी ही बार वह आत्म-तिरस्कार से भर उठता। किन्तु उसके परिवार की आवश्यकता, आराम में रहने की उसकी अपनी आदत, मार्या की सज्जनता, यह सब कुछ ऐसे घुल-मिल गए थे कि उसपर कोई रोक नहीं थी। तीन हफ्ते बाद निकोलाइ और राजकुमारी मार्या की सगाई हो गई।

कुटुजोव ने ठीक ही अनुमान किया था। बोरोडिनो में नेपोलियन की सेना को भयानक चोट पहुंची। घायल जानवर की तरह उसकी सेना मास्को की तरफ बढ़ी। वहां उसने यह देखा कि इमारतें खड़ी थीं, लेकिन जीवन नहीं था। खाने को कुछ नहीं था और आधा नगर आग की लपटों में धू-धू करके जल रहा था। नेपोलियन ऐसे शत्रु द्वारा पराजित किया जा रहा था जो मुठभेड़ करने के लिए सामने नहीं आता था, जो बिना अपनी हानि किए उसका सर्वनाश किए देता था। और यह एक ऐसी हार थी जिसमें से उबर आना उसके लिए असम्भव था। उसने कुटुजोव के पास सुलह के पैगाम भेजे। कुटुजोव ने उत्तर दिया, "रूस के बाहर निकल जाओ।" जैसे घेरा हुआ, मरता हुआ जानवर क्रोध से पागल हो उठता है, उसी तरह फ्रांस की विशाल वाहिनी पर एक पागलपन छा गया।

नेपोलियन ने आज्ञा दे दी कि मास्को से वापस लौट चलो।

१७ अक्टूबर, १८१२ को सुबह के वक्त, जिस शिविर मे पियरे बन्दी था, उसका द्वार खुल गया और एक कप्तान ने कर्कश स्वर से चिल्लाकर कहा, "लाइन लगाओ, लाइन लगाओ!" पियरे की कमीज़ गन्दी थी और फट गई थी। उसने सिपाहियोंवाली मुड़ी-तुड़ी पतलून पहन रखी थी। उसके शरीर पर किसानों का कोट था और पाव नगे थे। चेहरा दाढ़ी-मूछों से भर गया था। उसके लम्बे उलझे हुए बाल जुओं से भर गए थे। घुंघराले बालों की एक लट गुच्छा बनकर उसके माथे पर लटक गई थी लेकिन उसकी आंखों में एक दृढ़ता थी।

बाकी शिविरों से भी बन्दी निकल आए, भूखे, लड़खड़ाते। करीब तीन सौ कैदी फ्रेंच सेना-दल के पीछे चल पड़े। और उनके पीछे लूटे हुए सामानों की गाड़िया आने लगी।

वे लोग कालुगा की सड़क पर मार्च करते हुए रात तक देहात मे पहुच गए। कैदियों को खाने को घोड़े का मांस दिया गया और उन्हे आज्ञा दे दी गई कि खुले मे आग जलाकर वे उसे तापें और रात गुज़ार दें। तीन हफ्ते बाद कैदियो के उस झुण्ड मे तीन सौ आदमियों के बजाय नब्बे आदमी बच रहे। खाने के सामान मे से आधे को, रणभूमि के सैनिक छीन ले गए थे और बाकी आधे को लुटेरे कज्जाक लूट ले गए थे। सैनिकों की हालत बहुत बुरी हो रही थी। वे स्वयं बन्दियों जैसे दिखाई देते थे। विशाल पथ था और उस सारे पथ पर मनुष्य और घोड़ों की लाशें सड़ने लगी थीं। पियरे भूल चुका था कि वह किसी समय अच्छे समाज में बैठनेवाला एक धनी व्यक्ति था। उसे यह भी मालूम नहीं था कि उसकी पत्नी एलेन बड़े-बड़े डाक्टरो की समझ में न आनेवाली बीमारी से सड़ रही थी और मास्को मे मर रही थी। लेकिन यदि उसे ज्ञात होता तो अब यह उसके लिए निरर्थक बात थी—मानो वह पृथ्वी पर नहीं, किसी और ही ग्रह पर होनेवाली घटना थी।

तीन हफ्तों के इस मार्च मे जीवन का एक सत्य उसके सामने आ गया; मनुष्य की यातना सहने की एक सीमा होती है और वह सीमा उसके सामने आ गई थी।

प्लेटिन कारात्येव के चेहरे पर अब भी मुस्कराहट बनी रहती थी। उसकी आंखों में एक विचित्र आनन्दमय प्रकाश अब भी झिलमिलाया करता था। अदम्य था उसका साहस कि वह अब भी गाव की कहानियां सुनाया करता था। वे कहानियां बेसिर-पैर की थीं। उनका अंत खींच-तानकर धार्मिकता मे किया जाता था। उससे पियरे की आत्मा मे एक नई स्फूर्ति-सी भरने लगती जैसे वह जीवन का एक नया अर्थ अब समझने लगा था जिसमे वेदना को सहने की भी असीम आवश्यकता थी, जहां अपराधो के ऊपर जीवित रहने की लालसा थी, जहां मनुष्य की अपराधी चेतना सब कुछ सहकर भी एक कल्पना के आनन्द को सदैव के लिए अपने भीतर निमज्जित कर लेना चाहती थी। पियरे जिन अर्थों मे जान-पहचान, रिश्तेदार, दोस्त और प्रेम आदि की व्याख्या करता, कारात्येव वह सब जानता ही नहीं था, किन्तु वह जिसके भी सम्पर्क मे आता, उसके प्रति प्रेम से रहना, किसी एक व्यक्ति-विशेष के प्रति नहीं बल्कि मनुष्य-मात्र के प्रति। कोई भी मनुष्य हो, उसके प्रति उसका सहज स्नेह-व्यवहार होता। वह अपने साथियों से प्यार करता था, उसे फ्रेंच लोगों से भी प्रेम था और पियरे से भी प्रेम था क्योंकि पियरे उसके पास रहता था। यद्यपि

पियरे यह जानता था कि उसके प्रति कारात्येव की ममता थी, किन्तु जिस क्षण कारात्येव को पियरे से दूर होना पड़ेगा, उस समय भी उसे इसका तनिक दुःख नहीं होगा।

कारात्येव को बुखार आने लगा था और सैनिकों को यह आज्ञा थी कि जो कैदी पिछड़ता जाए, उसको गोली मार दी जाए। दिन पर दिन बीतते गए। कारात्येव किसी प्रकार चलता रहा, चलता रहा। एक दिन मार्च में पियरे ने सुबह के वक्त कारात्येव को नहीं देखा। उसने मुड़कर ढूंढा। कारात्येव एक वृक्ष के नीचे बैठ गया था और दो फ्रेंच सैनिक उसके पास झुके हुए खड़े थे। पियरे में फिर पलटकर देखने का साहस नहीं हुआ। थोड़ी देर बाद गोली चली, लेकिन पियरे के पांव आगे बढ़ते चले गए।

ज़ार और उसके जर्मन जनरल अब कुटुज़ोव पर ज़ोर दे रहे थे कि इस समय वह फ्रेंच सेनाओं पर ज़ोर से टूट पड़े और उसका सर्वनाश कर दे, लेकिन वृद्ध मार्शल उन सारी आज्ञाओं, प्रार्थनाओं और तर्क-वितर्कों को जैसे सुन ही नहीं रहा था। उसका उद्देश्य यह नहीं था कि नेपोलियन को रूस में रोके रखे। वह उसको वहां से निकाल देना चाहता था। देहात उजड़ा पड़ा था, और घायल फ्रेंच जानवर उस बियाबान में पलटकर भाग रहा था। उसको घेर कर परेशान कर डाला गया था और वह अब भूख से घबरा गया था। कुटुज़ोव जानता था कि इतने बड़े मैदान से वह भूखा जानवर ज़िन्दा नहीं लौट सकेगा। उसकी भविष्यवाणी सत्य प्रमाणित हुई। विशाल फ्रेंच वाहिनी ने जिस समय रूस में प्रवेश किया था, उस समय की सैनिक संख्या अब बाकी नहीं रही थी। जब नेपोलियन की सेना रूस की सीमा तक वापस पहुंच गई तब उसके दल में से नौ हिस्से विनष्ट हो चुके थे। कुटुज़ोव बीच-बीच में फ्रेंच सेना पर आक्रमण करने के लिए कुछ चंचल गति से प्रहार करनेवाली अपनी सैन्य टुकड़ियां भेज देता था।

दोलोहोव और पियरे के द्वन्द्व-युद्ध में निर्णायक बननेवाला डेनीसोव ऐसे ही एक विनाशक दल का अफसर था। अक्तूबर के महीने में एक दिन डेनीसोव को पता चला कि स्मालेन्स्क से कुछ दूर एक गांव में एक फ्रेंच सेना टिक गई थी। वह अपने कज़्ज़ाकों को लेकर उनपर टूट पड़ा। उन्होंने अनेक फ्रेंच सैनिकों को मार गिराया और फिर घोड़ों को उनके चारों ओर सरपट दौड़ाते हुए उन्होंने इस कदर दीवानगी बरपाई कि बाकी बचे फ्रेंच सैनिकों ने अपने हथियार डाल दिए। कुछ फटे-हाल, किसान फ्रेंच सैनिकों के पीछे से चिल्लाते रहे, "कज़्ज़ाक आ गए! कज़्ज़ाक!"

डेनीसोव और उसके आदमी घोड़ों से उतरे और उन्होंने सभी बन्दियों को गले से लगाया। उनमें पियरे भी था। एक मिनट तक वह अपने साथियों के हर्ष के निनाद को सुनता रहा, जैसे वह पागल हो गया था, जैसे वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया था। और फिर अचानक वह पागल की तरह हंस उठा और चिल्लाया, "साथियो, ये हमारे अपने लोग हैं। हमारे भाई हैं।'

कज़्ज़ाकों ने पियरे को ओरेल पहुंचा दिया जहां वह बीमार पड़ गया और तीन महीने तक अस्पताल में पड़ा रहा। इतने दिन का दुःख और अनवरत यातनाएं, जो कि जीवन में उसके लिए सहज बन गई थीं, अब मानो उन्होंने प्रभाव दिखाया। अन्तत

शीत ऋतु की धुंधली-सी रात, बरसात, पानी और कीचड की झिलमिल-सी स्मृतियां : *गले हुए पैरों का दर्द, पसलियों में कड़कती सर्दी, ऐंठन, दुःख से कराहते हुए लोगों की* सूरतें, क्रोध से दी गई आज्ञाएं, दया के लिए मांगी हुई भीख—ओफ !

बहुत धीरे-धीरे पियरे के दिमाग से यह बात हटी कि अब उसको धक्का देकर चला ले जाने वाला कोई नहीं था, अब उसका गर्म बिस्तर उससे छीनकर कोई नहीं ले जा रहा था। अब उसे समय पर भोजन भी मिलेगा, चाय भी मिलेगी और सोने को भी मिलेगा। कई-कई बार समझाने के बाद उसके दिमाग में यह बात उतरी कि उसकी पत्नी मर चुकी है, राजकुमार आन्द्रेई का देहान्त हो चुका है और फ्रेंच सेना का सर्वनाश हो चुका है। और अन्त में उसे फिर एक स्वतन्त्रता की भावना स्फूर्ति प्रदान करने लगी। वह अपने-आप से कहने लगा, 'मैं कितना सुखी हूं। जीवन कितना सुन्दर है।' अब उसे यह लगा कि जो भौतिक सुख अब उसे प्राप्त हो गए थे, बर्फ की सी सफेद मेज, अच्छे-अच्छे हलुए, कोमल शैया—इन सबने ही उसे ऐसा बना दिया था। लेकिन बाद में उसे यह अनुभव कि वह इन सब बाहरी चीजों से प्रभावित नहीं था, बल्कि यह आजादी उसके भीतर से अपने-आप पैदा हुई थी। बाहर की सारी बातों से उसका सम्बन्ध नहीं था। वह स्वतन्त्र था, उसकी अन्तरात्मा स्वतंत्र थी, जिसने यह सुख दिया था। वह जो एक पुरानी समस्या उसके सामने खड़ी थी कि जीवन का उद्देश्य क्या है उस समस्या को जैसे हल मिल गया था। अब वह बुद्धि की दूरबीन को दूर फेंक देने में समर्थ हो गया था। पहले जो प्रश्न उसको सताया करता था कि यह सब किसलिए है, अब जैसे उसके लिए उस प्रश्न की कोई सत्ता ही न रह गई थी। उस प्रश्न के लिए जैसे उसके पास एक तत्पर उत्तर था। किसलिए ? इसलिए कि एक परमात्मा है—वह परमात्मा, जिसकी इच्छा के बिना एक पत्ता भी नहीं खड़कता।

पियरे ने कहा, "उनके बाद कुछ सिपाही आए और उन्होंने हमें बचाया।"

नटाशा ने कहा, "मुझे विश्वास है कि आप पूरी बात हमें नहीं बता रहे हैं। आपने निश्चय ही कुछ न कुछ अच्छा काम किया होगा।"

एक साल बीत चुका था। पियरे काउण्टेस मार्या रोस्तोव और उसके पति काउण्ट निकोलाइ के घर में पीटर्सबर्ग में बैठा हुआ था और नटाशा से बातें कर रहा था। पियरे कारात्येव के बारे में बताने लगा, "नहीं, तुम नहीं समझ सकतीं कि मैंने उस सुखी और सीधे-सादे व्यक्ति से कितना बड़ा सबक लिया।"

काउण्टेस मार्या बात नहीं सुन रही थी। वह किसी और बात के बारे में सोच रही थी। उसे यह सम्भावना लग रही थी कि नटाशा और पियरे परस्पर दोनों एक सूत्र में बंध जाएंगे; और जब उसे यह विचार पहली बार आया, तो उसका हृदय हर्ष से जैसे आप्लावित हो गया। नटाशा की आंखों में चमक थी और उत्सुकता भी। वह अब भी पियरे की ओर टकटकी लगाए देख रही थी मानो वह उसकी कथा में उस भाग का सुनना चाहती थी, जो अभी पियरे कह नहीं पाया था।

पियरे ने कहा, "लोग कहते हैं कि दुःख दुर्भाग्य का परिणाम है, लेकिन यदि

मुझसे पूछा जाए कि मैं जो कुछ बन्दी होने के पहले था, वह रहना चाहूंगा,
मैंने झेला है, उस सबको स्वीकार करना चाहूंगा ? तो मैं यही कहूंगा कि मन
पर मुझे फिर से बन्दी बना लिया जाए, ताकि मैं फिर एक बार घोड़े का म
कष्ट झेल सकूं। हम यह समझते हैं कि जिस जीवन के हम आदी हैं, यदि
निकल गए तो सब कुछ समाप्त हो जाएगा। किन्तु हरएक अन्त का, अन्त में
होता है, जो एक नई अच्छाई की ओर ले जाता है। जब तक जीवन है, तब
है।" कुछ लजाते हुए आनन्द की जैसी अव्यवस्थित चेतना का अनुभव करते
नटाशा की ओर मुड़कर देखा और कहा, "यह मैं तुमसे कहता हूं।"

नटाशा ने कहा, "ठीक है। और मुझे भी इससे बेहतर कुछ नहीं माल
जो कुछ हो चुका है उसमें से एक बार फिर गुजरना पड़े।" पियरे ने कटो
उसकी ओर देखा। नटाशा ने घोषणा की, "हां, इससे अधिक कुछ नहीं।"

सहसा नटाशा ने अपना मुंह अपने हाथों में छिपा लिया और रो पड़ी
मार्या ने पूछा, "क्या बात हुई, नटाशा ?"

अपने आंसुओं में से नटाशा ने मुस्कराकर पियरे की ओर देखा और व
नहीं, कुछ नहीं,...अच्छा अब विदा दो। अब सोने का समय हो गया है।" य
वह तेज़ी से कमरे के बाहर चली गई।

पियरे भी बिदा लेने को उठ खड़ा हुआ। काउण्टेस मार्या ने उसकी ओ
कहा, "एक मिनट।" पियरे ने उसकी आंखों में झांका। "मैं जानती हूं, वह तु
करती है।" यह कहकर काउण्टेस मार्या को जैसे ध्यान आ गया और अपनी गल
रते हुए कहा, "वह तुम्हें प्यार करेगी।"

पियरे ने कहा, "ऐसा आप क्यों सोचती हैं। आप चाहती हैं, मैं आंसुओं
रहूं ?" काउण्टेस मार्या ने मुस्कराकर उत्तर दिया, "हां, मैं यही चाहती हूं।"
सोचकर उसने कहा, "तुम उसके माता-पिता को लिख दो। बाकी सब कुछ मुझ
दो। मैं मौका देखकर उससे बातचीत करूंगी। मेरा हृदय कहता है कि यह का
रहेगा।" यह कहते-कहते जैसे उसकी आंखों में एक दिव्य आलोक-सा भर गया।

> समरसैट मॉम ने लिखा है कि संसार का सबसे बड़ा उपन्यासकार बाल
> किन्तु 'वार एण्ड पीस' (युद्ध और शान्ति) संसार का सबसे महान उपन
> पहली बात के बारे में लोगों को विवाद करने की गुंजाइश हो सकती
> ऐसे बहुत ही कम लोग होंगे, जो इस दूसरी बात से अपना मतभेद प्रकट
> मनुष्य का जितना सर्वांगीण और गहन-गंभीर चित्रण इस उपन्यास में
> वह अन्यत्र दुर्लभ है।

O